श्रीजिनाय नम

पं. श्री कल्याणविजयगणिविरचिता स्वोपज्ञ गुजराती भाषा टीका सहित—

❀ श्री कल्याण-कलिका. ❀

(द्वितीय-तृतीय-खण्डात्मक द्वितीयभाग)

★

संपादक मुनिप्रवर श्री भद्रंकरविजयजी महाराज

卐

प्रकाशक व्यवस्थापक — शा. मीठालाल भूरमल, शा. मुनीलाल थानमल

श्री क० वि० शास्त्रसंग्रहसमिति—जालोर—मारवाड (राजस्थान)

वीर स० २४८२ । विक्रम सवत् २०१२ । शकाब्द १८७७ । ई० सन १९५६ ।

प्रथमावृत्ति] मूल्य : रु. १०—०—० [प्रति १०००

प्राप्तिस्थान: शा. कस्तुरचंद थानमल
विठ्ठलवाडी,–मुंम्बइ नं. २
शा. मीठालाल भूरमल
जालोर [राजस्थान]
व्यवस्थापक: क० वि० शास्त्रसंग्रह समिति



: मुद्रक :
पण्डित मफतलाल झवेरचंद गांधी
नयन प्रिन्टींग प्रेस
का–२–६१. ढींकवावाडी, अमदावाद.
गांधीरोड फरनान्डीझ पुल पासे.

श्रीकल्याणकलिकाके द्वितीयभागके अग्रग्राहकोंकी

❁ शुभनामावली ❁

१५१ पुस्तक श्री पूनमिया उपाश्रयका श्री जैनसंघ मु: आहोर, मारवाड (राजस्थान)

१०० ,, जालोर–नागपुराकी धर्मशालाकी तरफसे पुरा-श्री जैनसंघ–जालोर (राजस्थान)

१०० ,, श्री अमरसर (मरु) श्री जैनसंघ, अमरसर, पो० बाकरारोड–वाया सूनी (राजस्थान)

१०० ,, शा. कस्तुरचदजी मगाजी (शा. कस्तुरचन्द शान-मल–सिवगाडी–मुंबई–२ वाले) जालोर

५० ,, शा हीमतमलजी भगवानचंदजी पारसमलजी भूमाजी, जालोर (मारवाड)

२५ पुस्तक शा चंदनमलजी मानमलजी जामतराजजी पुखराजजी, मांडवला (मारवाड)

२५ ,, शा. रिखबचदजी जुहाराजी–गोल पो० उमेदाबाद (वाया-सूनी) राजस्थान

२५ ,, शा. सागरमलजी पनाजी मु. अमरसर (मरु) वाया सूनी (राजस्थान)

२५ ,, शा. गुलाबचंदजी मोहनलालजी लुंकड आहोर, दूकान शा. गुलाबचद मोहनलाल, १०४ नारायण मुदली स्ट्रीट मद्रास (१)

२५ ,, भंडारी तिलोकचंदजी मुनीलालजी जामतराजजी

बेटापोता माणकजी का, मुः लेटा, दूकान–जावंतराज जसराज भंडारी यादगीरी, तथा मुनीलाल बाबुलाल भंडारी–बीजापुर ।

१७ पुस्तक भंडारी गणेशमलजी धूडाजी मुः लेटा, अपनी स्वर्गीयमाता पनादेवी के स्मरणार्थ

१५ ,, भंडारी तेजराज नथमल-यादगीरी, मारवाड में मुः लेटा--जालोर।

१० ,, शा. धनाजी वदाजी- आहोर (फर्म) सा. धनाजी वदाजी थाणा।

१० ,, शा. गेनाजी वरदीचंदजी बालदिया, मुः तखतगढ--मारवाड

१० ,, शा. वस्तीमलजी चमनाजी--जालोर (मारवाड) दूकान--हस्पेट.

१० पुस्तक मुंहता हुकमीचंदजी पनाजी मुः गोधन, (मारवाड) अपनी स्वर्गीय धर्मपत्नी फफीबाइके स्मरणार्थ।

१० ,, भंडारी लुंबचंदजी दलाजी–गोधन (मारवाड)

१० ,, भंडारी राजमलजी दानाजी--गोधन (मारवाड) हस्ते भंडारी मानमलजी.

१० ,, शा. जसरूपजी सुरताजी मुः चालीसगांव, मारवाडमें मुः गोल, पो० उमेदाबाद (राजस्थान)

१० ,, शा. पुनमचंदजी रघुनाथजीकी धर्मपत्नी बाई कुदनीकी तरफसे हस्ते शा. मूलचंदजी लुंनाजी, जालोर (मारवाड)

१० ,, शा. रायचंदजी मेघराजजी मुः जालोर (राजस्थान) दूकान--माधवपुरा--अहमदाबाद.

—+—

प्रस्तावना

नामप्रदान.

लगभग २५ वर्षथी शिल्प, ज्योतिष अने प्रतिष्ठाविधिनु मार्गदर्शक पुस्तक लखवानी मित्रो तथा भाविकोनी प्रेरणा हती, पण अन्यान्य कार्योने लीधे ए विषयोमा बहु लक्ष जतु न हतु. चालु कार्योनो भार ओछो थता थोडा वर्षो उपर ध्यान खेंचीने थोडु थोडु लखवा माड्यु. ज्योतिष तथा शिल्पना केटलाक प्रकरणो हिन्दीमा लख्या पण खरा, परन्तु ए बने विषयो एटला विस्तृत अने साहित्यसंपन्न छे के तेमा शु लेवु अने शु छोडवु ए एक समस्या थइ पडी, शारीरिक प्रकृति प्राय अस्वस्थ, आखोमा मोतीयानी शरुआत अने अन्यान्य प्रवृत्तिओना कारणे अवकाशनी अल्पता, वली निजस्वभावनी विस्ताररुचिता इत्यादि वातोनो विचार करता शिल्प अने ज्योतिषना स्वतन्त्र ग्रन्थोना निर्माणनी भावना कुंठित थइ गइ, छता ए विषयोमा अत्यावश्यक विषयो उपर मुद्दासर लखवानो निर्णय अफर रह्यो. ए विषयमा टाचणो करवानु चालु कर्यु अने प्रथम शिल्पना केटलाक आवश्यकीय प्रकरणो लखी नाख्या अने शिल्पसंहिताओमा ज्योतिषनो विषय पण अवश्य होय ज छे एटले शिल्पना ज अनुसंधान रूपे धारणागति अने मुहूर्तलक्षण नामना बे परिच्छेदो लखीने तेनी साथे जोडी दीधा. हवे मुद्रा विषयक एक ज एवो परिच्छेद रह्यो हतो के जेनो उपयोग विधिविधानोमा थतो होवा छता विधिरूपे तेनु विधिखंडमा स्थान न हतु, तेथी मुद्रा परिच्छेदने ज्योतिषना अंतमा आपीने एकंदर १७ परिच्छेदोनो प्रथम भाग पूरो कर्यो, पण आ संदर्भनु नाम

शुं आपवुं एनो कोइ मार्ग जडयो नहि. शिल्प विषयक नाम करण करवामां आवे तो ज्योतिषनो विषय अलक्षित रही जाय जे विस्तारमां शिल्पनी अपेक्षाए कंइक ज उतरतो छे, बंने विषयने स्पर्शतुं नाम आपवामां पण कंइक ग्राम्यता जेवुं लाग्युं एटले आ ग्रन्थने निर्नामक ज राखीने विधिविषयक ग्रन्थने पूर्ण करवानो निर्णय कर्यो अने ए भाग पण बनते प्रयासे पूरो करी दीधो.

त्रीजो भाग बीजा भागना एक परिच्छेद जेवो ज छे पण अधिक विस्तृत भिन्न भिन्न विषयात्मक होवाथी पांच परिच्छेदमां वहेंची एनो एक स्वतंत्र खंड बनाव्यो छे.

बीजा त्रीजा खंडनी योजना अने काचो खरडो तैयार थइ गया पछी पाछी एना नामनी विचारणा उभी थइ. बीजा भागना नामने अंगे तो बहु विचारवानुं न हतुं, प्रतिष्ठाकल्प अथवा एने मलतुं बीजुं कोइ नाम आपवाथी समस्या पती जाय तेम हतुं, पण खास मुंजवण प्रथम खंडने अंगे हती, अमारे आ पहेलो भाग स्वतंत्र ग्रन्थरूपे नहि पण कोइ ग्रन्थना एक विभाग रूपे गोठववो हतो, जो विधिखंडनी प्रधानता गणी तेने अनुसरतुं कोइ नाम आपीये तो प्रथम खंड तद्दन ज अनिर्दिष्ट रही जाय तेम हतुं एटले अमुक विषय सूचक नामने पडतुं मूकी फलसूचक नामनी तरफ लक्ष्य दोर्युं अने तरत ज " कल्याण कलिका " नाम उपस्थित थयुं अने एज नाम करण नियत थयुं.

साइजने अंगे–आखो ग्रन्थ एकलो छपाववानो निश्चय हतो पण साइजनी बाबतमां विचार करतां जणायुं के कोइ पण एक साइजमां छपावतां बधाने अनुकूल नहिं पडे, बुक साइजमां होय तो विधि करावनारने अगवडता जनक थाय अने पोथी

साइजमां होय तो शिल्प तथा ज्योतिषना अभ्यासीओने अनुकूल पडे नहि, ए कारणे प्रथम खंड बुक अने बीजो, त्रीजो खंड भेगा पोथी रूपे छपाववानु निश्चित करायुं

मुद्रण कामनी व्यवस्था—

मुद्रण कार्य जल्दी थइने पुस्तक वहेलु बहार पडे एवी अमारी इच्छा होय ए तो स्वाभाविक गणाय, पण द्रव्य सहायकोनी उतावल अमारा करताये अधिक हती, पण आटलु दलदार पुस्तक भावनगर के अमदावाद प्रेसमा छपाय अने असे मारवाडमा प्रुफ मगावीने सुधारीये तो पुस्तक क्यारे छपाइने बहार पडे ? लेखक अने आर्थिक सहायको केटली धीरज राखे ? अने एकला प्रेसवाला अने प्रुफरीडर पंडितने भरोसे पण काम केम छोडाय ?, भावनगर वा अमदावादमा एवा कोइ विद्वान् साधुनु चोमासु होय के जे आ काम करवामां योग्य अने करवानी भावनावाला होय तो पुस्तक अमदावाद छपाववु ए विचारणा चालती हती, एटलामा तपस्वी पं० श्रीकान्तिविजयजी गणिनो पत्र मल्यो, तेमणे जणाव्युं के "अम्हारुं चोमासु बीजे नक्की थइ गयुं हतु पण शारीरिक कारणे डाक्टरनी सलाहथी अमदावाद आव्या छीये." अमने प्रसन्नता थइ अने पूछ्युं के "जो शारीरिक अडचण न होय अने कलिकानुं मुद्रण कार्य संभाली शकाय तेम होय तो ए कार्य हु तमने सोंपवा इच्छुं छु" अमारा आ पत्रनो उत्तर पं० कान्तिविजयजीए स्वीकृतिना रूपमा आप्यो एटले प्रथम खंडना केटलाक परिच्छेदो तेमने मोकली आप्या अने आर्थिक सहायकोने सूचना पहोचता खर्च माटे रकम पण अमदावाद श्रीविद्याशालानी पेढीमा पहोंची गइ. कार्य चालु थयु अने गत वर्षनो कार्तिक उतरता १० फर्मा छपाया, पण एटलामा पं० श्रीकान्तिविजयजीने विहार करवानो प्रसंग आव्यो एटले अमारी सूचना प्रमाणे संपादननु कार्य तपस्वीप्रवर मुनि श्रीभद्रंकरविजयजीने सोंपायुं अने ते पछी आनुं मधु ज

संपादकीय कार्य उक्त मुनिराजे ज कर्युं छे. आ बंने विद्वान् मुनिवरोए कलिका प्रति श्रद्धा अने सेवाभाव बताव्यो छे तेथी अमने पूर्ण संतोष छे.

अग्रसहायको—

' कलिका 'नुं कार्य हजी पूरुं नहोतुं थयुं ते पहेलांथी लोको एना मुद्रणमां सहायक थवा माटे अमुक नकलोनी लागत किम्मत आपी ग्राहक रूपे पोतानां नामो लखाववा मांगता हता, परन्तु ए काम ग्रन्थनुं मेटर पूरुं थया पहेलां थइ शके तेम न हतुं. ज्यारे बंने भागोनी प्रेसकोपी थवा मांडी, प्रेसथी मुद्रण विषयमां पूछपरछ करी लीधी, ते पछी अनुमानथी जणायुं के प्रथम तथा द्वितीय भागनी पांच पांचसो कोपीओ कढावतां अनुक्रमे एक पुस्तकनी रु० ५) तथा रु० १०) नी लागत किम्मत आवशे, प्रथम भागनो पूरो खर्च श्रीगोदण (मारवाड)ना जैन संघे आपवानी इच्छा व्यक्त करेल होवाथी आ भागमां बीजा कोइनी सहायता स्वीकारी नथी, ज्यारे बीजा भाग माटे दशथी ओछी नकलोनी सहायता स्वीकारवामां आवी नथी, मात्र पांच पांचसो कोपीथी लोक मांगणीने पहोंचाशे नहि एम जणातां प्रकाशक समितिए वधारानी पांच पांचसो नकलो कढावी छे, जे अधिकारिओने लागत किम्मते ज अपाशे एनो निर्धार करेल छे. जेटली नकलोनी किम्मत संघो तथा सद्-गृहस्थो तरफथी मळेली छे तेटली नकलो एना अधिकारिओने विना मूल्ये आपवानो निर्णय थयो छे पण अधिकारी-अनधिकारीनो निर्णय ए माटे नियुक्त थयेल समिति द्वारा थशे अने ए निर्णय प्रकाशक समिति उपर जतां पुस्तको मार्गखर्च लेइने तेमने मोकलाशे.

पुस्तकना संपादनमां उपर्युक्त विद्वान् मुनिवरोए यथाशक्य परिश्रम कार्यो छे, छतां शरतचूक, दृष्टिदोष के प्रेसकर्मचारिओनी बेदरकारीथी जे कोइ अशुद्धिओ रही जवा पामी छे तेनुं शुद्धिपत्रक आपेल छे, जे जोइने वाचकगण रहेल अशुद्धिओने सुधारी लेशे.

२—त्रीजा खंडनो उपोद्घात

प्रतिष्ठाकल्पो अने विधिविधानो उपर दृष्टिपात—

'प्रतिष्ठाकल्प' ए विधिशास्त्रनो एक महत्त्वपूर्ण विभाग छे. 'व्रतविधि' 'तपविधि' के 'मन्त्रविधि' आदि 'विधि'ओ प्रायः व्यक्ति विशेषनी साथे संबद्ध होय छे, ज्यारे 'प्रतिष्ठाविधि'नो सम्बन्ध घणे भागे संघ साथे होय छे, भले प्रतिष्ठाकारक व्यक्ति विशेष होय छता प्रतिष्ठा वस्तु ज एवी छे के एनो प्रभाव संघ, गाम अने कदाचिद् देश उपर पण पडी जाय छे, आथी 'प्रतिष्ठाशास्त्र' केटलु महत्त्वपूर्ण छे ए समजाववानी भाग्ये ज आवश्यकता होइ शके

प्रतिष्ठानो शब्दार्थ—

जे वस्तुना निरूपणमा आटला बधा ग्रन्थो रचाया छे, अने जेना विधानमा हजारो अने लाखो रुपिया जैन संघ खर्च करे छे ते 'प्रतिष्ठा'नो अर्थ आपणे समजी लेवो जोइये

'निर्वाणकलिका' नामक प्रतिष्ठापद्धतिना कर्ता आचार्य श्रीपादलिप्तसूरिजी निर्वाणकलिकामा प्रतिष्ठा शब्दनो अर्थ नीचे प्रमाणे लखे छे—

"तत्र स्थाप्यस्य जिनबिम्बादेर्भद्रपीठादौ विधिना न्यसन प्रतिष्ठा ।"

अर्थात् 'स्थापनीय जिनप्रतिमा आदिनु योग्य आसने विधिपूर्वक स्थापन करवु ते 'प्रतिष्ठा' छे

आचार दिनकरना कर्ता श्रीवर्धमानसूरि प्रतिष्ठानुं लक्षण जुदा प्रकारे आपे छे, जे नीचे प्रमाणे छे—

" प्रतिष्ठा नाम देहिनां वस्तुनश्च प्राधान्य-मान्य(ता) हेतुकं कर्म ।"

अर्थात् ' शरीरधारी तथा अन्य वस्तुने प्रधानता तथा मान्यता आपवाना हेतुथी कराता अनुष्ठाननुं नाम 'प्रतिष्ठा' छे.

अमे पोते प्रतिष्ठानुं लक्षण नीचे प्रमाणे बांधीये छीये :-

" सजीवे निर्जीवे वा विशिष्टवस्तुनि अनुष्ठानविशेषेण फलोत्पादनं प्रतिष्ठा "

अर्थात् ' सजीव के निर्जीव एवा पदार्थ विशेषमां योग्य क्रियानुष्ठान द्वारा ' प्रभाव ' उत्पन्न करवो ते ' प्रतिष्ठा ' छे.

गमे ते लक्षण योग्य होय छतां वर्तमान समयमां 'निर्वाणकलिका'ना लक्षणवाली प्रतिष्ठाने ज लोको ' प्रतिष्ठा ' तरीके आलेखे छे अने दिनकरकारना लक्षणवाली प्रतिष्ठानो आजे सर्वसाधारण 'अंजनशलाका' ए नामथी व्यवहार करे छे.

२ प्राचीन अने अर्वाचीन प्रतिष्ठाओनी तुलना—

कोइ पण विधिविधान प्राथमिक अवस्थामां जेटलुं सीधुं अने सरल होय छे तेटलुं ज ते लांबा काले जटिल अने दुर्बोध बनी जाय छे, आ एक स्वाभाविक नियम छे. प्रतिष्ठाकल्पो अने प्रतिष्ठाविधिओ पण आ अटल नियमथी बची शकी नथी, प्रतिष्ठाकल्पोनी उत्पत्तिनो इतिहास आपवा माटेनुं आ योग्य स्थल नथी, अहियां प्रतिष्ठाकल्पो अने प्रतिष्ठाविधिओमां थयेल क्रमिक परिवर्तनोनो ज टुंको परिचय करावीने वाचकगणनुं-खास करीने ए विषयमां रस लेता ' प्रतिष्ठाविधिकार ' गणनुं लक्ष्य खेंचवा मांगीये छीये.

बीजी रूढ प्रवृत्तिओने अंगे बने छे तेम ए विषयमा पण विधिकारो पोते पोतानी परम्परागत रूढिओने वळगी रही खरी वस्तुस्थितिने नही स्वीकारे ए अमे सारी रीते जाणीये छीये, छता पण समजायेलु सत्य सर्वने समजाववु ए अमारुं कर्तव्य मानीये छीये.

प्राचीन प्रतिष्ठाओ घणी ज सादी सुगम अने अल्पव्यय साध्य हती, आजना जेवडी लाबी सामग्री-सूचिओ पूर्वे न्होती बनती, आ वस्तुने समजाववा माटे अमो प्राचीन अने अपेक्षाकृत अर्वाचीन प्रतिष्ठाकल्पोमा लखेल सामग्रीओमा कालक्रमे केवी रीते वृद्धि थइ अने सामग्रीसभार आजनी स्थितिए पहोच्यो ते विषयमा केटलाक उदाहरणो आपीशु.

विधिमा उमेरायेली वस्तुओ :

(१) पाटलाओ—

निर्वाणकलिकाना रचना समयमा आपणी प्रतिष्ठामा मात्र 'नन्दावर्त' पूजन माटे एक ज पाटलो आवश्यक गणातो हतो, दिक्पालोनो आलेख पचवर्णना चूर्णथी वेदिका उपर करवामा आवतो हतो

श्रीचन्द्रसूरिनी प्रतिष्ठापद्धतिमा दिक्पालोने माटे पण एक पाटलो जुदो अस्तित्वमा आव्यो, ते पछी गुणरत्नसूरि सुधीना प्रतिष्ठाकल्पोमा नन्दावर्त अने दिक्पालोनी पूजा माटे बे पाटलाओ ज प्रतिष्ठाना उपकरणोमा गणाता हता.

श्रीविशालराज शिष्यना प्रतिष्ठाकल्पमा उपर्युक्त बे पाटलाओ उपरान्त त्रीजा ग्रहना पाटलाए देखाव दीधो छे, ए पहेला कोइ आचार्य नंदावर्तना छेल्ला वलयमा पूजन करावता अने कोइ कोइ प्रथम वलयमा ज जिनबिंबना चरणो पासे ग्रहोनुं

पूजन करावी लेता. पाटलानुं जुदुं अस्तित्व कोइ मानतुं न हतुं. आ रीते सोलमा सैकाना प्रारंभथी ग्रहोनो पाटलो अस्तित्व-मां आवतां ३ पाटलाओ प्रतिष्ठाविधिमां दाखल थया.

सं० १८४८ नी पहेलांना अमारा जोएला विधिग्रन्थोमां अष्टमंगलना पाटलानी आवश्यकता मनाती न हती, यद्यपि आचार दिनकरमां अष्टमंगलनी पाटलीनो उल्लेख जरूर मले छे, छतां ते वखते अष्टमंगल माटे पाटलानी आवश्यकता न होती गणाती, पाटली विना पण शुद्धभूमि उपर अष्टमंगलोनुं अक्षतो वडे आलेखन करातुं हतुं.

सं० १८८७ मां अथवा ए पछीना समयमां लखायेल शांतिस्नात्रनी विधिओमां पहेल वहेलो अष्टमंगलनो पाटलो उप-करणरूपे दृष्टिगोचर थाय छे. अमारी पासेनी सं० १६३९ तथा १६८७ मां लखायेली अष्टोत्तरी स्नात्रनी विधिओ छे, तेमां अष्टमंगलना पाटलानुं नाम निशान नथी, आथी सिद्ध थाय छे के अष्टमंगलनो पाटलो सं० १६८७ पछी अने १८८७ पहेलां कोइ काले विधिमां प्रविष्ट थयो छे, एनी प्राचीनता बसो त्रणसो वर्षथी वधारे नथी.

(२) वस्त्रो—

पाटला वध्या एटले तत्संबन्धी पूजन सामग्री वधे ए स्वाभाविक छे. जे वखते मात्र एक ज नंदावर्तनो पाटलो हतो ते वखते तेने ढांकवाने एक ज आखुं सफेद वस्त्र आवश्यक गणातुं हतुं, अने ते उपरान्त बिंबनी अधिवासना तथा प्रतिष्ठाना अवसरे आखां बे वस्त्रो अने मातृशाटिका एटली ते वखते वस्त्रसामग्री हती.

दिक्पालोनी स्थापना माटे स्वतंत्र पाटलो उपयोगमां लेवाता मांडयो ते समयमां पाटला उपर दिशापालोनी स्थापना

पूजन विधि छपायेल अने आजे घणा विधिकारो ए ज प्रमाणे पूजन करावे छे,[1] पहेला जेओ प्रतिष्ठा कल्पने अनुसारे उक्त पूजन करावता हता तेओ पण हवे आ विस्तृत सदर्भने अनुसरीने पूजन करावे छे पण ए विधान ते वखते समजदारनी दृष्टिमा केटलु वधु अनुचित अने खटकनारु लागे छे ? जे वस्तुनु रुपियामा एक आनीभर पण महत्त्व न हतु तेने आने वधारीने रुपियाभर बनावी देवामां आव्यु छे, अने खूबी ए छे के ए बधु करवामा विधिकारो पोतानी विद्वत्ता माने छे, ते वखते तेमने एटलो पण विचार आवतो नथी के तेओ ए काम प्रतिष्ठा अथवा महापूजाना एक साधारण अग रूपे करी रह्या छे, नहि के मूल वस्तुने पण ढपी जाय एवु कोइ स्वतत्र अनुष्ठान के जेनी पाछल ३।४ कलाक जेटलो समय लगाववो योग्य गणी शकाय, प्रतिष्ठानु मूल अंग नन्द्यावर्त्तनु आलेखन-पूजन छे, ए कार्य प्रतिष्ठाचार्यनु छे, पण आजे प्रतिष्ठाचार्य ते तो जाणे एनी साथे

१-जेमणे आ विस्तृत पूजन लख्यु छे तेमनो आशय ए न हतो के स्नात्र के प्रतिष्ठामा ग्रह पूजन आ प्रमाणे ज थाय, लेखके जे प्रथम संक्षिप्त पूजन लख्यु छे तेज प्रतिष्ठा-पूजा प्रसगे करवानु छे, आ विस्तृत पूजन शा माटे लख्यु छे एनु कारण लेखके स्पष्ट कही दीधु छे, 'इति ग्रह-दिक्पाल सक्षेप पूजन विधि" तथा हवइ प्रतिकूल ग्रहनइ प्रसन्न करवा प्रसगे विस्तारे पूजन लिखिइ छइ"

जे व्यक्तिए आ विस्तारे पूजन लख्यु छे ते पोते स्पष्ट जणावे छे के आ पूजन प्रतिकूल ग्रहने प्रसन्न करवा माटे छे नहि के प्रतिष्ठादि विधानोमा करवा माटे, परन्तु आधुनिक विधिकारोए 'हवइ' इत्यादि कारण ज्ञापक पाठ ज पुस्तकमाथी काढी नाख्यो छे अने आ विस्तृत कारणिक पूजनने सामान्य बनावी दीधु छे दिक्पालो प्रतिकूल ज नथी होता छता तेमनु पण एज प्रकारे पूजन कराय छे ए केवु अज्ञान छे ?

आजना घणाक प्रतिष्ठागुरुओमां उक्त कार्यो करवानी आवडत न होवाना कारणे आमांनां केटलांक कामो विधिकार गृहस्थो करीने कार्य चलावे छे, आवां कारणोथी आजना विधिकारो प्रतिष्ठामां पोताने प्रधान कार्यवाहक मानी ले छे. एटलुं ज नहि पण प्रतिष्ठानी सामग्री तरीके शी शी वस्तुओ केटकेटला प्रमाणमां जोइशे, तेनी सूचीओ पण विधिकारो ज लखी आपे अथवा तेमनी सलाहथी लखाय त्यारे ज काम चाले अन्यथा चालता कामे प्रतिष्ठा करावनारने बजारमां दोडवुं पडे.

आपणे जोइ आव्या छीये के पूर्वकालमां दिक्पालोना पाटला उपर वस्त्राच्छादन न हतुं अने ग्रहोनो तो पाटलो ज न हतो, ए बधुं धीरे धीरे अस्तित्वमां आव्युं छे, छतां आजे प्रत्येक दिक्पाल अने ग्रहने माटे वर्णानुसारे रंगवालां वस्त्रो होय तो ज विधिमां काम आवे अने विधि थइ शके छे नहि तो गाडुं अटकी पडे छे. हुं इच्छुं छुं के आवी चालती प्रवृत्तिओने ज विधिनुं सर्वस्व मानी बेठेला विधिकारो पूर्वकालीन अने आधुनिक विधिविधानोमां पडी गयेला आकाश अने पाताल जेवडा अंतरनो विचार करशे तो जरूर तेओ पोतानी दृष्टिने विकसावी शकशे.

आजथी लगभग ४ दायका उपर ग्रहो दिक्पालोनुं पूजन घणी ज सादी रीते करातुं हतुं, पण श्रीरत्नशेखरसूरिजीने नामे चढेल "जलयात्रादि विधि" पुस्तक छपाइने बहार पडया पछी धीरे धीरे तेमां छापेल विधि अनुष्ठाननी प्रवृत्ति थवा मांडी, विशेषे करीने बिंबप्रवेश विधिमां ग्रह–दिक्पालोनुं पूजन ए ग्रन्थना आधारे थवा मांडयुं एमां आपेल क्रम प्रमाणे शांतिस्नात्र के अष्टोत्तरीमां 'वरकणयसंखविद्दुम' आ गाथाने प्रथम राखवानी केटलाक विधिकारोए प्रवृत्ति पाडी, विस्तृतपणे ग्रह–दिक्पालोनुं पूजन करवानुं पण चालु कर्युं, पाछलथी बहार पाडेल "बिम्बप्रवेशविधि" नामना पुस्तकमां पण ए ज विस्तृत

२८–प्र० अंजनशलाका कोण करावी शके ? ए संबन्धमां आचारदिनकर सिवाय बीजा कोइ ग्रन्थमां लेख छे के ?

उ० घणा खरा प्रतिष्ठाकल्पोमां लखे छे के आचार्यनो प्रतिष्ठामंत्र सूरिमंत्र छे अने सामान्य साधु माटे 'वीरे वीरे' इत्यादि वर्धमान विद्या, जो सामान्य साधुने अंजन प्रतिष्ठानो अधिकार न होत तो तेने आश्रित प्रतिष्ठामंत्र न लखत.

२९–प्र० जिनमंदिरमां लोहधातु न वपराय आम केटलाक आचार्यो कहे छे ते बराबर छे ?

उ० देहरासर जे वर्तमान काले प्रायः पत्थरथी बंधाय छे तेनी लगभग हजार वर्षनी स्थिति होय छे, आवा चिर स्थायी कामोमां लोहना पाटडा, पाउ वगेरे न नाखवानुं कहेवाय ते यौक्तिक छे, पत्थरनी अपेक्षाए लोहना पाटडानी स्थिति अत्यल्प होय छे, वली लोहना पाउ कालान्तरे काटथी फूलाइ जइने पाटडा अथवा दासाओना छेडा फाडी नाखे छे तेथी ना पडाय छे, बाकी लोहने नीच धातु समजी ना पडाती नथी, पूर्वकालमां तो लोहनी पंचरत्नमां गणना थती हती अने कृष्ण लोहनी मुद्रिकानो प्रतिष्ठामां उपयोग थतो हतो.

३०–प्र० केटलाक विधिकारो विधिमां न होय तो य अमुक मांत्रिक शब्दो वधारीने बोले छे ए योग्य छे ?

उ० विधिगत मंत्रोमां जे जे शब्दो परापूर्वथी बोलाता होय ते ज बोलवा जोइये पोताना तरफथी कंइ पण नवुं उमेरवुं जोइये नहिं, जो आम दरेक विधिकार थोडुं थोडुं वधारतो जाय तो विधिमां अव्यवस्था वधी जाय माटे कोइये पण पोतानी कल्पनाथी विधिमां न्यूनाधिक्य करवुं नहिं.

उ० अधिवासनानो अर्थ 'मत्रवु' ए थाय छे, केसर पुष्पादि द्रव्योने मंत्रवडे मत्रीने तैयार करवा ते अधिवासना, तेज प्रतिमा विगेरेने तेना मत्रवडे मत्रवु ते अधिवासना कहेवाय छे अने मत्रेली वस्तु 'अधिवासित' कहेवाय छे.

२– प्र० आसननो अर्थ शो ? कोइ आसन एटले बेसवु एवो अर्थ करे छे ज्यारे कोइ आसनने बेसवानु स्थान कहे छे आ बेमा खरो अर्थ कयो ?

उ० आसननो अर्थ बेसवानु 'स्थान' एज खरो छे, शिल्पमा देवताने जे बेसवानु स्थान होय तेने माटे 'आसन' शब्दनो प्रयोग थाय छे, प्रतिमा बेठी होय के उभी पण एने बेसाडवानु अथवा उभी स्थापवानुं जे स्थान होय छे ते आसन–सिंहासन आदि नामोथी ओलखाय छे. 'आसन' नो 'बेसवु' ए अर्थ करवामां आवे तो 'उभी' प्रतिमाने माटे वाधो आवे छे कारण के उभी प्रतिमा माटे कंइ बीजु विधान नथी

३–प्र० अर्वाचीन प्रतिष्ठा–पूजा विधिओमा 'सेवत्रा' नाम पुष्पाने माटे ठेक ठेकाणे आवे छे तो सेवत्रां पुष्पो केवा थता हशे ? आजे सेवत्रा पुष्पो होय छे खरा ?

उ० आजकालना गुलाबना पुष्पो एज विधिकारोना सेवत्रा' छे, 'गुलाब' नाम उर्दुभाषानुं छे एनो संस्कृतमा अर्थ 'कलीय पुष्प' थाय छे, 'सेवत्रा' ए 'शतपत्र' शब्दनो अपभ्रंश छे, संस्कृत शब्दकोशोमां 'जलकमलने' 'सहस्रपत्र' अने स्थलकमलने 'शतपत्र' नामथी उल्लेख्यो छे (सहस्रपत्र कमल, शतपत्र कुशेशयम् ।) "कण्टका पत्रनाले' इत्यादि वाक्योमा कमलने कांटा बताव्या छे ते आ, शतपत्र–गुलाबने आश्रीने ज समजवाना छे, जलकमलने अंगे नहि.

कालना विधान करनारा स्नात्रकारो पैकीना केटलाको प्रतिष्ठा प्रसंगे अमृत झराववानो चमत्कार देखाडीने वाह वाह करावे छे पण तेवा विधिकारो अने तेवी प्रवृत्तिमां लाभ मानता प्रतिष्ठाचार्योंए आवी प्रवृत्तिओ बंध करवी—करावची जोइये. विधिकार डाभनी पींछीथी पाणी छांटे अने स्थापना पछी ते जोइने लोको अमृत झर्यानुं कहे एनो मौनपणे स्वीकार करवो एमां कंइ ज लाभ नथी लोको तमारा छांटेला मंत्रित जलनां बिंदुओ जोइने अमृत झर्यानुं कहे तो तमारे खरी वस्तुस्थिति प्रकट करवी जोइये. प्रतिष्ठा प्रसंगे आवी सरलता अने निखालसता राखवी एज क्रियाकारकनो मुख्य गुण छे.

८—विधिकारोनी शंका अने समाधान—आधुनिक विधिकारोमां परिभापाओ, विधिविधानो, प्रतिष्ठाचार्यो, स्नात्रकारो अने सामग्रीविषयक भिन्न भिन्न शंकाओ चाली रही छे, छतां नथी एक बीजाने कोइ पूछतुं अने नथी बीजाने पूछवाथी सीधो उत्तर मलतो, जेओ साथे विधानना कामे जाय छे ते पैकीनी कोइ पण व्यक्ति भले एक बीजाने मन खोलीने ए संबन्धमां वात करे, बाकी भिन्न मंडलीमां जनार कोइ विधिकार पोते-विशेष जाणकार बीजा विधिकारने पूछीने कंइ नवुं मेळवी शकतो नथी एम अमने जणायुं छे, जाणे के विधिकारोना जुदा जुदा संप्रदायो बंधाइ गया छे. दरेक मंडलीना अनुयायी विधिकारो पोताना क्रियाविधानोने श्रेष्ठ गणे छे अने बीजाना विधानने उदासीन भावे जुए छे, ज्यारे केटलाको तो एक बीजाना विधानोनी टीकाओ सूधां करी बेसे छे, आ परिस्थितिने सुधारवी घटे छे.

शंकाविषयक प्रश्नोत्तरो—

१– प्र० विधिमां जे अधिवासना विधि आवे छे एनो शो अर्थ थाय छे ?

४—प्रतिष्ठा थया पछी तरत ज एटले तेज दिवसे कोइ कारणे गाममा अकस्मात् लडाइ झगडो के मारामारी जेवा क्लेशकारी दुर्निमित्तो बनी जाय तो ते प्रतिष्ठा अवश्य अवनतिकारिणि बने छे, माटे प्रतिष्ठा करावनार संघ के व्यक्तिए आवा दुर्निमित्तो न बने एनी तकेदारी राखवी जोइये.

५—" श्रेयासि बहु विघ्नानि " ए कथनानुसार प्रतिष्ठा जेवा कल्याणकारी कामोमां विघ्ननाखनाराओ पण होय छे, मंडपमा फोसफरस नाखीने अथवा बीजी रीते मंडप आदिमा आग लगाडीने रंगमां भंग करनाराओ होय छे, माटे प्रतिष्ठाचार्यादि अधिकारी वर्गे आवी घटनाओ बनवा न पामे एवो बंदोबस्त अवश्य राखवो जोइये

प्रतिष्ठाचार्य अने स्नात्रकारोनो मुख्य गुण—

आजे घणाक स्नात्रकारोमा अने केटलाक प्रतिष्ठाचार्योमा पण प्रतिष्ठाने अंगे कइक चमत्कार देखाडीने 'प्रतिष्ठा सारी थइ' एवी लोकोना मन उपर छाप पाडवानी वृत्तिओ होय छे, श्रीपूज्यो तथा यतियोनी अध्यक्षतामा थती प्रतिष्ठाओमां-शान्तिस्नात्रोमा बलि क्षेपना प्रसगे आखु नालिएर आकाशमा उछालीने तेनुं खाली खोखु नीचे पडतु देखाडी लोकोने आश्चर्य चकित करवाथी—लोको मानता 'जो नालिएरमानो गोलो देवताओए लेइ लीधो अने काचलानु खोखु नीचे नाखी दीधु' खरी वात तो ए हती के बलीक्षेप करनार यतियो अने भोजको खानगीमा चोटी सहित नालिएर फोडीने तेमांथी गोलो काढी लेता अने काचलां ठीक करी उपर गेरासूत्र वींटी नालिएर बलिराकला उपर मूकता अने बलिक्षेप करता नालिएर पण उछालता अने नीचे पडता खोखु जोइ लोको चमत्कार मानता, पण वर्तमान समयमा आ प्रकारनु पाखंड तो बंध पडी गयु छे, आज

१—निमित्त जोवानो मुख्य प्रकार ए छे–प्रतिष्ठानुं मुहूर्त जोवराववुं होय त्यारे स्थानिक ज्योतिषी श्रद्धापात्र होय तो तेने घरे जइने अने गाममां तेवो ज्योतिषी न होय तो बहारगाम कोइ जोषी अथवा श्रद्धापात्र आचार्य साधु वगेरे जाणकार होय तेनी पासे मुहूर्त जोवराववा जवुं. गामथी प्रयाण करती वेलाए शकुनो जोवां, जो अप्रार्थित शुभ शकुनो थइ जाय तो समजवुं के प्रतिष्ठा धारेला समयमां थइ जशे.

२—पण आ शकुनो भविष्यनी उन्नति अवनतिने निश्चितपणे जणावी शकतां नथी, आने माटे मुहूर्त जोनारे तात्कालिक लग्न कुंडली काढीने जोवी, जो कुंडलीमां लग्न, धन, पुत्र, स्त्री, लाभस्थानो नगडयां न होय अने आठमा स्थानमां कोइ पण वर्जित ग्रह न होय तो जोषीए मुहूर्त आपवुं, जो तात्कालिक प्रश्नमां लग्ननी व्यवस्था खराब होय तो कही देवुं के 'कोइ बीजा प्रसंगे पूछवा आवजो,' जो पूछनार ज्योतिषीनी सलाह मानीने ते टांणे प्रतिष्ठा बंध राखशे तो तेओ प्रतिष्ठाने दोषनुं निमित्त बनतां बचावशे अने अशुभनो उदय मटी गया पछी शुभ निमित्त लब्ध लग्नमां प्रतिष्ठा करावीने अभ्युदयना भागी थशे.

३—प्रतिष्ठाचार्यनुं आत्मबल–जेम शुभाशुभ निमित्तो अभ्युदयानभ्युदयने सूचवे छे तेम प्रतिष्ठाचार्यनुं आत्मबल पण एमां सहकार आपे छे, जेना आचरणो शुद्ध होय, जेनुं मन दृढ संकल्प होय अने जेनो आत्मा शुभ परिणामी होय तेवा प्रतिष्ठाचार्यना हाथे थयेली प्रतिष्ठा प्रायः शुभ परिणाम लावे छे, एथी विपरीत जे प्रतिष्ठाचार्य आत्म विशुद्धिहीन होय, भग्नहृदयी होय, रोगादिकारणो वडे शारीरिक अने विशेषे करीने मानसिक शक्तिओ खोइ बेठेल होय तेवाना हाथे थयेल प्रतिष्ठा परिणामे अभ्युदयजनक निवडती नथी.

त्यारे सर्वोत्कृष्ट उत्सव सर्वोत्कृष्ट आकर्षण अने सर्वाधिक सघ समवाय एकत्र थतो हतो आ विषयमा बहुश्रुत आचार्य श्रीहरिभद्रसूरि कहे छे—

"निष्पन्नस्यैव खलु, जिनबिंबस्योदिता प्रतिष्ठाशु । दशदिवसाभ्यान्तरतः,सा च त्रिविधा समासेन
व्यक्त्याख्या खल्वेका, क्षेत्राख्या चापरा महाख्या च । यस्तीर्थकृद्यदा किल, तस्य तदाद्येति समयविदः ॥
ऋषभाद्यानां तु तथा, सर्वेषामेव मध्यमा ज्ञेया । सप्तत्यधिकशतस्य तु, चरमेह महाप्रतिष्ठेति ॥"

आ पद्योनो भावार्थ प्रथमना विवेचनमां कहेवाइ गयो छे. आ त्रणेय प्रकारनी प्रतिष्ठाओ अनुक्रमे १ व्यक्ति प्रतिष्ठा २ क्षेत्रप्रतिष्ठा अने ३ महाप्रतिष्ठा आ नामोथी ओलखाती हती, व्यक्ति प्रतिष्ठा १ कनिष्ठा २ क्षेत्र प्रतिष्ठा मध्यमा अने ३ महाप्रतिष्ठा उत्कृष्टा कहेवाती हती, आ कनिष्ठादि संज्ञाओ विधिआश्रित नहिं पण प्रतिमाओनी संख्याने अनुसारे गणाती हती, वर्तमान कालीन प्रतिष्ठाओमा प्रतिमाओने लेइने नहि पण उत्सवनी, जनसंख्यानी तथा उपजनी दृष्टिए प्रतिष्ठाओ कनिष्ठ उत्कृष्ट मनाय छे जे यथार्थ नथी

प्रतिष्ठाओने अंगे लोककल्पनाओ—

वर्तमान कालीन लोक मानस एवु बनी गयु छे के प्रतिष्ठा थया पछी प्रतिष्ठाकारक व्यक्ति अथवा संघनी वा गामनी उन्नति के अवनति जणाय तो ए प्रतिष्ठाना फलरूपे ज गणाय छे पण ए मान्यता यथार्थ नथी, खरी वात तो ए छे के प्रतिष्ठा कार्यना प्रारंभमा थता शुभाशुभ निमित्तो ध्यानमा राखवा अने जो उपराउपरी प्रतिष्ठा कार्यनी प्रवृत्तिमा अशुभ निमित्तो थता होय तो ते अवसरे प्रतिष्ठा बंध राखवी जोइये जेथी अशुभ परिणामनी जवाबदारी प्रतिष्ठा उपर आवे नहि.

घणा फेर छे पणि साध्य एक माटे सर्व सफल छे. इम सर्व धर्मकृत्य मांहि जाणवुं इहां वली विशेषबीज पल्लव गुरुपरंपराथी जाणवां।"

उपरना उल्लेखथी स्पष्ट थाय छे के तत्कालीन प्रचलित अष्टोत्तरीमां करेल विकृतिने अंगे कांतिसागरे पोतानो बचाव कर्यो छे पण पूर्वाचार्य कृत च्यार ग्रन्थोमां के जेनो एमणे आधाररूपे निर्देश कर्यो छे ते कोइमां पण अष्टोत्तरीनुं बीज नथी एटले आ ग्रन्थोनो नामोल्लेख निरर्थक छे अने गणधरोनी सामाचारीमां घणा फेर बतावीने तो श्री कान्तिसागरे सिद्धान्त विषयक पोताना अज्ञाननो ज परिचय आप्यो छे, वली आ स्थले बीज पल्लवोनो निर्देश करीने लेखक पोतानुं यतिपणुं साबित कर्युं छे, नहिं तो आ प्रसंगे ए उल्लेखनी कंइ ज आवश्यकता हती नहि, बिंबप्रवेश अने अष्टोत्तरी स्नात्रनो विधिओ के जेना आधारे विधिकारो आजकाल प्रतिष्ठाओ अने अष्टोत्तरी स्नात्र पूजाओ करावे छे ते क्या समयमां केवा पुरुषद्वारा संकलित थइ छे ए वात आजना प्रतिष्ठाचार्यो तथा विधिकारो समजे एवा आशयथी अमारे ए अंगे थोडुंक विवेचन करवुं पड्युं छे.

७–पूर्वकालीनप्रतिष्ठाओ अने प्रतिष्ठाना फल विषे लोकमानस

पूर्वकालीन प्रतिष्ठाओ घणी सादी अने सुख साध्य हती, जिनभवननुं कार्य समाप्त थवा आवतुं एटले शुभ समय जोइ प्रतिमा तैयार करावाती अने जिनबिंब तैयार थतुं के दश दिवसनी अंदर ज तेनी प्रतिष्ठा थइने जिनचैत्य साधिष्ठान थइ जतुं, समवाय के गृहस्थ व्यक्ति कोइ एक शासनपति तीर्थंकर विशेषनी प्रतिष्ठा करावतो त्यारे आसपासना गामोमां पण भाग्ये ज तेनी खबर पहोंचती, पण ते क्षेत्रना उत्सर्पिण्यादि भावी चोवीसे तीर्थंकरोनी प्रतिष्ठा थती त्यारे कंइक विशेष आकर्षक थती अने संघसमुदाय एकत्र थतो अने ज्यारे भरतादि पंदर क्षेत्रना सर्वतीर्थंकरोनी अर्थात् १७० जिननी प्रतिष्ठा थती

अने यतियोना प्राबल्यनो हतो, आ समय दर्मियान प्रतिष्ठाओ, पूजाओ, उद्यापनो अने बीजा जे काइ महत्त्वपूर्ण धार्मिक कार्यो थता तेमा विधिकार तरीकेनी मुख्यता श्रीपूज्योनी अथवा तेमना आज्ञाकारी यतियोनी रहेती, सामग्रीनी सूचिओ तेमना हाथे लखाती अने ते सामग्रीनो उपयोग तेमनी इच्छानुसार थतो, घणो खरो औपयोगयोगी सामान तेमना उपाश्रयोमा पहोंची जतो अने पैसा टकाने अंगे पण घणा गोटाला थता छता तेमने ए विषयमा कोइ पण कइ कही शकतु नहि

आवा गोलमालना समयमा विधिओमा सामग्रीगत फेरफारो घणा थइ गया, सामाननी यादिओ लखनाराओए वस्त्रो, सुगंधियो, मेवाओ, फलो, मिठाइयो अने रोकड द्रव्य विषयक सख्यामा यथेच्छ वधारा कर्यो, सामाननी ते यादिओ पाछलथी विधि पुस्तकोमा दाखल थइ अने ते लिखित पुस्तको उपरथी तेमज ते उपरथी पुस्तक प्रकाशको द्वारा छपायेल पुस्तको उपरथी विधान करावता शिखेल विधिकार गृहस्थोए ते विधिओ तेम ज तेमा लखेल सामग्री प्रमाणे विधिविधान कराववानी प्रवृत्ति पाडी, वीसमी सदीथी आजे एकवीसमी शताब्दीमा चालता विकृतविधि-पुस्तकोमा जणावेल सामग्री मेलवीने घणा विधिकारो प्रतिष्ठाओ अने महापूजाओना विधि-विधानो करावे छे, पण आ आधुनिक विधियो केवा विधिकारोने हाथे केवी रीते विकृत थइ छे ए वस्तु जो समजी लेवाय तो उक्त पुस्तकोक्त सामग्रीविषयक पोतानो आग्रह अवश्य छोडे ज एमा शका नथी.

अष्टोत्तरी स्नात्रनी समाप्तिमा श्री कांतिसागर लखे छे " इति श्री अष्टोत्तरी स्नात्रविधि. । अत्र सामाचारी विशेष कोइ क्रियान्तर घणा छे ते देखी व्यामोह न करवो इहा श्राद्धविधि, प्रतिष्ठाकल्प, जिरण स्नात्र, कल्पसामाचारी प्रमुख ग्रन्थावलोकन करी युक्ति विधि लख्यो छे, कोइ अरिहंत साध्ये क्रियान्तर होय ते साध्य शुभ माटे सफल छे. गणधर सामाचारीमाहि पणि

स्नात्र विधिओमां स्नात्रना अभिषेको थया पछी प्रतिमाओ साफ करी पूजीने चैत्यवन्दन कर्या पछी स्नात्र भणावी नैवेद्य ढोकवानुं अने बीजीवार देववन्दन करवानुं विधान दाखल थयुं, ए उपरांत बीजो पण साधारण विधिगत फेरफार थयो, छतांये खर्चनी दृष्टिए आमां बहु परिवर्तन थयुं नथी.

सं० १८८७ पछी आज सुधीना १२५ वर्षोमां आ पूजामां केटलांये परिवर्तनो थइ गयां, अष्टमंगलनी पाटलीनो पाटलो थयो, वस्त्रोमां यथेच्छ वृद्धि थइ, रूपैया नामथी पूर्वे मात्र बे चोखंडा रूपीया हता तेने बदले आजे रोकडा रूपैया वधीने १५० सुधीनी हदे पहोंच्या प्रति अभिषेके १ रोकडो रूपैयो मूकाय तो ज स्नात्र पूजा सारी थइ गणाय.

ग्रह-दिक्‌पाल-अष्टमंगलना पाटलाओ उपर रूपानाणुं मूकवानुं चालु थयुं, वा थवा लाग्युं, अट्ठाहि उत्सव स्नात्रने अंगे अनिवार्य थयो.

अट्ठाहि महोत्सव, जलयात्रा, कुंभ स्थापना, स्मरणपाठ, अखंडदीप धूप आदि ए बधी वस्तुओए छेल्लां १०० वर्षोमां अष्टोत्तरीनी विधिमां प्रवेशीने आ स्नात्रपूजाने के जे पूर्वे सुख साध्य हती ते दुःखसाध्य बनावी दीधी, जे स्नात्रपूजा पूर्वे थोडा खर्चे थोडा समयमां भणावी शकाती हती ते आजे घणा खर्चे घणा श्रमे भणावी शकाय तेवी बनी गइ छे.

ए विषयमां प्रश्न थवो स्वाभाविक छे के लगभग २५० वर्षोमां जे परिवर्त्तन न थयुं ते छेल्लां १०० वर्षोमां केम थयुं ? अने ते पण सामग्रीने ज अंगे ?, इतिहासना जाणनाराओ माटे आनो उत्तर आपवो मुश्केल नथी, ओगणीशमा सैकानुं अन्तिम चरण अने वीसमी शताब्दीनो पूर्वार्ध ए ७५ वर्षनो गालो परिग्रहधारी अने शिथिलाचारनी अन्तिम 'हदे पहोंचेला श्रीपूज्यो

दिशापरत्वे चदननी टीलिओ देइने कराती, हती अने सुगधी द्रव्योथी–पुष्पोथी पूजन करातु हतु, वस्त्रपूजानी के वस्त्राछादननी रूड पण चर्चा न हती.

नन्द्यावर्तनु वस्त्र जे पूर्वे २४ हाथनु अखड गणातु हतु तेनुं प्रमाण एकदम वधारीने २९१ हाथनु पहेल वहेलां श्रीवर्धमानसूरिजीए जणाव्यु, एमना बृहन्नन्द्यावर्तमा सर्व मलीने २९१ अधिकारी देव देवी गण होइ प्रत्येक माटे एक एक हस्त वस्त्र गणी लीधु, एटले ए पछी धीरे धीरे वस्त्र सामग्रीमा वृद्धि थवा माडी, जो के बीजा प्रतिष्ठाकल्पकारोए एमना उक्त सिद्धान्तने तद्रूपे तो मान्य न कर्यो, छता वस्त्रना सबन्धमा ते पछी आचार्योए कइक शरुआत जरूर करी, दिशापालोना पाटला उपर पहेला वस्त्राच्छादननो रिवाज न हतो ते एक वस्त्र ढाकवानी हिमायत करीने चालू कर्यो, ग्रहोनो पाटलो अस्तित्वमा आव्यो एटलु ज नहि, ते उपर प्रत्येक ग्रहना वर्ण प्रमाणेनु वस्त्र चढाववानो प्रचार पण थयो.

✓ ४ वेदि (माटीना-वर्तनोनी वेदि)ओ के जे माटे पूर्वे वस्त्रनी वात ज न हती, ते पदरमा सोलमा सैकाथी प्रत्येक १२।१२ हाथ वस्त्रनो अधिकार मेलवी चुकी हती

जलयात्राना कुभो नन्द्यावर्त अने जिनप्रतिमा पासे स्थापन कराता, कुभो उपर पूर्वे जवाराना पात्रो मुकाता हता पण पाछलथी जवारापात्रोनु स्थान नालियेर अने रगीन वस्त्रे ग्रहण कर्यु जे आज पर्यन्त चाल्यु आवे छे

आम धीमे धीमे प्रतिष्ठाविधिओमा वस्त्रसामग्रीए एक महत्त्वनु स्थान प्राप्त करी लीधु छे आजे ग्रहो तथा दिशापालोना पूजन माटे नियत रगना रेशमी वस्त्रो ज जोइये, एम आजे नियत रगना अनेक वस्त्रो खरीदाइने आवे त्यारे ज प्रतिष्ठा के

शान्तिस्नात्र जेवी धार्मिक क्रियाओ थइ शके छे.

(३) क्रयाणको—

निर्वाणकलिकानी सामग्री-सूचीमां 'क्रयाणक'नो उल्लेख नथी, पण तेमां उल्लिखित 'अष्टोत्तरशत मातृपुटिका' जो क्रयाणक पुटिका होय तो नवाई नथी, अने जो एम ज होय तो ए कहेवुं जोइये के पादलिप्तसूरिना समय सुधीमां ३६० क्रयाणको नहि पण १०८ क्रयाणको ज महत्त्वनां गणातां हशे अने तेनी ज प्रतिष्ठामां उपयोगिता स्वीकाराई हशे, पछी धीमे धीमे १०८ नुं स्थान ३६० क्रयाणकोए ग्रहण कर्युं हशे अने १०८ ने वदले ३६० क्रयाणकोनी पुडिओ आगल धरावा मांडी हशे. श्रीचन्द्रसूरिजीना समय पर्यन्त प्रत्येक क्रयाणकनी जुदी जुदी पुडिओ बन्धाती हती. जिनप्रभना समयमां बधां क्रयाणकोनो एक पुडो बांधवानी प्रवृत्ति चालू थइ गइ हती छतां जिनप्रभसूरि पोते ३६० पुडिओ बांधीने धरवी जोइये ए मतना हता, पण ते पछी बधां क्रयाणको भेगां बांधी एक पुडो करीने प्रतिमानी आगे मूकवानो सार्वत्रिक प्रचार थइ गयो हतो जे आज पर्यन्त तेज प्रमाणे कराय छे.

(४) मुद्रा अर्थात् रूपैया पैसा—

पूर्वकालीन प्रतिष्ठाओमां अथवा तो स्नात्रोमां रूपैया पैसानो सामग्री रूपे उपयोग न हतो, इनाम के दानमां नाणांने अवकाश हतो, बाकी पूजापामां तो वास, गंध, पुष्प, धूप आदिने ज स्थान मल्युं हतुं, पण धीमे धीमे ए विधानोमां नाणांए पण प्रवेश कर्यो. प्रथम दोकडे (त्रांबाना अडधियाए) विधिमां पोतानुं स्थान जमाव्युं अने एनी पाछल रूपैयो पण अंदर घुस्यो,

प्रथम एकेक पूजाना पाटला उपर एक एक रुपैयो चढवा लाग्यो. धीरे धीरे पद प्रति रूपानाणु जोइये आवो आग्रह थवा माड्यो अने रूपैयो नहि तो आठ आना, पावली के छेवटे रूपानी बे आनी तो जोइये ज एम कहीने विधिकारोए ते मूकाववा माडी. आजे शातिस्नात्र होय के अष्टोत्तरी स्नात्र होय पण अभिषेक जेटला रुपैया आगल पाट उपर मुकायतो ज पूजा सारी भणावी कहेवाय, भले ते मूकायेल रुपैयानु गमे ते थाय, पूजारी (गोठी) ले, उपदेशक साधु अथवा यति ले के पछी ते भंडारमा जाय, विधिकारोए तो पोतानी रूढि चालू ज राखवी !

(५) मेवो अथवा सूका फलो—

निर्वाणकलिकामा प्रतिष्ठानी सामग्रीमा मेवा अथवा सूका फलोनु विधान नथी, नालियेरने फल रूपे अने सोपारीने तबोलना अग तरीके गणी लेवामा आवे तो तेमां मेवानी कोइ पण चीज लीधी दृष्टिगोचर थती नथी. ज्यारे ते पछीना दरेक प्रतिष्ठाकल्पमां मेवो अथवा सूका फलो प्रतिष्ठाविधिना एक अगरूपे रूढ थइ गया छे.

(६) नैवेद्य—

बीजी अनेक सामग्रीओनी जेम निर्वाणकलिका पछीना कल्पोमा नैवेद्य सामग्रीनी पण क्रमे करीने घणी ज वृद्धि थइ छे, नि० कलिकामा पक्वान्न तरीके १–पायस दूधपाक, २ गुडपिंड (गोलना पुडला) ३ कृसरा (खीचडी) ४ दध्योदन (दहिनो करबो) ५ सुकुमारिका (सोहाली–साकली) ६ शाल्योदन (शालना तादला) ७ सिद्धपिण्डक (घीमा तलेली पिडली–मुठिया) आ सात नामो आवे छे अने ए नैवेद्य पण नन्द्यावर्तना पाटला आगल मूकवाना छे, जिन प्रतिमा आगल नैवेद्य

चढाववानो तेमां क्यांइ उल्लेख नथी, परन्तु ए पछीना प्रत्येक प्रतिष्ठाकल्पमां उक्त नंद्यावर्तना नैवेद्य उपरान्त प्रतिमा आगल मूकवाना २५ काकरिया (लाडवा, जेनुं बीजुं प्राचीन नाम 'मोरिंडा' पण हतुं), खाजां, घेबर, साटा, ठोर, मरकी, पेंडा आदि अनेक पक्वान्नो विधिमां अनिवार्य थइ पडयां छे. ए सिवाय ग्रह दिशापालोना पूजनमां वपरातां नैवेद्य तो जुदां ज, चूरमाना लाडवा, तलना लाडवा, अडदना लाडवा, उपरांत मगनी दालना, धाणीना, फुलीना, मोतीया, घेसीदलना लाडवा अने बीजां केटलांये आवां पक्वान्नो तैयार थाय त्यारे ज ग्रहो अने दिक्पालोनुं पूजन थइ शके. अष्टमंगलनो पाटलो जे अक्ष-तथी मांगलिक ८ आकारो आलेखवा माटे प्रारंभमां उपयोगमां लेवातो हतो ते उपर पण आजे अक्षतो उपरान्त फल, फूल, नाणां अने वस्त्र चढे छे, अने ए बधुं विधिकारो एवी अदाथी करावे छे के जाणे एम कर्या सिवाय विधि अपूर्ण ज रही जती होय!.

(७) अंजन—

पादलिप्तसूरिजीए तथा ते पछीना 'आचारविधि' आदिना कर्ताओए 'अंजन' तरीके केवल 'मधुघृत'नो ज उपयोग करवा जणाव्युं छे, पण ते पछीना प्रतिष्ठाकल्पकारोए नेत्रोन्मीलन माटे अनेक पदार्थोनो उपयोग करवा मांडयो, कोइए कालो सरमो, साकर अने घी, कोइए रातो सरमो साकर अने घी, कोइए आमां बरास वधार्यो तो कोइए सरमो, साकर, बरास, कस्तूरी, मोती, प्रवालां, सोनुं अने चांदी आदिनो वधारो करी नेत्रांजन तैयार करवानुं विधान करीने—

"रूप्यकचोलकस्थेन, शुद्धेन मधुसर्पिषा। नयनोन्मीलनं कुर्यात्, सूरिः स्वर्णशलाकया ॥१॥"

आ विधानमां आमूल-चूल परिवर्तन करी नाख्युं छे!.

(८) प्रकीर्णक—

उपर अमोए जे केटलाक उदाहरणो आप्या छे ते विशेष महत्त्वना छे, बाकी साधारण परिवर्तनो तो एटला बधा थया छे के जेनी गणना करवी पण कठिन छे. प्राचीन प्रतिष्ठाओमा शुं न हतु अने पाछलथी विधिमां शुं दाखल थयुं ए जणाववाने उपर केटलाक उदाहरणो आप्या छे, एथी विपरीत पूर्वे शु हतुं अने आजे विधिमां शुं नथी आ विषयना केटलाक दाखला आगेना प्रकरणमां जोवाशे

विधानमांथी निकली गयेली वस्तुओ—

जेम विधानमा घणी वस्तुओ नवी दाखल थइ छे, तेम थोडीक वस्तुओ जे प्राचीन विधानोमां हती ते नव्य प्रतिष्ठाविधिओमांथी अदृश्य पण थइ छे. ए विषयना केटलाक उदाहरणो नीचे प्रमाणे छेः—

(१) निर्वाणकलिकामा बलिनी साथे कदमूलना ग्रहणनो त्रण वार उल्लेख थयेल छे.

(२) निर्वाणकलिकानी फलसूचीमा 'बोर' तथा 'वृन्ताक'नी प्रशस्त फल तरीके गणना थयेली छे.

(३) निर्वाणकलिकामा 'ऊर्णासूत्र' तथा 'लोहमुद्रिका'नो उपकरण तरीके स्वीकार थयेल छे, परन्तु ए पछीना कोइ पण प्रतिष्ठाकल्पमां सामग्रीमा उपर्युक्त पदार्थोनी परिगणना थइ नथी.

(४) निर्वाणकलिकामां एक स्थपतिनो अभिषेक मानेलो छे, स्थपति (शिल्पी) प्रथम एक कलश वडे प्रतिमानो अभिषेक करी लेतो ते पछी बीजा ४ स्नात्रकारो अभिषेक करता, आ विधिनो श्रीजिनप्रभसूरिजीए स्वीकार पण कर्यो छे, उता बीजा कोइ पण कल्पकारे ए विधिनुं समर्थन कर्युं जणातु नथी.

(५) निर्वाणकलिकामां नन्द्यावर्त ७ वृत्तोथी बनावी तेना प्रथम वलयना मध्य भागे अरिहंत, पूर्वे सिद्ध, दक्षिणे आचार्य, पश्चिमे उपाध्याय, उत्तरे सर्व साधुपदनुं अने आग्नेयादि ४ कोणोमां अनुक्रमे ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने शुची विद्यानुं आलेखन अने पूजन करवानुं विधान छे, पण बीजा प्रतिष्ठाकल्पकारोए प्रथम वलयमां नन्द्यावर्त अने एने फरता आठ दिशा भागोमां अनुक्रमे १ अरिहन्त २ सिद्ध ३ आचार्य ४ उपाध्याय ५ सर्वसाधु ६ दर्शन ७ ज्ञान ८ चारित्र ए आठनुं स्थापन पूजन करवानो आदेश कर्यो छे, शुचि विद्याने छोडी दीधी छे.

(६) पूर्वे स्थिर प्रतिष्ठामां प्रतिमा नीचे पंचधातुक स्थापन करातुं हतुं जेमां लोहधातुनो पण समावेश थतो हतो, पण पाछलना प्रतिष्ठाकल्पकारोए पंचधातुकनुं स्थापन पंचरत्नने आप्युं के जेमां सोनुं रूपुं त्रांबुं प्रवाल अने मोती होय छे. लोह होतुं नथी.

(७) पूर्वे चौदमा सैका सुधी चर प्रतिष्ठामां नन्द्यावर्त पूजीने ते उपर प्रतिष्ठाप्य जिनप्रतिमा स्थापन कराती हती, पछीना थोडाक समय सुधी कोइ प्रतिमा स्थापन करता अने कोइ तेनुं चिन्तन मात्र करीने स्थापना मानी लेता हता, धीमे धीमे ते प्रवृत्ति पण बंध पडी. आज काल नन्द्यावर्तना पाटला उपर प्रतिमानुं स्थापन के चिन्तन कंइ पण थतुं नथी. मात्र ते उपर नन्द्यावर्तनो चित्रित पट मूकीने तेनुं पूजन करी नन्द्यावर्त पूज्युं मानी लेवामां आवे छे.

(८) पूर्वे प्रतिष्ठाचार्य, इन्द्र अथवा मुख्य स्नात्रकार अने खास प्रतिष्ठामां भाग लेनाराओ, प्रतिष्ठाने दिवसे उपवास करता हता, पण आजे कोइ पण उपवास करतुं होय एवुं जाणवामां नथी.

(९) पूर्वं प्रतिष्ठित बिम्बनु कंकण त्रीजे पांचमे के सातमे शुभ दिवसे छोडातु हतु अने ते पण विधिपूर्वक ज, बृहत्स्नात्र अथवा अष्टोत्तर शत अभिषेक ते दिवसे कंकण-मोचन पहेला करता हता अने छोडता पहेला जिनबलि अने भूतबलिपूर्वक चैत्यवंदन करी कायोत्सर्ग करता हता, जेमा छेल्लो कायोत्सर्ग प्रतिष्ठादेवता विसर्जनार्थ करातो हतो, ते पछी सौभाग्यमंत्र न्यासपूर्वक कंकण छोडी सौभाग्यवती स्त्रीना हाथमा अथवा पोताना प्रियजनना हाथमा अपातुं हतु, जरूरी कारणे आ विधान प्रतिष्ठाना दिवसे पण करी लेवातु हतु, पण आजे तो आ विधि तरफ विधिकारो जोता पण नथी ! शांतिस्नात्र के अष्टोत्तरी-स्नात्र करीने विधिकारो पोताने ठेकाणे पहोंचवानी ज तैयारीमां लागे छे, जाणे के कंकणमोचनने विधिमा स्थान ज नथी !

३ वर्तमान समयमा उपलब्ध थता प्रतिष्ठाकल्पो—

आजे आपणामा प्रतिष्ठाकल्पो केटला विद्यमान हशे ए निश्चित रूपे कहेवु शक्य नथी, घणाक प्रतिष्ठाकल्पो-सामाचारी ग्रन्थोमा, उपदेशग्रन्थोमा अने कथाग्रन्थोमा ते ते ग्रन्थना एक प्रकरण तरीके लखायेला उपलब्ध थाय छे, त्यारे केटलाक पोताना नामथी पण स्वतंत्र अस्तित्व धरावे छे, आ रीते अमारी सामे ८ प्रतिष्ठाकल्पो रहेला छे, जेमाना ३ सामाचारीना एक भागरूपे अने ५ स्वतंत्र ग्रन्थरूपे गणी शकाय. आ बधा कल्पोने अमो कालानुसार नंबर आपीने अनुक्रमे परिचय करावीशु

(१) आजे आपणा श्वेताम्बर सम्प्रदायमा सर्वथी प्राचीन प्रतिष्ठा पद्धति श्रीपादलिप्तसूरिजीकृत 'निर्वाणकलिका' छे, यद्यपि आमा उद्धृत प्राकृत गाथाबद्ध पद्धति के जेनो ग्रंथकारे 'आगम' कहीने पोतानी पद्धतिमा समावेश कर्यो छे, निर्वाण

कलिका करतां ये घणी जुनी छे, छतां अमो एने निर्वाणकलिकाना मूल तरीके ज गणी लइये छीये, कारण के ए प्राकृत-पद्धतिना प्रारंभ के समाप्तिनो एमां उल्लेख नथी, तेमज ए उपरना मंत्रभागनो पण पत्तो नथी.

'निर्वाण कलिका'ना निर्माण समयने अंगे निश्चितरूपे कहेवुं शक्य नथी, छतां ए कहेवामां वांधो पण नथी के ए ग्रन्थनी रचना चैत्यवासनी प्रवृत्ति थया पछीनी छे, एटले विक्रमना पांचमा सैकानी आसपासना समयमां ए पद्धतिनी रचना थइ हशे, एना अंतरंग निरूपणथी पण एज समयनुं अनुमान थइ शके छे.

(२ अमारी पासेना प्रतिष्ठाकल्पोमां निर्वाणकलिका पछीनो नंबर श्रीचन्द्रसूरिकृत प्रतिष्ठापद्धतिने फाले जाय छे. आ प्रतिष्ठाविधि सुबोधा सामाचारीना अंतमां छपायेल छे, प्रक्षिप्त छतां ये आपणी बीजी पद्धतिओ करतां आ मौलिक अने प्राचीन छे, आनुं निर्माण विक्रमना बारमा सैकामां थयुं निश्चितपणे कही शकाय.

(३) आचार्य जिनप्रभसूरिकृत 'विधिमार्ग प्रपा' नामक 'सामाचारी'मां आपेल 'प्रतिष्ठाविधि' नामक 'प्रतिष्ठा-पद्धति' श्रीचन्द्रसूरिनी प्रतिष्ठापद्धतिने अनुसरनारी छे, छतां कोई कोई विषयमां ए जुदी पडे छे; आनी रचना संवत् १३६३ मा वर्षमां थयेली छे.

(४) ए पछीनी पद्धति श्रीवर्धमानसूरिकृत आचारदिनकरान्तर्गत 'प्रतिष्ठाविधि' छे, आनो रचना समय विक्रमनो पंदरमो सैको छे, आपणी प्रतिष्ठा विधिओमां सौथी अधिक विस्तृत अने चैत्यवासियो अने भट्टारकोनो भरपूर असरवाली ए पद्धति छे.

(५) तपागच्छे गुणरत्नसूरि संदर्भित 'प्रतिष्ठाकल्प' पण पंदरमा सैकाना उत्तरार्धनी कृति छे, ए घणी ज शुद्ध अने सरल संस्कृतमां लखायेली अमारी पासेनो सर्व प्रतिष्ठाविधिओमां सारी अने सुगम छे

(६) विशालराजशिष्यकृत 'प्रतिष्ठाकल्प' के जेनुं निर्माण पण पंदरमा सैकाना अन्तमां अथवा तो सोलमा सैकाना प्रारंभमां थयेलुं छे, अनो प्राचीन प्रति अमारी पासे छे, ए कल्प पण शुद्ध प्राय छे

(७) कर्त्ताना नाम वगरनो छतां श्रीजिनप्रभसूरिजीने अनुसरनारो आ प्रतिष्ठाकल्प कोई खरतरगच्छीय विद्वानना हाथे पडिमात्रावाली लिपिमां लखायेलो छे, रचना के लेखनसंबन्धी संवत् मिति एमां नथी छतां भाषा अने लिपि उपरथी ए सोलमा सैकाना अन्त भागमां अथवा सत्तरमा सैकाना प्रारंभमां बनेलो लागे छे

(८) उपाध्याय सकलचन्द्रजी गणिकृत 'प्रतिष्ठाकल्प' के जे आजकालना विधिकारोमां अधिक प्रसिद्ध अने प्रचलित छे, एटलुं ज नहिं पण आचार दिनकरनी प्रतिष्ठा विधि बाद करता बीजी बधी विधिओ करता ए अधिक विस्तृत छे, आ कल्पनो रचनाकाल सत्तरमा सैकानो मध्यभाग छे, अमारी पासेना ८ प्रतिष्ठाकल्पो पैकी सौथी शुद्ध ५ मो अने अशुद्ध आ आठमो प्रतिष्ठाकल्प छे, १ थी ५ सुधीना प्रतिष्ठाकल्पो शुद्ध संस्कृत भाषामां रचायेल छे, ज्यारे ६।७।८ आ त्रण प्रतिष्ठाकल्पो संस्कृत तेम ज प्राचीन लोकभाषामां लखायेल छे. दरेकनो मन्त्र भाग संस्कृत अने क्वचित् प्राकृतमां छे, अने हकीकत प्राय' भाषामां लखेली छे, कल्प ६ठ्ठा नी हकीकत पण क्वचित् संस्कृतमां जणावेली छे

आटलो कल्पोनो परिचय कराव्या पछी हवे आ ग्रन्थोना आधारभूत ग्रन्थोने अंगे विचार करीये.

४-प्रस्तुत प्रतिष्ठाकल्पोनो मूलाधार—

उपर्युक्त ८ कल्पो पैकी कयो कल्प कया मूलग्रन्थ अथवा कल्पग्रन्थने आधारे बन्यो छे अथवा कया कल्पने अनुसरे छे ए विषे विचार करवो आवश्यक छे.

अमारी पासेना कल्पोमां पांच प्रकारनी प्रतिष्ठाविषयक विधि परम्परा तरी आवे छे, नंबर २।३।७ नी विधि एक बीजाना विधिनुं अनुसरण करे छे. नंबर ५।६ आ बे कल्पो घणे भागे एक बीजाने अनुसरे छे, ज्यारे १।४।८ आ त्रण कल्पोनी विधि कोइ पण बीजा प्रतिष्ठा कल्पनी विधिथी सर्वांशे मलती आवती नथी.

नं. १ नो कल्प प्राचीन होइ बीजा कल्पोथी घणी वातोमां जुदो पडे छे, जलयात्रानी विधि तेम ज अभिषेकनी विधि आमां आपी नथी, यद्यपि अभिषेकनी सर्वसामग्री एमां लखी दीधी छे.

आ कल्पमां प्रतिष्ठाना क्रियांगोमां विशेष महत्त्वनी वस्तु 'नन्द्यावर्त'नुं पूजन छे, नन्द्यावर्तना पूजन पछी आमां सीधुं ज प्रतिष्ठा विधान छे, दिक्पालो तेमज ग्रहोनुं पूजन के स्थापन आमां स्वतंत्र रीते आवश्यक गण्युं नथी, नन्द्यावर्तमां ज ए बधांनो समावेश करीने प्रतिष्ठाविधिने अल्प व्यय अने अल्प कष्टसाध्य करी दीधी छे.

निर्वाणकलिकानी प्रतिष्ठाविधि केटलेक अंशे दिगम्बरीय प्रतिष्ठापद्धतियोने मलती आवे छे, कदाचित् दिगम्बराचार्योना प्रतिष्ठाकल्पोनुं उद्गम स्थान पण आ प्रतिष्ठापद्धति ज होय तो आश्चर्य जेवुं नथी, दिगम्बरोना अनेक ग्रन्थो श्वेताम्बर संप्रदाय मान्य सिद्धान्तोना आधारे बन्या छे, ते प्रमाणे आमां पण बनवुं विशेष संभवित छे.

आ प्रतिष्ठापद्धतिनो मूलाधार कोइ अतिप्राचीन प्राकृत प्रतिष्ठाकल्प छे, के जेनुं आ पद्धतिना लेखके 'आगम' कहीने बहुमान कर्युं छे अने स्थाने स्थाने तेनी गाथाओना अवतरणो आपीने पोतानी आ पद्धतिने समृद्ध अने प्रामाणिक बनावी छे.

न० २ नो प्रतिष्ठाकल्प पण सम्भवित रीते कोइ प्राचीन प्राकृत प्रतिष्ठाकल्पने ज आधारे बन्यो छे, छतां आमां कोइ पण गाथाओ प्रमाण तरीके आपी नथी, वळी एमणे मन्त्रभाग पण घणो ज संक्षिप्त रूपे आप्यो छे. एम लागे छे के निर्वाणकलिकानो सीधो नहि पण तेना आधारे बनेली कोइ प्राचीन पद्धतिनो आधार लइने श्रीचन्द्रसूरिजीए पोतानी आ प्रतिष्ठा पद्धति बनावी हशे.

न० ३ नो प्रतिष्ठा-कल्प न० २ वाला प्रतिष्ठा-कल्पने आधारे ज बन्यो छे, बन्नेनी प्रतिष्ठा विषयक मान्यता समान छे, मात्र क्वचित् नजीवो फेरफार छे के जेनुं कारण मात्र समयभिन्नता अने कर्तृभिन्नता ज होइ शके.

४ था प्रतिष्ठाकल्पनो आधार शो छे ते एना कर्ता ज नीचेना शब्दोमां रजु करी दे छे—

"प्रतिष्ठाविधिरादिष्टः, पूर्वं श्रीचन्द्रसूरिभिः । संक्षिप्तो विस्तरेणाय-मागमार्थाद्वितन्यते ॥१॥"

"प्रतिष्ठाकारयितुर्गृहे प्रथमं शान्तिकं पौष्टिकं कुर्यात् । अतश्च श्रीचन्द्रसूरिप्रणीता प्रतिष्ठायुक्तिर्महाप्रतिष्ठाकल्पापेक्षया लघुतरेति ज्ञायते । ततः आर्यनन्दिक्षपक-चन्द्रनन्दि-इन्द्रनन्दि-श्रीवज्रस्वामिप्रोक्तप्रतिष्ठाकल्पदर्शनात् सविस्तरा लिख्यते"

अर्थ–'पूर्वे श्रीचन्द्रसूरिजीए संक्षिप्त प्रतिष्ठाविधि कही छे, ज्यारे आ आगमानुसारे सविस्तर रचाय छे.

कारण के प्रतिष्ठाकारक गृहस्थना घरे प्रतिष्ठा करता पहेलां शांतिक अने पौष्टिक करवुं जोइये, पण श्रीचन्द्रसूरिरचित

प्रतिष्ठापद्धति 'महाप्रतिष्ठाकल्पो'नी अपेक्षाए घणी ज न्हानी छे, तेथी आर्यनन्दिक्षपक, चन्द्रनन्दी इन्द्रनन्दि अने श्रीवज्रस्वामि-कथित प्रतिष्ठाकल्पो देखीने आ सविस्तर (प्रतिष्ठापद्धति) लखाय छे.'

उपरना वाक्योमां श्रीवर्धमानसूरिजीए जेमनो नामनिर्देश कर्यो छे ते आर्यनन्दिक्षपक अने चन्द्रनन्दीनां नामो आपणी परंपराने मलतां नथी, पण दिगम्बर भट्टारकोनां नाम होय तेम लागे छे. 'इन्द्रनन्दी' दिगम्बर तथा श्वेताम्बर–बंने परम्पराओमां थया छे, परन्तु श्वेताम्बर इन्द्रनन्दी श्रीवर्धमानसूरिजीथी परवर्ती होइ आ प्रतिष्ठाकल्पकार दिगम्बर इन्द्रनन्दी ज होवानो विशेष संभव छे.

श्रीवज्रस्वामी श्वेताम्बर संघमां एक महान् प्रभावक थइ गया छे, छतां एमना प्रतिष्ठाकल्प विषे आपणे कंइ जाणता नथी, एम जणाय छे के प्राचीनतम प्राकृत प्रतिष्ठाकल्पने ज आचारदिनकरकारे श्रीवज्रस्वामिकृत मानी लीधो छे के जेने श्रीपादलिप्तसूरिजीए पोतानी प्रतिष्ठापद्धतिमां 'आगम'ना नामथी उल्लेख्यो छे.

गमे तेम होय पण श्रीवर्धमानसूरिजीनी पासे श्वेताम्बर तथा दिगम्बर बंने संप्रदायोनी विस्तृत प्रतिष्ठापद्धतिओ हती के जेओनुं तेमणे अनुकरण ज नहि, खूब उपजीवन पण कर्युं छे, आचार–दिनकरमां एमणे आपेली प्रतिष्ठापद्धतिमां–खास करीने 'नन्द्यावर्तपूजा' अने 'महापूजा' ना प्रकरणोमां जे गंभीर अने विद्वत्तापूर्ण काव्योनी छटा दृष्टिगोचर थाय छे ते वस्तु श्रीवर्धमानसूरिजीनी पोतानी नहि पण तेमना पुरोगामी प्रतिष्ठाकल्पकारोनी छे.

वर्धमानसूरिए श्वेताम्बर प्रतिष्ठाकल्पो उपरान्त दिगम्बरीय प्रतिष्ठाकल्पोनो पण पोतानी विधिमां उपयोग कर्यो हतो ए

वातमा एमणे वापरेला 'जैनविप्र' 'क्षुल्लक' आदि शब्दो साक्षी रूपे गणी शकाय, छता ए पण खरु छे के जे वस्तु श्वेताम्बरीय प्रतिष्ठा कल्पोमा मुद्दल ज न हती ते वस्तु एमणे दिगम्बरो पासेथी लीधी नथी, नन्द्यावर्तना पूजनने प्राचीन श्वेताम्बराचार्योए प्रतिष्ठानु प्रधान अंग गणीने तेनु विस्तृत विधान कर्यु छे, आथी वर्धमानसूरिजीए पण एना पूजननु सविस्तर वर्णन आप्यु छे. पण कल्याणक विधिना प्रसंगो के जेनु पहेलाना कोइ पण श्वेताम्बर सम्प्रदायना प्रतिष्ठा कल्पमा वर्णन के विधान न हतु तो एमणे पण आ दिगम्बर सम्प्रदायनी परम्परागत वस्तुने पोतानी प्रतिष्ठाविधिमा स्थान आप्यु नथी.

न० ५।६ ना प्रतिष्ठाकल्पोनो आधार ग्रन्थ तो श्रीचन्द्रसूरिनी प्रतिष्ठापद्धति ज छे पण आ कल्पोमा श्रीचन्द्रसूरिनी प्रतिष्ठा पद्धतिनु परिमार्जन थयेलु छे, ए पहेलानी पद्धतियोमा प्रतिष्ठाकारक आचार्यने सुवर्णमुद्रिका अने सुवर्णकंकण धारण करवानुं विधान छे, पण आ प्रतिष्ठाकल्पकारोए ए वस्तु उडाडी दीधी छे, ए सिवाय बीजी पण केटलीक सावद्य प्रवृत्तिओ जे पूर्वे प्रतिष्ठाचार्यना हाथे थती हती ते एमणे श्रावकना हाथे करवानु विधान कर्यु छे. परिणाम स्वरूप आ कल्पोमा गुरु अने श्रावकं करवाना कायो वहेंचाइ गया छे. आ बे कल्पो तपागच्छनी निरवद्य सामाचारीने अनुरूप बनावी देवामा आव्या छे, छता विधिविधानोमा महत्त्वनो भेद पाड्यो नथी ए खुशी थवा जेवु छे.

नंबर ७ ना प्रतिष्ठाकल्पनो आधार ग्रन्थ श्री जिनप्रभसूरिजीनी प्रतिष्ठापद्धति छे, एम छतां आ कल्पकारे केटलीक वातो खुलासापूर्वक लखी छे के जे प्रमाणे एना आधारग्रन्थमा नथी, ए कल्पना लेखके पण केटलीक सावद्य प्रवृत्तिओ प्रतिष्ठाचार्यने बदले स्नात्रकार श्रावकना हाथे करवानु विधान कर्यु छे, छता आमाना केटलाक विधानो न० ५।६ ना विधानोथी भिन्न छे.

नंबर ८ नो प्रतिष्ठाकल्प जे उपाध्याय श्री सकलचंद्रजीनी कृति गणाय छे, एनो आधार एना कर्ताए ग्रन्थनी समाप्तिमां नीचे प्रमाणे सूचव्यो छे—

"इति श्रीभद्रबाहुस्वामिना विद्याप्रवादपूर्वात् प्रतिष्ठाकल्पोद्धृतः । तन्मध्याज्जगचन्द्रसूरीश्वरेण यत्प्रतिष्ठाकल्पोद्धृतः तत एष प्रतिष्ठाकल्पः सुविहितवाचक श्री सकलचन्द्रगणिना भट्टारक श्री हरिभद्रसूरिकृत प्रतिष्ठाकल्प–हेमाचार्यकृतप्रतिष्ठाकल्प–श्यामाचार्यकृतप्रतिष्ठाकल्प–श्री गुणरत्नाकरसूरिकृतप्रतिष्ठाकल्प एभिः प्रतिष्ठाकल्पैः सह संयोजितः संशोधितश्च भ । श्रीविजयदानसूरीश्वराग्रे ।"

उक्त समाप्तिलेखनो तात्पर्यार्थ ए छे के 'श्रीभद्रबाहुस्वामीए विद्याप्रवादपूर्वमांथी प्रतिष्ठाकल्प उद्धर्यो, तेमांथी श्रीजगचन्द्रसूरीश्वरजीए प्रतिष्ठाकल्पनो उद्धार कर्यो अने तेमांथी आ प्रतिष्ठाकल्प सुविहित उपाध्याय श्री सकलचन्द्रजी गणिए बनावीने पूज्य श्रीहरिभद्रसूरि–हेमाचार्य–श्यामाचार्य–गुणरत्नाकरसूरिकृत प्रतिष्ठाकल्पोनी साथे मेलवीने श्रीविजयदानसूरिजीनी सामे सुधार्यो छे.'

प्रस्तुत प्रतिष्ठाकल्प उपाध्याय श्रीसकलचन्द्रजीनी ज कृति छे अथवा तो कोइए एमना नामे चढावी दीधेली कोइ अर्वाचीन कूट कृति छे ए शंका खरेखर समाधान मांगे छे.

उपर आपेल समाप्तिलेखनी अशुद्धिओ अने प्रशस्तिनो अभाव जोतां ए ग्रन्थ सकलचन्द्रजीनी कृति होवा विषे ज अमने तो शंका छे, छतां प्रचलित प्रणालिकाने अनुसरीने एने श्रीसकलचंद्रजीनी कृति मानी लइये तोये आ वर्तमानरूपमां तो

उपाध्याय श्रीसकलचन्द्रजीनी कृति न ज होइ शके. कारण के आमा केटलीक अक्षम्य भूलो नजरे पडे छे अने एना केटलाक विषयो अस्तव्यस्त थइगयेला जणाय छे, उदाहरणो—

(१) बधा प्रतिष्ठाकल्पोमा पाचमु स्नात्र (अभिषेक) पचगव्यनु आवे छे ज्यारे आमा पचगव्यने नवमा नम्बरे मूक्युं छे, अने तेना उपादानोमा पण परिवर्तन करी नाख्यु छे, बधा कल्पकारो गायनु छाण, मूत्र, दूध, दहि अने घृत आ पाचने 'पचगव्य' तरीके जणावे छे त्यारे आ कल्पमा दूध, दहि, माखण, घृत अने छाश ए पाचनु समुदित नाम 'पचगव्य' आप्यु छे, जे वास्तविक नथी, माखण ने घी तेमज दहि अने छास ए वस्तुओ कइ भिन्न भिन्न नथी पण एक ज चीजना अवस्थापरक बे भिन्न नामो छे, अने आ रीते खरुं जोता 'पचगव्य'ना नामथी 'त्रिगव्य' ज बने छे अने 'त्रिगव्य'नो ज अभिषेक थाय छे, ज्यारे के प्रत्येक प्रतिष्ठाकल्पकारे 'पचगव्य' नो अभिषेक करवानु विधान कर्युं छे.

(२) पचगव्यने आगेने माटे राखी आ कल्पमा पाचमा स्नात्र तरीके 'सर्वौषधि'नो अभिषेक राख्यो छे अने छट्ठो 'मूलिका'ना स्नात्रने सदतर ज काढी नाखी तेना स्थाने 'प्रथमाष्टक वर्गनुं स्नात्र गोठव्युं छे, ऊता नवाइ तो ए छे के मूलिकास्नात्र वखते बोलातुं पद्य ज आ स्नात्रना पाठरूपे पहेला आप्यु छे अने पछी नवु पद्य आप्यु छे, बीजा, पद्यमा पण 'प्रथमाष्टकवर्ग'मा आवता 'वीरणिमूल'ने स्थाने 'हीरवणीमूल' शब्द लखीने खरे ज अर्थनो अनर्थ कर्यो छे !.

(३) आठमो अभिषेक सर्व प्रतिष्ठाकल्पोमा 'प्रथमाष्टवर्ग'नो छे ज्यारे एमा ते 'सर्वौषधि'नो लख्यो छे, अने एना पाठमा बीजा 'अष्टवर्ग'नो श्लोक कइ लीधो छे जे अप्रासगिक छे

(४) आ कल्पमां नवमो अभिषेक 'पंचगव्य'नो अने दशमो 'सुगंधौषधि'नो राख्यो छे, पण बीजा सर्वमां नवमो अने दशमो अभिषेक अनुक्रमे 'द्वितीयाष्टकवर्ग' अने 'सर्वौषधि'नो छे. बीजा कल्पो करतां आमां सर्वौषधिनां द्रव्यो पण घणां अने केटलाये जुदी जातनां लीधां छे.

बीजा प्रतिष्ठाकल्पोना 'सर्वौषधि' स्नात्रनो पाठ आमां 'सुगंधौषधि' नामनो एक नवो अभिषेक कल्पीने तेमां आप्यो छे अने एक श्लोक नवो लख्यो छे.

दश पछीना आना अभिषेको बीजा कल्पोना अभिषेकोनी साथे मलता थइ जाय छे, छतां एक बे स्थले थोडोक फरक तो छे ज.

(५) बीजा घणा खरा प्रतिष्ठाकल्पोमां अढार अभिषेकने अन्ते शुद्ध जलना १०८ कलशोथी अभिषेक करवानुं विधान छे. नं० ५ ना प्रतिष्ठाकल्पोमां दूध, दहि, घी, शेलडीरस (खांड) अने सर्वौषधिनुं स्नात्र अभिषेकने अन्ते करीने पछी १०८ जलकलशो वडे अभिषेक करवानो आदेश छे, पण आ कल्पमां तो अभिषेक प्रकरणमां १०८ अभिषेकनो उल्लेख ज नथी अने निर्वाणकल्याणकना अन्ते ए १०८ जलकलशो वडे अभिषेक करवानुं विधान कर्युं छे के ज्यां एनो कोइ प्रसंग ज नथी ! !

(६) बीजा घणाक प्रतिष्ठाकल्पोमां 'कंकणमोचनविधि'ना प्रसंगे पण 'अष्टोत्तर शत अभिषेक' करवानुं विधान छे, निर्वाण कल्याणक पछी आ कंकणमोचन जेवो प्रसंग उपस्थित करीने ए १०८ अभिषेक त्यां बताव्या होत त्यारे तो सार्थक पण गणी शकात, पण एवो कोइ पण प्रसंग नथी अने अभिषेक लख्या छे. !

(७) बीजा वधा कल्पोनी साथे एनो महत्त्वपूर्ण मतभेद कल्याणकोनी उजवणीनो छे, १ थी ७ सुधीना कोइ पण कल्पमा कल्याणकोनी उजवणी के १० दिवसनो कार्यक्रमनो उल्लेख सुधा नथी, ४ था प्रतिष्ठाकल्पमा नन्द्यावर्तपूजन अने महापूजा विगेरे प्रकरण मा अनावश्यक कही शकाय एटलो बधो विस्तार कर्यो छे, छता ए कल्पमा ए कल्याणकोनी उजवणी के ते संबन्धी मंत्रो जेवु कइ ज नथी. आना समाप्तिलेखमां सूचव्या प्रमाणे जो आ प्रतिष्ठाकल्प श्रीजगचन्द्रसूरिजीना प्रतिष्ठाकल्प उपरथी बन्यो होय अने कल्याणकोनी उजवणीनो प्रसंग तेमाथी लीधो होय तो पछी जगचन्द्रसूरिजीना पृष्ठवर्ती नं० ३।४।५।६।७ ना प्रतिष्ठा-कल्पकारोए पोताना कल्पोमा ए वस्तुनो स्वीकार केम न कर्यो ? सर्वजण नहिं तो न० ५।६ ना कल्पकर्ताओ के जे श्रीजगचन्द्रसूरिजीनी ज पट्टपरम्पराना आचार्यो हता अने सकलचन्द्रजी करता तेमना निकटवर्ती हता, जगचन्द्रसूरिजीना प्रतिष्ठा कल्पनी पद्धतिने न अपनावे ए वात मानी शकाय तेवी नथी, छतां एवुं कशु थयुं नथी आथी समजाय छे के आ कल्पमां लखेल कल्याणक विधि-जगचन्द्रसूरि अथवा बीजा कोइ पण प्रामाणिक श्वेताम्बर सम्प्रदायना आचार्यकृत प्रतिष्ठा-कल्प उपरथी नहि पण कोइ दिगम्बरमान्य प्रतिष्ठा कल्प उपरथी उतारी लीधी छे, दिगम्बरोनी प्रतिष्ठामा कल्याणकोनी विधिनुं विधान घणा जुना समयथी चाल्युं आवे छे, आश्चर्य नथी के श्रीसकलचन्द्रजी उपाध्याय पोते अथवा तो एमना परवर्ती कोई बीजा विद्वाने कल्याणकोना प्रसगोने श्वेताम्बर सम्प्रदायने अनुरुप गोठवीने आ आठ नवरना प्रतिष्ठा कल्पनी योजना करी दीधी होय ? अने प्रचार निमित्ते सकलचंद्रजीना नामे ए संदर्भ चढावी दीधो होय ? गमे तेम होय पण आ प्रतिष्ठाकल्पनो मूलाधार जगचन्द्र-सूरिनो कल्प तो नथी ज.

श्यामाचार्य,–हरिभद्रसूरि–हेमाचार्य–गुणरत्नाकरसूरिकृत प्रतिष्ठा कल्पो पण आ कल्पना समर्थक होय ए वात मानी शकाय तेवी नथी. श्यामाचार्यदिना प्रतिष्ठाकल्पोना अस्तित्व विषे आ कल्पना कथन सिवाय बीजुं कोइ प्रमाण नथी, प्राकृत गाथामय प्राचीन प्रतिष्ठाकल्पने श्यामाचार्यकृत मानी लेवामां आवे तो अमने वांधो नथी पण तेमांय कल्याणकविधिनुं तो नाम निशान पण नथी, 'प्रतिष्ठाविधि पंचाशक' ने जो श्रीहरिभद्रसूरिनो कल्प मानी लीधो होय तो तेमां पण कल्याणकोनुं विधान नथी, हेमाचार्यनो प्रतिष्ठाकल्प हमणां क्यांये मलतो नथी अने पूर्वे हतो एमां प्रमाण नथी, गुणरत्नाकर नामे कोइ पण आचार्य आपणा श्वेताम्बरसंप्रदायमां थया होय एवुं अमारा जाणवामां नथी, रत्नाकरसूरि अने गुणरत्नसूरिनामक आचार्यो आपणामां जरूर थया छे, अने गुणरत्नसूरिजीनो तो प्रतिष्ठाकल्प पण विद्यमान छे. पण तेमां कल्याणक विधि के बीजी एवी कोई वस्तु नथी के आ पकृत प्रतिष्ठाकल्पनी समर्थक थइ शके ?

(८) उपरनां कारणो उपरान्त आ कृतिनी नवीनता साबित करनार मुख्य प्रमाण ए छे के आमां प्रौढता गंभीरता के चमत्कृति नथी, पूर्वोक्त महाविद्वान् आचार्योनी कृतिनो आधार लइने बनावेली कृति आटली बधी नीरस अने निस्सत्व होय ए मानी शकाय तेम नथी.

(९) ए सिवाय आ प्रतिष्ठाकल्पमां एक बीजी ध्यान खेंचनारी वात ए छे के एना पुरोगामी सर्व प्रतिष्ठाकल्पकारो २६० क्रयाणकोनी पुडिओ अथवा सर्वनो एक पुडो बांधीने, अधिवासना कर्या पछी प्रतिमानी आगल मूकवानुं विधान करे छे, त्यारे आ कल्पकार अंजनविधान थया पछी प्रतिमाना हाथमां क्रयाणकोनो पुडो मूकवानुं लखे छे, आ वस्तु पण निर्णय मांगे

छे, धान्यक्षेप, धान्यस्नान आदि प्रसंगो अधिवासनाना अवसरे ज आवे छे, अंजनविधान पछी तो गंध, पुष्प, चन्दनादिथी पूजा अने लाडवा आदि विविध पक्वान्नो मूकवानुं ज सर्व कल्पोमा विधान करायेलु छे, प्रतिष्ठा पछी ३६० क्रयाणकोनो पुडो प्रतिमाना हाथमां आपवानुं विधान आ सिवाय बीजा कोइ कल्पमां नथी, एटले ए विषय विचारणीय छे.

(१०) आ कल्पमां अंजन विधान पछी निर्वाण कल्याणकनी विधि लखी छे अने ते पछीना देववन्दनमां प्रतिष्ठा देवता 'विसर्जनार्थं' कायोत्सर्ग करवा जणाव्यु छे जे देखीतीज भुल छे, कंकणमोचन विधि तो दूर रही पण हजी मंगल गाथा पाठ बोली अक्षतांजलिये नथी नाखी ते पहेला प्रतिष्ठा देवतानु विसर्जन करवानो काउस्सग्ग ! केवी प्रत्यक्ष भूल !, बीजा एके एक प्रतिष्ठाकल्पकारे कंकण छोडण-विधि कर्या पछी नन्द्यावर्त अने प्रतिष्ठा देवताने विसर्जन करवानुं विधान कर्युं छे, मात्र एक विशालराज शिष्यना प्रतिष्ठाकल्पमां अंजन विधि पछीना चैत्यवन्दनमा 'प्रतिष्ठादेवताविसर्जनार्थं' एवा शब्दो भूलथी लखाई गया छे, जेनु अनुसरण आ कल्पमां पण थयु छे. पण वि. शि कल्पमा तो आगे जता आ भूलनो स्फोट थइ गयो छे, तेमा आगल उपर आपेल कंकण मोचन विधिमां प्रतिष्ठा देवतानु विसर्जन करवामां आव्यु छे, एथी ज खुल्लुं जणाइ आवे छे के पूर्वे कायोत्सर्ग प्रसंगे जे 'विसर्जनार्थं' शब्द आव्यो छे ते प्रामादिक छे अने ए प्रमाद 'कल्पकार' नो नहि पण प्रतिलेखकनो ज होई शके, प्रतिष्ठाकल्पकारे पोते कंकण मोचन प्रसंगे ज नन्द्यावर्त अने प्रतिष्ठा देवता विसर्जनार्थं काउस्सग्ग करवानुं लख्युं छे, पण आठमा आधुनिक प्रतिष्ठाकल्प लेखकने आ भूल प्रतिलेखकनी छे आ वात समजवामां न आवी तेथी ते भूल पोताना प्रतिष्ठाकल्पमा विधिरूपे मानी लीधी, ए ज कारण छे के एमणे कंकणमोचन विधि ज लखी नथी, मात्र नन्द्यावर्त

अने प्रतिष्ठा देवतामां विसर्जन मंत्रोद्वारा तेमनुं विसर्जन करी दीधुं छे अने अंते कंकणमोचननो आदेश मात्र कर्यो छे, विधि के मंत्रादि कंइ लख्युं नथी, ज्यारे बीजा प्रतिष्ठाकल्पोमां प्रथम विधि पूर्वक कंकणमोचन कर्या पछी नंद्यावर्त-प्रतिष्ठा-देवतानुं विसर्जन करवानुं विधान छे अने छेवटे अष्टोत्तरशत जलकलशोथी प्रतिमानो अभिषेक करवानुं विधान पण घणा प्रतिष्ठाकल्पोमां मळे छे.

उपर जणावेल भूल साधारण नथी पण महत्त्वनी छे अने ए जल्दी सुधारवी जोइये.

(११) आ प्रतिष्ठाकल्पमां पंचकल्याणकोनुं विधान उमेरातां केवल विधिना दिवसोमां ज नहिं पण प्रतिष्ठानी सामग्रीमां पण अनेकगणो वधारो थयो छे अने आजनी अंजनशलाका-प्रतिष्ठाओ घणीज खर्चाल थइ गइ छे. दाखलातरीके-बीजा कल्पोनी विधि प्रमाणे अंजनशलाकावाली प्रतिष्ठामां १ काच, १ चांदीनी वाटकी, १ सोनानी शली, १ दीपक, १ चमरनी जोड इत्यादि बहुज परिमित सामग्रीथी काम लेवानुं विधान छे. त्यारे आ कल्याणक विधिवाला कल्पना विधान प्रमाणे ९ काच, २ चांदीनी वाटकी, १ सोनानी सली, १ दीपक ४ दीवी ४ चमरनी जोडो, १ सोनानी वाटकी, १ सोनानी रकेबी, १ सोनानो थाल इत्यादि अनेक उपकरणोमां अने उपकरण संख्यामां वृद्धि थइ छे, खर्च वध्यो छे अने प्रतिष्ठाना प्रसंगो घटया छे,

५ प्रतिष्ठाना मुख्यतन्त्रवाहको—

प्रतिष्ठाकल्पकारोए पोतपोताना कल्पोमां प्रतिष्ठाना मुख्य तंत्रवाहकानुं वर्णन कर्युं छे, जेमां सर्वथी प्राचीन " निर्वाणकलिका " नामनी पोतानी प्रतिष्ठाविधि पद्धतिमां श्रीपादलिप्ताचार्यजी महाराजे १ शिल्पी, २ इन्द्र अने ३ आचार्य नामथी

प्रतिष्ठाना मुख्य अधिकारियो त्रण गणाव्या छे बीजा प्रतिष्ठाकल्पकारोए मात्र ४ स्नात्रकारो अने ४ औषधि वाटनारी स्त्रिओनुं निरुपण कर्युं छे, प्रतिष्ठाचार्य तो छे ज पण शिल्पीने अंगे कई पण जणाव्युं नथी.

निर्वाणकलिकानुं शिल्पी आदिनु वर्णन नीचे प्रमाणे छे—

(१) शिल्पी—

'तत्राद्यः सर्वावयवरमणीयः क्षान्तिमार्दवार्जवसत्यशौचसम्पन्नः मद्यमांसादिभोगरहितः, कृतज्ञो विनीतः शिल्पी सिद्धान्तवान् विचक्षणः, धृतिमान् विमलात्मा शिल्पिना प्रधानो जितारिषड्वर्गः कृतकर्मा निराकुल इति ११"

अर्थ—' ते त्रणमा पहेलो शिल्पी (सूत्रधार-मिस्त्री) सर्वांगसुन्दर, क्षमाशील, नम्र, सरल, सत्यभाषी, शौचसपन्न, मदिरामांसादि अभक्ष्य खानपाननो त्यागी, कदरदान, विनयी, शिल्पनी क्रियाओमा प्रवीण, शिल्पशास्त्रनो ज्ञाता, चतुर, धीरजवान्, निर्मलात्मा, शिल्पी समाजमा अग्रेसर, मोहादि आन्तर छ शत्रुओने जीतनार, स्थापत्यना कामोमा सिद्धहस्त, अने स्थिरबुद्धिवालो होवो जोइये,

उपरना लखाणमा शिल्पीने अंगे लखायेला " मद्यमांसादिभोगरहितः " ए शब्दो प्रतिष्ठित मदिरोना कामोमां मद्य-मांस भक्षक शिलावटोने राखनार गृहस्थो अने तेमना सलाहकारक साधुओए लक्षमा राखवा जेवा छे !.

(२) इन्द्र—

इन्द्रनी योग्यता विषे श्रीपादलिप्तसूरिजीए नीचेनु वर्णन आप्युं छेः—

" इन्द्रोपि विशिष्टजातिकुलान्वितो युवा कान्तशरीरः, कृतज्ञो रूपलावण्यादिगुणाधारः सकलजननयनानन्दकारी सर्वलक्षणोपेतो देवतागुरुभक्तः सम्यग्रत्नालंकृतः व्यसना संगपरांमुखः, शीलवान् पञ्चाणुव्रतादिगुणयुतो गंभीरः सितदुकूलपरिधानः, कृतचन्दनांगरागो मालतीरचितशेखरः, तारहारविभूषितवक्षस्थलः स्थपतिगुणान्वितश्चेति २ । "

अर्थ—'इन्द्र पण उत्तम जाति अने कुलवालो, युवावस्थावालो, मनोहर शरीरधारी, कदरदान, रूपलावण्यादि गुणोनो आधार सर्वलोकप्रिय, सर्वशुभलक्षणसंपन्न, देवगुरुभक्त, धर्मश्रद्धालु, सर्वप्रकारना व्यसनोथी मुक्त, सदाचारी, पंचअणुव्रतादि गुणधारक गंभीर प्रकृतिनो, श्वेतवस्त्रधारी, अंगे चंदनादिना विलेपनवालो, मस्तके मालतीना पुष्पोनी रचनावालो, सुवर्णमयकंकणादि वडे भूषित, हृदयस्थलमां सुन्दरहारे करी शोभित अने स्थापत्यकलानो जाणनार होवो जोईये.'

(३) आचार्य—

प्रतिष्ठाकारक आचार्यनी योग्यतानुं श्री पादलिप्तसूरिजी नीचेना शब्दोमां वर्णन करे छे—

" सूरिश्चार्यदेशसमुत्पन्नः, क्षीणप्रायकर्ममलो, ब्रह्मचर्यादिगुणगणालंकृतः, पञ्चविधाचारयुतो राजादीनामद्रोहकारी, श्रुताध्ययनसंपन्नः, तत्त्वज्ञो, भूमि-गृहवास्तुलक्षणानां ज्ञाता, दीक्षाकर्मणि प्रविणो, निपुणः सूत्रपातादिविज्ञाने, स्रष्टा सर्वतोभद्रादिमण्डलानाम्, असमः प्रभावे, आलस्यवर्जितः, प्रियंवदो, दीनानाथवत्सलः, सरलस्वभावो वा सर्वगुणान्वितश्चेति ३ ।"

अर्थ—'अने प्रतिष्ठाचार्य आर्यदेशमां जन्मेल, हलुकर्मी, ब्रह्मचर्यादि गुणगणे करी शोभित, पंचाचारपालक, राजादिकनो अद्रोही, आगमाभ्यासी, तत्त्वज्ञानी, भूमि तथा गृहवास्तुनां लक्षणो जाणनार, दीक्षाविधिमा हुंशियार, सूत्रपातनादिना ज्ञानमां पारगत, सर्वतोभद्र आदि मडलोनी रचना करनार, अतुलप्रभावी, अप्रमादी, प्रियभाषी, दीनदुःखीनी दयाकरनार, सरलस्वभावी अने सर्वगुणसंपन्न होवो जोइये.'

शिल्पी ईन्द्र अने आचार्यनुं वर्णन नि० कलिकामा सर्वप्रतिष्ठाकल्पो करता वधु आप्युं छे, जे उपरथी समझाय छे के पादलिप्तसूरिना मनमां ए 'वस्तु' चोक्कसपणे बेठेली हती के 'प्रतिष्ठा'मा जो कोइ पण प्रभाव-उत्पन्न करनार होय तो उक्त शिल्पी आदिनी त्रिपुटी ज छे, ए त्रिपुटी जेटले अंशे गुणाधिक हशे तेटले अंशे 'प्रतिष्ठित' बिम्बमा अधिक प्रभाव-कला उत्पन्न थशे.

इन्द्रना विशेषणो उपरथी जणाय छे के तेनो 'इन्द्र' हजारोमाथी कोइ एक खोली कढातो हशे, आजनी जेम खर्च करनारने ते समये इन्द्रपद मलवु दुर्लभ ज हशे.

प्रतिष्ठाचार्यने अगे पादलिप्ताचार्यें करेल वर्णन अने खास करीने "भूमि-गृहवास्तुलक्षणाना ज्ञाता, निपुण, सूत्रपातादिविज्ञाने, स्रष्टा सर्वतोभद्रादिमण्डलानाम्।" आ विशेषणो आपणु विशेष ध्यान खेंचनारा छे, अने ते एम जणावे छे के प्रतिष्ठा करनार आचार्य ते सर्व साधारण 'आचार्य' नामधारी व्यक्ति नहिं पण उक्त विशेषणविशिष्ट होय ते ज 'प्रतिष्ठाचार्य थवाने योग्य बने छे, पछी भलेने ते आचार्यपदस्थ होय के उपाध्याय अथवा सामान्य साधु होय पण उक्त विशेषणविशिष्ट होय तो ते प्रतिष्ठाचार्य ज छे, प्रतिष्ठाचार्यमा 'पद' करता योग्यतानु महत्त्व छे, ए ज कारणे केटलाक प्रतिष्ठाकल्पकारोए आचार्यने 'प्रति

ष्ठाचार्य' अथवा 'प्रतिष्ठागुरु' ए नामथी ज कल्पोमां संबोध्या छे.

श्री वर्धमानसूरिए तो पोताना प्रतिष्ठाकल्पमां ए वातनुं स्पष्टीकरण ज करी दीधुं छे, कह्युं छे—

"आचार्यैः पाठकैश्चैव, साधुभिर्ज्ञानसत्क्रियैः। जैनविप्रैः क्षुल्लकैश्च, प्रतिष्ठा क्रियतेऽर्हतः ॥१॥"

अर्थात् 'आचार्यो, उपाध्यायो, ज्ञानक्रियावान् साधुओ, जैनब्राह्मणो अने क्षुल्लकोद्वारा आर्हती प्रतिष्ठा कराय छे.'

पन्यासो, गणिओने हाथे प्रतिष्ठित थयेली सेंकडो प्राचीन प्रतिमाओ आजे पण उपलब्ध थाय छे, आथी पण निर्विवादपणे सिद्ध थाय छे के 'आचार्य ज अंजनशलाका प्रतिष्ठा करावी शके' आवा प्रकारनी मान्यता पूर्वकालमां न हती, आजे पण गीतार्थो तो आवी मान्यता धरावता नथी अने अगीतार्थो के अजाण माणसोना कथननुं कंइ पण प्रामाण्य होतुं नथी.

निर्वाणकलिकाना समय सुधी प्रतिष्ठाकार्यमां शिल्पी, इन्द्र अने आचार्यनी ज प्रधानता हती, पण ते पछीना समयमां शिल्पीनुं महत्त्व कंइक घटी गयुं छे, प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाना प्रथमाभिषेकनो अधिकार पूर्वे शिल्पीनो गणातो हतो ते कालान्तरे उडी गयो, पूर्वे शिल्पीने प्रथम सत्कारीने पछी प्रतिष्ठा कराती हती ते वस्तु पण बदलीने प्रतिष्ठा पछी शिल्पीनो सत्कार करवानुं राख्युं, अने इन्द्रनो अधिकार तो जाणे कदी हतो ज नहि, एम भूलाइ गयो अने तेना स्थाने ४ स्नात्रकारोनियुक्त थया, नं० २ थी ७ मा सुधीना कोइपण प्रतिष्ठाकल्पमां इन्द्रनो उल्लेख नथी, ज्यां त्यां स्नात्रकारो ज दृष्टिगोचर थाय छे, अने तेओ ज प्रतिष्ठाना सर्वकामोमां आगल पडतो भाग ले छे. छेक ८ नंबरना कल्पमां पाछो इन्द्र हाजर थाय छे, पण आ वखते इन्द्रना हाथमां ते सत्ता रही नथी के जे पूर्वे हती, आ वखतनो इन्द्र मर्यादित सत्तावालो अने स्नात्रकारोनो सहकार साधीने काम करनारो कह्यो छे.

आम प्रतिष्ठाविधिकार्य माटे प्रथम ३, मध्यकालमा ५ अने छेल्ले सत्तरमा सैकाथी ६ कार्याधिकारियो नियुक्त थता नजरे पडे छे.

(४) स्नात्रकारो—

निर्वाण–कलिकाना निर्माण समयमा स्नात्रकारोनुं बहु महत्त्व न हतु, ते वखते प्रतिष्ठाचार्य घणां खरां कार्यो पोते जाते करी लेता अने गृहस्थोचित विधानो इन्द्र पासे करावी लेता, ज्यां एकथी अधिक गृहस्थोनी आवश्यकता पडती त्यारे ज स्नात्रकारो याद कराता हता, ए ज कारण छे के श्री पादलिप्तसूरिजीए 'इन्द्र'नुं आटलुं विस्तृतवर्णन आप्युं छे, छतां स्नात्रकारोने अंगे कंइ ज लख्यु नथी.

श्री चन्द्रसूरिजीए पोतानी प्रतिष्ठापद्धतिमा स्नात्रकारोना लक्षणो नीचे प्रमाणे बताव्या छे—

"स्नपनकाराश्च समुद्राः सकङ्कणा अक्षतांगा दक्षा अक्षतेन्द्रियाः कृतकवचरक्षा अखण्डितोज्ज्वलवेषा उपोषिता धर्मबहुमानिनः कुलजाश्चत्वारः करणीयाः।"

अर्थ—'स्नपनकारो मुद्रिका कङ्कण सहित, अक्षतशरीर, प्रवीण, अखण्डेन्द्रिय, मन्त्रकवचथीरक्षित, अखण्ड अने उज्ज्वल वेषधारी, उपवासी, धर्मनु बहुमान करनारा, कुलवान् एवा ४ करवा'

आचार्य जिनप्रभसूरिजीए पण पोतानी प्रतिष्ठा विधिमा स्नात्रकारोनी योग्यताना विषयमा अक्षरशः उपरनु ज वर्णन आप्यु छे एटले अहीं पुनरुक्ति करवानी आवश्यकता नथी.

श्रीवर्धमानसूरिए पोताना कल्पमा स्नात्रकारोनी योग्यताविषयक वर्णन नीचेना शब्दोमा आप्युं छे—

"चतुर्णां स्नपनकाराणामुभयकुलविशुद्धानामखण्डितांगानां, नीरोगाणां, सौम्यानां, दक्षाणामधीतस्नपन विधीनां, कृतोपवासानां प्रगुणीकरणम् ।"

अर्थ—'जेमनां बंने कुलो (मातानुं अने पितानुं) शुद्ध होय एवा तथा अखंडित अने नीरोगीशरीरवाला, सौम्यस्वभावी, विचक्षण, स्नात्रविधिना अभ्यासी अने उपवासी एवा ४ स्नात्रकारो तैयार करवा.'

गुणरत्नसूरीजी स्नात्रकारोनी योग्यता नीचे प्रमाणे लखे छे—

"सरत्नमुद्रिकाकंकणसहिता अक्षतांगा अक्षतेन्द्रिया दक्षा अखण्डोल्बण वेषा धर्मवन्त उपोषितास्तद्दिन ब्रह्मचारिणः कुलीनाः चत्वारोऽधिका वा स्नात्रकाराः कर्तव्याः ।"

गुणरत्नसूरिजीना उक्त लखाणमां एमना पहेलाना कल्पकारोना लेखोथी बहुभिन्नता नथी, मात्र त्रण बातोमां थोडोक फरक छे, एमणे 'मुद्रिका'ने 'सरत्न' ए विशेषण लगाडयुं छे, वेषने 'उज्ज्वल'ने बदले 'उल्बण' ए विशेषण जोडयुं छे अने स्नात्रकारोने 'तद्दिनब्रह्मचारिणः' एटले 'ते दिवसे ब्रह्मचर्य पालनार' ए विशेषण वधारानुं लगाडयुं छे, बीजो कंइ भेद नथी.

विशालराजशिष्ये पण स्नात्रकारोनुं लक्षण पूर्वोक्त प्रकारे ज बांध्युं छे, मात्र "जघन्यतोऽपि ८ दिन ब्रह्मचारिणः" अने "दयावन्तः" अर्थात् 'ओछामां ओछुं ८ दिवस सुधी ब्रह्मचर्य राखनार' अने 'दयावान्' ए बे विशेषणो वधार्यां छे.

नं. ७ वाला प्रतिष्ठा कल्पलेखके स्नात्रकारोना वर्णनमां श्रीचन्द्र अने जिनप्रभसूरिना शब्दे शब्दनो अनुवाद आप्यो छे.

नं. ८ वाला प्रतिष्ठाकल्पमां एना लेखके स्नात्रकारोनी योग्यताने अंगे कंइ पण लख्युं नथी, श्रीपादलिप्ताचार्ये जेम एक

इन्द्रनी योग्यता बतावी छे, तेम आमां 'प्रतिष्ठाकारक' श्रावकनी योग्यतानो एक श्लोकमां उल्लेख कर्यो छे, जे नीचे प्रमाणे छे—

" विनीतो बुद्धिमान् प्रीतो, न्यायोपात्तधनो महान् । शीलादिगुणसंपन्नः, श्राद्धोऽत्र सम्प्रशस्यते ॥२॥

अर्थात् 'विनयवान्, बुद्धिशाली, लोकप्रिय, न्यायोपार्जित धनसपन्न, शीलादिगुणयुक्त एवो श्रावक प्रतिष्ठाधिकारमा प्रशंसनीय छे.'

(५) औषधि वाटनारी अने पुंखणा करनारी स्त्रियो—

अभिषेकोनी औषधियो वाटवा अने पुंखणा करवा माटे पण प्रतिष्ठा कल्पकारोए विशेषयोग्यतावाली स्त्रियोनुं विधान कर्युं छे

निर्वाणकलिकामा आचार्य श्रीपादलिप्तसूरिजीए ए विषयमां नीचे प्रमाणे उल्लेख कर्यो छे—

" तदनुरूपयौवनलावण्यवत्यो रुचिरोदारवेषा अविधवाः सुकुमारिका-गुडपिण्डपिहितमुखान् चतुरः कुम्भान् कोणेषु संस्थाप्य कांस्यपात्रिविनिहितदूर्वादध्यक्षततर्कुकाद्युपकरणसमन्विताः सुवर्णादिदान पुरस्सरमष्टौ चतस्रो वा नार्यो रक्तसूत्रेण स्पृशेयुः । "

अर्थ–ते पछी रूप यौवन लावण्ये करी युक्त सुन्दर शणगार सजेली एवी ८ अथवा ४ सधवा स्त्रियो सुहाली अने गुडपिंड जेमना मुख उपर राखेल छे एवा ४ कलशो खुणाओमा थापीने कांसीना पात्रमा ध्रो, दहि, अक्षत, त्राक आदि उपकरणो लइने सुवर्णदानपूर्वक रक्तसूत्रथी स्पर्श करे !

पादलिप्तसूरिना उक्त वर्णनथी ए फलित थाय छे के भगवानने पुंखणां करनारी स्त्रीयो कुरूपा, वृद्धा, निस्तेज अने घृणित वेष पहेरेली न होवी जोइये, पण प्रभावोत्पादक होवी जोइये.

औषधिवर्तन स्त्रियोना हाथे कराववुं के केम ? ए विषयमां पादलिप्तसूरिजीए कंइ पण सूचव्युं नथी.

श्रीचन्द्रसूरिजी पोतानी प्रतिष्ठाविधिमां आ स्त्रियोना विषयमां नीचेना शब्दोमां वर्णन करे छे—

“ तत्रैव मङ्गलाचारपूर्वकमविधवाभिश्चतुःप्रभृतिभिः प्रधानोज्ज्वलनेपथ्याभरणाभिर्विशुद्धशीलाभिः सकंकणहस्ताभिर्नारीभिः पञ्चरत्न-कषाय-मांगल्यमृत्तिकाऽष्टवर्गसर्वौषध्यादीनां वर्तनं कारणीयं क्रमेण ”।

अर्थ—' ते ज वखते (स्नात्रकारोने तैयार करती वखते) मंगलाचार पूर्वक श्रेष्ठ वस्त्राभरणोथी शोभती शुद्धशीलवन्ती हाथे कंकण पहेरेली ४ आदि संख्यावाली सोहागण स्त्रियोना हाथे पञ्चरत्न, कषायछाल, मंगलमाटी अष्टवर्ग, सर्वौषधि आदि अनुक्रमे वटाववां ।

जिनप्रभसूरिजी पोतानी प्रतिष्ठा विधिमां औषधि वाटनारी स्त्रियोने अंगे “ जीवत्पितृमातृ-श्वशुरादिभिः ” अर्थात्—' जेमनां माता पिता सासू ससरो जीवन्त होय ' ए विशेषण वधार्युं छे, बाकी श्रीचंद्रसूरिजीना ज शब्दो उतार्या छे.

वर्धमानसूरिजी पोताना प्रतिष्ठाकल्पमां औषधि वांटनारी स्त्रियोना संबन्धमां नीचेनां विशेषणो वापरे छे—

“ चतसृणां चौषधिपेषणकारिणीनामुभयकुलविशुद्धानां सपुत्रभर्तृकाणां सतीनामखण्डितांगीनां दक्षाणां शुचीनां सचेतनानां प्रगुणीकरणम् ।”

अर्थ—' जेमना बने कुलो शुद्ध होय, जेमने पति तथा पुत्र विद्यमान होय, जेओ पतिव्रता, अखंडित शरीरवाली, चतुर, पवित्र अने सावधान होय एवी ४ स्त्रियो औषधि पीसवा माटे तैयार करवी. '

गुणरत्नसूरिजी औषधिवाटनारी स्त्रियोने अंगे आम लखे छे—

" अथ जीवत् श्वश्रूश्वशुरकमातृपितृपतिकाश्चतस्रः कुलीनाः प्रधानवेषाभरणाः सुशीलाः पवित्राश्च समाकार्याः सर्वाणि स्नात्रौषधानि वर्तनीयानि तासां च प्रत्येकं कर्पट-नालिकेर-सुखभक्षिकार्पणाद्युपचारः कार्यः, कुङ्कुम-कुसुम-तांबूलपूर्वकं, ताभिश्च यथाशक्तिदेवाय परिधापनिकादिभक्तिः कार्या ।"

अर्थ—' जेमनां सासू ससरा माता पिता पति जीवित होय एवी ४ कुलवन्ती सुन्दरवेषभूषावाली सुशील अने पवित्र स्त्रियोने बोलाववी, स्नात्रना सर्व औषधो तेमना हाथे वटाववा अने ते प्रत्येक जणीनो कापड, नालियेर, सुखडी आदिथी सत्कार करवो. कुङ्कुम, पुष्प, तंबोल आपवा,अने तेओए पण शक्ति मुजब देवने पहेरामणी आदि आपीने भक्ति करवी.'

विशालराजशिष्ये पोताना कल्पमा न० ३१४ ना कल्पोना वर्णननो उतारो कर्यो छे.

कल्प नं० ७ मा स्त्रियोने अंगे कल्प न० २ नो शब्दार्थ लख्यो छे.

न० ८ ना कल्पमा पुखणना प्रसंगोमा स्त्रियोनो उल्लेख आप्या कर्यो छे पण तेमनी योग्यताने अंगे कंइ पण लखायुं नथी स्नात्रकारो तेमज पुखणारी स्त्रियोने अंगे जे योग्यताना वर्णनो कल्पकारोए कर्यां छे तेमा आवता ' अक्षतांग, अक्षतेन्द्रिय, कुलीन, धर्मबहुमानी, उपवासी ' आदि विशेषणो आजना प्रतिष्ठातत्रनायकोए ध्यानमा राखवा जेवा छे, ए विशेषणोने अंगे

घणा प्रतिष्ठाकल्पकारो 'एकमत' छे.

६ आधुनिक प्रतिष्ठाविधानोना आधारग्रन्थो—

प्रतिष्ठाओ पूर्वे थती हती अने वर्तमान कालमां पण थाय छे, प्रतिष्ठासंबन्धी क्रियाविधानो पूर्वकालमां थतां हतां अने आजे ये थाय छे, पण आ कार्यो करवा माटे कोइ पण प्रामाणिक ग्रन्थनो आधार तो होवो ज जोइये, पण आजे कोइ खास ग्रन्थने ज आधारे क्रिया विधानो थतां नथी. जलयात्राविधिनो आधार एक छे, तो कुंभस्थापन विधिनो आधार बीजो, ग्रह दिक्पालोनुं पूजन कोइ ग्रन्थना आधारे कराय छे तो प्रतिष्ठाविधि कोइ त्रीजा ज ग्रन्थना आधारे कराय छे. आ बधी अव्यवस्थानुं खरुं कारण एक एवा प्रामाणिक अने सर्वांग संपन्न ए विषयना ग्रन्थनो अभाव गणी शकाय.

आजकालनी अंजनप्रतिष्ठाओ, बिंबप्रवेशविधिओ अने अष्टोत्तरी आदि महापूजाओना आधार ग्रन्थो ४ छे.

(१) उपाध्याय सकलचंद्रजीनो "प्रतिष्ठाकल्प" (२) श्रीरत्नशेखरसूरि विरचित गणाती "जलयात्रादि:विधि" (३), यति कान्तिसागर संकलित "बिम्ब प्रवेशविधि" अने (४) अष्टोत्तर स्नात्रपूजा विधि—

उपर्युक्त च्यार ग्रन्थो पैकीनो एक पण ग्रन्थ सर्वांगपूर्ण अने प्रामाणिक मानीने ते प्रमाणे विधिविधान करवानो निर्णय कराय एवुं नथी.

(१) सकलचंद्रजी कृत 'प्रतिष्ठाकल्प' केटलो बधा अव्यवस्थित छे ए संबन्धमां उपर बहु कहेवाइ गयुं छे—

(२) 'जलयात्रादिविधि' आ ग्रन्थना मुद्रित पुस्तक उपर रचनार तरीके श्रीरत्नशेखरसूरिजीनुं नाम छपायेल छे. परन्तु

आ ग्रंथ श्रीरत्नशेखरसूरिरचित होवामा कंइ ज प्रमाण नथी, एथी विपरीत आ ग्रन्थने अर्वाचीन सिद्ध करनारा केटलाक कारणो आ ग्रन्थनी अंदरथी ज मली आवे छे. जे नीचे प्रमाणे छे—

(१) आ ग्रन्थोक्त ' जलयात्राविधिमा " क्षीरोदधे स्वयंभूश्च " इत्यादि श्लोको दृष्टिगोचर थाय छे जे श्रीरत्नशेखरसूरिना समयमा तो शु पण सं० १६८० सुधीमा लखायेल कोइ ' जलयात्राविधि' मा नथी

(२) आ ग्रन्थमानी कुंभस्थापन विधि अने बिंबप्रवेशविधिओ अढारमा सैका पहेलानी नथी.

(३) यक्षकर्दमथी ग्रहो दिक्पालो अने अष्टमंगलोना पाटलाओनुं आलेखनविधान आमा सूचव्युं छे ते श्रीसकलचंद्रजीना समय पहेलानु नथी.

(४) ग्रहादिना पाटलाओ उपरांत ३० न्हाना पाटला तैयार करवानु विधान कर्युं छे ते अढारमा सैका पहेलानी कोइ पण अष्टोत्तरी स्नात्र विधिमा जोवामा आवतु नथी

(५) जलयात्रामा जल काढती वखते अंकुश, मत्स्य, कच्छप मुद्राओ देखाडवानु आवुं विधान सकलचंद्रजीनी पहेलानुं नथी.

(६) धूप तरीके आमा अगरबत्तीनो उल्लेख मले छे जे आ विधिग्रन्थनी अर्वाचीनता साबित करे छे.

(७) मंडप पूजनमा ' घटाकरण 'ना पाठथी सुखडी मंत्रीने वहेंचवानु विधान पण आ ग्रन्थनी अर्वाचीनता प्रमाणित करे छे

(८) " परमेष्ठिनमस्कार " इत्यादि स्तोत्रवडे ' सकलीकरण 'ना विधानथी पण ए ग्रन्थ नवीन सिद्ध थाय छे, कारण

के रत्नशेखरसूरिनो समय पंदरमा सैकानो उत्तरार्ध तथा सोलमा सैकानो प्रथम चरण छे ज्यारे आ स्तोत्रनु निर्माण सत्तरमा सैकामां थयेलुं छे.

(९) आमां थयेलो "श्राद्धविधि" नो नामोल्लेख पण ए ग्रन्थना श्रीरत्नशेखरसूरिकृत नथी ए मान्यतानो ज पुष्टि करे छे, केमके श्राद्धविधि रत्नशेखरसूरिनी ज कृति छे जो प्रकृत पुस्तक पण श्राद्धविधिकारनी ज कृति होय तो तेमां प्रमाण रूपे उल्लेख थाय नहि, आ ग्रन्थमांनु जलयात्राविधि, ग्रह-दिक्पालपूजनविधि, बिंबप्रवेशविधि, आदि विधिओ "बिंबप्रवेशविधि" संदर्भनो ज उतारो छे एटले बिंबप्रवेशविधिथी पण अर्वाचीन संग्रह छे.

(३) "बिम्बप्रवेशविधि" आ ग्रन्थ सं० १८१४ नी सालमां पूर्णिमा पक्षना श्री पूज्य श्रीपुण्यसागरसूरिना आज्ञावर्ति पंन्यास यतिश्री सुज्ञानसागरना शिष्य यति श्रीकान्तिसागरे लखेलो छे अने हमणां थोडाक वर्षो उपर अमदावादना एक मास्तरे छपावेल पण छे. नाम प्रमाणे आमां मुख्य वस्तु देहरामां प्रतिमा स्थापन विधि छे, अने जलयात्रा, कुंभ स्थापन आदिनी विधिओ मूलविधि विधिनां ज अंगभूत प्रकरणो छे, आमांनु अभिषेक प्रकरण, आचार दिनकरमांथी उमेर्युं छे. जे अनावश्यक छे.

आ ग्रन्थना संदर्भक यति कांतिसागर सारा विद्वान् के ए विषयना अनुभवी होय एम आ ग्रन्थ उपरथी जणातुं नथी. मंगलाचरण तथा प्रशस्तिना श्लोकोमां छन्दोभंग अने व्याकरण संबन्धी अशुद्धिओ जोतां एमनामां संस्कृत ज्ञानना खामी जणाइ आवे छे अने प्रतिष्ठाविधिने विषे पण एमनुं जाणपणुं तद्दन काचुं ज हतुं एम एमना आ संदर्भ उपरथी जणाइ आवे छे. बिम्बप्रवेश विधिमां एमणे जे अनावश्यक उमेरो कर्यो छे तेमां केटलुंक तो केवल यतिपणाना आडंबरनुं ज प्रदर्शन कर्युं

छे. अमारी पासे १५मा सैकाथी माडीने १८मा सैका सुधीमा लखायेली ७ प्राचीन बिंबप्रवेश विधिओ छे पण ते पैकीनी कोइ विधिमा १६ अने ४ पात्रो मूकवानो के प्रतिष्ठाने पहेले दिवसे अगाशीमा जइ धूप उखेववानु के नोकारवाली गणवानुं काइ सूचन मात्र पण नथी परन्तु प्रस्तुत विधिमा ए बधो आडम्बर एना लखनारे वधार्यो एटले आडम्बरप्रियविधिकारोए आ सद्मंने पकडी लीधो. बधा प्रतिष्ठाचार्यो अने स्नात्रकारो आ विधान उपर राची गया एटले प्राचीन समयना ए विषयना संक्षिप्त अने मौलिक विधानो ज्ञानभंडारोमा ज पडी रह्या तेमना विधानो व्यवहारमाथी उठी गया, जेम उ० सकलचंद्रना प्रतिष्ठाकल्पे लोकमनोरंजनद्वारा पोतानो प्रचार वधार्यो अने सारा सारा प्रतिष्ठाकल्पोने प्रचारमाथी बातल कर्या अने पोतानो अड्डो जमाव्यो तेज रीते कान्तिसागरना यतिशाही आडम्बरे बीजी बिंब प्रवेशविधिओने पाछल धकेली पोतानो पगदंडो जमावी लीधो आजना बधा प्रतिष्ठाचार्यो अने विधिकारो ए विधिने ज ओळखे एटले प्राचीन बिंबप्रवेशविधिओनो कइ पण उपयोग थशे नहिं एम जाणी अमोए पण आ विस्तृत बिंबप्रवेशविधिनु अनुसरण कर्यु छे, कलिकामां जे न्हानी ३ बिंब प्रवेश विधिओ आपी छे ते घणी जुनी छे. ए प्रमाणे बिंब प्रवेशविधि कराचाय तो घणा ज ओछा खर्चे काम थइ शके तेम छे

बिंबप्रवेश विधिमां एक बीजी भूल—

प्रचलितबिंबप्रवेशविधि छपाया पछी थोडाक समयमा अमारी पासे आवेल, अमोए तेना प्रकरणोना शीर्षको जोया तो एक शीर्षक "नवीनप्रासादे नवीनप्रतिमास्थापन" एवुं जोयु, अमारा माटे ए वस्तु नवी हती, तरत ते प्रकरण वाच्युं तो आश्चर्य साथे दुःख थयु के आ लेखकनी एक अज्ञान जनित भूल हती, वास्तवमा आ प्रकरण नव्यप्रासादना निर्माणमा करातु 'कूर्मस्थापन' प्रक-

रण हतुं, गुणरत्नसूरि, विशालराजशिष्यआदिना प्रतिष्ठाकल्पोमां आ वस्तु स्पष्टरूपे लखेली छे छतां तेने न समजीने कांतिसागरे आ छबरडो वाल्यो छे एमां कशो संदेह नथी, 'बिम्बप्रवेशविधि'कारनी आवी भूल जाण्या पछी अमारी श्रद्धा ए पुस्तक उपरथी उठी गइ अने निर्णय कर्यो के आवा अनधिकारीने हाथे रचायेल आ संदर्भ करतां तो नवी विधि तैयार करवी वधु उपयोगी थइ पडशे अने विधिकारोने आवी भूलोथी बचावशे.

(४) अष्टोत्तरी-स्नात्रविधि—

बिम्बप्रवेशविधि उपरांत श्री कांतिसागरे अष्टोत्तरी स्नात्रविधि उपर पण पोतानी कृति तरीकेनी महोर छाप मारी छे जे तेना निम्नोक्त मंगलाचरणना श्लोक उपरथी जाणी शकाय छे—

"प्रणम्य पार्श्वपादाब्जं, ज्ञानकान्तिप्रदायिनम् । वक्ष्ये शताष्टभेदेन, विधिना स्नात्रमुत्तमम् ॥१॥"

अष्टोत्तरीना उपर्युक्त श्लोकमां श्री कान्तिसागर एवा ढंगथी बोले छे के जाणे पोते कोइ नवी कृतिनी रचना करता होय, वास्तवमां श्रीकांतिसागरे प्राचीन अष्टोत्तरी स्नात्रविधिमां अनावश्यक वस्तुओनो वधारो अने निरुपयोगी प्रकरणोनो उमेरो करवा उपरांत नवुं कंइ ज कर्युं नथी आ हकीकत आगल उपर स्पष्ट थशे, अष्टोत्तरीनी प्रशस्तिमां श्रीकांतिसागर रचनासमय, पोताना गुरु तथा गच्छपति श्रीपूज्य आचार्यनो आ प्रमाणे परिचय आपे छे—

"संवद् युगेन्दुनागेन्दु (१८१४) प्रमिते माधवोज्ज्वले । पक्षे हि कविपञ्चम्यां, दर्भावत्यां पुरि स्थितः ॥१॥
पुण्यानुबन्धिपुण्याढ्य-पुण्यादिसिन्धुसूरीणाम् । राज्ये प्राज्ञसुज्ञानादि-सागराणां हि शिष्यकः ॥२॥

तेनेदं (नाथ) मन्दमतिना, समुचितोऽष्टोत्तरीस्नात्रविधिमार्गः ।
ज्ञात्वा गुरुतोऽत्र यद्यदशुद्धं शोध्य हि बुद्धिवरैः ॥३॥"

जिनप्रवेशविधिमां पण एज त्रण पद्यो प्रशस्तिरूपे लखेल छे, मात्र तृतीय पद्यना तृतीयचरणमां "समुच्चितो जिनप्रवेश विधिमार्गः ।" ए पाठान्तर करेल छे, बने निबन्धोना मंगलाचरणमां निबंधकारे "ज्ञान-कान्ति" शब्दोनो उल्लेख करी गुरु तथा पोताना नामनुं गर्भित सूचन कर्युं छे, प्रशस्तिमां ए बने प्रबन्धो सं० १८१४ ना वैशाख सुदि ५ शुक्रवारे डभोईमां रहेल मुज्ञानसागरना शिष्ये (कान्तिसागरे) जिनप्रवेशविधिनो मार्ग अने अष्टोत्तरी स्नात्रविधिनो मार्ग समुचित कर्यो एम जणाव्युं छे पण मार्गनुं प्रदर्शन थाय नहिं के 'समुच्चय'. छतां श्रीकान्तिसागर मार्गनो समुच्चय करे छे ए पण एक नवी हकीकत छे.

श्री कान्तिसागरे आ अष्टोत्तरीस्नात्रविधिमां समानविषयक केटलो बधो निरर्थक वधारो कर्यो छे तेनो खरो ख्याल तो प्राचीन अष्टोत्तरीनुं स्वरूप अने तेना सामाननुं लिस्ट जोवाथी ज आवी शके, एटला वास्ते अमोए कलिकामां प्राचीन अने कान्तिसागरे तैयार करेल अर्वाचीन अष्टोत्तरीनुं दिग्दर्शन करावी जुनी नवी बंने अष्टोत्तरीनी सामान सूचीओ आपी छे के जे उपरथी वाचक गण तुलना करी शके, अष्टोत्तरीनी प्राचीनविधिमां अष्टाह्निकोत्सव,जलयात्रा. कुंभस्थापन, अष्टमंगलस्थापन, स्मरणपाठ आदिनी जरूरत नथी, ग्रहदिक्पालोनुं संक्षिप्त पूजन छे, पण ग्रहोनी मालाओ नथी, १०८ नालनो कलश नथी, चोखंडा २ रूपैया तथा १९ त्रांबाना अधेलाओ सिवाय नाणुं जोइतुं नथी, २ अखंड वस्त्रो अने १०) गज रंगीन वस्त्रना १०) खंडो धजाउ सिवाय वस्त्रनी आवश्यकता होती नथी.

बीजां उपकरणो पण घणां ज ओछां अने अल्पमूल्य छे.

सत्तरमा सैकाना पूर्वार्धमां लखायेल आ अष्टोत्तरीनी प्रति अमारी पासे छे, पण एथी जुनी प्रति क्यांइ अमोए जोइ नथी.

आचारदिनकरान्तर्गत प्रतिष्ठाविधिमां महापूजा मले छे, ए ज प्रमाणे पञ्चामृतमहास्नात्रना नामथी ओळखाती पूजाओ अन्यत्र पण जोवाय छे. पण अष्टोत्तरी स्नात्रनामथी ओळखाती आ पूजानी साथे ते महापूजाओनो कशो ज संबन्ध नथी.

उपलब्ध प्रतिष्ठाकल्पोमां आवी अष्टोत्तरी स्नात्रपूजा क्यांइ मलती नथी, आथी जणाय छे के 'अष्टोत्तरी' पूजा बहु प्राचीन नथी, विक्रमना पंदरमा अथवा सोलमा शतकमां आनुं निर्माण थयुं हशे एवुं अम्हारुं अनुमान छे. अने एथी ज सोलमा सैका सुधी आमां मौलिकता जलवाइ रही छे.

आ विधि घणी ज सुगम सुखसाध्य अने अल्पव्यय साध्य छे एज एनी मौलिकतामां प्रमाण छे, ते समये आने भणावनार अने प्रचारक साधुओ त्यागी होवाना कारणे आनी सामग्रीमां स्वार्थने लेइने अनुचित वृद्धि कराई नथी, पण कालान्तरे आमां ते विकृति पेसी गइ जे आजे छे.

१६३९ अने १८८७ नी वच्चेनां २४८ वर्षोमां सामग्रीमां के सामग्रीगतपदार्थोना परिमाणमां बहु वधारो थयो नथी, अष्टमंगलनी पाटली, १२ पाटला, केटलांक वस्त्रो अने केटलांक बीजां सामान्य उपकरणोमां वृद्धि थइ छे अने विभिन्नं पण केटलोक वधारो थयो छे, प्राचीन विधिने अनुसारे पूर्वे अष्टोत्तर स्नात्र थया पछी प्रतिमाओने शुद्ध जले पखाली अंगलूंछी पूजीने नैवेद्यादिक धरी आठ थोये देववंदन करातुं अने ते पछी लघुस्नात्र भणावीने आरती करावी हती. ओगणीशमा सैकानी लखेली

४–प्र० प्राणप्रतिष्ठा एटले शुं ? केटलाक प्रतिष्ठाकरावनाराओ अंजनशलाकाने ' प्राणप्रतिष्ठा ' कहे छे ए बराबर छे ?

उ० नहि, अंजनशलाका प्राणप्रतिष्ठा कहेवाती नथी पण प्रतिमामां प्राणापानादि वायुदशकनो न्यास करवो ए प्राणप्रतिष्ठा छे, आजकालनी अंजनशलाकाओमां ' प्राणप्रतिष्ठा ' च्यवनकल्याणकनी विधिमां अंतर्गत कराय छे. अंजनशलाकाने प्राणप्रतिष्ठा कहेनारा अजाण छे.

५–प्र० खंडितप्रतिमाने विसर्जन करवानी क्रिया सत्त्व खेंचवा माटे कराय छे. तो अहियां ' सत्त्व ' शब्दथी शुं समजवुं ? कोइ एने अंजन खेंचवानी क्रिया पण कहे छे ते बराबर छे ?

उ० नहि, अंजन खेंचवा माटे ए क्रिया नथी, तेम प्रतिष्ठा सम्बन्धी मंत्र–सत्त्व खेंचवानी पण ए क्रिया नथी, केमके प्रतिमा खंडित थतां प्रतिष्ठानुं सानिध्य तो स्वयं मटी जाय छे, जीर्णोद्धारनी क्रियामां जे सत्त्व खेंचाय छे ते व्यन्तरादि देवरूप सत्त्व खेंचाय छे, कोइ लाक्षणिक सुन्दर देवप्रतिमा खंडित थया पछी तेमांथी प्रतिष्ठानुं सानिध्य मटी जाय छे अने भूत प्रेतादि जातिना हलका देवसत्त्वनुं तेमां अधिष्ठान थइ जवानो संभव रहे छे, तेवी प्रतिमामां जो कोईनुं अधिष्ठान थयेल होय ने ते प्रतिमा आमनी आम भंडारी देवाय तो नुकसान थवानो भय रहे छे ते कारणे ते अधिष्ठातृ सत्त्वने बहार काढवानी क्रिया करवी पडे छे.

६–प्र० माडमाडी अथवा मातृशाटिकानो शो अर्थ छे ?

उ० लग्नप्रसंगे कन्या मातृघरमां (माहेरामां) जे साडी ओढे छे ते मातृशाटिका कहेवाय छे. तेज प्रकारना कुसुंबी रंगना

वस्त्रने प्रतिष्ठा विधिकारो 'माइसाडी' कहे छे. आ विषयमां श्रीचन्द्रसूरिजी कहे छे—

" अव्यङ्गां यमलिं दत्त्वा, कारयेदधिवासनाम् । द्वितीयां भक्तितो दत्त्वा, प्रतिष्ठां च विधापयेत् ॥ "

आम श्रीचन्द्रसूरिजी अने एमनी पद्धतिना अनुयायीओ अधिवासना अने प्रतिष्ठामां बे माइसाडीओनुं विधान करे छे त्यारे पादलिप्तप्रतिष्ठापद्धतिना मार्गे चालनारा कल्पकारो अधिवासना समये ज माइसाडी आरोपवानो आदेश करे छे. अने प्रतिष्ठाप्रसंगे श्वेतवस्त्रनुं विधान करे छे.

७–प्र० राद्धबलि अने कोरकबलि नो अर्थ शो छे ?

उ० राद्धबलि एटले रांधेल नैवेद्य, भले सात धान्यनो खीचडो ज होय पण जे अग्नि उपर सीझेल होय ते सर्व राद्धबलि गणाय छे ज्यारे मात्र भीजवीने जे बाकला बलि रूपे नंखाय छे ते कोरकबलि कहेवाय छे, पूर्वे बाकला पण रांधीने ज तेमां घृत, खांड, मेवो विगेरे नांखीने उछालाता हता पण यति कांतिसागरे आ राद्धबलि नाखवानी रीतिने मात्र प्रवाह छे एम कहीने कोरा बाकलानी हिमायत कर्या पछी एमनी विधिओनो प्रचार थतां विधिकारो कोरी बलि नाखवाने चीले चढी गया छे.

८–प्र० प्रवेशमां कलश—चक्र न मलतुं होय तो प्रतिमाने गभारामां लेइ जइने अंजनशलाका करी शकाय !

उ० नहिं, कोइ पण प्रतिमानुं अंजन विधान अधिवासना मंडपमां करवानुं होय छे, जेओ कलशचक्रना अभावे प्रतिमानुं

अंजन विधान गभारामा करे छे तेओ कल्पविरुद्ध करे छे.

९–प्र० प्रवेशमां कलशचक्र होवुं ज जोइये ए नियम खरो ?

उ० आधुनिक ज्योतिषिओ तथा क्रियाकारकोए नियम मानी लीधो छे, बाकी प्राचीन ज्योतिषशास्त्रमा के प्रतिष्ठाकल्पोमा कलशचक्रनी चर्चा नथी, जसो त्रणसो वर्षोथी ज्योतिषिओए स्वरशास्त्रोक्त केटलाक चक्रो अपनावी लीधा छे, वास्तवमां ए वस्तु ज्योतिषिओना घरनी नथी

१०–प्र० बिंबप्रवेशमा चद्र डाबो जमणो ज होवो जोइये संमुखनो अगर पाछलनो नहि, आम आजकाल केटलाक ज्योतिषीओ कहे छे ते यथार्थ छे ?

उ० नहि, प्रवेशमा चंद्रनु गोचर बल ज जोवानुं छे, दिशा जोवानी नथी, चद्र संमुख पृष्ठनो वर्जित कर्यो छे ते प्रसंग गृहारंभनो छे, नहि के प्रवेशनो, ओछी बुद्धिना ज्योतिषीओए आ गृह निर्माणना विधानने गृहप्रवेशमा जोडीने अज्ञाननुं ज प्रदर्शन कर्युं छे, चन्द्र, काल, पाश, योगिनी आदिनुं जे दिशापरक विधान छे तेनो सबन्ध यात्रा प्रकरणनी साथे छे नहि के प्रवेशनी साथे

११–प्र० प्रतिष्ठा, पूजामा कराता कुंभस्थापनमा कलशचक्र होवु ज जोइये ए खरु ?

उ० ना, कुंभस्थापनमा कलशचक्र होय तो सारु एवी मान्यता पं० कांतिसागरनी बिंब प्रवेशविधि प्रचलित थया पछीनी छे, पूर्वकालीन कोइ पण विधिमां आ विषेनो उल्लेख मलतो नथी.

१२–प्र० प्रतिष्ठादिकार्योमां जवारा क्यारे वाववा ?

उ० जवारा उत्सवना आरंभ पूर्वे ववाय तो वधारे सारुं, केमके शीत ऋतुमां म्होडा उगता होवाथी वहेला ववाय तो ज देखवा जेवा थाय, पण ए वातनुं ध्यान राखवुं जोइये के वाववानो दिवस जे कार्य निमित्ते ते ववाय छे तेना लग्नथी पहेलांनो बीजो छट्ठो के नवमो न होवो जोइये, कारण के आ दिवसोमां शुभ कार्यनिमित्ते यववारक वपन, तथा मंडप अने वेदी आदिनो आरंभ करवानुं वर्जित छे.

१३–प्र० प्रतिष्ठा–अंजनशलाका निमित्ते मंडपमां करता कुंभस्थापननी जोडे क्षेत्रपालनी स्थापना करी तेल सिंदूर चढावे छे ए वस्तु बराबर छे ?

उ० नहि, प्रतिष्ठामंडपमां क्षेत्रपालनी स्थापनानुं विधान नथी, मात्र भगवाननी जमणी दिशामां तेनो मंत्र बोलीने पुष्पाक्षतो वडे पूजवानो उल्लेख छे, सकलचंद्रीय प्रतिष्ठाकल्पमां तेना वर्णननुं एक काव्य छे जेमां अफीण, तेल, गोल, चंदन, पुष्प, धूपोनो भोग स्वीकारवानी प्रार्थना छे, 'सिंदूर' शब्द नथी, वली क्षेत्रपालनो आह्वान अने पूजन मंत्र छे पण स्थापनमंत्र नथी तेम नालिएर अगर पत्थर उपर तेल सिंदूर चढावी क्षेत्रपालनी स्थापना करवानो उल्लेख सुधां अमारी उक्त प्रतिष्ठाकल्पनी कोइ प्रतिमां नथी, वली प्रतिष्ठामंडप जेवा पवित्रस्थानमां तेल सिन्दूरनुं प्रदर्शन के जे वास्तवमां 'रुधिर'नुं प्रतीक छे, आ खरेखर बीभत्स वस्तु छे.

१४–प्र० यक्ष यक्षिणीनी प्रतिष्ठा निमित्ते जिनप्रतिष्ठामां पण केटलाक विधिकारो होम करावे छे ए योग्य छे ?

उ० जिनप्रतिष्ठामा तो शु स्वतंत्रपणे यक्ष यक्षिणीनी प्रतिष्ठा होय तो ये होम करवानी आवश्यकता नथी, यक्षयक्षिणी जिनचैत्यमा जिनसेवक रूपे प्रतिष्ठित थाय छे नहि के विशिष्ट देवरूपे, जिनभक्तो जिन सामीप्यमा अग्निमुखथी भोग्यवस्तुनी स्वप्नमा पण इच्छा न राखे, आचारदिनकरमां जे होमनो निर्देश छे ते तान्त्रिक मतनी छाया छे, बीजा कोइ पण प्रतिष्ठाकल्पकारे ए वस्तुनो स्वीकार कर्यो नथी, पादलिप्तसूरिजी जे तान्त्रिक युगना समर्थ विद्वान् हता पण तेमणे पोतानी पद्धतिमा हवनतु नाम पण निर्देश्युं नथी, आथी समजवु जोइये के होम ए जैनोनी क्रिया नथी.

१५–प्र० अंजनशलाका थया पछी जिनबिंबना हाथथी कंकण क्यारे छोडवुं ?

उ० जरूरी कारणे अंजनशलाका थया पछी प्रतिमा ज्यारे गादीए बेसी जाय त्यारपछी सौभाग्यमंत्रन्यासपूर्वक पहेले दिवसे कंकण छोडवां, अने उतावल न होय तो चद्रबल पहोंचतु होय ते त्रीजे पांचमे सातमे आदि विषम दिवसे कंकण छोडवानी क्रिया करीने कंकण छोडवां, स्नात्रकारो नोकार गणीने पण पोतानां कंकण छोडी शके छे.

१६–प्र० आजकालना केटलाक विधिकारो दीक्षा कल्याणकनी उजवणी प्रसंगे बधी प्रतिमाओनां कंकण छोडी नाखे छे ए केवु ?

उ० प्रतिष्ठा थया पूर्वेज कंकण छोडी देवा ए भूल छे, जे कार्य निमित्ते कंकण बंधाय छे ते कार्य पूर्ण थया पछी ज कंकण छोडवु पहेला नहि.

१७–प्र० घरदेहरासरमा मल्लिनाथ, नेमिनाथ अने महावीर आ त्रण तीर्थंकरोनी प्रतिमा न पूजवी आम कहेवाय छे ए शास्त्रोक्त छे ?

उ० शास्त्रोक्त तो नथी, पण सर्वप्रथम खरतरगच्छना कोइ आचार्ये लख्युं अने चाली पड्यु, पाछलथी उपाध्याय सकल-

चंद्रजीए पोताना प्रतिष्ठाकल्पमां ते लोकोनी गाथानुं उद्धरण आप्युं एटले आपणामां पण ते वस्तु मनाइ गइ, वास्तवमां ए प्रतिमाओ घरमां पूजवानो वहेम राखवो ए अनुचित छे.

१८–प्र० आजकाल केटलेक ठेकाणे प्रतिष्ठा मंडपमां अथवा तेनी पासे जुदा भागमां केटलांक घटनाचित्रो देखाडाय छे जेमां केटलांक भयंकर उपसर्ग संबन्धी होय छे, तो आवां चित्रो प्रतिष्ठा प्रसंगे लोकोने देखाडवामां बाध खरो के नहिं?

उ० ज्यां केवल मानसिक उत्साह अने मंगलमय वातावरण होवुं जोइये ए शुभ प्रसंगे आवां चित्रो न देखाडवां जोइये के जे जोतां दर्शकना मनमां खेद अने दुःखनी लागणी जागृत् करे अने एकधारी मानसिक प्रसन्नता अने लागणीने अल्पमात्र पण क्षति पहोंचाडे.

१९–प्र० प्रतिमानुं अंजन करती वखते प्रतिष्ठाचार्यने सुवर्णमुद्रिका तथा सुवर्णकंकण धारण करवा संबन्धी प्रतिष्ठाकल्पोमां लेख छे खरो?

उ० हां, निर्वाणकलिका, श्रीचन्द्रप्रतिष्ठापद्धति, जिनप्रभप्रतिष्ठापद्धति, आचारदिनकरीय प्रतिष्ठापद्धति वगेरेमां उक्त मुद्रिकादि प्रतिष्ठाचार्ये धारण करवां एवुं विधान छे, पण गुणरत्न विशालराजशिष्य सकलचन्द्र आदिना प्रतिष्ठा-कल्पोमां आचार्य माटे उक्त वस्तुओ विहित नथी.

२०–प्र० प्रतिष्ठाकल्पोमां ए विषयमां मतभेद होवानुं कंइ कारण हशे खरुं?

उ० हा, आजे जेटला पण प्रतिष्ठाकल्पो विद्यमान छे ते बधा उपर चैत्यवासियोना विधाननी आबाद असर छे, निर्वा-

पकलिकानुं निर्माण चैत्यवासकालमा थयेलु छे अने श्रीचंद्रादिनी पद्धतिओ तत्पश्चाद् भावि होइ तेनुं अनुसरण कर्युं छे.

२१–प्र० गुणरत्नसूरिप्रमुखे पूर्वप्रतिष्ठाकल्पोनुं अनुसरण केम न कर्युं ?

उ० तेरमा सैकामा चैत्यवासनां उतरता पाणी हतां, जगचन्द्रसूरिए क्रियोद्धार कर्या पछी तेमणे आचारविषयक रूढ परम्पराओ के जे सुविहित आचारमार्गथी प्रतिकूल हती ते बन्ध करी दीधी हती ते पैकीनी मुद्रादि धारण–परम्परा पण एक हती

२२–प्र० आजे पण कोइक प्रतिष्ठाचार्य अंजन करता सोनाना कडा पहेरे छे. त्यारे कोइ कोइ केसर वडे कंकण–मुद्रिकाना आकार पोताना जमणा हाथे करावे छे तो एमां कंइ बाध खरो ?

उ० सुविहित होवानो फांको राखे तेने माटे तो आभूषण पहेरवामां तेमज तेनो शरीर उपर आकार पण चित्रवामां वांधो छे ज

२३–प्र० अंजनशलाका प्रतिष्ठादिना विधान माटे केटला कूप आदिनुं जल लाववु जोइये ?

उ० प्राचीन विधिओमा उल्लेख छे के गंगादिनां तीर्थजलोनो संग्रह करवो, केटला तीर्थोनुं ? तेनी संख्या लखी नथी, लगभग पांचसो वर्षोथी १०८ कूप नदी आदिनु जल एकत्र करवाना उल्लेखो मले छे.

२४–प्र० जलयात्रानी विधि करीने केटला कुवाओनुं जल लाववुं जोइये ?

उ० पूरी विधि करीने एक स्थानथी जल लाव्या पछी बधे ते विधि करवानी जरूरत नथी, बीजा जलाशयोने कांठे जइ अक्षत फलथी जलदेवीने वधावी तेनी आज्ञा मांगी थोडु थोडुं जल सींचाने भेगुं करवुं जोइये.

२५-प्र० वर्तमान कालीन गुजराती विधिकारो नदीनी आर्द्र भूमिमां १०८ न्हाना खाडा करे छे अने ते खाडाओने १०८ कूआ मानी तेमनुं पूजन करीने जल भरे छे ते विधि-विहित खरुं के नहिं ?

उ० आ विधि नहिं पण बालक्रीडा छे, आवी क्रीडा-जेवी विधिथी जल लाववा करतां न लाववुं वधारे सारुं छे घणा स्थानोनुं के १०८ कूवा वावडीओथी पाणी लाववानुं मूल कारण तो ए छे के घणा स्थानोमां कोइ स्थान देवताधिष्ठित पण होय अने तेवा स्थानथी अनुज्ञा पूर्वक जल आवेल होय तो प्रकृत कार्यमां विशेष सिद्धिकारी निवडे, प्राचीन कालमां घणां तीर्थोनुं जल मंगाववानुं हतुं तेनुं कारण एज हतुं के तीर्थो प्राय देवताधिष्ठित होइ त्यांनुं जल सिद्धि-कारी होय छे. नदीने कांठे हाथे करेल खाडाओ देवताधिष्ठित होता नथी माटे तेवा खाडाओनुं पूजन करवुं निरर्थक छे.

२६-प्र० प्रतिष्ठा अंजनशलाकादिना विधानमां केटला पाटलाओनुं पूजन करवुं जोइये ?

उ० अंजनशलाकामां नन्द्यावर्त्त सहित ४ अने प्रतिष्ठा पूजामां आजनी विधि प्रमाणे ३ पाटलाओनुं स्थापन कराय छे.

२७-प्र० वर्तमानमां केटलाक विधिकारो त्रेवडा पाटला पूजावे छे ए बराबर छे ?

उ० त्रेवडा पाटला पूजवा माटे कोइ शास्त्राधार नथी, विधिकारोनी कल्पना मात्रथी एम करे छे, कुंभ-दीपक आदि त्रे ठेकाणे स्थपाय एनुं कारण तो ए वस्तुओ स्थावर होवानुं छे, गृहदिक्पालोनी स्थापन स्थिर स्थावर नथी, भगवान् मंडपमांथी देहरामां गया पछी पाटला पण त्यां लइ जइ शकाय छे.

११-प्रकृतखण्डानुषंगी—

१-६ परिच्छेद—त्रीजा खंडमां तमाम विधिओनो संग्रह छे आना २१ परिच्छेदोमां प्रारंभना ६ परिच्छेदोनो संबन्ध चैत्यनिर्माणमां थती विधिओनी साथे छे, १-२ परिच्छेद शिल्पशास्त्रानुसारी छे, ३ जो परिच्छेद प्रतिष्ठाकल्पानुसारी छे, ४ था परिच्छेदमां शिलान्यास विधिओ शिल्पशास्त्रोक्त छे पण अन्तमा एक प्रतिष्ठाकल्पोक्त शिलान्यास विधिनो पण आमा समावेश करेलो छे. परिच्छेद ५-६ नी विधिओ निर्वाणकलिकाने आधारे लखायेली छे

७-१२ परिच्छेद—७ माथी १२ मा सुधीमा प्रतिष्ठाविधिओ छे ७ मो परिच्छेद निर्वाणकलिकोक्तविधि प्रतिष्ठाविधिनु निरूपण करे छे अने मूलविधिना शब्देशब्दनो गुजराती अनुवाद छे, ८ मो परिच्छेद सकलचन्द्रीय प्रतिष्ठाकल्पोक्त दशाह्निक विधिनु निरूपण करे छे, आ परिच्छेदमा सकलचन्द्रीय प्रतिष्ठाकल्प तथा गुणरत्नसूरीय प्रतिष्ठाकल्प आ बन्नेनो समावेश थइ जाय छे, ९ थी ११ सुधीना परिच्छेदो क्रमशः चैत्यप्रतिष्ठा, कलशप्रतिष्ठा अने ध्वजदंड प्रतिष्ठानु विधान बतावे छे, आ त्रणेय परिच्छेदो प्राचीन हस्तलिखित विधिओने आधारे तैयार करायेला छे. १२ मो परिच्छेद जिनबिंब प्रवेशविधिओ बतावे छे, प्रचलित सविस्तर बिंब प्रवेशविधि उपरांत आमा संक्षिप्त बिंबप्रवेश विधिओ छे जेमा १ बिंब गृहप्रवेशविधि छे अने २ जिनबिंब चैत्य प्रवेशविधिओ छे जो आ संक्षिप्त प्रवेश विधिओनो प्रचार थाय तो ए निमित्ते थतो धनव्यय अने समयव्यय घणो बचावी शकाय तेम छे

१३-१७ परिच्छेद—१३ थी १७ सुधीना ५ परिच्छेदोमा पूजा विधिओ तथा शांतिकविधिओ छे, ते पैकीनी अर्हदभिषेक

बन्ने वाचनानुयायी श्रमणसंघोनी सभामां एक गंधर्व वादिवेताल शांतिसूरि उपस्थित हता जेमणे वालभ्य संघना प्रमुख श्री कालकाचार्यनी संघ कार्यमां सहायता करी हती अने बंने वाचनानुगत आगमोनो समन्वय कराव्यो हतो, अमारी मान्यता प्रमाणे ते गंधर्व वादिवेताल अने अभिषेक विधिकारवादिवेताल शांतिसूरि अभिन्न होवा जोइये, केटलाक विद्वानो उत्तराध्ययनी पाइयटीकाकार शांतिसूरिने 'वादिवेताल' माने छे जे बराबर नथी, पाइयटीकाकार शांतिसूरि थारापद्रगच्छीय हता अने ते अग्यारमा सैकाना विद्वान हता अने वादिवेताल शांतिसूरिथी अर्वाचीन हता.

जिनस्नात्रविधि अने अर्हदभिषेक विधिनी समकालीनता—

श्रीजैन साहित्य विकासमंडल तरफथी जेना प्रकाशननी जाहेरात थइ हती ते 'जिनस्नात्रविधि'नी वादिवेतालीय अभिषेक विधिनी साथे तुलना करी जोतां जणायुं के उक्त बंने विधिओ एक बीजीनी असरथी मुक्त छे, वादिवेताले 'स्नात्रविधि' के स्नात्रविधिकार आचार्यश्री जीवदेवे 'अभिषेकविधि' जोइ होत तो तेनी थोडी पण असर एक बीजानी कृतिमां आव्या विना रहेत नहिं आथी जणाय छे के उक्त बंने कृतिओ लगभग समकालीन होवी जोइये.

अभिषेकविधिना मूलनी कोपी तथा अभिषेकविधिनी पंजिकानुं पुस्तक विद्वान् मुनिवर्य श्रीपुण्यविजयजीना सौजन्यथी मलतां अमे कलिकामां ए विधि आपवा समर्थ थया छीये ए वातनो अमारे स्वीकार करवो जोइये.

१४–चौदमा परिच्छेदमां बे अष्टोत्तरी पूजाओ छे, वास्तवमां बे अष्टोत्तरीओ जुदी नथी, पण सामानना न्यूनाधिक्यना कारणे बे जुदी बतावी छे, ओगणासमा सैकानी अष्टोत्तरीमां सत्तरमा सैकानी अष्टोत्तरी करतां केटली सामान वृद्धि थइ छे ए

जाणवा अने थोडा खर्चे कोइ अष्टोत्तरी पूजा भणाववा इच्छे तो सत्तरमा सैकानी विधि प्रमाणे भणावी शकाय ए माटे बे जुदी जुदी आपी छे.

१५—पंदरमो परिच्छेद शान्तिस्नात्रे रोकेलो छे. शान्तिस्नात्रना कर्ता तपगच्छना उपाध्याय श्रीसकलचंद्रगणि छे. मारवाडमां शांतिस्नात्र भणाववानी रीति वधारे छे. वली त्यां भणाववावाला थोडा एटले पुस्तकना आधारे हरेक भणावी शके एटला माटे आमां प्रत्येक अभिषेकमां बोलाती गाथाओ वारंवार छापवाथी पुनरुक्ति थवाथी केटलुक मेटर वध्यु छे छतां मारवाडना विधिकारो माटे आ पुनरुक्ति उपयोगी थशे एम अमारुं मानवुं छे. अष्टोत्तरीनी विधिओ जेम उपलब्ध थई तेम शांतिस्नात्रनी प्राचीन लिखित विधि मेलववामां सफलता न मली. सो वर्ष पूर्वे लखायेली एक पण शांतिस्नात्र विधि न मलवाथी जे हती ते प्रतिओ उपरथी ज ए विधि तैयार करवी पडी छे.

१६—सोलमा परिच्छेदमां तीर्थयात्रा शांतिक छे, संघसमुदायनी साथे संघपति बनीने तीर्थयात्राए निकलतां संघपतिना घरे प्रथम ए शांतिक करी पछी प्रयाण करवु जोइये एवी मर्यादा छे, आ शान्तिक अमोए प्राचीन पानाओ उपरथी तैयार करेल छे

१७—सत्तरमा परिच्छेदमां बे ग्रह शांतिको छे, पहेलुं सामान्य ग्रहशान्तिक छे ज्यारे बीजुं शांतिक गोचरग्रहपीडानी शान्ति करवा माटेनु छे, आ बंने शांतिको अमोए प्राचीन हस्तलिखित प्रतो उपरथी लीधेल छे.

१८—अढारमा परिच्छेदमां जीर्णोद्धार विधि छे, जीर्णोद्धारनो अर्थ अहियां भग्नजिन प्रासाद के खंडित जिनप्रतिमा आदिनु विसर्जन करवानो छे. आ विधि अमे निर्वाणकलिका तथा शिल्पशास्त्रना आधारे तैयार करेल छे.

१९—ओगणीशमा परिच्छेदमां देवी प्रतिष्ठाविधि अमे एक हस्तलिखित प्रति उपरथी तैयार करेल छे, ते प्रतिमां पण एनुं नाम 'देवी प्रतिष्ठा विधि' ज हतुं पण तपास करतां जणायुं के ए विधिनो आधार ग्रन्थ 'आचारदिनकर' छे. आ विधि यक्षिणी आदि परिकर रूपे गणाता देवदेवीओनी प्रतिष्ठामां करवानी नथी पण तेमां जणावेल देवीओ पैकीनी कोइ देवीनी स्वतंत्र रूपे कोइ जुदा ते निमित्ते बनेला देहरामां प्रतिष्ठा करवी होय तो त्यां करवानी छे.

२०—वीसमा परिच्छेदमां विविध उपकरणोने अधिवासित करवानी विधि छे, आ परिच्छेद आचारदिनकरानुसारी छे

२१—एकवीशमो परिच्छेद प्रकीर्णक प्रतिष्ठाविधिओनो छे अने ए विधिओ पण अधिकांशे आचारदिनकरना आधारे ज लखायेली छे

उपर्युक्त विधिखंडना संकलन माटे अमारी पासेना प्रतिष्ठाकल्पो उपरांत प्राचीन प्रतिष्ठाकल्पो मेलववा माटे प्रयत्न करेल, खास करीने उ०सकलचंद्रजीए पोताना प्रतिष्ठाकल्पनी समाप्तिमां निर्दिष्ट नामना श्यामाचार्य हरिभद्रसूरि–हेमचंद्राचार्य जगच्चन्द्रसूरिना नामे चढेला प्रतिष्ठाकल्पो पैकीनो कोई अस्तित्वमां होय तो तपास करवा जेसलमेर पाटण आदिना भंडार व्यवस्थापकोने पूछाव्युं पण बधेथी एकज प्रकारनो उत्तर मल्यो के अत्रेना भंडारमां आपे जणावेल कोइ प्रतिष्ठाकल्प नथी. अमने लाग्युं के उ० सकलचंद्रजीए जादूना बले आ कल्पोनुं सर्जन करीने श्रीविजयदानसूरिने देखाड्या होय तो वात जुदी छे अन्यथा आटला अल्पसमयमां बधा उक्त कल्पो नाम शेष थइ जाय ए संभवित नथी, ज्यारे बहारथी विशेष उपयोगी सामग्री न मली त्यारे उपलब्ध सामग्रीना आधारे ज कार्य चालुं कर्युं जेना अवलोकन अने मनन पछी प्रकृत खंडनी संकलना थइ ते सामग्री नीचे प्रमाणे हती—

१–निर्वाणकलिका–मुद्रित छता ताडपत्रना पुस्तकने आधारे सुधारेली ।

२–श्रीचन्द्रसूरि प्रतिष्ठापद्धति कंइक अशुद्ध, मुद्रित ।

३–'विधिप्रपा' सामाचारीगत जिनप्रभीय प्रतिष्ठापद्धति स० १७८३ मा लखेल प्रति उपरथी सं० १९४२ मा लखायेली शुद्धप्राय ।

४–श्री वर्धमानसूरिकृत प्रतिष्ठापद्धति मुद्रित अशुद्धिबहुल

५–गुणरत्नसूरिकृत प्रतिष्ठाकल्प पुस्तक २, (१) १८ पत्रात्मक "इति प्रतिष्ठादि समग्रविधिः । स० १५४२ वर्षे आसो वदि पंचमीदिने लिखितः संखारीग्रामे ॥" इति लेखपुष्पिकायुक्तशुद्ध । (२) दशपत्रात्मक, संवत् १७५२ वर्षे मागसर वदि ५ दिने लिखित प्रति उपरथी लखावेल अने शुद्धप्राय "इति बिंब १ ध्वजा २ कलश ३ प्रतिष्ठाकल्पः श्रीतपाचार्य श्री श्रीगुणरत्नसूरि विरचितः ॥ इति श्री जिनप्रतिष्ठाकल्पः ॥" ए समाप्ति–लेखयुक्त ।

६–विशालराजशिष्यकृत प्रतिष्ठाकल्प पुस्तक ४-(१) १८ पत्रात्मक शुद्धप्राय, "संवत् १६१९ वर्षे आषाढ मासे शुक्लपक्षे ११ दिने ।" ए लेखवाला समाप्तिलेखवाळुं । (२) १७ पत्रात्मक शुद्ध प्राय । "इति बिंबस्थापना विधिः । श्लो ५५० । प्रतिष्ठाप्रदीपग्रंथतोद्धृतः श्रीविजयसेनसूरिभिः । श्रावक मेघाग्रहेण कृतोऽयम्" इतिसमाप्तिलेख सहित छे। (३) (१८) पत्रात्मक शुद्ध। पडीमात्रायुक्त लेखन संवत् रहित, अनुमानथी सोलमा सैकामा लखायेल छे । (४) २० पत्रात्मक, शुद्धप्राय, प्राचीन प्रति उपरथी १९८४ मां लखावेल छे

७-१२ पत्रात्मक शुद्ध। जीर्णभावात्मक पडोमात्राओमां लखायेल, त्रिधिप्रपानुसारि, क्वचित् संशोधित.

८-उपाध्याय राजचंद्रीय प्रतिष्ठाकल्प पुस्तक ३ (१) आसरे ओगणीशमा सैकामां लखायेल ३७ पत्रात्मक अशुद्ध। (२) ३९ पत्रात्मक, अशुद्धिबहुल सं० १९५६ मां लखायेल छे अने (३) मुद्रित, ए पण अशुद्धि प्रचुर अने क्वचित खंडित पण छे.

कलिकानो द्वितीय खंड संकलित करवामां मुख्य आधार ग्रन्थो उपर्युक्त ८ छे, पण ए उपरांत पण केटलीय हस्तलिखित विधिओनो केटलाक परिच्छेदो लखवामां उपयोग कर्यो छे जे पैकीनी केटलीकना नामो आ प्रमाणे छे—

(१) प्रतिष्ठाविधि पा. ७। (२) प्रतिष्ठाविधि पा. ३ (३) संक्षिप्तप्रतिष्ठा-दण्डध्वजारोप विधि पा. ३ (४) प्रतिष्ठाविधि पा. ६ (५) कलशप्रतिष्ठाविधि पा. ३ (६) ध्वजारोपविधि पा. १ (७) कंकणमोचनविधि पा. १। आ बधीय प्रतो अति-प्राचीन अने झीणा अक्षरोमां लखयेली छे.

त्रीजो खंड—

कलिकानो त्रीजो खंड प्रतिष्ठोपयुक्त चैत्यवन्दनो, स्तुतिओ, स्तवो, स्मरणो अने सामग्रीसूचिओनो बनेलो छे एटले ए विषयमां बहु कहेवा जेवुं नथी, मात्र स्मरणो, मंत्रो तथा सामग्री सूचिओने अंगे बे शब्दो लखी ए विषयने पूरो करीशुं.

आजकाल आपणा गच्छमां प्रतिष्ठादि विधानोमां कुंभस्थापन थया पछी उवसग्गहर १ संतिकर २ तिजयपहुत्त ३ नमिऊण ४ अजितशान्ति ५ भक्तामर ६ अने बृहच्छान्ति ७ आ सात स्मरण-स्तोत्रोनो त्रिकाल पाठ करवानी परम्परा चाले छे जे बहु जुनी नथी, बसो वर्षथी चालती होय तो भले, ते पहेलांनी विधिओमां उभयकाल स्तोत्रपाठ करवाना लेखो मले छे,

पण एय घणा जुना नहिं, चारसो पाचसो वर्ष पहेलानी विधिओ अने प्रतिष्ठाकल्पोमा मात्र जिन बिंब गादीए वेसाड्या पछी लघुशांति १ बृहच्छांति २ अजितशांति ३ तिजयपहुत्त ४ नामिऊण ५ उवसग्गहर ६ समवसरण स्तव ७ आ सात स्मरणो गणवानो आदेश छे, पण आजे कुंभ स्थाप्या पछी रोज त्रिकाल गणवानी पद्धति छे एथी अमे पण त्रिकाल गणावीये छीये अने क्रम पण आजना क्रमने मलतो ज छे मात्र भक्तामर बाद करी तेना बदलामा लघुशांति दाखल करी छे अने क्रम जे क्रमे स्तोत्र–स्मरणो छपाया छे तेज क्रमे गणवाना छे समवसरण स्तव नित्य गणवानु नथी पण भगवान प्रतिष्ठित थया पछी गणाता स्मरणोने अंते एक वार ज ए गणवानु छे.

आ परिच्छेदमा आपेल प्रतिष्ठोपयोगी मंत्रो विधिकारोना अभ्यासार्थे छे, तिजयपहुत्तना कल्पो आप्या छे ते मात्र आकस्मिक उपद्रवादिनी घटना प्रसंगे उपयोगमा लेवा माटे छे आ अम्नायो अमे स्पष्ट नथी कर्या, कारण के आवी वस्तु अस्पष्ट रहेवामा ज गुण छे, जे एना अनुभवी हशे ते स्वयं उपयोग करी शकशे.

प्रतिष्ठादिनी सामान सूचिओ अमोए अमारी पद्धतिने अनुसरीने आपेली छे, द्रव्य क्षेत्रादिने जोइ विधिकारो शक्य न्यूनाधिक्य करी शके छे, पण प्राचीन कल्पोना विधानने लक्ष्यमा राखता आमां आधिक्यनी अपेक्षाए न्यूनतानो ज अधिक अवकाश छे एम जणाया विना रहेशे नहिं "अधिकस्याधिकं फलं" आ मान्यता विधिकारोए हवे बदलवी जोइये, घणाथी घणो भावोल्लास थवानी मान्यता बराबर नथी, प्रतिष्ठाकारकगृहस्थनी भावना कोइ पण रीते कुंठित न थाय ए वातनो प्रतिष्ठाचार्योए तथा विधिकारोए प्रतिक्षण विचार राखवानी आवश्यकता छे.

प्रसिद्ध श्रुतधर आचार्य श्री हरिभद्रनी निम्नोक्त बे आर्याओ प्रतिष्ठाचार्योए अने विशेषे करीने विधिकारोए पोताना हृदयमां कोतरी राखवी जोइये—

“ इज्यादेर्न च तस्या, उपकारः कश्चिदत्र मुख्य इति । तदतत्त्वकल्पनैषा, बालक्रीडा समा भवति ॥ ”

अर्थ—मुक्तिप्राप्त जिनदेवतानी पूजा सत्कार–आभूषणादिथी तेनो कंइ पण मुख्यपणे उपकार थतो नथी तेथी एमनी 'पूजा' आदि ए अतात्त्विक कल्पना छे अने ते बालक्रीडा समान होय छे.

“ लवमात्रमयं नियमा–दुचितोचितभाववृद्धिकरणेन । क्षान्त्यादियुतैर्मैत्र्यादि–संगतैर्बृंहणीय इति ॥ ”

अर्थ—प्रतिष्ठा करावनारना प्रतिष्ठागतभावने ते लेशमात्र होय तोये उचित–उचित रीतिथी तेनी वृद्धि करवी अने क्षमादिगुणोए युक्त मैत्र्यादि भावनाओ साथे जोडीने तेने पुष्ट करवो.

उपसंहार—

उपोद्घातमां कहेवानी केटलीक वातो रही गइ हशे त्यारे केटलीक वधारे पडती पण कहेवाइ हशे, पण अमारा मनथी अमने जे उचित लाग्युं ते लखायुं छे, वांचनारने जे ग्राह्य जणाय ते ग्रहण करे अने बीजुं अमारे माटे छोडी दे, एज प्रार्थना ।

कल्याणविजय
माधवपुरा–अहमदाबाद
७–३–५६



विषयानुक्रम—

पं०श्रीकल्याणविजयगणिविरचितायां

कल्याण-कलिकायां

द्वितीय-खण्डः

परिच्छेद-सूची

भूमिग्रहविधिस्तद्वद्, वास्तुपूजाविधिस्तथा । कूर्मन्यासप्रतिष्ठा च, शिलान्यासविधिस्तथा ॥१॥
द्वारप्रतिष्ठा हृदय-प्रतिष्ठा जिनवेश्मनाम् । जिनबिम्बप्रतिष्ठा श्री-पादलिप्तप्ररूपिता ॥२॥
अद्यतनो जिनार्चानां, प्रतिष्ठाविधिविस्तरः । चैत्यप्रतिष्ठा कलश-प्रतिष्ठा दण्डरोपणम् ॥३॥
जिनबिम्बप्रवेशश्च, त्रिविधः परिकीर्तितः । अभिषेकविधिस्तद्वदष्टोत्तरशतार्चनम् ॥४॥
शान्तिस्नात्रविधिस्तीर्थयात्रायां शान्तिकं तथा । ग्रहशान्तिद्वयं जीर्णोद्धारस्य विधिरेव च ॥५॥
देवीप्रतिष्ठा विविध-वस्त्वधिवासनाविधिः । प्रकीर्णकप्रतिष्ठाश्च, परिच्छेदाः प्रकीर्तिताः ॥६॥

भा० टी०—भूमिग्रहण विधि १, वास्तुपूजा विधि २, कूर्मन्यास-प्रतिष्ठा ३, शिलान्यास विधि ४, द्वारप्रतिष्ठा विधि ५, हृदयप्रतिष्ठा विधि ६, पादलिप्तसूरि निरूपित जिनबिंब प्रतिष्ठा विधि ७, वर्तमान समयमां प्रचलित जिनबिंब प्रतिष्ठा विधि ८, चैत्यप्रतिष्ठा विधि ९, कलशप्रतिष्ठा विधि १०, ध्वजदण्ड प्रतिष्ठा विधि ११, त्रण प्रकारे जिनबिंब प्रवेश विधि १२, अभिषेक विधि १३, अष्टोत्तरीस्नात्रपूजा विधि १४, शान्तिस्नात्रपूजा विधि १५, तीर्थयात्रा शान्तिक १६, बे प्रकारे ग्रहशान्तिक १७, जीर्णोद्धार विधि १८, देवी प्रतिष्ठा विधि १९, विविधवस्त्वधिवासना विधि २० अने प्रकीर्णक प्रतिष्ठा विधि २१; ए बीजा खंडना परिच्छेदो कह्या. हवे प्रत्येक परिच्छेदनुं निरूपण कराय छे.

परिच्छेद १. भूमिग्रहण विधि :

परीक्षितापि चैत्यार्हा, भूमिर्ग्राह्या विधानतः । येन तत्र कृतं वेश्म, निर्विघ्नं शान्तिदं भवेत् ॥७॥

भा० टी०—चैत्यने योग्य परीक्षित भूमिनो पण स्वीकार विधि पूर्वक करवो जोइये के जेथी तेमां निर्विघ्नपणे जिनघर बनी शके अने ते शांतिदायक थाय. पूर्वोक्त प्रकारे वर्ण, गन्ध, रसादिके करी परीक्षा करी पछी ते भूमि विधि पूर्वक पोताना अधिकारमां लेवी. प्रासाद भूमि उपर अधिकार सारा मुहूर्त अने शुभ लग्नमां करवो, अने तेज मुहूर्त तेमां खात मुहूर्त करीने भूमि शुद्धि करवी जोइये. प्रासाद करावनार गृहस्थ, अथवा सूत्रधार प्रथम स्नान करी, शुद्ध वस्त्र धारण करी, अक्षतमिश्रितवास पुष्पादि पूजोपस्कर लेइ, ते परीक्षित भूमिमां जइ, वास्तु भूमिना मध्य भागे पंचरत्नादियुक्त कुंभ स्थापित करे, पछी पूर्वादि दिशा माहमो उभो रही—

१ ॐ इन्द्राय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा। २ ॐ अग्नये आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा।
३ ॐ यमाय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा। ४ ॐ निर्ऋतये आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा।
५ ॐ वरुणाय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा। ६ ॐ वायवे आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा।
७ ॐ कुबेराय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा। ८ ॐ ईशानाय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा।
९ ॐ नागाय आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा। १० ॐ ब्रह्मणे आगच्छ २ अर्घं प्रतीच्छ २ स्वाहा।

आ प्रमाणे प्रत्येक लोकपालने अर्घ निवेदन करी पछी पीला सर्षव हाथमा लइने मंत्र बोली भूमिनो स्वीकार करवो

अपक्रामन्तु भूतानि, देवदानवराक्षसाः। वासान्तरं व्रजन्त्वस्मात्, कुर्यां भूमिपरिग्रहम् ॥१॥
यदत्र संस्थितं भूतं, स्थानमाश्रित्य सर्वदा। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं, यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥२॥
अपक्रामन्तु भूतानि, पिशाचाः सर्वतो दिशम्। सर्वेषामविरोधेन, चैत्यकर्म समारभे ॥३॥

आ श्लोको बोलीने पूर्वादि च्यारे दिशामा सरसव फेंकी भूतादिसत्त्वने दूर करवु, पछी त्या पंच गव्य अने सुवर्णजल छांटवु ते पछी घरभणीओ पूर्ण कलश खाधे लइ गीत वादित्रोना नाद पूर्वक प्रथम पूर्वदिशामा ते भूमिनी सीमापर्यन्त जइ त्या क्षणभर रोकाइ आग्नेय कोणमा, त्याथी दक्षिण सीमामा थइ नैर्ऋत्य कोणमा, त्याथी पश्चिम सीमा उपर थई वायव्य कोणमा अने त्याथी उत्तर सीमामा थइ ईशान कोण पर्यन्त ते भूमिमा फरी, भूमिनी चतुर्दिक् सीमा नियत करवी, सूत्रधार त्या शंकु(खीलीओ) अने दोरी लइने हाजर रहे, प्रासाद वास्तुनी सीमा निश्चित करवा माटे आग्नेय कोणथी सृष्टि क्रमथी ४ कोणोमा ८ खीलियों

रोपी, बे बे खीलियो वच्चे अेक अेक दोरी खेंचीने बांधे. आ प्रमाणे भूमिनी चार सीमा निश्चित करी सोना रूपा मोती दही अक्षतादि मांगलिक पदार्थों वडे तेनी प्रदक्षिणा कराववी अने संक्रान्त्यनुसारे जे कोणमां खातस्थान आवतुं होय त्यां लग्न समय आवतां विधिपूर्वक खात मुहूर्त करवुं.

खातविधि—वास्तु भूमिना मध्यभाग उपर कुंभ स्थापन करी तेनी सामे पाटलो ढालीने ते उपर प्रथम वास्तु पुरुषनुं आह्वान पूर्वक स्थापन करवुं. ते आ प्रमाणे—

ॐ वास्तोष्पतये ब्रह्मणे नमः। ॐ वास्तोष्पते इहागच्छ २ स्वाहा। ॐ वास्तोष्पते इह तिष्ठ २ स्वाहा।
ॐ वास्तोष्पते पूजां प्रतीच्छ २ स्वाहा। ॐ वास्तोष्पतये नमः।

मुद्रापूर्वक आह्वान–स्थापना करी नीचेना मंत्रोच्चारण पूर्वक द्रव्यो चढाववां; ते आ प्रमाणे—

१ ॐ वास्तोष्पतये धूपं समर्पयामि स्वाहा। २ ॐ वास्तोष्पतये चन्दनादिकं समर्पयामि स्वाहा।
३ ॐ वास्तोष्पतये पुष्पाणि समर्पयामि स्वाहा। ४ ॐ वास्तोष्पतये वस्त्रं समर्पयामि स्वाहा।
५ ॐ वास्तोष्पतये फलं समर्पयामि स्वाहा। ६ ॐ वास्तोष्पतये दीपं समर्पयामि स्वाहा।
७ ॐ वास्तोष्पतये नैवेद्यं समर्पयामि स्वाहा। ८ ॐ वास्तोष्पतये अक्षतादिकं समर्पयामि स्वाहा।

प्रत्येक मंत्रमां जणावेल द्रव्यो चढाव्या बाद हाथ–जोडीने नीचेनो श्लोक बोलवो—

वास्तु पुरुष ! नमस्तेऽस्तु, भूमिशय्यारत प्रभो !। मद्गृहं धनधान्यादि–समृद्धं कुरु सर्वदा ॥४॥

आम प्रार्थना करी शुद्ध जल अजलिमा लईने—" ॐ वास्तोष्पतये ब्रह्मणे विसर विसर पुनरागमनाय स्वाहा " आ मत्र वडे विसर्जन मुद्राये विसर्जन करवु ते पछी खातस्थाने जइ गध पुष्प फलाक्षतादिनु पात्र हाथमा लइने नीचेना मत्र श्लोको बोली पृथ्वीने अर्घ्य आपवु

आगच्छ सर्वकल्याणि !, वसुधे ! लोकधारिणि ! । पृथिवि ! हेमगर्भाऽसि, काश्यपेनाऽभिवन्दिता ॥५॥

चैत्य तु कारयाम्यद्य, त्वद्भूव शुभलक्षणम् । गृहाणार्घ्यं मया दत्तं, प्रसन्ना शुभदा भव ॥६॥

आ पछी नीचेनो श्लोक बोलीने पृथ्वीनो क्षमा प्रार्थना करवी.

क्षमे ! क्षमस्व मत्यांघ, मेदिनि ! मनुजाम्बिके । चैत्यकर्म समारंभे, करिष्ये तव खननम ॥७॥

आम प्रार्थना कर्या पछी कोदाली आदि खातोपकरणो उपर सुवर्ण जल छाटी, केसर चदनादि सुगध पदार्थो छाटवा, अने लग्न समय आवतां वार्दित्र नादो अने जयघोषो पूर्वक खातमुहूर्त करवु. ओछामा ओछो अेक हाथ उडो चोरस खाडो मुहूर्त समयमा करवाथी ज खात मुहूर्त थयु गणाय

परिच्छेद २. संक्षिप्त वास्तु पूजा विधि :

चैत्यकर्मसमारम्भे, प्रवेशसमयेऽपि च। वास्तुपूजा यथाशक्ति, विधेया शान्तिमिच्छता ॥८॥

भा० टी०—"चैत्यना कामनो आरंभ करतां अने तेमां प्रवेश करवाना (प्रतिष्ठाना) समयमां शान्तिना इच्छुके शक्त्यनुसार 'वास्तु पूजा करवी." वास्तुभूमिनुं पूर्वोक्त प्रकारे संशोधन करी, प्रासाद अथवा गृहना परिमाणानुसार तेने पत्थरो अने माटी वडे उंची लेइ, दिशाओ निश्चित करीने शिलान्यास करती वखते प्रथम त्यां वास्तु मण्डल आलेखी वास्तु पूजा करवी. मंडलना कया पदमां कया देवनो वास छे, ते कोष्ठकोमां आपेल नामो उपरथी निर्णय कर्या पछी पूजानो प्रारंभ करवो. पूजानो प्रारंभ कया पदथी करवो ए विषयमां शिल्पशास्त्रो एकमत नथी. घणा ग्रन्थकारो ब्रह्मा, तेनी परिधिना मरीचि आदि ४, अने आप, आपवत्सादि ८, आ १२ देवो अने अन्तमां ईशादि ३२ प्राकारगत देवो; आ क्रमथी पूजा विधान लखे छे. ज्यारे केटलाक ग्रन्थकारो एथी विपरीत ईश आदि ३२ देवो, अने ब्रह्मा; आ क्रमथी पूजा प्रारंभ करवानुं लखे छे. 'चरकी' आदि पदबाह्य-स्थित देवीओनो पूजा सर्वना मते पाछलथी करवानी छे. पूजा बलि द्रव्यो, प्रत्येक पदस्थित तेमज पदबाह्य देवोने माटे भिन्न भिन्न विहित छे, छतां सर्व द्रव्योनी प्राप्ति न थतां पुष्प, अक्षत, सुगन्ध, धूप, दीप अने शुद्ध पक्वान्ननी बलिनुं पण पूजामां विधान कर्युं छे. निर्वाणकलिकाकारे "दूर्वादध्यक्षतादि", आ पाठमां आदि शब्द वापर्यो छे. एटले पुष्प धूप, दीप, फल, मेवो, विगेरे यथोपलब्ध द्रव्योनो पूजामां उपयोग करवो, एक पदमां बे देवो होय तो प्रत्येकनो नाम मंत्र बोली, तेनां उपहार द्रव्यो चढाववां, एकथी अधिक पदोमां एक देव होय तो प्रत्येक पदमां ते देवनो नाम मंत्र बोलीने पूजापो चढाववो, पूजानो प्रारंभ

ईशान कोणथी करीने प्रथम 'ईश' आदि ८-पूर्व दिशामा, पावकादि ८ दक्षिण दिशामा, पित्रादि पश्चिम दिशामा अने वायु ८
आदि ८ उत्तरमा, आम बाह्य पदगत ३२ देवोनी पूजा करवी, ते पछी आप, आपवत्सादि ईशानादि अभ्यन्तर कोणगत ८,
मरीचि-विवस्वान् आदि पूर्वादि दिग्गत ४ अने ब्रह्मा १ मध्यमा; आ क्रमथी वास्तु मंडलगत ४५ देवोने पूजवा अन्ते 'चरकी'
आदि अनुचरी देविओनु पूजन करवु. नीचे प्रमाणे नाम मंत्रोच्चारण पूर्वक ते ते दिशामा ते ते देवोनी पूजा करवी

'ईशानथी अग्निकोण सुधीमा पूर्वगत देवोनी पूजा' ॐ ईशानाय नमः १ । ॐ पर्जन्याय नमः २ । ॐ जयाय नमः
३ । ॐ माहेन्द्राय नमः ४ । ॐ रवये नमः ५ । ॐ सत्याय नमः ६ । ॐ भृशाय नमः ७ । ॐ व्योम्ने नम ८ ।

'अग्निकोणथी नैर्ऋत्यकोण सुधी दक्षिणगत देवोनी पूजा' ॐ पावकाय नमः ९ । ॐ पूष्णे नमः १० । ॐ वितथाय
नमः ११ । ॐ गृहक्षताय नमः १२ । ॐ यमाय नमः १३ । ॐ गन्धर्वाय नमः १४ । ॐ भृंगाय नमः १५ । ॐ मृगाय
नम. १६ ।

'नैर्ऋत्यकोणथी वायव्यकोण सुधीना पश्चिम दिशागत देवोनी पूजा' ॐ पितृभ्यो नमः १७ । ॐ दौवारिकाय नमः १८ ।
ॐ सुग्रीवाय नमः १९ । ॐ पुष्पदन्ताय नमः २० । ॐ वरुणाय नमः २१ । ॐ असुराय नम. २२ । ॐ शोषाय नमः
२३ । ॐ रोगाय नमः २४ ।

'वायव्यकोणथी ईशान सुधीना उत्तर दिशाना देवोनी पूजा' ॐ वायवे नमः २५ । ॐ नागाय नमः २६ । ॐ मुख्याय
नमः २७ । ॐ भल्लाटाय नमः २८ । ॐ सोमाय नम. २९ । ॐ शेषाय नमः ३० । ॐ अदितये नमः ३१ । ॐ दितये
नमः ३२ ।

'अभ्यन्तर कोणगत ८ देवोनी पूजा'—ईशान कोणे-ॐ अद्भ्यो नमः ३३। ॐ आपवत्साय नमः ३४। आग्नेय कोणे-ॐ सवित्रे नमः ३५। ॐ सावित्राय नमः ३६। नैर्ऋत्यकोणे-ॐ इन्द्राय नमः ३७। ॐ इन्द्रजयाय नमः ३८। वायव्यकोणे-ॐ रुद्राय नमः ३९। ॐ रुद्रदासाय नमः ४०। पूर्वमां-ॐ मरीचये नमः ४१। दक्षिणमां-ॐ विवस्वते नमः ४२। पश्चिममां-ॐ मित्राय नमः ४३। उत्तरमां-ॐ धराधराय नमः ४४। मध्यमां-ॐ ब्रह्मणे नमः ४५॥

'मण्डल बाह्ये ईशाने-ॐ चरक्यै नमः १। पूर्वमां-ॐ स्कन्दायै नमः २। अग्निकोणे-ॐ विदार्यै नमः ३। दक्षिणमां-ॐ अर्यमायै नमः ४। नैर्ऋत्ये-ॐ ललनायै नमः ५। पश्चिमे-ॐ जंभायै नमः ६। वायव्य कोणे-ॐ पूतना पापराक्षस्यै नमः ७। उत्तरे-ॐ पिलिपिच्छायै नमः ८॥

बृहत्संहितादिक ग्रन्थोमां चरकी, विदारी, पूतना, पापराक्षसी आ ४ विदिक्स्थित देविओनो उल्लेख छे. पण दाक्षिणात्य पद्धतिना शिल्प ग्रन्थोमां उक्त ४ उपरान्त पूर्वादि दिशाओमां शर्वस्कन्द, अर्यमा, जंभक, अने पिलिपिच्छक; ए नामक ४ पुरुष देवोनी पण मंडलनी बहार पूजा करवानुं विधान कर्युं छे, कलिकामां दिशा देवोने पण स्त्री लिङ्गमां ज लख्या छे. तेथी अमोए तेना अनुसारे अत्र पूजनमां नामो लख्यां छे, उक्त वास्तु पूजाने केटलाक प्रतिष्ठाकल्पकारो 'स्थंडिल वास्तु' नाम आपे छे, ज्यारे वास्तु भूमिमां खाडो खोदीने तेमां कराता वास्तुपूजनने 'पातालवास्तु' कहेल छे. पादलिप्तसूरिए उक्त एकज प्रकारनुं वास्तु मान्युं छे अने तेनुं विधान शिलान्यासना समयमां जणाव्युं छे.

परिच्छेद ३. कूर्म प्रतिष्ठा विधिः (प्रतिष्ठा कल्पोक्त)

चैत्यकर्म विधावत्र, कूर्मो भूमौ निधीयते । यत्पीठनिहितं चैत्यं, चिरस्थायि भवेद् ध्रुवम् ॥१॥

भा० टी०—चैत्य कार्यना निर्माणमा नीचे भूमिमा कूर्म स्थापित करी तेनी पीठ उपर चैत्य बनाववाथी ते स्थिर अने चिरस्थायी बने छे

सामग्री—सोनानो काचबो १। पचरत्ननी पोटली ५। माटीना कलशिया ५। कलशियाना ढाकणा ५। उपशिला-शिलाओना सपुट ५। सात धान्य कोरा मुट्ठि ५। सातधान्यना वाकला थाली १। स्नात्रपूजानो सामान। पचामृतनो कलशियो १। पुष्प सर्व जातना। फल सूका-लीला। डाभनी शली ५। जलनो कलश १। कूर्मने ओढाववानु वस्त्र हाथ १। सिंहासन १। पचतीर्थीप्रतिमा १। आरीसो १। दीवो फाणसमा १। आरती भरेली १। दीवासलीनी पेटी १। मगलदीवो भरेलो १। न्हाना कलशिया ४। गेत्रामूत्र शीशो १। स्नात्रकार ४। धोतिया उत्तरासण ४, ४। प्रक्षालनी कुंडी १। अग लूछणा ३। वाला कुची १। पाट म्होटो १ शिलाओना अभिषेक माटे ॥

विधि—कूर्म प्रतिष्ठाविधि प्रतिष्ठा कल्पोमा नीचे प्रमाणे मले छे, जे स्थानमा कूर्म स्थापवो होय त्या मुहूर्तना दिवसे प्रथम पूर्व प्रतिष्ठित प्रतिमा सिंहासन उपर पधरावी स्नात्र पूजा भणाववी, आरती उतारवी, मगल दीवो करवो, अने पछी त्या चैत्यवदन करवु. जे जिनना नामथी कूर्म प्रतिष्ठानु मुहूर्त होय ते जिननुं चैत्यवदन बोलवु. कदापि ते तीर्थंकरनु चैत्यवदन याद न होय तो—'ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते।' इत्यादि चैत्यवदन कहीने "नमुत्थुण" कही उभा थई ३ स्तुतिओ कह्या पछी

'श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं काउसग्ग करुं ? इच्छं, श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसग्गं, वंदण वत्तियाए०' इत्यादि पूरो पाठ बोली १ नोकरनो काउ० पारी नमोऽर्हत्० कही—

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्याऽमराधीश-मुकुटाभ्यर्चितांह्रये ॥१॥

अे स्तुति कहेवी, पछी सुअदेवयाअे करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ० १ नोकारनो काउ० पारी नमोऽर्हत्० स्तुति—

यस्याः प्रसादमतुलं, संप्राप्य भवन्ति भव्यजननिवहाः। अनुयोगवेदिनस्तां, प्रयतः श्रुतदेवतां वन्दे ॥२॥

अे स्तुति कही, पछी श्रीशान्तिदेवयाए करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ० १ नोकारनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

उन्मृष्टरिष्ट-दुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥

कही, श्रीशासनदेवयाए करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ० १ नोकारनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयात् शासनदेवता ॥४॥

कही, अम्बादेवीअे करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ० १ नोकारनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

अम्बा बालांकिताङ्कासौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥५॥

कही, खित्तदेवयाए करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ० १ नोकरनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥६॥

कही, अधिवासना देवीए करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ० १ लोगस्स सागर वरगंभीरा सुधीनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

पातालमन्तरिक्षं, भवनं वा या समाश्रिता नित्यम् । साऽत्रावतरतु जैने, कूर्मे ह्यधिवासना देवी ॥७॥

कही, समस्तवेयावच्चगराण सम्मदिट्ठिसमाहिगराण करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नोकारनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकराः सुराः । क्षुद्रोपद्रवसंघात, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥८॥

कही पछी उभा उभा १ नोकार पूरो गणी बेसीने 'नमुत्थुण' कहेवो. 'जावंति चेइआइं० जावंतकेविसाहू० नमोऽर्हत्० स्तवनने स्थाने 'शान्ति शान्ति निशान्त' इत्यादि लघुशान्ति स्तव कहीने 'जयवीयराय' पूरा कहेवा. ते पछी स्नात्रनुं अभिषेक-जल ते वास्तु भूमिमा बधे छांटवु, दश दिक्पालोनु आह्वान करी बलिक्षेप करवो, अने ते पछी स्थापनीय शिलासंपुटो तैयार करवा, जो प्रासाद पाषाणनो बनाववो होय तो शिलाओ पाषाणनी अने इटोनो बनाववो होय तो शिलाओ पण इटोनी तैयार करवी अने वास्तुभूमिना ४ खूणाओमा ४ अने मध्यमा १, आम ५ खाडा शिलाओ करता कइक म्होटा खणावीने राख्या होय ते प्रत्येक म्होटा खाडाने नीचे मध्यमा अेक अेक न्हानो खाडो खणाववो आ न्हाना खाडाओमा १–१ माटीनो न्हानो कल-शियो (कुलडु) सात धान्य अने पचरत्न सहित मूकवो, कलशिआ उपर माटीनु ढाकणु देवु अने ते उपर लग्न समय आवता शिला सपुटो थापवा, शिलासपुटो जे उपर नीचे बे बे शिलाओ राखीने करेला होय तेओने प्रथम स्नात्र जल वडे पखालीने पछी नाल वाला कलशोथी शुद्ध जले अभिषेक करी केसर चदननु विलेपन करवु अने जे शिलासपुट जे खाडामा स्थापवानो होय ते त्या लइ जवो, जो सपुटो वधारे भारे होय अने मुहूर्तना समयमां बराबर जमावीने स्थिर करता लग्ननो समय निकली जवानो भय होय तो नीचे डाभनी १–१ शली मूकीने सपुटो पोतपोताना खाडामा बराबर जमावी देवा अने ज्यारे स्थापनानो समय आवी

पहोचे त्यारे नीचेथी डाभनी शलिओ काढी लेवी. शिलासंपुटो ए वास्तवमां ५ शिलाओ छे, अने आ शिलाओनां नाम अनुक्रमे १ नन्दा, २ भद्रा, ३ जया, ४ विजया अने ५ पूर्णा छे अने आनी स्थापना अनुक्रमे १ आग्नेयी,* २ नैर्ऋती, ३ वायवी, ४ ऐशानी, ए दिशाओना खूणाओमां अने मध्यमां करवी. मध्यमां प्रतिष्ठाप्य पूर्णा शिला उपर निम्न मुख वालो कूर्म (काचवो) अने त्रण रेखा वाली श्रेष्ठ कोडी, आ बे वस्तुओ स्थापन करवी. कूर्म बनतां सुधी सोनानो बनाववो, के जेथी वास्तु भूमिमां शल्य दोष होय तो ते टली जाय, कूर्मने पंचामृत वडे अभिषेक करीने पछी शिला उपर स्थापवो, लग्ननो समय आवे त्यारे उपर्युक्त क्रम प्रमाणे ज बधी शिलाओ प्रतिष्ठित करवी अने उपर वासक्षेप नाखीने शिलाओनी प्रतिष्ठा करवी. मध्यशिला उपर कूर्म स्थापन करतां—

"ॐ ह्रूँ श्रीँ कूर्म तिष्ठ तिष्ठ देवगृहं धारय धारय स्वाहा" आ मंत्र बोली उपर वासक्षेप नाखवो, कूर्म प्रतिष्ठा—देवगृह, प्रासाद, रथशाला, गृह आदि दरेक वास्तुना निर्माणमां थवी जोइये, जेमां कूर्म प्रतिष्ठा करवी होय ते वास्तुनुं नाम मंत्र मध्ये बोलवुं, कूर्म प्रतिष्ठित करी वासक्षेप कर्या पछी सोभाग्य १, सुरभि २, प्रवचन ३, कृतांजलि ४ अने गरुड ५, आ पांच मुद्राओ देखाडवी, पछी इरियावही पडिक्कमवा पूर्वक पूर्वोक्त विधि प्रमाणे संपूर्ण चैत्यवंदन करवुं. आ चैत्य वंदनमां छट्ठी स्तुति कह्या पछी—श्री प्रतिष्ठा देवतायै करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ० इत्यादि कहीने १ लोगस्स सागरवरगंभिरा सुधीनो काउस्सग्ग करी पारीने नमोऽर्हत् कही—

* विष्णु संहितामां आग्नेयी दिशानो अर्थ गृहद्वारनो जमणो भाग, आवो कर्यो छे, जेम के—
"पुनः कुण्डेष्टकाधानं, कुर्याद् द्वारे तु कल्पिते। द्वारस्य दक्षिणे भागे, कर्तव्या प्रथमेष्टिका ॥"

" यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । जैनं कूर्मं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥ "

आ स्तुति कहेवी शेष विधि प्रथम प्रमाणे करवी चैत्यवदन विधि कर्या बाद अक्षताजलि भरीने–

जह सिद्धाण पइट्ठा, तिलोकचूडामणिम्मि सिद्धिपए । आचंदसूरिय तह, होउ इमा सुपइट्ठत्ति ॥१॥
जह सग्गस्स पइट्ठा, समत्थलोयस्स मज्झयारम्मि । आचदसूरिय तह, होउ इमा सुपइट्ठत्ति ॥२॥
जह मेरुस्स पइट्ठा, दीवसमुद्दाण मज्झयारम्मि । आचदसूरिय तह, होउ इमा सुपइट्ठत्ति ॥३॥
जह जंबुस्स पइट्ठा, जंबुद्दीवस्स मज्झयारम्मि । आचदसूरिय तह, होउ इमा सुपइट्ठत्ति ॥४॥
जह लवणस्स पइट्ठा, समत्थउदहीण मज्झयारम्मि । आचदसूरिय तह, होउ इमा सुपइट्ठत्ति ॥५॥

आ मगल गाथाओ भणी अक्षताञलि कूर्मं उपर नाखवी, स्नात्रकारोए अक्षताजलि उपरान्त पुष्पाजलि पण नाखवी, ते पछी कूर्मं उपर वस्त्राछादन करी च्यारे बाजुमा इटो चणीने उपर शिला अथवा पत्थरनु पाटियु ढाकी देवरावनु के जेथी कूर्म उपर शिला आदिनुं दबाण न आवे.

परिच्छेद ४. शिलान्यास विधि :

वास्तूनां पादरूपिण्यः, शिला न्यस्ता विधानतः । चिरायुष्कत्वकारिण्यो, वेश्मनां भर्तुरप्यथ ॥१०॥

भा० टी०—शिलाओ वास्तु (घर, मंदिर आदि)ना पाया रूप गणाय छे, तेथी शिलाओ विधि पूर्वक स्थापन करवाथी घर तथा घरस्वामीनुं दीर्घायुष्य करनारी थाय छे.

सामग्री—शिला ४–५ अथवा ९, उपशिला ४–५ अथवा ९, निधिकलश ४–५ वा ९, पंचरत्न पोटली ४–५ वा ९, वस्त्रो ४–५ वा ९ हाथहाथनां, तेमां (४ शिलापक्षे-रातुं, श्याम, नीलुं अने श्वेत, ५ शिलापक्षे–रातुं, श्याम, नीलुं अने २ श्वेत अने ९ शिला पक्षे–रातुं, श्याम, नीलुं, कालुं, आसमानी, पीलुं अने ३ श्वेत), गेवासूत्र कोयो १, सातधानना बलिबाकला थाली १, शुद्ध जले भरेला घडा २, अभिषेक योग्य कलशिया ४, कांसानी थाली १, वेलण १, म्होटो पाट १ (वेदीना बदलामां), सर्वौषधि चूर्ण पडिकुं १, शिलालूंछणां वस्त्र ३, रुई (दीवेट माटे) पुंभो १, घसेला केसरनी वाटकी २, दीवो १, धूपधाणुं १, गंगाजल, तीर्थजल, अक्षत, सोना-रूपा वा तांबानो कूर्म १, घृत (दीवा तथा निधिकलशने योग्य), दूध, दहि, साकर, दशांग धप पडिकुं १, अगरबत्ती पडिकुं १, पुष्पो सुगंधि पूजायोग्य, वासक्षेप पडिकुं १, गृहपति १, शिल्पी १, स्नात्रकार १ अने रत्न धातु आदिनी ९ पोटलीओ.

शिलान्यासनो क्रम—शिलान्यासमां दिशाक्रमने अंगे पण ग्रंथकारोमां मतभेद छे. च्यार शिलाना घणा पक्षकारो शिलान्यास आग्नेय कोणथी प्रारंभ करी ईशान कोणमां समाप्त करे छे, ज्यारे वैखानसतंत्र आदिमां ईशान कोणथी शिलान्यास

करवानुं पण विधान करे छे, [illegible] ग्रन्थकारो देवालयना वास्तुमां आग्नेय कोणथी आरंभ करी मध्यमां छेल्ली शिला प्रतिष्ठित करवानुं विधान करे छे, आग्नेय पुराणमां शिलान्यासनो क्रम मध्यथी आरंभी ईशानमां समाप्त करवानो जणाव्यो छे, [illegible]ना पद्धतिमां पांच शिलाओनो स्थापना क्रम-पूर्व, दक्षिण, पश्चिम, उत्तर, अने मध्य आ प्रमाणे जणाव्यो छे, नवशिला-[illegible]-आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत्य, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, पूर्व अने मध्य, आ दिशाक्रमथी नन्दादि ९ शिलाओ अनुक्रमे स्थापित करवी अेवु विधान करे छे, दाक्षिणात्य पद्धतिमां नवशिलाओनी स्थापना पूर्वथी आरंभ करीने मध्यमां समाप्त करवानु विधान छे. अर्थात् प्रथम पूर्वमां पछी आग्नेय कोणमां; इत्यादि सृष्टि क्रमे आठमी ईशानमां अने नवमी शिला मध्यमां आवे छे.

अष्ट शिलापक्षमां शिलान्यास क्रम जुदाज छे, वास्तुभूमिना प्रथम भागोना चार चोरस कोष्ठको (खाना) करवा, आग्नेय तथा वायव्य कोणना कोष्ठका पूर्वाग्र अने नैर्ऋत्य तथा ईशान कोणना कोष्ठको उत्तराग्र करवा, प्रत्येक कोष्ठकमां बे बे शिलाओ कोष्ठका प्रमाणे स्थापित करवी, प्रथम आग्नेय तथा वायव्य कोष्ठकोमां पूर्वाग्र अने नैर्ऋत्य तथा ईशान गत कोष्ठकोमां उत्तराग्र बे बे शिलाओना युग्मो स्थापित करवा. अष्ट शिला पक्षमां अेक बीजो पण स्थापना क्रम दाक्षिणात्य ग्रंथोमां आपेलो छे, ते क्रम पूर्वथी आरंभीने सृष्टिक्रमे ईशानमां छेल्ली शिला स्थापवानो छे, आम दाक्षिणात्य पद्धतिना आ अष्टशिला अने नवशिलाना पक्षमां मात्र अेक शिलानोज वधो घटो छे, बीजो फेरफार नथी.

शिलान्यासना वास्तुस्थानो—माल भरवाना गोदामो, राज्याभिषेक आदिना मंडपो, साधुओने रहेवाना मठो, उपाश्रयो, [illegible], सर्व जातिना लोकोने रहेवाना घरो, नाट्यशालाओ, देवमंदिरो, सभामंडपो, किल्लाओ, नगरना द्वारो

अने पारिवारिक गृहोना निर्माण समये शुभ मुहूर्तमां प्रथम शिलान्यासनी विधि करवी जोइये.

शिलान्यास केटलो नीचे करवो ?—शिलान्यास वास्तुभूमिना उपरितन तलथी केटलो नीचाणमां करवो जोइये ओ वस्तु शिल्पीगणे-सारी रीते समजी लेवा जेवी छे, अपराजितपृछा ग्रन्थना निर्माण समय सुधीमां देवालय संबन्धी वास्तुमां जलान्त अथवा पाषाणान्त खात करीने कूर्म, तेमज दिशा-विदिशामां स्थापनीय शिलाओनो विन्यास करवानी परिपाटी प्रचलित थई चुकी हती जे आज पर्यन्त ते प्रमाणे चाले छे. पण गृहवास्तुना शिलान्यासमां अेटलुं वधुं खोदवानुं के अेटला उंडाणमां शिलान्यास करवानी आवश्यकता नथी, गृहवास्तुनी भूमिशुद्धि पुरुष प्रमाण भूमि खोदीने करवानुं विधान छे अने अेटला नीचाणमां ज शिलान्यास करवो जोइये, कदाच भूमिमां अधिक नीचे सुधी शल्य होइ तेना उद्धार निमित्ते खात वधु उंडुं थइ गयुं होय तो ते शुद्ध माटी के पत्थर आदिथी पूरीने चतुर्थांश जेटलुं भरवानुं बाकी रहे त्यारे शिलान्यास करवो अेवुं विधान पण दृष्टिगोचर थाय छे.*

शिलान्यासमां वास्तुना मर्मो टालवा—देवालयना वास्तुना मानमां तेनी भींत सामेल गणाय छे, आथी देवगृहना शिलान्यासमां मर्मनी विशेष चिन्ता करवा जेवुं रहे छे, ज्यारे गृह वास्तुनुं माप भींतोनी अन्दरना भूमि भागनुं कराय छे, छतां शिलान्यासमां गृहवास्तुने अंगे पण अेनो विचार तो करवो ज जोइये. वास्तुभूमिना ६४ अथवा ८१ समान भागो करी रज्जुओ, वंशो अने महावंशोनां संपातस्थानो निश्चित करीने शिलान्यास करवो के जेथी मर्म, उपमर्मादिनो शिलावडे वेध न थाय, आ

* पुरुषांजलिमात्रे तत्, खाते वाऽखिलधामसु । पादावशिष्टे खाते वा, विन्यसेत्प्रथमेष्टिकाम् ॥१॥

प्रथम विषयनी विशेष चर्चा प्रकरणान्तरमा करेली होइ त्याथी अे विषय समजी लेवो जोइये.

शिलाओनो ढाल कइ तरफ ?—शिलान्यासमा शिलाओ कइ दिशामा ढलती (सहेज नीची) राखवी ते पण शिल्पीअे प्रथमथी ज निश्चित करीने पछी न्यास करवो, केमके अेकवार विधिपूर्वक स्थापित कर्या पछी शिलाने चलायमान करवी ते अशुभ-फलदायक छे. शिलानो झुकाव (ढाल) पूर्व अथवा उत्तर दिशा तरफ राखवो शुभ गणाय छे, वास्तुनुं द्वार पूर्व तरफ होय तो शिलानो ढाल पूर्वमा अने उत्तरमा होय तो उत्तरमा राखवो. वास्तुनु द्वार पश्चिममा होय तो शिलानो ढाल उत्तरमा अने दक्षिणमा होय तो पूर्वमा राखवो जोइये, कारण के पश्चिम अथवा दक्षिण तरफना ढालवाळी शिलाओ अशुभ गणाय छे

शिलाभिषेक—शिलाओनो प्रथम अभिषेक करी पछी ते यथास्थान प्रतिष्ठित करवी जोइये, ज्या शिलान्यास करवानो होय ते वास्तुभूमिना ईशान अथवा नैर्ऋत कोणमा अेक चोरस वेदी बनाववी, वास्तुमाने जेवडी शिलाओ होय तेने अनुसार अभिषेकवेदी बनाववी. शिलाओ ४–५–८–९ पैकी केटली छे, अने तेओनु दैर्घ्य-विस्तार केटलो छे, अे बधो विचार करीने शिलाओ सारी रीते रही शके तेवा प्रमाणमा वेदी बनावीने ते उपर शिलाओ-उपशिलाओ अने कलशोनो अभिषेक करवो. अभिषेक सोनाना, रूपाना, त्रांबाना अथवा माटीना ५ कलशो वडे करवो, ओछामा ओछा १ कलशथी पण अभिषेक करी शकाय छे. गंगा, जमना, नर्मदा, सरस्वती, आदि महानदियो तथा शुभ तीर्थोना शुद्ध जलो यथालाभ प्राप्त करी अभिषेकना जलमा मेळववा. जलमा सर्वौषधि चूर्ण, सुवर्ण रज, सुगंधि द्रव्यो अने सुगंधि पुष्पो नाखीने ते जलना भरेला म्होटा घडा उपर वस्त्राच्छादन करी उपर हाथ देइ बृहच्छान्तिनो अखंड पाठ बोलवो अने ते पछी ते जल वडे अभिषेकना कलशो भरवा शिलाओ,

उपशिलाओ अने निधिकलशो वेदी उपर प्रथम यथास्थान गोठवी देवा, वेदीना अभावे लाकडानो म्होटो पाट गोठवीने ते उपर त्रांबा पीतलनी कथरोटो गोठवी तेमां शिलाओ राखीने पण अभिषेकनुं कार्य करवुं. बधी तैयारी थइ गया पछी स्नातविलिप्त स्थपति अथवा गृहपति हाथमां जलकलश लेइने—

"ॐ हिरण्यगर्भाः पाविन्यः, शुचयो दुरितच्छिदः । पुनन्तु शान्ताः श्रीमत्य, आपो युष्मान् मधुच्युतः ॥१॥"

आ मंत्रश्लोक बोली नन्दा शिलानो अभिषेक करे, अे ज प्रकारे प्रत्येक वार कलश भरी उपरनो मंत्र बोली अनुक्रमे 'भद्रा' आदि वधी शिलाओनो अभिषेक करे. शिलानी साथेज तेनी उपशिला तथा निधि कलशनो पण अभिषेक करी लेवो, बधो शिलाओना अभिषेक थइ गया पछी शुद्ध जले पखाली अने शुद्ध वस्त्रे लूंछीने शिलाओ कोरी करी उपर घसेला केसर चंदनना छांटा नाखवा, धूप उखेववो, पुष्पो चढाववां अने दिशापालोना वर्णानुसारि वर्णनां वस्त्रो ओढाडवां, ते पछी प्रत्येक उपशिला' शिलायुगलो तथा निधि कलशो पोतपोताना स्थापना स्थाने पहोंचाडवां, एम प्रतिष्ठा करवा माटे तैयार राखवां.

शिलान्यास करतां पहेलां नीचेना श्लोको बोलीने खाडाओमां त्यां रत्न-धात्वादिनो न्यास करवो. रत्नो, धातुओना ककडाओ, औषधिओ तथा धान्योनी वानीओ लाल वा पीला शुद्ध वस्त्रखंडोमां बांधीने राखवी, ८ पोटलीओमां दरेकमां १–१ रत्न, धातु खंड, ओषधी, धान्यवानी मूकवी अने ९ मी पोटली आ बधी चीजोनी बांधवी अने मुहूर्तनो समय आवे ते पहेलांज अेक अेक मंत्रश्लोक बोली आ पोटलीओ मूकवी.

शिलान्यास अने रत्नादिन्यासना मंत्रो

१ ॐ इन्द्रस्तु महता दीप्तः, सर्वदेवाधिपो महान्। वज्रहस्तो गजारूढ–स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥२॥
२ ॐ अग्निस्तु महता दीप्तः, सर्वतेजोधिपो महान्। मेषारूढः शक्तिहस्त-स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥३॥
३ ॐ यमस्तु महता दीप्तः, सर्वप्रेताधिपो महान्। महिषस्थो दण्डहस्त-स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥४॥
४ ॐ निर्ऋतिस्तु महादीप्तः, सर्वक्षेत्राधिपो महान्। खड्गहस्तः शिवारूढ–स्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥५॥
५ ॐ वरुणस्तु महादीप्तः, सर्वयादोधिपो महान्। नक्रारूढः पाशहस्त–स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥६॥
६ ॐ वायुस्तु महतां दीप्तः, सर्वमण्डलपो महान्। ध्वजाहस्तो मृगारूढ-स्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥७॥
७ ॐ कुबेरस्तु महादीप्तः, सर्वयक्षाधिपो महान्। निधिहस्तो गजारूढ-स्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥८॥
८ ॐ ईशानस्तु महादीप्तः, सर्वयोगाधिपो महान्। शूलहस्तो वृषारूढ-स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥९॥
९ ॐ धरणस्तु महादीप्तः, सर्वसर्पाधिपो महान्। पद्मारूढो नागहस्त–स्तस्मै नित्य नमो नमः ॥१०॥

उपरना अेकथी आठ सुधीनो अेक अेक मंत्रश्लोक बोलीने नीचे लखेल धातुओ औषधिओ, रत्नो अने धान्योने पूर्वादि ८ दिशाना खाडाओमां अनुक्रमे मूकवा, अने छेल्लो श्लोक बोलीने मध्यना खाडामां बधा पदार्थो मूकवा. न्यसनीय रत्न धातु-औषधि-धान्यो नीचे प्रमाणे छे–

अनेन क्रमयोगेन, रत्नन्यास तथोत्तमम्। पूर्वादिक्रमयोगेन, रत्नधात्वौषधानि च ॥११॥

वज्र-वैडूर्य-मुक्ताश्च, इन्द्रनीलं सुनीलकम् । पुष्परागं च गोमेदं, प्रवालं पूर्वतः क्रमात् ॥१२॥
हैमं रौप्यं ताम्रकांस्ये, रीतिकां नाग-चङ्कौ । पूर्वादिक्रमतश्चैव, आयसं चैवमन्ततः ॥१३॥
वचा वह्निः सहदेवी, विष्णुक्रान्ता च वारुणी । संजीवनी ज्योतिष्मती, ईश्वरी पूर्वतः क्रमात् ॥१४॥
यवो व्रीहिस्तथा कंगु-जूंर्णाद्याश्च तिलैर्युताः । शाली मुद्गाः समाख्याता, गोधूमाश्च क्रमेण तु ॥१५॥

भा० टी०—पूर्व दिशाथी मांडीने सृष्टिक्रमे रत्न-धातु-औषधि-बीजोनो आ क्रमथी न्यास करवो जोइये, रत्नोमां–१ हीरो, २ वैडूर्य (अकीक), ३ मोती, ४ इन्द्रनील, ५ महानील, ६ पुष्पराग (पुखराज), ७ गोमेद, अने ८ प्रवाल ए पूर्वादि दिशाना खाडाओमां क्रमे स्थापवां. धातुओ–१ सोनुं, २ रूपुं, ३ त्रांबु, ४ कांसु, ५ पीतल, ६ सीसुं, ७ कथीर, अने ८ लोहडुं पूर्वादिमां अनुक्रमे स्थापन करवी. औषधिओमां–१ वचा (घोडावज), २ चित्रक, ३ सहदेवी, ४ विष्णुक्रान्ता, ५ वारुणी, ६ संजीवनी, ७ ज्योतिष्मती (मालकांगणी) अने ८ ईश्वरी (शिवलिंगी): आ औषधिओ पूर्वादिक्रमे स्थापवी. धान्योमां–१ जव, २ व्रीहि, ३ कांग, ४ जूर्णा (जुवार) ५ तल, ६ शालि, ७ मग, अने ८ गेहुं ए धान्यो पूर्वादिमां अनुक्रमे स्थापवां. अने मध्य खातमां सर्वरत्नो, धातुओ, औषधिओ अने धान्यो स्थापवां, ते पछी त्यां शिला प्रतिष्ठित करवी. आ रत्नादिन्यास जेटली शिलाओ स्थापवी होय तेटला खातोमां करवो.

चतुःशिला प्रतिष्ठा :—

१. नन्दानी स्थापनामां—(१) "ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" आ प्रमाणे कहीने आग्नेयकोणना खातमां

उपशिला स्थापन करी, (२) "ॐ पद्म ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ पद्मनिधयेनमः" एम कही तेमा 'पद्म'निधिकळश स्थापवो, ते पछी (३) "ॐ नन्दे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ नन्दायै नम " ए मंत्र भणी उपर नन्दाशिलानो न्यास करवो अने उपर वासक्षेप करवो, सुगंध द्रव्यो छांटवा, अने नीचे प्रमाणे प्रार्थना करवी.

"वीर्येणादिवराहस्य, वेदार्थस्त्वभिमन्त्रिताम् । वसिष्ठनन्दिनी नन्दा, प्राक् प्रतिष्ठापयाम्यहम् ॥१६॥"

"सुमुहूर्ते सुदिवसे, सा त्वं नन्दे ! निवेशिता । आयुः कारयितुर्दीर्घं, श्रिया चाढ्यामिहाऽऽनय ॥१७॥"

२. भद्रानी स्थापनामा—(१) "ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" (२) "ॐ महापद्म ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ महापद्मनिधये नमः" (३) "ॐ भद्रे ! इहागच्छ, इहतिष्ठ ॐ भद्रायै नमः ।" आ मंत्रो वडे नैर्ऋत कोणमा उपशिला निधिकलश अने भद्राशिलाने नन्दानी जेम स्थापी वासक्षेपादि करीने नीचेनो प्रार्थना श्लोक कहेवो.

"भद्राऽसि सर्वतोभद्रा, भद्रे ! भद्र विधीयताम् । कश्यपस्य प्रियसुते !, श्रीरस्तु गृहमेधिनः ॥१८॥"

३. जयानी स्थापनामां—(१) "ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" (२) "ॐ शंख ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, ॐ शंखनिधये नमः" (३) "ॐ जये ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ जयायै नमः" आ मंत्रो वडे-जयाने वायव्य कोणमा सुप्रतिष्ठित करीने प्रार्थना करवी.

"जये ! विजयतां स्वामी, गृहस्याऽस्य माहात्म्यतः । आचन्द्रार्कं यशश्चास्य, भूम्यामिह विरोहतु ॥१९॥"

४. पूर्णानी स्थापनामां—(१) "ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" (२) "ॐ सुभद्र ! इहागच्छ, इह

तिष्ठ, ॐ सुभद्रनिधये नमः।" (३) "ॐ पूर्णे! इहाऽऽगच्छ, इहतिष्ठ, ॐ पूर्णायैनमः।" आ मंत्रोथी पूर्णाने
ईशान कोणमां प्रतिष्ठित करी प्रार्थना करे.

"त्वयि संपूर्णचन्द्राभे!, न्यस्तायां वास्तुनस्तले। भवत्वेष गृहस्वामी, पूर्णे! पूर्णमनोरथः ॥२०॥"

पंचशिला प्रतिष्ठा :—

१. नन्दा—(१) "ॐ आधारशिले! सुप्रतिष्ठिता भव।" (२) "ॐ पद्म! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, पद्मनिधये नमः।" (३) "ॐ नन्दे! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ नन्दायै नमः।" आ मंत्रो वडे नन्दाने आग्नेय कोणमां स्थापन करीने नीचेना श्लोकोथी प्रार्थना करवी.

"नन्दे! त्वं नन्दिनी पुसां, त्वामत्र स्थापयाम्यहम्। वेश्मनि त्विह संतिष्ठ, यावचन्द्रार्कतारकाः ॥२१॥"

"आयुः कामं श्रियं देहि, देववासिनि! नन्दिनि!। अस्मिन् रक्षा त्वया कार्या, सदा वेश्मनि यत्नतः ॥२२॥"

२. भद्रा—(१) "ॐ आधारशिले! सुप्रतिष्ठिता भव।" (२) "ॐ महापद्म! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ महापद्मनिधये नमः।" (३) "ॐ भद्रे! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ भद्रायै नमः।" आ मंत्रो द्वारा नैर्ऋत कोणमां भद्रानी प्रतिष्ठा करी आ षट्पदी वडे प्रार्थना करवी.

"भद्रे! त्वं सर्वदा भद्रं, लोकानां कुरु काश्यपि!। आयुदा कामदा देवि!, सुखदा च सदा भव ॥२३॥"

त्वामत्र स्थापयाम्यद्य, गृहेऽस्मिन् भद्रदायिनि!।

३. जया—(१) "ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" (२) "ॐ शंख ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ शंखनिधये नमः ।" (३) "ॐ जये ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ जयायै नमः ।" आ मन्त्रो द्वारा वायव्य कोणमां जयाशिलाने प्रतिष्ठित करी आ षट्पदी वडे प्रार्थना करवी.

"गर्गगोत्रसमुद्भूतां, त्रिनेत्रां च चतुर्भुजाम् । गृहेऽस्मिन् स्थापयाम्यद्य, जया चारुविलोचनाम् ॥

नित्यं जयाय भूत्यै च, स्वामिनो भव भार्गवि ! ॥२४॥"

४. रिक्ता—(१) "ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" (२) "ॐ मकर ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ मकरनिधये नमः ।" (३) "ॐ रिक्ते ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ रिक्तायै नमः ।" आ मन्त्रो द्वारा ईशान कोणमां रिक्ताशिलाने स्थापीने आ श्लोकथी प्रार्थना करवी

"रिक्ते ! त्वं रिक्तदोषघ्ने !, सिद्धिमुक्तिप्रदे ! शुभे । सर्वदा सर्वदोषघ्नि ! तिष्ठाऽस्मिन् तत्रनंदिनि ॥२५॥"

५. पूर्णा—(१) "ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" (२) "ॐ सुभद्र ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ सुभद्रनिधये नमः ।" (३) "ॐ पूर्णे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ पूर्णायै नमः ।" आ मन्त्रो वडे वास्तुना मध्य भागमां आधारशिला, निधिकलश अने पूर्णाशिला प्रतिष्ठित करी पासे दीपक मूकीने आ श्लोको बोलीने प्रार्थना करवी.

"पूर्णे ! त्वं सर्वदा पूर्णान्, लोकान् सकुरु काश्यपि ! आयुर्दा कामदा देवि !, धनदा सुनदा भव ॥२६॥"

"गृहाधारा वास्तुमयी, वास्तुदीपेन संयुता । त्वामृते नास्ति जगता-माधारश्च जगत्प्रिये ॥२७॥"

नवशिला प्रतिष्ठा :—

१. नन्दा—(१) " ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" (२) " ॐ पद्म ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ पद्मनिधये नमः ।" (३) " ॐ अग्नये नमः, ॐ शक्तये नमः ।" (४) " ॐ नन्दे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ नन्दायै नमः ।" आ मंत्रो वडे आग्नेय कोणमां नन्दाने प्रतिष्ठित करी आ श्लोक वडे प्रार्थना करवी.

" नन्दे ! त्वं नन्दिनी पुंसां, त्वामत्र स्थापयाम्यहम् । प्रासादे तिष्ठ संतिष्ठ, यावचन्द्रार्कतारकाः ॥२८॥ "

२. भद्रा—(१) " ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" (२) " ॐ महापद्म ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ महापद्मनिधये नमः ।" (३) " ॐ यमाय नमः, ॐ दण्डाय नमः ।" (४) " ॐ भद्रे ! इहागच्छ, इह तिष्ठ, ॐ भद्रायै नमः ।" आ मंत्रो द्वारा दक्षिणमां भद्रशिलाने स्थापन करी आ श्लोक बोली प्रार्थना करवी.

" भद्रे ! त्वं सर्वदा भद्रं, लोकानां कुरु काश्यपि ।। त्वामत्र स्थापयाम्यद्य. प्रासादे भद्रदायिनि ! ॥२९॥ "

३. जया—(१) " ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" (२) " ॐ शंखे ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ शंखनिधये नमः ।" (३) " ॐ निर्ऋतये नमः, ॐ खड्गाय नमः ।" (४) " ॐ जये ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ जयायै नमः ।" आ मंत्रोथी नैर्ऋत कोणमां जयानी प्रतिष्ठा करी आ श्लोक वडे प्रार्थना करवी,

" गर्गगोत्रसमुद्भूतां, त्रिनेत्रां च चतुर्भुजाम् । प्रासादे स्थापयाम्यद्य. जयां चारुविलोचनाम् ।।३०।। "

४. रिक्ता—(१) ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव ।" (२) " ॐ मकर ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ मकर

निधये नमः।" (३) "ॐ वरुणाय नमः, ॐ पाशाय नमः।" (४) "ॐ रिक्ते! इहागच्छ, इह तिष्ठ, ॐ रिक्तायै नमः।" आ मंत्रो द्वारा रिक्तानी पश्चिम दिशामा प्रतिष्ठा करी—

"रिक्ते! त्व रिक्तदोषघ्ने!, ऋद्धिवृद्धिप्रदे! शुभे!। सर्वदा सर्वदोषघ्ने! तिष्ठाऽस्मिन् तत्रनंदिनी ॥३१॥"
आ श्लोकथी प्रार्थना करवी.

५. अजिता—(१) "ॐ आधारशिले! सुप्रतिष्ठिता भव।" (२) "ॐ कुन्द! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ कुन्दनिधये नमः।" (३) "ॐ वायवे नमः, ॐ अङ्कुशाय नमः।" (४) "ॐ अजिते! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ अजितायै नमः।" आ मंत्रो द्वारा वायव्य कोणमा अजिताने प्रतिष्ठित करी—

"अजिते! सर्वदा त्व मा, कामानामजित कुरु। प्रासादे तिष्ठ सहृष्टा, यावच्चन्द्रार्कतारकाः ॥३२॥"
आ श्लोक वडे प्रार्थना करवी.

६. अपराजिता—(१) "ॐ आधारशिले! सुप्रतिष्ठिता भव।" (२) "ॐ नील! इहागच्छ, इह तिष्ठ, ॐ नीलनिधये नमः।" (३) "ॐ कुबेराय नमः, ॐ गदायै नमः।" (४) "ॐ अपराजिते! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ अपराजितायै नमः।" आ मंत्रो बोली उत्तरदिशाभागमा अपराजिताने स्थापी—

"स्थिराऽपराजिते भूत्वा, कुरु मामपराजितम्। आयुर्दा धनदा चात्र, पुत्रपौत्रप्रदा भव ॥३३॥"
आ श्लोके करीने प्रार्थना करवी

७. शुक्रा—(१) "ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव !" (२) "ॐ कच्छप ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ कच्छपनिधये नमः।" (३) "ॐ ईशानाय नमः, ॐ त्रिशूलाय नमः।" (४) "ॐ शुक्ले ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ शुक्लायै नमः।" आ मंत्रोथी ईशान कोणमां शुक्राने प्रतिष्ठित करी—

"शुक्ले ! त्वं देहि मे स्थैर्यं, स्थिरा भूत्वाऽत्र सर्वदा। आयुः कामं श्रियं चापि, प्रासादेऽत्र ममाऽनघे ! ॥३४॥"
आ श्लोक वडे प्रार्थना करवी.

८. सौभागिनी—(१) "ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव।" (२) "ॐ मुकुन्द ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ मुकुन्दनिधये नमः।" (३) "ॐ इन्द्राय नमः, ॐ वज्राय नमः।" (४) "ॐ सौभागिनि ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ सौभागिन्यै नमः।" आ मंत्रोथी सौभागिनीने पूर्वमां प्रतिष्ठित करी—

"प्रासादेऽत्रस्थिरा भूत्वा, सौभागिनि ! शुभं कुरु। धनधान्यसमृद्धिं च, सर्वदा कुरु नन्दिनि ! ॥३५॥"
आ श्लोकथी प्रार्थना करवी.

९. धरणी—(१) "ॐ आधारशिले ! सुप्रतिष्ठिता भव।" (२) "ॐ खर्व ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ खर्वनिधये नमः।" (३) "ॐ नागाय नमः, ॐ उत्तराय नमः।" (४) "ॐ धरणि ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ धरण्यै नमः।" आ मंत्रो वडे वास्तुना मध्य भागमां धरणीशिलाने स्थापीने—

"धरणि ! लोकधरणीं, त्वामत्र स्थापयाम्यहम्। निर्विघ्नं धारय त्वं मे, प्रासादं सर्वदा शुभे ! ॥३६॥"

आ श्लोक भणी प्रार्थना करवी.

अे पछी अभिषेक करीने तैयार राखेलो सुवर्ण, रूप्य, वा ताम्रमय कूर्म हाथमा लेइने " ॐ कूर्म ! इहाऽऽगच्छ, इह तिष्ठ, ॐ कूर्माय नमः ।" अे मंत्र वडे मध्यशिला ऊपर कूर्मनी प्रतिष्ठा करी वासक्षेप पूर्वक केसर चंदनादिके पूजा करवी, धूप उखेववो, अने—

" सर्वलक्षणसंपन्न !, कूर्म ! भूधरणक्षम !। चैत्यं कर्तुं महीपृष्ठे, ममाज्ञां दातुमर्हसि ॥३७॥ "

आ श्लोक वडे प्रार्थना करी कूर्म ऊपर पुष्पांजलि नाखवी. पछी वाजिंत्रो वगडाववा, दिग्पालोने बलिदान आपवु, गृहस्वामीअे यथाशक्ति याचकोने दान देवु, साधर्मिकभक्ति प्रभावनादिक करवु, शिल्पीनो सत्कार करवो.

शिलान्यास पछीना शुभाऽशुभ निमित्तोः—

" विन्यस्य चैव पुनरिष्टका च, गंधोदकैः संपरिपूर्य गर्तम् ।
कृत्वा प्रसूनानि परीक्षयेच्च, निक्षिप्य चावर्तमथाक्षतानि ॥३८॥ "
" तद्दक्षिणावर्तमतीव शस्तं, वामं तु निंद्यं खलु दुःखदत्वात् ।
शाल्यादिभिः क्षेत्रजमृत्तिकाभिस्तन्मध्यगतं परिपूर्य रक्षेत् ॥३९॥ "

भा० टी०—उक्त विधिथी शिलान्यास करीने ते खाडाओने शुद्ध सुगंधि जल वडे भरी उपर पुष्पो तथा अक्षतो नाखीने आवर्तोनी परीक्षा करवी. जो ते खाडोना जलमा दक्षिणावर्त उत्पन्न थाय, एटले के पुष्प अक्षतादि सृष्टिक्रमे फरता देखाय

तो निमित्त घणांज उत्तम जाणवां, जलमां अेथी विपरीत वामावर्त उत्पन्न थाय तो निमित्त अशुभ समजवां, परिणाम सारुं नथी अेम जाणी लेवुं. दक्षिणावर्त के वामावर्तमांथी कंइ पण निमित्त न देखाय तो निमित्त मध्यम प्रकारनां जाणवां, जो अशुभ निमित्त दृष्टिगोचर थयां होय तो शिलान्यास फरिथी शुभ मुहूर्त करवो जोइये.

शिला प्रतिष्ठा थया पछी शिल्पीअे प्रत्येक शिला उपर च्यार च्यार थरो चणी लेवा, मध्यशिलाने फरती शिलाओ अथवा इंटो चणीने चोरस कुंडीनो आकार करी उपरथी शिला ढांकवी के जेथी कूर्म उपर भार न आवतां ते वचला पोलाणमां रही शके,

शिला प्रतिष्ठित कर्या पछी चलित न करवी—शुभ मुहूर्ते प्रतिष्ठित कर्या पछी शिला चलायमान न करवी जोइये, जो चलित करे तो गृहस्वामी अने सूत्रधार–शिल्पी बंनेने माटे अशुभ फलदायक थाय छे. आ संबन्धमां शास्त्र कहे छे के—

" प्रतिष्ठितास्ताः प्रथमं, भूतले सुस्थिताः समाः । न चालयेच्चालने तु स्याद्, गृहभर्तुर्महद्भयम् ॥४०॥ "
" कंपने च भयं विद्या–देतासां स्थिरता पुनः । स्थपतेर्गृहभर्तुश्च, मङ्गलं परमं विदुः ॥४१॥ "
" प्राग्दक्षिणायाश्चलने, गृहभर्तुर्महद् भयम् । भार्याविनाशो नैर्ऋत्यां, शून्यं भीतिर्मरुद्दिशि ॥४२॥ "
" गुरोश्च भयमैशान्यां, मध्यचारेऽपि तद् भवेत् । प्रथमं स्थापितानेवं, स्तंभानपि न चालयेत् ॥४३॥ "
" नोद्धरेत प्रणुद्याच्च, विधिस्तुल्यो यतोऽनयोः । विन्यासं प्रथमं तस्मात्, कुर्यात्सम्यग्समाहितः ॥
शिलानां स्थपतिस्तद्वत्, स्तंभानामपि सर्वथा ॥४४॥ "

भा० टी०—" भूमितलमां प्रथम सारी रीते प्रतिष्ठित करेली सम अने सुस्थित शिलाओने पाछलथी चलित न करवी

जोइये, अेम करवु अे गृहस्वामीने माटे भयकारक छे, अेटलु ज नहिं पण शिलाओने कपायमान करवाथी पण गृहकारकने भय उत्पन्न करे छे. अेथी विपरीत शिलाओनी स्थिरता शिल्पी तेम गृहपति बनेने परम मगल कारक थाय छे.

अग्निकोणमा प्रतिष्ठित शिलाने चळायमान करवाथी गृहस्वामीने भय, नैर्ऋत्य कोणस्थ शिलाने चलाववाथी तेनी स्त्रीनु मृत्यु, वायव्य कोणनी शिलाने चलित करवाथी शून्यता तथा भय, ऐशानी दिशा अने मध्यस्थित शिलाने कपित करवाथी गुरुने भय उपजावे छे

अेज प्रकारे प्रथम विधि पूर्वक प्रतिष्ठित करेला स्तभोने पण पोताना स्थानथी विचलित करवाथी अशुभ फल थाय छे, केमके शिलान्यास अने स्तभ न्यासनो विधि समान छे सूत्रधार–शिल्पीअे प्रथमथीज मनने स्थिर करीने शिलान्यास अने स्तमारोप अेवी खूबीथी करवो के पाछळथी तेने हलाववा–चलाववानी आवश्यकता ज न पडे. इति शिल्पशास्त्रोक्तः शिलान्यासविधिः॥

शिलान्यासविधि प्रतिष्ठाकल्पोक्त :

जे वास्तुभूमिमा शिलान्यास करवो होय तेमा प्रथम खात मुहूर्त पूर्वक भूमिनु सशोधन करी पत्थर, ईंट, वालुका, आदिथे करी खाडो भरवो, अने ज्याथी चणवानु काम चालू करवु होय त्या सुधी आवी अग्निकोण आदि ४ विदिशाओ अने १ मध्य-भाग; आ पाच स्थलोमा शिलान्यास माटे १–१ हाथ समचोरस अने १–१ हाथ उडा खाडा राखी तेमा न्यास विधि करवी. मध्यभागना खाडामा सर्व प्रथम काचजाना आलेखवालु रूपानु पतरु थापवु, उपर रूपानाणु मूकवु, ते उपर माटीनु शरावलु थापी अन्दर माटीनु न्हानु कूलडु मूकवु कुलडामा पंचरत्ननी पोटली, घृत अने सात धान्य मूकवा. अे पछी कुलडा उपर बीजु

शरावलुं ऊर्ध्वमुख मूकवुं, एज प्रमाणे चार कोणना खाडाओमां शरावलां, कुल्हडां अने उपर बीजां शरावलां मूकवां अने बधा खाडाओ उपरनां शरावलांना मथारा सुधी पत्थरो, ईंटोना ककडा अने चूना वडे भरी देवा, ते पछी शिला संपुट तैयार करवा, मकान ईंटोनुं बनाववुं होय तो बे बे ईंटोना संपुट करवा अने पत्थरनुं कराववुं होय तो शिला संपुटो पण पत्थरना बनाववा, ईंट या शिलाना, जेना संपुट बनाववा होय तेने प्रथम शुद्ध जलथी पखाली तेओ उपर कुंकुमना हाथा 'थापा' देइ बेवे ईंटोना अथवा शिलओना संपुट करी गेवासूत्र वींटवुं, ज्यारे मुहूर्तनो शुभ समय आवे त्यारे प्रत्येक संपुट अेक अेक खाडामां स्थापवो, प्रथम मध्यमां "ॐ कूर्म निज पृष्ठे प्रासादं धारय २ स्वाहा" आ मंत्र बोलतां कूर्मशिला स्थापीने मुहूर्त साचववुं, मुहूर्त करतां गीत वादित्रो वगाडवां, प्रथम शिला मध्यमां, बीजी अग्नि कोणमां, त्रीजी नैर्ऋत्य कोणमां, चोथी वायव्य कोणमां अने पांचमी शिला ईशान कोणमां स्थापन करवी, ४ सधवा स्त्रियो कुंकुम अने अक्षतो वडे स्थापित शिलाओने वधावे, विधिकार तेओनी उपर वासनिक्षेप करे, अे पछी दशदिक्पालोने बलि क्षेप करवो, देवगृह बनावनार सूत्रधार शिल्पीनो सत्कार अने संघनो यथा-शक्ति भक्ति करवी. प्रतिष्ठागुरुअे जिनप्रासाद निर्माण विषयक फलना कथन पूर्वक उपदेश करवो. ॥ इति 'प्रतिष्ठाकल्पोक्तः शिलान्यास विधिः ॥

परिच्छेद ५. चैत्यद्वार प्रतिष्ठा विधि

चैत्यद्वारसमारोपो, विधेयो विधिपूर्वकम्। यस्माद्द्वारमुखं चैत्यं, शस्तद्वारं शुभावहम् ॥११॥

भा० टी०—चैत्यनो द्वारारोप विधिपूर्वक करवो जोइये, कारण के द्वार चैत्यनु मुख छे; शुभद्वारवालु चैत्य ज शुभफलदायक थाय छे

प्रासादनु द्वार उभु करता पहेला तेना अंगोनो अभिषेक करी अधिवासना करवा साथे तेना अंगोमा देवताओनो न्यास करवो, अेनु नाम द्वार प्रतिष्ठा छे द्वार प्रतिष्ठानु मुहूर्त नक्की करी प्रतिष्ठोपयोगी अभिषेकनी औषधिओ विगेरे द्रव्यो प्रथम तैयार करी राखवा, मुहूर्तना दिवसे प्रथम प्रासादना द्वारपालोनु नाममन्त्रोच्चारपूर्वक सुगन्ध द्रव्यो वडे पूजन करवु, प्रत्येक दिशाना प्रासादना द्वारपालो भिन्न भिन्न होय छे, माटे जे दिशानो प्रासाद होय ते दिशाना द्वारपालोनी पूजा करवी. पूर्वादि दिशामुख जैनप्रासादोना द्वारपालो अनुक्रमे १ इन्द्र २ इन्द्रजय, १ माहेन्द्र २ विजय १ धरणेन्द्र २ पद्म, १ सुनाभ २ सुरदुदुभि, अे नामना बे बे होय छे. माटे जे दिशामुख द्वारनी प्रतिष्ठा होय ते दिशामुख द्वारना द्वारपालयुगलनी नीचे प्रमाणे नाममन्त्र वडे वासक्षेपे पूजा करवी.

(१) पूर्वमुखद्वारे—ॐ इन्द्राय नमः ॐ इन्द्रजयाय नमः। (२) दक्षिणमुखद्वारे-ॐ माहेन्द्राय नमः ॐ विजयाय नमः। (३) पश्चिममुखद्वारे-ॐ धरणेन्द्राय नमः ॐ पद्माय नमः। (४) उत्तरमुखद्वारे-ॐ सुनाभाय नमः ॐ सुरदुन्दुभये नमः।

प्रथम नाममंत्रथी पोताना जमणा हाथ तरफनी बारसाखना स्थाने अने बीजा नाममंत्रथी डाबा हाथ तरफनी बारसाखना स्थाने वासक्षेप करी द्वारपालोनुं पूजन करवुं, ए पछी द्वारनां अंगो–बे शाखाओ, उंबरो, अने उत्तरंगने द्वार निकट मंगावी, यथास्थान गोठवी, १ सप्तधान्य, २ पंचरत्न, ३ मंगल माटी, ४ कषायछाल, ५ मूलिका चूर्ण, ६ अष्टवर्ग, ७ पंचगव्य, ८ सुवर्णरज अने ९ तीर्थजल; आ नव द्रव्यो अनुक्रमे जलमां नाखीने ते जल वडे तेमना अभिषेक करवा, अन्तमां अखोट–स्वच्छ जले करी द्वारांगोने धोई लूछीने ते रक्त वस्त्रोथी ढांकवां.

अभिषेक कर्या पछी द्वारांगोने प्रतिष्ठा मंडपमां लाववां, जो प्रतिष्ठा मंडप बनाव्यो न होय तो द्वारनी बहार उपर चन्द्रवो बांधी त्यां तेमनी अधिवासना करवी, अधिवासनामां—

“ॐ नमो खीरासवलद्धीणं, ॐ नमो महुआसवलद्धीणं, ॐ नमो संभिन्नसोईणं, ॐ नमो पयाणुसारीणं, ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं, जमियं विज्जं पउंजामि सा मे विज्जा पसिज्झउ, ॐ कः क्षः स्वाहा।”

आ विद्या त्रणवार भणी द्वारांगो उपर वासक्षेप करवो, चन्दनादि सुगन्ध द्रव्यो छांटवां, पुष्पाक्षतो चढाववां, ए पछी उंबरा नीचे वास्तु पूजन करवुं, उंबरा नीचे मध्यभागे न्हानो खाडो करीने तेमां पंचरत्ननो न्यास करवो, उपर “ॐ” लखीने “ॐ वास्तुपुरुषाय नमः” आ मंत्र भणी वास्तु पुरुषनुं पूजन करवुं, वासाक्षत नाखवां, चंदनना छांटा नाखवा.

ते पछी लग्ननो समय आवतां प्रतिष्ठाचार्य सूरिमंत्र वडे अथवा प्रतिष्ठा मंत्र वडे द्वारनी प्रतिष्ठा करवी अने प्रथम उंबरो, पछी जमणा हाथ तरफनी शाखा, डाबा हाथ तरफनी शाखा अने उत्तरंग, आ क्रमथी द्वारांगो उभां कराववां. श्वेतसर्षप,

विष्णुक्रान्ता, ऋद्धिवृद्धि, कमल, कुष्ठ, तिल, लक्ष्मणा. गोरोचन, सहदेवी अने दूर्वा; अे सर्व औषधिओ अथवा यथोपलब्ध औषधियोनी रंगीन वस्त्रे बांधेली पोटली उत्तरंगे बांधवी, अने ते पछी द्वारांगो उपर नीचे प्रमाणे ६ देवताओनो न्यास करवो—

"ॐ यक्षेशाय नमः" उत्तरंग उपर, "ॐ श्रियै नमः" उम्बरा उपर, (१) ॐ कालाय नमः (२) ॐ गंगायै नमः पोताना जमणा हाथनी शाखा उपर अने (१) ॐ महाकालाय नमः (२) ॐ यमुनायै नमः अे डाबा हाथनी शाखा उपर.

प्रत्येक देवतानो नाममंत्र भणी ते ते अंगो उपर त्रण ३ वार वासक्षेप करी देवताओने त्यां स्थापी सनिरोधन करवुं अने दूर्वा वासाक्षत वडे तेमनुं पूजन करवुं.

आ पछी शान्तिमंत्रे बलि मंत्रीने दिक्पालोना नाममंत्रो बोलवा पूर्वक पूर्वादि दिशाओमां बलिक्षेप करवो, भगवन्तनी पूजा करवी, अने संघनी भक्ति करवी.

इति द्वारप्रतिष्ठा विधिः

परिच्छेद ६. हृदय प्रतिष्ठा विधि :

प्रासादहृदयस्थाने, प्रासादपुरुषाह्वयः । नरः स्वर्णमयः स्थाप्यो, हृत्प्रतिष्ठा हि सा मता ॥१२॥

भा० टी०—प्रासादना हृदय स्थानमां (आंवल सारामां) सुवर्णमय पुरुष स्थापवो तेनुं नाम हृदयप्रतिष्ठा छे.

प्रासादपुरुष—देवमंदिरना शिखरे आंवलसारामां त्रांबानो कलश स्थापन करी. तेना उपर सुवर्णनी बनावेली पुरुषना आकारनी अेक मूर्ति धातुना अथवा चन्दनना पलंग उपर सुवाडवामां आवे छे तेने ' प्रासादपुरुष ' अे नाम आपेलुं छे. प्रासाद-पुरुषनुं स्वरूप अेक ध्वजाधारी पुरुषना जेवुं होय छे, तेना जमणा हाथमां कमलनुं फूल बतावबुं अने डाबा हाथमां त्रण पताका वालो ध्वज देवो. डाबो हाथ छातीना भागमां अडकेलो अने तेनो ध्वज खांधे अडकेलो करवो.

प्रासादपुरुषनी उंचाइनुं परिमाण प्रासादना मान प्रमाणे करवुं. प्रासादमानना १ हाथ पाछल पुरुषनुं उदयमान अर्धो आंगल राखवुं, प्रासादना मानमां अर्ध-पाव हाथनी हानि-वृद्धि होय तो पुरुषना मानमां पण तदनुसारे हानि-वृद्धि करवो उदाहरणरूपे प्रासाद ३ हाथ ११ आंगलनो होय तो पुरुष उंचाईमां बे आंगलमां बे जव ओछो करवो.

१ थी ५० हाथ सुधीना प्रासादना प्रासादपुरुषनुं प्रमाण प्रतिहस्त अर्ध आंगलना हिसाबे ज राखवानुं विधान छे. प्रासादना मानानुसार सुवर्णमय प्रासादपुरुष बनाववरावी प्रथम तेनी विधिपूर्वक प्राणप्रतिष्ठा करवी अने ते पछी तेनी स्थापना करवी.

प्रतिष्ठा :

प्रासादपुरुषनी प्राणप्रतिष्ठा आ विधिथी करवी. प्रतिष्ठा मण्डपमां अने तेना अभावमां प्रासादना मंडपमां उत्तरवेदी

करीने अथवा तो शुद्ध पाट ऊपर सुवर्णमय प्रासादपुरुषने स्थाल्या स्थापन करीने तेने सुवर्णजळे अने औषधिमय जळ वडे स्नान करावुं, लूछीने वधे द्वारो मुख्य वेदी अथवा भद्रपीठ 'सिंहासन' उपर स्थापन करी " ॐ ह्रॉं आत्मन् त्वया अत्र शरीरे सन्धातव्यम् " आ मन्त्रद्वारा रेचन करीने पोताना प्राणनो पुरुषना शरीरमां प्रवेश कराववो, ते पछी कला-दिवादि तत्त्वोनो नीचे प्रमाणे तेना शरीरमां न्यास करवो—

" ॐ ह्रॉं कलायै नमः । ॐ ह्रॉं कलाधिपतये नम । ॐ कलाधिपाऽस्य कर्तृत्वव्यक्ति कुरु कुरु । " ॥१॥

" ॐ ह्रॉं विद्यायै नमः । ॐ ह्रॉं विद्याधिपाय नमः । ॐ विद्याधिपाऽस्य ज्ञानाऽभिव्यक्तिं कुरु कुरु । " ॥२॥

" ॐ ह्रॉं रागाय नमः । ॐ ह्रॉं रागाधिपतये नमः । ॐ रागाधिपाऽस्य विषयेषु राग कुरु कुरु । " ॥३॥

" ॐ ह्रॉं बुद्ध्यै नमः । ॐ ह्रॉं बुद्ध्यधिपतये नमः । ॐ बुद्ध्याधिपाऽस्य बोध कुरु कुरु । " ॥४॥

" ॐ ह्रॉं अहंकाराय नमः । ॐ ह्रॉं अहंकाराधिपतये नमः । ॐ अहंकाराधिपाऽस्य अभिमानं कुरु कुरु । " ॥५॥

" ॐ ह्रॉं मनसे नमः । ॐ ह्रॉं मनोधिपतये चन्द्राय नमः । ॐ मनोऽधिपाऽस्य संकल्पविकल्प कुरु कुरु । " ॥६॥

" ॐ ह्रॉं श्रोत्राभ्यां नमः । ॐ ह्रॉं श्रोत्राधिपतये आदित्याय नमः । ॐ श्रोत्राधिपास्य शब्दग्राहकत्व कुरु कुरु । " ॥७॥

" ॐ ह्रॉं चक्षुषे नमः । ॐ ह्रॉं चक्षुरधिपतये रुद्राय नमः । ॐ चक्षुरधिपास्य रूपग्राहकत्व कुरु कुरु । " ॥८॥

" ॐ ह्रॉं घ्राणाय नमः । ॐ ह्रॉं घ्राणाधिपतये अश्विनीभ्यां नमः । ॐ घ्राणाधिपास्य गन्धग्राहकत्व कुरु कुरु । " ॥९॥

" ॐ ह्रॉं वाचे नमः । ॐ ह्रॉं वाचाधिपतये अग्नये नमः । ॐ वाचाधिपास्य वाच कुरु कुरु । " ॥१०॥

"ॐ ह्रूँ त्वचे नमः। ॐ ह्रूँ त्वगधिपतये वायवे नमः। ॐ त्वगधिपास्य स्पर्शग्राहकत्वं कुरु कुरु।" ॥११॥
"ॐ ह्रूँ पाणिभ्यां नमः। ॐ ह्रूँ पाण्यधिपतये इन्द्राय नमः। ॐ पाण्यधिपास्य पदार्थग्राहकत्वं कुरु कुरु।" ॥१२॥
"ॐ ह्रूँ पादाभ्यां नमः। ॐ ह्रूँ पादाधिपतये विष्णवे नमः। ॐ पादाधिपास्य गमनोत्साहं कुरु कुरु।" ॥१३॥
"ॐ ह्रूँ पायवे नमः। ॐ ह्रूँ पाय्वधिपतये मित्राय नमः। ॐ पाय्वधिपास्य वायूत्सर्गं कुरु कुरु।" ॥१४॥
"ॐ ह्रूँ उपस्थाय नमः। ॐ ह्रूँ उपस्थाधिपतये ब्रह्मणे नमः। ॐ उपस्थाधिपास्यानन्दं कुरु कुरु।" ॥१५॥
"ॐ ह्रूँ शब्दाय नमः।" ॥१६॥ "ॐ ह्रूँ रूपाय नमः।" ॥१७॥ "ॐ ह्रूँ गन्धाय नमः।" ॥१८॥ "ॐ ह्रूँ रसाय नमः।" ॥१९॥ "ॐ ह्रूँ स्पर्शाय नमः।" ॥२०॥ "ॐ ह्रूँ आकाशाय नमः।" ॥२१॥ "ॐ ह्रूँ वायवे नमः।" ॥२२॥ "ॐ ह्रूँ तेजसे नमः।" ॥२३॥ "ॐ ह्रूँ अद्भ्यो नमः।" ॥२४॥ "ॐ ह्रूँ पृथिव्यै नमः।" ॥२५॥

नाडिदशकनो न्यास—उपरनां २५ तत्त्वोनो पुरुषमां न्यास करी नीचे प्रमाणे १० नाडिओनो न्यास करवो. ॐ ह्रूँ इडायै नमः। ॐ ह्रूँ पिङ्गलायै नमः। ॐ ह्रूँ सुषुम्णायै नमः। ॐ ह्रूँ सावित्र्यै नमः। ॐ ह्रूँ शंखिन्यै नमः। ॐ ह्रूँ कूष्माण्डिन्यै नमः। ॐ ह्रूँ यशोवत्यै नमः। ॐ ह्रूँ हस्तिजिह्वायै नमः। ॐ ह्रूँ पूषायै नमः। ॐ ह्रूँ अलम्बुषायै नमः।

वायुदशकनो विन्यास—ॐ ह्रूँ प्राणाय नमः। ॐ ह्रूँ अपानाय नमः। ॐ ह्रूँ समानाय नमः। ॐ ह्रूँ उदानाय नमः। ॐ ह्रूँ व्यानाय नमः। ॐ ह्रूँ नागाय नमः। ॐ ह्रूँ कूर्माय नमः। ॐ ह्रूँ कृकलासाय नमः। ॐ ह्रूँ

देवदत्ताय नमः। ॐ ह्रीं धनंजयाय नमः।

ए प्रमाणे प्रासादपुरुषमां २५ तत्त्वो, १० नाडी, अने १० पवनोनो न्यास करी विधिकारे गन्ध, पुष्प, अक्षतादिथी तेनी पूजा करी ५ मुद्राओ देखाडवी

निवेशन—प्रासाद पुरुषमां प्राणप्रवेश कराव्या पछी प्राचीन विधि प्रमाणे आमलसारामां पलंग ढाली, ते उपर सोनानो रूपानो अथवा छेवटे त्रांबानो कुंभ स्थापन करवो, तेने मधु अने घृत वडे भरी तेमां पचरत्न नाखी तेज जातिनी धातुना ढांकणाथी ढांकी, तेने चन्दनादि सुगन्ध पदार्थोनुं विलेपन करवु. पछी श्वेत वस्त्रयुगल पहेरावी, प्रासादपुरुषनी ते उपर स्थापना करवी, एवू निर्वाणकलिका-प्रतिष्ठा पद्धतिमां विधान छे पण आ विधि आजकाल प्रचलित नथी.

अपराजितपृच्छामां प्रासाद पुरुषने घृतपूर्ण पात्र उपर त्रांबाना पलंगमां सुवाडवानुं अने पलंगना ४ पायाओ पासे ४ निधि कलशो स्थापवानु विधान कर्युं छे ते प्रमाणे पण आजे शिल्पिओ करता जणाता नथी

आजकालनी प्रचलित पद्धति प्रमाणे प्रथम त्रांबाना कलशियामां घृत भरीने घणा खरा कारीगरो तेना उपर त्रांबानुं ढांकणुं देईने पक्कु करी दे छे ज्यारे केटलाक एम ज ढांकी दे छे. पछी ते घृतकलश सारा मुहूर्ते आमलसाराना गर्भमां मूकीने तेने उपरथी ढांकी दे छे अने पाछलथी ते उपर चन्दनना पलंगमां प्रासाद पुरुषने पोढाडे छे

पलंग सोनानो, रूपानो, त्रांबानो अथवा चंदननो बनाववो, पलंगनुं परिमाण पुरुषना मानथी दोढु लांबु, अने लंबाईथी अर्धं पहोळु करवुं, पलंग रेशमनी दोरीथी वणी उपर रेशमी गादी तकिया बीछावीने शुभ समयमां "अर्हद्राजस्य प्रासाद-

स्थितिपर्यन्तं त्वयाऽत्र स्थातव्यम्" आ मंत्र बोली प्रासाद पुरुषने पलंग उपर पोढाडवो, अने 'संनिधापनी' मुद्रा देखाडी संनिधापन करवुं.

प्रासादपुरुषनुं मस्तक प्रासादने पछवाडे अने पग आगल द्वारनी दिशामां आवे एवी रीते शयन करावतुं, उपर वासक्षेप करवो, चन्दनादि सुगन्ध पदार्थो छांटवा, उपर श्वेत वस्त्र ओढाडवुं, पासे धूपदीप मूकवा, अने पछी ते गर्भने उपरना थर वडे ढांकी देवो.

आ प्रसंगे पण मंगलगीत वादित्रादिना स्वरोथी उत्सवनुं दृश्य दीपाववुं, धूमधाम करवो, विधि करनारनो सत्कार करवो.

प्रतिष्ठाविधिरादिष्टो निर्वाणकलिकाभिधे । ग्रन्थे मोऽत्रोद्धृत. पाद-लिप्तसूरिमतानुगः ॥१३॥

भा० टी०—निर्वाणकलिका नामक ग्रन्थमा जे विधिनो आदेश करेलो छे ते पादलिप्तसूरि संमत भिन्न प्रतिष्ठाविधि अहीं उद्धृत करेल छे, आ बिंबप्रतिष्ठा-निमित्ते प्रथम बे-मण्डपो बनाववा, एक अधिवासना मंडप अने बीजो स्नानमंडप

मण्डप निर्माण विधि—प्रतिष्ठा मण्डप बनाववानो कार्यारंभ प्रतिष्ठाकारकने चन्द्रबल पहोंचतु होय तेवा शुभ मुहूर्त ने शुभ लग्नमा करवो जोइये

मण्डप तथा वेदिकानी रचना अने परिमाण—ज्या वीतरागदेवनी प्रतिष्ठा करवी होय,त्या एकसो हाथ जेटली भूमिने मापणापूर्वक शुद्ध करीने मंगल द्रव्योथी आकर्षक बनावी तेमा उपर्युक्त बे मंडपो बनाववा अने तैयार थता विधिपूर्वक तेमा प्रवेश करवो प्रतिष्ठा मंडपनी रचना समचोरस तथा चतुर्मुख अने तेनी लम्बाई पहोलाइनुं माप प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाना माप उपरथी निश्चित थाय छे एनी उंचाई पण प्रतिष्ठाप्य प्रतिमानी उंचाईनी साथे संबंध राखे छे प्रतिष्ठाप्य प्रतिमानी उंचाई जो १-२ अथवा ३ हाथनी होय तो तेने योग्य प्रतिष्ठा मंडप अनुक्रमे ८-९-१० हाथ लांबो-पहोलो होवो जोइये अने प्रतिमा ४-५-६-७-८ के ९ हाथनी उंची होय तो प्रतिष्ठा मंडप अनुक्रमे १२-१४-१६-१८-२०-२२ हाथ लांबो-पहोलो होवो जोइये. बीजा मत प्रमाणे १-२-३-४-५-६-७-८-९ हाथनी प्रतिमाने योग्य मंडप अनुक्रमे १२-१४-१६-१८-२०-२२-२४-२६-२८ हाथनो अनुरूप हाय छे. नव हाथथी म्होटी प्रतिमा होती नथी, तेथी २८ हाथथी म्होटो प्रतिष्ठा मण्डप

पण विहित नथी.

प्रतिष्ठा मंडपथी पूर्व अथवा ईशान दिशामां एक स्नान मंडप बनाववो जोइये, स्नान मण्डपनी लंबाई–पहोलाई प्रतिष्ठा मण्डपना करतां अडधी होवी जोइये.

मण्डपनां तोरणोनी उंचाई—

मण्डपमां स्थापित थनार प्रतिमा जो १–२ या ३ हाथनी होय अने मंडप तेने अनुरूप बनावेल होय तो तेनां तोरणो अनुक्रमे ५–६ या ७ हाथ उंचां होवां जोइये. कदापि प्रतिमा ४–५–६ पैकीना कोई मापनी होय तो तोरणो ७ हाथ ८ आंगल उंचां अने प्रतिमा ७–८–९ हाथनी होय तो तोरणो ७ हाथ १२ आंगल उंचां राखवां. तोरणोनी ऊंचाई एज मंडपनी उंचाई समजवानी छे.

पूर्वादि दिशानां तोरणो अनुक्रमे वड, उंबर, पारसपीपल, अने पीपलीनां होवा जोइये. शास्त्रोमां आ तोरणोनां नामो अनुक्रमे १ शान्ति, २ भूति, ३ बल अने ४ आरोग्य ए प्रमाणे लखेलां छे.

तोरणो उपर श्वेत अथवा विविध रंगना ध्वजो लगाडवा अने ध्वजानी पासे कमलवर्ण (गुलाबी), श्वेत, लाल, नीली, पीली, आदि अनेक रंगनी पताका (छोटीध्वजा) ओ रोपवी.

पूर्वादि द्वारोनां तोरणोनां ध्वजो अनुक्रमे १ धर्मध्वज, २ मानध्वज, ३ गजध्वज अने ३ सिंहध्वज ए नामोथी प्रसिद्ध छे.

प्रतिष्ठा मंडपने रंगीन पुष्पमालाओ रेशमी वस्त्रना चंद्रवाओ तथा विविध रंगोमां रंगावेल सूत्राउ वस्त्रोना पडदाओ वडे

शणगारवो, मंडपना शणगारमा कालारंगना वस्त्रोनो उपयोग न करवो, तेमज तेना पडदाओमा उपसर्ग अथवा उपद्रवोना भयजनक दृश्यो न बतावना तीर्थंकरोना कल्याणक प्रसंगो. प्रसंगने अनुरूप मंगलसूचक अने आह्लादजनक चित्रो अने प्रसिद्ध तीर्थस्थानोना चित्रपटो देखाडवा लाभदायक होय छे.

वेदीरचना

मण्डप तैयार थवा आवे त्यारे तेना मध्यभागमा एकसुन्दर वेदी बनाववी वेदीने अष्टमंगल आदिकनां शुभचित्रोथी सुशोभित बनाववी जोइये अने ते मंडपने अनुरूप परिमाणनी होवी जोइये, प्रतिष्ठाकल्पोमा १ नन्दा, २ सुनन्दा, ३ प्रबुद्धा, ४ सुप्रभा, ५ सुमंगला, ६ कुमुदमाला, ७ विमला अने ८ पुण्डरीकिणी, आ नामोथी आठ प्रकारनी वेदियोनु निरूपण कर्युं छे

(१) एक हाथ चोरस अने चार आगल उंची वेदीने 'नन्दा' कहे छे, (२) बे हाथ समचोरस अने आठ आगल उंची होय ते वेदी 'सुनन्दा' नामथी ओलखाय छे, (३) त्रण हाथ समचोरस अने बार आगल उंची वेदीनुं नाम 'प्रबुद्धा' कहेवाय छे, (४) चार हाथ समचोरस तेम सोल आंगल उंची होय ते वेदी 'सुप्रभा' ए नामथी ओलखाय छे, (५) पांच हाथ समचोरस अने वीश आगल उंची वेदी 'सुमंगला' ए नामथी प्रतिष्ठाकल्पोमा प्रसिद्ध छे, (६) छ हाथ समचतुरस्र अने चोवीस आगल उंची वेदीनु नाम 'कुमुदमाला' छे. (७) सात हाथ समचोरस अने अठावीश आगल ऊंची वेदी 'विमला' नामनी होय छे अने (८) आठ हाथ समचोरस अने बत्रीस आगलनी उंचाईवाली वेदीनुं नाम 'पुण्डरीकिणी होय छे.

शुभ आय लाववा माटे वेदिओना उपर्युक्त मापमां एक एक आंगलनी वृद्धि करी शकाय छे

आचार्य श्री पादलिप्तसूरिना मते वेदियोनुं स्वरूप उपर जणाव्या प्रमाणे छे; पाछलना प्रतिष्ठा कल्पोमां वेदियोनुं माप अने स्वरूप जुदा प्रकारनुं पण जोवाय छे. तेनुं कारण प्रतिष्ठा मंडपनुं रूपान्तर थयुं ए छे. पादलिप्तसूरिजीए प्रतिष्ठामंडपने 'अधिवासनामंडप' कह्यो छे, एनो अर्थ ज ए छे के ते मण्डप अधिवासना अने प्रतिष्ठानी खास क्रियाओने माटे ज बनावातो, तेमां प्रतिष्ठाकारक आचार्य, शिल्पी अने इन्द्रादिक ४ स्नात्रकारो ज जता अने प्रतिष्ठा संबन्धि कार्यविधि करता-करावता. प्रतिष्ठा-मंडपना मुख द्वार आगल प्रेक्षको माटे जुदो सभामंडप बांधवामां आवतो; कालान्तरे आ चतुर्मुख प्रतिष्ठामण्डपनुं स्थान आज-कालमां बनता एक दिशापरक त्रिद्वार अने पंचद्वार मण्डपोए लीधुं, समचोरसने बदले लम्बचोरस अने मापमां उक्त उत्कृष्ट मापथी पण अधिक मापवाला प्रतिष्ठामंडपो बनवा लाग्या, अने क्रियाकारको अने दर्शकोनो एक ज मंडपमां समावेश थवा मांड्यो. ए ज कारणथी वेदिओ पण मध्यभाग छोडीने सामेनी भींतनी पासे पहोंची गइ अने पोतानुं समचोरस रूप छोडीने लम्ब-चोरस थवा मांडी. आ स्वरूपपरिवर्तन 'अंजनप्रतिष्ठा' अने 'स्थापनप्रतिष्ठा'नो भेद भूलाथी थयुं छे. 'स्थापनाप्रतिष्ठाने माटे मंडप अने वेदीनुं आ परिवर्तितस्वरूप भले स्वीकार्य होय पण 'अंजनशलाका प्रतिष्ठा'ना प्रसंगे तो मंडप अने वेदी शास्त्रोक्त रीतथी ज बनाववो जोइये.

वेदीनां उपादान द्रव्यो

वेदी कया उपादानोथी बनाववी? ए विषे श्री पादलिप्तसूरिजीए कंइ पण सूचन कर्युं नथी, छतां पाछलना विधिग्रंथोमां वेदी शुद्ध जल अने शुद्ध माटीथी बनावेली काची इंटोनी बनाववाना उल्लेखो मळे छे, तेथी वेदी शुद्ध रीते बनावेली काची इंटोनी

ज बनाववी जोइये.

वेदीना खूणाओमां रोपवानी खीलिओ—

वेदीना ४ खूणाओमां ब्राह्मणादि वर्णानुकूल पलाश, वड, ऊंबर अने खेजडी, ए च्यारनी ४ खीलियो घडावीने रोपवी जो प्रतिष्ठा करावनार गृहस्थ ब्राह्मण होय तो पलाशनी, क्षत्रिय होय तो वडनी, वैश्य होय तो ऊंबरानी अने शूद्र होय तो खेजडीनी खीलियो योग्य गणाय. अथवा सर्व वर्णने वासनी खीलियो योग्य होय छे, च्यारे खीलिओ एक ज वृक्षनी होड गांठ विनानी, फाट, व्रण अने पोल विनानी होवी जोइये, खीलिओने काष्ठ-पत्थर अथवा लोढाथी न ठोकवी, पण तांबा, रूपा, सोना के बीजा कोइ शुभ धातुना बनेला साधनथी ठोकीने रोपवी जोइये

मंडपनी लीपाई-पोताई—

मण्डप अने वेदी तैयार थइ जाय त्यारे मंडपने गोबर अने धोली माटी (खडी अथवा गोर माटी) नी गारथी लीपवो जोइये, गारमां सुगन्धी जल, यक्षकर्दम नाखीने सुगन्धी बनाववी.

वेदीने पण खडी अथवा चूनाना घोलथी पोतवी, घोलमां यक्षकर्दम उपरांत पंचरत्ननुं चूर्ण अने सुवर्णनी रज नाखीने एकरस करवो. वेदीने पोतावी तेनी भींतो उपर चारे बाजुए मांगलिक चिन्हो कढाववां.

प्रतिष्ठोपयोगी सामग्री

मंडपो बनावीने आ प्रमाणे प्रतिष्ठोपयोगी सामान लाववो. ८ स्नपनकलशो—सोना, रूपा, त्रांबा अथवा माटीना।

४ आद्यकुंभो (प्रतिमाना च्यार विदिशाकोणोमां स्थापवाना) । १ स्थपतिकुंभ । धान्यवर्ग—जव, व्रीहि, गहुँ, तल, अडद, मग, वाल, चणा, मसूर, तूअर, शणबीज, नीवार (वंटी), शामो, आदि । रत्नवर्ग—हीरा, सूर्यकान्त, नीलम, महानीलम, मोती, पुखराज, पद्मराग (माणेक), वैडूर्य (अकीक), आदि । लोहवर्ग—सोनुं, रूपुं, त्रांबुं, कृष्णलोह, जशद, पीतल, कांसुं, सीसुं, आदि । कषायवर्ग—वड, उंबर, पीपल, चंपो, आशोपालव, कदंब, आंबो, जांबु, बकुल (बोलसिरी), अर्जुन, पाडल, वेत्र, पलाश, आदि (नीछाल)। मृत्तिकावर्ग—उधेहीना राफडानी, पर्वतना शिखरनी, नदीना बे कांठानी, महानदीना संगमनी, डाभमूलनी, बिल्वमूलनी, चोहटानी (चौटानी), हाथीदांतनी, वृषभशृंगनी, राजद्वारनी, पद्मसरोवरनी अने एकवृक्ष आदिनी जुदी जुदी माटी । पानीयमार्ग—गंगा-यमुना-मही-नर्मदा-सरस्वती-तापी-गोदावरी-आदि नदिओ अने समुद्र, पद्मसरोवर तथा ताम्रपर्णी नदीसंगम आदि जलाशयोनु पाणी. औषधिवर्ग—सहदेवी, जया, विजया, जयन्ती, अपराजिता, विष्णुक्रान्ता, शंखपुष्पी, बला, अतिबला, हेमपुष्पी, विशाला, नाकुली, गंधनाकुली, मत्ता, वाराही, शतावरी, मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, कुमारी भृङ्गरिंगणी, उभीरिंगणी, चक्रांका, मोरशिखा, लक्ष्मणा, दूर्वा, दर्भ, पतंजारी, गोरंभा, रुद्रजटा, लज्जालु, मेषशृंगी अने ऋद्धिवृद्धि, आदि औषधिओ । अष्टकवर्ग—वज, लोध्र जेठीमधु, कूठ, देवदारु, खसमूल, ऋद्धिवृद्धि अने शतावरी, ए ८ औषधिओ । अष्टकवर्गद्वितीय—मेदा, महामेदा, काकोली, क्षीरकाकोली, जीवक, ऋषभक, नखी अने महानखी, ए बीजी ८ औषधिओ. सर्वौषधिवर्ग—प्रियंगु, सुगंधीवालो, आंवला, जावंत्री, हलदर, ग्रंथिपर्णक (गठवण), नागरमोथ अने कूठ आदि सर्वौषधि । गन्धवर्ग—शिलारस, कूठ, जटामांसी, मुरमांसी श्वेतचंदन, अगर, कपूर, नखला अने

पूतिकेशा आदि गन्धो। वास—श्वेतचदन, केसर, कर्पूर (बरास)थी बनेल वासचूर्ण अर्थात् वासक्षेप। मुद्रिकाओ—(आचार्य-इन्द्रादिनिधिकाम्योग्य)। मींढलफलो (कंकणयोग्य)। रक्तसूत्र (लाल रंगे रंगेल सूत्र अथवा गेवाछ्त)। ऊन कातेली। लोहनी मुद्रिका। ऋद्धिवृद्धिसहित कंकणो। जवनी मालाओ। तराको (पूतराको सूत्रनी कोकडी भरेला)। मेनशिल। गोरोचन। श्वेतसर्षपो (अथवा पीला सर्षपो, अर्घ तथा रक्षा पोटलीयोग्य)। धोली पछेडी न० २। नन्द्यावर्तना माटलानु आच्छादन वस्त्र (श्वेत)। प्रतिमाने पडदो करवानु वस्त्र। फुटकर वस्त्रो (नील पीत रक्त आदि रंगना)। घट अने घटडिओ। धूपधाणा। कांसानी वाटकी। रूपानी वाटकी। सोनानी सली। आरीसो (दर्पण)। शुभफलवर्ग—नालियेर, बीजोरां, केला, नारंगी, आंबा केरी, जांबू, कोहला, वंताक, आंवला, बोर, आदि श्रेष्ठ फलो। सोपारिओ। नागरवेलना पानो। १०८ मातृका पडिओ। १ सेर्इ अखंड चोखा—शेलडिओ, अने विविध फलो। इत्यादि प्रतिष्ठा सामग्री पुष्कल एकत्र करी उत्तम वेदिका उपर राखवी

उत्सव क्रिया

(१) मडपप्रतिमा प्रवेश—प्रतिष्ठोत्सवना प्रथम दिवसे सर्व प्रथम मण्डपनी प्रतिष्ठा अने वेदीनु पूजन करीने तेमां प्रतिमा प्रवेश करावनो ते माटे प्रथम प्रतिष्ठाचार्य ४ स्नात्रकारोनी साथे प्रतिष्ठामडपना पूर्व द्वारे जइने—

१—"ॐ न्यग्रोधात्मने सुराधिपतोरणाय नमः।" आ मत्र बोली तोरण उपर वासाक्षत नाखे. स्नात्रकारो जल-चन्दनादिक छांटे, पुष्पो चढावे अने धूप उखेवे.

२—" ॐ पूर्वद्वारव्यवस्थिताय धर्मध्वजाय नमः।" आ मंत्र भणी ध्वज उपर,

३—" ॐ मेघाय नमः" आ मंत्र वडे डाबा हाथ तरफनी बार शाखा उपर अने

४—" ॐ महामेघाय नमः" ए मंत्रथी जमणा हाथ तरफनी बार शाखा उपर त्रण त्रण वार वासाक्षत नाखे, स्नात्रकारो जल–चन्दन–पुष्पादि चढावे.

ए पछी प्रतिष्ठाचार्य दक्षिणद्वारे जइ उपर प्रमाणे ज तोरण, ध्वज अने शाखाना मंत्रो वडे ते ते उपर वासक्षेप करे. स्नात्रकारो जलचन्दनादि चढावे. ए पछी दक्षिणद्वारे जइ त्यां प्रतिष्ठा करे, तेना मंत्रो नीचे प्रमाणे—

दक्षिणद्वारना प्रतिष्ठायमंत्रो—१ " ॐ उदुम्बरात्मने धर्मराजतोरणाय नमः।" २ " ॐ दक्षिणद्वारव्यवस्थिताय मानध्वजाय नमः।" ३ " ॐ कालाय नमः।" ४ ॐ " नीलाय नमः।"

ए पछी पश्चिमद्वारे जइ प्रतिष्ठा करे तेना मंत्रो.

१—" ॐ अश्वत्थात्मने सलिलाधिपतोरणाय नमः।" २—" ॐ पश्चिमद्वारव्यवस्थिताय गजध्वजाय नमः।" ३—" ॐ जलाय नमः।" ४—" ॐ अजलाय नमः।"

ए ज रीते उत्तरद्वारे जइ प्रतिष्ठा करे तेना मंत्रो

१ ॐ "प्लक्षात्मने यक्षाधिपतोरणाय नमः। २—" ॐ उत्तरद्वारव्यवस्थिताय सिंहध्वजाय नमः।" ३—" ॐ अचलाय नमः।" ४—" ॐ लुलिताय नमः।

ए पछी प्रतिष्ठाचार्य स्नात्रकारोनी साथे मूलनायक प्रतिमानुं मुख जे दिशा संमुख राखवानुं होय तेना सामेनी दिशाना

"ॐ भूरसि भूतधात्री सर्वभूतहिते विचित्रवर्णालंकृते देवि! भूमिशुद्धिं कुरु २ स्वाहा।"

द्वारथी मण्डपमां जइने "ॐ भूरसि भूतधात्री सर्वभूतहिते ... " आ मंत्रथी भूमि उपर त्रण वार वासक्षेप करे, स्नात्रकारो जल, चन्दनादि छांटे, पुष्प चढावे, धूप उखेवे, वेदीनी च्यारे तरफ १००-१०० हाथनी अन्दर अपवित्र वस्तु 'लोही, मांस-हाडकुं मल-मूत्रादि होय तो दूर करावी भूमिशुद्धि करे.

ज्यां पूर्वप्रतिष्ठित पंचतीर्थी आदि प्रतिमा देववंदनादि निमित्ते स्थापवी होय त्यां सिंहासनादि स्थापन करीने ते उपर "ॐ चतुर्मुखदिव्यसिंहासनाय नमः।" ए मंत्रथी वासक्षेप करवो.

ज्यां नवीन प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाओ स्थापित करवानी होय ते वेदी उपर "ॐ अर्हत्पीठाय नमः।" आ मंत्रे वासक्षेप करी मंडप प्रतिष्ठानुं कार्य पूर्ण करवुं.

मंडप प्रतिष्ठा थया पछी शुद्धपणे तैयार करावेल अने घण्टाकर्णना मंत्रथी २१ वार अथवा ७ वार अभिमंत्रित करीने तैयार राखेल गोलनी ५ सेर सुखडी बालकोने वहेंची देवी,[1]

उपर प्रमाणे विधि सहित मण्डप प्रतिष्ठा करी शुभ समय जोई वेदी उपर नवीन प्रतिमाओ पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख स्थापन करवी, अने पूर्वप्रतिष्ठित प्रतिमानी स्थापना सिंहासन उपर करवी. जो स्थिर प्रतिष्ठा होय अर्थात् प्रतिष्ठाप्य प्रतिमा सदाने माटे त्यां ज स्थापित रहेवानी होय तो तेनी नीचे पंचरत्ननी पोटली कुंभकारचक्रनी माटी सहित प्रथम स्थापीने पछी

[1] आ विधान पादलिप्त नथी पण वर्तमानकाळे आधुनिक विधिओना लेखथी करातुं होइ लख्युं छे

प्रतिमानी स्थापना करवी. पण प्रतिष्ठा जो 'चल' होय, एटले के प्रतिष्ठा थया पछी प्रतिष्ठाप्य प्रतिमा त्यांथी बीजे लेई जवानी होय तो तेनी नीचे वाम भागनी तरफ समूलो डाभ अने नदीनी पवित्र वालुका स्थापन करवी.

ते पछी प्रतिष्ठाचार्ये नवां वस्त्र पहेरी स्नात्रकारो साथे मंगल निमित्ते नीचे प्रमाणे चैत्यवंदन करवुं अने शान्ति निमित्ते देवताओना कायोत्सर्ग करवा.

मूलनायकनो नमस्कार—चैत्यवंदन कही, नमुत्थुणं, अरिहंत चेइआणं करेमि काउस्सग्गं वंदण वत्तिआ० अन्नत्थ० १ नोकारनो काउसग्ग करी, नमोऽर्हत्० कही, मूलनायकनी स्तुति कहेवी. मूलनायकनी स्तुति याद न होय तो—

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्ध्यानतो नरैः। अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहसौच्यत ॥ १ ॥

ए स्तुति बोलवी. पछी लोगस्स० सव्वलोए० अन्नत्थ० १ नोकारनो काउसग्ग द्वितीया स्तुति नीचेनी पण कही शकाय छे—

ॐमिति मन्ता यच्छा-सनस्य नन्ता सदा यदंह्रिश्च। आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पछी पुक्खरवरदीवड्ढे० सुअस्स भगवओ करेमि का० अन्नत्थ० १ नोकारनो काउ० तृतीया स्तुति नीचेनी पण कही शकाय.

"नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता। वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

पछी सिद्धाणं. बुद्धाणं, पूर्ण कहीने श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसग्गं, वंदणवत्तिआए० अन्नत्थ० १ लोगस्स सागरवरगंभीरा सुधीनो काउसग्ग करी पारी नमोऽर्हत्० स्तुति—

"श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः प्रशान्तिकोसावशान्तिमुपशान्तिम्। नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः संतुषन्ति जने ॥ ४ ॥

पछी श्री श्रुतदेवतायै करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ० १ नो० का० नमोऽर्हत् कही स्तुति—

" वद वदनि न वाग्वादिनि !" भगवति ! कः श्रुतसरस्वत्तिगमेच्छुः। रगत्तरङ्गमतिवर-नरणिस्तुभ्य नम इतीह ॥५॥

पछी श्रीशान्तिदेवतायै करेमि काउसग्ग, अन्नत्थ० १ नो० काउ० करी, नमोऽर्हत्० स्तुति—

श्री चतुर्विधसघस्य, शासनोन्नति कारिणी। शिवशान्तिकरी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥ ६ ॥

पछी श्री शासनदेवयाए करेमि काउसग्ग, अन्नत्थ० १ नो० काउ० करी, नमोऽर्हत्० स्तुति—

" उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरताः। द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥७॥

पछी श्रीभवनदेवतायै करेमि काउसग्ग, अन्नत्थ० १ नोकारनो काउ० करी नमोऽर्हत्० कही स्तुति—

" ज्ञानादिगुणयुताना, नित्य स्वाध्यायसयमरतानाम्। विदधातु भवनदेवी, शिव सदा सर्वसाधूनाम् ॥८॥

पछी क्षेत्रदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० का० नमोऽ० स्तुति—

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान्नः सुखदायिनी ॥९॥

पछी अम्बिकायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० का० नमोऽर्हत्० स्तुति—

"अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ, सौख्यख्याति दधातु नः। माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥१०॥

पछी अच्छुप्तायै करेमि का० अन्नत्थ १ नोकार० काउ० नमोऽर्हत्० स्तुति—

" चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना। भद्र करोतु संघस्या-ऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥ ११ ॥

पछी समस्तवेयावच्चगराणं संतिगराणं सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराणं करेमि० काउ० अन्नत्थ० १ नोकार० काउ० नमोऽर्हत्० कही स्तुति—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैयावृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१२॥

उपर नोकार १ गणीने बेसी, नमुत्थुणं० जावंति चेइआइं०, जावंत के वि० साहू० नमो० कही, नीचेनुं स्तव कहे.
"ॐमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरिउवज्झाय। वरसव्वसाहुमुणिसंघ–धम्मतित्थपवयणस्स ॥१॥
सप्पणवं नमो भग–वईइ, सुयदेवयाइ सुहयाए। सिवसंतिदेवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥ २ ॥
इंदागणिजमनेरइअ–वरुणवाउ कुबेर ईसाणा। बंभोनागुत्ति दसण्ह–मवि अ सुदिसाण पालाणं ॥३॥
सोमयमवरुणवेसमण–वासवाणं तहेव पंचण्हं। तह लोगपालयाणं, सूराइगहाण य नवण्हं ॥४॥
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुट्ठाणं। सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणिअं ॥५॥

उपर 'जयवीयराय' इत्यादि कहीने चैत्यवंदना समाप्त करवी. पछी वेदी उपर बेसी प्रतिष्ठाचार्ये आत्मामां नीचे प्रमाणे शुचिविद्या आरोपवी—

शुचिविद्या—"ॐ नमो अरिहंताणं, नमो सिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो उवज्झायाणं, नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताणं, ॐ नमो विज्जाहराणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ कं क्षं नमः,

अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा।"

उपर्युक्त शुचिविद्याने धेनुमुद्रावडे ५-७ वार आत्मामां आरोपीने पवित्र थवु, पछी अर्हदादि मंत्रो द्वारा आत्माने विषे सकलीकरण करवु

सकलीकरणना मंत्रो अने विधि—१-ॐ ह्रां नमो अरिहंताणं, हृदये-हृदये हस्तस्पर्श करवो २-ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं, शिरसि-मस्तकने स्पर्शवु ३-ॐ ह्रूं नमो आयरियाणं, शिखायां-शिखाए स्पर्श करवो. ४-ॐ ह्रौं नमो उवज्झायाणं, कवचे-सर्वांगनो स्पर्श करवो ५-ॐ ह्रः नमो लोए सव्वसाहूणं, अस्त्र-आयुधग्रहण चेष्टा करवी.

उपरना ५ मंत्रपदो पैकी प्रथमना ४ पदो वडे ते ते अंगनो स्पर्श करता अनुक्रमे आग्नेय, ऐशान, नैऋत्य अने वायव्य कोण तरफ धेनुमुद्रा देखाडवी अने पांचमा पदवडे हाथोमां शस्त्रग्रहणनी चेष्टा करी पूर्व, दक्षिण, पश्चिम अने उत्तर दिशाओमां अनुक्रमे त्रासनी मुद्रा देखाडवी.

ए बधुं कर्या पछी श्रद्धालु, पवित्र अने तपविशुद्ध देह तथा मुकुट, कटक (कडा), भुजबंध, कुंडल, मुद्रिका, हार, जनोई (वैकक्ष) आदि १६ आभरणोथी भूषित श्वेतवस्त्रधारी एवा गृहस्थने देवनी जमणी भुजा तरफ उभो राखी तेने इन्द्र कल्पवो अने उक्त मंत्रो वडे तेनु पण सकलीकरण करवु, ए प्रमाणे इन्द्रनी अंगरक्षा कर्या पछी प्रतिष्ठाचार्यं विघ्नोच्चाटन निमित्ते नीचेना भूतबलि मंत्रे बलि मंत्रीने इन्द्रना हाथे नखाववो.

भूतबलिमंत्र—"ॐ नमो अरिहंताणं, नमोसिद्धाणं, नमो आयरियाणं, नमो आगासगामीणं, नमो चारणाइलद्धिणं, जे इमे किंनर किंपुरिस महोरग गरुल सिद्ध गंधव्व जक्ख रक्खस भूय पिसाय डाइणि पभिई जिणघरणिवासिणो नियनियनिलयट्ठिया पवियारिणो संनिहिया य असंनिहिया य ते सव्वे विलेवणपुप्फधूवपईवसणाहं बलिं पडिच्छन्तु तुट्ठिकरा भवंतु सिवंकरा भवंतु सत्थयणं कुणंतु सव्वजिणाण संनिहाणप्पभावओ पसन्नभावेण सव्वत्थ रक्खं कुणंतु सव्वदुरियाणि नासेंतु सव्वासिवं उवसमेंतु संति-पुट्ठि-तुट्ठि-सिवसत्थयणकारिणो भवंतु स्वाहा।"

ते पछी स्थापेल प्रतिमाना ४ खूणाओमां ४ कलशो स्थापवा. कलशोना मुखे फल मूकवां अने गलामां सूत्रे परोएल मींढलनां कांकण बांधवां अने पुष्पमालाओ पहेरावबी.

कलशो स्थाप्या पछी प्रतिमाना अंगोमां आ प्रमाणे वर्ण न्यास करवो—१ 'ॐ ह्राँ'—ललाटमां, २ 'ॐ ह्रीँ'—डाबा काने, ३ 'ॐ ह्रूँ'—जमणा काने, ४ 'ॐ ह्रौँ'—माथाना पाछला भागमां, ५ 'ॐ ह्रः' मस्तक उपर.

'६ ॐ क्ष्माँ' बे नेत्रो उपर, ७ 'ॐ क्ष्मीँ' मुख उपर, ८ 'ॐ क्ष्मूँ' कंठ भागमां, ९ 'ॐ क्ष्मौँ' हृदयमां, १० 'ॐ क्ष्मः' बे भुजाओमां.

११ 'ॐ क्रौँ' पेट उपर, १२ 'ॐ ह्रीँ' कटिभागमां. १३ 'ॐ ह्रूँ' बे जांघोमां, १४ 'ॐ क्ष्मूँ' बे पगोमां अने १५ 'ॐ क्ष्मः' बे हाथोमां.

उपर प्रमाणे केसर चंदन कपूर आदिना रमथी प्रतिमाना उक्त अंगभागोमा दृष्टिदोषनिवारणार्थं मंत्राक्षरोनो न्यास करवो.
मंत्रन्यास पछी आचार्य नीचेना दिग्बन्ध मंत्रवडे श्वेतसर्षपो मंत्रीने पूर्वादि दिशाओमां नंखावी दिग्बन्ध करावबो

दिग्बन्ध मंत्र—ॐ हूँ क्षूँ फुट् किरिटि किरिटि घातय घातय परविघ्नान् स्फोटय स्फोटय सहस्रखंडान् कुरु कुरु परमुद्रा छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः फट् स्वाहा "

स्नान विधि—दिग्बन्ध कर्या पछी प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाने स्नानमंडपमा लइ जइ स्नान करावबु. तेमा ४ कलशो छाणेल जलवडे भरीने पुष्प अक्षतादिके पूजी समत्रे अभिमंत्रित करीने आचार्य प्रथम स्थपतिनो वस्त्रालंकार, तांबूल, आदिथी सत्कार करीने एक मुद्रित (ढाकणवालो) कलश स्थपति (सूत्रधार) ने आपे, बीजा कलशो इंद्रादिकने आपीने लग्नो 'इष्ट' नवमांश आवता प्रथम स्थपति पोतानो कलश ढाले, पछी बीजाओ पोतपोताना कलशो वडे प्रतिमाने स्नान करावे. ए पछी १ सातधान्य, २ रत्नचूर्ण, ३ मंगलमृत्तिका, ४ कषायछाल अने ५ सदौषधि, आ पदार्थोना जल वडे कलशो भरीने एक पछी एक एम ५ स्नानो करावबा, प्रथमनु ४ कलशस्नान अने ए पांच स्नानोना जल कलशो मंत्रवानो मंत्र नीचे प्रमाणे एक ज छे

" ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आपो जल गृण्ह गृण्ह स्वाहा। "

प्रत्येक अभिषेकना द्रव्यमिश्रजलवडे कलशो भरीने आ मंत्रे अभिमंत्रीने कलशमुद्राए कलशो वडे ए ज स्नान करावबा.

छ पछी ७ प्रथमाष्टवर्ग, ८ द्वितीयाष्टवर्ग, ९ सर्वौषधि, १० पंचामृत, ११ कुसुमजल, १२ गन्ध, १३ वास, १४ चन्दन, १५ कुंकुम (केसर), १६ कपूर, १७ तीर्थोदक अने १८ कुसुमांजलि, ए बीजा १२ अभिषेको करवा. अष्टवर्गादि ११ द्रव्यो

जलमां नाखीने ते जल वडे कलशो भरीने अने १२ मा कुसुमांजलि माटे हाथोनी पसलीमां पुष्पो लेइने अभिषेक मंत्रे० मंत्रीने प्रतिमानुं स्नपन कराववुं, आ १२ अभिषेकोनो मंत्र नीचे प्रमाणे छे—

" ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु विपृथु विपृथु गन्धं गृण्ह गृण्ह स्वाहा।"

प्रत्येक अभिषेकना कलशो आ मंत्रवडे मंत्रवा अने कलशमुद्रा देखाडी प्रतिमा उपर ढालवा, कुसुमांजलि अभिषेकमां कलश मुद्रा नथी. प्रत्येक अभिषेक पछी नीचेना मंत्रो वडे मंत्रीने प्रतिमाना मस्तके पुष्प चढाववुं अने धूप उखेववो.

सर्वस्नानोनो पुष्पमंत्र—" ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते मेदिनि पुरु पुरु पुष्पवति पुष्पं गृण्ह गृण्ह स्वाहा।"

सर्वस्नानोनो धूपमंत्र—" ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते दह दह महाभूते तेजोधिपते धू धू धूपं गृण्ह गृण्ह स्वाहा।"

आम स्नानादिवडे प्रतिमानी आकारशुद्धि करीने तेमां परमेष्ठि मुद्राए नीचे प्रमाणे भगवंतनुं आह्वान करवुं—

" ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा।"

आह्वान कर्या पछी अभिमंत्रित चंदनवडे प्रतिमाने सर्वांगे विलेपन करवुं, अञ्जलिमुद्राए पुष्पो चढाववां, धूप उखेववो, वासक्षेप करवो अने श्वेत वस्त्रथी ढांकी 'ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः' आ मूल मंत्रवडे पूजवी.

उक्त मंत्रक्रिया-विधान स्नानमंडपमा कर्या पछी प्रतिमाने हृदय उपर स्थापी (जो प्रतिमा न्हानी होय तो हाथोमा लेइ छाती आगल राखीने अने म्होटी होय तो रथमा बेसाडी) अधिवासनामंडपने प्रदक्षिणा देता सुवर्ण, रूप्य, कांस्य, धन, रत्नो, कोडी, प्रमुखनाणुं उछालतां मंडपना पश्चिम द्वारे जवु, त्या प्रतिमाने रथथी उतारीने ते द्वारथी मंडपनी अंदर प्रवेश करावनो, प्रतिमाने भद्रपीठे स्थापी तेनी सामे पीठिका उपर नन्द्यावर्तमण्डलनु पूजन करवुं

॥" नन्द्यावर्तमण्डलनी आलेखन विधि "॥

लगभग एक गज समचोरस सेवनना पाटलाने चंदनना द्रवनुं विलेपन करी सूकव्या पछी तेमा चोरस क्षेत्र माधवु, तेना मध्यस्थानथी सूत्र गोल भमाडीने तेमा ६ गोल वृत्तो पाडवा, अने ते वृत्तोनी व्हार एक पछी एक एवा ३ गोल प्राकारो बनाववा

१-प्रथमवृत्तमां—मध्यभागे नन्द्यावर्तनो आकार आलेखी तेना मध्यमा—

"ॐ नमो र्हद्भ्यः स्वाहा १ अने पूर्वादि दिशाओमा अनुक्रमे-' ॐ नमः सिद्धेभ्यः स्वाहा २, ॐ नम आचार्येभ्यः स्वाहा ३, ॐ नम उपाध्यायेभ्यः स्वाहा ४ अने ॐ नम. सर्वसाधुभ्यः स्वाहा ५, आ पदो लखवां तथा आग्नेयादि खुणाओमा अनुक्रमे-' ॐ नमो ज्ञानाय स्वाहा ६, ॐ नमो दर्शनाय स्वाहा ७, ॐ नमश्चारित्राय स्वाहा ८ अने ॐ नमः शुचिविद्यायै स्वाहा ९।

आ ९ मंत्र पदो लखीने जिननो जमणी बाजु उपर 'ॐ' नमः शक्राय स्वाहा १०, तेनी नीचे ॐ नमः श्रुतदेवतायै स्वाहा ११, जिननी डाबी बाजु 'ॐ' नम ईशानाय स्वाहा १२, नीचे ॐ नमः शान्ति देवतायै स्वाहा १३ मु लखवुं अने

ॐ नमो नंद्यावर्ताय स्वाहा' आ मंत्र नंद्यावर्तनी उपर लखवो. नंद्यावर्तनी पूर्वादि दिशाओने छेडे अनुक्रमे वज्र, यव, अंकुश अने पुष्पमालाना आकारो आलेखवा अने पूजन समये नाम मंत्रो बोलीने पुष्पादि वडे पूजवा.

(२) बीजा वृत्तमां—कर्णिकानी तरफथी निकळेली केसरनी पांखडीओ बनाववी, पांखडी मूलमां धोळी, मध्यमां राती अने अंतमां पीळा रंगनी करवी, पांखडीओमां दिशा विदिशामां ३-३ ना हिसाबे २४ कोष्ठको करवां अने पूर्व कोष्ठकथी शरु करीने—

ॐ नमो मरुदेव्यै स्वाहा १, ॐ नमो विजयायै स्वाहा २, ॐ नमः सेनायै स्वाहा ३, ॐ नमः सिद्धार्थायै स्वाहा ४, ॐ नमो मंगलायै स्वाहा ५, ॐ नमः सुसीमायै स्वाहा ६, ॐ नमः पृथ्व्यै स्वाहा ७, ॐ नमो लक्ष्मणायै स्वाहा ८, ॐ नमो रामायै स्वाहा ९, ॐ नमो नन्दायै स्वाहा १०, ॐ नमो विष्णवे स्वाहा ११, ॐ नमो जयायै स्वाहा १२, ॐ नमः श्यामायै स्वाहा १३, ॐ नमः सुयशसे स्वाहा १४ ॐ नमः सुव्रतायै स्वाहा १५, ॐ नमोऽचिरायै स्वाहा १६, ॐ नमः श्रियै स्वाहा १७, ॐ नमो देव्यै स्वाहा १८, ॐ नमः प्रभावत्यै स्वाहा १९, ॐ नमः पद्मावत्यै स्वाहा २०, ॐ नमो वप्रायै स्वाहा २१, ॐ नमः शिवायै स्वाहा २२, ॐ नमो वामायै स्वाहा २३, ॐ नमः त्रिशलायै स्वाहा २४.

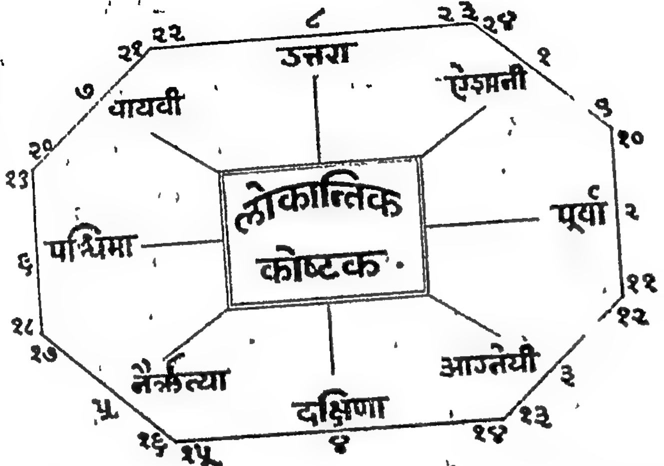
ए २४ मातृनाम मंत्रो लखवा, पछी ए बीजा वृत्तमां ज केसरनी पांखडिओनी नीचेथी बहार निकळेलां आठ कमलपत्रो पूर्वादि आठ दिशाओमां बनावीने पूर्वादि ४ दिशाओमां ॐ जयायै स्वाहा १, ॐ विजयायै स्वाहा २, ॐ अजितायै

स्वाहा ३, ॐ अपराजितायै स्वाहा ४, आ च्यारनो न्यास करवो अने आग्नेयादि ४ विदिशाओमा—

ॐ जम्भायै स्वाहा ५, ॐ जम्भिन्यै स्वाहा ६, ॐ मोहायै स्वाहा ७, ॐ मोहिन्यै स्वाहा ८, आ च्यार देवीओनो आलेख करवो.

३ त्रीजा वृत्तमा—पूर्वादि दिशा-विदिशाओमा ३-३ कमलपत्ररूपे कोठाओ पाडीने कोष्टकनु वलय करवु, अने ते पछी ईशान १, पूर्व २, आग्नेय ३, दक्षिण ४, नैऋत्य ५, पश्चिम ६, वायव्य ७ अने उत्तर ८ आ क्रमथी आठ दिशाओमा अनुक्रमे सारस्वत १, आदित्य २, वह्नि ३, वरुण ४, गर्दतोय ५, तुषित ६, अव्याबाध ७ अने अरिष्ट ८, ए आठ लोकान्तिक देवोनो आलेख कर्या पछी सारस्वत-आदित्य बेनी वच्चे ९ अग्न्याभ अने १० सूर्याभ, आदित्य-वह्नि बेनी वच्चे ११ मा चंद्राभ अने १२ सत्याभ, वह्नि-वरुण बेनी वच्चे १३-१४ श्रेयस्कर अने क्षेमकर. वरुण-गर्दतोय बेनी वच्चे १५ वृषभाभ अने १६, कामचार, गर्दतोय-तुषितनी वच्चे १७-१८ निर्माण अने दिशान्तरक्षित, तुषित-अव्याबाध बेनी वच्चे १९-२० आत्मरक्षित अने सर्वरक्षित, अव्याबाध-अरिष्टनी वच्चे २१-२२ मरुत अने वसु, अने अरिष्ट-सारस्वत बेनी वच्चे २३ अश्व अने २४ विश्व, नामक लोकान्तिक देवोनु आलेखन करवुं,

नीचेना कोष्टक उपरथी कया दिशाभागमा कया लोकान्तिक देवनुं स्थान छे ते जणाशे—



उा कोष्टकने फरता आंकडाथी लोकान्तिक देवोनां क्रमिक नामोना नंबरो समजवाना छे. आ प्रत्येक काष्टकमां ॐ नमः सार-स्वतेभ्यः स्वाहा १, ॐ नमः आदित्येभ्यः स्वाहा २, ॐ नमो वह्निभ्यः स्वाहा ३, ॐ नमो वरुणेभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमो गर्दनोयेभ्यः स्वाहा ५, ॐ नमस्तुषितेभ्यः स्वाहा ६, ॐ नमो ऽव्याबाधेभ्यः स्वाहा ७, ॐ नमो ऽरिष्टेभ्यः स्वाहा ८, ॐ नमो ऽग्न्याभेभ्यः स्वाहा ९, ॐ नमः सूर्याभेभ्यः स्वाहा १०, ॐ नमश्चन्द्राभेभ्यः स्वाहा ११, ॐ नमः सत्याभेभ्यः स्वाहा १२, ॐ नमः श्रेयस्करेभ्यः स्वाहा १३, ॐ नमः क्षेमंकरेभ्यः स्वाहा १४, ॐ नमो वृषभाभेभ्यः स्वाहा १५, ॐ नमः कामचारेभ्यः स्वाहा १६, ॐ नमो निर्माणेभ्यः स्वाहा ॐ नमो दिशान्तरक्षितेभ्यः स्वाहा १८, ॐ नम आत्मरक्षितेभ्यः स्वाहा १९, ॐ नमः सर्वरक्षितेभ्यः स्वाहा २०, ॐ नमो मरुतेभ्यः स्वाहा २१, ॐ नमो वसुभ्यः स्वाहा २२, ॐ नमो ऽश्वेभ्यः स्वाहा २३, ॐ नमो विश्वेभ्यः स्वाहा २४.

ए प्रमाणे क्रमांक साथे पूरा नाम मंत्रो लखवा.

४-चोथा वृत्तमां—दिशा-विदिशामा २-२ ना हिसाबे १६ कमलपत्रो बनावीने तेमा नीचेना क्रमथी सोल विद्यादेवि-
ओनो आलेख करवो—

"ॐ नमो रोहिण्यै स्वाहा १, ॐ नमः प्रज्ञप्त्यै स्वाहा २, ॐ नमो वज्रशृंखलायै स्वाहा ३, ॐ नमो वज्रा-
कुश्यै स्वाहा ४, ॐ नमो ऽप्रतिचक्रायै स्वाहा, ५, ॐ नमः पुरुषदत्तायै स्वाहा ६ ॐ नमः काल्यै स्वाहा ७,
ॐ नमो महाकाल्यै स्वाहा ८, ॐ नमो गौर्यै स्वाहा ९, ॐ नमो गान्धार्यै स्वाहा १०, ॐ नमो महाज्वालायै
स्वाहा ११, ॐ नमो मानव्यै स्वाहा १२, ॐ नमो वैरोट्यायै स्वाहा १३, ॐ नमो ऽच्छुप्तायै स्वाहा १४, ॐ
नमो मानस्यै स्वाहा १५, ॐ नमो महामानस्यै स्वाहा।"

५-पाचमा वृत्तमा—पूर्वादि दिशा विदिशाओमा कमलपत्राकारे ८ कोठा बनाववा अने तेमा क्रमशः पूर्वादिमा
ॐ 'नमः' सौधर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा १, ॐ नमस्तत्पदेवीभ्यः स्वाहा २, ॐ नमो चमरादीन्द्रादिभ्यः
स्वाहा ३, ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमश्चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ५, ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा ६, ॐ नमः
किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ७, ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा ८

ए प्रमाणे मंत्रो आलेखवा—

६-छट्ठा वलयमां-पूर्वादि दिशाओमां कमल पत्राकारे आठ कोष्ठको करीने तेमा—ॐ नमः इन्द्राय स्वाहा १, ॐ नमोऽ-
ग्नये स्वाहा २, ॐ नमो यमाय स्वाहा ३, ॐ नमो निर्ऋतये स्वाहा ४, ॐ नमो वरुणाय स्वाहा ५, ॐ नमो-

वायवे स्वाहा ६, ॐ नमः कुबेराय स्वाहा ७, ॐ नमः ईशानाय स्वाहा ८, लखवुं तथा उर्ध्वदिशामां ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा" ९, अने अधोदिशामां 'ॐ नमो धरणेन्द्राय स्वाहा" १०, लखवुं.

प्रथमवृत्तमां नन्द्यावर्त्तस्थित जिनबिम्बनां चरणो नीचे—

"१ ॐ नमः आदित्याय स्वाहा, २ ॐ नमः सोमाय स्वाहा, ३ ॐ नमो मङ्गलाय स्वाहा, ४ ॐ नमो बुधाय स्वाहा, ५ ॐ नमो बृहस्पतये स्वाहा, ६ ॐ नमः शुक्राय स्वाहा, ७ ॐ नमः शनैश्चराय स्वाहा, ॐ नमो राहवे स्वाहा अने ९ ॐ नमः केतवे स्वाहा." ए नव मन्त्रोथी नवग्रहोने आलेखवा.

वृत्तोनी बहार अर्थात् गढोनी अंदर दक्षिण दिशामां

'ॐ नमः क्षेत्रपालाय स्वाहा' अग्निकोणमां 'ॐ नमो गणधरादि त्रिकाय स्वाहा,' नैर्ऋत्यमां 'ॐ नमो भवनपत्यादिदेवीत्रिकाय स्वाहा' वायव्यमां 'ॐ नमो भवनपत्यादिदेवत्रिकाय स्वाहा' अने इशानमां 'ॐ नमो वैमानिकदेवादित्रिकाय स्वाहा.' ए पर्षदा मंत्रो लखवा.

त्रण प्राकारो—नन्द्यावर्त्तनां ६ वर्तुलो पछी तेओने आंतरी लेता त्रण प्राकारोनां ३ वलयो बनाववां, आनी च्यारे दिशाओमां द्वारो राखी ते उपर तोरणो अने ध्वजो आलेखवा.

प्रथम प्राकारनां पूर्वादि द्वारोनी अंदर बन्ने बाजुए १ वैमानिक, २ व्यंतर, ३ ज्योतिष्क अने ४ भवनपतिः ए देवदेवीओनां बे बे युगलो अनुक्रमे पीत, श्वेत, रक्त अने कृष्णवर्णनां आलेखवां.

प्रथम प्राकारना पूर्वादि द्वारपालो अनुक्रमे सोम, यम, वरुण अने कुबेर, धनु॰, दण्ड, पाश अने गदाधारी आलेखवा प्रत्येक द्वारना मध्यमा यष्टिधारी तुम्बरुनो आलेख करवो

बीजा प्राकारना पूर्वादिद्वारपाली तरीके जया १, विजया २, अजिता ३, तथा अपराजिता ४, अने

त्रीजा बाह्यप्राकारना पूर्वादि द्वारपालो तरीके च्यार तुम्बरु आलेखवा.

त्रणे प्राकारोना पूर्वादि तोरणो एक ज नामना छे. पूर्वद्वारोना 'सुराधिप' १, दक्षिणद्वारोना 'धर्मराज' २, पश्चिम द्वारोना 'सलिलाधिप' ३ अने उत्तरद्वारोना 'यक्षाधिप' ४, ए च्यार च्यार तोरणो आलेखवा

त्रणे प्राकारोना पूर्वादि ध्वजोना नामो पण समान छे, त्रणे पूर्वद्वारो उपर 'धर्मध्वजो' १, दक्षिणद्वारो उपर 'मानध्वजो' २, पश्चिम द्वारो उपर 'गजध्वजो' ३, अने उत्तर द्वारो उपर 'सिंहध्वजो' ४, ए च्यार च्यार आलेखवा

बीजा प्राकारमा तिर्यञ्चो अने त्रीजा प्राकारमा यान-वाहनो आलेखवा, त्रण प्राकारोनी बहारनी भूमिमा देव अने मनुष्योने आलेखवा.

च्यारे द्वारोनी बन्ने बाजुए कमलवन सहित वावडियो आलेखवी. अतमा वज्रलाञ्छित पृथ्वीमंडप आलेखीने

पूर्वादि ४ दिशाओमा "परविद्याः क्षः फुट्" अने अग्नियादि ४ विदिशाओमा—"परमत्राः क्षः फुट्" आ मंत्राक्षरो लखवा.

नन्द्यावर्त्तना पाटलाना या पट्टना च्यारे खूणाओ उपर कमलस्थित अने कमलोवडे ढाकेला मुखवाला ४ पूर्णकलशो आले-

खवा, अने सर्वनी बहार वायुमंडल आपवुं.

खुलासो—'आलेखन' अथवा 'आलेख'नो 'अर्थ' चित्रवुं छे, एथी समजवुं जोइये के नंद्यावर्तना पट्टना प्रत्येक वलयमां अने वलयना प्रत्येक कोष्ठकमां आवतां देव-देविओनां नामोना स्थाने तेमनां चित्रो आलेखवाना होय छे, पण ए कार्य अशक्य होइ एमनां नाममंत्रो ज लखवानी पद्धति प्रचलित थई छे, तेथी प्रत्येक देवदेवीना स्थाने तेनो नाममंत्र लखाय छे. नामनी पूर्वे 'ॐ नमः' अने नामने चतुर्थी विभक्ति लगाडीने अन्तमां 'स्वाहा' शब्द लखवो, एने 'नाममंत्र' कहे छे.

नाममंत्र लखवा जेटलो पण अवकाश न होय तो एकलां नामो लखीने पण पूजन करी शकाय छे.

वृत्तोनी बहार ३ प्राकारोनां द्वारो, तेनां तोरणो, ध्वजो, वावडियो, कलशो, अने पार्थिवादि मंडलो, बनतां सुधी ते ते आकारमां चित्रवां जोइये, छतां तेम बनवुं अशक्य होय तो प्रत्येकनुं नाम मात्र लखीने काम चलावी लेवुं, पण प्रत्येक वलयना कोष्ठकोमां के बहार लखातां नामोनी साथे संख्यांक अवश्य लखवो के जेथी पूजन समये नंबरवार मंत्रोवडे नंबरवार कोष्ठकोमां आवता आराध्यपदोनुं पूजन सुगमताथी थइ शके.

नंद्यावर्तनी पूजनविधि.

पूर्वोक्त प्रकारे नन्द्यावर्तनुं आलेखन करीने प्रसंग आवतां आवश्यक सामग्री जोडीने तेनुं पूजन करवुं. नंद्यावर्त पूजननो मुख्य अधिकार प्रतिष्ठा गुरुनो छे, योग्य प्रतिष्ठा गुरुनो योग होय तो नन्द्यावर्तनुं पूजन तेमना हाथे ज कराववुं. प्रत्येक पदनो मंत्र बोली गुरु वासक्षेपवडे तेनुं पूजन करे, ते पछी स्नात्रकार श्रावक पुष्पाक्षतादि चढावे.

नद्यावर्तनो पूजा-सामग्री तरीके वासक्षेप, पुष्प, अक्षत, धूप, दीप, फल, नैवेद्य, ए पदार्थों मुख्य छे कोइ ग्रंथमा मुद्रानो पण उल्लेख छे, आज काल केटलाक विधिकारो पैसा-टका पूजामा मूकावे पण छे. नद्यावर्तना वलयोमा मुख्य देव पदो ११३ छे[1] एटले चढाववाना द्रव्योनी संख्या ते हिसाबे राखवी, प्रथम वलयमा नन्द्यावर्त, वज्र, यव, अंकुश अने पुष्पमाला, आ मंगल चिह्नोनु पूजन तेना मत्रो बोलीने वासक्षेपथी करवु, प्राकारगढ परिपत्रिलो, देवयुगलो, द्वारपालो, तोरणो, ध्वजो अने मडलो पण वासक्षेप वडे पूजवां प्रत्येक कोष्टकगत पदनो मत्र बोलीने ते पछी ते पदनुं पूजन करवु, प्रत्येक वलयना पूजामंत्रो नीचे प्रमाणे छे.

नन्द्यावर्त पूजनमत्रो—प्रथम वलये ९ पदानि. ॐ नमोऽर्हद्भ्यः स्वाहा १, ॐ नमः सिद्धेभ्यः स्वाहा २, ॐ नम आचार्येभ्यः स्वाहा ३, ॐ नम उपाध्यायेभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः स्वाहा ५, ॐ नमो ज्ञानाय स्वाहा ६, ॐ नमो दर्शनाय स्वाहा ७, ॐ नमश्चारित्राय स्वाहा ८, ॐ नमः शुचिविद्यायै स्वाहा ९ ।

प्रथम वलये वैयावृत्यकर ४ पदानि ॐ नमः शक्राय स्वाहा १ । ॐ नमः श्रुतदेवतायै स्वाहा २ । ॐ नम ईशानाय स्वाहा ३ । ॐ नमः शान्तिदेवतायै स्वाहा ४ ।

प्रथम वलये ५ मगलचिह्नानि—ॐ नमो नन्द्यावर्ताय स्वाहा १ । ॐ नमो वज्राय स्वाहा २ । ॐ नमो यवाय स्वाहा ३ । ॐ नमोऽङ्कुशाय स्वाहा ४ । ॐ नमः सुमनोदाम्ने स्वाहा ५ ।

---

[1] प्रथम वलयमा अर्हदादि ९ अने इन्द्रादि ४, बीजामा जिनमाता २४ अने जयादि ८, त्रीजा वृत्तमा २४ लोकान्तिक, चोथामा १६ विद्यादेवी, पाचमामा इन्द्रादि ८, छठ्ठामा दिशापाल १० ग्रह ९ अने क्षेत्रपाल १ कुल ११३ ।

द्वितीय वलये २४ जिनमातृपदानि—ॐ नमो मरुदेव्यै स्वाहा १। ॐ नमो विजयायै स्वाहा २। ॐ नमः सेनायै स्वाहा ३। ॐ नमः सिद्धार्थायै स्वाहा ४। ॐ नमो मंगलायै स्वाहा ५। ॐ नमः सुसीमायै स्वाहा ६। ॐ नमः पृथिव्यै स्वाहा ७। ॐ नमो लक्ष्मणायै स्वाहा ८। ॐ नमो रामायै स्वाहा ९। ॐ नमो नन्दायै स्वाहा १०। ॐ नमो विष्णवे स्वाहा ११। ॐ नमो जयायै स्वाहा १२। ॐ नमः श्यामायै स्वाहा १३। ॐ नमः सुयशायै स्वाहा १४। ॐ नमः सुव्रतायै स्वाहा १५। ॐ नमोऽचिरायै स्वाहा १६। ॐ नमः श्रियै स्वाहा १७। ॐ नमो देव्यै स्वाहा १८। ॐ नमः प्रभावत्यै स्वाहा १९। ॐ नमः पद्मावत्यै स्वाहा २०। ॐ नमो वप्रायै स्वाहा २१। ॐ नमः शिवायै स्वाहा २२। ॐ नमो वामायै स्वाहा २३। ॐ नमस्त्रिशलायै स्वाहा २४।

द्वितीय वलये जयादि ८ देवी पदानि—ॐ नमो जयायै स्वाहा १, ॐ नमो विजयायै स्वाहा २, ॐ नमोऽजितायै स्वाहा ३, ॐ नमोंऽपराजितायै स्वाहा ४, ॐ नमो जंभायै स्वाहा ५, ॐ नमो जंभिन्यै स्वाहा ६, ॐ नमो मोहायै स्वाहा ७, ॐ नमो मोहिन्यै स्वाहा ८।

तृतीय वलये २४ लोकान्तिक पदानि—ॐ नमः सारस्वतेभ्यः स्वाहा १, ॐ नम आदित्येभ्यः स्वाहा २, ॐ नमो वह्निभ्यः स्वाहा ३, ॐ नमो वरुणेभ्यः स्वाहा ४, ॐ नमो गर्दतोयेभ्यः स्वाहा ५, ॐ नम स्तुषितेभ्यः स्वाहा ६, ॐ नमोऽव्याबाधेभ्यः स्वाहा ७, ॐ नमोऽरिष्टेभ्यः स्वाहा ८, ॐ नमोऽग्न्याभेभ्यः स्वाहा ९, ॐ नमः सूर्याभेभ्यः स्वाहा १०, ॐ नमश्चन्द्राभेभ्यः स्वाहा ११, ॐ नमः सत्याभेभ्यः स्वाहा १२, ॐ नमोः

श्रेयस्करेभ्य: स्वाहा १३, ॐ नमः क्षेमकरेभ्य: स्वाहा १४, ॐ नमो वृषभेभ्यः स्वाहा १५, ॐ नमः कामचारेभ्य: स्वाहा १६, ॐ नमो निर्माणेभ्य: स्वाहा १७, ॐ नमो दिशान्तरिक्षेभ्यः स्वाहा १८, ॐ नम आत्मरक्षितेभ्यः स्वाहा १९, ॐ नमः सर्वरक्षितेभ्य स्वाहा २०, ॐ नमो मरुतेभ्यः स्वाहा २१, ॐ नमो वसुभ्यः स्वाहा २२, ॐ नमोऽश्वेभ्य: स्वाहा २३, ॐ नमो विश्वेभ्यः स्वाहा २४।

चतुर्थ वलये १६ विद्यादेवी पदानि—ॐ नमो रोहिण्यै स्वाहा १। ॐ नमः प्रज्ञप्त्यै स्वाहा २। ॐ नमो वज्रशृंखलायै स्वाहा ३। ॐ नमो वज्रकुशै स्वाहा ४। ॐ नमोऽप्रतिचक्रायै स्वाहा ५। ॐ नमः पुरुषदत्तायै स्वाहा ६। ॐ नमः काल्यै स्वाहा ७। ॐ नमो महाकाल्यै स्वाहा ८। ॐ नमो गौर्यै स्वाहा ९। ॐ नमो गान्धार्यै स्वाहा १०। ॐ नमो महाज्वालायै स्वाहा ११। ॐ नमो मानव्यै स्वाहा १२। ॐ नमो वैरोट्यायै स्वाहा १३। ॐ नमोऽच्छुप्तायै स्वाहा १४। ॐ नमो मानस्यै स्वाहा १५। ॐ नमो महामानस्यै स्वाहा १६।

पचम वलये सौधर्मेन्द्रादि ८ पदानि—ॐ नमः सौधर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा १। ॐ नमस्तद्देवीभ्य स्वाहा २। ॐ नमश्चमरेन्द्रादिभ्यः स्वाहा ३। ॐ नमस्तद्देवीभ्य स्वाहा ४। ॐ नमश्चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ५। ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा ६। ॐ नमः किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा ७। ॐ नमस्तद्देवीभ्यः स्वाहा ८।

षष्ठ वलये दिक्पालपदानि—ॐ नम इन्द्राय स्वाहा १। ॐ नमोऽग्नये स्वाहा २। ॐ नमो यमाय स्वाहा ३। ॐ नमो निर्ऋतये स्वाहा ४। ॐ नमो वरुणाय स्वाहा ५। ॐ नमो वायवे स्वाहा ६। ॐ नम कुबेराय

स्वाहा ७। ॐ नम ईशानाय स्वाहा ८। ॐ नमो धरणेन्द्राय स्वाहा ९। ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा १०।

प्रथम वलये जिनचरणाधे ग्रहपदानि—ॐ नम आदित्याय स्वाहा १। ॐ नमः सोमाय स्वाहा २। ॐ नमो मंगलाय स्वाहा ३। ॐ नमो बुधाय स्वाहा ४। ॐ नमो बृहस्पतये स्वाहा ५। ॐ नमः शुक्राय स्वाहा ६। ॐ नमः शनैश्चराय स्वाहा ७। ॐ नमो राहवे स्वाहा ८। ॐ नमः केतवे स्वाहा ९।

क्षेत्रपालपदं—ॐ नमो दक्षिणदिग्व्यवस्थित-क्षेत्रपालाय स्वाहा।

परिषत्त्रिकपदानि-ॐ नमो गणधरादित्रिकाय स्वाहा १। ॐ नमो भवनपत्यादिदेवीत्रिकाय स्वाहा २। ॐ नमो भवनपत्यादिदेवत्रिकाय स्वाहा ३। ॐ नमो वैमानिकदेवादित्रिकाय स्वाहा ४।

प्रथम प्राकारे द्वाराभयपार्श्वस्थितदेवयुगलकपदानि—ॐ नमो वैमानिकयुगलकाभ्यां स्वाहा १। ॐ नमो व्यन्तरयुगलकाभ्यां स्वाहा २। ॐ नमो ज्योतिष्कयुगलकाभ्यां स्वाहा ३। ॐ नमो भवनपतियुगलकाभ्यां स्वाहा ४।

प्रथम प्राकार द्वारपाल पदानि— ॐ नमः सोमाय स्वाहा १। ॐ नमो यमाय स्वाहा २। ॐ नमो-वरुणाय स्वाहा ३। ॐ नमः कुबेराय स्वाहा ४।

द्वितीय प्राकार द्वारपाली पदानि— ॐ नमो जयायै स्वाहा १। ॐ नमो विजयायै स्वाहा २। ॐ नमोऽजितायै स्वाहा ३। ॐ नमोऽपराजितायै स्वाहा ४।

तृतीय प्राकार द्वारपाल पदानि— ॐ नमस्तुम्बरवे स्वाहा १। ॐ नमस्तुम्बरवे स्वाहा २। ॐ नमस्तुम्बरवे स्वाहा ३। ॐ नमस्तुम्बरवे स्वाहा ४।

पूर्वादितोरणपदानि— ॐ नमः सुराधिपतोरणेभ्यः स्वाहा १। ॐ नमो धर्मराजतोरणेभ्यः स्वाहा २। ॐ नमः सलिलाधिपतोरणेभ्यः स्वाहा ३। ॐ नमो यक्षाधिपतोरणेभ्यः स्वाहा ४।

पूर्वादिध्वजपदानि— ॐ नमो धर्मध्वजेभ्यः स्वाहा १। ॐ नमो मानध्वजेभ्यः स्वाहा २। ॐ नमो गजध्वजेभ्यः स्वाहा ३। ॐ नमः सिंहध्वजेभ्यः स्वाहा ४।

मण्डलपूजा मंत्रपदानि— ॐ नमः पीतद्युतिपृथिवीमण्डलाय स्वाहा १। ॐ नमः कृष्णद्युतिवायुमण्डलाय स्वाहा २।

नन्द्यावर्तना पूजनना अन्ते यथोपलब्ध फलमेवो चढावी धूप उखेवी, पाटलाने दशिया वड नवा श्वेत वस्त्रे ढाकवो, उपर मेनासूत्र अथवा रक्तसूत्र वींटवु. वस्त्र उपर चन्दन-केसरना छांटा नाखवा. पुष्प-अक्षत वेरवा, प्रतिष्ठागुरुए वासक्षेप करवो, स्थिर प्रतिष्ठामा नन्द्यावर्तना कर्णिका भागमा प्रतिमानी कल्पना करवी अने चलप्रतिष्ठामा त्यां प्रतिमा स्थापन करवी अने ते पछी पाटलो प्रतिष्ठाप्य जिनप्रतिमावाली वेदी उपर आगलना भागमा स्थापित करवो, आगे बीजा पाटिया उपर नैवेद्य ढोवुं,

॥ इति नन्द्यावर्तपूजा मंत्रपदानि ॥

अधिवासना

ए पछी पुष्प, अक्षत, वास, चंदन, जवमाला, कंकल, वस्त्र, मींढल, आदि अधिवासनानी सामग्री एकत्र करी सौभाग्यमंत्रे अथवा अधिवासना मंत्रवडे मंत्रवी, मुद्राओ देखाडवी, पछी ते लेइने प्रतिष्ठाप्य प्रतिमानी पासे जवुं, प्रथम चन्दन वडे प्रतिमाने सर्वांगे विलेपन करवुं, पुष्पो चढाववां अने वासनिक्षेप करवो. ते पछी कपाट अने जिनचक्र मुद्राओ वडे शक्तिने उत्तेजित करी प्रतिमाना १ मस्तक, २ दक्षिणस्कन्ध, ३ वामस्कन्ध, ४ दक्षिणकुक्षि अने ५ वामकुक्षि; आ पांच अंगोमां अथवा तो १ मस्तक, २ हृदय, ३ नाभि, ४ पृष्ठभाग, ५ दक्षिणभुजा, ६ वामभुजा, ७ दक्षिण ऊरु (साथल) अने ८ वाम ऊरुः आ आठ अंगोमां आचार्य मंत्रवडे अथवा बीजा (वर्धमानविद्यादि) मंत्रवडे मंत्रन्यास करवो. ए पछी सौभाग्यमुद्रा पूर्वक प्रतिमामां सौभाग्यमंत्रनो न्यास करवो.

अधिवासना मंत्रो—१. " ॐ नमो भगवओ उसभसामिस्स पढमतित्थयरस्स सिज्झउ मे भगवई महाविज्जा जेण सच्चेण इंदेण सव्वदेवसमुदयेण मेरुम्मि सव्वोसहीहिं सव्वे जिणा अहिसित्ता तेण सच्चेण अहिवासयामि सुव्वयं दढव्वयं सिद्धं बुद्धं सम्मद्दंसणमणुपत्तं हिरि हिरि गिरि स्मिरि मिरि मिरि गुरु गुरु अमले अमले विमले विमले सुविमले सुविमले मोक्खमग्गमणुपत्ते स्वाहा।" अथवा—

२ " ॐ नमो खीरासवलद्धीणं ॐ नमो महुआसवलद्धीणं, ॐ नमो संभिण्णसोईणं, ॐ नमो पयाणुसारीणं ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं, जमियं विज्जं पउंजामि सा मे विज्जा पसिज्झउ ॐ कं क्षः स्वाहा।"

आ बे अधिवासना विद्याओ पैकीनी कोई पण एक विद्या ३ वार भणीने प्रतिमा उपर वासनिक्षेप करी तेनी अधिवासना करवी.

अधिवासनानन्तर आचार्य—

" ॐ नमो वग्गु वग्गु निवग्गु निवग्गु सुमिणे सोमणसे महुमहुरे जयते अपराजिए स्वाहा ।"

आ सौभाग्यमंत्र वडे ७ वार जपीने प्रतिमाने कंकण, मींढल अने जवमाला बांधवी

९ पछी प्रतिष्ठाचार्ये प्रतिमामां नीचे प्रमाणे पृथिव्यादि तत्त्वोनो न्यास करवो—

१ ॐ ह्रूॅा पृथिव्यै नमः, २ ॐ ह्रूॅा गन्धाय नमः, ३ ॐ ह्रूॅा अद्भ्यो नमः, ४ ॐ ह्रूॅा रसाय नमः, ५ ॐ ह्रूॅा तेजसे नमः, ६ ॐ ह्रूॅा रूपाय नमः, ७ ॐ ह्रूॅा वायवे नमः, ८ ॐ ह्रूॅा स्पर्शाय नमः, ९ ॐ ह्रूॅा आकाशाय नमः, १० ॐ ह्रूॅा शब्दाय नमः,

१ ॐ ह्रूॅा पादाभ्यां नमः, ॐ ह्रूॅा पादाधिपतये विष्णवे नमः, पादाधिपाऽस्य गमनोत्साहं कुरु कुरु।

२ ॐ ह्रूॅा पाणिभ्यां नमः । ॐ ह्रूॅा पाण्यधिपतये इन्द्राय नमः । पाण्यधिपाऽस्य पदार्थग्राहकत्वं कुरु २.।

३ ॐ ह्रूॅा पायवेनमः। ॐ ह्रूॅा पाय्वधिपतये मित्राय नमः। पाय्वधिपाऽस्य वायूत्सर्गं कुरु २.।

४ ॐ ह्रूॅा उपस्थाय नमः। ॐ ह्रूॅा उपस्थाधिपतये ब्रह्मणे नमः। उपस्थाधिपाऽस्यानन्दं कुरु कुरु।

५ ॐ ह्रूॅा वाचे नमः। ॐ ह्रूॅा वागधिपतये अग्नये नमः। वागधिपाऽस्य वाचं कुरु कुरु।

६ ॐ ह्रूॅा त्वचे नमः। ॐ ह्रूॅा त्वगधिपतये वायवे नमः। त्वगधिपाऽस्य स्पर्शग्राहकत्वं कुरु कुरु।

७ ॐ ह्रूँ जिह्वायै नमः। ॐ ह्रूँ जिह्वाधिपतये नमः। जिह्वाधिपास्य रसग्राहकत्वं कुरु:कुरु।

८ ॐ ह्रूँ घ्राणाय नमः। ॐ ह्रूँ घ्राणाधिपतिभ्यामश्विभ्यां नमः। घ्राणाधिपास्य गन्धग्राहकत्वं कुरु कुरु।

९ ॐ ह्रूँ चक्षुषे नमः। ॐ ह्रूँ चक्षुरधिपतये रक्ताय नमः। चक्षुरधिपाऽस्य रूपग्राहकत्वं कुरु कुरु।

१० ॐ ह्रूँ श्रोत्राभ्यां नमः। ॐ ह्रूँ श्रोत्राधिपतये आदित्याय नमः। श्रोत्राधिपाऽस्य शब्दग्राहकत्वं कुरु २.।

११ ॐ ह्रूँ मनसे नमः। ॐ ह्रूँ मनोधिपतये चन्द्राय नमः। मनोऽधिपास्य संकल्पविकल्प कुरु कुरु।

१२ ॐ ह्रूँ अहंकाराय नमः। ॐ ह्रूँ अहंकाराधिपतये नमः। अहंकाराधिपास्याभिमानं:कुरु २.।

१३ ॐ ह्रूँ बुद्ध्यै नमः। ॐ ह्रूँ बुद्ध्यधिपतये नमः। बुद्ध्यधिपास्य बोधं कुरु २.।

१४ ॐ ह्रूँ रागाय नमः। ॐ ह्रूँ रागाधिपतये नमः। रागाधिपास्य विषयेषु रागं कुरु २.।

१५ ॐ ह्रूँ विद्यायै नमः। ॐ ह्रूँ विद्याधिपतये नमः। विद्याधिपास्य ज्ञानाभिव्यक्तिं कुरु २.।

१६ ॐ ह्रूँ कलायै नमः। ॐ ह्रूँ कलाधिपतये नमः। कलाधिपास्य कर्तृत्वव्यक्तिं कुरु २.।

नाडीदशक विन्यास—

१ ॐ ह्रूँ इडायै नमः। २ ॐ ह्रूँ पिङ्गलायै नमः। ३ ॐ ह्रूँ सुषुम्णायै नमः। ४ ॐ ह्रूँ सावित्र्यै नमः। ५ ॐ ह्रूँ शंखिन्यै नमः।। ६ ॐ ह्रूँ कूष्माण्डयै नमः। ७ ॐ ह्रूँ यशोव (म) त्यै नमः। ८ ॐ ह्रूँ हस्तिजिह्वायै नमः। ९ ॐ ह्रूँ पूषायै नमः।। १० ॐ ह्रूँ अलम्बुषायै नमः।

वायुदशकविन्यास—

१ ॐ ह्रूँ प्राणाय नमः। २ ॐ ह्रूँ अपानाय नमः। ३ ॐ ह्रूँ समानाय नमः। ४ ॐ ह्रूँ उदानाय नमः।

५ ॐ ह्रूँ स्थानाय नमः। ६ ॐ ह्रूँ नागाय नमः। ७ ॐ ह्रूँ कूर्माय नमः। ८ ॐ ह्रूँ कृकलासाय नमः। ९ ॐ ह्रूँ देवदत्ताय नमः। १० ॐ ह्रूँ धनञ्जयाय नमः।

सहजगुणस्थापन—पृथिव्यादि तत्त्वोनो न्यास कर्या पछी आ मंत्रवडे प्रतिमामां सहजातिशयो स्थापन करवा—

"ॐ नमो विश्वरूपाय अर्हते केवलज्ञानदर्शनधराय ह्रूँ ह्रूँ सः सहजगुणान् जिनेशे स्थापयामि स्वाहा।"

ए मन्त्रद्वारा सहजगुण स्थापी अभिमन्त्रित श्वेत वस्त्रथी प्रतिमानुं आच्छादन करवुं, उपर पुष्प अधर नाखवा, चंदन छांटवुं अने रत्न तथा फलमिश्रित सात धान्यनो प्रतिमाने अभिषेक करवो (शमीज १, व्रीहि २, कुलत्थ ३, जव ४, काग ५, उडद ६ अने सरसव, ए सात धान्यो प्रतिमा उपर वरसाववा)

ए पछी नवीन वस्त्र ओढाडेल ते प्रतिमानी च्यारे तरफ ४ श्वेत कलशो स्थापन करवा, कलशो जलवडे भरी अंदर अक्षत, सुवर्ण, रूप्य अने मणि (पचरत्न), नाखवा, उपर चन्दननुं विलेपन करवुं, कांठे पुष्पमालाओ पहेराववी, मुखे जवाराना पात्रो मूकवा अने चोगुणा रक्तसूत्रना तातणे भरेला ४ तराकोना सूत्रवडे ते कलशो बांधवा.

गहूना आटाना ४ कोडिया करी घी-गोलथी भरवा अने तेमां दीपको प्रगटावी कलशोनी पासे सुंदर अक्षतनी ढगलीओ करी तेनी उपर दीपको मूकवा, पासे शेलडी प्रमुख मंगलिक द्रव्यो मूकवा. ते पछी ७ सात 'सरावा' (कोडिया)मां भिन्न भिन्न प्रकारनो

विविध पक्वान्नमय कंद-मूल-मिश्र बलि (नैवेद्य) देवो, बलिना ७ सरावो नीचे प्रमाणे करवा—१-दूधपाकनो, २-गोलना पिण्डोनो. ३-खीचडीनो, ४-दहि अने भातना करंबानो, ५-सुहाली (सुंवाळी)नो, ६-शालिना भातनो अने ७ तळेल पिंडलिओ (मूठीया)नो, सरावोमां मेवो तेमज सुगंधीवास पुष्पो नांखवा.

ए पछी चवरी (चोरी) मांडवी, तेमां जवारा, वेदी, आदि ८ मंगलिक द्रव्यो स्थापन करवां, चवरी अने वेदीने रक्तसूत्र वडे वींटीने मजबूत करवी, चवरीना ४ खुणाओमां रक्षानिमित्ते वज्ररूपी ४ बाणो अथवा भालडिओ (नाना भालाओ) अस्त्रमंत्रे अभिमंत्रित करीने खोसवी.

ए पछी रूपलावण्यवती अने सुन्दरवेशवाली ४ अथवा ८ युवति सधवा स्त्रियोए चवरीना ४ खूणाओमां ४ कलशो स्थापन करवा, कलशोना मुखे गोलना पिंडो मूकवा अने गळामां सुहालीनी माला पहेरावची, पछी कांसानी थालीमां राखेल (दूर्वा) ओ, दहि, अक्षत, तराक आदि उपकरणो सहित सुवर्णादि दान देती ते ४ अथवा ८ स्त्रियो रक्तसूत्रवडे स्पर्श करीने पुंखणां करे, साथेनी बीजी स्त्रियो मंगल गीत गावे, आ स्त्रियोनो वेष सारामां सारो होवो जोईये, आ पुंखवानी क्रिया करनारी स्त्रिओए यथाशक्ति सुवर्णादिनुं दान करवुं जोईये, जिनने पुंखनारी स्त्रियो कदापि काले वैधव्य अथवा दारिद्यपणाने पामती नथी. पुंखणां करनारी स्त्रियोने गोल लवण आदि आपीने तेमनो सत्कार करवो, एमना हाथे ज लूणपाणी अने आरति पण उतरावची.

ते पछी संघसहित चैत्यवन्दन करवुं, वर्धमान स्तुतिओ कहेवी, त्रण स्तुतिओ कह्या पछी 'सिद्धाणं बुद्धाणं' कही श्री अधिवासनादेवतायै करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ उससियेणं० १ लोगस्स सागरवरगंभीरा सुधीनो काउस्सग्ग करी नमोऽर्हत्० कही—

"विश्वाऽशेष-सुवस्तुषु, मन्त्रैर्याऽजस्रमधिवसति वसतौ। साऽस्यामवतरतु श्री-जिनतनुमधिवासना देवी ॥१॥"

आ स्तुति कहेवी, उपरांत—

"प्रोत्फुल्लकमलहस्ता, जिनेन्द्रवरभवनसंस्थिता देवी। कुन्देन्दुशङ्खवर्णा, देवी अधिवासना जयति ॥१॥"

आ स्तुति कहीने बाकीना देवताओना काउस्सग्गो करी स्तुतिओ कही चैत्यवन्दना संपूर्ण करवी.

आ प्रमाणे विधिथी अधिवासित करीने भगवन्तने गन्ध-धूप-पुष्पादिक वासित अने सुन्दर पाथरेली निद्रमशय्यामां (नवपल्लव जेवी कोमल रक्तास्तरणवाली शय्यामां) पोढाडवा अने उपर अभिमंत्रित रक्त वस्त्र ओढाडवु

पछी सात स्वरमय गीतो गातां, मंगल वाद्यो वगाडतां चतुर्विध श्रीश्रमणसंघनी साथे धर्मजागरिका करवी। इति अधिवासना।)

१ प्रतिष्ठा विधिः—

अधिवासना थया पछी केटलोक समय व्यतीत करवो, रात वीतीने सूर्योदय थइ गया पछी प्रतिष्ठा करवी

पूर्वे जेम विघ्नोच्चाटन निमित्ते भूतबलिनो प्रक्षेप कर्यो तेम आ प्रसंगे प्रथम शान्तिबलि नाखीने पछी चैत्यवन्दनादिक कार्यो करवां[१]

१ चैत्यवन्दनमां ३ वर्धमानस्तुतिओ कह्या पछी 'श्री प्रतिष्ठादेवतायै करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ ऊससिएणं०' १ लोगस्स-सागरवरगंभीरा सुधीनो काउस्सग्ग करी, पारी नमोऽर्हत् कही—

ते पछी प्रतिमा उपरनुं वस्त्र उठावी लइने सौभाग्यवती स्त्रीना वा कुमारिकाना हाथमां आपवुं अने रूपानी वाटकीमां तैयार राखेल मधु–घृतरूप अंजनमां सोनानी शलाका भरी शुभ लग्न–नवमांशमां 'ॐ अर्हन्' आ मंत्रनुं उच्चारण करता पूर्वक जिनप्रतिमानुं 'नयनोन्मीलन' करवुं, अर्थात् अंजनशलाका करी ज्ञानरूप नेत्र उघाडवां.

अंजनशलाका करीने दृष्टिना संतर्पण निमित्ते घृत तथा दधिनां पात्रो देखाडवां अने आरीसो पण देखाडवो. पछी

"ॐ नमो भगवते अर्हते घातिक्षयकारिणे घातिक्षयोत्पन्नगुणान् जिने संस्थापयामि स्वाहा।"

आ मंत्रवडे प्रतिमामां घातिकर्मक्षयोत्पन्न ११ अतिशयनी स्थापना करवी.

ए पछी प्रतिष्ठाचार्यें स्वमंत्रोच्चार पूर्वक देहरासरमां जइ भद्रपीठ उपर ज्यां प्रतिमा प्रतिष्ठित करवी होय त्यां मध्यभागे तेमज पूर्वादि दिशाओमां करावेल ९ खातोमां रत्नादि ५–५ द्रव्यो स्थापन करवां. ए ध्यानमां राखवुं के अहींयां द्वार तरफनी दिशाने पूर्वा अने सृष्टिक्रमे ते पछीनी आग्नेय्यादि गणवानी छे,

द्रव्यो स्थापवानी समजण— १–रत्नो पैकी पूर्वादिमां अनुक्रमे–१ हीरो, २ सूर्यकान्त, ३ नीलम, ४ महानील, ५

"यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति। श्रीजिनबिम्बं सा विशतु देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥

जइ सग्गे पायाले, अहवा खीरोदहिम्मि कमलवणे। भगवइ करेहि संतिं, सन्निज्झं सयलसंघस्स ॥२॥"

आ बे स्तुतिओ कह्या पछी बीजा देवताओना काउस्सग्ग करवा अने स्तव कह्या बाद जयवीयराय कही चैत्यवंदना समाप्त करवी.

मोती, ६ पुष्पराग, ७ पद्मराग तथा ८ वैडूर्य अने मध्यगर्तमा हीरक आदि सर्व

२–लोह पैकी–पूर्वादिमां १ सुवर्ण, २ ताम्र, ३ कृष्णलोह, ४ त्रपु, ५ रूप्य, ६ पित्तल, ७ कांसु, ८ सीसुं अने मध्यमा यथोपलब्ध सर्व.

३–धातुओ पैकी–पूर्वादिमा १ हरिताल, २ मैनशिल, ३ तूरी, ४ सुवर्णमाक्षिक, ५ पारो, ६ सोनागेरु, ७ गन्धक, ८ अभ्रक अने मध्यमा उक्त सर्व.

४–औषधिओ पैकी–पूर्वादिमा १ खश, २ विष्णुक्रान्ता, ३ रक्तचंदन, ४ कृष्णागुरु, ५ श्रीखंड, ६ उत्पलसारिक, ७ कुठ, ८ शंखपुष्पी, अने मध्यमा उक्त सर्व.

५–बीजो पैकी–१ व्रीहि, २ गोधूम, ३ तिल, ४ अडद, ५ मग, ६ जव, ७ नीवार (वटी), ८ शामो अने मध्यमा उक्त सर्व बीजो.

सर्वरत्नोना अभावे हीरो, सर्वलोहना अभावे सुवर्ण, सर्व धातुओना अभावे हरताल, सर्व औषधीना अभावमा सहदेवी, (विष्णुक्रान्ता), अने सर्वबीजोना अभावमा जवनो उपयोग करवो अथवा सर्वना अभावमां एकलो पारो सर्व खाडाओमा मूकवो, मध्यगर्त उपर पाडुकंबलशिला तथा सिंहासन सहित सोनानो, त्रांबानो अथवा माटीनो मेरुपर्वत स्थापित करवो.

उपर्युक्त विधि स्थिर प्रतिष्ठानो छे, जो प्रतिष्ठा चर होय एटले के प्रतिष्ठाप्य प्रतिमा आसन उपर चर राखवानी होय तो उक्त विधिना स्थाने आसने रत्नगर्भित कुंभकारना चक्रनी माटी अने दर्भ, आ बे चीजोनो ज विन्यास करवो.

पीठ उपर पूर्वोक्तप्रकारे रत्नादिकनो विन्यास कर्या पछी भगवन्तने अभिमन्त्रितवस्त्रनो पडदो करीने अधिवासनामंडपमाथी

लइ, लोकपालोने बलिक्षेप करी, 'जय' शब्दादि मंगलोच्चार पूर्वक वाजित्रोना नाद साथे रत्न-रूपैया-पैसा उछालतां भद्रपीठ (गभारामां पवासन) उपर पधरावचा, त्यां उतारती वखते 'स्थिरो भव' ए शब्दो कहेना, सूत्रधारे भद्रपीठ उपरना खाडाओने पाटीआओथी ढांकी प्रतिमाने वेसाडवाने-स्थिर करवाने योग्य सर्व तैयारी करीने लग्ननी प्रतीक्षा करवी, लग्नसमय निकट आवतां सूत्रधारे प्रतिमा उपरनो पडदो दूर करवो अने आचार्ये मध्यमा आंगलीमां चंदन, अंगूठा-तर्जनीमां वासचूर्ण अने मुट्ठिमां पुष्पाक्षत लेइ श्वासनुं कुंभक करी प्रतिमाने मूलस्थाने प्रतिष्ठित करवी. 'ॐ अर्हं'. आ मंत्रवडे-१ मस्तक, २-३ जमणो-डाबो स्कंध, अने ४-५ जमणो-डाबो जानु, आ पांच अंगो उपर वासादि निक्षेप करवुं, चंदननुं तिलक करवुं अने—

"ॐ नमो अरिहंताणं। ॐ नमो सिद्धाणं। ॐ नमो आयरियाणं। ॐ नमो उवज्झायाणं। ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ नमो ओहिजिणाणं। ॐ नमो परमोहिजिणाणं। ॐ नमो सव्वोहिजिणाणं। ॐ नमो अणन्तोहिजिणाणं। ॐ नमो केवलिजिणाणं। ॐ नमो भवत्थकेवलिजिणाणं। ॐ नमो भगवओ अरहओ महइ महावीरवद्धमाणसामिस्स सिज्झउ मे भगवई महई महाविज्जा वीरे वीरे महावीरे जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जये विजये जयन्ते अपरा जिए अणिहए मा चल मा चल वृद्धिदे वृद्धिदे हूँ हूँ ह्रीं ह्रीं सः सः ओहिणि माहिणि स्वाहा।"

आ प्रतिष्ठामंत्रे अथवा आचार्यमंत्रवडे चक्रमुद्राए प्रतिमामां ३-५ वा ७ वार मन्त्रन्यास करे.

"ॐ ह्रीं अर्हन्मूर्तये नमः।" आ मंत्रे प्रवचन मुद्रा देखाडी प्रतिमाने प्रतिबोधित करे, अने "स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ

स्वाहा।" आ मंत्रे जिनमुद्रा देखाडी पछी प्रतिमानु स्थिरीकरण करे. पछी, धेनुमुद्रा देखाडी अमृतीकरण करे अने "हूं अस्त्राय हूं फट्" आ मंत्रथी गरुडमुद्राद्वारा दुःखनिग्राहिकनुं उच्छेदन करे पछी सौभाग्यमुद्रापूर्वक सौभाग्यमंत्रे प्रतिमामा सौभाग्य स्थापे.

नामस्थापन-ए पछी प्रतिष्ठित जिननु ऋषभ आदि कोइ पण एक नाम प्रतिष्ठित करी गंध-पुष्पादिके पूजा करवी, नृप उल्लेखवो. अने नमस्कार मुद्राए नमस्कार करवो.

ते पछी देवकृतातिशय, प्रातिहार्य, यक्ष, यक्षेश्वरी, धर्मचक्र, मृगद्वंद्व, रत्नध्वज प्राकारत्रय, आदिनी नीचे लखेला तेना तेना मंत्रवडे स्थापना करवी—

१. ॐ नमो भगवते अर्हते सुरकृतातिशयान् जिनस्य शरीरे स्थापयामि स्वाहा। २ ॐ नमो भगवते अर्हते अभिआउसा जिनस्य प्रातिहार्याष्टक स्थापयामि स्वाहा। ३ ॐ यक्षेश्वराय स्वाहा। ४ ॐ ह्रौं ह्रूं ह्रीं शासनदेव्यै स्वाहा। ५ ॐ धर्मचक्राय स्वाहा। ६ ॐ मृगद्वन्द्वाय स्वाहा। ७ ॐ रत्नध्वजाय स्वाहा। ८ ॐ नमो भगवते अर्हते जिनस्य प्राकारादित्रय स्थापयामि स्वाहा।

ए पछी प्रथम-अधिवासनाना प्रसंगे कर्यां तेम ४ अथवा ८ सधवा स्त्रियो द्वारा पुंखणा करावा, लूणपाणी उतारवु अने आरती मंगलदीवो कराववो.

पछी आचार्ये चतुर्विध श्रमण संघ सहित देववंदन करवु देववन्दनमा नन्दीनी ४ स्तुतिओ कह्या पछी सिद्धाण बुद्धाणं०

कही श्री प्रतिष्ठादेवतायै करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ० १ लोगस्ससागरवरगंभीरा सुधीनो काउस्सग्ग करी, पारी, नमोऽर्हत्० कही—

"यद्धिष्ठिताः प्रतिष्ठाः सर्वाः, सर्वास्पदेषु नन्दन्ति। श्री जिनबिम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥"

ए स्तुति कहीने श्री प्रवचनदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० काउ० नमोऽर्हत्० कही—

"जइ सग्गे पायाले, अहवा खीरोदहिम्मि कमलवणे। भयवइ करेहि संतिं, सन्निज्झं सयलसंघस्स ॥१॥"

आ स्तुति कहेवी. पछी श्री सिद्धायिकायै करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नो० काउ० नमोऽर्हत्० कहीने—

"अट्ठविहकम्मरहियं, जा वंदइ जिणवरं पयत्तेण। संघस्स हरउ दुरिअं, सिद्धा सिद्धाइया देवी ॥१॥"

ए स्तुति कही खित्तदेवयाए करेमि का० अन्न० १ नो० नमोऽर्हत्० कही—

"जीसे खित्ते साहू दंसणनाणेहिं चरणसहिएहिं। साहिंति मुक्खमग्गं, सा देवी हरउ दुरियाइं ॥१॥"

स्तुति कहेवी. पछी भवनदेवयाए करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नो० नमोऽर्हत्० कही—

"ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्याय संयमरतानाम्। विदधातु भवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥१॥"

आ स्तुति कही, उपर नोकार संपूर्ण कही बेसी नमुत्थुणं, जावंति चेइयाइं, जावंत केवि साहू कहीने नमोऽर्हत्पूर्वक स्तवनना स्थाने 'अजितशांतिस्तव' कही जयवीयराय कहेवा.

पछी आचार्य वासमिश्र अक्षतनी अने इन्द्रादिक संघजनोए पुष्प-गन्धादिमिश्र सातधान्यनी अंजलिओ भरी उभा थइ नीचेनी गाथाओ बोलवी.

जह सिद्धाण पइट्ठा, तिलोय चूडामणिम्मि सिद्धिपए। आचंदसूरिय तह, होउ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥१॥
गेविज्जगकप्पाण, सुपइट्ठा वण्णिया जहा समए। आचंदसूरिय तह, होइयंइमा सुप्पइट्ठत्ति ॥२॥
जह मेरुस्स पइट्ठा, असेससेलाण मज्झयारम्मि। आचंदसूरिय तह, होइ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥३॥
कुलपव्वयाण वक्खार-वट्टवेयड्ढदीहियाण च। कूडाण जमग-कंचण-चित्त-विचित्ताइयाण च ॥४॥
अंजणग-रुयग-कुंडल-माणुस-इसुयारमाइयाण च। सेलाण जह पइट्ठा, तह एसा होउ सुपइट्ठा ॥५॥
जह लवणस्स पइट्ठा, असेसजलहीण मज्झयारम्मि। आचंदसूरिय तह, होउ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥६॥
कुंडाण दहाण तहा, महानईणं च जह य सुपइट्ठा। आ कालिगी तहेसा, वि होउ निच्च तु सुपइट्ठा ॥७॥
जंबुद्दीवाईणं, दीव समुद्दाण सव्वकालंमि। जह एयाण पइट्ठा, सुपइट्ठा होउ तह एसा ॥८॥
धम्मा धम्मागासत्थि-कायमइयस्स सव्वलोयस्स। जह सासया पइट्ठा, एसा वि तहेव सुपइट्ठा ॥९॥
पंचण्ह वि सुपइट्ठा, परमिट्ठीण जहा सुए भणिया। निययाभणाइनिहणा, तह एसा होउ सुपइट्ठा ॥१०॥
तह पवयणस्स गमभंग-हेउ-नय-नीइ कालकलियस्स। जह गयस्स पइट्ठा, निच्चा तह होउ एसा वि ॥११॥
तह संघ-नराहिव-जणवयाण रज्जस्स तह य ठाणस्स। गोट्ठीण सव्वकालंमि, सासया होउ सुपइट्ठा ॥१२॥
इय एसा सुपइट्ठा, गुरुदेवजईहि तह य भविएहिं। निउणं पुट्ठा सवेण, चेव कप्पट्ठिया होइ ॥१३॥
कार्यविशेषमा प्रवृत्ति करनार बुद्धिमान् मनुष्य मंगल शब्द सांभळीने जेम पोताना इष्ट कार्यनी सिद्धिमा ते शुभ शकुन-

गणे छे ते ज प्रमाणे बुद्धिमान् मनुष्योए प्रतिष्ठाना अन्तमां भणाती आ मंगलगाथाओने सांभळीने प्रतिष्ठानी सिद्धि तथा मङ्गलतानी बुद्धि करवी अने धान्य अंजलिनो भगवंत सामे प्रक्षेप करी हर्ष प्रदर्शित करवो जोइए.

ए पछी प्रतिष्ठाचार्ये नीचे प्रमाणे प्रतिष्ठागुणगर्भित देशना करवी—

राया बलेण वड्ढइ, जसेण धवलेइ सयल दिसिभाए। पुण्णं वड्ढइ विउलं सुपइट्ठा जस्स देसम्मि ॥१॥
उवहणइ रोगमारिं, दुब्भिक्खं हणइ कुणइ सुहभावे। भावेण कीरमाणा, सुपइट्ठा सयललोयस्स ॥२॥
जिणबिंबपइट्ठं जे, करिंति तह कारविंति भत्तीए। अणुमन्नंति पइदिणं, सव्वे सुहभाइणो हुंति ॥३॥
दव्वं तमेव भण्णइ, जिणबिंब पइट्ठणाइकज्जेसु। जं लग्गइ तं सहलं, दुग्गइजणणं हवइ सेसं ॥४॥
एवं नाऊण सया, जिणवरबिंबस्स कुणह सुपइट्ठं। पावेह जेण जरमरण-वज्जियं सासयं ठाणं ॥५॥

भा०टी०—जे राजाना देशमां विधिपूर्वक प्रतिष्ठा थाय छे ते राजानुं बल वधे छे, सर्वदिशाभागोने ते पोताना जशवडे उज्ज्वल बनावे छे अने त्यां विपुलपुण्यनी वृद्धि थाय छे. (१) भावथी करातो उत्तम प्रतिष्ठा सर्वलोकना रोग तथा महामारीने दूर करे छे, दुर्भिक्ष-दुष्कालनो नाश करे छे अने सुभिक्ष आदि शुभ भावोनो वधारो करे छे. (२) जेओ भक्तिथी जिनप्रतिमानी प्रतिष्ठा करे छे, करावे छे अने नित्य अनुमोदे छे ते सर्व सुखना भागी थाय छे. (३) द्रव्य ते ज सफल कहेवाय के जे जिनप्रतिमा-प्रतिष्ठाना कामोमां लागे छे, ए सिवायनुं धन दुर्गतिमां लइ जनारुं छे; एम जाणीने जिनेश्वरनी प्रतिमाओनी उत्तम प्रतिष्ठा सदाकाल करो करावो के जेथी जरा-मरणरहित शाश्वतपदने प्राप्त करी शको! (१-५)

ए पछी मुखोद्घाटन करीने नीचेना मंत्रे अभिमंत्रित करीने शान्तिबलिनो प्रक्षेप करवो.

" ॐ नमो भगवते अर्हते शान्तिनाथस्वामिने सकलातिशेषमहासंपत्समन्विताय त्रैलोक्यपूजिताय नमो नमः शान्तिदेवाय सर्वामरसुसमूहस्वामिसंपूजिताय भुवनपालनोद्यताय सर्वदुरितविनाशनाय सर्वाऽशिवप्रशमनाय सर्वदुष्टग्रहभूतपिशाचमारिशाकिनीप्रमथनाय नमो भगवति जये विजये अजिते अपराजिते जयन्ति जयावहे सर्वसंघस्य भद्रकल्याणमंगलप्रदे साधूनां श्रीशान्तितुष्टिपुष्टिदे स्वस्तिदे भव्यानां सिद्धिवृद्धिनिर्वृतिनिर्वाणजननि सत्त्वानामभयप्रदानरते भक्तानां शुभावहे सम्यग्दृष्टीनां धृतिरतिमतिबुद्धिप्रदानोद्यते जिनशासनरतानां श्रीसम्पत्कीर्तियशोवर्धनि रोगजलज्वलनविषविषधरदुष्टज्वरव्यन्तरराक्षसरिपुमारिचौर-ईतिश्वापदोपसर्गादिभयेभ्यो रक्ष रक्ष शिवं कुरु कुरु शान्तिं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु ॐ नमो नमः हूँ हूँः क्षः ह्रीँ फट् फट् स्वाहा ॥"

ए पछी संघादिपूजा, दीनानाथादिदान, बंदिबन्धमोक्ष, आदि प्रसंगोचित कार्यो करवा के जे शासनोन्नतिना अंग बने, स्वजनवर्ग अने साधर्मिकवर्गने विषे विशेष वात्सल्य देखाडवु.

प्रतिष्ठा पछी अष्टाह्निक-महोत्सव करवो, देश, काल के कार्यवशात् तेम न बनी शके तो त्रण दिवसो तो अवश्य उत्सवमां व्यतीत करवा आवश्यककार्य होय तो प्रतिष्ठाना दिवसे, अन्यथा त्रीजा दिवसे विशेषपूजा करी, लोकपालोने पूजी, सोहागण स्त्रीयोना मंगलगीतो पूर्वक " ॐ हूँ भ्रूँ क्ष्वीं स" आ मंत्रना उच्चार पूर्वक कंकणो छोडवां

ते पछी नन्द्यावर्तनी पासे जइ प्रथम विसर्जनार्थक अर्घ आपवो, पछी पूर्वोक्तन्याये भोगागो संहरीने देवने विषे जोडी संहार मुद्राए "स्वस्थानं गच्छ गच्छ" आ मंत्रवडे पूजाने खेंची मस्तके चढावी पूरक द्वारा–"क्षमस्व" आम बोलीने तेनुं हृदयकमलमां विसर्जन करवुं.

कंकणमोचन अने नन्द्यावर्तविसर्जनना प्रसंगे पण प्रतिमाने घृत, दूध, दधि आदिथी न्हवरावीने शुद्ध जले भरेला १०८ माटीना वारको (न्हाना कलशाओ) वडे अभिषेक करवो.

ते पछी प्रति महीने प्रतिष्ठानी तिथि आवे त्यारे उपर प्रमाणे स्नात्र कराववुं, वर्ष पूरुं थाय त्यारे अष्टाह्निका महोत्सव पूर्वक विशेष पूजा करीने दीर्घायु निमित्ते गांठ बांधवी अने कल्याणना अभिलाषी भाग्यशाली गृहस्थे सदा सावधान रहिने अधिकाधिक विशेष पूजादिक भक्ति करवी. इति पादलिप्तोक्त बिम्बप्रतिष्ठापद्धति.

अथ संक्षिप्त–प्रतिष्ठाविधि (पादलिप्तसूरीया)

इय सत्तिविहवसत्ताणु–सारओ वण्णिआ पइट्ठा उ। विहवाभावासत्तीए, असढभावो इयं कुज्जा ॥१॥

भा०टी०—उपर प्रमाणे शक्ति विभव अने सत्त्वने अनुसरीने प्रतिष्ठा विधि वर्णवेल छे, जेनी पासे विभव अने शक्तिनो अभाव होय ते निष्कपट परिणामी गृहस्थ नीचे प्रमाणे करे—

पुहइमयं पिट्ठुअंगुठ–मेत्तयं तणकुडाए विसुओ य। सुइभूओ जिणबिंबं, ठविज्ज इमिणा विहाणेण ॥२॥

संसारविरागमणो, गरहानिंदाजुगुच्छियप्पाणो। काऊण भावमंगल–पंचनमुक्काररूवं तु ॥३॥

भा०टी०—संसार उपर अनासक्तमनवालो, आत्मसाक्षीए अने गुरु साक्षीए पोतानी भूलोनो पश्चात्ताप करनारो गृहस्थ पृथ्वीमय (माटीना) एक अंगुष्ठ प्रमाण जिनबिंबने बाह्य शुद्धिपूर्वक पंचनमस्कार पाठरूप भावमंगल करीने घासनी झुंपडीमा पण प्रतिष्ठित करी शके. २-३

कलसाईणमभावे, विरहे तह सेसमंगलाण च। पंचनमुक्कारोच्चिय, भावोत्तममंगलं नियमा ॥४॥

भा०टी०—कलश आदिना अभावमां तेमज बीजा मंगलोना विरहमां पंचपरमेष्ठिनमस्कार ज नियमा करीने उत्तम भावमंगल छे

पज्जत्तमिणं णियमा, मायालोहेहिं विप्पमुक्कस्स। पंचनमोक्कारेणं, जं कीरई मंगलाईय ॥५॥

भा०टी०—जे कपट अने लोभे करी मुक्त छे तेवो शक्तिहीन केवल पंचनमस्कार वडे मंगल आदिक कार्यो करे ते तेने नियमा संपूर्ण समजवा ५.

सव्वत्थ भावमंगल-पंचनमोक्कारपुव्विया किरिया। कायव्वा जिणबिंबाण, सव्वभावेण सुपइट्ठा ॥६॥

भा०टी०—सर्वत्र भावमंगल-पंचनमस्कारपूर्वक क्रिया करवी अने जिनबिंबोनी उत्तम प्रतिष्ठा सर्वभावथी पंचनमस्कार पूर्वक ज करवी. ६.

इय सामन्नपइट्ठा-विहाणमेयं समासओ भणियं। इण्हिं भणिमो लिप्पाइ-याण अचलाण पडिमाण ॥७॥

भा०टी०—उपर प्रमाणे आ सामान्य प्रतिष्ठा-विधान कर्युं, हवे 'लेपमय' आदि अचल-प्रतिमाओनुं प्रतिष्ठा-विधान

कहीये छीये.

लेपमयप्रतिमा-प्रतिष्ठाविधि—

लेपमय प्रतिमा एटले शास्त्रोक्तरीतिथी वज्रलेप बनावी ते वडे तैयार करेली प्रतिमा, आवा प्रकारनी प्रतिमाओ देवालयना गर्भगृहना मूल आसन उपर ज मांडवामां आवती अने धीरे धीरे पूर्ण थइ सूकाई जती त्यारे ते ज स्थले ते उपर प्रतिष्ठानुं विधान करवामां आवतुं, तेवी प्रतिमाओ त्यांथी आघी पाछी करी शकाती नहिं, तेथी ते 'अचलप्रतिमा'ओ कहेवाती हती, तेमनी प्रतिष्ठाविधि नीचे प्रमाणे कराती हती—

प्रथम भूतबलिक्षेप पूर्वक चैत्यवन्दन तथा देवताओना कायोत्सर्गो करी प्रतिष्ठाचार्ये पोतानुं तेमज इन्द्रादिक स्नात्रकारोनुं सकलीकरण करवुं.

ते पछी अभिषेकनी सर्व सामग्री तैयार करी स्नानमंडपमां गोठववी. स्नानमंडपनी पीठिका उपर शुद्ध अने स्वच्छ एक दर्पण (मोटो आरीसो) एवी रीते गोठववो के लेपमय प्रतिमा तेमां प्रतिबिंबित थई जाय, दर्पणमां प्रतिबिंबित प्रतिमा उपर पूर्वोक्त विधिथी सर्व अभिषेक करवा अने चंदनना छांटा नांखवा, तथा चंदनविलेपनादि करवुं. बाकीनी 'अधिवासनानो वासक्षेप, प्रतिष्ठानो वासक्षेप, मुद्रापूर्वक सौभाग्यादि मंत्रोनो न्यास' आदि तमाम क्रियाओ मूल लेपमय प्रतिमाओ उपर करवी.

चित्रित तीर्थपट्ट, चित्रप्रतिमा, के चित्रितयंत्रपट्टोनी प्रतिष्ठा विधि पण लेपमय प्रतिमानी जेम ज आरीसामां प्रतिबिंब लेइने करवी. अभिषेक, चन्दनविलेपनादि प्रतिबिंब उपर अने वासनिक्षेपादिक मूल वस्तु उपर करवा. इति लेपप्रतिमा प्रतिष्ठाविधि ।

सरस्वत्यादि प्रतिमा प्रतिष्ठा—

पूर्वनी जेम मंडलादिक कार्यो करीने पोत पोताना मत्रवडे सरस्वती आदि प्रतिमाओनी प्रतिष्ठा करवी सरस्वत्यादिसमस्तचैत्यादचकर आदिनो अधिवासनामत्र:- "ॐ क्षूँ नमः" प्रतिष्ठामन्त्रः- "ॐ ह्रूँ हूँ ह्रीं नम.।" अने सौभाग्यमत्रः- "ॐ जये श्रीं ह्रूँ सुभद्रे इं स्वाहा।" ए छे.

विशेषविवरण नीचे प्रमाणे छे—

(१) "ॐ इ ह्रीं श्री ह्रौं इं सरस्वति! अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।"

(२) "ॐ ह्रीं माणिभद्रयक्ष! अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।"

(३) "ॐ ह्रीं व ब्रह्मशान्ते! अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।"

(४) "ॐ ह्रीं अ अम्बिके! अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।"

प्रतिष्ठाकारकनी जवाबदारी—

एवमनेन विधिना यथावत् विज्ञाय अभ्यस्य च अभिमानादिरहितेनार्येण प्रतिष्ठादिक कर्तव्यमन्यथा-करणे भवपातः। तथा चोक्तम्—

अवियाणिऊण य विहिं, जिणबिंब जो ठवेइ मूढमणो। अहिमाणलोहजुत्तो, निवडइ ससारजलहिम्मि ॥१॥

भा०टी०—एम ए विधिथी यथार्थ रहस्य समजीने-अभ्यास करीने अभिमानादिरहित एवा आर्यप्रकृतिना आचार्ये

प्रतिष्ठादि कार्यो करवां. विपरीतपणे करवाथी संसार भ्रमण थाय छे, शास्त्रमां कह्युं पण छे, 'विधिने पूरी रीते जाण्या विना अभिमान अने लोभने वश थइ जे मूढ मननो मनुष्य जिनप्रतिमानी प्रतिष्ठा करे छे ते संसारसमुद्रमां पडे छे.'

॥ इति पादलिप्तबिंबप्रतिष्ठाविधिः समाप्तः ॥

पादलिप्तप्रतिष्ठाकल्पमूलम्—

काउं खेत्तविसुद्धिं, मङ्गलकोउयजुयं मणभिरामं । वत्थुं जत्थ पइट्ठा, कायव्वा वीयरायस्स ॥१॥
सुइविज्ञाए सुइणा, पंचंगाबद्धपरियरेण चिरा । निसिऊण जहाठाणं, दिसिदेवयमाइए सव्वे ॥२॥
एवं सन्नद्धगत्तो य, सुई दक्खो जिइंदियो । सियवत्थपाउरंगो, पोसहिओ कुणइ पइट्ठं ॥३॥
उइयदिसासु विणिवेसियस्स दक्खिणभुयाणुमग्गेण । उत्तमसियवत्थविहूसिएण, कयसुकयकम्मेणं ॥४॥
मज्झे य नसेयव्वं नंदावज्जं (त्तं) जवंकुसं सुमणवज्जं । तस्सोवरि कुविज्जा, पडिमा देवस्स इत्था(च्छा)ए ॥५॥
मज्झे निरंजणजिणो, पुव्वावरदाहिणोत्तरदिसासु । तह सिद्ध-सूरुवज्झाय-साहु-सुति-रयणतियनासो ॥६॥
केसरनिलये तह मायरो य मरुदेवि विजयसेणा य। सिद्धत्था तह मंगल, सुसीम पुहवी य लक्खणया ॥७॥
रामा नंदा विण्हू जयसामा सुजससुव्वयाअइरा । सिरिदेवी य पहावइ, तत्तो पउमावई वप्पा ॥८॥
सिव वम्मा तिसलावि य मायाए नामरूवाउ । ॐ नमो पुव्वं अन्ते साह त्ति तओ य वत्तव्वं ॥९॥
लोयंतियदेवाणं, तत्तो चउवीसपरिगणो नसिउं । सगमन्तेहिं विहिणा, सोलसविज्जागणो य तओ ॥१०॥

पुन्नोत्तराउ रोहिणी, पन्नत्ति वज्जसकला तह य। वज्जकुसी य अप्पडि-चक्का तह पुरिसदत्ता य ॥११॥
काली य महाकाली, गोरी गन्धारी जालमाला य। माणवि वइरोट्टाऽच्छुत्ता माणसि महामाणसी चेव ॥१२॥
वेमाणिया य देवा तत्तो य चउव्विहा सदेवीया। इंदाइ दिसाउ(हि)वई नसेज्ज नियएहिं मंतेहिं ॥१३॥
दारे य ठाउ सोमो यमो य वरुणो य तह कुबेरो य। हत्थेसु वइर-धणुदण्ड-पासगयगाहिणो तह य ॥१४॥
सक्को य जिणामन्तो, णाणादेवा जहोइया नारे। पडिहागे निय तुवर मंता पणवो नओ माहा ॥१५॥
एव नमिउ सव्व, पुज्जेओ विविहगन्धमल्लेहिं। नसियन्तो पव्वगो, मतो पडिमाइजत्तेण ॥१६॥
सदसनरधनलवरथेण, छाइउ वामपुप्फधूवेणं। अहिमासिअ तिन्निवाराउ सूरिणा सूरिमन्तेण ॥१७॥
चत्तारि पुरो कलसा सलिलक्खयकणयरुप्पमणिगब्भा। नरकुसुमदाम कण्ठो-नसोहिया चन्दणविलित्ता ॥१८॥
जववारयसयवत्ताइयघड्डिया रयणमालियाकलिया। मुहपुण्णाचत्तचउततुगोत्थया होंति पासेसु ॥१९॥
मंगलदीवा य तहा, घयगुलपुण्णा तहेवखुरुक्खाय। नरनअक्खयविचित्त-सोहिया तह य कायव्वा ॥२०॥
ओसहिफलवत्थसुवण्णरयणमुत्ताइयाइ विनिहाइ। अन्नाइवि गरुय सुदंसणाइ दव्वाइं निमलाइ ॥२१॥
चित्तनलिगन्धमल्ला, विचित्तकुसुमाइ चित्तवासाइ। विविहाइं वन्नाइ, सुहाइ रूवाइ उवणेह ॥२२॥
चउनारीओमिणणं, नियमा जहियासु नत्थि उ विरोहो। नेवत्थ च इमाणि, ज पवर तं इह सेय ॥२३॥
दिक्खियजिण ओमिणणा, दाणाइ ससत्तियो तहेयमि। वेहव्व दालिद्द, न होइ कइयावि नारीण ॥२४॥

आरत्तियमवयारण–मंगलदीवं च निम्मिउं पच्छा । चउनारीहिं निम्म(त्थ)च्छणं च विहिणा उ कायव्वं ॥२५॥
वन्दित्तु चेइयाइं, उस्सग्गो तह य होइ कायव्वो । आराहणानिमित्तं पवयणदेवीए संघेण ॥२६॥
विश्वाशेषसुवस्तुषु, मन्त्रैर्याजस्रमधिवसति वसतौ । सास्यामवतरतु श्री–जिनतनुमधिवासना देवी ॥२७॥
प्रोत्फुल्लकमलहस्ता, जिनेन्द्रवरभवनसंस्थिता देवी । कुन्देन्दुशङ्खवर्णा, देवी आधिवासना जयति ॥२८॥
इय विहिणा अहिवासेज्ज, देवबिंबं निसाए सुद्धमणो । तो उग्गयम्मि सूरे, होइ पइट्ठा समारम्भो ॥२९॥
कल्लाणसलायाए, महुघयपुण्णाए अच्छि उग्घाडे । अण्णेण वा हिरण्णेण, निययजहसत्तिविहवेण ॥३०॥
तो चेइयाइं विहिणा वंदिज्जा सयलसंघसंजुत्तो । परिवड्ढमाणभावो जिणदेवे दिन्नदिट्ठीओ ॥३१॥
तत्तो चिय पवयणदेवयाए पुणरवि करेज्ज उस्सग्गा । आराहणथिरकरणट्ठयाए परमाए भत्तीए ॥३२॥
यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीजिनबिम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥३३॥
जइ सग्गे पायाले, अहवा खिरोदहिम्मि कमलवणे । भयवइ करेहि संति, सन्निज्झं सयलसंघस्स ॥३४॥
अट्ठविहकम्मरहियं, जा वन्दइ जिणवरं पयत्तेण । संघस्स हरऊ दूरियं, सिद्धा सिद्धाइया देवी ॥३५॥
वंदित्तु चेइयाइं, इमाइं तो सरभसं पढेज्जा । सुमंगलसाराइं तह थिरत्तसारेण सिद्धाइं ॥३६॥
जह सिद्धाण पइट्ठा, तिलोयचूडामणिम्मि सिद्धिपये । आचन्दसूरियं तह, होइ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥३७॥
गेविज्जगकप्पाणं, सुपइट्ठा वण्णिया जहा समए । आचन्दसूरियं तह, होइ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥३८॥

जह मेरुस्स पइट्ठा, असेससेलाण मज्झयारंम्मि। आचंदसूरिय-तह, होइ इमा सुपइट्ठत्ति ॥३९॥
कुलपव्वयाण वक्खारवट्टवेयड्ढदीहियाणं च। कूडाण जमग-कंचण-चित्त-विचित्ताइयाण च ॥४०॥
अंजणग-रुयग-कुण्डल-माणुस-इसुयारमाइयाण च। सेलाण जह पइट्ठा, तह एसा होइ सुपइट्ठा ॥४१॥
जह लवणस्स पइट्ठा, असेसजलहीण मज्झयारंम्मि। आचन्दसूरियं तह, होइ इमा सुपइट्ठत्ति ॥४२॥
कुंडाण दहाणं तह, महानईणं च जह य सुपइट्ठा। आकालिगी तहेमा, नि होउ निच्चं तु सुपइट्ठा ॥४३॥
जम्बुद्दीवाईणं, दीवसमुद्दाण सव्वकालंमि। जह एयाण पइट्ठा, सुपइट्ठा, होउ तह एसा ॥४४॥
धम्माधम्मागासत्थि-कायमइयस्स सव्वलोयस्स। जह सासया पइट्ठा एसावि तहेव सुपइट्ठा ॥४५॥
पंचण्ह वि सुपइट्ठा, परमेट्ठीण जहा सुए भणिया। नियया अणाइणिहणा, तह एसा होउ सुपइट्ठा ॥४६॥
तह पवयणस्स गम-भंग-हेउ नयनीइजालकलियस्स। जह एयस्स पइट्ठा, निच्चा तह होउ एसा वि ॥४७॥
तह संघ-नराहिव-जणवयाण रज्जस्स तहय ठाणस्स। मोट्ठिए सव्वकालंपि, सासया होउ सुपइट्ठा ॥४८॥
इय एसा सुपइट्ठा, गुरुदेवजईहिं तहय भत्तिएहिं। निउणं पुरुठासद्धेण, चेव रूप्पट्ठिआ होइ ॥४९॥
सोउ मंगलसद्द, सउण त्ति जहेन इट्ठसिद्धत्ति। एत्थं पि तहा सम्म, नायव्व बुद्धिमंतेहिं ॥५०॥
रायानलेण वड्ढइ, जसेण धवलेइ सयलदिसिभाए। पुण्णं वड्ढइ विउलं, सुप्पइट्ठा जस्स देसम्मि ॥५१॥
उवहणइ रोगमारी, दुब्भिक्खं हणइ कुणइ सुहभावे। भावेण कीरमाणा, सुपइट्ठा सयललोयस्स ॥५२॥

जिणबिम्बपइट्ठं जे, करिंति तह कारविंति भत्तीए। अणुमण्णन्ति पइदिणं, सव्वे सुहभाइणो होंति ॥५३॥
दव्वं तमेव भण्णइ, जिणबिंबपइट्ठणंमि भण्णाणं। जं लग्गइ तं सहलं, दोग्गइजणणं हवइ सेसं ॥५४॥
एवं नाऊण सया, जिणवरबिम्बस्स कुणह सुपइट्ठं। पावेह जेण जरमरण—वज्जियं सासयं ठाणं ॥५५॥
सत्तीए सङ्घपूया, विसेसपूया य बहुगुणा एसा। जं एस सुए भणिओ, तित्थयराणंतरो सङ्घो ॥५६॥
गुणसमुदओ य संघो, पवयण तित्थन्ति होइ एगट्ठा। तित्थयरोवि य एयं, नमए सुहभावओ चेव ॥५७॥
तप्पुव्विया अरहया, पूइयपूया य विणयकम्मं य। कयकिच्चो वि जह कहं, कहेइ नमए तहा तित्थं ॥५८॥
एयंमि पूइयंमि, नत्थि तयं जं न पूइयं होइ। भुवणेवि पूयणिज्जं, न पुण ठाणं जओ अन्नं ॥५९॥
तप्पूयापरिणामो, हंदि महाविसयमो मुणेयव्वो। तद्देसपूयणम्मि वि, देवयपूयाइ नाएण ॥६०॥
आसन्नसिद्धियाणं, लिंगमिणं जिणवरेहिं पन्नत्तं। संघंमि चेव पूया, सामन्नेणं गुणनिहिम्मि ॥६१॥
एसा य महादाणं, एस च्चिय होइ भावसन्नत्ति। एसा गिहत्थसारो, एसच्चिय सम्पयामूलम् ॥६२॥
एईए फलं एयं, परमं निव्वाणमेव नियमेण। सुरनरसुहाइं अणुसंगियाइं इह किसिपलालं व ॥६३॥
कयमेत्थ पसंगेणं, उत्तरकालोइयं इहाऽण्णं पि। अणुरूवं कायव्वं, तित्थुन्नइकारगं नियमा ॥६४॥
जइओ जणोवयारो, विसेसओ णवर सयणवग्गंमि। साहम्मिय वग्गम्मि य, एयं खलु परमवच्छल्लं ॥६५॥
अट्ठाहिया य महिमा, सम्मं अणुबन्धसाहिया केइ। अहवा तिन्नि य दियहे, निओगओ चेव कायव्वा ॥६६॥

अट्ठाहियारसाणे, पडिसरोम्मुयणमेव कायव्व । भूयवलिदीणदाण, एत्थंपि समत्तिओ कुज्जा ॥६७॥
इय सन्निविहवसत्ताणुसारओ जणिया पइट्ठा उ । विहवाभावामत्तीए असढभावो इय कुज्जा ॥६८॥
पुहइमय पिहु अदगुट्ठ-मेत्तय तणकुडाए विसुजो य । सुइभूओ जिणबिंबं, ठविज्ज इमिणा विहाणेण ॥६९॥
ससारविरागमणो, गरहानिदाजुगुन्छियप्पाणो । काऊण भावमगल, पचनमुकाररूव तु ॥७०॥
कासम्म य कुसुमेहिं, पुण्ह उ सुरहिकुसुमनियरंम्मि । कारिज्ज पइट्ठ परम-भत्तिबहुमाणसंयुत्तो ॥७१॥
कलमाईणमभावे, विरहे तह सेसमंगलाण च । पञ्चनमुकारो च्चिय, भावोत्तममगल नियमा ॥७२॥
पज्जत्तमिण णियमा, मायालोहेहिं विप्पमुक्कस्स । पञ्चनमुक्कारेण, ज कीरइ मगलाईयं ॥७३॥
सव्वत्थ भावमगल-पच नमोक्कारपुव्विया किरिया । कायव्वा जिणबिंबाण, सव्वभावेण सुपइट्ठा ॥७४॥
मणिरुयसुवन्नरीरी-पडिम पाहाणणिम्मिए भुवणे । जो ठवइ भत्तिजुत्तो, तस्स दुहं नेव कयावि ॥७५॥
इय सामन्नपइट्ठा, विहाणमेयं समासओ भणिय । इक्कि भणिमो लिप्पाइयाण अचलाण पडिमाणं ॥७६॥
अवियाणिऊण य विहिं जिणबिम्ब जो ठवेइ मूढमणो । अहिमाणलोहजुत्तो, निवडइ ससारजलहिम्मि ॥७७॥

卐 卐 卐 卐 卐

८ अथ नव्यप्रतिष्ठापद्धतिः। (१) पूर्वक्रिया

गुणरत्नमुनीन्द्रोक्तं, सकलेन्दुविदर्भितम्। प्रतिष्ठाकल्पमाश्रित्य, प्रतिष्ठाविधिरुच्यते ॥२०॥

भा०टी०—तपा-गुणरत्नसूरि संदर्भित प्रतिष्ठाकल्प अने उपाध्याय सकलचंद्र योजित प्रतिष्ठाकल्पनुं अनुसरण करीने आ प्रतिष्ठाविधि कहेवाय छे.

मुहूर्तनिर्णयो १ राज-पृच्छा २ भूमेर्विशोधनम् ३। मण्डपस्य विनिर्माणं ४, वेदिकारचना ५ तथा ॥२१॥
संघभक्तिसमादेशाः ६. संघामंत्रणपत्रिका ७। प्रतिष्ठौषधिवर्तिन्य-श्चतस्रः शुभलक्षणाः ८ ॥२२॥
अन्वेष्याः स्नात्रकाराश्च शुभलक्षणलक्षिताः ९। अमारिघोषणं कार्यं. राज्ञा संघेन वा स्वतः १० ॥२३॥
प्रतिष्ठोपस्करा नाना-विधा मेल्या यतस्ततः ११। व्यवस्थायां नियोक्तव्या. धीमन्तः श्रमसेविनः १२ ॥२४॥
अनागतविधेयानि, विधेयानि विचक्षणैः। कार्याणि क्षणकार्याणि, यानीमानि निबोधत ॥२५॥

भा०टी०—मुहूर्तनिर्णय १, राजपृच्छा २, भूमिशुद्धि ३, मंडपनिर्माण ४, वेदिकारचना ५, संघभक्तिआदेश ६, संघामंत्रण-पत्रिकालेखन ७, प्रतिष्ठौषधीवाटनारी ४ स्त्रियोनी नियुक्ति ८, निर्दोष स्नात्रकारोनुं अन्वेषण ९, अमारिघोषणा राजाद्वारा कराववी अथवा संघे पोते करवी १०, प्रतिष्ठोपयोगी सामग्री ज्यां त्यांथी मेलववी ११, अने प्रतिष्ठाना कार्योनी व्यवस्था करवा बुद्धिमान

अने परिश्रमी पुरुषोनी समितिओ निमवी १७, आ रता कार्यो बुद्धिमानोए प्रतिष्ठोत्सवनी तैयारीरूपे प्रथम करवा जोइये उत्सव दर्मियान करवाना कार्यो छे ते आ प्रमाणे जाणवा

(१) मुहूर्तनिर्णय—

प्रतिष्ठा कराववानो निश्चय थता ज सर्व प्रथम मुहूर्तनो निर्णय कराववो, मूलनायकजिन, मघ, गाम, गामधणीना नामथी चन्द्रबलादि जोइने निर्दोष मुहूर्त आपनार सारा अभ्यासी ज्योतिषशास्त्रना विद्वानोनी पासे प्रतिष्ठामुहूर्तनो निर्णय कराववो घणा अल्पज्ञोने पूछवा करता एक विशेषज्ञने पूछवाथी ए विषयनो जल्दी निर्भ्रान्त निर्णय थइ शके छे ए वस्तुने ध्यानमा राखीने ए विषयमा प्रवृत्ति करवी जोइये

२ राजपृच्छा—

मुहूर्त श्रेष्ठ मली जाय अने प्रतिष्ठा कराववानु निश्चित होय तो ते राजस्थान होय तो प्रतिष्ठाना विषयमा राजानी संमति लेवी, तथा योग्य सहायतानी मागणी करवी, प्रतिष्ठानु स्थान राजधानी न होइ गाम के नगर होय तो त्यानो अधिकार जे अधिकारीना हाथमा होय तेने मलीने तेनी सहानुभूति प्राप्त करवी, अने प्रतिष्ठा कोइ गामधणीना गाममा होय तो ते धणीने पूछीने काममा तेनी सहायता प्राप्त करीने कार्यारंभ करवो

३ भूमिशोधन—

मडपने माटे भूमि एवी पसंद करवी जोइये के जे स्वाभाविक रीते ज शुद्ध होय, ज्या हाडका वगेरे शल्य न होय अने

गंदकीनुं स्थान अथवा सडेल गलेल खातरवाली के मांसाहारियोना निवासवाली न होय. वली मंडप उपरान्त खुल्ली भूमि केटली रहेशे ए पण प्रथमथी ज जोइने मंडपनी भूमि पसंद करवी, केमके प्रतिष्ठामंडप, स्नानमंडप अने सभामंडप ए बधाने माटे पर्याप्त होय ते भूमिज मंडपने माटे योग्य गणी शकाय. बनी शके त्यां सुधी प्रतिष्ठामंडपनी भूमि देहरानी सामे राखवी. कदापि सामे पर्याप्त भूमि न होय तो जमणे पडखे राखवी पण देहरानी पूठमां तो मंडपभूमि न ज होवी जोइये अने एवा स्थानमां मंडप न ज बनाववो जोइये.

भूमि उपरथी कचरो अने मृतक धूल दूर कराव्या पछी ज ते उपर मण्डपनुं निर्माणनुं कार्य चालु करावबुं. मण्डपना जे भूमि भागे वेदिका बनाववी होय तेने एक हाथ खोदावीने त्यांनी धूल बहार नंखाववी अने ते स्थल जंगलनी शुद्ध माटी पीली अथवा नदीनी शुद्ध रेतीथी भरावीने त्यां वेदी कराववी.

जघन्यथी पण प्रतिष्ठामण्डपना मध्य भागथी १०० हाथ सुधीमां क्षेत्रशुद्धि करवी, सुगंधजल छांटवुं, पुष्पो वेरवां अने धूप उखेववो, आ प्रकारे मण्डप भूमिनो सत्कार करवो.

४ मंडप-निर्माण—

प्रतिष्ठामां प्रतिष्ठा-मंडप पण एक आवश्यक अंग छे, पूर्वकालमां प्रतिष्ठा मंडपो अने वेदिकाओ प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाना मानने अनुसारे न्हानां म्होटां बनतां पण पाछलां सेंकडो वर्षोथी आ सैद्धान्तिक वस्तु लुप्त प्रायः थइ छे. आजना प्रतिष्ठा-मंडपोमां लोकाकर्पण माटे भपको अथवा नाटकीय सिनेरी भले होय पण आय, व्यय, नक्षत्रादि जेवुं कांइ ज जोवातुं नथी, खरी रीते

नैत्यने अंगे चोगाती वधी गातो नहि तो पण आय १ व्यय २ नक्षत्र ३ आ त्रण अंग मेलवीने मंडप कराय तो घणो सुलाक्षणिक बने.

शुद्ध करेल चोरस अथवा लंबचोरस भूमीना तलने जमीननी सपाटीथी लगभग दोढ फूट ऊंचु लेइ तेमा प्रतिष्ठा-मंडपनु निर्माण करवुं कल्याणकारी होय छे, ए मंडपनो उपयोग मात्र विधि विधानने माटे ज करवो, सभामंडप तेनी आगे जुदो बनावगो जोइये.

मंडपभूमिनी लबाई अने पहोलाई बने विषम (एकी) हस्तपरिमित लेवाथी मडपनो आय शुभ आवे छे, ए वात ध्यानमां राखी मडपनु तल निश्चित करवुं अने व्यय आय करता ओछो होय ते लेवो.

जो मडपनु द्वार एक ज दिशामा राखवानुं होय तो मंडपनुं नक्षत्र तद्द्वारिक लेवुं, आ वस्तु मंडप बनाववनार न समजतो होय तो तेने तमारा शिल्पी (मंदिर बनाववनार) द्वारा समझावगो.

मंडपनी सजावट मारामा सारी करवी, पण तेमा भयजनक, दुःखजनक के उपद्रवसूचक दृश्यो न बनाववां, शोकसूचक रंगो अथवा तेवां वस्त्रो पण विशेष प्रमाणमा न वापरवा.

तीर्थोनां दृश्यो, जिन-कल्याणकोना प्रसगो, बोधदायक घटना चित्रो अने धार्मिक इतिहासने ताजो करनारा धार्मिक प्रसंगोना पडदाओ अने सिनेरीओथी मंडप विशेष आकर्षक बने छे, पाणीना फुवाराओ, जलझरणाओ, नदीओ अने तीर्थ-स्वरूप पर्वतोनी रचनाओथी तो मंडप खरेखर तीर्थरूप बनी जाय छे, मंडपना मध्य भागमा वेदी बनाववी

५ वेदीनी रचना—

मंडपनी जेम वेदीओ पण घणा समय पूर्वे मंडपने अनुसारे बनती पण आ पद्धति आजे प्रचलित नथी, छेल्ली प्रतिष्ठा-पद्धतिओमां वेदी ३ हाथ समचोरस अने १॥ हाथ उंची बनाववानुं विधान छे, पण आजे ए विधान चालतुं नथी, जो मंडप चोरस होय तो वेदी पण चोरस बनावाय छे, पण मंडप वाम दक्षिण दीर्घ होतां वेदी पण वाम दक्षिण लंबी बनावाय छे, गमे तेम होय पण वेदीनी लंबाई, पहोलाई अने ऊंचाई बंनेमां शुभ आय तो होवो ज जोइये.

प्रतिमाओ घणी होय अने मण्डपनुं मध्यपद विशाल होय तो वेदी तेने अनुसारे म्होटी बनाववी, अने वेदीनो मध्य भाग वधारे उंचो बनावी तेनी चारे दिशाओमां त्रण पांच आदि मेखलाओ बनाववी, के जेथी घणी प्रतिमाओ रही शके अने सरखी रीते तेओनां दर्शन थइ शके.

वेदीनी उंचाई तेना अंगने अनुरूप करवी पण ३५ इंचथी ओछी तो न ज करवी.

वेदीना मध्य भागमां खाडो करी तेमां पंचरत्ननी पोटली आदि मांगलिक पदार्थो मूकवां.

वेदी जो चोरस होय तो तेना च्यारे खूणाओमां वांसनी अथवा बीजा शुभ वृक्षनी थांभलीओ रोपी वेदी उपर वंश मंडप बनाववो, च्यारे दिशामां १-१ अथवा ३-३ द्वारो बनाववां, द्वारोनी उंचाई पहोलाईथी पोणाबमणी बनाववी, वंशमंडप जो ४ द्वारनो होय तो च्यार दिशामां १-१ अने मध्यमां १ आम ५, अथवा म्होटी १ घुमटी बनाववी अने ३-३ द्वारनो मंडप होय तो मध्य द्वारोना भागे ४, खूणाओना भागे ४ अने मध्यभागे १, आम ९ घुमटीओ बनाववी.

मंडप अने वेदी तैयार थइ जाय त्यारे मंडपभूमिने गोबर अने धोळी माटीनी गारथी लींपवी जोइये, गारमां सुगन्धी जल

तथा यक्षकर्दमनो घोल नाखी सुगन्धी बनाववी.

वेदीने पण खडी अथवा चूनाना घोलथी पोताववी, घोलमा यक्षकर्दम, पचरत्ननु चूर्ण तथा सुवर्णनी रज नाखी एक-रस करवो, वेदीने पोताववी तेनी च्यारे बाजुओ सन्मुख मांगलिक चित्रो कढाववा

६ संघभक्तिना आदेश—

प्रतिष्ठाप्रसंगे भक्तिवात्सल्यनो बन्दोबस्त करीने ज प्रतिष्ठा करावनारे देश परदेशना संघने आमंत्रित करवो जोइये.

प्रतिष्ठा करावनार एक व्यक्ति होय तो तेणे पोतानी व्ययशक्तिनो विचार करीने साधर्मिकवात्सल्य अथवा नोकारसीनी व्यवस्था करवी. अने ते मुजब ज संघसमुदाय एकत्र करवो. प्रतिष्ठानु महत्त्व खावापीवानी धमालमा नहिं पण तेना क्रिया-विधाननी शुद्धतामां अने मानसिक उल्लासमा छे प्रथमथी ज शक्तिना अनुमानथी खर्चना द्वार उघाडवा के पाछलथी अधिक-व्ययनिमित्तक मनोभंग न थाय अथवा तो कृपणता जनित लोकापवाद सांभलवानो समय न आवे.

प्रतिष्ठा करावनार स्थानीय संघ अथवा सकलसंघ होय अने संघभक्ति निमित्ते साधर्मिक वात्सल्य अथवा नोकारसिओ करनारा गृहस्थो घणा होय तो शुभ मुहूर्ते चढावा बोलीने आदेश आपवा

मारवाडमा नोकारसी निमित्ते बोलाता चढावाओमा पूर्वे नोकारसीनो खर्च आदेश लेनार उपर रहेतो हतो पण आज केटलाक समयथी त्यां पण बीजा प्रदेशोनी जेम नोकारसीनो खर्च बोलाएल रकममाथी ज करवानी पद्धति पडी गइ छे, आ दशामा जो चढावानी रकम भोजनखर्च पूरती पण आववानो संभव न होय तो रकमनो एक सारो आंक बांधीने त्याथीज

चढावो बोलवानी शरुआत करवी के जेथी थोडामां नोकारसीनुं नाम करीने साधारण खातामां घाटो घालनारा फावी शके नहिं अने नोकारसीओना आधिक्यथी प्रतिष्ठा करावनारने अधिक खर्चमां उतरवुं पडे नहिं.

साधार्मिक वात्सल्यो नोकारसीओ अथवा बीजा गमे ते नाम नीचे संघ तरफथी संघभक्तिना आदेश थया पछी संघने बोलाववा माटेनी आमंत्रण-पत्रिकाओ तैयार करवी,

७ संघ-आमंत्रण-पत्रिका

संघने बोलाववा निमित्ते लखाती आमंत्रण पत्रिका पूर्वे घणी ज सादी अने मुद्दासरनी होती. पण लगभग ४० वर्षथी आ पत्रिकाए पोतानुं स्वरूप बदलवा मांडयुं अने थोडुं थोडुं करतां कलेवर घणुं ज वधी गयुं छे. आजे जे प्रतिष्ठानी आमंत्रण पत्रिका दोढ हाथ लांबी अने एक हाथ पहोली न होय ते प्रतिष्ठा ज सामान्य हशे आम सामान्य जनसमाज मानी ले छे, वली आजनी प्रतिष्ठा-पत्रिकामां त्रण रंगो न पूराय त्यां सुधी ते उपर घणानी पसंदगी ज उतरती नथी.

पत्रिका संबन्धी आ परिवर्तनोनी अमो अनुमोदना करी शकता नथी, पत्रिकानुं कलेवर वधारवाथी के तेमां घणा रंगो पूरवाथी तेनुं महत्त्व वधतुं नथी, लखनारनी समज चतुराई अने विद्वत्तापूर्ण लेखन शैलीना समागमथी ज तेनी किम्मत वधे छे. असद्भूत विशेषणोनी हारमाला गोठवी नाखवाथी पत्रिकानी वास्तविकता चाली जाय छे अने समजु माणसोनी दृष्टिए ते केवल अर्थवाद-प्रशस्तिनुं रूप धारण करे छे.

पत्रिकामां लखनार तरीके सही करवानो पण रीवाज छे. कोइ स्थले नगरशेठ, तो कोइ स्थले संघनो आगेवान सही करे

छे पण म्होटी प्रतिष्ठाओनी आमंत्रण पत्रिकाओमा सही करवाना पण चढावा बोलाय छे अने हजारो रुपियानी उपज थाय छे.

घणा गामोमा प्रतिष्ठाना दिवसनी नोकारसीनो चढावो लेनार गृहस्थ आमंत्रण पत्रिकामा लखनाररूपे हस्ताक्षर करे छे, भले हस्ताक्षर गमे ते करे पण ते दश वार वर्षनो निशालियो तो न ज होवो जोइये. पत्रिका नीचे हस्ताक्षर करनार माणस प्रसिद्ध अने चढावो लेनारना वरनो अग्रेसर व्यक्ति होवो जोइये.

लगभग च्यार दायका पूर्वे पत्रिकाओ परिमित संख्यामा लखाती हती. पोताना गोलना २५–५० गामोमा अने बहु तो ते उपरान्त आसपासना ३–४ गोलोना गामो सुधी पत्रिकाओ लखाती के जे १००–१५० थी भाग्ये ज अधिक होती. आजे ए मर्यादा रही नथी. घणां स्थले १००० अथवा तो २०००नी संख्यामा पत्रिकाओ छपाय अने मोकलाय छे. आ अतिप्रवृत्ति उपयोगी नथी, दूर दूर मोकलाती पत्रिकाओनो अर्थ एक विज्ञापनथी अधिक थतो होय एम अमो मानता नथी.

८ औषधि वाटनारी स्त्रियो—

प्रतिष्ठामा औषधिओ वाटवा अने पुंखवा आदिना कामो करवा माटे ४ अथवा ८ स्त्रियोनी प्रथमथी ज मगरड करी राखवी जोइये. निर्वाणकलिका पण ८ अथवा ४ स्त्रियोद्वारा पुंखवानु विधान करे छे के—" सुवर्णादिदानपुरःसरमष्टौ चतस्रो वा नार्यो रक्तसूत्रेण स्पृशेयु., शेषाश्च मंगलानि दधुः।" अर्थात् सुवर्ण आदिनु दान आपती ८ अथवा ४ स्त्रियो रक्तसूत्रनो स्पर्श करवा पूर्वक पुंखणा करे अने बीजी स्त्रियो मंगल गावे

आ स्त्रियोना वर्णनमां कलिका लखे छे के—"रूपयौवनलावण्यवत्यो रचितोदारवेषा अविधवाः" अर्थात् । ते

स्त्रियो रूपलावण्यवती युवती अने सुन्दर वेषवाळी 'अविधवा' होवी जोइये. पादलिप्ताचार्यना 'अविधवा' शब्दप्रयोगथी समजी शकाय छे के ते स्त्रियो 'विधवा' न होवी जोइये. 'सधवा' अथवा 'कुमारिका' होय तेनी हरकत नथी. श्रीचन्द्रसूरिजी ए विषयमां नीचे प्रमाणे वर्णन आपे छे.

"तत्रैव मंगलाचारपूर्वकमविधवाभिश्चतुःप्रभृतिभिः प्रधानोज्वलनेपथ्याभरणाभिर्विशुद्धशीलाभिः सकंकणहस्ताभिर्नारीभिः पञ्चरत्न—कषाय—मांगल्यमृत्तिका—मूलिकाऽष्टवर्गसर्वौषध्यादीनां वर्त्तनं कारणीयं क्रमेण ।"

भा०टी०—"त्यां मंगलाचार पूर्वक श्रेष्ठ उज्वल वेषभूषावाळी शुद्धशीलवंती अने हाथे कंकणवाळी ४ आदि 'अविधवा' स्त्रियोना हाथे पंचरत्न, कषायछाल, मंगलमाटी, मूलिका, अष्टवर्ग सर्वौषधि आदि अनुक्रमे वटाववां.

ए सबन्धमां जिनप्रभसूरिजीए 'जीवित मातापिता सासूससरावाळी' ए विशेषण वधार्युं छे. ज्यारे वर्धमानसूरिजीए 'सपुत्रा' ए विशेषण अधिक सूच्युं छे, पण बीजा प्रतिष्ठा कल्पकारोए श्रीचन्द्रसूरिनुं ज अनुसरण कर्युं छे.

आजकाल आ विषयमां लक्ष्य ओछुं अपाय छे. बिंबप्रवेशना समयमां करातो पुंखवानी क्रिया प्राये चढावो बोलीने आदेश लेनार गृहस्थना घरनी एक ज स्त्री करे छे. बीजा प्रसंगे पण करातां पुंखणां घणे भागे एक ज स्त्रीद्वारा थाय छे जे योग्य नथी. पुंखणा ४ स्त्रियोए ज करवा जोइये, जीवित मातापिता सासूससरावाळी होय अथवा नहिं पण पंचेन्द्रिय पूर्ण अने अखंडित अंगवाळी सधवा अथवा कुमारिका तो होवी ज जोइये.

प्रतिष्ठानिमित्तक औषधि वाटवानु, पुखणा करवानु, अंजन तैयार करवानु, नैवेद्य रांधवानु, इत्यादि कार्यो आ स्त्रियो पासे कराववा अने प्रतिष्ठा करावनारे कान्चली, कापड प्रभावना आदि आपीने आ स्त्रियोनो सत्कार करवो

९. स्नात्रकारो—

प्रतिष्ठाकल्पकारोए 'स्नात्रकारो' अथवा प्रतिष्ठाकार्यना सूत्रधारोनुं पोताना ग्रंथोमा वर्णन कर्युं छे जेनो सार नीचे प्रमाणे छे –

आचार्य पादलिप्तसूरिजीए १ शिल्पी, २ इन्द्र अने ३ आचार्य ए त्रणेने प्रतिष्ठाना सूत्रधार तरीके मानीने एमना लक्षणो जणाव्या छे

(१) शिल्पी—शिल्पीना वर्णनमा पादलिप्तसूरि कहे छे—' ते त्रणमा पहलो शिल्पी सर्वाङ्गसुन्दर, क्षमाशील, नम्र, सरल, सत्यभाषी, शौचसंपन्न, मदिरामांसादि अभक्ष्य खान पानना त्यागी, कृतज्ञ, विनयी, शिल्पनी क्रियाओमा प्रवीण, शिल्पशास्त्रनो ज्ञाता, चतुर, धैर्यवान, निर्मलात्मा, शिल्पिसमाजमा अग्रेसर मोहादि आन्तर ६ शत्रुओने जीतनार, स्थापत्यना कार्योमा सिद्धहस्त अने स्थितप्रज्ञ होवो जोइये

(२) इन्द्र—

इन्द्रनी योग्यतानुं वर्णन पादलिप्तसूरिजीए कर्युं छे के—

" इन्द्र पण उत्तम जातिकुलवालो, युवावस्थावालो मनोहर शरीरधारी, कृतज्ञ रूपलावण्यादिगुणोनो आधार, सर्वलोकप्रिय, सर्वशुभलक्षणसंपन्न, देवगुरुभक्त, धर्मश्रद्धालु, सर्वप्रकारे व्यसनमुक्त, सदाचारी, पंचअणुव्रतादि गुणधारक, गंभीरप्रकृतिनो

श्वेतवस्त्रधारी, अंगे चन्दनादिना विलेपनवालो, मस्तके मालतीना पुष्पोनी रचनावालो, सुवर्णमय कंकणादिके भूषित, उरःस्थलमां सुन्दर हारे करी शोभित अने स्थापत्यकलानो ज्ञाता होवो जोइये."

(३) आचार्य—

प्रतिष्ठाकर्ता आचार्यना संबन्धमां पादलिप्तसूरिजी कहे छे के—

प्रतिष्ठाचार्य आर्यदेशमां जन्मेल, हलुकर्मी, ब्रह्मचर्यादि गुणगणे करी शोभित, पंचाचारपालक, राजादिकनो अद्रोही, आगमाभ्यासी, तत्त्वज्ञानी, भूमि तथा गृहवास्तुना लक्षणोनो ज्ञाता, दीक्षाविधिमां कुशल, मन्त्रपातनादिना ज्ञानमां पारंगत, सर्वतोभद्र आदि मण्डलोनी रचना करनार, अतुलप्रभावी, अप्रमादी, प्रियभाषी, दीनदुःखीनी दया करनार, सरलस्वभावी अने सर्वगुणसंपन्न होवो जोइये.'

उपरना निरूपणथी जणाय छे के पादलिप्ताचार्यना समय सुधी प्रतिष्ठाकार्यमां शिल्पी, इन्द्र अने आचार्यनी ज प्रधानता हती, पण ते पछीना समयमां शिल्पीनुं महत्त्व घटी गयुं अने इन्द्रनो अधिकार पण लगभग भूलाई गयो अने तेना स्थाने ४ स्नात्रकारो आगळ आव्या.

श्रीचन्द्रसूरिजीए स्नात्रकारोना लक्षणो जणाव्यां छे—

"स्नपनकाराश्च समुद्राः, सकंकणाः, अक्षताङ्गाः, दक्षाः, अक्षतेन्द्रियाः, कृतकवचरक्षाः, अखंडितोज्ज्वलवेषाः, उपोषिताः, धर्मबहुमानिनः, कुलीनाश्चत्वारः करणीयाः"

भा० टी०—स्नपनकारो मुद्रिकाकङ्कणसहित, अक्षतशरीर, प्रवीण, अखण्डेन्द्रिय, मत्रकवचथी रक्षित, अस्वण्ड अने उज्ज्वल-नेपथ्यधारी, उपवासी, धर्मनु बहुमान करनारा अने कुलवान एवा ४ करवा.

वर्धमानसूरिजीए स्नात्रकारो माटे—"नीरोग, सौम्य, स्नात्रविधिना जाणकार," ए विशेषणो लख्या छे.

गुणरत्नसूरि अने विशालराजशिष्य आ स्नात्रकारोने अंगे बीजी बातोमा तो एकमत छे, पण ब्रह्मचर्यनी बाबतमां जुदा पडे छे गुणरत्नसूरि स्नात्रकारोने "तद्दिनब्रह्मचारिणः" एटले 'ते दिवसे ब्रह्मचर्यपालनार' विशेषण आपे छे ज्यारे विशालराजशिष्य "जघन्यतोऽपि ८ दिनब्रह्मचारिणः" अर्थात् 'ओछामा ओछुं आठ दिवस सुधी ब्रह्मचर्य राखनार' जणावे छे.

गमे तेओनो गमे ते मत होय पण एटलु तो निश्चित छे के प्रतिष्ठानी विधिमा काम करनारा स्नात्रकारो सदाचारी, सुशील, निर्लोभी, धर्मप्रेमी, पंचेन्द्रियपूर्ण, अक्षत-अगोपागवाला, अने उत्सवना समय दर्मियान तो ब्रह्मचर्य पालनारा होवा ज जोइये

स्नात्रकारोए पोतानी प्रामाणिकतामा संदेह उत्पन्न थाय एवी कोई पण प्रवृत्ति न करवी जोइये, नकरो निछरावल जे कइ कोइने अपावबुं होय ते प्रतिष्ठा करावनार गृहस्थना हाथे परभारु अपावबुं, पण पोते आवी प्रवृत्तिओमा न पडवु

१० अमारी घोषणा

प्रतिष्ठा उत्सवना समय दर्मियान अमारी घोषणा अर्थात् 'हिंसानिषेध'नी उद्घोषणा करावबी जोइये जो राजा जैन धर्मनो अनुयायी होय तो तेनी मारफत आखा देशमा 'अमारी' जाहेर करावबी जो तेम न बनी शके तो ज्या प्रतिष्ठा थवानी

होय ते गाम वा नगरमां ज तेम कराववुं, कदापि उत्सवना सर्व दिवसोमां हिंसा न रोकी शकाय तो छेवटे प्रतिष्ठाना खास दिवसे तो राजा, राज्याधिकारी के गामधणीने प्रार्थना करीने अमारीनी घोषणा करावची ज जोइये.

कोई पण उपाये देश, मंडल के नगरमां एक दिवसने माटे पण 'अमारी'नी घोषणा न करावी शकाय तो छेवटे स्थानिक जनसंघे तो आठ या दश दिवस उत्सव चाले त्यां सुधीने माटे पोताना समाजमां 'आरंभनिषेध'नी घोषणा करावची ज जोइये जेथी कमठा कारबार बन्ध कराववाथी घणा मनुष्यो उत्सवना कार्योमां भाग लेशे अने साथे ज सांसारिक कार्यनिमित्तक हिंसा-आरंभो ओछा थशे.

११ प्रतिष्ठोपस्कर-संभार

प्रतिष्ठाने अंगे आवश्यक सामग्रीसंभारना विषयमां प्रतिष्ठा पद्धतिओ एकमत नथी. निर्वाणकलिकानी प्रतिष्ठासामग्री घणी परिमित छे. पण ते पछीनी पद्धतिओमां क्रमे क्रमे सामग्रीमां वधारो थतो गयो छे अने ज्यारथी प्रतिष्ठाविधिमां कल्याणकोनी उजवणीनो प्रवेश थयो छे त्यारथी तो तेमां अनेकगुणी वृद्धि थइ गइ छे. आवी स्थितिमां सामग्रीनी सूचीमां शुं लेवुं अने शुं छोडवुं? ए एक विकट समस्या थइ पडी छे. एथी आ पद्धतिमां अमोए जे विधानो स्वीकार्यां छे अने तेमां जे उपकरणोनो उपयोग जणाव्यो छे, ते उपकरणो अने पदार्थोनी सूची आपीने संतोष मानीशुं.

उपकरण-पदार्थसूची—

वेह ४ नवअंगी। पाणी भरवाना मोटां माटलां २। पाणी भरवाना घडा ८। पुंखवा योग्य न्हाना गाडवा ८। नन्द्यावर्त्त

पखालनी कुडी घातुनी २। कासीनी थाली ४ योग्य गाडवा ४। घातुना स्नात्र योग्य कलशिया ८। १०८ नालनो कलश १। पखालनी कुडी घातुनी २। कासीनी थाली ४ योग्य गाडवा ४। घातुना स्नात्र योग्य कलशिया ८। १०८ नालनो कलश १। माटीना कलशिया १०८। आरती १। मंगल दीवो १। झालर १॥

जवाराना सरावला ८। बीजा सरावला ५०। कुंडा ८। कुडिओ ४। माटीना कलशिया १०८। आरती १। मंगल दीवो १। कासीना वाटका २। अखंण्ड दीपक योग्य फाणस २। तांबापीतलनां मोटां कोडिया २। जर्मनशिल्वर न्हानी वाटकियो १५। सोनानी मुद्रिका 'वींटी' स्नात्रकार योग्य ४। रूपानी वाटकी १। रूपानी रकाबी 'तासक' १। सोनानी सलाई १। सोनाना काकण स्नात्रकार योग्य ४। सुवर्णपुष्प १०८। रूप्य पुष्प १०८। घंट १। घटडी १। धूपधाणा २। छत्र १। चामर २। केसर तोला ८। कपूर तोला ८। कस्तूरी वाल ३। गोरोचन वाल २। बरास तोला ५। अगर तोला ५। तगर तोला ५। ककोल तोला ५। चदनना मूठा २। लाल चन्दननो मूठो १। वालाकूची २। वासक्षेप घोलो तोला ५। वासक्षेप पीलो सेर १॥

सोनानां वरख थोकडी २। रूपाना वरख थोकडी ४। रूपाना पुखणा ३-धूसर मूसल रवाइयो। पंचरत्न पोटली ४० (मोती मोनुं रुपु ताम्र प्रवाल)। आरीसो म्होटो १। कालो सुरमो तो. २ 'डली'। प्रियगु तोला ५। श्वेत सर्षप पोटलियो विंन प्रति १। अरिठानी मालाओ विंन प्रति १। जवनी मालाओ निम्व दीठ १। सम्‌लो डाभ ४ मूलिया। मींढल काकण। मरोडाफली। गेनाबत्र 'पाच नाक उपर वांटेलुं'। नालियेर १५१। खजूर सेर ७। द्राख-किसमिस सेर २। बदाम गोला सेर १। दशांग धूप सेर १। अगरबत्ती सेर १। किंद्रुप धूप सेर ८। कुंकुम सेर १।। तीर्थजल शीशी १। गंगाजल

शीशी १। १०८ कूप-नदीजल घडो १। गंगा नदीनी वेळु पडीकुं १। ३६० क्रियाणानो पुडो १। सर्वौषधिचूर्ण
पडीकुं १। यक्षकर्दम तोला २। अष्टगंध तोला २। पुष्पो 'जाइ, जुही, चमेली, मोगरो गुलावआदिनां'। ग्रहदिक्पाल
पूजन योग्य पुष्पो (लालकेणर, जाइ, कुमुद, जासूल, चंपो, सेवंती, जाइमोगरो, मालती, दमणो, मचकुन्द, बहुवर्ण,)॥
बदाम शेर २। राती सोपारी गोटा १२५। काली सोपारी १५। नागरवेलनां पान २००। कषाय छाल पडीकुं १।
मंगल मृत्तिका पडीकुं १। सदौषधि चूर्ण पडीकुं १। मूलिका चूर्ण पडीकुं १। प्रथमाष्टवर्ग पडीकुं १। द्वितीयाष्टवर्ग
पडीकुं १। वस्त्रो-नीलुं हाथ ७। रातुं हाथ ७ 'छोटो पन्नो'। रातुं हाथ ५ 'वारनो पन्नो'। धोळुं हाथ ७। काळुं हाथ २।
आसमानी हाथ २। सोसनी हाथ १। उदारंगी हाथ १। फलो-दाडिम, केळां, आंबा, नारंगी आदि। ग्रह दिग्पालपूजन-
योग्यफलो-(सेलडी २, नारंगी २, जंबीरी २, बीजोरा ३, दाडिम ३। घृत मण ०॥) दीपक, नैवेद्य आदि योग्य।
मधु तोला २ अंजन योग्य। साकर शेर २। जवारिया वांस ४ सात. छावनाला। छत्रधार योग्य वेष १-धोतियुं १,
उत्तरासण १। प्रतिष्ठा गुरु योग्य वेष १। दशियावड कोरुं वस्त्र १ हाथ १२ प्रतिमा योग्य। दशियावड कोरुं वस्त्र नंद्यावर्त
योग्य हाथ १२। दशियावड कोरुं वस्त्र नंद्यावर्त लेखक योग्य। माइ साडी १ 'कुसुंभी वस्त्र हाथ १०। वस्त्र पीलुं हाथ ७।
अडद शेर ४। शणबीज शेर २। चणा शेर ४। मसूर शेर २। चौला शेर ४। वाल शेर २। जवार शेर ३। कुलथ शेर २।
जव शेर ५। गहुं शेर ५। मुंग शेर ४।
मलमल मोटो पनो हाथ १०। जगन्नाथी हाथ १० हाथनो पनो। धोतियां ८। उत्तरासग ८। नंद्यावर्त योग्य:पाटलो १

सेवननो। दिग्पालयोग्य पाटलो १। नवग्रहयोग्य पाटलो १। अष्टमगलयोग्य पाटलो १। अखंड चोखा सेर १। 'अधौं मण मात'। 'फोतरावाला चोखा सेर ४। तल सेर २। घोलीपा पीळा सरस्व सेर ०॥)। चोखानी फूली सेर १। नैवेद्य 'धारी, लाडु, ठोर, घेवर, मोहनथालआदि'। नैवेद्य सराव ७ 'वाट, खीर, कांसो, सीवडी, कूर, सीधरडो (पीडलो)'। सनालिकेर पाच सेरनो लाडु १। पञ्चगव्य-घी-दूध-दहि-गायनु गोबर-मूत्र-डाभ-पाणी। माला ५ जातनी ग्रहयोग्य-प्रवालनी, स्फटिकनी, केरवानी। अकलबेरनी, गोमेद, अथवा सिंदूरियास्फटिकनी'।

१२ व्यवस्थापक मण्डल

प्रतिष्ठाना कार्यो व्यवस्थितरूपे थया करे एटला माटे सघना बुद्धिशाली अने परिश्रमी पुरुषोनुं सत्ताप्राप्त व्यवस्थापक-मडल स्थापवु के जेना निरीक्षण नीचे सर्व कार्यो भिन्न भिन्न समितियो द्वारा थया करे

आ मण्डल, जुदा जुदा कामो माटे योग्य माणसोनी पसंदगी करीने तेमनी समितिओ योजी, कार्यो तेमने सुप्रत करी पोतानो भार ओछो करे

कया काम माटे केटला माणसोनी समिति होवी जोइये एनी असे एक आनुमानिक तालिका नीचे आपीये छीये, देश-काल अने कार्यनो विचार करीने मडल आ संख्यामा वधारो घटाडो करी शके छे.

१ भोजन प्रबन्ध ८	२ जलप्रबन्ध २	३ नगर सफाई २
४ छाया प्रबन्ध २	५ वरघोडा व्यवस्था ४	६ पूजा स्नात्रकार प्रबन्ध ४

७ मंगलघर प्रबन्ध २	८ सामग्री प्रबन्ध ४	९ संघ स्वागत ५
१० मोदीखानुं २	११ घासचारो २	१२ प्रतिष्ठामण्डप २
१३ नगर शणगार २	१४ यान-वाहन २	१५ चोकी पहेरो २

१६ दान, त्याग-इनाम. ५ वा ८

प्रतिष्ठा प्रसंगे करवानां उपर्युक्त कार्योनी व्यवस्था माटे जणावेल संख्याना माणसोनी समितिओ नीमीने भिन्न भिन्न कार्यो भिन्न भिन्न समितिओनी जवाबदारी तले मूकवाथी कार्यो घणीज सरलताथी थशे, अने कोइने विशेष श्रम न पडतां प्रतिष्ठामहोत्सव बहुज यशस्वीपणे पार पडशे.

२ उत्सवक्रिया

प्रथमाह्निकम्। मडपप्रतिष्ठा-जलयात्रा-कुम्भस्थापन विधिओ आह्निक-बीजकम्—

प्रविश्य मण्डपं मन्त्रै-र्भूमिशोधनपूर्वकम्। पीठपूजनमाधाया-ऽभिमन्त्र्याऽथ सुखादिकाम् ॥२७॥
बालकेभ्यो वितीर्यादौ, ततो भूतबलिं क्षिपेत्। सिंहासने जिनं प्रत्नं, पीठे नव्यजिनावलिम् ॥२८॥
न्यस्य कुर्याज्जिनस्नात्रं, चैत्यानां वन्दनं तथा। जलयात्रार्थमृत्कुम्भ-चतुष्कस्याधिवासनम् ॥२९॥
घटोत्पाटनकारिण्यः, सधवा वा कुमारिकाः। रक्षासूत्रेण संरक्ष्य, ततो वाद्यपुरस्सरम् ॥३०॥
जलाशयतटे गत्वा, पूर्वं दिक्षु बलिं क्षिपेत। क्षेत्रस्य देवतां शान्ति-देवतां जलदेवताम् ॥३१॥
अनुकूलयितुं कुर्यात, कायोत्सर्गांश्च तत्स्तुतीः। ततो जलाशयात् पूत-घटेषु जलमाहरेत् ॥३२॥
तथैव ममहं तूर्य-नादैर्भृतदिगन्तरम्। आगत्य जिनगेहान्तर्जलकुम्भान्निवेशयेत् ॥३३॥
कोणेषु मण्डपस्याऽथ, चतस्रो वरवेदिकाः। साच्छादना विषमाङ्ग्यो, न्यस्तव्या विधिवेदिना ॥३४॥
प्रतिवेदि चतुर्दिक्षु घटकानां चतुष्टयम्। न्यस्य तदुपरि स्थाप्या, यववारशरावकाः ॥३५॥

अथवा—

विध्यानीतेन नीरेण, घटमापूर्य मन्त्रवित्। स्थापयेज्जिनदक्षाङ्गे, दीपं तत्पार्श्वतो न्यसेत् ॥३६॥
शरावकेषु वंशानां, पात्रेषु च यवारकाः। वाप्या विधानतः कार्य-मित्यादि प्रथमेऽहनि ॥३७॥

भा० टी०-मंत्रो द्वारा भूमिशुद्धि करवा पूर्वक मंडपमां प्रवेश करी पीठपूजन करीने बुखडी अभिमंत्रित करी बालकोने वहेंचवी, ते पछी भूतबलिक्षेप करवो, ते पछी मंडपमां सिंहासन उपर विधि माटे प्राचीन, जिनप्रतिमा स्थापन करवी अने पीठ उपर प्रतिष्ठाप्य जिनबिम्बो स्थापवां. ते पछी स्नात्र करीने त्यां चैत्यवंदन करवुं, अने जलयात्रा माटे तैयार राखेल ४ माटीना मजबूत कलशोनुं प्रतिष्ठाचार्ये वासादि वडे अधिवासन करवुं. कलश उपाडनारी सधवा स्त्रियो अथवा कुमारिकाओना हाथे गेवासूत्ररुप रक्षासूत्र बंधावीने वाजित्रनाद पूर्वक कूप-नद्यादि जलाशय पासे जवुं, त्यां प्रथम दिक्पालोने बलिक्षेप करवो, ते पछी क्षेत्रदेवता, शांतिदेवता अने जलदेवताओने अनुकूल करवा निमित्ते तेमना कायोत्सर्ग करवा अने स्तुतिओ कहेवी.

ते पछी जलाशयमांथी पवित्र कलशोमां छाणीने जल भरवुं अने पाछा ते ज रीते धामधूमथी वाजित्रोना नादे दिशाओने गजवता नगरमां आवी जिनचैत्यने प्रदक्षिणा करी जल कलशो जिनचैत्यमां निरुपद्रव स्थाने स्थापवा. पछी प्रतिष्ठामण्डपना ४ खुणाओमां ४ उत्तम वेदिकाओ स्थापवी. वेदिकाओ ७ अथवा ९ एम विषम अंकनी करवी अने विधिज्ञाताए तेओ उपर वस्त्राच्छादन करवुं. प्रत्येक वेदिनी चारे दिशाओमां चार चार न्हाना घडाओ स्थापवा अने घडाओ उपर जवारानां पात्रो मूकवां.

अथवा तो (वर्तमान समयमां प्रचलित रीति प्रमाणे) विधिथी लावेल जलथी घडो भरीने मंत्र जाणनार विधिकार जिन-प्रतिमाना जमणा अंगनी दिशामां विधिपूर्वक कुंभस्थापना करे अने तेनी पासे दीवो स्थापे. माटीना शरावोमां अने वंश पात्रोमां

विधिथी व्रीहि परना जवारा वाववा, इत्यादि उत्सवना प्रथम दिवसे कार्यो करवा

प्रथमाह्निक कृत्यविधि—

मंडपप्रवेश—प्रतिष्ठोत्सवना प्रथम दिवसे प्रतिष्ठाचार्ये स्नात्रकारो साथे मंडपना मुख्यद्वारथी मंडपमां प्रवेश करवो. स्नात्रकारे रूप्यकलशमां सुवर्णजल लेई "ॐ जीरावली पार्श्वनाथ रक्षां कुरु कुरु स्वाहा" आ मंत्र वडे जल ७ वार मंत्री मंडपमां नीचे उपर चारे बाजुमां छांटवु, अने प्रतिष्ठागुरुए- ॐ भूरसि भूतधात्रि! सर्वभूतहिते देवि! भूमिशुद्धिं कुरु कुरु स्वाहा। आ मंत्र बोलता मंडपमां वधे वासक्षेप करी भूमिशुद्धि करवी, स्नात्रकारोए चंदनादि छांटवु, पुष्पो वेरवां, धूप उखेववो.

देववन्दनादि निमित्ते ज्यां पूर्व प्रतिष्ठित पंचतीर्थी आदी स्थापवी होय त्यां सिंहासनादिके स्थापन करी ते उपर—

"ॐ चतुर्मुखदिव्यसिंहासनाय नमः" ए मंत्रथी गुरुए वासक्षेप करवो

पछी ज्यां नवीन प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाओ स्थापवानी छे ते वेदी पासे जइ मुख्य प्रतिमाओना आसनस्थानो उपर सुगन्धी पदार्थो वडे स्वस्तिको अथवा समवसरणना त्रण गढो आलेखवा अने "ॐ अर्हत्पीठाय नमः" मंत्र वडे प्रतिष्ठागुरुए वासक्षेप करवो.

वेदीपूजन थया पछी शुद्धपणे तैयार करावेल अने घंटाकर्णना मंत्रथी २१ अथवा ७ वार अभिमंत्रित करेली गोळनी ५ सेर सुखडी बालकोने वहेंचवी

पूर्वोक्त सर्व विधि थया पछी शुभ समयमां नवीन प्रतिमाओ मंडपमां लाववी अने वेदी उपर प्रथम पूर्वाभिमुख अथवा

मूकवी, जे प्रतिमा कोइ स्थले स्थापीने पछी अंजनादि विधान करवुं होय तेनी नीचे पंचरत्न अक्षतादि मूकवा. प्रतिमाओ नीचे डावा भागे समूलो डाभ अने थोडी थोडी नदीनी शुद्ध वालुका उत्तराभिमुख अने पछी बधी दिशाओमां पथराववी.

पूर्वं प्रतिष्ठित प्रतिमा तेनी आगल स्थापेल सिंहासन उपर विराजमान करवी.

प्रतिमा मंडपमां स्थापन कर्या पछी स्नान भणावी अने मंगलार्थ चैत्यवंदन अने शान्त्यर्थ देवताना कायोत्सर्गो करवा.

चैत्यवन्दना-विधि—इर्यावही पडिकमी क्षमाश्रमणपूर्वक इच्छाकारेण संदिसह भगवन् चैत्यवंदन करुं ? कही—

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्व चिन्तामणीयते० इत्यादि, नमुत्थुणं०, अरिहंतचेइआणं०, अन्नत्थ०, १ नवकारनो का०, पारी "नमोऽर्हत्०" कही— अर्हंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं य०। ए स्तुति कहेवी, पछी—

लोगस्स०, सव्वलोए०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नवकार, पारी- ओमिति मन्ता यच्छासनस्य०, पुक्खरवरदीवड्ढे०, सुअस्स०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नवकार, पारी-नवतत्त्व युता त्रिपदी०, सिद्धाणंबुद्धाणं०, श्री शान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि का० वंदणवत्तियाए, लोगस्स १ सागरवरगंभीरा पर्यन्त, पारी-नमोऽर्हत्०—

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः०, सुअदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, नमोऽर्हत्०, वद वदति वाग्वादिनि०, संति देवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नवकार, नमोऽर्हत्०, श्री चतुर्विध संघस्य० इत्यादि.

शासनदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नव०, नमोऽर्हत्०, उपसर्गवलयविलयन० इत्यादि.

श्रीभवनदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नव०, नमोऽर्हत्०, ज्ञानादिगुणयुतानां० इत्यादि.

खित्तदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नव०, नमोऽर्हत्०, यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य० इत्यादि
भवनदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नव०, नमोऽर्हत्०, अम्बा बालाङ्किताङ्कासौ० इत्यादि
अच्छुत्तादेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नव०, नमोऽर्हत्०, चतुर्भुजा तडिद्वर्णा० इत्यादि.
समस्तवेयावच्चगराण सतिगराण सम्मदिट्ठिसमाहिगराणं करेमि का०, १नव०, नमोऽर्हत्०, सर्वेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे० इत्यादि.
१ नव० गणी, बेसी, नमुत्थुण, जावंति०, खमा०, जावंत केवि०. नमोऽर्हत्०,-ओमिति नमो भगवओ०, जयवीयराय०
कही विधि करता अविधि आशातना हुई० मिच्छामि दुक्कड । पछी जलयात्रा काढवी

(१) जलयात्राविधि

जलयात्रायोग्य उपकरण—पंचतीर्थी प्रतिमा १। सिद्धचक्र मंडल १। बाजोठ वा सिंहासन १। पाटलो १। स्नात्रयोग्य कलशिया ४। वालाकुंची १। अंगलूछणा २। हाथलूछणुं १। केसर चंदननी वाटकी २। धोतिया-अंगोछिया ४। उत्तरासणिया ४। कपूर डली १। फूल छाब वा पुडो १। अगरबत्ती पुडी १। धूपपुडी १। गेवासूत्र वा रक्तसूत्र कोयो १। नालियर[१] ४। फल ५। नैवेद्य सेर १। चोखा सेर १। रकेबी २। थाली २। काचनुं फानस १। धूपधाणु १। दर्पण १। पखो-वींजणो १। आरती १। मंगलदीवो १। घंटडी १। जवारा सहित वहेडा ४ अथवा मुख उपर नालिएर मूकी लाल पीला वस्त्रोवडे ढांकेल ४ गागर वा 'बेडिया (घडा)'। कलश उपाडनारी ४ स्त्रियो।

१-कलशो उपर मूकवाने जवाराना सरावलां तैयार न होय तो नालिएर ८ लेवा।

फूलमाला ४। बलिबाकलानी थाली १। थाली वेलण १-१। मींढल-मरडासींगीयुक्त गेवासूत्रना दोरा ४। ग्रहनो पाटलो १। घीलोटी १। रु पुंभो १। चन्द्रवो थुंठियुं तोरण १-१। स्नात्रयोग्य पंचामृतकलश १। जलकलश १। प्रक्षालकुंडी १। स्नात्रिया ४। वासक्षेप पुडी १। बदाम २१। पान २१। सोपारी २१। पैसा छुटा २५। वस्त्रना लाल बटका २-दोढ २ वहेंतनां। नीला बटका २-दोढ २ वहेंतना। लाल बटको १, हाथ १। पीलो बटको १, हाथ १। गलणुं १। दोरी लोटो वा सूत्रनुं सिंचणियुं १। दिक्पालनो पाटलो १। छत्र मेघाडंबर १। चामर २। कंकुनी वाटकी १। पंचशब्द वाजित्र। ध्वजा-वावटा। रथ वा पालखी। जाजम वा शेतरंजी।

आवश्यक सामग्रीनी तैयारी करी अनेक वाजित्रोना शब्दोथी दिशाओने गजवतो, छत्र चामर निशानडंका आदिथी शोभतो वरघोडो लेइने चतुर्विध संघ सहित पवित्र जलाशय उपर जवुं, त्यां पूर्वप्रतिष्ठित श्रीशांतिनाथनी अथवा श्रीपार्श्वनाथनी अने तेना अभावे गमे ते पंचतीर्थी प्रतिमा अने सिद्धचक्रमंडलने जलाशयने कांठे शुद्धभूमिकामां बाजोठ ढाली ते उपर अथवा तो सिंहासन उपर स्थापन करी जन्माभिषेक कलश भणवापूर्वक स्नात्रपूजा भणाववी. स्नात्र करतां बनी शके तो इन्द्रमाला आदिनो चढावो करी चढावो लेनारना हाथे वास-पुष्प-धूप-नैवेद्य वडे जिनपूजा कराववी, ते पछी प्रतिमा आगल ग्रहनो पाटलो मूकीने—

ॐ नमः सूर्याय स्वाहा, ॐ नमः सोमाय स्वाहा, ॐ नमो मंगलाय स्वाहा, ॐ नमो बुधाय स्वाहा, ॐ नमो बृहस्पतये स्वाहा, ॐ नमः शुक्राय स्वाहा, ॐ नमः शनैश्चराय स्वाहा, ॐ नमो राहवे स्वाहा,

ॐ नमः केतवे स्वाहा,

आ प्रमाणे प्रत्येक ग्रहनो नाम-मंत्र बोली ते ते ग्रहना स्थाने चन्दन पुष्पादि द्रव्यो चढाववा.

एज रीते दिक्पालोना पाटला उपर—

ॐ नम इन्द्राय स्वाहा, ॐ नमोऽग्नये स्वाहा, ॐ नमो यमाय स्वाहा, ॐ नमो निर्ऋतये स्वाहा, ॐ नमो वरुणाय स्वाहा, ॐ नमो वायवे स्वाहा, ॐ नमः कुबेराय स्वाहा, ॐ नम ईशानाय स्वाहा, ॐ नमो नागाय स्वाहा, ॐ नमो ब्रह्मणे स्वाहा

आ प्रमाणे दिक्पालोना नाम-मंत्रो बोली, ते ते पदविभाग उपर द्रव्यो चढाववा अने पाटलाओ उपर अनुक्रमे लाल अने पीत वस्त्र ओढाडवा

ग्रहो दिक्पालोने पूजीने सिद्धचक्रना मंडल उपर—ॐ ज्ञानाय नमः, ॐ दर्शनाय नमः, ॐ चारित्राय नमः ।

आम बोली ते ते पदोनु केसर चन्दन वडे पूजन करवु, पछी पूर्वादि दिशाओमा दिक्पालोना आह्वान पूर्वक बलिबाकुल उछालीने आरती मांगलिक दीपक उतारवा. पछी चैत्यवंदन करी, नमुत्थुण०, अरिहंतचेइयाण, वंद०, अन्नत्थ०, १ नवकारनो का०, पारी नमोऽर्हत्०, स्तुति.—

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्ध्यानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहसोच्यते ॥१॥

लोगस्स०, अरिहंत चे०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, १ नव० का०, स्तुतिः—

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यन्दह्रींश्च। आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥
पुक्खरवरदी०, सुअस्स०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, १ नव०, का०, स्तुतिः—
नवतत्त्वयुता त्रिपदीश्रिता, रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता। वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥
सिद्धाणं बुद्धा०, श्रीशान्तिनाथआराधनार्थं करेमि काउसग्गं०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, १ लोगस्स सागरवर गंभीरा सुधीनो
काउसग्ग, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—
श्रीशान्तिः श्रुतशान्ति-प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम्। नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः संतुषन्ति जने ॥४॥

श्री द्वादशांगी आराधना०, वंदण व०, अन्नत्थ०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—
सकलार्थसिद्धिसाधन-बीजोपांगा सदा स्फुरदुपांगा। अवतादनुपहतमहा-तमोपहा द्वादशांगी वः ॥५॥
संतिदेवयाए करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ०, १ नोकार०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—
श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणीम्। शिवशान्तिकरी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥
सासणदेवयाए करेमि काउसग्गं। अन्नत्थ०, १ नो० का०, नमोऽर्हत्, स्तुतिः—
या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी। साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥७॥
खित्तदेवयाए करेमि काउसग्गं। अन्नत्थ०, नो०, का०, नमोऽर्हत्, स्तुतिः—

यस्या' क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्र देवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥८॥

अच्छुत्ताए करेमि काउसग्ग । अन्नत्थ०, १ नो०, का०, नमोऽर्हत्, स्तुतिः—

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्याऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥९॥

समस्तवेयावच्चगराण संतिगराण सम्मद्दिट्ठिसमाहिगराण करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ०, १ नोकारनो का०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

सर्वेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादि कृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१०॥

जलदेवयाए करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ०, नो० १, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

मकरासनमासीनः, कुलिशाङ्कुशचक्रपाशपाणिचयः । आश्यामाशापालो, विकिरतु दुरितानि वरुणो वः ॥११॥

ए पछी—

करोतु शान्तिं जलदेवताऽसौ, मम प्रतिष्ठाविधिमाचरिष्यतः ।
आदास्यतो वा मम वारि तत्कृते-प्रसन्नचित्ताः प्रदिशत्वनुज्ञा ॥१२॥

पछी १ नोकार कही, बेसी, नमुत्थुण, जावंति चे०, खमासमण, जावत केवि साहू०, नमोऽर्हत्, स्तवन नीचेनुं—

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरियउवज्झाय । वरसव्वसाहुमुणिसंघ-धम्मतित्थप्पवयणस्स ॥१॥

सप्पणवं नमो तह भगवईए, सुयदेवयाइ सुहयाए । सिवसंति देवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥
इंदाऽगणिजंमनेरइय-वरूणवाउकुबेरईसाणा । बंभो नागुत्ति दस-ण्हमवि य सुदिसाण पालाणं ॥३॥
सोमयमवरूण वेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं । तह लोगपालयाणं, सूराइगहाण य नवण्हं ॥४॥
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुठाणं । सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइ नवकारओ धणियं ॥५॥

जयवीयराय पूरा कहेवा. पछी विधिकार कलशोना कंठे मेवाफल बांधे, गुरु कलशो उपर वासक्षेप करे. केशर चन्दनना छांटा
नांखे, प्रतिष्ठाविधिकार श्रावको ते कलशोने जल पासे स्थापन करी पुग नालिचेर, फल ५, जलमां नांखे. पछी—

क्षीरोदधे ! स्वयंभूश्च, सरः पद्ममहाहृद !। शीते ! शीतोदके ! कुण्ड !, जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥१॥
गंगे ! च यमुने चैव, गोदावरि ! सरस्वति !। कावेरि ! नर्मदे ! सिन्धो !, जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥२॥

आ बे श्लोको बोलीने वस्त्र गली ते जलवडे ४ कलशो संपूर्ण भरवा, जल पासे लाडवा आदि नैवेद्य मूकी धवल मंगल
देवरावतां, वाजित्रोना नादपूर्वक पवित्र शरीर तथा वस्त्रवाली ४ कुलीन स्त्रियोने ते कलशो उपडावी, नम्र मंगाल आदिथी संघनी
भक्ति करे. महोत्सवपूर्वक देहरासरे आवी देहराने ३ प्रदक्षिणा दई जलकलशो तथा जिनबिंब भराबा आदि पवित्र स्थाने सुविहित
स्थापन करे, धवलमंगल गीत गवरावे, तथा वाजित्रो वगडावे. इति जलयात्रा विधिः ॥

अथ कुंभस्थापना विधि ॥

आवश्यक सामग्री—कुम स्थापना माटे नीचे लखेल सामग्री प्रथम तैयार करवी, सुन्दर कोरो धोळेल कुंभ १, कुंभमा जल रेडवा माटे जरा क म्होटो बीजो कोरो कुंभ १, अखोट जलनो हांडो अथवा घडो, जलयात्राविधिथी लावेल जल, गंगाजल, कंकुनी वाटकी १, केसर चंदननी वाटकी १, अघाडानी अथवा सरियानी लेखण १ कोरी, वस्त्र अने भात, अथवा जव अने जुवार सेर १।, पंचरत्ननी पोटली, रूपानाणु १, पंचपल्लव पैकीनां अथवा नागरवेलनां पान ४, नालियेर १, नीलु वस्त्र चोरस हाथ १।, मींढल-मरोडाफली नाधेल गेवाळवस्तु कंकण १, रुपेरी वर्क पानां ३, फूलमाला १, वासक्षेप पुडी १, अक्षत रकेबी १, फल १, नैवेद्य सेर १।), आरती दीवो तैयार करेल १-१।

उपर्युक्त सामान १ कुंभ स्थापनानो छे जो बे स्थानके २ कुंभ स्थापवाना होय तो सामान आथी बमणो तैयार करवो जोईये.

विधि—उत्सवना प्रथम दिवसे वा ५-७ दिवस पूर्वे अने छेवटे मुहूर्तना दिवसे पण कुंभचक्र अने चन्द्रबलवालो शुभ दिवस जोईने कुंभस्थापना करवी.

प्रतिष्ठामां कुंभस्थापना बे स्थले करवानी होय छे. १-ज्यां जिननी स्थापना करवानी होय त्या जिनना जमणा हाथनी तरफ, अने २-जे स्थानके-मंडप आदिमां स्थापनीय जिन उत्सव दर्मियान स्थापित होय त्यां जिनना जमणा हाथनी तरफना भूमि भागमां.

स्थापनीय कुंभ काला दाग विनानो, सुन्दर आकारवालो पाको होवो जोईये. अने त्या सुधी नेने धोळीने उपर-अष्टमंगल

आदि मांगलिक चित्रो चीतराववां, जे स्थानके कुंभ स्थापवो होय त्यां सधवा स्त्रीना हाथे प्रथम कंकुनो स्वस्तिक करावी ते उपर जव अने छालिनो अथवा जव अने जुवार सेर १। नो स्वस्तिक कराववो, प्रथम कुंभने धोइ धूपीने तेमां केसरचंदननो स्वस्तिक करवो अने फरतो च्यारे तरफ—"ॐ ह्रीँ सर्वोपद्रवान् नाशय नाशय स्वाहा." आ मंत्र केसर-चन्दन वडे आघाडानी लेखणथी लखवो, पछी पंचरत्ननी पोटली कुंभमां मूकवी, रुपानाणुं पण ए ज वखते कुंभमां नाखी देवुं.

ए पछी जलयात्रा विधिथी लावेल जल अने गंगाजल मेलवेल अचोट जलनी अखंड धाराए करी सधवा स्त्रीना हाथे ते कुंभ भराववो, अथवा तो कुंभ सधवाना हाथमां आपीने अखंड जलधाराथी भरवो. कुंभ भराया पछी तेना मुखे च्यारे दिशाओमां १-१ पान ऊंची शिखाये मूकवुं, वच्चे श्रीफल मूकीने उपर सौभाग्य मंत्र अभिमंत्रित मींढल-मरोडा फलीयुक्त कंकण बांधवुं, कण्ठे फूलमाला पहेराववी, वस्त्र उपर केसर-चन्दन लगाडी रुपेरी वर्कना पानां छापी माथा उपर ईंढाणी मूकावी ते कुंभ ते सधवा स्त्रीने उपडाववो, अने भगवानने त्रण प्रदक्षिणा अपावी ते कुंभ पूर्वे करेल स्वस्तिक उपर "ॐ ह्रीँ ठः ठः स्वाहा" ए मंत्र ७ वार गणीने श्वासकुंभक 'स्थिर' करी स्थापन कराववो, कुंभ स्थाप्या पछी गुरुनो योग होय तो गुरुना हाथे ते उपर वासक्षेप कराववो, गुरुना अभावे विधिकार श्रावके वासक्षेप करवो, पछी कुंभनी आगल पाटलो ढाली सधवा स्त्रीना हाथे अक्षतनी गहुंली कराववी, उपर फल मूकाववुं, अने नैवेद्य ढोराववुं. जवारा वावेल होय तो तेमांथी ४ सरावलां कुंभनी च्यारे बाजु मूकाववां, जवारा वावेल न होय तो पाछलथी ववरावीने पासे मूकाववा.

कुमनी आगल सधवा स्त्रीना हाथे प्रतिदिन गहुंली कराववी, धवलमंगल गीत गवरावता, कुंभनी पासे हिंसक जीव-मार्जार आदिने जवा देवा नहिं, रजस्वलास्त्रीनी अथवा कोइ पण अपवित्र मनुष्यनी दृष्टि पडवा देवी नहि

(१) अखण्ड दीपकस्थापना— ( )

उपकरणो—फाणस म्होटु १, कोडियुं म्होटु १, सत्तावीस तारनी दीवेट १, पचरत्ननी पोटली १, रूपानाणुं १, त्रावानाणु १, मींढल मरोडाफलीवालुं कंकण १, गायनुं घृत सेर १, दीवासलीनी पेटी १॥

विधि—कुंभस्थापननो सामान तैयार करती वखते ज उपरनो सामान पण तैयार करीने साथे राखवो, अने कुंभस्थापन पछी तरत ज फाणसने मंत्रित कंकण बांधी कोडियामां पचरत्ननी पोटली, रूपानाणु अने त्रांबानाणुं मूकवा ते पछी सधवा स्त्रीना हाथे ते कोडियामां दीवेट मूकावी गायनु घी पूराववु अने दीपक चेताववो. दीपक चेतावती वखते—

ॐ घृतमायुर्वृद्धिकर, भवति परं जैनदृष्टिसंपर्कात् । तत्संयुतः प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः ॥१॥

आ श्लोक ३ वार बोलवो—ते पछी दीपक सहित सधवा स्त्री जिनप्रतिमाने त्रण प्रदक्षिणा देइने कुंभनी जोडे पूर्वे करेल कंकु अथवा चंदन-केसरना स्वस्तिक उपर फाणसनी अन्दर दीपक स्थापन करे अने ते पछी कुंभ अने दीपकनी आगे आरती-मंगल दीवो करे

(२) कुम्भ स्थापनविधि-प्राचीन—

आजकाल आपणामां प्रतिष्ठा पूजा आदिना प्रसंगोमां विधिकारोमां कुम्भस्थापननी जे विधि प्रचलित छे, ते घणी अर्वाचीन

छे. एटलुं ज नहिं पण घणा मतभेदो पण तेमां जोवामां आवे छे, अमो आ स्थले 'शान्तिपर्वविधि'मां लखेल एक जुनामां जुनी विधि आलेखीये छीए. आशा छे के प्राचीन वस्तुना श्रद्धालु क्रियाकारको आनो उपयोग करशे.

चन्द्रबलादियुक्त शुभवेलामां जेनां माता–पिता, सासू–ससरो अने भर्तार जीवित होय एवी निःशल्य निर्दोष साधर्मिक स्त्रीने पोताना घरे तेडी तेनो तांबूल आदिथी यथाशक्ति उपचार करीने शुभ अने साव नवो पाको माटीनो घडो लेइ चावल आदिना चूर्णवडे धोली शुभ स्थानथी लावेल जलथी भरवो. अंदर सोपारी अने सुवर्ण नाखी कंठे सुगंधी पुष्पमाला पहेरावी, मुखे ४ नागरवेलनां पान चारे दिशामां स्थापी, कलशनुं मुख ढांकी ते स्त्रीने उपडाववो, कलश उपर 'चन्द्रवो, रखाववो, पछी पंचशब्द वाजित्रो वागतां साथे शुभ स्त्रियो द्वारा गीत गवावतां वच्चे वच्चे शंख, मृदंग, ढोल, आदि वगाडनाराओने दान आपती सुन्दर वेशे शोभती ते कलश उपाडनारी स्त्री धूमधाम पूर्वक देवालयना बाह्य द्वार पासे आवे, त्यां द्वारनी भींते चन्दन केसरना हाथा देइने विधि पूर्वक देवालयमां प्रवेश करे अने गहुंली उपर माची आदि राखीने ते उपर कलशनी स्थापना करे. कलशनी स्थापना थई एटले मुहूर्त सधायुं एम समजवुं.[१]

नवांग वेदीरचना अने यववारक वपन।

आ नवांग वेदीओनां वर्तनो (वासणो) मंगलगीतो अने वाजित्रोना शब्दो पूर्वक शुभ चोघडियामां कुंभारना घरथी मंगाववां अने मंगल घरमां एक बाजुमां राखी मूकवां. कुंभस्थापन कर्या पहेलां अने न बनी शके तो पछी प्रतिष्ठा–मण्डपना ४

१ आ कुंभस्थापन विधि श्रीजिनप्रभसूरिजीए "शान्तिपर्वविधि"मां लखेल छे.

खुणाओमा नव-उतर मापना ९-९ माटीना गामणो (वर्तनो) उपरा उपरी मूकी तेने फरता ४-४ वासडाओ रोपी गेवासूत्र वीटीने नवाग वेदीओ मजबूत करवी, अने उपर जवारानुं एक एक सरावलुं मूकवु

आ नवाग वेदीने जूनी भाषामा 'नवागवेदि' ए नामथी उल्लेखी छे. आजकाल मारवाडमा एने 'वेह' कहे छे.

वर्तमान समयना विधिकारो आ 'नवांगवेदीने' विवाहनी 'चोरी' तरीके उपयोगमा ले छे.

कुंभस्थापना पहेलां अने तेम न बने तो ते पछी जवारा पण वाववा जवारा १६ सरावलाओमा अने ४ गामनी २८ छावडिओमा वावना जोइये.

जवारा वावना माटे जंगलनी पीली माटी अथवा तो शुद्ध जलाशयनी 'माटी सुडला (टोपला) ५ अने गायोना वाडामांनुं खातर सुडला २ मंगावी कूटावीने बारीक करवा. कांटो कांकरो दूर करी बन्नेने भेगा करी थोडुं थोडुं पाणी छांटता ऊंचुं-नीचुं करी मीलु चक्क करवु अने सरावलाओमा तेमज वाशनी छावडियोमा भरवुं. सरावलानी कोर १॥ आंगल अने छावडियोनी कोर बे आंगल खाली राखवी पछी तेओमा जव अने व्रीहि भेगा करी वाववा. एक एक सराव अने छाबडीमा एक एक मूठी धान्य वाववुं. बने सरखुं विखेरीने उपर मेलवेल माटी-खातर नाखी बीजने ढांकी देवुं, आंगलनो थर आवे एटलु माटी-खातर उपर नाखवु, पछी झारी वडे अथवा हाथना आंगला नीचे राखीने थोडुं थोडुं पाणी छांटीने जवारा पावा. सरावलाओमा पाणी वधारे छांटवाथी जवारा गली जाय छे, माटे उपर पड्यु रहे एटलुं पाणी सरावलामा न छांटवु. मात्र सांजे अने सवारे २ वार ज पाणी छांटवुं. वाशनी छाबडियोमां पाणी वधारे अने वधु वार छांटवुं, तेमां गलवानो भय नथी. वधारे पडतुं पाणी हशे तो ते झरी

जशे, अने 'जवारा' सारा उगशे. उन्हालामां चोथे, चोमासामां पांचमे अने शीयालामां छट्ठे दिवसे जवारा उगे छे, माटे बनता सुधी वेलासर वाववा, बहु वहेला नहिं तो पण उत्सवना पहेला दिवसे तो अवश्य वाववा ज जोईये. कुंभस्थापना भले बादमां थाय तेनो वांधो नथी.

अर्वाचीन विधिओमां जवारा ब्राह्मणना हाथे अथवा ब्रह्मचारीना हाथे ववराववाना उल्लेखो छे; पण प्राचीन कल्पोमां एवो नियम नथी. एटले निर्दोष शुद्ध वस्त्रधारी गमे ते होशियार माणस जवारा वावी शके छे.

आधुनिक विधिओमां सात धान्य वाववानुं लखे छे. पण ए शास्त्रीय वस्तु नथी. "यववारका व्रीहियवांकुरमयाः" आवुं प्राचीन कल्पोनुं वचन होइ यव-व्रीहिना जवारा वाववा एज योग्य गणाय.

जवारा जो वहेला वाव्या होय अने उगी गया होय तो जलयात्रामां ४ कलशो उपर ४ सरावलां मूकवां, पण आजकाल विधिकारो म्होडा आववाना कारणे जवारा म्होडा ववाय छे. ने जलयात्राना जलकलशो उपर नालीएर मूकवानी अने स्थापित कुंभने फरतां ४ जवारानां पात्रो मूकवानी प्रवृत्ति चालु थइ छे, तेथी स्थापित कलशोने फरतां ४-४ जवारानां पात्रो मूकवां.

आज-काल नवांगवेदीओ उपर विधिकारो जवारानां पात्रो मूकावता नथी, पण मौलिक विधिओना विधान प्रमाणे ४ वेदीओ उपर ४ जवारापात्र अवश्य मूकवां जोईये.

मौलिक प्रतिष्ठा विधि प्रमाणे नंद्यावर्तना पाटलाना ४ खूणाओमां ४ गाडवा स्थापी ते उपर जवारानां ४ पात्रो मूकवानुं विधान छे, पण आज-काल आ विधि प्रमाणे नंद्यावर्तना पाटलाने खूणे गाडवा थपाता नथी ने जवारा मूकाता नथी, पण ए प्राचीनविधि चालवी जोईये, एम अमो मानीये छीये.

२ द्वितीयाह्निकर्म ।

नन्द्यावर्त आलेखन–पूजनविधि, आह्निकयोजकर्म ।

श्रीपर्णीपट्टके चन्द्र–चन्दनाभ्यां विलेपिते । नन्द्यावर्तं लिखेद्धीमान्, शोभनं मध्यवर्तुले ॥३८॥
द्वितीये वलये लेख्या, परमेष्ठिपदावलिः । ज्ञानादिकत्रयं चैव, तृतीये जिनमातरः ॥३९॥
चतुर्विंशतिरालेख्या–श्चतुर्थे वलये ततः । कृत्वा षोडश कोष्ठानि, रोहिणीप्रमुखा न्यसेत् ॥४०॥
पञ्चमे वलये विद्या–देवीनामुपरि क्रमात् । देवा लौकान्तिका लेख्या–श्चतुर्विंशतिसंख्यकाः ॥४१॥
षष्ठेऽष्टकोष्ठके वृत्ते, सौधर्मादिसुरेश्वराः । तद्देव्यश्च समालेख्या–श्चतुर्देवनिकायजाः ॥४२॥
सप्तमेऽष्टगृहे वृत्ते, दिशां पालान् विलेखयेत् । अष्टमे वलयेऽप्यष्टगेहे, लेख्या ग्रहास्तथा ॥४३॥
अष्टवृत्तबहिर्भागे, प्राकारान् त्रीन् विलेखयेत् । ध्वजतोरणसंयुक्त–चतुर्द्वारोपशोभितान् ॥४४॥
आद्यादारभ्य सर्वेषु, वृत्तेषु स्वस्वनामभिः । पूजयेद् वासचूर्णेन, सुगन्धेन सुरान् गुरुः ॥४५॥
आच्छाद्याऽखण्डवस्त्रेण, सितेनाऽथ सुगन्धिना । संपूज्य बलिपुष्पाद्यैः पट्टः स्थाप्यो जिनाग्रतः ॥४६॥

परितश्चतुरः कुम्भान्, सयवारशरावकान् । स्थापयित्वा गुरुर्देव-वन्दनं तनुयात्ततः ॥४७॥

भा०टी०—कपूर चन्दनना रस वडे लेपेला सेवनना पाटला उपर ८ गोलवृत्त बनावीने बुद्धिमाने मध्य वर्तुलमां सुंदर नन्द्यावर्तनो आलेख करवो. बीजा वलयमां ८ कोठा करी ५ परमेष्ठिपदो अने ३ ज्ञानादि पदो आलेखवां. पछी त्रीजा वर्तुलमां चोवीस जिनमाताओनां नाम लखवां, ते बाद चोथा वलयमां १६ कोठाओ बनावी रोहिणी आदि १६ विद्यादेवीओ आलेखवी. विद्यादेवीओ पछी पांचमा वलयमां २४ लोकान्तिक देवोनां नामो आलेखवां. छठ्ठा वलयनां ८ घरोमां चारे निकायना सौधर्मा-दि इन्द्रादिके सहित तेमनी देवीओ आलेखवी.

सातमा वलयना ८ घरोमां ८ दिशापालो लखवां. आठमा वलयना ८ घरोमां ग्रहोनो आलेख करवो. आठ वृत्तोनी बहार ध्वजो, तोरणो अने चार द्वारोथी शोभता ३ प्राकारो (समवसरणना गढो) आलेखवा.

उपर प्रमाणे आलेखीने तैयार करेल नन्द्यावर्त पदना मध्यभागथी मांडीने, पहेला, बीजा, त्रीजा आदि क्रमथी, तत्र स्थित देवोनुं नाममन्त्रना उच्चार पूर्वक प्रतिष्ठाचार्ये वासचूर्ण करीने त्रीजा दिवसे पूजन करवुं. पुष्पादि सुगन्धि पदार्थोथी वासित अने सुगन्धि बनावेल अखंड श्वेत वस्त्रे ढांकीने उपर फल-नैवेद्यादि चढावी नन्द्यावर्तनो पट्टक जिनप्रतिमानी आगल स्थापवो. नन्द्यावर्तपट्टकनी फरता चार दिशामां चार कलशो स्थापवा, कलशो उपर यवारा पात्रो मूकवां, ए बधुं कार्य समाप्त करीने प्रतिष्ठाचार्ये देववन्दन करवुं.

द्वितीयाह्निक कृत्य विधि—

नन्द्यावर्त आलेखन अने पूजन योग्य सामग्री—आलेखन योग्य सेवननो अथवा अन्य शुभ काष्टनो पाटलो चोरस १ लोहाऽस्पृष्ट। सोनानी पिंछी, कलम अथवा जाईनी लेखण १, आलेखन योग्य। सदश अखंड वस्त्र १, नंद्यावर्त, लेखक योग्य। कर्पूरमिश्र चन्दनरसनी वाटकी १, सप्तलेप योग्य। कर्पूर-कस्तुरी-गोरोचना संमिश्र केसरनी वाटकी १। त्राबानो अथवा रूपानो आकार १, वृत्त खेंचवाने॥

पूजनयोग्य सामान—

कर्पूरचूर्ण, वासचूर्ण, पूजन योग्य। गाडवा (न्हाना घडा धोलेला) ४। यवारा पात्र ४। पान्च प्रकारना पक्वान-नैवेद्य सेर १।। केसर चन्दन घोल वाटकी १। पुष्प रकेबी अथवा छाब १। मातृ धान्य रकेबी १। अक्षत रकेबी १। मेवो रकेबी १। गेवा सूत्र कोको १। धूप तोला ५। धूपधाणुं १। दीपक फाणस १। घृतवाडी १। जलपात्र १। कलशियो। सदशवस्त्र १, आच्छादन योग्य सफेत। श्रीफल १।

नन्द्यावर्त आलेखन विधि—सेवन अथवा बीजा शुभ काष्टना १ गज समचोरस पाटला ने कर्पूर-मिश्रित चदनरसनो अेक पछी अेक ७ वार लेप करी सुकाई गया पछी तेना मध्यभागथी छत्र समावीने अथवा तो त्राबाना परकार वडे ८ वृत्तो (वलयो) पाडवा

मध्यगत प्रथम वलयमां— मध्यभागमा कर्पूर-कस्तुरी-गोरोचन मिश्रित केसरना रस वडे सोनानी पिंछी या सोनानी लेखणथी अथवा तो जाईनी लेखणथी ९, खूणावालो प्रदक्षिणावर्त नन्द्यावर्त आलेखवो, तेना मध्यमा प्रतिष्ठाप्य जिनप्रतिमा

चिन्तववी. जिननी जमणी तरफ शक्रेन्द्र तथा श्रुतदेवता अने डाबी तरफ ईशानेन्द्र तथा शान्तिदेवतानी स्थापना करवी अने मध्यभागमां " ॐ नमोऽर्हद्भ्यः " लखवुं.

२- बीजा वलयमां—पूर्वादि दिशाओमां ८ कोष्ठको पाडी तेओमां अनुक्रमे—

१ ॐ नमः सिद्धेभ्यः। २ ॐ नमः आचार्येभ्यः। ३ ॐ नमः उपाध्यायेभ्यः। ४ ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः। ५ ॐ नमो ज्ञानेभ्यः। ६ ॐ नमो दर्शनेभ्यः। ७ ॐ नमश्चारित्रेभ्यः। ८ ॐ नमः शुचिविद्यायै।

ए आठ पदो पैकी सिद्धादि. ४ दिशाओमां अने ज्ञानादि ४ विदिशाओमां लखवां.

३–त्रीजा वलयमां—पूर्वादि आठ दिशाओ पैकीनी प्रत्येक दिशामां ३–३ कोष्ठको पाडी एकन्दर २४ घरो करी प्रत्येक घरमां जिनमातानुं चतुर्थ्यन्त स्वाहान्त नाम प्राकृत भाषामां लखवुं.

१ ॐ मरुदेवीए स्वाहा, २ ॐ विजयाए स्वाहा. ३ ॐ सेणाए स्वाहा, ४ ॐ सिद्धत्थाए स्वाहा, ५ ॐ मंगलाए स्वाहा, ६ ॐ सुसीमाए स्वाहा, ७ ॐ पुहवीए स्वाहा, ८ ॐ लक्खणाए स्वाहा, ९ ॐ रामाए स्वाहा, १० ॐ नंदाए स्वाहा, ११ ॐ विण्हूए स्वाहा, १२ ॐ जयाए स्वाहा, १३ ॐ सामाए स्वाहा, १४ ॐ सुजसाए स्वाहा, १५ ॐ सुव्वयाए स्वाहा, १६ ॐ अचिराए स्वाहा, १७ ॐ सिरीए स्वाहा, १८ ॐ देवीए स्वाहा, १९ ॐ पभावईए स्वाहा, २० ॐ पउमावईए स्वाहा, २१ ॐ वप्पाए स्वाहा, २२ ॐ सिवाए स्वाहा, २३ ॐ वामाए स्वाहा, २४ ॐ तिसलाए स्वाहा।

॥ ६४ ॥

४-जिनमातृ वलय उपरना चोथा वलयमां—पूर्वादि आठ दिशाओमा बे बे कोष्ठ करवां, एटले आखा वलयमा १६ थशे आ कोष्ठकोमा नीचे प्रमाणे १६ विद्यादेवीओ लखवी.—

ॐ रोहिणीए स्रां रमाँ स्वाहा। ॐ पन्नत्तीए ह्रीं क्षीं स्वाहा। ॐ वज्रसिंखलाए लीं स्वाहा। ॐ वज्रंकुसीए रमां वाँ स्वाहा। ॐ अपडिचक्काए श्रूँ स्वाहा। ॐ पुरिसदत्ताए लमाँ स्वाहा। ॐ कालिए सां हैं स्वाहा। ॐ महाकालीए ॐ क्ष्मों स्वाहा। ॐ गोरीए यूँ ह्र्रूँ स्वाहा। ॐ गधारीए रँ क्षाँ स्वाहा। ॐ सव्वत्थमहाजालाए लूँ ह्रां स्वाहा। ॐ माणवीए यूँ क्ष्माँ स्वाहा। ॐ वइरुट्टाए सूँ माँ स्वाहा। ॐ अच्छुत्ताए यूँ माँ स्वाहा। ॐ माणसीए ग्लूँ माँ स्वाहा। ॐ महामाणसीए ह्रीं सूँ स्वाहा।

५-विद्यादेवीओ उपरना पांचमा वलयमां—पूर्वादि दिशाओमा ३-३ कोठा पाडवा आ कोठाओमा लोकान्तिक देवोना नामो लखवा, ते नीचे प्रमाणे—

१ ॐ सारस्वतेभ्यः स्वाहा। २ ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा। ३ ॐ वह्निभ्यः स्वाहा। ४ ॐ वरुणेभ्यः स्वाहा। ५ ॐ गर्दतोयेभ्य स्वाहा। ६ ॐ तुषितेभ्यः स्वाहा। ७ ॐ अव्याबाधेभ्यः स्वाहा। ८ ॐ रिष्टेभ्यः स्वाहा। ९ ॐ अग्न्याभेभ्यः स्वाहा। १० ॐ सूर्याभेभ्यः स्वाहा। ११ ॐ चन्द्राभेभ्यः स्वाहा। १२ ॐ सत्याभेभ्यः स्वाहा। १३ ॐ श्रेयस्करेभ्यः स्वाहा। १४ ॐ क्षेमकरेभ्यः स्वाहा। १५ ॐ वृषभेभ्यः स्वाहा। १६ ॐ कामचारेभ्यः स्वाहा। १७ ॐ निर्माणेभ्यः स्वाहा। १८ ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यः स्वाहा। १९ ॐ आत्मरक्षितेभ्यः स्वाहा। २०

स्वाहा। २१ ॐ मरुतेभ्यः स्वाहा। २२ ॐ वसुभ्यः स्वाहा। २३ ॐ अश्वेभ्यः स्वाहा। २४
ॐ सर्वरक्षितेभ्यः स्वाहा। २१ ॐ मरुतेभ्यः स्वाहा। २२ ॐ वसुभ्यः स्वाहा। २३ ॐ अश्वेभ्यः स्वाहा। २४
ॐ विश्वेभ्यः स्वाहा।

६ छट्ठा वलयमां–आठ दिशाओमां ८ खानां पाडी पूर्वादि दिशाओमां—१ ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा।
२ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा। ३ ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा। ४ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा। ५ ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यः
स्वाहा। ६ ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा। ७ ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा। ८ तद्देवीभ्यः स्वाहा।

७–सातमा वलयमां–आठ कोठाओ करी तेमां पूर्वादि क्रमथी नीचे प्रमाणे आठ दिशापालोने लखवा— १ ॐ
इन्द्राय स्वाहा। २ ॐ अग्नये स्वाहा। ३ ॐ यमाय स्वाहा। ४ ॐ निर्ऋतये स्वाहा। ५ ॐ वरुणाय स्वाहा।
६ ॐ वायवे स्वाहा। ७ ॐ कुबेराय स्वाहा। ८ ॐ ईशानाय स्वाहा।

८–आठमा वलयमां–पण आठ कोठा करवा अने पूर्वादि दिशाओमां—ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा। ॐ सोमेभ्यः
स्वाहा। ॐ मंगलेभ्यः स्वाहा। ॐ बुधेभ्यः स्वाहा। ॐ बृहस्पतिभ्यः स्वाहा। ॐ शुक्रेभ्यः स्वाहा। ॐ शनै-
श्चरेभ्यः स्वाहा। ॐ राहु–केतुभ्यः स्वाहा।

आठ वलयोनी बहार चार चार द्वारयुक्त त्रण प्राकारो (गढो) बनाववा. प्राकारोना पूर्वादि द्वारो शान्ति १, भूति २, बल
३, आरोग्य ४, नामना तोरणो वडे शोभाववा, अने ते द्वारो उपर धर्म १, मान २, गज ३, अने सिंह ४, नामक ध्वजो आलेखवा.
प्रथम प्राकारना पूर्वादि द्वारो उपर सोम १, यम २, वरुण ३ अने कुबेर ४, नामना चार प्रतिहारो आलेखवा, प्रतिहारोना

हाथमा अनुक्रमे धनुष्य १, दण्ड २, पाश ३ अने गदा ४, ए आयुधो आपवा.

त्रीजा मध्यम प्राकारना पूर्वादि द्वारो उपर अनुक्रमे जया १, विजया २, अजिता ३, अने अपराजिता ४, ए नामक द्वार-पालिकाओनो विन्यास करवो

त्रीजा बाह्य प्राकारना चारे द्वारोए यष्टिआयुधवाला तुम्बरुनो आलेख करवो.

प्रथम प्राकारमा आग्नेयादि ४ विदिशाओमा १२ सभाओ आलेखवी, ते आ प्रमाणे—

आग्नेयी विदिशामा साधुओ १, वैमानिक देवीओ २, अने साध्वीओ ३ एम त्रण सभाओ आलेखवी.

नैर्ऋतेयी विदिशामा भवनपतिदेवीओ १, व्यन्तरदेवीओ २, अने ज्योतिष्कदेवीओ ३, एम त्रण सभाओ आलेखवी.

वायवी विदिशामा भवनपतिदेवो १, व्यन्तरदेवो २, अने ज्योतिष्कदेवो ३, ए त्रण सभाओ आलेखवी.

ऐशानी विदिशामा वैमानिकदेवो १, मनुष्यपुरुषो २, अने मनुष्यस्त्रियो ३, ए त्रण सभाओ आलेखवी.

बीजा प्राकारनी अंदर तिर्यंचो आलेखवा, अने त्रीजा प्राकारनी अंदर देव मनुष्योना यानो अने वाहनो आलेखवा

त्रीजा प्राकारनी बहार मनुष्यो, देवो, आदिना आलेखो करवा.

प्रत्येक द्वारनी बंने तरफ कमलिनीवनशोभित वावडीओ आलेखवी.

ते पछी वज्रलाञ्छित इन्द्रपुर दश दिशाओमा "परविद्याक्ष. फट्" लखवु अने कोण विभागोमां "परमन्त्रा क्ष. फट्" लखवुं, छेल्ले चारे खूणाओमा ४ पूर्णकलशो लखवा अने तेनी बहार वायुभवन आपवुं.

नन्द्यावर्त पूजन विधि—नन्द्यावर्तनुं पूजन करतां प्रत्येक पदस्थित देवना नामनी आदिमां "ॐ" अने अन्तमां चतुर्थी विभक्ति लगाडी पूजार्थक 'नमः' शब्दनो प्रयोग करवो.

नन्द्यावर्तनुं पूजन वासक्षेप तथा कर्पूरना चूर्ण वडे प्रतिष्ठाचार्यना हाथे करवानुं विधान छे, जो प्रतिष्ठाचार्य अेकथी अधिक होय तो पूजन मुख्याचार्ये करवुं.

१—पूजाना आरंभमां प्रथम वलयना मध्य भागे परमेष्ठिमुद्राअे—

"ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय, चतुर्मुखपरमेष्ठिने, त्रैलोक्यगताय, अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय, देवाधिदेवाय, दीव्यशरीराय, त्रैलोक्यमहिताय, आगच्छ आगच्छ स्वाहा।"

आम आह्वान करी "ॐ जिनाय नमः" आ मंत्रथी वास कर्पूर वडे नन्द्यावर्त स्थित जिननुं पूजन करवुं, पछी जिननी जमणी बाजुमां "ॐ शक्रेन्द्राय नमः" ॐ श्रुतदेवतायै नमः। अने डाबी बाजूमां ॐ इशानेन्द्राय नमः ॐ शान्तिदेवतायै नमः। आम नाम मंत्रो बोलीने शक्रेन्द्र, श्रुतदेवता, ईशानेन्द्र अने शान्तिदेवतानी वासचूर्ण पूजा करवी.

२—बीजा वलयना पूर्वादि कोष्ठकोमां सृष्टिक्रमे—

ॐ नमः सिद्धेभ्यः १, ॐ नमः आचार्येभ्यः २, ॐ नमः उपाध्यायेभ्यः ३, ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः ४, ॐ नमः ज्ञानेभ्यः ५, ॐ नमः दर्शनेभ्यः ६, ॐ नमश्चारित्रेभ्यः ७, ॐ नमः शुचिविद्यायै ८,

आ प्रमाणे नाम मंत्रोच्चारण पूर्वक आलेखक्रमे वास–चूर्णवडे पूजा करवी.

३—त्रीजा वलयमा-२४ जिनमाताओनी नीचे प्रमाणे नाम मंत्रो वडे वासचूर्णे पूजा करवी.

ॐ मरुदेवीए नमः १, ॐ विजयाए नमः २, ॐ सेणाए नमः ३, ॐ सिद्धत्थाए नमः ४, ॐ मंगलाए नमः ५, ॐ सुसीमाए नमः ६, ॐ पुहवीए नमः ७, ॐ लक्खणाए नमः ८, ॐ रामाए नमः ९, ॐ नन्दाए नमः १०, ॐ विण्हूए नमः ११, ॐ जयाए नमः १२, ॐ सामाए नमः १३, ॐ सुजसाए नमः १४, ॐ सुव्वयाए नमः १५, ॐ अचिराए नमः १६, ॐ सिरीए नमः १७, ॐ देवीए नमः १८, ॐ पभावइए नमः १९, ॐ पउमावइए नमः २०, ॐ वप्पाए नमः २१, ॐ सिवाए नमः २२, ॐ वामाए नमः २३, ॐ तिसलाए नमः २४.

अहीं बधे 'नमः' शब्द पूजाना अर्थमां छे, प्रणाम अर्थमां नथी. एज प्रमाणे आगे पण जाणवुं.

४—चोथा वलयमां— पूर्वादि प्रत्येक दिशाना २-२ कोष्ठकोमा—

ॐ रोहिणीए नमः १, ॐ पन्नत्तीए नमः २, ॐ वज्जसिंखलाए नमः ३, ॐ वज्जकुसीए नमः ४, ॐ अपडिचक्काए नमः ५, ॐ पुरिसदत्ताए नमः ६, ॐ कालीए नमः ७, ॐ महाकालीए नमः ८, गोरीए नम ९, ॐ गन्धारीए नमः १०, ॐ सव्वत्थ-महाजालाए नमः ११, ॐ माणवीए नमः १२, वइरुट्टाए नमः १३, ॐ अच्छुत्ताए नमः १४, ॐ माणसीए नमः १५, ॐ महामाणसीए नमः १६.

५-पांचमा—वलयना २४ कोष्ठकोमा नीचे प्रमाणे नाममंत्रोच्चारण पूर्वक लोकान्तिक देवोनी वासचूर्णवडे पूजा करवा—

ॐ सारस्वतेभ्यो नमः १, ॐ आदितेभ्यो नमः २, ॐ वह्निभ्यो नमः ३, ॐ वरुणेभ्यो नमः ४, ॐ गर्दतोयेभ्यो नमः ५, ॐ तुषितेभ्यो नमः ६, ॐ अव्याबाधेभ्यो नमः ७, ॐ अग्न्याभेभ्यो नमः ८, ॐ रिष्टेभ्यो नमः ९, ॐ सूर्याभेभ्यो नमः १०, ॐ चन्द्राभेभ्यो नमः ११, ॐ सत्याभेभ्यो नमः १२, ॐ श्रेयस्करेभ्यो नमः १३, ॐ क्षेमंकरेभ्यो नमः १४, ॐ वृषभेभ्यो नमः १५, ॐ कामचारेभ्यो नमः १६, ॐ निर्माणेभ्यो नमः १७, ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यो नमः १८, ॐ आत्मरक्षितेभ्यो नमः १९, ॐ सर्वरक्षितेभ्यो नमः २०, ॐ मरुतेभ्यो नमः २१, ॐ वसुभ्यो नमः २२, ॐ अश्वेभ्यो नमः २३, ॐ विश्वेभ्यो नमः २४.

६–छट्ठा वलयमां—आठ कोष्ठकोमां नीचे प्रमाणे चार निकायना इन्द्रादि देवो तथा तेमनी देवीओनुं पूजन करवुं.—

ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यो नमः १, ॐ तद्देवीभ्यो नमः २, ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यो नमः ३, ॐ तद्देवीभ्यो नमः ४, ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यो नमः ५, ॐ तद्देवीभ्यो नमः ६, ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यो नमः ७, ॐ तद्देवीभ्यो नमः ८.

७–सातमा वलयमां—नीचे प्रमाणेनां आठ कोष्ठकोमां आठ दिशापालोनी पूजा करवी—

ॐ इन्द्राय नमः १, ॐ अग्नये नमः २, ॐ यमाय नमः ३, ॐ निर्ऋतये नमः ४, ॐ वरुणाय नमः ५, ॐ वायवे नमः ६, ॐ कुबेराय नमः ७, ॐ ईशानाय नमः ८.

८–आठमा वलयमां—आठ कोष्ठकोमां नीचे प्रमाणे ग्रहोनी पूजा करवी—

ॐ आदितेभ्यो नमः १, ॐ सोमेभ्यो नमः २, ॐ मंगलेभ्यो नमः ३, ॐ बुधेभ्यो नमः ४, ॐ बृहस्पति-

भ्यो नमः ५, ॐ शुक्रेभ्यो नमः ६, ॐ शनैश्चरेभ्यो नमः ७, ॐ राहु-केतुभ्यो नमः ८.

आठ वलयो पछीना प्रथम प्राकारनी आग्नेय कोणमा—ॐ गणधरादिपरिपत्त्रिकाय नमः। १-३।

नैर्ऋत्य कोणमा-ॐ भवनपत्यादिदेवीपरिपत्त्रिकाय नमः। ४-६।

वायव्य कोणमां-ॐ भवनपत्यादिदेवपरिपत्त्रिकाय नमः। ७-९।

ईशान कोणमां-ॐ वैमानिकदेवादिपरिपत्त्रिकाय नमः। १०-१२।

आ मत्रपदो बोलीने वासचूर्ण वडे परिषत् त्रिकोनी पूजा करवी.

द्वितीय प्राकारमा तिर्यञ्चो अने तृतीयमा यान-वाहनो उपर वासक्षेप करवो, प्रथम प्राकारना पूर्वादि द्वारपालोनी नीचे प्रमाणे पूजा करवी—

ॐ सोमाय नमः १, ॐ यमाय नमः २, ॐ वरुणाय नमः ३, ॐ कुबेराय नमः ४

द्वितीय प्राकारनी द्वारपालिकाओनी नीचेना मंत्रो द्वारा वासपूजा करवी—

ॐ जयायै नम १, ॐ विजयायै नमः २, ॐ अजितायै नमः ३, ॐ अपराजितायै नमः ४.

तृतीय प्राकारना द्वारपाल तुम्बरुनी नीचे प्रमाणे पूजा करवी—

ॐ तुम्बरवे नमः १, ॐ तुम्बरवे नमः २, ॐ तुम्बरवे नमः ३, ॐ तुम्बरवे नमः ४

त्रणे प्राकारोना पूर्वादि द्वारोना तोरणोनी पूजा नीचे प्रमाणे करवी—

ॐ शान्तितोरणेभ्यो नमः १। ॐ भूतितोरणेभ्यो नमः २। ॐ बलतोरणेभ्यो नमः ३। ॐ आरोग्य-तोरणेभ्यो नमः ४।

पूर्वादि द्वारोनां ध्वजोनुं पूजन नीचे प्रमाणे करवुं.

ॐ धर्मध्वजाय नमः १। ॐ मानध्वजाय नमः २। ॐ गजध्वजाय नमः ३। ॐ सिंहध्वजाय नमः ४।

पूर्वादि दिशाओमां-" परविद्याः क्षः फट् " अने विदिशाओमां-" परमंत्राः क्षः फट् " आ प्रमाणे आलेखेल मंत्रो उपर तेना उच्चारणपूर्वक वासक्षेप करवो.

इन्द्रपुर उपर-"ॐ पृथिवीमंडलाय नमः " आ मंत्रोच्चारण पूर्वक वासक्षेप करवो.

पूर्ण कलशो उपर-" ॐ पूर्णकलशाय नमः" आ मंत्रोच्चारण करतां कलशो उपर वासक्षेप करवो.

वायुभवन उपर-"ॐ वायु-मंडलाय नमः" आ नाम मंत्रथी वासक्षेप करवो

पछी पाटला उपर श्वेत वस्त्र ढांकवुं, नेवासूत्र वींटी उपर श्रीफल मूकवुं, चल प्रतिष्ठा जणाववा माटे मध्यभागमां प्रतिष्ठाप्य बिंबनी स्थापना कल्पवी, आसपास सात धान्य वेरवुं, फल-मेवो वस्त्र उपर चढाववो, आगल पक्वान्नादि नैवेद्य ढोकवुं, अने पछी नमस्कार पूर्वक संपूर्ण चैत्यवंदना करवी.

"त्रयीकान्ताऽत्यन्तक्षततततमोराशिविशदं, जगज्जातालोकं जनयसि जगन्नेत्र! हुतभुक्!।
प्रसीदत्येतेन त्वयि मम मनो वाक् च सफला। भवत्येवाऽभ्यर्णीभवति भवति स्नात्रसमये ॥ २ ॥"

ॐ नमः श्री अग्नये प्रभूततेजोमयाय आग्नेयदिगधीश्वराय शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सपरिच्छदाय। श्री अग्ने! सायुध सवाहन सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे, आगच्छ आगच्छ, जल गन्ध पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीप नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु, सर्वसमीहित देहि देहि स्वाहा ॥ २ ॥

३. यम —

"प्रत्यूह समूहाऽपोह-शक्तिरर्हत्प्रभावसिद्धेन। समवर्तिन्निह रक्षा-कर्मणि विनियोग एव तव ॥३॥"

ॐ य य नमो यमाय दक्षिणदिगधीशाय, कृष्णवर्णाय दण्डहस्ताय महिषवाहनाय सपरिच्छदाय, श्रीयम! सायुधः सवाहन सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जल गंध पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीप नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु, सर्वसमीहित देहि देहि स्वाहा ॥ ३ ॥

४ निर्ऋति —

"मा मंस्थाः सस्यातो, युष्मदधिष्ठितादिगेव वीतापा।

निर्ऋते ! निर्वृत्तिकारी, जगतोऽपि जिनाभिषेकोऽयं ॥ ४ ॥"

ॐ हसकल ह्रीं नमः ह्रीं श्रीनिर्ऋतये नैर्ऋतदिगधीशाय धूम्रवर्णाय खड्गहस्ताय शववाहनाय सपरिच्छदाय श्रीनिर्ऋते ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गन्धं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥ ४ ॥

५. वरुण --

उदाररसनागुणक्वणितकिंकिणीजालक- प्रबुद्धजघनस्थलस्थिरनिविष्टचेतोभुवः ॥
ससंभ्रमसमागता धनदराजहंसैः समानयन्तु मणिनूपुरान् वरुण ! वारनार्यस्तव ॥ ५ ॥"

ॐ वं नमः श्रीवरुणाय पश्चिमदिगधीशाय मेघवर्णाय पाशहस्ताय मकरवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीवरुण ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छदः इह अमुकनगरे अमुकस्थाने जिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गन्धं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥५॥

६. वायु—

"जाते जिनाभिषेके, विसृजन्तो विविधविटपिकुसुमानि ।

विकिरन्तु वायवो वो, मिथ्यात्वतमोवितानानि ॥ ६ ॥"

ॐ य नमः श्रीवायवे वायव्यदिगधीशाय धूसरांगाय ध्वजप्रहरणाय हरिणवाहनाय श्रीवायो! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीपं नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु सर्वसमीहित देहि देहि स्वाहा ॥६॥

७. कुबेर—

" अहो विविधविस्मयाऽभ्युदयभूतिसद्भाजन, भवन्ति भवभेदिनो भगवतोऽभिषेकोत्सवाः।
यतस्त्वमपि गुह्यकेश्वर ! समेत्य तत्कारिणः, करोषि परमेश्वरान् प्रकटकोशत्वानपि ॥ ७ ॥"

ॐ य य य नमः कुबेराय उत्तरदिगधीशाय सर्वयक्षेश्वराय श्वेतवस्त्राय गदायुधाय नरवाहनाय सपरिच्छदाय, श्रीकुबेर ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ, आगच्छ जलं गंध पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीप नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥ ७ ॥

८. ईशान—

" पतत्पदपरिक्रमक्रमविघूर्णितक्ष्माधर, कटाक्षकपिलीभवद्भुवनभागमीशान ! ते ।

समस्तु करवर्तनाविचलितग्रहर्क्षं क्षमानिधेरिह महोत्सवे सकलभावभाक् ताण्डवम् ॥ ८ ॥"

ॐ नमः श्रीईशानाय ईशानदिगधीशाय त्रिशूलहस्ताय वृषभवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीईशान ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥ ८ ॥

९. नाग—

"नागाः फणामणिमयूखशिखावबद्ध-शक्रायुधप्रकरविच्छुरितान्तरिक्षम् ।
सद्यः कुरुध्वमभिषेकदिनं समन्ताद्, भूत्वा भवोद्भवभिदो भवने प्रदीपाः ॥९॥"

ॐ ह्रीं फुँ नमः श्रीनागराजाय पातालस्वामिने सायुधाय सवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीनागराज ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥ ९ ॥

१०. ब्रह्मा—

अथाभिषेकसमये स्मरसूदनस्य, भक्त्या नता विकटपक्ष्मकलत्रलपाः ।

ग्रहपूजन—

ग्रहोनुं पूजन पण ग्रहचित्रेला सेवनना पाटला उपर करवु जो पाटलो आलेखेलो न होय तो तत्काल ज तेमा ९ कोठा करी एक एक कोठामा एक एक ग्रहनु विहितद्रव्य वडे मंडल आलेखवु अने साथे ज तेनु ग्रहयोग्य गंध, पुष्प, फल, नैवेद्य, वस्त्र, धूप, दीप, आदि वडे पूजन करवु ते दर्मियान एक जण जे ग्रहनुं पूजन थतु होय ते ग्रहना नाममंत्रनी माला गणे, "ॐ सूर्याय नमः। ॐ सोमाय नमः। ॐ भौमाय नमः। ॐ बुधाय नमः। ॐ गुरवे नमः। ॐ शुक्राय नमः। ॐ शनैश्चराय नमः। ॐ राहवे नमः। ॐ केतवे नमः।" ए ग्रहोना नाममंत्रो छे. एमनी मालाओ अनुक्रमे—प्रवालानी, स्फटिकनी, प्रवालानी, केरवानी, सुवर्णनी अथवा केरवानी, स्फटिकनी वा रूपानी, अकलबेरनी, अकलबेरनी, अने गोमेद अथवा सिंदुरिया स्फटिकनी होय छे

पूजन प्रारंभ करता हाथमा पुष्पांजलि लेइने—

> "सर्वे ग्रहा दिनकरप्रमुखाः स्वकर्म-प्रवौंपनीतफलदानकरा जनानाम्।
> पूजोपचारनिकर स्वकरेषु लात्वा, सन्त्वागताः सपदि तीर्थकरार्चनेऽत्र ॥१॥"

आ काव्य बोली पुष्पांजलि पाटला उपर नाखी ग्रहोने वधाववा, पछी एक एक काव्य मंत्रसहित बोली पोतपोतानी दिशामा स्थापेल प्रत्येक ग्रहनु पूजन करवुं.

१. सूर्यः—

" विकसितकमलावलीविनिर्यत्-परिमलललितपूतपादपृन्दः ।
दशशतकिरणः करोतु नित्यं, भुवनगुरोः परमार्चने शुभौघम् ॥ १ ॥"

" ॐ घृणि घृणि नमः सूर्याय सहस्रकिरणाय रक्तवस्त्राय कमलहस्ताय सप्ताश्वरथवाहनाय सपरिच्छदाय श्री सूर्य ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥१॥"

२. चन्द्रः—

" प्रोद्यत्पीयूषपूरप्रसृमरजगतीपोषनिर्दोषकृत्य-व्यावृत्तो ध्वान्तकान्ताकुलकलितमहामानदत्तापमानः।
उन्माद्यत्कण्टकालीदलकलितसरोजालिनिद्राविनिद्रः-श्चन्द्रश्चन्द्रावदातं गुणनिवहमभिव्यातनोत्वात्मभाजाम्।२।"

" ॐ चं चं चं नमश्चन्द्राय अमृताय अमृतमयाय श्वेतवस्त्राय अक्षसूत्रकमण्डलुपाणये हरिणवाहनाय सपरिच्छदाय, श्रीचन्द्र ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥ २ ॥"

३. मगलः—

"ऋणाभिहन्ता सुकृताधिगन्ता, सदैव वक्रः क्रतुभोजिमान्यः ।
प्रमाथकृत् विघ्नसमुच्चयानां, श्रीमगलो मगलमातनोतु ॥ ३ ॥"

"ॐ हूँ हूँ हंस. नमः श्रीमगलाय विद्रुमवर्णाय रक्ताम्बराय, रक्ताक्षसूत्रकुण्डिकापाणये गजवाहनाय सपरिच्छदाय, श्रीमगल ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जल गन्धं पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीप नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥ ३ ॥"

४ बुधः—

"प्रियगुप्रख्यागो गलदमलपीयूषनिरूप-स्फुरद्वाणीत्राणीकृतसकलशास्त्रोपचयधीः ।
समस्तप्राणीनामनुपमविधान शशिसुतः, प्रभूनारातीनामुपनयतु भग स भगवान् ॥ ४ ॥"

"ॐ ग्रँ नम श्रीबुधाय हरितवस्त्राय अक्षसूत्रकमण्डलुपाणये केसरिवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीबुध ! सायुध. सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ जल गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीप नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥४॥"

५. गुरुः—

" शास्त्रप्रस्तारसारप्रततमतिचिताभिमानातिमान-प्रागल्भ्यः शम्भुजं भक्षयकरदिनकृद्विष्णुभिः पूज्यमानः ।
निःशेषाऽस्वप्नजातिव्यतिकर परमाधीतिहेतुर्बृहत्याः, कान्तः कान्तादिवृद्धिं भवभयहरणं सर्वसंघस्य कुर्यात् ॥५॥"

" ॐ जीव जीव नमः श्रीगुरवे बृहतीपतये सर्वदेवाचार्याय पीतवस्त्राय पुस्तकहस्ताय श्रीहंसवाहनाय सपरिच्छदाय, श्रीगुरो ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥ ५ ॥"

६. शुक्रः—

" दयितसंवृतदानपराजितः, प्रवरदेहि शरण्य ! हिरण्यद !
दनुजपूज्य ! जयोशन ! सवदा—दयितसंवृतदानपराजितः ॥६॥"

" ॐ सुं नमः श्रीशुक्राय दैत्याचार्याय स्फटिकोज्वलाय श्वेतवस्त्राय कुंभहस्ताय तुरगवाहनाय सपरिच्छदाय, श्रीशुक्र ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥६॥"

७ शनैश्चर—

" मा भूत् विपत्समुदयः खलु देहभाजां, झागित्युदीरितलघिष्ठगतिर्नितान्तम् ।
कादम्बिनीकलितकान्तिरनन्तलक्ष्मी, सूर्यात्मजो विनुताल् विनयोपगूढः ॥७॥ "

" ॐ शः नमः शनैश्चराय नीलाम्बराय परशुहस्ताय कमठवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीशनैश्चर ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीप नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥७॥"

८ राहु —

" सिंहिकासुत ! सुधाकरभानु–न्मादसादन ! विपादविघातिन् ।
उद्धत झटिति शत्रुसमूह, श्राद्धदेवभुवनानि नयस्व ॥ ८ ॥"

" ॐ क्षः नमः श्रीराहवे कज्जलश्यामलाय श्यामवस्त्राय परशुहस्ताय सिंहवाहनाय सपरिच्छदाय श्रीराहो ! सायुध सवाहन सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जल गध पुष्पमक्षतान् फलानि धूप दीप नैवेद्य सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति तुष्टि पुष्टि ऋद्धि वृद्धि कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥ ८ ॥"

९. केतुः—

“ सुखोत्पातहेतो ! विपद्वार्धिसेतो !, निपद्यासमेतोच्चरीयार्धकेतो ! ।
अभद्रानुपेतोपमाछायुकेतो !, जयाशंसनाहर्निशं तार्क्ष्यकेतो ! ॥ ९ ॥”

“ ॐ नमः श्रीकेतवे राहुप्रतिच्छन्दाय श्यामाङ्गाय श्यामवस्त्राय पन्नगहस्ताय पन्नगवाहनाय सपरिच्छदाय, श्रीकेतो ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितानि देहि देहि स्वाहा ॥९॥”

पाटलाना नवे य कोष्ठको उपर सर्वद्रव्यो चढी गया पछी तेने रक्तवस्त्र ढांकवो; उपर गेवासूत्र वांधी जिनप्रतिमाना जमणे पडखे स्थापन करवो. ते पछी विधिकारे हाथमां पुष्पांजलि लेई—

“ जिनेन्द्रभक्त्या जिनभक्तिभाजां, जुषन्तु पूजावलिपुष्पधूपान् ।
ग्रहा गता ये प्रतिकूलभावं, ते सानुकूला वरदा भवन्तु ॥ १ ॥”

आ काव्य बोली पाटला उपर चढाववी, प्रतिष्ठागुरुए तेना उपर वासक्षेप करवो.

ग्रहस्थापन करी, तेनी आगल नीचे लखेल ग्रहशान्तिस्तोत्रनो पाठ करवो.

“ ग्रहशान्तिस्तोत्रम् ”

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम् । ग्रहशान्तिं प्रवक्ष्यामि, भव्यानां सुखहेतवे ॥१॥

जन्मलग्ने च राशौ च, यदा पीडन्ति खेचरा.। तदा सम्पूजयेद् धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥२॥

पुष्पैर्गन्धैर्धूपदीपैः, फलनैवेद्यसंयुतैः । वर्णानुरूपदानैश्च, वस्त्रैश्च दक्षिणान्वितैः ॥३॥

पद्मप्रभस्य मार्तण्ड-श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च । वासुपूज्यो भूसुतश्च, बुधोऽप्यष्ट जिनेश्वराः ॥४॥

विमलानन्तधर्माराः, शान्तिः कुन्थुर्नमिस्तथा । वर्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुध न्यसेत् ॥५॥

ऋषभाजितसुपार्श्वा-श्चाभिनन्दनशीतलौ । सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसश्च बृहस्पतिः ॥६॥

सुविधेः कथितः शुक्र, सुव्रतस्य शनैश्चरः। नेमिनाथस्य राहुः स्यात्, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥७॥

जिनानामग्रतः कृत्वा, ग्रहाणां शान्तिहेतवे । नमस्कारशतं भक्त्या, जपेदष्टोत्तर शतम् ॥८॥

भद्रबाहुरुवाचैवं, पञ्चमः श्रुतकेवली । विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिविधिं शुभम् ॥९॥

ॐ ह्रीं श्री ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिता खेटा जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु, मम धनधान्यजयविजयसुखसौभाग्यधृतिकीर्तिकान्तिशान्तितुष्टिपुष्टिबुद्धिलक्ष्मीधर्मार्थकामदाः स्युः स्वाहा॥

इति ग्रहशान्तिः ।

॥ अष्टमंगल स्थापना ॥

१ दर्पण	२ भद्रासन	३ वर्धमान	४ श्रीवत्स
५ मत्स्ययुगल	६ पूर्णकलश	७ स्वस्तिक	८ नन्द्यावर्त

अष्टमंगल स्थापनविधि—जिनबिम्ब आगल सेवननो अथवा बीजा उत्तम काष्ठनो पाटलो मांडीने हाथमां पुष्पांजलि लेई—

मंगलं श्रीमदर्हन्तो, मंगलं जिनशासनम् । मंगलं सकलः संघो, मंगलं पूजका अमी ॥ १ ॥

आ पद्य बोली पुष्पाञ्जलि पाटला उपर चढाववी, ते पछी—

१. दर्पण[१]—

आत्मालोकविधौ जनोऽपि सकलस्तीव्रं तपो दुश्चरं, दानं ब्रह्म परोपकारकरणं कुर्वन् परिस्फूर्जति ।

सोऽयं यत्र सुखेन राजति स वै तीर्थाधिपस्याऽग्रतो, निर्मेयःपरमार्थवृत्तिविदुरैः संज्ञानिभिर्दर्पणः ॥१॥

२. भद्रासन—

"जिनेन्द्रपादैःपरिपूज्यपृष्ठे-रतिप्रभावैरपि संनिकृष्टम्। भद्रासनं भद्रकरं जिनेन्द्र-पुरो लिखेन्मंगलसत्प्रयोगं ।२॥"

३. वर्धमान संपुट—

पुण्यं यशः समुदयः प्रभुता महत्त्वं, सौभाग्यधीविनयशर्ममनोरथाश्च ।

वर्धन्त एव जिननायक ते प्रसादात्, तद्वर्धमानयुगसंपुटमादधामः ॥ ३ ॥

४. श्रीवत्स—

"अन्तः परमज्ञानं, यद् भाति जिनाधिनाथहृदयस्य । तच्छ्रीवत्सव्याजात्, प्रकटीभूतं बहिर्वन्दे ॥४॥"

१-१ स्वस्तिक, २ श्रीवत्स, ३ नन्द्यावर्त, ४ वर्धमानक, ५ भद्रासन, ६ कलश, ७ मत्स्य, ८ दर्पण, (भगवती सूत्रोक्ताष्टमंगलक्रम)

५. मत्स्ययुगल—

" त्वद्वध्यपञ्चशरकेतनभावक्लृप्तं, कर्तुं मुधा, भुवननाथ ! निजापराधम् ।
सेवां तनोति पुरतस्तव मीनयुग्मं, श्राद्धैः पुरो विलिखितोऽमनिजाङ्गयुक्त्या ॥ ५ ॥"

६. पूर्णकलश—

" विश्वत्रये च स्वकुले जिनेशो, व्याख्यायते श्रीकलशायमानम् ।
अतोऽत्र पूर्णं कलशं लिखित्वा, जिनार्चनाकर्म कृतार्थयामः ॥ ६ ॥"

७ स्वस्तिक—

" स्वस्ति भूगगननागविष्टपे-पूदित जिनवरोदयेक्षणात् ।
स्वस्तिक तदनुमानतो जिन-स्याग्रतो बुधजनैर्विलिख्यते ॥ ७ ॥"

८. नन्द्यावर्त —

" त्वत्सेवकाना जिननाथ ! दिक्षु, सर्वासु सर्वानिधय. स्फुरन्ति ।
अतश्चतुर्धा नवकोणनन्द्या वर्तः सता वर्तयतां सुखानि ॥ ८ ॥"

उपरनु एक एक पद्य बोलीने जिनबिम्ब आगल पाटला उपर चन्दनना द्रवथी सोना-रूपाना जवो वडे अथवा तो चावलो वडे ते ते मंगलचिन्होनो आकार चितरवो, उपर अक्षत पान सोपारी मूकी पाटला उपर श्वेत वस्त्रनु आच्छादन करी गेवासूत्र वींटीने

पाटलो जिननी आगल मूकवो. पछी पुष्पमाला हाथमां लेई—

" दर्पणभद्रासनवर्द्धमानपूर्णघटमत्स्ययुग्मैश्च । नन्द्यावर्तश्रीवत्स-विस्फुटस्वस्तिकैर्जिनार्चाऽस्तु ॥१॥"

आ पद्य कहीने पुष्पमाला जिन प्रतिमाने चढाववी. ॥ इति तृतीयाह्निकं कृत्यं ॥

(४) चतुर्थाह्निकम् ।

" सिद्धचक्रपूजन—आह्निकबीजकम् "

" क्षेत्रपालं दिशां पालान्, स्मृत्वा खेटानपि पुनः । जैनदेवीः सुरेन्द्राँश्च, समाहूय प्रपूजयेत् ॥६२॥"

" ततो भूतबलिं क्षिप्त्वा, देहे पाणौ मंत्रान्न्यसेत् । अर्हदादिपदैः सिद्धं, सिद्धचक्रं प्रपूजयेत् ॥६३॥"

भा०टी०—क्षेत्रपाल, दिक्पालो तथा ग्रहोनुं स्मरण करी शासनदेवीओ तेमज इन्द्रोने आह्वान करीने पूजवा, पछी दिशाओमां भूत-बलिक्षेप करवो अने अंगमां तथा हाथोमां मंत्रन्यास करवो. ए पछी अर्हत् आदि नवपदो वडे बनेला सिद्धचक्रनुं पूजन करवुं ।

कृत्यविधि—हाथमां पुष्पांजलि लेईने—

ॐ क्षां क्षीं क्षूँ क्षैँ क्षौँ क्षः अर्हं जिनशासनवासिने क्षेत्रपालाय नमः । ए मंत्र भणीने दक्षिणदिशामां उछालवी.

" ॐ ह्रीं दिक्पालेभ्यो नमः " " ॐ ह्रीं ग्रहेभ्यो नमः" आ मंत्रो वडे अनुक्रमे दिक्पालो अने ग्रहोनी पूजा करवी.

" ॐ ऐँ क्लीं ह्सौं भगवत्यः श्रीजिनशासनेश्वर्यश्चतुर्विंशति शासनदेव्यश्चक्रेश्वरी—अम्बिका—पद्मावती

सिद्धायिकाद्या देव्यः सिंहपद्मवाहना' खड्गहस्ता. सायुधाः सवाहनाः सपरिच्छदा इह अमुकनगरे अमुकगृहे जिनेन्द्रप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छत आगच्छत, पूजा गृह्णीत गृह्णीत, पूजायामवतिष्ठन्तु स्वाहा।”

आ मंत्र भणीने प्रतिमाने आगे डाबी तरफ पुष्पाञ्जलि क्षेप करी शासनदेवीओनुं पूजन करवुं

“ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः अर्हं क्षुं हुं इन्द्राः श्रीसौधर्मादिचतुःषष्टिः सायुधाः सवाहनाः सपरिच्छदा इह अमुकनगरे अमुकगृहे जिनेन्द्रप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छत आगच्छत, पूजां गृह्णत गृह्णत, पूजाया मवतिष्ठन्तु स्वाहा।”

आ मंत्र भणीने जल, चन्दन, पुष्प, धूप, दीप, विगेरेथी प्रतिमानी जमणी तरफ सामे इन्द्रोनुं पूजन करवुं.

“भो भो इन्द्रा विघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञया सावधाना भवन्तु स्वाहा” आ मंत्र भणी इन्द्रोने सावधान करवा, पछी—

“ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं, जे इमे किन्नर किंपुरिस महोरग गरुल सिद्ध गंधव्व-पिसाय भूय साइणि डाइणि पभिइओ जिणघर निवासिणीओ निअनिलयट्ठिआ पवियारिणो सन्निहिया असंनिहिया य ते सव्वे इमं विलेवण-धूव-पुप्फ-फल-पइवसणाहं बलिं पडिच्छन्ता तुट्ठिकरा भवंतु, सव्वत्थ रक्खं कुणंतु, सव्वत्थ दुरियाणि नासंतु, सव्वासिवमुवसमंतु, संतितुट्ठिपुट्ठिसुत्थयण-

कारिणो भवंतु स्वाहा ।"

आ मंत्र वडे भूत-बलि मंत्रीने दशे दिशाओमां धूप दीप चंदन पुष्प जल वास लापसी पुडला वडां सहित बलिबाकुला जिनगृहनी बहार उछालवा, पछी नीचे प्रमाणे अंगन्यास करवो—

" ॐ नमः सिद्धं " मस्तके, ॐ आँ ह्रीं क्रौं वद वद वाग्वादिनि अर्हन्मुखकमलवासिनि नमः" मुखे, " ॐ ह्रां ह्रीं ह्रः अर्हन् नमः" हृदये, "ॐ ह्रीं सर्वसाधुभ्यो नमः" नाभौ, "ॐ ह्रीं प्रमाय नमः" शरीरे ।

उपर प्रमाणे अंगन्यास कर्या पछी नीचेना मंत्रो द्वारा करन्यास करवो—

ॐ नमो अरिहंताणं-अंगुष्ठाभ्यां नमः। ॐ नमो सिद्धाणं-तर्जनीभ्यां नमः।
ॐ नमो आयरियाणं-मध्यमाभ्यां नमः। ॐ नमो उवज्झायाणं-अनामिकाभ्यां नमः।
ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं-कनिष्ठिकाभ्यां नमः, ॐ नमो आगासगामीणं-करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

उपर प्रमाणे अंगन्यास तथा करन्यास करीने पुष्पाक्षत फल पत्र दीप धूप वडे सिद्धचक्र मंडलनी-निचेना क्रमथी पूजा करवी.

सिद्धचक्र पूजन—

" अर्हन्तः सिद्धसूरीन्द्रो-पाध्यायाः सर्वसाधवः। ज्ञानदर्शनचारित्र-तपांसि सिद्धयेऽङ्गिनाम् ॥१॥"

आ श्लोक बोलीने सिद्धचक्रना अष्टदलकमलाकारमंडलने प्रथम पुष्पाक्षतोए वधाववुं.

पछी प्रत्येक पद विषे नीचे प्रमाणे श्लोको अने मंत्रो बोलीने अरिहंत आदिनी जल, चन्दन, पुष्प अक्षत फल पत्र धूप दीप आदिथी पूजा करवी, प्रत्येकपदनी पूजा शरु करता पहलां– "नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।" आ नमस्कार वाक्य बोलया करवु

१ "अथाष्टदलमध्याब्ज–कर्णिकाया जिनेश्वरान । आविर्भूतोल्लसद्बोधा–नादृतः स्थापयाम्यहम् ॥१॥"

"निःशेषदोषेन्धनधूमकेतून्पारसंसारसमुद्रसेतून् ।
यजे समस्तातिशयैकहेतून्, श्रीमज्जिनानम्बुजकर्णिकायां ॥ २ ॥"

"ॐ नमोऽर्हते जिनाय रजोहननाधाऽघोरस्वभावाय निरतिशयपूजार्हाय अरूहाय भगवते ह्रॉं अर्हत्परमेष्ठिने स्वाहा ॥१॥"

आ श्लोको अने मंत्र बोली मध्यकर्णिकामां अरिहंतनी पूजा करवी ॥१॥

२ "तस्य पूर्वदले सिद्धान्, सम्यक्त्वादिगुणात्मकान् । निःश्रेयसां पदं प्राप्तान्, निदधे भक्तिनिर्भरः ॥३॥"

"तत्पूर्वपत्रे परितः प्रनष्ट–दुष्टाष्टकर्मामधिगम्य शुद्धिम् ।
प्राप्तान्वरान् सिद्धिमनन्तबोधान्, सिद्धान् भजे शान्तिकरान्नराणाम् ॥ ४ ॥"

ॐ नमः स्वयंभुवेऽजराय मृत्युंजयाय निरामयाय अनिधनाय भगवते निरञ्जनाय ह्रीं सिद्धपरमेष्ठिने स्वाहा॥२॥

आ श्लोक सहित मंत्र बोलीने पूर्वपत्रस्थित सिद्धनी पूजा करवी ॥२॥

३. "स्थापयामि ततः सूरीन्, दक्षिणेऽस्मिन् दलेऽमले । चरतः पंचधाचारं, षट्त्रिंशत्सद्गुणैर्युतान् ॥५॥"

"सूरीन् सदाचारविचारसारा-नाचारयन्तः स्वपरान् यथेष्टम् ।
उग्रोपसर्गैकनिवारणार्थ-मभ्यर्चयाम्यक्षतगंधधूपैः ॥ ६ ॥"

ॐ नमः पंचविधाचारवेदिने तदाचरणशीलाय तत्प्रवर्तकाय हूँ आचार्यपरमेष्ठिने स्वाहा ॥ ३ ॥

उपरनो मंत्र बोली दक्षिणपत्र उपर आचार्यनी पूजा करवी ॥ ३ ॥

४. "द्वादशाङ्गश्रुताधारान्, शास्त्राध्यापनतत्परान् । निवेशयाम्युपाध्यायान्, पवित्रे पश्चिमे दले ॥७॥"

"श्रीधर्मशास्त्राण्यनिशं प्रशान्त्यै, पठन्ति येऽन्यानपि पाठयन्ति ।
अध्यापकाँस्तानपराब्जपत्रे, स्थितान् पवित्रान् परिपूजयामि ॥ ८ ॥"

ॐ नमो द्वादशाङ्गपरमस्वाध्यायसमृद्धाय तत्प्रयोजनाय ह्रौँ उपाध्यायब्रह्मणे स्वाहा ॥४॥

आ पाठ बोलीने पश्चिमदिशागतपत्रमां उपाध्यायनी पूजा करवी ॥४॥

५. "व्याख्यादिकर्म कुर्वाणान् शुभध्यानैकमानसान् । उदक्पत्रगतान् सर्वान्, साधूनर्चामि सुव्रतान् ॥९॥"

"वैराग्यमन्तर्वचसि प्रसिद्धं, सत्यं तपो द्वादशधा शरीरे ।
येषामुदक्पत्रगतान् पवित्रान्, साधून् सदा तान् परिपूजयामि ॥ १० ॥"

ॐ नमः स्वर्गापवर्गसाधकाय ह्रः साधुमहात्मने स्वाहा ॥ ५ ॥

आ मंत्र पाठ बोलीने उत्तरदिशास्थितपत्रमां साधुपदनी पूजा करवी ॥५॥

६ "जिनेन्द्रोक्तमतश्रद्धा-लक्षणं दर्शनं यजे। मिथ्यात्वमथनं शुद्धं न्यस्तमीशानसद्दले ॥ ११ ॥"

"ॐ नमः परमाभ्युदयनिःश्रेयसहेतवे दर्शनाय स्वाहा ॥ ६ ॥"

आ मंत्र बोली ईशानस्थित दर्शननी पूजा करवी ॥६॥

७ "अशेषद्रव्यपर्याय-स्वरूपावबोधकम्। ज्ञानमाग्नेयपत्रस्थं, पूजयामि हितावहम् ॥ १२ ॥"

"ॐ नमः सम्यग्ज्ञानाय स्वाहा ॥ ७ ॥"

आ मंत्रपाठ बोली आग्नेयकोणना पत्रमां ज्ञाननी पूजा करवी ॥ ७ ॥

८ "सामायिकादिभिर्भेदै-श्चारित्रं चारु पञ्चधा। संस्थापयामि पूजार्थं, पत्रे हि नैर्ऋते क्रमात् ॥१३॥"

ॐ नमः परमाभ्युदयनिःश्रेयसहेतवे चारित्राय स्वाहा ॥ ८ ॥"

आ पाठ बोली नैर्ऋत कोणना पत्रमां चारित्रनी पूजा करवी ॥८॥

९ 'द्विधा द्वादशधा भिन्नं, पूते पत्रे तपः स्वयम्। निःस्थापयामि भक्त्याऽत्र, वायव्यां दिशि शर्मदम् ॥१४॥

ॐ नमः परमाभ्युदयनिःश्रेयसहेतवे तपसे स्वाहा ॥९॥

आ मंत्र बोली वायव्यकोणमां तपपदनी पूजा करवी ॥९॥

पछी अर्घपात्र हाथमां लई—

"निःस्वेदत्वादिदिव्यातिशयमयतनून् श्रीजिनेन्द्रान् सुसिद्धान्, सम्यक्त्वादिप्रकृष्टाष्टगुणभृतइहाचारसारांश्च सूरीन्। शास्त्राणि प्राणिरक्षाप्रवचनरचनासुन्दराण्यादिशन्तः, तत्सिद्धयै पाठकान् श्रीयतिपतिसहिताचंयास्यर्घदानैः॥१॥"

"ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं ह्रः पञ्चभ्यः परमेष्ठिभ्यः सम्यग्ज्ञानादिचतुष्टयान्वितेभ्यः स्वाहा ॥"

श्लोकसहित उपरनो मंत्र बोली मण्डल आगे अर्घपात्र मूकवुं अने उपर चन्दन पुष्प फल नैवेद्य-चढाववां, धूप उखेववो. सिद्धचक्रनुं पूजन कर्या पछी प्रतिमा आगल स्नात्र पूजा भणाववी, अने आरती उतारी मंगलदीपक करवो. ॥ इति सिद्ध-चक्र पूजा विधि ॥

॥ समाप्तं चतुर्थाह्निक कृत्यं ॥

(५) पंचमाह्निकम्।

। विंशतिस्थानकपूजन-आह्निकबीजकम्।

क्षेत्रपालं नमस्कृत्य, दिगीशान् खेचरानपि । विद्यादेवीजैनदेवी-राहूय प्रणिपत्य च ॥६४॥
'रोगशोकादिभिः' श्लोकै-र्विधाय शान्तिघोषणाम् । 'चत्तारि मंगलं' प्रोच्य, वज्रपञ्जरमाचरेत् ॥६५॥
ततश्च विंशतिस्थान-पदान्येवं प्रपूजयेत् । स्नात्रपूजां विधायान्ते, चैत्यवंदनमाचरेत् ॥६६॥

भा०टी०—क्षेत्रपाल दिशापालो अने ग्रहोने नमस्कार करी विद्यादेवीओ तथा शासनदेवीओनुं आह्वान अने नमस्कार

करी ' रोगशोकादिभिर्दोषैरजिताय ' इत्यादि श्लोको वडे शान्ति घोषणा करवी, पछी ' चत्तारिमंगलं ' इत्यादि शरण सूत्रनो पाठ बोलवो अने ' वज्रपञ्जर ' स्तोत्र वडे अगरक्षा करीने विंशति स्थानकना पदोनु अनुक्रमे पूजन करवु, स्नात्र भणाववु अने छेवटे चैत्यवंदन करवु पाचमा दिवसे आटला कृत्यो करवा

वीशस्थानक पूजा—

ॐ क्षाँ क्षेत्रपालाय नम. । ॐ ह्रीँ दिक्पालेभ्यो नम. । ॐ ह्रीँ ग्रहेभ्यो नमः । ॐ ह्रीँ षोडश विद्यादेवीभ्यो नमः । ॐ ह्रीँ जिनशासनदेवीभ्यो नमः ।

उपरना मत्रो भणी पछी नीचे प्रमाणे शान्तिघोषणा करवी—

रोगशोकादिभिर्दोषै-रजिताय जितारये । नमः श्रीशान्तये तस्मै, विहितानन्तशान्तये ॥१॥
श्रीशान्तिजिनभक्ताय, भव्याय सुखसम्पदम् । श्रीशान्तिदेवता देया-दशान्तिमपनीयताम् ॥२॥
अम्बा निहतडिम्बा मे, सिद्ध-बुद्धसमन्विता । सिते सिंहे स्थिता गौरी, वितनोतु समीहितम् ॥३॥
धराधिपतिपत्नी या, देवी पद्मावती सदा । क्षुद्रोपद्रवतः सा मा, पातु फुल्लत्फणावली ॥४॥
चञ्चच्चक्रधरा चारु-प्रवालदलदीधितिः । चिरं चक्रेश्वरी देवी, नन्दतादवताच्च माम् ॥५॥
खड्गखेटककोदण्ड-बाणपाणिस्तडिद्द्युतिः । तुरङ्गगमनाऽच्छुप्ता, कल्याणानि करोतु मे ॥६॥
मथुरायां सपार्श्वश्री-सुपार्श्वस्तूपरक्षिका । श्रीकुबेरा नरारूढा, सुताङ्काऽवतु वो भयात् ॥७॥
ब्रह्मशान्तिः स मा पाया-दपायाद्वीरसेवकः । श्रीमत्सत्यपुरे सत्या, येन कीर्तिः कृता निजा ॥८॥

देवा देव्यस्तदन्येऽपि, संघं रक्षन्त्वपायतः ॥९॥
श्रीशक्रप्रमुखा यक्षा, जिनशासनसंस्थिताः । सा मां सिद्धायिका पातु, चक्रचापेषुधारिणी ॥१०॥
श्रीमद्विमानमारूढा, यक्षमातङ्गसंगता ।
उपरना श्लोको वडे शान्ति उद्घोषणा कर्या पछी संपूर्ण नवकार गणी—

चत्तारि मंगलं—अरिहंता मंगलं, सिद्धा मंगलं, साहू मंगलं, केवलिपन्नत्तो धम्मो मंगलं ।
चत्तारि लोगुत्तमा—अरिहंता लोगुत्तमा, सिद्धा लोगुत्तमा, साहू लोगुत्तमा, केवलिपन्नत्तो धम्मो लोगुत्तमो ।
चत्तारि सरणं पवज्जामि—अरिहंते सरणं पवज्जामि, सिद्धे सरणं पवज्जामि, साहू सरणं पवज्जामि,
केवलिपन्नत्तं धम्मं सरणं पवज्जामि ।

आ चार शरणानो पाठ भणवो अने अंते वज्रपञ्जर स्तोत्र वडे अंगन्यास करवो.

वज्र पञ्जर स्तोत्रम्—

आत्मरक्षाकरं वज्र-पञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥ १ ॥
परमेष्ठि नमस्कारं, सारं नवपदात्मकं । ॐ नमो सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥ २ ॥
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् । ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥ ३ ॥
ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी । एसो पंचनमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥ ४ ॥
ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, मोचके पादयोः शुभे । मंगलाणं च सव्वेसिं, खादिराङ्गारखातिका ॥ ५ ॥
सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः । वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥ ६ ॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं ।

महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी। परमेष्ठिपदोद्भूता, कथिता पूर्वसूरिभिः ॥ ७ ॥
यश्चैव कुरुते रक्षा, परमेष्ठिपदैः सदा। तस्य न स्याद् भयं व्याधि-राधिश्चापि कदाचन ॥ ८ ॥

वज्रपञ्जर भण्या पछी श्रावकोए घसेला चन्दन केसर वडे–बीजा पाटला उपर नीचे प्रमाणे २० कोठको करवा—

१ ॐ ह्रीं नमो अरिहंताण	२ ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण	३ ॐ ह्रीं नमो पवयणस्स	४ ॐ ह्रीं नमो आयरि-याणं	५ ॐ ह्रीं नमो उवज्झा-याणं
६ ॐ ह्रीं नमो थेराण	७ ॐ ह्रीं नमो लोए स-व्वसाहूण	८ ॐ ह्रीं नमो नाणोर-उत्ताण	९ ॐ ह्रीं नमो सम्मदसण-धराण	१० ॐ ह्रीं नमो विणय-धारीण
११ ॐ ह्रीं नमो चारित्त-धराण	१२ ॐ ह्रीं नमो सीलव्वय धारीण	१३ ॐ ह्रीं नमो खणलव झाणीण	१४ ॐ ह्रीं नमो तवस्सीणं	१५ ॐ ह्रीं नमो गोयमस्स
१६ ॐ ह्रीं नमो वेयाव च्चयाण।	१७ ॐ ह्रीं नमो समाहि गराणं।	१८ ॐ ह्रीं नमो अपुव्वनाण-धराणं	१९ ॐ ह्रीं नमो सुअभ-त्ताण	२० ॐ ह्रीं नमो तित्थ-प्पभावगाणं

पछी स्नात्रकारे हाथमां पुष्पांजलि लेई—

अर्हत्सिद्धप्रवचन–गुरुस्थविरबहुश्रुतास्तपस्वी च । ज्ञानोपयोग-सम्यग्दर्शनविनयाः सचारित्राः ॥६७॥
शीलव्रतक्षणलव–ध्यानतपस्त्यागसेवनव्रतानि । समाध्यपूर्वज्ञान-श्रुतसेवाः प्रभावना तीर्थं ॥६८॥
विंशतिपदान्यमूनि, सकलसुखोत्कर्षबीजभूतानि । जगदानन्दकराणि, जयन्ति जगदेकशरणानि ॥६९॥

आ पद्यो बोलीने पुष्पांजलि वीसस्थानकना पाटला उपर नाखवी, ते पछी लखेल प्रत्येक पदनुं स्तुति-काव्य अने तेनो नाम मंत्र भणीने प्रत्येकपदनुं चंदन-पुष्प-फल-अक्षतो वडे पूजन करवुं.

१-यन्नाम मन्त्रजपलब्धभवाब्धिकूला, मूलानि जन्मजरयोर्मरणस्य भित्त्वा ।
भव्या व्रजन्ति पदमक्षयमस्तदोषं, सोऽर्हन् ददातु विरुजं पदमर्चकेभ्यः ॥७०॥

"ॐ ह्रीँ नमो अरिहंताणं ॥१॥"

उपरनुं काव्य तथा नाम मंत्र बोली अरिहंत पदनी पूजा करवी, एवी ज रीते प्रत्येक पदनुं काव्य अने नाममंत्र बोली बोलीने पूजा करवी, प्रथम पदनुं काव्य बोलतां पहेलां अने वीसमा पदनुं काव्य बोलतां पहेलां पण "नमोऽर्हत्" कहेवुं.

२-गाङ्गेयधातुरिव कर्मरजोविदिग्ध-मात्मस्वरूपमधिरुह्य गुणक्रमालिम् ।
ध्यानानलेन विमलं विदधे निजं यैस्ते सिद्धये मम भवन्तु समस्तसिद्धाः ॥७१॥

" ॐ ह्रीं नमो सिद्धाण ॥२॥ "

३-तैर्थङ्कराद् वदनपङ्कजतः प्रसूतं, वाक्यं परागसदृशं भविनां हिताय ।
अस्योपयोगसहितोऽथ मुनिप्रधानः, संघः सदा प्रवचनं भवताद् विभूत्यै ॥७२॥

" ॐ ह्रीं नमो पवयणस्स ॥३॥ "

४-धर्मोपदेशकवरा गुरवो गणीन्द्रा, आचार्यमुख्यविबुधाः प्रवरप्रतापाः ।
आचारमार्गहृदयाः सदयाः सदाया, देयासुरस्तवृजिना जिनतत्त्वमार्गम् ॥७३॥

" ॐ ह्रीं नमो आयरियाण ॥४॥ "

५-जात्या श्रुतेन मुनिमार्गगताब्दराशेर्वृद्धा विलीनवृजिनाः सुजिनागमज्ञाः ।
शिष्याः पठन्ति समुपेत्य यदीयपार्श्वे, ते मङ्गलं ददतु पाठकपूज्यपादाः ॥७४॥

" ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं ॥५॥ "

६-जैनागमाब्धिपरिमज्जननिर्मलाङ्गा-स्तीर्थान्तरीयनयनिर्झरधौतपादाः ।
सर्वज्ञमार्गरतिका रतिकान्तरोणान्, मार्गं बहुश्रुतवरा मुनयो दिशन्तु ॥७५॥

"ॐ ह्रीं नमो थेराणं ॥६॥"

७-बाह्यान्तरङ्गरिपुनिर्दलनैकहेतौ, केतौ शिवस्य सरणेस्तपसि प्रवृत्ताः।
क्षान्त्यादिधर्मनिरता विरतास्तपस्वि-वर्या दिशन्तु विविधोत्सवमङ्गलानि ॥७६॥

"ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ॥७॥"

८-ज्ञानोपयोगकरणाच्चरणादिवृद्धि-र्ज्ञानोपयोगकरणाच्छिवशर्मसिद्धिः।
ज्ञानोपयोगनिरता विरताः स्वदोषाज्ज्ञानं ततः सदुपयोगमयं नमामि ॥७७॥

"ॐ ह्रीं नमो नाणोवउत्ताणं ॥८॥"

९-सद्दर्शनं सकलदुर्गुणदोषहारि, सद्दर्शनं सकलसद्गुणपोषकारि।
सद्दर्शनेन चरणादिगुणाः फलन्ति, सद्दर्शनेन मनुजाः शिवमाप्नुवन्ति ॥७८॥

"ॐ ह्रीं नमो सम्मद्दंसणधराणं ॥९॥"

१०-सर्वागमेषु विनयो गुणमूलभूतः, संवर्णितः सकलकार्यकरो नराणाम्।
एकेन येन हरिविक्रमभूपमुख्याः, पात्रं बभूवुरजरामरसौख्यलक्ष्म्याः ॥७९॥

" ॐ ह्रीं नमो विणयधराण ॥१०॥"

११-आवश्यके चरणशुद्धिनिमित्तभूते, पूतेन्द्रियात्मनिजरूपविभूतिदूते ।
सर्वादरेण निरतान् विरतानवद्यात्, भक्त्या नमामि चरणाश्रयसाधुवर्यान् ॥८०॥

" ॐ ह्रीं नमो चारित्तधराण ॥११॥"

१२-मूलोत्तरे गुणगणे व्रतशीलसंज्ञे, सद्ब्रह्मगुप्तिगुपिलोर्जितवीरचर्ये ।
स्थैर्याप्तमेरुसमताः सुमताङ्गिवर्गे, शं साधवो ददतु शीलरथाङ्गधुर्याः ॥८१॥

" ॐ ह्रीं नमो सीलव्वयधारीण

१३-ध्याने स्थिताः प्रतिलवं च प्रतिक्षणं च, संरुध्य चित्तममलं परमात्मतत्त्वे ।
ध्यायन्ति धीरसदृशं समतासमेता-स्ते सिद्धये मम भवन्तु सुयोगिवर्याः ॥८२॥

" ॐ ह्रीं नमो खणलवझाणीण ॥१३॥"

१४-विघ्नौघघाति सुनिकाचितकर्मपाति, जातिस्मृतिप्रभृतिदं हृतमन्मथार्ति ।
चेतोविशुद्धिकरमस्तसमस्तरोपं, पापं ददातु चरणस्य तपो ऽस्तदोषम् ॥८३॥

"ॐ ह्रीं नमो तवस्सीणं ॥१४॥"

१५-त्यागस्त्रिलोकमहितो रहितो मदेन, त्यागं वदन्ति मुनयो भववार्धिपोतम् ।
त्यागेन तोषसहितेन जयन्ति मृत्युं, त्यागान्विताय गुणिने गणिने नमोऽस्तु ॥८४॥

"ॐ ह्रीं नमो गोयमस्स ॥१५॥"

१६-व्यावृत्तभावनिरतं जिन-सूरि-पाठा-चार्येषु साधु-शिशु-वृद्ध-रुगन्वितेषु ।
तीव्रं तपश्चरति चैत्यवरे ससंघे, भक्त्या नमामि जिननामनिकाचनार्हम् ॥८५॥

"ॐ ह्रीं नमो वेयावच्चरयाणं ॥१६॥"

१७-चारित्रधर्मनिरतेन रतेन मार्गे, सद्द्रव्यभावविषयः स शुभान्वितेन ।
कार्यः समाधिरनिशं गुरुमुख्यपूज्य-पादेषु कृत्यकरणेन मनोनुकूलम् ॥८६॥

"ॐ ह्रीं नमो समाहिगयाणं ॥१७॥"

१८-गत्वा कुहापि गुणहीनमपि प्रणम्य, ग्राह्यं श्रुतं श्रुतवतामुपकारकारि ।
तस्मादपूर्वगुणकृत् पठतामपूर्व-ज्ञानं नमामि जिनशासनमार्गयामि ॥८७॥

" ॐ ह्रीँ नमो अपुव्वनाणधराण ॥१८॥"

१९-सम्यक्छ्रुतं श्रुतधरश्च जिनेन्द्रधर्म-त्तत्वस्य मूलमनिरुद्धमहाप्रभावम् ।
यस्माद्विनीतविनयाः सुजिनागमज्ञास्तापं विधूय विरुजं पदमाश्रयन्ते ॥८८॥

" ॐ ह्रीँ नमो सुअभत्ताणं ॥१९॥"

२०-वादेन धर्मकथनेन निमित्तवाण्या, सिद्धाञ्जनादिगुणतो निजयात्मशक्त्या ।
जैनेश्वरप्रवचनस्य विकाशकारो, तीर्थंकरैरभिहितः स भवाब्धितारी ॥८९॥

" ॐ ह्रीँ नमो तित्थप्पभावगाण ॥२०॥"

ए पछी गंध, धूप, अक्षत, पुष्प, दीप, नैवेद्य, फल अने जल, ए अष्ट द्रव्यो वडे जिनपूजा करी पूर्वप्रतिष्ठित जिनबिंबनी आगल आदिनाथनो कलश भणना पूर्वक स्नात्र करवुं ते पछी चैत्यवंदन करी ८ स्तुतिआथी देववन्दन करवुं अने, प्रत्येक स्थानकनो पूर्वोक्त नाम मंत्र बोली १-९ नवकार गणवो अन्ते वीसस्थानकना पाटला आगल नैवेद्य ढोववुं. इति वीसस्थानक पूजा विधि ।

॥ समाप्तं पञ्चमाह्निकम् ॥

॥ (६) षष्ठाह्निकम् ॥

च्यवन कल्याणकोत्सवविधि— आह्निकबीजकम्

षष्ठे च दिवसे क्षेत्र—पालादीनां नमस्कृतिम्। विधाय विदुषा कार्य-मिन्द्रेन्द्राण्योः प्रकल्पनम् ॥९०॥
तथा च्युतिर्जिनेन्द्रस्य, कल्पनीया भवान्तरात्। मातृकुक्ष्यवतारश्च, तत्र प्राणप्रवेशनम् ॥९१॥
सकलीकरणं हस्तन्यासो मन्त्रपदैः सह। मातृकावर्णविन्यासो, बिम्बाङ्गेषु विधीयते ॥९२॥
एवं जिनस्य च्यवन—कल्याणक-महोत्सवम्। विधाय स्नात्रमन्ते च, विधेयं देववन्दनम् ॥९३॥

भा०टी०—छट्ठे दिवसे क्षेत्रपालादिकने नमस्कार करीने विद्वान् विधिकारे इन्द्र अने इन्द्राणीनी कल्पना करवी, अने ते बाद जिनना जीवनुं स्वर्गादि भवान्तरथी च्यववुं—मातानी कूखे अवतरवुं अने मानवीयप्राणप्रतिष्ठा—विधि करवी. प्रतिष्ठाप्य जिनबिंबना अंगोमां मंत्रपदो वडे सकलीकरण अने करन्यास करी मातृका वर्णन्यास करवो.

आ प्रमाणे जिननो च्यवन कल्याणक महोत्सव करीने स्नात्र करवुं अने अन्तमां देववन्दन करवुं.

कृत्य विधि—

ॐ क्रौं ग्लौं स्वां लाँ क्षाँ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ ह्रीं दिक्पालेभ्यो नमः। ॐ ह्रीं अर्हद्भ्यो नमः। ॐ ह्रीं षोडश महादेवीभ्यो नमः। ॐ ह्रीं जिनशासन देवीदेवेभ्यो नमः।

क्रियाकारके उपर प्रमाणे मंत्रोच्चारण पूर्वक पुष्पाजलिओ नाखवी, आ पछी प्रतिष्ठाकारक गृहस्थने विधि नीचेना मन्त्रोद्वारा इन्द्रनी कल्पना करी आभूषणो पहेरावमां—

सद्दृष्टेः प्रविकल्पिताऽतिविशदप्राग्भारभाभासुर–ज्ञानस्यापि विकल्पजालजयिनश्चारित्रतत्त्वस्य च ।
यत् पूर्वैः परिकल्पित जिनमहे रत्नत्रयाराधक, चिह्नं तद् निदधे महेशकलितं यज्ञोपवीतं परम् ॥१॥

आ काव्य भणीने प्रतिष्ठा करावनारे जनोई रूपे सोनानी सांकली पहेरवी

रत्नप्ररोहैरुचिरैर्यदुत्थै–राकाशमङ्गीकृतम विभाति ।
तच्छेखर शेषविधेयविज्ञो, मौलौ मयूखाढ्य मह दधामि ॥ २ ॥

आ काव्य भणीने मस्तके मुकुट अने ललाटे तिलक धारण करवो

दिव्यं दिव्यैरत्न जालैरनेकै–र्नद्ध धुन्वद् ध्वान्तमन्तःस्फुरद्भिः ।
हैमं हेम्ना निर्मित विश्वपाणौ, पुण्य पुण्यैः कङ्कणं स्वीकरोमि ॥३॥

आ काव्य भणीने कंकण पहेरवु.

प्रद्योतयन्ती निखिल स्वकान्त्या, प्रकोष्ठमङ्गद्युतिराजिरम्या ।
मुद्रेव जैनी वरमुद्रिकाभा–मलङ्करोत्वङ्गुलिपर्वमूले ॥ ४ ॥

आ काव्य भणीने मुद्रिका पहेरवी

केयूरहाराङ्गदकुण्डलानि, प्रालम्बसूत्रं कटिकम्बि-मुद्रिके ।
शाखी च पट्टं मुकुटं च मेखला, ग्रैवेयकं नूपुरकर्णपूरम् ॥ ५ ॥

आ काव्य बोलीने भुजबंध, कुंडल, सोनानो दोरो, हार, कंदोरो वगेरे यथोपलब्ध तमाम आभूषणो पहेरवां अने–" ॐ ह्रीं अर्हं क्ष्रूँ ह्रूँ इन्द्रं परिकल्पयामीति स्वाहा ।" आ मंत्र वडे अभिमंत्रित वासक्षेप प्रतिष्ठाकारकना मस्तके नाखवो, आम इन्द्रने कल्पवो.

पछी अभिमंत्रित वास हाथमां लेइ—

'ॐ आँ ह्रीं क्रों ऐं क्लीं ह्सौं इन्द्राणीं परिकल्पयामीति स्वाहा ।'

आ मंत्र भणी प्रतिष्ठाकारकनी स्त्रीना मस्तके वासक्षेप करवो.

ॐ ह्रीं नमो भगवति विश्वव्यापिनि ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः सिंहासने स्वस्तिकं पूरयामीति स्वाहा ।

आ मंत्र भणी इन्द्राणीना हाथे वेदिका उपर धवल मंगल गीत साथे पांच साथिया करावा पछी नीचेना मंत्रोथी अंग-न्यास करवो—

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ह्रां शीर्षं रक्ष रक्ष स्वाहा । ॐ ह्रीं नमो सिद्धाणं ह्रीं वदनं रक्ष रक्ष स्वाहा ।
ॐ ह्रीं नमो आयरियाणं ह्रूं हृदयं रक्ष रक्ष स्वाहा । ॐ ह्रीं नमो उवज्झायाणं ह्रैं नाभिं रक्ष रक्ष स्वाहा ।
ॐ ह्रीं नमो लोए सव्वसाहूणं ह्रौं पादौ रक्ष रक्ष स्वाहा । ॐ ह्रीं नमो ज्ञान-दर्शन-चारित्र-तपांसि ह्रः सर्वांगं रक्ष रक्ष स्वाहा ।

अगन्यास पछी नीचे प्रमाणे करन्यास करवो—

ॐ ह्रीं अर्हतो अंगुष्ठाभ्यां नमः।

ॐ ह्रूं आचार्या मध्यमाभ्यां नमः।

ॐ ह्रः सर्वसाधवः कनिष्ठिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रीं सिद्धाः तर्जनीभ्यां नमः।

ॐ ह्रैं ह्रौं उपाध्याया अनामिकाभ्यां नमः।

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः ज्ञानदर्शनचारित्रतपांसि धर्माः करतल–करपृष्ठाभ्यां नमः।

उपरना मंत्रोमां जे जे हस्तावयवोनो उल्लेख छे ते तेनो मंत्र बोलता स्पर्श करवा पूर्वक करन्यास करवो, पछी—

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं अर्हं सः नमो हसः नमो हसः नमो हसः गुरुपादुकाभ्यां नमः।

ए मंत्रोद्वारा गुरुपूजन करवु पछी—

ॐ ह्रां ह्रीं नमो अर्हं सः धर्माचार्याय नमः। ए मंत्रद्वारा धर्माचार्यनुं पूजन करवु पछी—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः अर्हं परमब्रह्मणे असिआउसाय नमः हसः स्वाहा।

ए मंत्रथी सिंहासन स्थित प्रतिमा उपर वासक्षेप वडे पूजा करवी. पछी—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः अर्हद्भ्यो नमः।

ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं ॐ ह्रीं अर्हते नमः।

आ मंत्र वडे वासक्षेप मंत्रीने नवीन बिंब उपर नाखवो पछी—

ॐ परमहंसाय परमेष्ठिने हसः हंसः हसः ह्रूं ह्रं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रो ह्रौ ह्रः अर्हद्भ्यो नमः श्रीजिनबिम्बं

स्थापयामीति संवौषट् ।

आ मंत्र वडे वासक्षेप मंत्री नवीन बिंबना मस्तके नाखवो अने जलमिश्रित करीने बिम्बना सर्वांगे तेनुं विलेपन करवुं, तेनी आगे दुग्धभृत सुवर्ण कलश स्थापवो, अने—

सुकृतकरणदक्षः पञ्चमुख्यः समस्तः, सकलदुरितनाशश्छिन्नदुष्कर्मपाशः ।
विमलकुलविवृद्धये देवलोकाच्च्युतः श्री-नियतपदसमृद्धये मानुषेऽर्हं सदा त्वम् ॥१॥

रत्नत्रयालङ्करणाय नित्य-मच्छायकायाय निरामयाय । निःस्वेदतानिर्मलतायुताय, नमो नमः श्रीपरमेश्वराय ॥२॥

आ काव्यो भणी—

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हं नमः हंस श्रीमदर्हं देवलोकाच्च्युत्वा मानुषत्वेऽवातरत्, हंसः हंसः हंसः श्रीपरमेश्वराय नमः स्वाहा ।

आ मंत्र बोली प्रतिष्ठाप्य नवीन सुन्दर जिन बिम्बने दूधथी भरेला सुवर्ण कलशमां स्थापवुं, अने—

ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रौँ य र ल व श ष स ह क्षौँ हंस अमुष्य प्राणान् इह प्राणे अमुष्य जीव इह स्थितः सर्वेन्द्रियाणि वाग्मनश्चक्षुःश्रोत्रःघ्राणजिह्वामुखानि स्थापय संवौषट् वषट् स्वाहा स्वधा ।

आ मंत्र भणीने ते बिम्ब उपर वासक्षेप करवो. ए रीते बिम्बमां प्राणप्रतिष्ठा करवी. पछी

ॐ ह्रीं अर्हं ॐ ह्रीं-मोक्षद्वारे (ब्रह्मरंध्र उपर) ॐ ह्रीं अर्हं अ आ ललाटे (ललाट उपर)

ॐ ह्रीं अर्हं इ ई-दक्षिणेतरनेत्रयोः।
ॐ ह्रीं अर्हं ऋ ॠ-नासापुटयोः।
ॐ ह्रीं अर्हं ओ औ-स्कन्धयोः।
ॐ ह्रीं अर्हं अः-जिह्वाग्रे।
ॐ ह्रीं अर्हं ग घ-कंठे।
ॐ ह्रीं अर्हं च छ ज झ-दक्षिणभुजे।
ॐ ह्रीं अर्हं ट ठ ड ढ ण-दक्षिणकुक्षौ।
ॐ ह्रीं अर्हं प-दक्षिणोरौ।
ॐ ह्रीं अर्हं ब-गुह्ये।
ॐ ह्रीं अर्हं म-स्फिजोः (इन्द्रियोभयपार्श्वयोः)।
ॐ ह्रीं अर्हं र-ऊर्ध्वरोमाग्रे (मस्तकादिकेशेषु)।
ॐ ह्रीं अर्हं ष-ग्रीवाकक्षादिसन्धिषु।
ॐ ह्रीं अर्हं ष-गुल्फमूलयोः।
ॐ ह्रीं अर्हं ह-हृदये (प्राणस्थाने)

ॐ ह्रीं अर्हं उ ऊ-दक्षिणेतरकर्णयोः।
ॐ ह्रीं अर्हं ए ऐ-ऊर्ध्वाधो दन्तपङ्क्त्योः।
ॐ ह्रीं अर्हं अ-मस्तके।
ॐ ह्रीं अर्हं क ख-मुखमंडले।
ॐ ह्रीं अर्हं ङ-हनुस्थाने। (दाढी पर)
ॐ ह्रीं अर्हं ञ-वामभुजे।
ॐ ह्रीं अर्हं त थ द ध न-वामकुक्षौ।
ॐ ह्रीं अर्हं फ-वामोरौ।
ॐ ह्रीं अर्हं भ-नाभिमंडले।
ॐ ह्रीं अर्हं य-शरीरस्थाने (उदरे)।
ॐ ह्रीं अर्हं ल-पृष्ठे।
ॐ ह्रीं अर्हं श-जानुयुग्मे।
ॐ ह्रीं अर्हं स-पदयोः।

आ प्रमाणे बिंबना सर्वांगे मन्त्रन्यास करवो अने—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रौं शान्तिं कुरु कुरु स्वाहा। ॐ ह्रीं नमो अरिहंताणं, ॐ ह्रीं नमो अरहंताणं ॐ ह्रीं नमो अरुहंताणं, ॐ अर्हं नमः स्वाहा। ॐ ह्रीं नमो अरहताणं ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं अर्हं नमः स्वाहा।

आ मंत्रवडे वास मंत्री बिंबना मस्तके नाखवो, अने

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसाय ह्रीं नमः स्वाहा" अथवा

ॐ ह्रीं परमहंसाय परमपरमेष्ठिने परमहंस हं हां हुं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः परमेष्ठिने नमः स्वाहा।

आ बे कर्णोपदेश मंत्रो पैकीना एक वडे कर्णोपदेश करी बिम्बना मस्तके वासक्षेप करवो अने—

ॐ ऐं क्लीं ह्सौं वद वद, वाग्वादिनि भगवति ह्रीं नमः।

ॐ नमो अरुहंताणं, धातृभ्योऽभीप्सितफलदेभ्यः स्वाहा ॥१॥

ए प्रमाणे आशीर्वाद देवो, त्यां माता स्वप्न देखे तेना नामना नीचेना श्लोको बोलवा—

गजो वृषो हरिः साभि-षेकश्रीः स्रक् शशी रविः। महाध्वजः पूर्णकुम्भः, पद्मसरः सरित्पतिः ॥१॥
विमानं रत्नपुञ्जश्च, निर्धूमाग्निरिति क्रमात्। ददर्श स्वामिनी स्वप्नान्, मुखे प्रविशतस्तदा ॥२॥

श्लोको बोल्या पछी ॐ ह्रीं स्वामिनिस्वप्नदर्शनमिति स्वाहा। आ मंत्र भणवो.

पछी स्नात्रकारे संपूर्ण चैत्यवंदन करवुं, श्रावक श्रीपार्श्वनाथनो कलश कहेवा पूर्वक कुसुमांजलि करी आठ स्तुतिओ वडे

देवनंदन करे आ प्रमाणे च्यवन कल्याणकनी विधि करवी

इति च्यवन कल्याणक विधि।

(७) सप्तमाह्निकम्।

। जन्मकल्याणकोत्सवे विधि-आह्निककृत्यबीजकम्।

सकलीकरणं स्वस्मिन्, शुचिविद्याधिरोपणम्। विधाय बलिप्रक्षेपः, कार्यो धूपजलान्वितः ॥९५॥
नव्यबिम्बेषु सर्वेषु, क्षेप्तव्यः कुसुमाञ्जलिः। मुद्रा च तर्जनी वाम-शयेनाऽस्फोटनं ह्यपाय् ॥९६॥
तिलकं पुष्परोपं च, कृत्वा कार्यं तत परम्। वज्र-तार्क्ष्य-मुद्गराख्य-मुद्राभिर्वर्मरोपणम् ॥९७॥
दिग्बन्धनं च विधिना, सप्त-धान्याभिषेचनम्। विधायाम्बां प्रपूज्याऽथ, जन्मक्षणं निदर्शयेत् ॥९८॥
षट्पञ्चाशत्कुमारीभिः, सूतिकर्म प्रकारयेत्। रक्षापोट्टलिका बध्वा, करे मातुस्सुतस्य च ॥९९॥
जलचन्दनगन्धादि-पुष्पवासादिकांस्तथा। स्वस्वमन्त्रैरभिमन्त्र्य, रत्नग्रन्थिः कराङ्गुलौ ॥१००॥
बध्वा जिनस्य कण्ठे च, क्षेप्याऽरिष्टबालिका। जलदर्शनपूर्वं च, गीतनृत्यादि कारयेत् ॥१०१॥
इन्द्राणीभिः कृते जन्म-क्षणे कार्यं जिनेशितुः। चतुःषष्टिसुराधीशैर्-मेरौ जन्माभिषेचनम् ॥१०२॥

प्रतिष्ठाकारकेन्द्रेण, जिनाग्रे रूप्यतन्दुलैः । कार्योऽष्टमङ्गलालेख-स्ततश्चारात्रिकादिकम् ॥१०३॥

भा० टी०—प्रतिष्ठाचार्ये पोताना आत्मामां सकलीकरण करी शुचि विद्यानो आरोप करवो, पछी धूप तथा जलयुक्त बलिक्षेप कराववो, अने बधा नवीन बिम्बो उपर कुसुमांजलिक्षेप कराववो, तर्जनी मुद्रा देखाडवी, क्रियाकारके डावा हाथमां जल लेइ रौद्रदृष्टिपूर्वक जिनबिंबने आछोटवुं, पछी बिम्बने तिलक करी मस्तके पुष्प चढाववां, गुरुए वज्र; गरुड, मुद्गर मुद्राओ वडे बिंबने कवच करवो, मंत्रपूर्वक दिग्बन्ध करवो, क्रियाकारके अभिमंत्रणपूर्वक सप्तधानथी बिंबोने स्नपन कराववुं, अम्बा देवीने पूजवा पूर्वक जन्ममहोत्सवनुं निदर्शन कराववुं, छप्पन दिशाकुमारीओ वडे सूतिकर्म कराववु, माता तथा पुत्रने हाथे रक्षापोटली बांधवी, अने जल, चन्दन, गन्ध पुष्प, वास आदिने पोतपोताना मंत्रे अभिमन्त्रित करवा, जिनना जमणा हाथनी आंगलीए पंचरत्ननी पोटली बांधवी, जिनना कंठे आरेठांनी माला तथा यवनी माला पहेराववी, अने जलदर्शन करावी गीत नृत्यादिनी धामधूम कराववी. कुमारीओ तथा इन्द्राणीओ द्वारा जन्ममहोत्सव कराया पछी ६४ इन्द्रोए मेरुपर्वत उपर लेइ जईने जिननो जन्माभिषेक करवो, इन्द्ररूपे कल्पायेला प्रतिष्ठाकारक गृहस्थे जिननी आगल रूपाना अक्षतो वडे अष्टमंगल आलेखवा अने ते पछी मंगलदीपक, आरती तथा लवणावतारणादिक कार्यो करवां.

कृत्यविधि—

ॐ नमो अरिहंताणं–हृदये, ॐ नमो सिद्धाणं–मस्तके, ॐ नमो आयरियाणं–शिखायाम्,
ॐ नमो उवज्झायाणं–सन्नाहे, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं–दिग्यासे

एम आत्मरक्षार्थे ३ वार पद भणनपूर्वक प्रतिष्ठाचार्ये अंगन्यास करवो, तथा —

ॐ नमो अरिहंताण, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूण, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो ह्रः क्षः अशुचि. शुचिर्भवामि स्वाहा।

आ शुचि विद्याए ३ वार सर्वांग स्पर्श करी प्रतिष्ठाचार्ये पोतानी पवित्रता करीने स्नात्रकारोनु पण सकलीकरण करवु.

ए पछी ' क्षि प ॐ स्वा हा ' ' हा स्वा ॐ प क्षि ' आ ५ तत्वोने पगो १, नाभि २, हृदय ३, मुख ४, ललाट ५ ।, तथा ललाट १, मुख २, हृदय ३, नाभि ४, पगोमा ५, एम चढ उतर क्रम वडे ३ वार स्थापना. पछी—

" ॐ ह्रूँ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रव बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा "

आ मन्त्र वडे बलि बाकुला मंत्री प्रतिष्ठाना स्थानथी जल सहित बलिउत्क्षेप करवो, धूप उखेवगो, चन्दन पुष्प अक्षत उछालवा, पछी सर्व नवीन जिन बिंबो उपर जल सहित कुसुमाञ्जलि—

अभिनवसुगन्धिविकसित-पुष्पौघभृता सुगन्धिधूपाढ्या । बिम्बोपरिनिपतन्ती, सुखानि पुष्पाञ्जलिः कुरुताम् ॥

ए काव्य बोलीने गुरुए क्षेपवी, अने वचली आंगलिओ उंची करी रौद्रदृष्टिथी नवीन बिंबोने ' तर्जनी ' मुद्रा देखाडवी, अने श्रावके डावा हाथमा जल लेई " ज्लौँ ग्लौँ " उच्चारणपूर्वक प्रतिमाने आछोटवु. पछी गुरुए—

ॐ " ह्रूँ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवं बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा !" आ मन्त्रोच्चारण पूर्वक बिंबने दृष्टिदोष निवारणार्थे 'वज्रमुद्रा,

गरुडमुद्रा अने मद्गरमुद्रा' :वडे ३ वार कवच करवो अने अंज मंत्रथी दिग्बंधन पण करवुं. आ सात धान्योनी त्रण त्रण मुष्टि चिंतो

श्रावके शण १, कुलथ २, शेह ३, जव ४, सरसव ५, कांग ६ अने अडेद ७; उपर नाखवी, अने कुलदेवी अंबानी पूजा करवी. पछी—

" संसारद्रुमदावपावकमहाज्वालाकलापोपमं, ध्यातं श्रीमदनन्तबोधकलितैस्त्रैलोक्यतत्त्वोपमम् । श्रीमच्छ्रीजिनराट्प्रसूतिसमयस्नानं मनःपावनं, कुम्भैः शुभसंभवाय सुरभिद्रव्यौघगर्भाःपूरितैः ॥१॥"

" नमस्त्रिलोकीतिलकाय लोका-लोकावलोकैकविलोकनाय । सर्वेन्द्रवन्द्याय जितेन्द्रियाय, प्रभूतभद्राय जिनेश्वराय ॥२॥"

" ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः अर्हं तीर्थंकरपरमदेवाय ह्रीं मातृकुक्ष्याः प्रसवाय जगज्ज्योतिष्कराय अर्हते नमः स्वाहा ।"

आ श्लोको अने मंत्र भणवो, ते पछी—

उद्योतस्त्रिजगत्यासीद्, दध्वान दिवि दुन्दुभिः । षट्पञ्चाशद्दिक्कुमार्यः, समागत्याऽऽकृत क्रियाम् ॥१॥

कुमार्योऽष्टावधो लोक-वासिन्यः कम्पितासनाः । अर्हज्जन्मावधेर्ज्ञात्वा-ऽभ्येयुस्तत्सूतिवेश्मनि ॥२॥

भोगंकरा भोगवती, सुभोगा भोगमालिनी । सुवत्सा वत्समित्रा च, पुष्पमाला त्वनिन्दिता ॥३॥

नत्वा प्रभुं तदम्बां चे-शाने सूतिगृहं व्यधुः । संवर्तेनाऽशोभयन् क्ष्मा-मायोजनमितां गृहात् ॥४॥

"ॐ ह्रीं अष्टावधोलोक-वासिन्यो देव्यो योजनमण्डल सूतिगृहमशोधयन् स्वाहा।"

आ श्लोको अने मत्र भणीने भूमिशोधन कराववु.

मेघंकरा मेघवती, सुमेघा मेघमालिनी। तोयधारा विचित्रा च, वारिषेणा बलाहका ॥१॥

अष्टोर्ध्वलोकादेत्यैता, नत्वाऽर्हन्त समातृकम्। तत्र गन्धाम्बुपुष्पौघ-वर्षा हर्षाद्वितेनिरे ॥२॥

"ॐ ह्रीं अष्टावुर्ध्वलोकवासिन्यो देव्यो योजनमण्डल गन्धाम्बुपुष्पौघमवर्षयन् स्वाहा।"

आ श्लोको अने मंत्र भणी सुगन्धीजल छटावतु, पछी पुष्प वेरावना.

अथ नन्दोत्तरा नन्दे, आनन्दा-नन्दिवर्धने। विजया वैजयन्ती च, जयन्ती चापराजिता॥

"ॐ ह्रीं अष्टौ पूर्वरुचकवासिन्यो देव्यो विलोकनार्थं दर्पणानि अग्रेऽधारयन् स्वाहा।"

आ श्लोक तथा मंत्र भणीने आरीसा देखाडवा

समाहारा सुप्रदत्ता, सप्रबुद्धा यशोधरा। लक्ष्मीवती शेषवती, चित्रगुप्ता वसुन्धरा॥

"ॐ ह्रीं अष्टौ दक्षिणरुचकवासिन्यो देव्यः स्नानार्थं करे पूर्णकलशान् धृत्वाभिषेक कुर्वन्त्यो गीतगाने विदधति स्वाहा।"

आ श्लोक अने मंत्र भणीने जल कलशोवाली ८ जणीओए उपस्थित थवु

इलादेवी सुरादेवी, पृथिवी पद्मवत्यपि। एकनासा नवमिका, भद्रा शीतेति नामतः॥

"ॐ ह्रूँ अष्टौ पश्चिमरुचकवासिन्यो देव्यो वीजनानि वीजयन्ति स्वाहा ।"

आ श्लोक अने मंत्र भणीने पंखा चलाववा.

अलम्बुषा मितकेशी, पुण्डरीका च वारुणी । हासा सर्वप्रभा श्रीर्ह्री-रष्टोदग्रुचकाद्रितः ॥

"ॐ ह्रूँ अष्टौ उत्तररुचकवासिन्यो देव्यो वालव्यजनानि वीजयन्ति स्वाहा ।"

आ श्लोक अने मंत्र भणीने चामर ढालवा.

चित्रा च चित्रकनका, सुतारा वसुदामिनी । दीपहस्ता विदिक्ष्वेत्या-ऽस्थुर्विदिग्रुचकाद्रितः ॥

"ॐ ह्रूँ चतस्रो विदिग्वासिन्यो देव्यः प्रदीपहस्ता उद्योतं कुर्वन्ति स्वाहा ।"

आ श्लोक अने मंत्र भणीने दीपक देखाडवा.

रूपा रूपासिका चापि, सुरूपा रूपकावती । चतुरङ्गुलतो नालं, छित्त्वा खातोदरेऽक्षिपन् ॥१॥

"ॐ ह्रूँ चतस्रो रुचकद्वीपवासिन्यो देव्यश्चतुरङ्गुलतो नालं छित्त्वा भूखातोदरेऽक्षिपन् स्वाहा ॥"

आ श्लोक तथा मंत्र भणी ४ आंगल नाल कापी खाडामां दाटवुं.

"ॐ ह्रूँ पूर्वोत्तरदक्षिणेषु रम्भागृहत्रयं व्यधुः स्वाहा ॥"

आ मंत्र भणी ३ केलघर बांधवा.

"ॐ राँ रैं रूँ रैं रौं रः उत्तरे अरणिकाष्ठाभ्यामग्निमुत्पाद्य चन्दनाद्यैर्जुहुवात् वषट् ।"

आ मंत्र वडे चन्दनादि काष्टनो होम करी तेनी रुधानी पोटलीओ तैयार करी जिनने तथा जिनमाताने हाथे बांधवी.

ए पछी पवित्र जलकलशो, चन्दन, पुष्पो अने स्नात्रनी पुडिओ नीचेना मंत्रो वडे मंत्रवी.

" ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आपो जल गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।" आ मंत्रथी सर्व जल मंत्रवु

" ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु गन्धान् गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।" आ मंत्रथी वास, चन्दन, तथा सर्व औषधितुं अभिमंत्रण करवु.

" ॐ नमो यः सर्वतो मेदिनी पुष्पवती पुष्प गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।" आ मंत्र वडे पुष्पोनुं अभिमंत्रण करवु.

" ॐ नमो यः सर्वतो बलिं दह दह महाभूते तेजोधिपते धू धू धूपं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।"

ए मंत्रथी धूपनु अभिमंत्रण करवु.

ए पछी नवीन जिनना जमणा हाथनी आगलीए पंचरत्ननी रक्षा पोटली बाधवी, पोटलीओ सौभाग्यमंत्र वडे मंत्रीने प्रत्येक बिंबना जमणा हाथे बाधवी, वली अरीठानी माला तथा जवनी माला प्रत्येक बिंबना कंठमां नाखवी, जलयात्राथी लावेल जल जलकुंडीमां भरी तेमां वास चंदन पुष्पादि नाखी ' ॐ ह्रीं नमः ' आ मंत्र भणतां जलदर्शन कराववु, धूप दीप करवा, गीत-गान नाटकादि करवा. आम दिक्कुमारिकाओनो उत्सव थया पछी—

इन्द्राण्याद्यग्रमहिषी, सामानिकैश्च सयुता । अंगरक्षकदेवीभिः, समागता जिनगृहे ॥१॥

तारा तिलोत्तमा तारू, मनोवेगा च मोहिनी । सुन्दरी त्रिपुरा चैता, माना मानवती मुदा ॥२॥

"ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रूाँ ह्रूीं ह्रूं ह्रूैं ह्रौं ह्रः असिआउसा-त्रैलोक्यललामभूताय अर्हते नमः स्वाहा।"

आ श्लोक अने मंत्र बोलीने नवीन बिंबना भालमां केसरनो तिलक करवो, अने इन्द्राणीए गीत-गान-नाटकादिक करवुं. इन्द्राणीना उत्सव पछी

"ततः सिंहासनं शाक्रं, चचालाऽचलनिश्चलम्। प्रयुज्याऽथावधिं ज्ञात्वा, अर्हज्जन्माभिषेचनम् ॥१॥"
"वक्ष्येकयोजनां घण्टां, सुघोषां नैगमेषिणा। अवादयत्ततो घण्टा-रेणुः सर्वविमानगाः ॥२॥"
"प्रचेलुः सुराऽसुरेन्द्रा-विविधैर्वाहनैर्घनैः। समागत्य जिनास्वां च, नत्वा रूपं च पञ्चधा ॥३॥"
"एको गृहीततीर्थेशः, पार्श्वे द्वावात्तचामरौ। एको गृहीतातपत्र, एको वज्रधरः पुरः ॥४॥"
"शक्रः सुमेरुशृङ्गस्थं, गत्वाऽथो पाण्डुकं वनम्। मेरुचूलादक्षिणेना-तिपाण्डुकम्बलासने ॥५॥"
"अभिषेकोत्सवे जैने, चतुःषष्ठिः पुरन्दराः। सुमेर्वधिष्ठिते स्थाने, समेयुस्ते यथाक्रमम् ॥६॥"
"चमरेन्द्रो १ बलीन्द्रश्च २, धरणेन्द्रस्तृतीयकः ३। भूतानन्दश्च ४ वेणिवन्द्रो ५, वेणुदालिस्तथैव च ॥७॥"
"हरिकान्तो ७ हरिशेणो(सखो)ऽग्निशिखो ९ थाग्निमानवः १०।
पूर्णेन्द्रोऽथ११ विशिष्टश्च१२, जलकान्तो१३ जलप्रभः१४ ॥८॥"
"अमृतगति१५ र्भवनेन्द्रोऽमृतवाहननामकः१६, वेलम्बक१७, प्रभञ्जनो१८, घोष१९ महाघोषकावपि२०॥९॥"

पूर्णभद्र५-माणि भद्रौ६, भीमेन्द्रो७, महाभीमकः८ ॥१०॥"
" कालेन्द्रोऽथ१ महाकालः२, सुरूपः३ प्रतिरूपक.४। महापुरुष१२ नामैको-ऽतिकायाख्य१३ तथाऽपरः ॥११॥"
" किन्नर९ किंपुरुषेन्द्र१०, सत्पुरुषस्तथैव११ हि। समानीको२, धाता३ विधाता४थापरः॥१२॥"
" महाकायो१४ गीतरति१५-र्गीतयशाश्च१६ षोडश। सन्निहितः१ विशालेन्द्रश्च१० हासो११ हासरति.१२ पुनः॥१३॥"
"कपीन्द्रो९ कपिपालश्च६,-श्वर७श्चापि महेश्वर ८। सुवत्सो९, चन्द्रा१ दित्यौ२ ज्योतिषेन्द्रौ, कल्पेन्द्रा दशधा
" श्वेतो१३ महाश्वेत१४ पतङ्ग१५ पतगपतीश्वराः१६ पुनः ॥ १४ ॥"
" सौधर्मेन्द्र१ ईशानेन्द्रः२, सनत्कुमार३ पुरन्दरः। माहेन्द्रो४ ब्रह्मेन्द्रश्च५, लान्तकेन्द्रश्च६ वज्रिणः ॥१५॥"
" शुक्रेन्द्रः७ सहस्रारेन्द्र८, आनत-प्राणतेश्वरः९। आरणाच्युतशक्रश्च१०, इतीन्द्राः चतुःषष्ठिका ॥१६॥"

(आ प्रकारना श्लोको भणीने) "ॐ ह्रीं क्ष्रुं हुँ सौधर्मेन्द्रादिचतुःषष्टिरिन्द्रा अस्मिन् प्रतिष्ठामहोत्सवे सर्वविघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञया सावधाना भवन्तु स्वाहा।"

ए श्लोको तथा मंत्र भणीने—

" श्रीमन्मन्दरमस्तके शुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षते, पीठे मुक्तिवर निधाय रुचिरे तत्पादपुष्पस्रजा।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे, मुद्राकङ्कणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥"
" विश्वैश्वर्यैकवर्यास्त्रिदशपतिशिरःशेखर स्पृष्टपादाः, प्रक्षीणाऽशेषदोषाः सकलगुणगणग्रामधामान एव।

जायन्ते जन्तवो यच्चरणसरसिजद्वन्द्वपूजान्विताः श्री-अर्हन्तं स्नात्रकाले कलशभृतजलैरेभिराप्लावयेत्तम् ॥२॥"
" ॐ ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अर्हते तीर्थोदकेन अष्टोत्तरशतौषधिसहितेन षष्ठिलक्षैककोटिप्रमाणकलशैः स्नापयामीति स्वाहा ।"

आ काव्यो अने मंत्र भणनो, ते पछी—

" तत्र पूर्वमच्युतेन्द्रो, विदधात्यभिषेचनम् । ततोऽनुपरिपाटीतो, यावच्चन्द्रार्यमादयः ॥१॥"

आ श्लोकोक्त नियमानुसार सर्व प्रथम अच्युतेन्द्रे अभिषेक करवो, ते पछी आनत प्राणतेन्द्रादि उतरता क्रमथी यावत् चन्द्र सूर्य सर्व इन्द्रो अभिषेक करे, प्रत्येक अभिषेक करतां नीचे लखेल मंत्र बोलवो—

" ॐ ह्राँ ह्रीँ क्षीरोदकादितीर्थजलेन स्नापयामीति स्वाहा ।"

क्रमानुसार शक्रेन्द्रनो वारो आवतां शक्रेन्द्रे—

" चतुर्वृषभरूपाणि, शक्रः कृत्वा ततः स्वयम् । शृङ्गाष्टकक्षरत्क्षीर-स्करोदभिषेचनम् ॥१॥"

आ श्लोकोक्त नियमानुसार चार वृषभरूप करीने शृंगोथी अभिषेक करवो.

देवकृत स्नानाभिषेको थई गया पछी इन्द्ररूपे कल्पायेला प्रतिष्ठा करावनार गृहस्थे जिन आगे रूपाना अक्षतो (तेना अभावे अखंडउज्वल स्वाभाविकधान्य) वडे अष्ट मंगलो पूरवां अने—

" सन्मङ्गलप्रदीपं ते, विधायाऽऽरात्रिकं पुनः । संगीतनृत्यवाद्यादिं, व्यधुर्विविधमुत्सवम् ॥१॥"

आ श्लोक भणवो अने मंगलदीवो तथा आरती उतारवी, वाजिंत्रादि वगाडवा, अने आठ स्तुतिओथी देववंदन करवुं. आ प्रमाणे देवकृत जन्मोत्सव करवो.

(८) अष्टमाह्निकम् ।

अष्टादश अभिषेकविधि-आह्निकबीजकम्

जिनस्य जन्मवृत्तान्ते, दास्या राज्ञे निवेदिते। राज्ञा नृत्योत्सवमयी, स्थितिश्चक्रे दशाहिका ॥१०४॥
तथाहि-प्रथमे घस्रे, कृतकौतुकमङ्गलः। अभिषेकविधिर्वर्यो, विदधे मङ्गलार्थिना ॥१०५॥
जलं गन्धाश्च पुष्पादि, स्वस्वमन्त्राभिमन्त्रितम्। अभिषेकेषु सर्वेषु, नियोज्यं विधिवित्तमैः ॥१०६॥
प्रत्येकस्नात्रपर्यन्ते, मूर्धनि पुष्परोपणम्। ललाटे तिलकं धूप-दाहः कार्यो विदांवरैः ॥१०७॥
सुवर्णस्य जलेनाऽथ,[१] पञ्चरत्नजलेन[२] च। कषायछल्लिनीरेण[३], मृत्तिकामिश्रवारिणा[४] ॥१०८॥
पञ्चगव्यकुशोदेन,[५] सदौषधिजलेन[६] च। मूलिकाचूर्णनीरेणा[७]-ऽऽद्याष्टवर्गजलेन[८] च ॥१०९॥
द्वितीयाष्टकवर्गस्य, वारिणा गुणधारिणा[९]। विधाप्य स्नाननवकं, जिनाह्वानमथाचरेत् ॥११०॥
दिक्पालांश्च समाहूय, तत्तद्दिशि विनिक्षिपेत्। पुष्पाञ्जलिं ततः सर्वौ-षधिस्नानं विधापयेत् ॥१११॥

ततो नव्यजिनं स्पृष्ट्वा, स्वेन दक्षिणपाणिना । मन्त्रन्यासं गुरुः कृत्वा, ग्रन्थिं सर्पपसंभवम् ॥११२॥
जिनपाणौ बन्धयित्वा, दुर्दृग्दोषनिवारणम् । तिलकं चाञ्जलिं कृत्वा, ततो विज्ञप्तिमाचरेत् ॥११३॥
अर्घं सुवर्णपात्रस्थं, जिनस्याग्रे विमोचयेत् । तथैव दिगधीशाना-मर्घदानं निवेदयेत् ॥११४॥
ततः पुष्पजलेनैका-दशं[11] स्नानं विधापयेत् । गन्ध[12]—वासजलैः[13] कार्यं, चन्दनस्य रसेन[14] च ॥११५॥
केसरस्य[15] जलेनापि, स्नानं पञ्चदशं विदुः । ततस्तीर्थजलोत्थं[16] च, तथा कर्पूरवारिणा[17] ॥११६॥
पुष्पाञ्जलिभवं[18] चान्त्यं, स्नानमष्टादशं स्मृतम् । घृतं दुग्धं दधि चेक्षु-रसः सर्वौषधिस्तथा ॥११७॥
पञ्चामृतानितैर्वृत्तं, मतं पाञ्चामृताभिधम् । सर्वस्नानेषु वृत्तेषु, वासचूर्णादिना ततः ११८॥
विम्बस्नेहं निराकृत्य, भूयो निर्मलवारिणा । कुम्भाष्टकेन संस्नप्य, काव्यघोषपुरस्सरम् ॥११९॥
रुक्षयित्वा ततो विम्बं, विलिप्य चन्दनादिभिः । पुष्पारोपं विधायाऽऽरा-त्रिकादिकं समाचरेत् ॥१२०॥

भा० टी०—दासी द्वारा जिनजन्मनी वधाई राजाने अपाई अने राजाए गीत-नृत्यादि महोत्सवमयी दश दिवसनी जन्म महोत्सवनी स्थिति जाहेर करी. तेमां पहेले दिवसे राजाए मंगलाचारपूर्वक मंगल निमित्त जन्माभिषेकनी विधि करी ते रीते विधिना जाणकारोए जल, गन्ध, पुष्प आदि अभिषेकोपयोगी पदार्थो स्व स्व मंत्रोए अभिमंत्रित करीने सर्व अभिषेकोमां वाप-

रवा, प्रत्येक स्नानने अन्ते जिनने मस्तके पुष्पारोपण करवु, ललाटे तिलक करवो अने प्रत्येक अभिषेकना अन्तराले जाणकारोए धूप उखेववो.

अभिषेको आ प्रमाणे करवा—सुवर्णजलनो १, पञ्चरत्न जलनो २, कषाय छालना जलनो ३, तीर्थमृत्तिकाना जलनो ४, पञ्चगव्यकुशोदकनो ५, सदौषधि जलनो ६, मूलिकाचूर्णना जलनो ७, प्रथमाष्टकवर्ग जलनो ८ अने द्वितीयाष्टकवर्ग जलनो ९, ए नव अभिषेको करीने जिनाह्वान करवुं अने दश दिक्पालोनुं आह्वान करीने ते ते दिशामा पुष्पाञ्जलि क्षेपवी पछी सर्वौषधिनो अभिषेक १० मो करवो.

ए पछी गुरुए पोताना जमणा हाथथी नव्य जिनबिंबने स्पर्शी मंत्रन्यास करवो अने दृष्टिदोष निवारणार्थ तेमना हाथे सरसवोनी पोटली बांधीने ललाटमा तिलक करी विज्ञप्ति करवी, जिन आगे सुवर्णपात्रमा अर्घ मूकवो, तथा दिशापालोने पण ते ते दिशामा अर्घ आपवो.

ए पछी पुष्पजलनो ११ मो अभिषेक करवो, गन्धजलनो १२ मो, वासजलनो १३ मो, चन्दनजलनो १४ मो, अने केसर जलनो १५ मो अभिषेक करवो, तीर्थजलनो १६ मो. कर्पूरजलनो १७ मो, अने पुष्पाञ्जलि क्षेपनो १८ मो अभिषेक करवो.

घी, दूध, दही, शेरडीरस तथा सर्वौषधि, आ पांच अमृत गणाय छे, आ पंचामृतनो ते "पञ्चामृत" नामनो एक अभिषेक करवो, सर्व स्नानो थई रह्या पछी वास-कर्पूर-चूर्णादिक घसीने प्रतिमाना अंग उपरथी स्निग्धता (चिकाश) दूर करवी अने छेल्ले निर्मल जलना कलशो करीने "चक्रे देवेन्द्रराज" आ काव्य उच्च स्वरे बोलता आठ अभिषेको करवा

अभिषेको थई रह्या पछी अंगलूंछणां करी बिंबने चंदनादिनुं विलेपन करवुं, पुष्प चढाववां अने मंगलदीपक तथा आरती आदि कार्यो करवां.

कृत्यविधि—

उपकरणो

सुवर्णचूर्ण अथवा सुवर्णकलश ४।	पञ्चरत्नचूर्ण पडिकुं १।	कषायछालचूर्ण पडिकुं १।
मंगलमृत्तिका पडिकुं १।	पंचगव्य दर्भजल।	महौषधि पडिकुं १।
मूलिकाचूर्ण।	प्रथमाष्टवर्ग चूर्ण।	द्वितीयाष्टवर्ग चूर्ण।
सर्वौषधि चूर्ण।	पुष्पजल।	गन्धचूर्णजल।
वासचूर्ण जल।	चन्दनद्रव।	केसरजल।
तीर्थजल।	कर्पूरचूर्ण जल।	पुष्पाञ्जलि।
घी–दूध–दही–खांड–सर्वौषधि।	वासक्षेप रकाबी १।	दशांग धूप पडिकुं १।
सुगंधीपुष्प छाब १।	शुद्ध जले भरेला कलश ४।	धोला अथवा पीला सरसव नांखेल
घसेल केसर चंदनबरासनी वाटकी २।	पंचरतननी पोटली १।	घसेला चंदन-गोरोचननी वाटकी १।
अर्घ पात्र २।	हस्तलेपनी वाटकी १।	घीनी वाटडी १।

सरसननी पोटली ।	मींढलना कंकण ।	गेंगाहूनी कोकडी १।
आरेठानी माला नित्र प्रति १—२ ।	फल ।	जवनी माला ।
पान सोपारी ।	अक्षत ।	नैवेद्य ।
कलशिया ४।	गलास या नालविनानो कलशियो १।	आरीसो १।
जर्मनशिल्वरनी अथवा त्रांबापीतलनी कुंडी १।	प्रक्षालनी कुंडी ।	वासक्षेपनुं पडिकुं १।
मंगल दीवो १ आरती १।	रलियाकुल भींजवेला ।	दीवो १ (जंगाल) ।

विधि—प्रथम स्नात्रकार श्रावके जिनमुद्राए उभा रही जल कलशादिकनी अभिवासना करी—

ॐ नमो य. सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आगच्छ आगच्छ, जल गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।

आ मंत्र करी जलभृत कलशादिकनुं अभिमंत्रण करवुं.

ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु विपृथु विपृथु गन्धान् गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।

आ मंत्रथी गंध, वास, चन्दन, अष्टवर्ग महौषधि सर्वौषधि, केसर, कर्पूरादिनुं अभिमंत्रण करवुं.

ॐ नमो यः सर्वतो मेदिनि ! पुष्पवति ! पुष्पं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।

आ मंत्रथी प्रत्येक स्नात्रमा चढाववाना पुष्पो अभिमंत्रवा.

ॐ नमो यः सर्वतो बलिं दह दह, महाभूते तेजोधिपते धू धू धूप गृह्ण गृह्ण स्वाहा ।

आ मंत्रथी प्रत्येक अभिषेकमां करातो धूप अभिमंत्रवो. पछी अभिषेक वखते तेमांथी कलशो भरवा, थोडो थोडो वास, घसेल चन्दन, पुष्पो, प्रत्येक अभिषेकना जलमां नाखवा, प्रत्येक स्नात्रने अन्ते प्रतिमाना मस्तके पुष्प चढाववुं, ललाटमां तिलक करवुं, वासक्षेप करवो, अने धूप उखेववो.

अभिषेकना प्रारंभमां श्रावकोए प्रतिमाना जमणा हाथनी आंगलीमां पंचरत्ननी गांठडी बांधवी, ते पछी तैयार करेल स्नात्रनी पुडियोमांथी अनुक्रमे एक एक पुडी मंत्रमुद्राधिवासित पवित्र तीर्थजलमां नाखी ते जल वडे चार चार कलशो भरीने परमेष्ठीमंगलपूर्वक वाजित्रोना शब्दो साथे स्नात्रकारोए १८ स्नात्रो करवां. 'नमोऽर्हत्०' कहो मंत्रपाठ कहे त्यां सुधी वादित्रो बंध रखाववां. दरेक अभिषेकना पाठनुं काव्य बोलतां पहेलां 'नमोऽर्हत्०' बोलवुं अने काव्य बोल्या पछी, "ॐ नमो जिनाय हूँ अर्हते स्वाहा" आ मंत्र बोलीने प्रतिमा उपर अभिषेक करवो.

प्रत्येक अभिषेकने अंते श्वेत अथवा पीत सरसवमिश्रित चंदन-गोरोचननो ललाटमां तिलक करवो. तिलक करतां नीचेनुं काव्य बोलवुं.

"भाति भवतो ललाटे, राकाचन्द्रार्धसंनिभे भगवन् । प्रासलयो मलयोद्भव-सिद्धार्थकरोचनातिलकः ॥१॥"

प्रत्येक अभिषेकने अन्ते तिलक कर्या पछी नीचेनुं काव्य बोलतां मस्तके पुष्प चढाववुं.

"किं लोकनाथ! भवतोऽतिमहर्धतैषा, किं वा स्वकार्यकुशलत्वमिदं जनानाम् ।
किं वाऽद्भुतः सुमनसां गुण एष कश्चि-दुष्णीषदेशमधिरुह्य विभान्ति येन ॥१॥"

प्रत्येक अभिषेकना अंते नीचेनुं काव्य बोलीने दशांग धूप उखेववो—

" मीनकुरंगमदागुरुसारं, सारसुगंधनिशाकरतारम् ।
तारमिलन्मलयोत्थविकार, लोकगुरोर्दह धूपमुदारम् ॥ १ ॥"

अभिषेककाव्यादि—

१ सुवर्णजल—'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः'

सुपवित्रतीर्थनीरेण, सयुत गन्धपुष्पसमिश्रम् । पततु जल बिंबोपरि, सहिरण्य मन्त्रपरिपूतम् ॥१॥

ॐ नमो जिनाय ह्रीँ अर्हते स्वाहा ।

२ पंचरत्न जल– 'नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः'

नानारत्नौघयुत, सुगन्धपुष्पाधिवासित नीरम् । पततात् विचित्रवर्ण, मंत्राढ्यं स्थापनाबिम्बे ॥२॥

ॐ नमो जिनाय ह्रीँ अर्हते स्वाहा ।

३ कषायछाल जल– नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

प्लक्षाश्वत्थोदुम्बर–शिरीष वल्ल्यादिकल्कसमिश्रम । बिंबे कषायनीर, पततादधिवासित जैने ॥३॥

ॐ नमो जिनाय ह्रीँ अर्हते स्वाहा ।

४ मंगलमृत्तिका जल– नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

पर्वतसरोनदीसंग–मादिमृद्भिश्च मंत्रपूताभिः। उद्वर्त्य जैनबिम्बं स्नपयाम्यधिवासनासमये ॥४॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा।

५ पंचगव्यदर्भोदक– नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

जिनबिम्बोपरि निपतद्, घृतदधिदुग्धादिद्रव्यपरिपूतम्। दर्भोदकसंमिश्रं, पंचगवं हरतु दुरितानि ॥५॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा।

६ सदौषधिचूर्णजल– नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

सहदेव्यादिसदौषधि–वर्गेणोद्वर्त्तितस्य बिम्बस्य। संमिश्रं बिम्बोपरि, पतज्जलं हरतु दुरितानि ।६॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा।

७ मूलिकाचूर्ण जल– नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

सुपवित्रमूलिकावर्ग–मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा। बिम्बेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥७॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा।

८ प्रथमाष्टकवर्ग जल– नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

नानाकुष्ठाद्यौषधि–संसृष्टे तद्युतं पतन्नीरम्। बिंबे कृतसन्मन्त्रं, कर्मौघं हरतु भव्यानाम् ॥८॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा।

९ द्वितीयाष्टकवर्ग जल- नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

मेदाद्यौषधिभेदो-ऽपरोऽष्टवर्गः स्वमंत्रपरिपूतः । जिनबिम्बोपरि निपतत्, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥९॥

ॐ नमो जिनाय ह्रॅं अर्हते स्वाहा ।

जिनाह्वानादि आन्तर विधि—नव अभिषेक थया पछी प्रतिष्ठाचार्ये उभा थई गरुड, मुक्ताशुक्ति अने परमेष्ठी नामक त्रण मुद्राओ पैकीनी कोई पण एक मुद्रा करीने प्रतिष्ठाप्य देवनु आ प्रमाणे आह्वान करवुं—

ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ, स्वाहा ।

जिनाह्वान पछी विधिकारे नीचे प्रमाणे दिक्पालोनु आह्वान करवुं—

१ ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
२ ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
३ ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकाय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
४ ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
५ ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
६ ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

७ ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
८ ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
९ ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।
१० ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

ए मंत्रोथी प्रत्येक दिक्पालनुं आह्वान तेनी दिशा संमुख उभा रहीने करवुं 'स्वाहा' पछी तेनी तरफ वासक्षेप करवो अने श्रावके पुष्पांजलि फेंकवी

जो अंजन शलाकानुं विधान होय तो 'प्रतिष्ठाविधौ' बोलवुं. पण केवल 'बिंबस्थापनानो ज प्रसंग होय तो 'इह जिनेन्द्रस्थापने' अथवा 'जिनेन्द्रस्थापनाविधौ' आमांथी कोई एक पाठ बोलवो.

१० सर्वौषधि जल— नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

सकलौषधिसंयुत्या, सुगन्धया घर्षितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनबिम्बं, मंत्रिततन्नीरनिवहेन ॥१०॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा ।

मंत्रन्यासादि अवान्तर विधि—दशमो अभिषेक थया पछी प्रतिष्ठाचार्ये दृष्टिदोष निवारण माटे प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाने पोतानो जमणो हाथ अडकावी नीचेना मंत्रनो न्यास करवा—

ॐ इहागच्छन्तु जिनाः सिद्धा भगवन्तः स्वसमयेनेहानुग्रहाय भव्यानां भः स्वाहा । अथवा

ॐ क्षां क्ष्वीं ह्रूं क्षीं मः स्वाहा ।

आ बे पंक्तीना एक मत्रनो न्यास करवो, ते पछी श्रावक दृष्टिदोष निघातार्थं लोहाऽस्पृष्ट धोला सरसवोनी पोटली नीचे लखेल मंत्रे ७ वार मंत्रीने जिनबिम्बने हाथे बाधवी

पोटली मत्रवानो मत्र—" ॐ क्षां क्ष्वीं श्रूीं स्वाहा ।"

सर्व बिम्बोने पोटली बाधी ललाटमा चन्दननी टीली देवी, ए पछी प्रतिष्ठाचार्य हाथ जोडीने आ प्रमाणे विज्ञप्ति करे,—

स्वागता जिनाः सिद्धाःप्रसाददाः सन्तु,प्रसादं धिया कुर्वन्तु,अनुग्रहपरा भवन्तु, भव्याना स्वागतमनुस्वागतम्॥

ते पछी श्रावक सर्षप दहि घृत अक्षत डाभ आ पाच द्रव्यात्मक अर्घ सुवर्ण पात्रमा लेईने हाथ जोडी—

ॐ भ. अर्घं प्रतीच्छन्तु पूजा गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा ।

आ मत्र बोलवा पूर्वक अर्घपात्र जिन आगल मूकवु. एज रीते श्रावक सरसवादि पाच द्रव्यात्मक अर्घनु बीजुं पात्र हाथमा लेईने तथा प्रतिष्ठाचार्य वास लेईने दिक्पालोनु नीचे प्रमाणे आह्वान् करी अर्घ प्रदान करे.

ॐ इन्द्राय आगच्छ आगच्छ, अर्घं प्रतीच्छ प्रतीच्छ, पूजा गृहाण गृहाण स्वाहा ।

उपर प्रमाणे पूर्वदिशा समुख इन्द्रनु आह्वान करी प्रतिष्ठाचार्य वासक्षेप करे, अने स्नात्रकारो अर्घ चन्दन अक्षत पुष्प उछाले, दीपक दखाडे, धूप उखेवे. अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, नाग, ब्रह्माने पण ते ते दिशा समुख आह्वान पूर्वक अर्घप्रदान करवो.

श्रावको अर्घ आपती वेलाए " दिक्पाला अर्घं प्रतीच्छन्तु " आ शब्दो बोल्या करे. पछी–

११ कुसुम जल–नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

अधिवासितं सुमंत्रैः, सुमनःकिंजल्कराजितं तोयम् । तीर्थजलादिसुपृक्तं, कलशोन्मुक्तं पततु बिम्बे ॥११॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा ।

१२ गंध जल–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

गन्धांगस्नानिकया, सम्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः । स्नपयामि जैनबिम्बं, कर्मौघोच्छित्तये शिवदम् ॥१२॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा ।

१३ वास जल–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

हृद्यैराह्लादकरैः, स्पृहणीयैर्मंत्रसंस्कृतैर्जैनम् । स्नपयामि सुगतिहेतो–र्बिम्बं अधिवासितं वासैः ॥१३॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा ।

१४ चन्दन रस–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

शीतलसरससुगंधी, मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः । चन्दनकल्कः सजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनबिम्बे ॥१४॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा ।

१५ केसर जल–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

काश्मीरजसुविलिप्तं, बिम्बं तन्नीरधारयाऽभिनवम्। सन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जेन स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥१५॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा।

आन्तरविधिः—पदरमो अभिषेक करी प्रतिमाने आरीसो देखाडवो

१६ तीर्थ जल-नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

जलधिनदीह्रदकुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि। तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, बिम्बं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥१६॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा।

१७ कर्पूर जल-नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

शशिकरतुषारधवला, उज्ज्वलगंधा सुतीर्थजलमिश्रा। कर्पूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु बिम्बे ॥१७॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा।

१८ बिम्बोपरि पुष्पाञ्जलिक्षेप-नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

नानासुगन्धिपुष्पौघ-रञ्जिता चञ्चरीककृतनादा। धूपामोदविमिश्रा, पततात्पुष्पांजलिर्बिम्बे ॥१८॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा।

पञ्चामृतनो अभिषेक—अढार अभिषेकने अन्ते घृत १, दुग्ध, २, दहि ३, खाड ४, सर्वौषधि चूर्ण ५; आ पाच द्रव्योनुं पंचामृत करीने नीचेना श्लोको बोली तेनो अभिषेक करवो,—

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

घृतमायुर्वृद्धिकरं, भवति परं जैनगात्रसंपर्कात्। तद् भगवतोऽभिषेके, पातु घृतं घृतसमुद्रस्य ॥१॥
दुग्धं दुग्धांभोधे-रुपाहृतं यत्पुरा सुरवरेन्द्रैः। तद् बलपुष्टिनिमित्तं, भवतु सतां भगवदभिषेकात् ॥२॥
दधि मंगलाय सततं, जिनाभिषेकोपयोगतोऽप्यधिकम्। भवतु भविनां शिवा-ध्वनि दधिजलधेराहृतं त्रिदशैः ॥३॥
इक्षुरसोदादुपहृत-इक्षुरसः सुरवरैस्त्वदभिषेके। भवदवसदवथु भविनां, जनयतु नित्यं सदानन्दम् ॥४॥
सर्वौषधिषु निवसत्यमृतमिदं सत्यमर्हदभिषेके। तत्सर्वौषधिसहितं, पञ्चामृतमस्तु वः सिद्ध्यै ॥५॥

ॐ नमो जिनाय ह्रूँ अर्हते स्वाहा।

पंचामृतनो अभिषेक कर्या पछी कर्पूरना चूर्ण वडे घसी प्रतिमानी स्निग्धता दूर करवी. चीकाश वधारे होय तो साधारण उष्ण जलनो उपयोग करवो, पछी ८ कलशिया शुद्धजले भरी अभिमंत्रित करीने नीचेनुं काव्य बोलतां आठ अभिषेक करवा—

चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-र्नृत्यन्तीभिः सुरीभिर्ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः।
कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै-र्बिम्बं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥

आ काव्य प्रत्येक अभिषेके उच्च स्वरे बोलवुं. पछी अंग लूंछी चन्दनादि विलेपन करवुं. प्रतिमा आगे पान, सोपारी, फलादि ढोवुं, ते पछी स्नात्रकारोए आरती मंगल दीवो करवो अने प्रतिष्ठाचार्ये संघ सहित मूलनायकनां चैत्यवन्दन-स्तुतिथी देववन्दन करवुं, मूलनायकनुं चैत्यवंदन स्तुतिओ याद न होय तो नीचेनुं चैत्यवंदन कहेवुं—

जय श्रीजिन ! कल्याण-वल्लीकन्दलनाम्बुद ! । मुनीन्द्रहृदयाम्भोज-विलासवरषट्पद ॥१॥
तव नाथ ! पदद्वन्द्व-सपर्यारसिका जनाः । सर्वसम्पत्सुखश्रीभि-र्विलसन्ति सदोदया ॥२॥
नृलोके चक्रिताद्या याः, स्वर्लोके चेन्द्रतादयः । शिवेऽनन्तसुखाद्यास्ता-स्तव भक्तिवशाः श्रियः ॥३॥
सर्वश्रेय.श्रिया मूलं, ददद्धर्मं समग्रवित् । योगक्षेमकरो नाथ-स्त्वमेव जगतामसि ॥४॥
त्वमेव शरण वस्तु-स्त्वमेव मम देवता । तन्मा पाहि भवात्तात ! कुरु श्रेयःसुखास्पदम् ॥५॥
नमुत्थुणं, अरिहंत चेइयाणं०, १ नो० का०, नमोऽर्हत्०, स्तुति-' अर्हंस्तनोतु'०, लोगस्स०, सव्वलोए अरिहंत०, १ नो० का०, स्तुति-'ॐमिति मन्ता०,' पुक्खरवरदी०, सुअस्स भगवओ करेमि का०, वंदणवत्तियाए०, १ नो० का०, स्तुति—'नवतत्त्वयुता०', सिद्धाणं बुद्धाणं०, श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि का०, वंदण०, का० १ लोगस्स-सागरवर गंभीरा०, नमोऽर्हत्०, स्तुति- " श्रीशान्ति श्रितशान्ति'," सुयदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमोऽर्हत्०, स्तुति-"यद वदति न वाग्वादिनि," सासणदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमोऽर्हत्०, स्तुति-' उपसर्गवलयविलयन०" अम्बिकायै करेमि का०, १ नो०, नमोऽर्हत्०, स्तुति-" अम्बा बालाङ्कितङ्कासो०", अच्छुत्ताए करेमि का०, १ नो०, नमोऽर्हत्०, स्तुति-" चतुर्भुजा तडिद्वर्णा०", खित्तदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमोऽर्हत०, स्तुति-" यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य०," समस्तवेयावच्च०, १ नो० का०, नमोऽर्हत्०, स्तुति-" सङ्घेऽत्र ये०" ? नवकार०, नमुत्थुणं०, जावंति चे०, जावंत केवि०, नमोऽर्हत्०, स्तवन-" ॐमिति नमो भगवओ०, " जयवीयराय० ।

ए पछी मूलनायक बिंबनुं नामस्थापन करवुं, कुंकुमनां छांटणां करवां. पत्रदान आपवुं अने ते पछी नीचेनी विधिथी प्रतिमाने वस्त्राभूषणोथी अलंकृत करी नैवेद्य चढाववुं.

चञ्चच्चारुशुचिप्ररोहविसरप्रद्योतिताशामुखे, दिव्यश्रीकदिवाकरद्युतिभरादालुप्तदृग्गोचरे ।
निर्मूल्ये विशुची शुचौ जिनमहे दिव्यैकदेवाङ्गना–नीतैराभरणैरलंकृतमहो देहे दधे वाससी ॥९॥

ॐ ह्राँ ह्रीँ परमअर्हते वस्त्राभरणैरर्चयामिति स्वाहा ।

आ काव्य तथा मंत्र भणीने प्रतिमाने आभूषण पहेराववां, वस्त्रयुगल चढाववुं, अने—

सज्जैः प्राज्याज्ययुक्तैः परिमलबहुलैर्मोदकैर्मिश्रिखण्डैः, खाद्याद्यैर्लापनश्रीघृतवरपृथुलापूपसारैरुदारैः ।
स्निग्धौघोभिर्नितान्तं चरुभिरभिनवैः कर्मवल्लीपुठारान्, चापे(ये:)र्निर्माथधुर्पान् सुरनरमहितानर्चयेदर्हदग्र्यान् ॥१॥

ॐ ह्राँ ह्रीँ परमअर्हते नैवेद्येनार्चयामीति स्वाहा ।

आम काव्य सहित मंत्र भणीने नैवेद्य चढाववुं अने बलिबाकुला उछालवा ॥ इति अभिषेकविधि ॥

—※※※—

(९) नवमाह्निकम् ।

दीक्षाकल्याणकोत्सव अने अधिवासना—आह्निकबीजकम् ।

अथोपनयनं लेख-शालायां समहोत्सवम् । जिनस्य शिशुच्छात्राणां, कृते नाना सुखादिका ॥१२१॥
पाठोपकरणं चापि, पट्टिकापुस्तकादिकम् । प्रदेयं छात्रवर्गाय, गुडधानादिकं तथा ॥१२२॥
जिनं यौवनसंप्राप्तं, मत्वा लोकेषणां विदन् । विवाह-मंगलं कुर्या-ल्लोकरीतिमनुस्मरन् ॥१२३॥
विज्ञः स्नात्रकरः श्राद्धो, निजेन वामपाणिना । जिनस्य दक्षिणं पाणिं, समादाय समर्चयेत् ॥१२४॥
श्रीखण्डकुङ्कुमद्रवैः, सर्वाङ्गं श्रीजिनेशितुः । धेनुपद्माञ्जलिमुद्रा—त्रिकं कृत्वा गुरुस्तदा ॥१२५॥
अधिवासनमन्त्रेणा-भिमन्त्र्य कङ्कणोत्तमम् । सव्यं करं जिनेशानां, कुर्यात्कङ्कणभूषितम् ॥१२६॥
मुक्ताशुक्तिचक्रमुद्रा-पूर्वं स्पृष्ट्वा जिनेश्वरम् । मस्तके स्कन्धयोर्जान्वो—स्ततश्च धूपमुत्क्षिपेत् ॥१२७॥
गुरुश्च परमेष्ठयाख्य-मुद्रयाऽऽहूय श्रीजिनम् । त्रिरधिवासयेद् मन्त्रैः, पश्चाद्वासानपि क्षिपेत् ॥१२८॥
सदशं धूपवासादि-वासित वस्त्रमक्षतम् । समारोप्य जिने सप्त-धान्यस्नानं प्रकारयेत् ॥१२९॥
कार्यं प्रोक्षणकं स्त्रीभिः, सुवर्णदानपूर्वकम् । भोगसामग्रिकामग्रे, ढौकयेल्लोकदुर्लभाम् ॥१३०॥

सर्वेषां जिनबिम्बानां, हस्तेषु हस्तलेपनम् । प्रियंगु-रोचनाचन्द्र-संभवं तनुयात् सुधीः ॥१३१॥
षष्ठ्यधिका च त्रिशती, क्रयाणकसमुद्भवा । जिनहस्ते प्रदातव्या, सर्वसंप्राप्तिसूचिका ॥१३२॥
ग्रहानाहूय तेभ्यश्च-बलिभाण्डोपढौकनम् । विधाय तोरणोपेतां, वरां चतुरिकां न्यसेत् ॥१३३॥
तत्र भद्रासनं न्यस्य, प्रतिमामुपवेशयेत् । पार्श्वे स्वर्णघटं न्यस्य, न्यसेद्दीपचतुष्टयम् ॥१३४॥
बलिपात्राणि संढौक्य, ततः कोणचतुष्टये । चतुरो घटकान् श्वेतान्, स्थापयेत् कङ्कणान्वितान् ॥१३५॥
ततोऽधिरोपयेद् वस्त्रं, वासितं वासचन्दनैः । मन्त्रपूर्वं ततो भोग-सामग्रीमुपढौकयेत् ॥१३६॥
राज्यारोहसमारोहः, कर्तव्यस्तिलकादिकः । दीक्षाकल्याणकं पश्चा-द्यथायुक्ति प्रदर्शयेत् ॥१३७॥
चैत्यवन्दनमाधाय, ततोऽधिवासनादिकाः । स्मर्तव्या देवताः कायो-त्सर्ग-स्तुतिकदम्बके ॥१३८॥

भा० टी०—हवे प्रथम जिनने निशाले मोकलवानो उत्सव करवो, त्यां निशालिआ बालको माटे अनेक प्रकारनी सुखडी तथा पाटी, पुस्तकादि भणवानां उपकरणो साथे लेवां, अने छात्रोने वहेंचवां, छोकराओने गोल-धाणा आदि आपवुं.

जिननी यौवनावस्था कल्पीने लोकेषणाना ज्ञाता विधिकारे लोकरीति प्रमाणे विवाह-मंगलनुं निदर्शन करावबुं, विद्वान् स्नात्रकार श्रावके पोताना डाबा हाथ वडे जिननो जमणो हाथ पकडीने सुखड केसरना घोल वडे जिनना सर्वांगे पूजन करवुं.

गुरुए धेनु, पद्म अने अंजलि, ए त्रण मुद्राओ देखाडवी, अने अधिवासना मंत्रे करी कंकणो मंत्रीने नवी नव्य जिन प्रतिमाओना जमणा हाथे १—१ कंकण बांधवुं मुक्ताशुक्ति मुद्रा देखाडी चक्रमुद्राए मस्तक, बे स्कन्ध, अने बे जानुनो स्पर्श करवो तथा (श्रावके) धूप उखेववो अने गुरुए परमेष्ठिमुद्राए जिननुं आह्वान करवुं गुरुए त्रण वार अधिवासना मंत्र वडे अधिवासना करी जिनना मस्तके वासक्षेप करवो, दशाओ सहित अखंड वस्त्रने धूप वासादिके अभिमंत्रित करी ओढाडवुं, स्नात्रकारे ते पछी सात धान्य वडे प्रतिमाने स्नान कराववुं ४ अथवा ८ स्त्रीओए सुवर्णनुं दान आपवा पूर्वक पोंखणुं करवुं, स्नात्रकारोए जिनने आगे उत्तमोत्तम फल-नैवेद्यादि भोग सामग्री ढोवी अने प्रियंगु, गोरोचन तथा कर्पूर वडे तैयार करेलो हस्तलेप सर्व जिन बिंबोना हाथोमा आपवो तथा सर्व पदार्थनी प्राप्ति सूचवनारां त्रणसो साठ कथाणां जिनना हाथमा आपवा,

ए पछी ग्रहोनुं आह्वान करी तेमने बलिपात्र ढोवुं अने तोरणो सहित चॉरी स्थापवी चॉरीमा भद्रासन स्थापी ते उपर जिन प्रतिमाने बेसाडवी, प्रतिमानी पासे सुवर्णनो कलश स्थापी चार मंगलदीवा स्थापवा, आगे नैवेद्य पात्रो वगेरे चार खूणाओमा चार कंकण बांधेला श्वेत गाडवा स्थापवा अने वाम चंदन पुष्पादिके वासित वस्त्र आरोपी मंत्रपूर्वक भोग सामग्री ढोकवी

ए पछी राज्यपदाधिरोहणना उत्सवमा राज्यतिलकादिक करावबुं अने पछी दीक्षाकल्याणकनी उजवणी युक्तिपूर्वक देखाडवी. अन्तमां चैत्यवंदन करी कायोत्सर्गो तथा स्तुतिओ द्वारा अधिवासनादि देवीओनुं स्मरण करवुं

कृत्यविधि–

" ॐ नमो बंभीए लिवीए । ॐ ह्रां ह्रीं परमअर्हते लेखकशालाकरणमिति स्वाहा ।।"

आ प्रमाणे मंत्रो भणीने निशालिआओने गोल-धाणा वहेंचवा, तथा लेखण, दवात, कागल, वगेरे भणवानां उपकरणो आपवां. ए पछी विवाह महोत्सव करवो.

प्रतिष्ठाकारक-श्राद्धे पोताना डाबा हाथे जिननो जमणो हाथ पकडी पोताना जमणा हाथे बिंबना सर्वांगे अभिमंत्रित वाडा चंदन केसर वडे विलेपन करवुं, वली सर्व बिंबो प्रति फूल-धूप-वास मुकवां.

प्रतिष्ठागुरुए सुरभि मुद्रा, पद्मगुद्रा अने अंजलिमुद्रा, ए त्रण मुद्राओ जिनबिंबने देखाडवी.

"ॐ नमः शान्तये हुं क्षूं हूं सः ।।" अथवा " ॐ नमो खीरासवलद्धीणं, ॐ नमो संभिन्नसोआणं, ॐ नमो पयाणुसारीणं, ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं, जमियं विज्जं पउंजामि सा मे विज्जा पसिज्झउ, ॐ अवतर अवतर, सोमे सोमे, कुरु कुरु, वग्गु वग्गु, सुमिणे सोमणसे महु महुरे ॐ कविले कः क्षः स्वाहा ।"

आ बे अधिवासना मंत्रो पैकीना कोई एक मंत्र वडे अभिमंत्रित ऋद्धि वृद्धि सहित मींढलना कंकणो सर्व देव प्रतिमाओना हाथे बांधवां.

तथा बीजा अधिवासना मंत्रथी मुक्ताशुक्तिमुद्रा, अने चक्रमुद्राए करी श्रावके बिंबनां मस्तक १, स्कन्ध २, अने जानु २; आ पांच अंगो स्पर्शवां अने धूप उखेववो, प्रतिष्ठागुरुए परमेष्ठिमुद्राए करी वली जिनने नीचेना मंत्र वडे आह्वान करवुं—

ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

वार ३ आह्वान करी आसनमुद्राए वास कर्पूरादिवडे पूजा करवी.

श्रावके चंदन, फल, फूल, धूप, वास, अने वासित पूजित एवु सदश वस्त्र ढांकवु, ते उपर ९ नालिएर मूकवा, विचित्र फल-वलि-जमीरां-रायण-दाडिम-केला-द्राख-खारेक-सिंघोडा-अखरोट-बदाम-कमलकाकडी-पिस्ता-प्रमुख ढोवा.

पछी भगवानने फुलेके चढाववा, ४ अविधवा स्त्रीओए पुखणा करवा, पुखनारी स्त्रीओए सुवर्णादिकनुं दान आपवुं, घीनी आरति-मंगलदीवो करवो.

पछी श्रावकोए नवकार गणीने प्रियगु, वरास, कर्पूर, गोरोचननो बनेलो हस्तलेप सर्व चिंवोना हाथोमा करवो, अने —

ॐ आदित्यसोममंगल-बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः। केतुप्रमुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु स्वाहा।

आ श्लोक बोली पूर्वे तैयार करावी राखेल चाट, खीर, करंबो, सेव, कूर, लापसी, पुडला, वडा, भजीया, आ ९ थानीना पात्रो थालमा भरी आगल मूकवा

पछी गेनाम्र तथा केसरथी रंगेल पीला सूतना तातणाओथी वेष्टित एवी चॉरी बाधवी, तोरण सहित मंडप करवो, तेनी नीचे सिंहासन स्थापी तेमा प्रतिमा बेसाडवी, प्रतिमानी पासे सोनानो कलश स्थापवो अने पासे घी-गोलथी भरेल ४ मंगल-दीवा थापवा.

ए पछी नाट, खीर, कंसार, घेवर, करंबो, कूर (भात), घी, मेवा, पुडी, सुखडी. एटलां वाना थालमां भरी सधवा स्त्री लावीने त्यां मूके, ओवारणां करे, धाणा अने जल मूके, ४ गाडुआ (न्हाना घडा) त्यां थापे, तेओना गलामां मेवासूत्र अने सुहाली (सांकली–मीठी सूकी पुडि)नां कांकण बांधवां अने उपर जवारानां ४ सरावलां मूकवां.

पछी गुरुए शक्रस्तवे चैत्यवंदन करवुं, चंदनवारा धूप फूल सहित कुसुंभी वस्त्र मस्तक–मुख उपर ढांकवुं, बिंबनी सूरिमंत्रे अभिमंत्रित वासे गुरुए अधिवासना करवी अर्थात् आचार्ये सूरिमंत्र अने अन्य प्रतिष्ठापके अधिवासना मंत्र भणीने बिंबना मस्तके वासक्षेप करवो.

“ ॐ नमः शान्तये हुँ क्षूँ हूँ सः” अथवा “ ॐ नमो खीरासवलद्धीणं० इत्यादि ” आ बे पैकीना एक मंत्र वडे अधिवासना करवी, पछी लग्न समये ऋद्धिवृद्धि, सोपारी, केसर, चंदन, हाथमां लेईने—

संसारे भोगयोग्या श्री–र्गृहिधर्मश्च कारणम् । भोगफलसाधनार्थं, तस्माच्च करपीडनम् ॥१॥

ॐ ह्रां ह्रीं ऐं क्लीं ह्सौं अव्यक्ताव्यक्तसंपन्नाय संसारभोगकारणाय मङ्गलार्थं पाणिपीडनमिति स्वाहा।

आ श्लोक तथा मंत्र भणीने सोपारी आदि बिंबना हाथमां मूकवां. वाजिंत्रो वगाडववां, धवल मंगल गवराववां, पोडशांश होम करवो, टीको करवो (बिंबना भाले कुंकुमनुं तिलक करवुं.) बिंबने वस्त्राभरणादिक पहेराववां, ५ जातिना २५ लाडवा ढोवा, मेवो वहेंचवा.

जयति जगति यस्य प्राग्भवं पुण्यमात्मो-दयविजितविपक्षं विश्वकल्याणबीजम् ।
सुरसरिदमलाम्भोधारणाधारणीयं, वसुगुणजिननाथं स्थापयेत्पट्टभोगे ॥१॥

ॐ ह्रां ह्रीं सिंहासनछत्रचामराद्यलंकारै राज्याभिषेकोऽय पट्टस्थापनमिति स्वाहा ॥

आ श्लोक तथा मंत्र भणीने भगवन्तने राजपाटे बेसाडवा, राजतिलक करवुं, पछी नीचे प्रमाणे दीक्षाकल्याणकनो उत्सव करवो—

सांवत्सरं दानवरं नराणा–माधारसारैकवचश्चरित्रम्। परं पवित्रं पुरुषं पुराणं, पद्मकुष्ट सुगरिष्ठज्येष्ठम् ॥१॥

ॐ ह्रां ह्रीं परमअर्हते जिननाथाय स्नापयामीति स्वाहा ॥

आ श्लोक तथा मंत्र भणीने प्रभुने दीक्षा स्नान करावबु, पछी महोत्सव पूर्वक इन्द्र-इन्द्राणी प्रमुख परिवारे परिवृत दान आपता अशोकवृक्ष नीचे जई सर्वालंकार मुक्त करी पंचमुष्टि लोच करवो अने " ॐ नमो सिद्धाणं " पाठ बोली—

चारित्रचक्रदधतं भुवनैकपूज्यं, स्याद्वादतोयनिधिवर्धनपूर्णचन्द्रम्।
तत्त्वार्थभावपरिदर्शनबोधदीप–मैश्वर्यवर्यसुमन विगताभिमानम् ॥ २ ॥
निर्ग्रन्थनाथममलं कृतदर्पनाशं, सर्वाङ्गभासुरमनन्तचतुष्टयाढ्यम्।
मिथ्यात्वपङ्कपरिशोषणवासरेशं, क्रोधादिदोषरहितं वरपुण्यकायम् ॥३॥

ॐ ह्रां ह्रीं परम अर्हते महाव्रतपञ्चसमितित्रिगुप्तिधराय मनःपर्यवज्ञानाय विपुलमत्यात्मकाय जिननाथाय नमः स्वाहा।

आ श्लोको तथा मंत्र बोलवो, आम दीक्षा कल्याणक उजववु

पछी प्रतिष्ठा गुरुए चैत्यवंदन करवुं, त्रण स्तुतिओ कहा पछी सिद्धाणं", बुद्धाणं. कही 'अधिवासनादेवी एकरेमि काउस्सग्गं,' अन्नत्थ०, लोगस्स सागरवरगंभीरा सुधीनो काउस्सग्ग, नमोऽर्हत्०, कही—

विश्वाशेषसुवस्तुषु, मन्त्रैर्याऽजस्रमधिवसति वसतौ। सेमामवतरतु श्री-जिनतनुमधिवासनादेवी ॥१॥

आ स्तुति कहेवी. पछी सुयदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०, १ नवकारनो का०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः। रङ्गत्तरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥१॥

संतिदेवयाए करेमि काउस्सग्गं०, अन्नत्थ०, १ नवकारनो काउस्सग्ग, नमोऽर्हत्० स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी। शिवशान्तिकरी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥१॥

अंबादेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नवकारनो काउस्सग्ग, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः। माणिक्यरत्नालंकार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥

खित्तदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नव०, नमोऽर्हत्० स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

शासनदेवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नव०, नमोऽर्हत्० स्तुतिः—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी। साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयात् शासनदेवता ॥

समस्तवेयावच्चगराणं०, १ नव०नो का०, नमोऽर्हत्० स्तुतिः—

सर्वेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥

नवकार १ प्रकट, नमुत्थुणं०, जावंतिचेइयाइ०, नमोऽर्हत्०, स्तवन लघुशान्ति, जयवीयराय, आ प्रमाणे देववदन करी गुरु बेसीने धारणा करे-

स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रसाददाः सन्तु, प्रसादं सुधिया कुर्वन्तु, अनुग्रहपरा भवन्तु, भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम् ।

आ अधिवासना रात्रिना समयमा थाय छे
आम नवमा दिवसे दीक्षा कल्याणनो उत्सव करवो.

नव्यप्रतिष्ठापद्धतौ दशमाह्निकम् ।

अञ्जनशलाकाप्रतिष्ठाविधि-आह्निकबीजकम्

स्नात्रकारकरे बध्वा-भिमन्त्र्य कङ्कणादिकम् । दिशापालान् ग्रहान् स्मृत्वा, वासपुष्पादिकैर्यजेत् ॥१३९॥
ततः श्रीशान्तिमन्त्रेण, मन्त्रितं दिग्बलिं क्षिपेत् । चैत्यानां वन्दनं कृत्वा, प्रतिष्ठादेवतां स्मरेत् ॥१४०॥
धूपपूर्वं ततो बिम्बाद्, वस्त्रे दूरीकृते गुरु । विन्यसेत प्रतिमाङ्गेषु, मन्त्रवर्णान् पृथक् पृथक् ॥१४१॥
जिनाह्वानं परमेष्ठि-मुद्रया त्रिर्विधाय च । तेषां शासनदेवांश्च, देव्यश्च प्रतिहारकान् ॥१४२॥

आहूय स्थापयित्वा च, संनिधाप्य जिनान्तिके। प्रतिष्ठाभेदतो बिम्ब-तले रत्नादिकं न्यसेत् ॥१४३॥
अञ्जनं रूप्यकच्चोल-स्थितं सर्पिर्मधुप्लुतम्। मन्त्रयित्वा शुभे स्थाने, रक्षणीयं प्रयत्नतः ॥१४४॥
शुभे लग्ने नवमांशे, प्राप्ते स्वर्णशलाकया। नयनोन्मीलनं कुर्याद्, गुरुर्मन्त्रविधानवित् ॥१४५॥
स्थैर्यं कृत्वाऽञ्जनस्याथ, मन्त्रन्यासपुरस्सरम्। वासगन्धादिनिक्षेपः, कर्तव्यो बिम्बमस्तके ॥१४६॥
कार्यो मन्त्रोपदेशश्च, बिम्बवामेतरश्रुतौ। चक्रमुद्राविधानेन, सर्वाङ्गस्पर्शनं तथा ॥१४७॥
दधिपात्रं करे धृत्वा, दृष्टिमार्गे विधाय च। दृष्टिदोषनिरोधाय, सौभाग्यवर्धनाय च ॥१४८॥
स्थैर्यसंपादनार्थाय, सौभाग्यधेनुबोधिकाः। मुद्राः संदर्श्य सौभाग्य-मन्त्रं तत्र न्यसेद् गुरुः ॥१४९॥
रत्नसिंहासने बिम्बं, निवेश्य मन्त्रपूर्वकम्। नमस्कारं पठन् सूरि-र्वासान् शिरसि निक्षिपेत् ॥१५०॥
ततः प्रोक्षणकं कार्यं, मङ्गलातोद्यपूर्वकम्। दानपूर्वं ततः पुष्प-वर्षणादिकमाचरेत् १५१॥
निर्वाणोत्सवशायोग्य-स्तुतिमन्त्रपुरस्सरम्। कृत्वा स्नानविधिं पूजां, वर्धापनमथाचरेत् ॥१५२॥
गन्धपुष्पादि पूजाङ्ग-मादाय मन्त्रपूर्वकम्। पूर्वपूजामपाकृत्य, नव्यपूजां विधापयेत् ॥१५३॥
आरात्रिकादि संपाद्य, चैत्यवंदनपूर्वकम्। प्रतिष्ठादेवताकायो-त्सर्गादिकं समाचरेत् ॥१५४॥

भृताऽक्षताञ्जलिः संघ-सहितो गुरुरुच्चकै । गाथामङ्गलमुद्घोष्य, संमुखमक्षतान् क्षिपेत् ॥१५५॥
प्रतिष्ठागुणगर्भां तां, गुरुः कुर्यात् सुदेशनाम्। यां श्रुत्वा भव्यात्मानोऽन्ये-पि स्युस्तत्करणेच्छवः ॥१५६॥
स्थापनास्थानमन्यत्र, प्रतिष्ठास्थानतो यदि। स्थापनास्थानकं गत्वा, गुरुः सज्जीकरोत्वदः ॥१५७॥
चरा चेत् प्रतिमा बिम्बं-चामाङ्गे दर्भवालुकाम्। निवेशयेदचलायां, पञ्चरत्नादिकं तथा ॥१५८॥
ततो ऽधिवासनास्थानाद्, बिम्बमानीय सोत्सवम्। शुभे लग्ने भद्रपीठे, स्थापयेद् विधिपूर्वकम् ॥१५९॥
तत्रैव समये चैत्य-मस्तके कलशं न्यसेत्। ध्वजदण्डं च विधिवत्; कुर्याच्च जिनवन्दनम् ॥१६०॥
शान्तिस्तवं स्तवस्थाने, पठित्वा दिग्बलिं क्षिपेत्। स्थापनां निश्चलां कृत्वा; स्मरणसप्तकं पठेत् ॥१६१॥
शान्तित्रयं भयहर-मुपसर्गहरं तथा। स्तोत्रं ममवसृत्याख्यं, तिजयपहुत्तस्तवम् ॥१६२॥
मुखोद्घाटनपूर्वं च, प्राभृतान्युपढौकयेत्। संघभक्तिमार्गणानां, दानं कार्यं यथोचितम् ॥१६३॥

भा०टी०—स्नात्रकारोना हाथे अभिमन्त्रित कुरुणादिक नाखो दिक्पालो तथा ग्रहोनु स्मरण करीने तेमने वास पुष्पादिके पूजवा, पछी शांति मन्त्रथी अभिमंत्रित बलि दिशाओमां फेंकवो, देववन्दन करवुं, तेमा प्रतिष्ठा देवतानो काउस्सग्ग करी तेनी स्तुति कहेवी, धूप उखेवीने बिंब उपरथी वस्त्र दूर कर्या पछी गुरुए प्रतिमाना अंगोमां मन्त्र वर्णोनो न्यास करवो अने परमेष्ठिमुद्रा

करी त्रण वार जिनाह्वान करीने शासनदेवो, शासनदेवीओ, अने प्रतीहारोनुं जिननी पासे आह्वान, स्थापन, तथा संनिधापन करवुं, प्रतिष्ठा जो चर होय तो बिंबनी नीचे वामांगे वालुका साथे डाभ अने प्रतिष्ठा स्थिर होय तो प्रतिमा नीचे पंच रत्नादिनो न्यास करवो.

नेत्रांजन—जे घृत—मधुमय होय छे तेने रूपाना कच्चोलामां भरी अभिमंत्रित करीने शुभस्थाने संभालपूर्वक राखवुं अने शुभ लग्न अने शुभ नवमांशक आवतां मन्त्र विधानज्ञाता प्रतिष्ठागुरुए सुवर्ण शलाका वडे प्रतिमानुं नेत्रोन्मीलन करवुं, अने मंत्रद्वारा अंजननुं स्थिरी-करण करी प्रतिमाना मस्तके वासक्षेप करवो, तेना चंदन विलिप्त जमणा काने मंत्रोपदेश करवो, तथा मुद्रा करी तेना सर्वांगनो स्पर्श करवो, दहिंनुं पात्र हाथमां लेई बिंबने दृष्टिगोचर करी आगल मूकवुं अने दृष्टिदोष निवारणार्थे, सौभाग्यवर्धनार्थे, तथा स्थैर्यवृद्ध्यर्थे 'सौभाग्य, सुरभि अने प्रवचन' आ त्रण मुद्राओ देखाडीने गुरुए जिनशरीरे सौभाग्य मंत्रनो न्यास करवो, तथा बिंबने मंत्रोच्चारण पूर्वक रत्न सिंहासने स्थापीने प्रतिष्ठाचार्ये नमस्कार मन्त्र भणतां तेना मस्तके वासक्षेप करवो. स्त्रीओए दान आपवा पूर्वक वाजित्र गीतोना नादपूर्वक प्रतिष्ठित प्रतिमाने पोंखणां करवां अने पुष्पो वर्षाववां.

पछी निर्वाण कल्याणकोत्सवने योग्य स्तुति पाठ अने मंत्रोच्चारणपूर्वक निर्वाणनुं स्नान तथा पूजन करीने पुष्पांजलि नाखीने कल्याणकारक जिनने यथावथा, गंधपुष्पादि प्रत्येक पूजांगो मंत्रपूर्वक जिन आगे निवेदित करवां अने प्रथमनी पूजा दूर करी निवेदित द्रव्यो वडे नवी पूजा करवी, आरती आदि छेल्लां कृत्यो करीने देववंदन करवुं, तेमां पण प्रतिष्ठा देवतानो कायोत्सर्ग करवो तथा तेनी स्तुति कहेवी.

संघ सहित गुरु अक्षतो वडे अंजलि भरीने उच्च स्वरे मंगल गाथाओनी उद्घोषणा करे अने जिन संमुख अक्षतांजलि प्रक्षेप करे अन्ते गुरु संघ समक्ष प्रतिष्ठागुणगर्भित देशना करे के जेने सांभळीने बीजा पण भव्यजीवो प्रतिष्ठा कराववाना इच्छुक बने.

अधिवासना प्रतिष्ठाना स्थानथी जो जिननी स्थापना-प्रतिष्ठानुं स्थान भिन्न होय तो स्थापना-स्थाने जइने गुरुए आ प्रमाणे तैयारी करवी जो प्रतिष्ठा चर अर्थात् चल रहेवानी होय तो प्रतिमा नीचे दर्भ तथा वालुका स्थापवी अने स्थिर होय तो प्रतिमा नीचे पंचरत्न आदिनो विन्यास आदि तैयारी करवी. ते पछी प्रतिष्ठा मंडपमांथी उत्सवपूर्वक शुभ शकुनो पूर्वक जिनने स्थापना-स्थानके लाववुं अने शुभ समयमां विधिपूर्वक भद्र पीठे (पद्मासन उपर) प्रतिष्ठित करवुं, तेज शुभ समयमां प्रासादना शिखर उपर कलश तथा ध्वजादण्डनुं पण विधिपूर्वक आरोपण करवुं अने देववंदन करवुं, वंदनमां स्तवनना स्थाने अजित-शान्ति कहेवी, देववंदन करीने दिक्पालोने बलिक्षेप करवो अने सूत्रधारना हाथे स्थापना निश्चल करावीने तेनी आगल सात स्मरणनो पाठ करवो, सात स्मरणोमां त्रण शान्ति (अजितशान्ति स्तव, लघुशान्ति स्तव, अने बृहच्छान्ति) भयहर स्तव (नमिऊण) ४, उपसर्गहर ५, समवसरण स्तोत्र ६ अने तिजयपहुत्त स्तव ७, आ स्तोत्रोनो पाठ करवो.

अन्ते मुखोद्घाटन करवुं, अने जिन आगल भेटो धरवी, संघनी भक्ति करवी, अने याचकदान आदि शासन प्रभावनानां कार्यो करवां.

कृत्यविधि—

प्रतिष्ठा—प्रथम कंकण मिंढल मरोडाफली सर्व स्नात्रकारोने हाथे बंधाववी, अने—

शक्राग्न्यन्तकनैर्ऋतेशवरुणश्रीवायुवस्त्रीश्वरा-ईशानोऽब्जभवः प्रभूतफणभृद् देवा अमी सर्वतः।
निघ्नन्तो दुरितानि शीघ्रमभितस्तिष्ठन्तु पूजाक्षणे, स्वस्वस्थानमनेकधा द्युतिभृतः प्रोद्यद्दिक्कुष्टासयः ॥१९॥

आ काव्य भणीने दिक्पालोनी पुष्प-वासादिथी पूजा करवी,

भानुं चन्द्रं निर्मलं भूमिपुत्रं, सौम्यं शान्तं देवपूज्यं सशुक्रम्।
शौरिं राहुं केतुयुक्तं सुपुष्पैः, संशान्त्यर्थं पूजयेद् भावभक्त्या ॥२॥

आ काव्य भणीने ग्रहो उपर वास पुष्पाक्षत-चढाववां, पछी नीचेना मंत्र वडे शान्ति बलि मंत्रवो—

ॐ नमो भगवते अर्हते शान्तिनाथस्वामिने सकलातिशेषकमहासंपत्समन्विताय त्रैलोक्यपूजिताय नमो नमः शान्तिदेवाय सर्वाऽमरसुसमूहस्वामिसंपूजिताय भुवनजनपालनोद्यताय सर्वदुरितविनाशनाय सर्वाऽशिवप्रशमनाय सर्वदुष्टग्रहभूतपिशाचशाकिनीमारीप्रमथनाय, नमो भगवति जये विजये अपराजिते जयन्ति जयावहे सर्वसंघस्य भद्रकल्याणमङ्गलप्रदे साधूनां शान्ति-तुष्टि-पुष्टि-प्रदे स्वस्तिदे भव्यानां ऋद्धि-वृद्धि-निर्वृतिनिर्वाणजननि सत्त्वानामभयप्रदाननिरते भक्तानां शुभावहे सम्यग्दृष्टीनां धृति-रति-मति-बुद्धि-प्रदानोद्यते जिनशासननिरतानां श्रीसंपत्कीर्तियशोवर्द्धनि रोग-जल-ज्वलन-विषधर-दुष्टज्वर-व्यन्तर-राक्षस-रिपु-मारी-चौरेति श्वापदोपसर्गादिभयेभ्यो रक्ष रक्ष शिवं कुरु कुरु तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं कुरु कुरु ॐ नमो नमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट् फुट् स्वाहा।

आ मंत्र ३ वार भणी नलि वाकला मंत्रीने प्रतिष्ठा स्थानकेथी दशे दिशामा धूप, दीप, वास, पुष्प, अक्षत, चरु सहित बलिक्षेप करवो. पछी बिंब उपर कुसुंभी वस्त्र ढाकवुं.

गुरुए चैत्यवंदन करवु, नमुत्थुणं विगेरे स्तुति ३ कह्या पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही प्रतिष्ठा देवयाए करेमि का०, अन्नत्थ०, लोगस्स १ चिन्तववो, नमोऽर्हत्० कही

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । जिनबिंबं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥"

शासनदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, नवकार १ नो काउस्सग्ग, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥१॥

खित्तदेवयाए करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

सतिदेवयाए करेमि काउस्सग्ग, अन्नत्थ०, १ नवकार, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणः । शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥१॥

समस्तवेयावच्चगराणं०, १ नव० का०, नमोऽर्हत्०. स्तुतिः—

सङ्घेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१॥

१ प्रकट नवकार कही, नमुत्थुणं०, जावंति०, उवसग्गहरं०, जयवीयराय० ।
पछी श्राद्धे सर्व बिम्बोने धूप उखेववो, आच्छादित (ढांकेल) वस्त्र दूर करवुं.
पछी गुरु लग्न निकट आवतां उच्च स्वरे अने उच्चश्वासे बिंबने विषे आ अक्षरो स्थापे—
'ह्रॉं' ललाटे । 'श्रीं' नेत्रयोः । 'ह्रीं' हृदये । 'रैं' सन्धिस्थानेषु । 'क्ष्रौं' प्राकारे ॥
वर्णन्यास करीने बिम्ब आगळ घृतपात्र मूकवुं. पछी

उदयति परमात्मज्योतिरुद्योतिताशं, विषयविनयमुक्त्या ध्वस्तमोहान्धकारम् ।
शुचितरघनसारोल्लासिभिश्चन्दनौघैः, जिनपतिगुरुगन्धैश्चर्चयेद् भक्तिभृतम् ॥१॥
घातिक्षयोद्भूतविशुद्धबोध-प्रबोधिताऽशेषविशेषविज्ञान् ।
सुरेन्द्र-नागेन्द्रनरेन्द्रवन्द्यान्, समर्चयेत् श्रीजिननायकाज्ञः ॥ २ ॥

ॐ ह्रॉं ह्रीं नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारीमहिताय इन्द्रपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय अष्टमहाप्रतिहार्यधराय आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।

परमेष्ठि मुद्राए ३ वार कही जिनाह्वान करवुं, पछी—

ॐ ह्रॉं ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानान्तास्तीर्थंकरपरमदेवाः तेषां प्रतिहारदेवाः शासनदेवा देव्यश्च प्रत्येक एकादश देवाः छत्रधराः, चामरधरा, कुण्डलधारकौ, सिंहासनोभयपार्श्वयोर्दीपधूपधारकौ, शासनयक्षौ, इमे

सर्वे देवा अत्रागच्छतागच्छत, अवतरन्तु अवतरन्तु, ॐ आँ क्रों ह्रीँ नमः स्वाहा । आ मंत्रे आह्वान करवुं,

ॐ ह्रां ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानान्तास्तीर्थंकरपरमदेवास्तेषां प्रतिहारदेवाः शासनदेवा देव्यश्च ॐ ह्रीं अत्र तिष्ठन्तु तिष्ठन्तु ठः ठः स्वाहा । आ मंत्र वडे तेओनुं स्थापन करवुं

ॐ ह्रां ह्रीं ऋषभादिवर्द्धमानान्तास्तीर्थंकरपरमदेवास्तेषां प्रतिहारदेवाः, शासनदेवा देव्यश्च अत्र सन्निहिता भवन्तु भवन्तु वषट् । आ मंत्रे तेमनु संनिधान करवुं.

पछी रूपाना कचोलामा रातो सुरमो, बरास, कस्तुरी, साकर,घृत, मिश्रित करीने—

ॐ ह्र ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रौं हः ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः बिम्बप्रदेशे सिद्धाञ्जनाय नमः । ॐ ह्रीं अर्हन् ज्ञानाधिपते ज्योतिः प्रकटय प्रकटय स्वाहा । ए मंत्र मनवो. ए पछी शुभ लग्न नवांशकमां सुवर्णशलाकामां अंजन लेइने—

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः अर्हन् अञ्जने अवतर अवतर क्ष्यूं ह्रूं केवलज्ञानज्योति प्रकटय प्रकटय स्वाहा ।

ए मंत्रे करी नेत्रमा अंजन करवुं.

ॐ ह्रां ह्रीं परमार्हन् केवलज्ञान-केवलदर्शनसिद्धाञ्जने स्थिरीभव हुं फट् ।' आ मंत्रे स्थिरीकरण करवुं, अने—

ॐ ह्रीं सर्वज्ञाय लोकालोकप्रकाशकाय नमः स्वाहा । आ मंत्र भणीने बिंबने आरीसो देखाडवो. पछी ॐ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये अपराजिते ॐ ह्रीं स्वाहा ।'

आ मंत्रे करी बिंबना मस्तके वासक्षेप करवो तथा प्रतिमाना जमणा काने श्रीखण्ड, कर्पूर, केसर, लगाडी आपणो जमणो

हाथ उपर देइ एज मंत्रनो न्यास करवो, चक्र मुद्राए एज मंत्र भणतां प्रतिमानो सर्वांग स्पर्श करवो, दभिपात्र देखाडवुं, अने धूप उखेववो.

ए पछी गुरुए दृष्टि रक्षार्थ, सौभाग्यार्थं, स्थैर्यार्थं, सौभाग्य १, सुरभि २, प्रवचन ३, अंजलि ४, अने गरुड ५, ए पांच मुद्राओ सहित नीचेना मंत्रनो प्रतिमामां न्यास करवो—

ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वग्गु वग्गु निवग्गु निवग्गु सुमणे सोमणसे महु महुरे ॐ कविले ॐ ह्रूँ कः क्षः स्वाहा ।

ए मंत्र वार ३ भणीने वास-धूप करवो.

ॐ इदं रत्नमयमासनमलङ्कुर्वन्तु इहोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु हृष्टदृष्ट्या जिनाः स्वाहा ।

आ मंत्र पद्म मुद्राए भणीने बिंबने समवसरणमां बेसाडवुं, सर्वमंत्राक्षर ३ नवकार कहीने वासक्षेप करवो, ३६० कयाणकोनो पडो प्रतिमाना हाथमां मूकवो, ४ स्त्रिओए पुंखणां करवां, स्त्रीओए यथाशक्ति सुवर्णदान देवुं, आम केवल कल्याणकनो उत्सव करी पुष्पवासनी वृष्टि करवी, धूप करवो. पछी

सर्वाऽपायव्यपायादधिगतविमलज्ञानमानन्दसारं, योगीन्द्रध्येयमग्र्यं त्रिभुवनमहितं यत्तथाव्यक्तरूपम् ।
नीरन्ध्रं दर्शनाढ्यं शिवमशिवहरं छिन्नसंसारपाशम्, चित्ते संचिन्तयामि प्रकटमविकटं मुक्तिकान्ता-
सुकान्तम् ॥ १ ॥

इत्थं सिद्ध प्रसिद्ध सुरनरमहत द्रव्य-भावाष्टकर्म-पर्यायिध्वंसलब्धाऽक्षयपुरवलसद्राज्यमानन्दरूपम् ।
ध्यायेद्धिध्यातकर्मांशकलमविकलं सौख्यमाप्यैहिकं सत्, ब्रह्मोपेतं प्रमोदादसमसुखमयं शाश्वतं हेलयैव ॥२॥

ॐ ह्रॉं ह्रीं परमअर्हते अष्टकर्मरहिताय सिद्धिपद प्रासाय पारगताय स्नापयामीति स्वाहा ॥

आ काव्यो तथा मंत्र बोली प्रतिमानो अभिषेक करवो अने—

'ॐ ह्रीं अर्हँ सिद्धाय नमः ।' आ मंत्र भणी प्रतिमानी नवांगे पूजा करवी

पछी श्रावकोए हाथमा ५-५ पुष्पो अंजलिमा लेईने—

च्यवन-जन्म-चारित्र-ज्ञान-निर्वाणनामके । कल्याणपञ्चके लोका-नन्दकृन्नन्दताज्जिनः ॥१॥

आ श्लोक भणी पुष्पो प्रतिमा उपर क्षेपवा पछी स्नात्रकारोए बने हाथनी अंजलिमां गन्ध लेइने—

ॐ ह्रम्ये गन्धान् नः प्रतीच्छन्तु स्वाहा । आ मंत्र भणी गन्धथी पूजा करवी, तथा पुष्पो हाथमां लेई—

ॐ ह्रम्ये पुष्पाणि गृह्णन्तु स्वाहा । आ मंत्र बोली प्रतिमा उपर पुष्पो चढाववां, धूपधाणुं हाथमां लेई धूप धूडी उपर नाखो—

ॐ ह्रम्ये धूपं भजन्तु स्वाहा । आ मंत्र बोली धूप उखेवनो, कुसुमांजलि हाथमां लेईने—

ॐ ह्रम्ये सकलसत्त्वलोकमवलोकय भगवन्नवलोकय स्वाहा । आ मंत्र बोली बिम्ब सामे त्रण वार कुसुमांजलि नाखवी

पछी स्नात्रकारोए पहेलां करेली सघळी पूजा दूर करी चंदन, केसर, पुष्प, वस्त्र, आभरणादि वडे नवी पूजा करवी,

पहेलांनुं सघळुं वलि नैवेद्य दूर करवुं, अने बीजोरादिक फलो, ५ जातिना ५-५ लाडवा, भेळो, मुखवास, आदि सर्व नवुं चढाववुं, पछी लूण-पाणीनी विधिपूर्वक आरति अने मंगलदीवो करवो.

पछी प्रतिष्ठागुरुए नीचे प्रमाणे देववंदन करवुं—

आकाशगामित्वचतुर्मुखत्वं, विश्वेश्वरत्वाऽमितवीर्यतायाः ।
प्रिया हिता वागपि यत्र नित्यं, नमो नमस्तीर्थकराय तस्मै ॥१॥
देवेन्द्रवन्द्यमनिमेषनिसेवितांघ्रि, सत्प्रातिहार्यविभवाञ्चितमाप्तमुख्यम् ।
लोकातिशायिचरितं चरितं गुणौघै-श्चिद्रूपमस्तकुजिनं हि जिनं नमामि ॥२॥
अशोकवृक्षः सुरपुष्पवृष्टि-र्दिव्यध्वनिश्चामरमासनं च। भामण्डलं दुन्दुभिरातपत्रमेतैर्युतं नौमि जिनेशरूपम् ॥३॥
नित्योदयं दलितमोहमहान्धकारं, संसारतापहरणं शरणं गुणानाम् ।
नष्टाष्टकर्मकलिलं विजितान्तरारम्, रूपं व्रजामि शरणं जिनशीतभानोः ॥४॥
गजेन्द्रसिंहादिभयं समुद्र-संग्रामसर्पाग्निमहोदराणाः ।
यतः प्रणाशं ह्युपयान्ति सद्यः, सदा तमर्चे शिवदं जिनेन्द्रम् ॥५॥

उपरनां नमस्कार काव्यो बोलीने नमुत्थुणं कही जे तीर्थंकरनी प्रतिष्ठा होय तेनी स्तुति कहेवी, बीजी 'ओमिति मन्ता' अने 'नवतत्त्वयुता' आ बे स्तुतिओ कहो 'सिद्धाणं बुद्धाणं' कही, श्रीप्रतिष्ठादेवतायै करेमि काउस्सग्गं०. अन्नत्थ० कही, लोगस्स १ काउस्सग्ग करवा, नमोऽर्हत्० कही—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । जिनबिम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥

आ प्रतिष्ठादेवतानी स्तुति कहेवी, पछी श्रुतदेवता १, शान्तिदेवता २, क्षेत्रदेवता ३, शासनदेवता ४, अने समस्त वेयावच्चगर ५ ना काउस्सग्ग १-१ नवकारना करवा, नमोऽर्हत् कही नीचेनी स्तुतिओ अनुक्रमे कहेवी—

१ 'वद वदति न वाग्वादिनि'। २ 'उन्मृष्ट रिष्ट दुष्ट'। ३ 'यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य'। ४ 'उपसर्गवलयविलयन०'। ५ 'सर्वेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे०'।

आ स्तुतिओ बोली १ नवकार प्रकट कही बेसीने नमुत्थुणं०, जावंति चेइआइं०, खमा०, जावंत केवि साहू०, नमोऽर्हत्० कहीने, स्तवनने स्थाने शान्ति (अजितशान्ति) कहेवी, अन्ते जयवीयराय कहीने देववंदन पूरुं करवुं, पछी प्रतिष्ठागुरुए तथा श्रीसंघे अक्षतोनी अंजलिओ भरवी अने गुरुए नमोऽर्हत्० कही नीचेनी मंगल-गाथाओ उच्चस्वरे बोलवी—

जह सिद्धाण पइट्ठा, तिलोअचूडामणिम्मि सिद्धिपए । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुपइट्ठ त्ति ॥१॥

जह सग्गस्स पइट्ठा, समत्थलोगस्स मज्झयारम्मि । आचंदसूरिअं तह, होइ इमा सुप्पइट्ठ त्ति ॥२॥

जह मेरुस्स पइट्ठा, दीवसमुद्दाण मज्झयारम्मि । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठ त्ति ॥३॥

जह जंबुस्स पइट्ठा, समग्गदीवाण मज्झयारम्मि । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठ त्ति ॥४॥

जह लवणस्स पइट्ठा, समत्थउदहीण मज्झयारम्मि । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठ त्ति ॥५॥

धम्माधम्मागास-त्थिकायमइअस्स सव्वलोगस्स । जह सासया पइट्ठा, एसा चि अ होउ सुपइट्ठा ॥६॥

पंचण्ह वि सुपइट्ठा, परमिट्ठीणं जहा सुए भणिया । नियया अणाइनिहणा, तह एसा होउ सुपइट्ठा ॥७॥

पछी बधाए अक्षतांजलि बिंब सामे उछालवी, श्रावकोए पुष्पांजलि पण नाखवी.

ए पछी प्रतिष्ठागुरुए प्रवचन मुद्राए प्रतिष्ठाफलदर्शक देशना आपवी.

प्रतिष्ठाफल देशना—

राया बलेण वड्ढइ, जसेण धवलेइ सयलदिसिभाए । पुण्णं वड्ढइ विउलं, सुपइट्ठा जस्स देसम्मि ॥१॥
उवहणइ रोगमारिं, दुब्भिक्खं हणइ कुणइ सुहभावे । भावेण कीरमाणा, सुपइट्ठा सयललोगस्स ॥२॥

भा०टी० —जे राजाना देशमां विधिपूर्वक प्रतिष्ठा थाय छे ते राजानुं बल वधे छे, सर्व दिशा भागोने ते पोताना यशथी उज्ज्वल बनावे छे, अने त्यां विपुल पुण्यनी वृद्धि थाय छे. भावथी करातो उत्तम प्रतिष्ठा मर्त्यलोकना रोग तथा महामारीने दूर करे छे, दुर्भिक्ष—दुष्कालनो नाश करे छे. अने सुभिक्ष आदि शुभ भावोनी सृष्टि करे छे ॥१–२॥

जिणबिम्बपइट्ठं जे, करिंति तह कारविंति भत्तीए । अणुमन्नंति पइदिणं, सव्वे सुहभाइणो हुंति ॥३॥
दव्वं तमेव भण्णइ, जिणबिंबपइट्ठणाइकज्जेसु । जं लग्गइ तं सहलं, दुग्गइजणणं हवइ सेसं ॥४॥
एवं नाऊण सया, जिणवरबिंबस्स कुणह सुपइट्ठं । पावेह जेण जरमरण–वज्जिअं सासयं ठाणं ॥५॥

भा०टी० —जेओ भक्तिथी जिनबिंबनी प्रतिष्ठा करे छे, करावे छे, अने नित्य अनुमोदना करे छे, ते सर्व सुखना भागी थाय छे, द्रव्य ते ज सफल कहेवाय के जे जिन-बिंबप्रतिष्ठा आदिना कामोमां लागे छे. 'बाकीनुं धन दुर्गतिमां लई जनारुं छे.' एम जाणीने सदा जिनेश्वरना बिम्बोनी उत्तम प्रतिष्ठा करो, करावो, के जेथी जरा-मरण रहित शाश्वतपदने पामो ॥३–४–५॥

॥ अथ मध्यकालीन अंजनशलाका विधि—

जो के पादलिप्तसूरिप्रणीत प्रतिष्ठा विधि विस्तृत नथी छता कंइक कठिन तो छे ज, सकलचन्द्रोपाध्याय सकलित, विश्वनु मारिणी दशाह्निक विधि अतिविस्तृत होई समय अने शक्तिनो व्यय मागे छे, आ बंने प्रतिष्ठाविधियोथी पण संक्षिप्त, सरल, अने सुख साध्य एवी मध्यकालीन अञ्जनशलाकाविधि अमो आपीये छीए परिस्थिति वश ओछा खर्चे अने ओछा परिश्रमे साधी शकाय एवी आ प्रतिष्ठाविधि छे आ संक्षिप्त प्रतिष्ठाविधिनो मूल आधार तपा श्रीगुणरत्नसूरिप्रणीत प्रतिष्ठाकल्प छे, आ) प्रतिष्ठाविधिने अमोए अमारी नव्यप्रतिष्ठापद्धतिनुं एक विशिष्ट अंग गणीने एमा शामेल करी छे, श्रीमान् गुणरत्नसूरिजी ग्रन्थारंभमा नीचे प्रमाणे मंगलपूर्वक प्रतिज्ञा करे छे—

श्रीमद् वीरजिनं नत्वा, प्रतिष्ठाविधिमुत्तमम् । यति–श्रावक–कर्तव्यं, व्यक्त्या वक्ष्ये समासतः ॥

सामग्रीमेलन—ज्यां प्रथम लागणीवाला प्रतिष्ठा करावनार लग्नना दिवस पहेला ज प्रतिष्ठोपयोगी आ वस्तुओ मेलवीने एकत्र करवी; जेम के–४ नवागवेदी । ४ वासे गहुव्रीहि जवना, जवारा । शरावले नवारा ८ । सोना रूपा त्रांबाना अथवा माटीना स्नपन योग्य कलश ८ । पाणी भरवाने घडा कोरा । [1]घडी योग्य कुंडी [illegible] । नंदावर्तयोग्य वरगडुआ ८ । शरावला ६४ । कुंडा ८ । आचार्ययोग्य सदश वस्त्रो । सूत्रधार योग्य वस्त्र । अक्षत थाल १ । सेवननो नंदावर्त योग्य पाटलो १ । सदश कोरा आच्छा-

[1] पूर्वकालमा जलघडी द्वारा मुहूर्तसमय निश्चित करातो हतो तेथी जल भरवाने ए कुंडिओनी आवश्यकता पडती हती आजे जलघडी उठी जवा छतां प्राचीन लिस्टनो उतारो होइ अमोए लखी छे

दन वस्त्र २। नन्दावर्तयोग्य १। प्रतिमायोग्य १। सोनानां कांकण ४। सुवर्णमुद्रिका ४ (ए चार स्नात्रकार योग्य जाणवां) । रुपानी वाटकी। सोनानी शली। कालो सुरमो। मध साकर मेलवीने अंजन। प्रियंगु कपूर गोरोचननो-हस्तलेप। प्रवाल, सोनुं, रूपुं, त्रांबुं, मोती, ए पंचरत्ननी पोटली बिंबनी आंगुलीए बांधवी। आरीसो। मातृशाडी-कसुंबी (वस्त्र)। मींढल-ऋद्धि-वृद्धि सहित कांकण (ऋद्धिवृद्धि शब्दथी मरोडा सींग जाणवी)। आरेठानी माला। जवमाला। लोहाच्छेदित श्वेत सरसवनी रक्षा पोटली। रारसत्र, दहि, अक्षत, घी, डाभ, सहित अर्घपात्र। गेवासूत्र वींटेल पूर्णपात्र। घूंसर-मुसल-रवाइयो, पुंखणोपकरण। पुंखनारी ४ स्त्रीओ सकांकणी। भांमणां शराव। गंगोदक। समूलदर्भ। गंगावेलु। कुवा नदीनां १०८ पाणी। ३६० क्रियाणानो पडो। घसेल सुखडवास। धवलवास। केसर-कपूर-कस्तुरी-भोगपुडी। धूपपुडी। घणां फूल। अखंड तंदुल (चावल) सेई २। घंट। धूपधाणां। छत्र-चामर पंचशब्दादि वाजित्र। घारी। सुहाली। लाडू। मांडा। नांदह (सर्व प्रकारनां फल नैवेद्य) काकरिआ २५, (केवी रीते? मगना ५, तिलना ५, चणाना ५, गहुंघाणीना ५, फूलोना ५ ए प्रकारे २५) वाट, खीर, करंबो, सात धाननी खीचडी, कूर (भात), सीधवडी (विंडली-मुंठियां), पुडला, एम बलिशरावलां ७। सात धान-शणबीज १, कुलत्थ २, मसूर ३, जव ४, कांग ५, उडद ६, सरसव, ७, अथवा शाल १, जव २, गोहूं ३, मुंग ४, वाल ५, चणा ६, चोला ७। नालेर। सोपारी। खर्जूर। द्राख। वरसोलां। फलावली। साकर। दाडिम। जंबेरी। नारंगी। बीजोरां। सेलडी। आंबा। घृतवाटको। दधिवाटको। बाकुला वांनी ३। इति।

स्नात्रोपकरण—अथ स्नात्रयोग्योपकरण मेलववां-सुवर्णचूर्ण, अथवा सोनाना कलश ४, अथवा सुवर्ण सहित जलस्नात्र

१ । प्रवाल १, मौक्तिकर, सुवर्ण ३, रजत ४, ताम्र ५, ए पचरत्नजलस्नात्र २। पीपली, पीपल, शिरीष, उंबरो, वड, चंपो, अशोक, आंबो, जांबू, बकुल (मोलसिरी), अर्जुन (आजणु), पाडल, किंशुकनी अंतरछालनुं चूर्ण, कषायस्नात्र ३। गजदंत—वृषभशृंग उखेडी, पर्वतशिखर उदेहीघर, महाराजद्वार, नदीसंगमे उभयतट, पद्मसरोवरनी माटी मेलवी मृत्तिकास्नात्र ४। छाण—गोमूत्र-घी-दहि-दूध, ए पंचागमा डाभ अने पाणी मेलवी पचगव्यस्नात्र ५। सहदेवी, बला, शतावरी, कुंआरी, पीठवन्ति, सालवन्ति, वडी (ऊभी) रींगणी, लहुडा (भूंई) रींगणी, ए सदौषधिस्नात्र ६। मयूरशिखा, विरहक, अंकोल, लक्ष्मणा, शंखपुष्पी, खुरसाणिओ (शरपुंखा), गंधनोली, महानोली, एनु मूलिकाचूर्ण, स्नात्र ७। उपलोट १, वज २, लोध्र ३, वीरणीमूल (वालो) ४, देवदारु ५, ध्रो ६, जेठीमध ७, ऋद्धिवृद्धि ८, ए प्रथम अष्टवर्ग चूर्णस्नात्र ८। मेदा १, महामेदा २, काकोली ३, खीर-काकोली ४, जीवक ५, ऋषभक ६, नखी ७, महानखी ८, ए द्वितीयाष्टवर्गस्नात्र ९। हलदर, वज, सोआ, वालो, मोथ, गाठिवनो, प्रियगु, मुरमासी, कचूरो, उपलोट, तज, तमालपत्र, एलची, नागकेसर, लवंग, कंकोल, जायफल, जावित्री, नखी, चदन, छडछडीलो, शिलारस, प्रमुख सर्वौषधी चूर्ण स्नात्र १०। सेवत्रादि कुसुमस्नात्र ११। शिलारस, उपलोट, मुरमासी, वास, सुखड, अगर, कपूर, मयजघ, स्नात्र १२। वासस्नात्र १३। चदनस्नात्र १४। केसर—कुंकुमस्नात्र १५। गंगाप्रभृति तीर्थजल-स्नात्र १६। कर्पूरस्नात्र १७। पुष्पांजलिस्नात्र १८ ॥इति उपकरण मेलववा॥

नंदावर्त आलेखन विधि—हवे नंदावर्त आ प्रकारे लखवुं—कर्पूर संमिश्र श्रीखंडना सात लेप करेल सेवनना पाटला उपर अथवा कोई पण शुभ पाटला उपर तेना मध्यभागथी सूत्र भमाडीने ८ वृत्तो करवा, मध्यना प्रथम वलयमा कर्पूर-कस्तूरी-गोरो-

चनयुक्त केसर-कुंकुमरसवडे सुवर्णनी लेखणीथी अथवा तो सोनानी कुंचीथी मध्यभागे ९ (नव) कोणयुक्त नंदावर्तनो आलेख करवो अने ते उपर प्रतिष्ठाप्य जिनप्रतिमा स्थापवी वा चिंतववी. ते पछी जिनना जमणा भागमां शक्रेन्द्र अने श्रुतदेवतानो तथा डाबा भागे ईशानेन्द्र अने शांतिदेवतानो आलेख करवो अने "ॐ नमोऽर्हद्भ्यः" लखवुं.

बीजा वृत्तमां पूर्वादि ४ दिशाओमां 'ॐ नमः सिद्धेभ्यः । ॐ नम आचार्येभ्यः । ॐ नम उपाध्यायेभ्यः । ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः' अने ईशानादि ४ विदिशाओमां अनुक्रमे—'ॐ नमो ज्ञानेभ्यः । ॐ नमो दर्शनेभ्यः । ॐ नमश्चारित्रेभ्यः । ॐ नमः शुचिविद्यायै' आम लखवुं.

त्रीजा वलयमां पूर्वादि ८ दिशाओमां प्रतिदिशा विदिशामां ३-३ कोष्ठक करी प्रतिकोष्ठके जिनमातानुं एक एक प्राकृतनाम 'प्रणवादि स्वाहान्त' लखवुं, यथा 'ॐ मरुदेवीए स्वाहा १, ॐ विजयाए स्वाहा. २' एज प्रकारे सेणा ३, सिद्धत्था ४, मंगला ५, सुसीमा ६, पुहवी ७, लक्खमणा ८, रामा ९, नंदा १०, विण्हु ११, जया १२, सामा १३, सुजसा १४, सुव्वया १५, अचिरा १६, सिरी १७, देवी १८, पभावई १९, पउमावई २०, वप्पा २१, सिवा २२, वामा २३, तिसला २४।

माताओना उपरना चोथा वृत्तमां पूर्वादि ८ दिशाओमां प्रत्येकमां २-२ घरो करी सोल विद्यादेवीओ लखवी. जेमके—'ॐ रोहिणीए स्रां स्रां स्वाहा १। ॐ पन्नत्तीए ह्रीं क्षीं स्वाहा २। ॐ वज्जसिंखलाए लीं स्वाहा ३। ॐ वज्जंकुसीए स्मां वां स्वाहा ४। ॐ अप्रतिचक्काए झ्रौं स्वाहा ५। ॐ पुरिसदत्ताए त्मां स्वाहा ६। ॐ कालीए सां हें स्वाहा ७। ॐ महाकालीए ॐ क्ष्मां स्वाहा ८। ॐ गोरीए यूँ ग्रयूँ स्वाहा ९। ॐ गंधारीए रैं क्षाँ स्वाहा १०। ॐ सव्वत्थ महाजालाए लूँ हाँ स्वाहा

११। ॐ माणवीए यूँ क्ष्मीं स्वाहा १२। ॐ वइरुट्टाए सूँ मौं स्वाहा १३। ॐ अच्छुत्ताए यूँ मॉ स्वाहा १४। ॐ माणसीए ग्लुँ मौं स्वाहा १५। ॐ महामाणसीए हुं मूँ स्वाहा १६ ॥

विद्यादेवीओनी उपरना पांचमा वृत्तमा आठे य दिशाओमा ३-३ कोष्ठको बनावी लोकांतिक देवोनो विन्यास करवो. ते आ प्रमाणे—

ॐ सारस्वतेभ्यः स्वाहा, ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा, ॐ वह्निभ्यः स्वाहा, एज रीते नामनी आदिमा 'ॐ' अने अन्तमां चतुर्थीनुं बहुवचन लगाडवु अने छेल्ले 'स्वाहा' शब्द मूकीने बधा नामो लखवां, आगेनां नामो वरुण ४, गर्दतोय ५, तुषित ६, अव्याबाध ७, रिष्ट ८, अग्न्याभ ९, सूर्याभ १०, चंद्राभ ११, सत्याभ १२, श्रेयस्कर १३, क्षेमंकर १४, वृषभ १५, कामचार १६, निर्माण १७, दिशांतरक्षित १८, आत्मरक्षित १९, सर्वरक्षित २०, मरुत २१, वसु २२, अश्व २३ अने विश्व २४।

छट्ठा वृत्तनी पूर्वादि आठे य दिशाओमा अनुक्रमे ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा। ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा। ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा। ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा। ॐ चन्द्रादीन्द्राभिभ्य स्वाहा। ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा। ॐ किंनरादीन्द्रादिभ्यः स्वाहा। ॐ तद्देवीभ्यः स्वाहा।

सातमा वृत्तमां आठ दिशाओमा अनुक्रमे ॐ इन्द्राय स्वाहा १, ॐ अग्नये स्वाहा २, ॐ यमाय स्वाहा ३, ॐ निर्ऋतये स्वाहा ४, ॐ वरुणाय स्वाहा ५, ॐ वायवे स्वाहा ६, ॐ कुबेराय स्वाहा ७, ॐ ईशानाय स्वाहा ८।

आठमा वृत्तना ८ कोठाओमा अनुक्रमे—ॐ आदित्येभ्यः स्वाहा १, ॐ सोमेभ्यः स्वाहा २, ॐ मंगलेभ्यः स्वाहा ३,

ॐ बुधेभ्यः स्वाहा ४, ॐ बृहस्पतिभ्यः स्वाहा ५, ॐ शुक्रेभ्यः स्वाहा ६, ॐ शनैश्चरेभ्यः स्वाहा ७, ॐ राहु-केतुभ्यः स्वाहा ८।

आठ वलयोनी बहार ४–४ द्वारोयुक्त ३ प्राकारो बनाववा, पूर्वादि द्वारो अनुक्रमे श्री १, शांति २, बल ३, आरोग्य ४, नामक-चार तोरणो वडे शोभायमान करवां, तथा धर्म १, मान २, गज ३, सिंह ४, नामक ध्वजो द्वारो उपर आलेखवा, प्रथम प्राकार-ना पूर्वादि द्वारो पर अनुक्रमे सोम १, यम २, वरुण ३, कुबेर ४, आ चार लोकपालोने द्वारपाल रूपे आलेखवा, एमना हाथमां अनुक्रमे धनुष्य १, दण्ड २, पाश ३, गदा ४, नामक आयुधो बतावनां. बीजा प्राकारना द्वारोए अनुक्रमे जया १, विजया २, अजिता ३, अपराजिता ४, नामनी द्वारपालीओ आलेखवी. त्रीजा बहारना प्राकारना ४ द्वारो उपर यष्टिधर तुंबरुने द्वारपाल आलेखवो.

ते पछी प्रथम गढमां आग्नेयादि विदिशाओमां १२ सभाओ आलेखवी. साधु १, वैमानिकदेवी २, साध्वी ३, ए आग्नेय-कोणमां, भवनपति १, व्यन्तर २, ज्योतिष्क ३, नी देवीओ नैऋत कोणमां, भवनपति १, व्यंतर २, जोतिष्क ३, देवो वायव्य कोणमां अने वैमानिक देव १, मनुष्य २, मानुषी ३, ए इशान कोणमां आलेखवी. बीजा प्राकारमां तिर्यंचो आलेखवा अने त्रीजा प्राकारमां यानवाहनो आलेखवां. प्राकारनी बहारनी भूमीमां देवो–मनुष्यो बताववा, चारेय द्वारोनी बंने बाजुए कमलव-नयुक्त वावडिओ आलेखवा, पछी वज्रलांछित इंद्रपुर देइ दिशाओमां "परविद्याः क्षः फुट्" कोणोमां "परमंत्राः क्षः फुट्" तथा चार कोणोमां चार पूर्ण कलशो लखवा, तेनी बहार वायुमंडल आपवुं, इति नन्द्यावर्त आलेखन विधि।

अथ नन्द्यावर्त पूजन विधि—नन्द्यावर्तनी पूजा पोतपोताना नामोच्चारण पूर्वक आ प्रमाणे करवी—प्रथम वृत्तना मध्यमां नन्द्यावर्त उपर प्रतिष्ठाप्य जिनतु आह्वान करी 'ॐ नमोऽर्हद्भ्यः' आ नाम मंत्र बोली कर्पूरादि वडे पूजन करवुं. तेना जमणा भागमां शक्रेंद्र तथा श्रुतदेवतानी पूजा करी अने डाबा भागे ईशानेंद्र तथा शांतिदेवताने पूजवी.

बीजा वलयमां पूर्वादि दिशाओमां " ॐ नमः सिद्धेभ्यः, ॐ नम आचार्येभ्यः, ॐ नम उपाध्यायेभ्यः, ॐ नमः सर्वसाधुभ्यः " अने ईशानादि विदिशाओमां " ॐ नमो ज्ञानेभ्य ॐ नमो दर्शनेभ्यः, ॐ नमश्चारित्रेभ्यः, ॐ नमः शुचिविद्यायै" आ प्रमाणे नाम मंत्रो बोलीने पूजन करवुं.

त्रीजा वृत्तमां–'ॐ मरुदेवीए नमः । ॐ विजयाए नम । ॐ सेणाए नमः । ॐ सिद्धत्थाए नमः । ॐ मंगलाए नमः । ॐ सुसीमाए नमः । ॐ पुहवीए नमः । ॐ लखमणाए नमः। ॐ रामाए नमः । ॐ नंदाए नमः। ॐ विण्हुए नमः । ॐ जयाए नमः । ॐ सामाए नमः । ॐ सुजसाए नमः। ॐ सुव्वयाए नमः। ॐ अचिराए नमः । ॐ सिरीए नमः। ॐ देवीए नमः । ॐ पभावईए नमः। ॐ पउमावईए नम । ॐ वप्पाए नमः। ॐ सिवाए नमः । ॐ वामाए नमः। ॐ तिसलाए नमः।'

चतुर्थ वृत्तमां ' ॐ रोहिणीए नमः । ॐ पन्नत्तीए नमः। ॐ वज्जसिंखलाए नमः। ॐ वज्जंकुसीए नमः । ॐ अप्पडिचक्काए नमः। ॐ पुरिसदत्ताए नम। । ॐ कालीए नमः । ॐ महाकालीए नमः। ॐ गोरीए नम । ॐ गंधारीए नमः । ॐ सव्वत्थमहाजालाए नमः । ॐ माणवीए नमः। ॐ वइरुट्टाए नमः । ॐ अच्छुत्ताए नमः । ॐ माणसीए नमः । ॐ महामाणसीए नमः ।'

पांचमा वृत्तमां—ॐ सारस्वतेभ्यो नमः। ॐ आदित्येभ्यो नमः। ॐ वह्निभ्यो नमः। ॐ वरुणेभ्यो नमः। ॐ गर्दतोयेभ्यो नमः। ॐ तुषितेभ्यो नमः। ॐ अव्याबाधेभ्यो नमः। ॐ रिष्टेभ्यो नमः। ॐ अग्न्याभेभ्यो नमः। ॐ सूर्याभेभ्यो नमः। ॐ चन्द्राभेभ्यो नमः। ॐ सत्याभेभ्यो नमः। ॐ श्रेयस्करेभ्यो नमः। ॐ क्षेमंकरेभ्यो नमः। ॐ वृषभेभ्यो नमः। ॐ कामचारेभ्यो नमः। ॐ निर्माणेभ्यो नमः। ॐ दिशान्तरक्षितेभ्यो नमः। ॐ आत्मरक्षितेभ्यो नमः। ॐ सर्वरक्षितेभ्यो नमः। ॐ मरुतेभ्य नमः। ॐ वसुभ्यो नमः। ॐ अश्वेभ्यो नमः। ॐ विश्वेभ्यो नमः।

षष्ठ वलयमां पूर्वादि कोष्ठकोमां ॐ सौधर्मादीन्द्रादिभ्यो नमः। ॐ तद्देवीभ्यो नमः। ॐ चमरादीन्द्रादिभ्यो नमः। ॐ तद्देवीभ्यो नमः। ॐ चन्द्रादीन्द्रादिभ्यो नमः। ॐ तद्देवीभ्यो नमः। ॐ किन्नरादीन्द्रादिभ्यो नमः। ॐ तद्देवीभ्यो नमः।

सातमा वलयमां—ॐ इन्द्राय नमः। ॐ अग्नये नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ निर्ऋतये नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ वायवे नमः। ॐ कुबेराय नमः। ॐ ईशानाय नमः।

आठमा वलयना आठ कोठाओमां अनुक्रमे ॐ आदित्येभ्यो नमः। ॐ सोमेभ्यो नमः। ॐ मंगलेभ्यो नमः। ॐ बुधेभ्यो नमः। ॐ बृहस्पतिभ्यो नमः। ॐ शुक्रेभ्यो नमः। ॐ शनैश्चरेभ्यो नमः। ॐ राहुकेतुभ्यो नमः।

आठवलयोने फरता आलेखेला त्रण प्राकारो पैकीना अंदरना प्रथम प्राकारना आग्नेयादि ४ कोणोमां आ प्रमाणे बार पर्षदाओनुं पूजन करवुं. अग्निकोणे—ॐ साधुभ्यो नमः १। ॐ वैमानिकदेवीभ्यो नमः २। ॐ साध्वीभ्यो नमः॥ नैर्ऋत्यकोणे—ॐ भवनपतिदेवीभ्यो नमः १। ॐ व्यन्तरदेवीभ्यो नमः २। ॐ ज्योतिष्कदेवीभ्यो नमः ३॥ वायव्यकोणे—ॐ भवनपति-

देवेभ्यो नमः १। ॐ व्यन्तरदेवेभ्यो नमः २। ॐ ज्योतिष्कदेवेभ्यो नमः ३॥ ईशानकोणे–ॐ वैमानिकदेवेभ्यो नमः १। ॐ मनुष्येभ्यो नमः २। ॐ मानुषीभ्यो नमः ॥ आम प्रथम प्राकारमां १२ पर्षदाओने पूजीने बीजा प्राकारगत तिर्यंचो अने तृतीय प्राकारगत यानवाहनादि उपर वासक्षेप करीने पूजन करवुं

ते पछी प्रथम प्राकारना द्वारपालोने आ प्रमाणे नाममंत्रो बोलीने पूजवा—ॐ सोमाय नमः। ॐ यमाय नमः। ॐ वरुणाय नमः। ॐ कुबेराय नमः। बीजा प्राकारनी द्वारपालिकाओने–ॐ जयायै नमः। ॐ विजयायै नमः। ॐ अजितायै नमः। ॐ अपराजितायै नमः॥ तृतीय प्राकारना द्वारपाल तरीके—ॐ तुंबरवे नमः। ॐ तुंबरवे नमः। ॐ तुंबरवे नमः। ॐ तुंबरवे नमः। आम ४ द्वारोपर तुंबरु द्वारपालनी पूजा करवी॥ ए ज प्रकारे ४ तोरणो, ४ ध्वजो, दिशाओमां परिविधाः क्षः फुट् स्वाहा,' विदिशाओमां 'परमन्त्राः क्षः फुट् स्वाहा' इन्द्रपुरादि जे जे आलेखो नंद्यावर्तने फरता करेला होय ते सर्वनी पूजा करवी, वासक्षेप करवो इति नन्द्यावर्तपूजाविधि॥

प्रतिष्ठास्थानमां प्रतिमा प्रवेश—रंग-बेरंगी चन्द्रवाओ वडे सुशोभित अने पीठमंडित एवा प्रतिष्ठास्थानमा (जे स्थाने नवीन प्रतिमाओ विधि माटे स्थापवी होय ते–प्रतिष्ठामंडपमां) शुभ समये महोत्सवपूर्वक नवीन तैयार थयेल जिनबिंब पूर्वाभिमुख अथवा उत्तराभिमुख बेसाडवुं, जो बिंब स्थिर होय तो तेनी नीचे वामभागे पंचरत्न तथा कुंभकारना चक्रनी माटी मूकीने प्रतिमा स्थापवी अने जो बिंब चल होय तो तेनी नीचे समूलो डाभ तथा नदीनी शुद्ध वालुका मूकवा, जघन्य पदे पण १०० हाथ सुधीमा बधे भूमि शुद्धि करवी, सुगंधी जल छांटी तथा पुष्पो वेरीने भूमिनो सत्कार करवो, धूप उखेववो, अमारि पडहो

वगडाववो, राजाने पूछवुं, मंदिर-मूर्ति बनावनार शिल्पीनो सत्कार करवो, संघने बोलाववो, अने धामधूमथी पवित्र जलाशयथी जल आ प्रमाणेनी विधिथी लाववुं.

जलयात्राविधि—पूर्वे मंगावेल सुंदर मजबूत घडाओने प्रतिष्ठामंडपमां मंगावीने प्रतिष्ठाचार्ये चंदन-वास-अक्षतो वडे अभिमंत्रित करवा, श्रावकोए (स्नात्रकारोए) ते पवित्र तथा विविध प्रकारना पुष्पो-पत्रो अने सोपारी आदिथी पूजवा, ते पछी ते घडाओ प्रतिष्ठाचार्यद्वारा रक्षा प्राप्त अविधवा एवी चार स्त्रीओने उपडाववा, पछी ते स्त्रीओनी साथे संघ समुदाये महोत्सव पूर्वक नदी-सरोवरादिके जवुं, त्यां जलने कांठे उभा रही प्रतिष्ठागुरु क्षेत्रदेवता-जलदेवता अने शान्तिदेवताने अनुकूल करवा निमित्ते "क्षेत्रदेवता अनुकूला भवतु, जलदेवता अनुकूला भवतु, शान्तिदेवता अनुकूला भवतु," आम बोलता चन्दन-वास-अक्षत-क्षेप करे अने त्रणेना कायोत्सर्ग करे, श्री क्षेत्रदेवतायै करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ उससिएणं०, १ नो०, पारी, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्यं भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

श्री शान्तिदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, पारी, नमोऽर्हत् स्तुतिः—

श्री चतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी। शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥२॥

श्रीजलदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो० का०, पारी नमोऽर्हत्० स्तुतिः—

यदधिष्ठितजलविमलाः, सकलाः सफला जिनेश्वरप्रतिमाः। सा जलदेवी पुर-संघ-भूभुजां मंगलं देयात् ॥३॥

आ वखते श्रावको नालियेर आदि वडे अने अगर आदिना अंगभोग वडे पूजा करे. ते पछी नमस्कार मंत्र गणवापूर्वक जले करी घडाओ भरी धवलमंगल गवाता वादित्रनादपूर्वक आवी जिनप्रासादने प्रदक्षिणा दइ निरुपद्रव स्थानके मुके. इति जलयात्रा विधि।

वेदीस्थापना—चार मंडपना ४ खूणाओमां अविधवा श्राविकाए मंगलगीतपूर्वक आणेली ४ विषमागवेदिओ (नवांग-वेहि-वेह) स्थापवी, दरेक वेदीने उपर १-१ जवारानुं शरावलु मूकवुं, वेदिओने गेवास्त्र अथवा राता रंगे रंगेल सूत्र वींटवुं, उपर लाल रंगे रंगेल १२-१२ हाथना बे अडधिया ओढाडवा, फरतो वासडाओनो टेको दइ वेदिओने मजबूत करवी. (प्रतिमानी) च्यारे दिशाओमा (कइक जमणी तरफ) श्वेत सुंदर ४ न्हाना गाडुआ (वेडिआ) स्थापवा, तेमना उपर १-१ जवारानुं सरावलु मूकवुं,

दिक्पालस्थापना—एक पवित्र पाटला उपर दश दिक्पालोनी स्थापना करवी इन्द्र, अग्नि, यम, निर्ऋति, वरुण, वायु, कुबेर, ईशान, नाग अने ब्रह्मा, ए क्रमथी पूर्वादि पोत पोतानी दिशामां चंदनना आलेखरूपे तिलको करवां, अने ते पछी ते स्थानोमां दिक्पालोनी पूजा करवी.

स्नात्रकारो अने औषधि वाटनारीओ—रत्नजडित सुवर्णमुद्रिका-कंकणधारी अखंडित शरीरवाला अक्षतेन्द्रिय एवा निपुण अखंडित-उद्भट वेषधारी धर्मवान् उपवासी ते दिवसे ब्रह्मचारी अने कुलवान् एवा चार अथवा अधिक स्नात्रकारो करवा. एज रीते जेना सासू-ससरो, माता-पिता जीवित होय एवी सुकुलीन श्रेष्ठ वस्त्राभरणोथी सुशोभित सुशील अने पवित्र

शरीरवाली च्यार स्त्रीओद्वारा स्नात्रनी सर्व औषधियो कूटावीने तैयार कराववी,ते प्रत्येकने कापड, नालियेर, सुखडी, आदि आपीने तेमनो सत्कार करवो, एमांनुं कंइ न बने तो कुंकुमतिलक, पुष्प अने तांबूल वडे पण यथाशक्ति उपचार करवो. ते औषधी वाटनारीओए पण यथाशक्ति देवने वस्त्रयुगलादि अर्पण करी भक्ति करवी. अष्टादश अभिषेकोनां औषधिचूर्णोनां जुदां जुदां पडिकां बांधी तेओ उपर दोरो वींटीने पडिकां करी राखवां, वाटेला प्रियंगु, कपूर, गोरोचनरूप हस्तलेपननुं पण पडिकुं बांधीने तैयार राखवुं.

पछी शान्तिककर्ममां प्रवीण धार्मिक स्नात्रकारोए दिक्पालोनी पूजा करी जिनप्रासादनी जगतीमां शांतिबलि क्षेपवो, ते पछी पूर्वप्रतिष्ठित प्रतिमानुं विधिपूर्वक स्नात्र करी पूजा करवी. आ बधी पूर्वक्रिया जाणवी. आ पछीनां जे जे कर्तव्यो छे ते बधां सुखे शीखी शकाय एटला माटे पूर्वाचार्योए गाथाओथी वर्णवेल छे, ते गाथाओ विस्तारना भयथी अत्र लखी नथी.१

प्रतिष्ठाप्रारंभ मंगल—पूर्वप्रतिष्ठित प्रतिमाना स्नात्र पछी तरत ज तेनी आगल नवीन वस्त्र पहेरेल पवित्र उपवासी आचार्य पूर्वोक्त स्नात्रकारो सहित चतुर्विध संघसमेत आ प्रकारे चैत्यवन्दना करे—

नमस्कार (कोइ पण चैत्यवंदन-स्तोत्र), नमुत्थुणं०, अरिहंत चेइयाणं०, १ नो० का० करी प्रतिष्ठाप्य देवनी स्तुति कहेवी। लोगस्स०, सव्वलोए०, द्वितीय स्तुति। पुक्खरवरदीवड्ढे०,सुअस्स०, तृतीय स्तुति। सिद्धाणं बुद्धाणं०, श्रीशांतिनाथ आराधनार्थं०, कायोत्सर्गमां चतुर्विंशतिस्तव चिन्तववो. स्तुतिः—

१ आ गाथाओ अमे ८ मा परिच्छेदने अंते आपी छे.

श्रीशान्तिः श्रुतशान्ति, प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम्।
नयतु सदा यस्य पदा, सुशान्तिदाः सतुषन्ति जने ॥ १ ॥

ते पछी श्रुतदेवतानो कायोत्सर्ग अने स्तुति—

वद वदति न वाग्वादिनि! भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः।
रंगत्तरंगमतिवर-तरणिस्तुभ्य नम इतीह ॥ २ ॥

शासनदेवतानो कायोत्सर्ग करीने स्तुतिः—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरताः।
द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥ ३ ॥

भवनदेवतानो कायोत्सर्ग करवो, स्तुतिः—

ज्ञानादिगुणयुताना, नित्य स्वाध्यायसयमरतानाम्।
विदधातु भवनदेवी, शिव सदा सर्वसाधुनाम् ॥ ४ ॥

क्षेत्रदेवतानो कायोत्सर्ग करवो, स्तुति —

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभि. साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान्नः सुखदायिनी ॥ ५ ॥

अम्बादेवीनो काउस्सग्ग करवो, स्तुतिः—

अम्बा बालाङ्किताऽङ्कासौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥६॥

अच्छुप्तानो काउस्सग्ग करवो, स्तुतिः—

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्या-ऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥ ७ ॥

छेल्लो वैयावच्चगरोनो कायोत्सर्ग करवो, स्तुतिः—

संवेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

नोकार गणी, बेसी, नमुत्थुणं०, जावंति चेइआइं० स्तवन—

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरियउवज्झाय । वरसव्वसाहुमुणिसंघ-धम्मतित्थप्पवयणस्स ॥१॥

सप्पणव नमो तह, भगवईइ सुअदेवयाइ सुहयाए । सिवसंतिदेवयाए, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥

इंदागणिजमनेरईय-वरुणवाउकुबेरईसाणा । बंभो नागु त्ति दसण्ह-मवि अ सुदिसाण पालाणं ॥३॥

सोमयमवरुणवेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं । तह लोगपालयाणं, सूराइगहाण य नवण्हं ॥४॥

साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुट्ठाणं । सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणिअं ॥५॥

' जयवीयराय ' इत्यादि कही चैत्यवंदना समाप्त करवी.

बद्धपरिकरता—ते पछी आचार्ये पोतानामां सकलीकरण करवुं, सकलीकरणनो मंत्र आ प्रमाणे छे—

ॐ नमो अरिहंताणं-हृदयं रक्ष रक्ष। ॐ नमो सिद्धाणं-ललाटं रक्ष रक्ष। ॐ नमो आयरियाण शिखां रक्ष रक्ष। ॐ नमो उवज्झायाण-कवचम्। ॐ नमो लोए सव्वसाहूण-अस्त्रम्।

उक्त प्रकारे ७ वार आत्मरक्षा करी, पछी—

" ॐ नमो अरिहंताण। ॐ नमो सिद्धाण। ॐ नमो आयरिआणं। ॐ नमो उवज्झायाणं। ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं। ॐ नमो आगासगामीणं। ॐ नमो चारणलद्धीण। ॐ ह्रः क्ष. नमः। ॐ अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा।"

आ मंत्रवडे पांच वा सात वार आत्मानु शुचीकरण करवु, पोतानु सकलीकरण तथा शुचीकरण कर्या बाद आचार्य पूर्वोक्त सकलीकरण मंत्रथी स्नात्रकारोनुं पण सकलीकरण करवुं, ते पछी " ॐ ह्रीं ्वीं सर्वोपद्रवं बिंबस्य रक्ष रक्ष स्वाहा " आ मंत्रद्वारा ७ वार अभिमंत्रित करीने धूप तथा जल माथे दिशाओमां प्रक्षेप करवो

अधिवासनानो उपक्रम—९ पछी स्नात्रकोए धूप जल सहित प्रतिष्ठाप्य प्रतिमा उपर नीचेनु पद्य भणीने कुसुमांजलि क्षेप करवो.

" अभिनवसुगंधवासित-पुष्पौघभृता सुगन्धधूपाढ्या।
बिम्बोपरि निपतन्ती, सुखानि कुसुमाञ्जलिः कुरुताम्॥ १॥

ते पछी आचार्ये प्रतिष्ठाप्य बिंब सामे क्रूर दृष्टि करी ने मध्यमा आंगलीओ उंची करी तर्जनी मुद्रा देवी, श्रावके डाबा

हाथमां जल लेइ "स्म्रौं सौ" आम बोलतां प्रतिमा उपर आछोटवुं, अने पछी प्रतिमाने तिलक करवो, पुष्पादि चडाववां, मुद्गरमुद्रा देखाडवी अने अक्षतस्थाल भेट करवो.

ते बाद आचार्ये "ॐ हूं क्ष्वौं" इत्यादि बलिमंत्र वडे वज्र १, गरुड २, मुद्गर ३, मुद्राओनी साथे सातवार प्रतिमाने कवच करवो, जेथी प्रतिमानी दृष्टिदोषथी रक्षा थाय. एज मंत्र वडे सातवार दिग्बन्ध पण करवो.

ए पछी श्रावकोए उभा थइ जिनमुद्राए उभा रही—"ॐ नमो य सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आगच्छ आगच्छ जलं गृह्ण गृह्ण स्वाहा" आ मंत्रे जलकलशादिकनुं अभिमंत्रण करवुं.

"ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु विपृथु विपृथु गन्धान् गृण्ह गृण्ह स्वाहा" आ मंत्रथी वास, चंदन, सर्वौषधिनुं अभिमंत्रण करवुं.

ॐ नमो यः सर्वतो मे मेदिनी पुष्पवती पुष्पं गृहण गृहण स्वाहा। आ मंत्रे पुष्पो अभिमंत्रित करवां.

"ॐ नमो यः सर्वतो बलिं दह दह महाभूते तेजोधिपते धू धू धूपं गृहण गृहण स्वाहा।" आ मंत्र वडे धूपने अभिमन्त्रित करवो, अने श्रावकोए उखेववो, ते पछी ते वास-चंदन-पुष्पो थोडां थोडां जलमां नांखवां, श्रावकोए पंचरत्ननी पोटली प्रतिमाना जमणा हाथनी आंगलीए बांधवी.

अढार अभिषेको—तदनन्तर पंचपरमेष्ठिमंगलपूर्वक तैयार करी राखेल स्नात्रपुडिओमांथी अनुक्रमे एक एक औषध पुडी जलमां नांखवी, मंत्र-मुद्रापूर्वक अधिवासित ते तीर्थजले ४-४ कलशो भरी गीत-वाजित्रनाद पूर्वक स्नात्रकारोए १८ स्नात्रो

करा, मनं स्नात्रोमा आंतरे आंतरे मस्तके पुष्पारोपण करवुं, ललाटमां तिलक करवुं वासक्षेप चडाववो अने धूप उखेववो.

(१) प्रथम ४ सुवर्ण कलशोमा जल भरीने अथवा जलमा सुवर्ण चूर्ण नाखीने ते वडे स्नात्र ते सुवर्ण स्नात्र—

सुपवित्रतीर्थनीरेण, संयुत गन्धपुष्पसंमिश्रम्। पततु जल बिम्बोपरि, सहिरण्य मन्त्रपरिपूतम् ॥१॥

(२) बीजुं पञ्चरत्नजलस्नात्र—

नानारत्नौघयुत, सुगन्धपुष्पाभिवासित नीरम्। पतताद्विचित्रवर्णं, मन्त्राढ्य स्थापनाबिम्बे ॥२॥

(३) त्रीजुं कषायस्नात्र—

प्लक्षाश्वत्थोदुम्बर-सिरीषछल्ल्यादि कल्कसंमिश्रम्। बिम्बे कषायनीरं, पतताद्धिवासित जैने ॥३॥

(४) चोथुं मृत्तिकास्नात्र—

पर्वतसरोनदीसंग-मादिमृद्भिश्च मन्त्रपूताभिः। उद्वर्त्य जिनबिम्बं, स्नपयाम्यधिवासनासमये ॥४॥

(५) पांचमु गव्य (पंचगव्य) दर्भजलस्नात्र—

जिनबिम्बोपरि निपतद्, घृतदधिदुग्धादिद्रव्यगणप्रस्रवणैः। दर्भोदकसंमिश्रैः, स्नपयामि जिनेश्वरप्रतिमाः ॥५॥

(६) छठ्ठुं सहदेव्यादिसदौषधिस्नात्र—

सहदेव्यादिसदौषधि-वर्गेणोद्वर्तितस्य बिम्बस्य। संमिश्र बिम्बोपरि, पतज्जल हरतु दुरितानि ॥६॥

(७) सातमुं मूलिकास्नात्र—

सुपवित्रमूलिकावर्ग-मर्दिततदुदकस्य शुभधारा। बिम्बेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥७॥

(८) आठमुं प्रथमाष्टवर्गस्नात्र—

नानाकुष्ठाद्योषधि-संमृष्टे तद्युत पतन्नीरम्। बिम्बे कृतसन्मन्त्रं, कर्मौघं हरतु भव्यानाम् ॥८॥

(९) नवमुं द्वितीयाष्टवर्गस्नात्र—

मेदाद्यौषधिमेदो-ऽपरोऽष्टवर्गः स्वमन्त्रपरिपूतः। जिनबिम्बोपरि निपतन्, सिद्धिं विदधातु भव्यजने ॥९॥

आ प्रमाणे नव स्नात्रो थया पछी आचार्य उठीने 'गरुड-मुक्ताशुक्ति-परमेष्ठि.' आ ३ मुद्राओमांथी कोइ पण एक मुद्रा वडे प्रतिष्ठाप्य देवतानुं आह्वान करे, प्रतिमानी सामे उभा रही उक्त त्रण मुद्राओ पैकीनी कोइ एक मुद्रा दर्शन पूर्वक—

"ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा।" आम जिनाह्वान करवुं, पछी श्रावके १० दिक्पालोनुं आह्वान आ प्रमाणे करवुं,

ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१॥

ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥२॥

ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥३॥

ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥४॥

ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥५॥
ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥६॥
ॐ कुवेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥७॥
ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥८॥
ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥९॥
ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१०॥
उपर प्रमाणे प्रत्येक दिक्पालनु आह्वान करी श्रावकोए ते ते दिशामां पुष्पांजलि चढाववी.

(१०) दशमुं सर्वौषधिस्नात्र—

सकलौषधिसंयुक्त्या, सुगन्धया घर्षित सुगतिहेतोः, स्नपयामि जैनबिम्बं, मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥१०॥

अहियां आचार्ये दृष्टिदोषनिवारणार्थे पोताना जमणा हाथे प्रतिष्ठाप्य बिंबनो स्पर्श करी नीचेना बे मंत्रोमांथी कोई पण एक

मंत्रनो प्रतिष्ठाप्य बिंबमां न्यास करवो

ते बे मंत्रो—" ॐ इहागच्छन्तु जिनाः सिद्धा भगवन्तः स्वसमयेनेहानुग्रहाय भव्यानां भः स्वाहा " ए एक

अने " ॐ क्षां क्ष्वीं हूँ क्षीं भः स्वाहा । " ए बीजो.

आ वखते श्रावकोए दृष्टिदोषविघातार्थे " ॐ क्षां क्षीं क्षूं स्वाहा ।", आ मंत्रे ७ वार मंत्रीने लोहअस्पृष्ट श्वेत सरसवो-

नी रक्षा पोटली प्रतिमाना हाथे बांधवी अने ललाटे चंदननो तिलक करवो. पछी आचार्ये जिन सामे हाथ जोडीने आ प्रमाणे विज्ञप्ति करवी—

" स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रज्ञाददाः सन्तु प्रज्ञादं धिया कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम् । "

ते पछी श्रावके सुवर्णपात्रमां राखेला सरसव १, दहि २, अक्षत ३, घृत ४, दर्भ ५, ए रूप अर्घ " ॐ भः अर्घं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा । " आ मंत्र अभिमंत्रित करीने निवेदन करवो.

ते पछी आचार्य उभा थइ इन्द्र १, अग्नि २, यम ३, निर्ऋति ४, वरुण ५, वायु ६, कुबेर ७, ईशान ८, नाग ९, ब्रह्मा १०, ए नामक दश दिक्पालोनुं आह्वान करता ते ते दिशामां आ प्रमाणे वासक्षेप करे.

" ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह जिनेन्द्रस्थाने आगच्छ आगच्छ स्वाहा । " १

एज रीते अग्नि आदि प्रत्येक दिक्पालनी दिशासंमुख आह्वान करीने आचार्ये वासक्षेप करवो अने स्नात्रकारोए चंदन अक्षत पुष्पादि नाखवां, धूप करवा, दीवो करवो, वळी श्रावको पूर्वोक्त प्रकारनो अर्घ एक पात्रमां लेइ " दिक्पाला अर्घं प्रतीच्छन्तु " एम उच्चारण पूर्वक अर्घनिवेदन करे.

(११) अगयारमुं पुष्पजलस्नात्र—

अधिवासितं सुमन्त्रैः, सुमनःकिंजल्कराजितं तोयम् । तीर्थजलादिसुपृक्तं, कलशोन्मुक्तं पततु बिम्बे ॥११॥

(१२) बारमु गन्धस्नात्र—

गन्धाङ्गस्नानिकया सम्मृष्ट तदुदकस्य धाराभिः । स्नपयामि जैनबिम्बं, कर्मौघोच्छित्तये शिवदम् ॥१२॥

(१३) तेरमु वासस्नात्र—(धवल वर्ण गंध ते वास)

हृद्यैराल्हादकरै, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्जैनम् । स्नपयामि सुगतिहेतो-र्बिम्ब ह्यधिवासित वासैः ॥१३॥

(१४) चौदमु चंदनस्नात्र—

शीतलसरससुगन्धि-र्मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः । चन्दनकल्कः सजलो, मन्त्रयुतः पततु जिनबिम्बे ॥१४॥

(१५) पदरमु कुंकुमस्नात्र—

कश्मीरजसुविलिप्त, बिम्ब तन्नीरधारयाऽभिनवम्। सन्मन्त्रयुक्तया शुचि, जैनं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥१५॥

आ पछी प्रतिमाओने आरीसो देखाडवो.

(१६) सोलमु तीर्थजल स्नात्र—

जलधिनदीहृदकुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि । तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, बिम्ब स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥१६॥

(१७) सत्तरमु कर्पूरस्नात्र—

शशिकरतुषारधवला, उज्ज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा । कर्पूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु बिम्बे ॥१७॥

(१८) अढारमुं बिम्बोपरि पुष्पांजलिक्षेपस्नात्र—

नाना सुगन्धिपुष्पौघ-रञ्जिता चञ्चरीककृतनादा । धूपामोदविमिश्रा, पततात् पुष्पाञ्जलिर्बिम्बे ॥१८॥
आ प्रमाणे अढार स्नात्रो करीने घृत १, दहि २, दूध ३, खांड ४, सर्वौषधि ५, रूप पंचामृतनुं १ स्नात्र करवुं, नमोऽर्हत् सिद्धाचार्योपाध्याय० कहीने—

" घृतमायुर्वृद्धिकरं, परमं श्रीजैनगात्रसंपर्कात् । तद् भगवतोऽभिषेके, पातु घृतं घृतसमुद्रस्य ॥१॥
दुग्धं दुग्धाम्भोधे-रुपाहृतं यत्पुरा सुरवरेन्द्रैः । तद् बलपुष्टिनिमित्तं, भवतु सतां भगवदभिषेकात् ॥२॥
दधिमङ्गलाय सततं, जिनाभिषेकोपयोगतोऽप्यधिकम् । भवतु भवतां शिवाध्वनि, दधिजलधेराहृतं त्रिदशैः ॥३॥
इक्षुरसोदादुपहृत, इक्षुरसः सुरवरैस्त्वदभिषेके । भवदवसदवथुभविनां, जनयतु नित्यं सदानन्दम् ॥४॥
सर्वौषधीषु निवसत्यमृतमिदं सत्यमर्हदभिषेकात् । तत्सर्वौषधिसहितं, पञ्चामृतमस्तु वः सिद्ध्यै ॥५॥

ए पछी कर्पूर आदि सुगंधि चूर्ण करी प्रतिमाने घसा चीकाश दूर करी गर्भजले पखालवी, अने १०८ वार शुद्धजले कलश भरी स्नात्र करवुं, ते बाद अंग लुंछी सुगंधी विलेपन करवुं, पूजा करवी, मेवो फलादि ढोवां, १०८ स्नात्र पर्यन्त—

" चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-र्नृत्यन्तीभिः सुरीभिर्ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः ।
कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै-र्बिम्बं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥

पंच शब्द वादित्रपूर्वक ए काव्य उच्च स्वरे भणवुं.

पछी सूरिमंत्रे अथवा अधिवासना मंत्रे अभिमंत्रित चन्दनवडे डावा हाथे पकडेला जमणा हाथथी बिम्बना सर्वांगे विलेपन

करवु, पुष्पपूजा करवी, धूप उखेववो, अने वासक्षेप करवो अने आचार्ये सुरभि १, पद्म २, अंजलि ३, आ त्रण मुद्राओ देखाडवी.

ए पछी श्रावके सर्व प्रतिमाओने प्रियंगुकर्पूर गोरोचनादि द्रव्यात्मक हस्तलेप करवो अने " ॐ नमो खीरासवलद्धीणं। ॐ नमो महुआसवलद्धीणं। ॐ नमो संभिन्नसोआणं। ॐ नमो पयाणुसारीणं। ॐ नमो कुट्ठबुद्धीणं। जम्मिम विज्जं पउजामि सामे विज्जा पसिज्झउ, ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वग्गु वग्गु निवग्गु निवग्गु सुमिणे सोमणसे महु महुरे ॐ कविल ॐ कः क्षः स्वाहा" अथवा " ॐ नमः शान्तये हूं क्षूं हूं सः"

आ बे अधिवासना मंत्रो पैकीना कोई पण एक मंत्रे अभिमंत्रित करीने प्रतिमाओने ऋद्धि वृद्धि सहित मींढलना कंकण बांधवा अने बीजा अधिवासना मंत्रे करीने मुक्तासुक्तिमुद्रा अथवा चक्रमुद्राए प्रतिमाओना मस्तक १, खभा २, ढींचण २, ए ५ अंगोनो ७ वार स्पर्श करवो, निरंतर धूप उखेववो.

आ वखते परमेष्ठिमुद्राए करी आचार्य जिननुं आह्वान करे, मंत्र नीचे प्रमाणे छे—

" ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठीने त्रैलोक्यगताय अष्टदिक्कुमारी परिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा।"

ते पछी आसन उपर बेसी आचार्ये पोते आसनमुद्राए वास आदि द्रव्यो वडे नन्दावर्तनुं पूजन करे, स्नात्रकारो पुष्पादि चढावे, प्रचुर अंगभोग सामग्री चढावे. नन्दावर्तनु पूजन मध्य भागथी चालु करवुं, एना लेखन-पूजननो क्रम अने विधि पूर्वे लख्या प्रमाणे जाणवो. नन्दावर्त पूजीने दशीओ सहित अने अक्षत एवा वस्त्रे तेने ढांकवु, तेना उपर १ नालिएर स्थापन

करवुं, फरतुं सप्तधान्य क्षेपवुं, प्रतिष्ठा चल होय तो ते जणाववा माटे नंदावर्त उपर संकल्प करी प्रतिष्ठाप्य बिंबने स्थापन करवुं. उपर रक्तसूत्र वींटवुं, बीजोरादिक विचित्र फलो अने नैवेद्य ढोवुं. आगे वाट १, क्षीर २, करंबो ३, केसरि (खीचडी) ४, सिद्ध-पिंडी ५, कूर ६, पूअडा ७ ए सात बलि शरावो ढोवां. रक्तसूत्र अथवा गेवासूत्र बांधेल ४ न्हाना सुवर्णना कलशिया अथवा चंदननुं विलेपन करी सुवर्णना वर्क चोडेला ४ कलशिया (नन्दावर्तस्थित) प्रतिमानी चारे बाजु स्थापवा, घी-गोलना ४ मंगलदीवा स्थापवा, नन्दावर्तना पाटलानी चारे दिशाओमां कोडी १, सुवर्ण २, जल ३, धान्य ४, युक्त च्यार श्वेतवारको (न्हाना घडुला) स्थापवा, तेमना गलामां सुकुमालिओ (सुंहाली)नां कांकण पहेराववां ते चारे उपर ४ जवारानां शरावलां मूकवां, अने ते श्वेत वारकोने गेवासूत्र वींटवुं, ते पछी शक्रस्तवे करीने चैत्यवन्दना करवी.

हवे अधिवासना लग्ननो समय नजीक आवतां श्रावके (नन्दावर्तपूजन पूर्वे प्रतिमाओने ऋद्धिवृद्धि सहित मींढल न बांध्यां होय तो) बांधीने पुष्प धूप चंदन वासे वासित एवा दशियावड अखंड वस्त्रे करीने सर्व बिंबोनुं मुखाच्छादन करवुं एटले भाइसाडी (कुंसुंभी लालवस्त्र) ओढाडी प्रतिमाओनां मुख ढांकवां, ते वस्त्र उपर चंदनना छांटा नांखवा, पुष्पो वेरवां, वासक्षेप करवो.

(लग्न अने नवमांशनो समय आवतां) आचार्ये ३ वार सूरिमंत्रथी अने बीजा साधुए " ॐ नमो खीरासवलद्धीणं। ॐ नमो महुआसवलद्धीणं " इत्यादि पूर्वोक्त मंत्रथी अथवा तो " ॐ नमः शान्तये हूँ क्ष्वूँ हूँ सः " आ अधिवासना मंत्रथी बिम्बोनी अधिवासना करवी, बादमां श्रावके अंजलिओ वडे शाल १, जव २, गोहुं ३, मग ४, वाल ५, चणा ६, चोला ७, ए सात धान्योने पुष्पवासे मिश्रित करी ते वडे प्रतिमाओने स्नान कराववुं, पुष्पारोप करवो अने धूप उखेववो.

ए बाद अविधवा चार अथवा अधिक स्त्रीओए पोंखणा करवा, ते स्त्रियाए यथाशक्ति सुवर्णादिकनुं दान करवुं, आ वखते फरीने प्रचुर मोदकादि नैवेद्य ढोवुं, ३६० कयाणकोनी पुडीओ ढोवी अने ते पछी श्रावके घृतनी आरती मंगलदीवो उतारवां अने पछी चैत्यवन्दना करवी, चैत्यवन्दनानी विधि नीचे प्रमाणे छे—

(मूलनायकनुं चैत्यवन्दन बोली नमुत्थुणं० कही मूलनायकनी स्तुति अने पछीनी बे स्तुतिओ एकंदर ३ स्तुतिओ कह्या पछी) सिद्धाणं बुद्धाणं कही अधिवासना देवीनो कायोत्सर्ग करवो, कायोत्सर्गमां १ लोगस्स गणवो, उपर अधिवासना देवीनी आ स्तुति कहेवी—

पातालमन्तरिक्ष, भवन वा या समाश्रिता नित्यम् । माऽत्राऽवतरतु जैनीं, प्रतिमामधिवासनादेवी ॥१॥

ए पछी श्रुतदेवता २, शान्तिदेवता ३, अंबा ४, क्षेत्रदेवता ५. शासनदेवता ६, सर्ववैयावृत्त्यकरो ७, अनुक्रमे एओना कायोत्सर्ग करवा अने स्तुतिओ कहेवी, शान्तिदेवतानी स्तुति आ प्रमाणे छे—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणः । शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥१॥

पछी आचार्ये बेमीने फरी नीचे प्रमाणे धारणा करवी—

"स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रसाददाः सन्तु, प्रसाद धिया कुर्वन्तु, अनुग्रहपरा भवन्तु, भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम्"

इति अधिवासनाविधि ।

अथ प्रतिष्ठा—अधिवासना रात्रिए अने प्रतिष्ठा प्रायः दिवसे थाय. जो लग्न श्रेष्ठ आवतुं होय तो अधिवासना पछीना कोइ लग्नमां अने तेना अभावे अधिवासना लग्नना ज अन्य नवमांशमां प्रतिष्ठा थइ शके छे.

प्रतिष्ठानो समय निकट आवतां प्रथम शांतिबलिक्षेप कर्या पछी चैत्यवंदन करवुं, सिद्धाणं बुद्धाणं० कही प्रतिष्ठादेवीनो कायोत्सर्ग करवो, कायोत्सर्गमां लोगस्स. चिन्तववो अने पारीने नीचेनी स्तुति कहेवी.

" यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । जिनबिम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥

ए पछी शासनदेवता २, क्षेत्रदेवता ३, समस्तवैयावृत्यकरोनो ४, ए कायोत्सर्ग करवा अने एमनी स्तुतिओ कहेवी, आव-कोए धूप उखेवीने प्रतिमाओ उपर ढांकेल वस्त्र दूर करवुं, लग्न समय नजीक आवतां कुंभक करी बिंबे वर्णन्यास करवो, ते आ प्रमाणे 'ह्रां' ललाटे, 'श्रीं' बे नेत्रो पर, 'ह्रीं' हृदय उपर, 'रैं' सर्व संधिस्थानोमां, 'क्ष्रौं' आसन उपर.

लग्नसमय आवतां प्रथम घृतपात्र प्रतिमानी आगल मूकी कालो सुरमो १, घृत २, मधु ३, साकर ४, आ चार पदार्थोथी तैयार करेल अंजन रूपानी वाटकीमां भरी राखेल होय तेमांथी सोनानी सली भरी ने वडे जिनबिम्बोनुं नेत्रोन्मीलन करवुं अने मस्तके अभिमंत्रित वासक्षेप करवो. प्रतिमाना जमणा काने चंदन चर्चवुं, आचार्य पोतानो जमणो हाथ प्रतिमाना जमणा काने अडकाडी सूरिमंत्र अने अन्य साधु प्रतिष्ठा मंत्रनो त्रण, पांच वा सात वार न्यास करे, आ बे मंत्रो पैकीना एक मंत्रे आचार्य चक्रमुद्रा करीने प्रतिमानो सर्वांग स्पर्श करे, प्रतिष्ठामंत्र आ छे—

"

" ॐ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिए ॐ ह्रीं स्वाहा।"

सामान्य साधुओने प्रतिष्ठानो एज मंत्र छे पछी प्रतिमानी आगल दधिपात्र मूकवु, आरीसो देखाडवो अने आचार्ये दृष्टि-रक्षार्थं, सौभाग्यार्थं अने स्थैर्यार्थं सौभाग्य १, सुरभि २, प्रवचन ३, अंजलि ४, गरुड ५, ए पांच मुद्राओ देखाडवी अने साथे " ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वग्गु वग्गु निवग्गु निवग्गु सुमिणे सोमणसे महु महुरे ॐ कविल ॐ कः क्षः स्वाहा" इत्यादि मंत्रोनो न्यास करवो, अने फरीथी स्त्रीओ पासे पोंखणा कराववा

स्थिर प्रतिमाने प्रथमथी ज डाबी तरफ नीचे चंदन तांदुल (अक्षत)नो स्वस्तिक तथा कुंभकारना चक्रनी माटी सहित पंचरत्नादि स्थापन करेल होइ अंजनप्रतिष्ठा पछी " ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा " आ मंत्रे तेनु स्थिरीकरण करवु, ए ज प्रमाणे चल प्रतिमाना नामागे नीचे पहेलेथीज समूलो डाभ अने वालुका स्थापेल होइ आ वखते 'ॐ जये श्री ह्रीं सुभद्रे नमः।" आ मंत्रनो न्यास करवो. पछी सर्व प्रतिमाओनी आगे 'पद्ममुद्रा' वडे आ प्रमाणे विज्ञप्ति करवी–

" इदं रत्नमयमासनमलकुर्वन्तु, इहोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु, हृष्टदृष्ट्या जिनाः स्वाहा।"

पछी नीचे लखेला मंत्रोच्चारपूर्वक आरकोए नवेसरथी पूजा करवी– 'ॐ हृम्ये गन्धान् प्रतीच्छन्तु स्वाहा " आ मंत्र भणी गन्धपूजा करवी, 'ॐ हृम्ये पुष्पाणि गृह्णन्तु स्वाहा" आ मंत्रे पुष्प पूजा करवी. " ॐ हृम्ये धूपं भजन्तु स्वाहा " आ मंत्रे धूप-पूजा करवी "ॐ हृम्ये सकलसत्त्वलोकमवलोकय भगवन्नवलोकय स्वाहा' आ मंत्र बोलीने प्रतिमाजी उपर पुष्पांजलिक्षेप करवो, पछी वस्त्र अलंकार आदिथी अने पुष्पोथी संपूर्ण पूजा करवी कांकरिआ, सुहाली, प्रमुख नवो नलि

ढोवो अने लूण–पाणीनी विधि करवा पूर्वक आरती तथा मंगलदीवो उतारवां अने अन्ते "ॐ हूम्थे भूतबलिं गृह्णन्तु स्वाहा" आ मंत्रथी भूतबलि नांखवो.

पछा संघनी साथे आचार्ये चैत्यवन्दना करवी, सिद्धाणं बुद्धाणं० सुधी कहीने पछी प्रतिष्ठादेवीनो कायोत्सर्ग करवो, कायोत्सर्गमां लोगस्स चिन्तववो अने पारी नीचेनी स्तुति कहेवी—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । जिनविम्बं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१॥

ए पछी अनुक्रमे श्रुतदेवता २, शान्तिदेवता २, क्षेत्रदेवता ४, शासनदेवता ५, समस्तवैयावृत्यकरोना कायोत्सर्गो करवा, अने एमनी स्तुतिओ कहेवी, छेल्ली स्तुति कह्या पछी नोकारपूर्वक नमुत्थुणं० कही शान्तिस्तव ("अजितशान्तिस्तव) भणवो अने उपर जयवीयराय० इत्यादि बोलवुं.

ते वाद अभिमंत्रित अक्षतोनी अंजलिओ भरीने मंगलगाथापाठपूर्वक चतुर्विध संघे अने आचार्ये अखंड अक्षतांजलिक्षेप करवो, नमोऽर्हत्सिद्धाचार्यो० इत्यादि बोलीने नीचेनी मंगलगाथाओ भणवी—

जह सिद्धाण पइट्ठा, तिलोअचूडामणिम्मि सिद्धिपए । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥१॥
जह सग्गस्स पइट्ठा, समत्थलोयस्स मज्झयारंमि । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥२॥
जह मेरुस्स पइट्ठा, दीवसमुद्दाण मज्झयारंमि । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥३॥
जह जंबुस्स पइट्ठा, समग्गदीवाण मज्झयारंमि । आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठ त्ति ॥४॥

जह लवणस्स पइट्ठा, समत्थउदहीण मज्झयारंमि । आचदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥५॥

जह सासया पइट्ठा, एसावि अ होउ सुपइट्ठा ॥६॥

धम्माधम्मागासत्थि-कायमइयस्स सव्वलोगस्स । जह सासया पइट्ठा, एसावि अ होउ सुपइट्ठा ॥६॥

पचण्ह वि सुपइट्ठा, परमिट्ठीण जहा सुए भणिआ-निययाअणाइनिहणा, तह एसा होउ सुपइट्ठा ॥७॥

अक्षताजलि अने श्रावकोए पुष्पाजलि नाख्या पछी, चैत्यवदना करवी अने ते पछी आचार्ये प्रवचन मुद्राए धर्मदेशना करवी इति प्रतिष्ठाविधि ॥

अथ यक्षयक्षिणी-प्रतिष्ठा—

"ॐ क्षूं नमः" आ मत्र ३-५-७ वार भणीने अंबिका क्षेत्रपालादि सर्व देवी देवोनी अधिवासना करवी "ॐ क्षों क्षूं नमो वीराय स्वाहा" आ देवोनी प्रतिष्ठानो मत्र छे, आ मंत्र बोलीने ३ वार वासक्षेप करी कोइ पण देवनी प्रतिष्ठा करवी

"ॐ ह्रीं क्षमो स्वाहा" आ मत्र देवीओनी प्रतिष्ठानो छे. आ मत्र भणीने कोई पण देवीने ३ वार वासक्षेप करी तेनी प्रतिष्ठा करवी

उपर प्रमाणे यक्ष-यक्षिणीओनी सामान्य प्रतिष्ठा करी ते प्रत्येकनी विशेष प्रतिष्ठा नीचेना क्रमथी करवी—

१ ॐ ह्रीं गोमुखयक्षः अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं चक्रेश्वरि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।

२ ॐ ह्रीं महायक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा । ॐ ह्रीं अजिते ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा ।

३ ॐ ह्रीँ त्रिमुखयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ह्रीँ दुरितारिदेवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
४ ॐ ,, ईश्वरयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, कालीदेवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
५ ॐ ,, तुम्बरुयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, महाकालीदेवी! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
६ ॐ ,, कुसुमयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, अच्युते देवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
७ ॐ ,, मातङ्गयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, शान्ता देवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
८ ॐ ,, विजययक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, ज्वालादेवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
९ ॐ ,, अजितयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, सुतारे देवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
१० ॐ ,, ब्रह्मयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, अशोकादेवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
११ ॐ ,, मनुजेश्वरयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, श्रीवत्सादेवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
१२ ॐ ,, कुमारयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, प्रचण्डादेवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
१३ ॐ ,, षण्मुखयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, विजयादेवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
१४ ॐ ,, पातालयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, अंकुशादेवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
१५ ॐ ,, किन्नरयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, कंदर्पादेवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
१६ ॐ ,, गरुडयक्ष! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।	ॐ ,, निर्वाणीदेवि! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।

१७ ॐ ह्रूँ गन्धर्वयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा। ॐ ह्रूँ अच्युतादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
१८ ॐ „ यक्षेन्द्र ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा। ॐ „ धारणीदेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
१९ ॐ „ कुवेरयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा। ॐ „ वैरोटयादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
२० ॐ „ वरुणयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा। ॐ „ वरदत्तादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
२१ ॐ „ भृकुटियक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा। ॐ „ गन्धारीदेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
२२ ॐ „ गोमेधयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा। ॐ „ अम्बादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
२३ ॐ „ पार्श्वयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा। ॐ „ पद्मावतीदेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।
२४ ॐ „ मातंगयक्ष ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा। ॐ „ सिद्धायिकादेवि ! अवतर २ तिष्ठ २ स्वाहा।

प्रत्येक यक्ष यक्षिणीनी अधिवासना-प्रतिष्ठा करीने सौभाग्य मुद्राए तेमनामां नीचे लखेल सौभाग्यमंत्रनो त्रण त्रण वार न्यास करवो " ॐ जये श्री ह्रूँ सुभद्रे ह्रैँ स्वाहा " यक्ष यक्षिणी क्षेत्रपाल माणिभद्रादि दरेक देव देवीने माटे उपर लखेल अधिवासना प्रतिष्ठा अने सौभाग्य मंत्र जाणवा.

—❀❀❀—

नवीन प्रतिष्ठित बिंब देवगृहे स्थापन विधि—

जो ते ज दिवसे प्रतिमा चैत्यमां प्रतिष्ठित करवी होय तो ते पछी नीचेनी विधि करवी—

जे स्थानमां प्रतिमा स्थापन करवी होय त्यां कुंभारना चाकनी माटी अने डाभ स्थापन करवो, उपर चन्दन केसरनो स्वस्तिक करवो अने ते उपर ३ आसन यंत्रो पैकीनुं कोइ पण यंत्र मूलनायकना आसने स्थापन करवुं, अथवा लखवुं, ते पछी सर्व दिशाओमां बलिबाकुला उछालवा.

मूलनायक स्थापन करवानुं आसन-स्थान (गादी) प्रथमथी ज द्वारना चोसठिया ५५ मा भागे बिंबनी दृष्टि आवे ते प्रमाणे निश्चित करावीने राखवुं, मुहूर्तनो समय नजीक आवतां—

"ॐ कूर्म निजपृष्ठे जिनबिम्बं धारय धारय स्वाहा ।"

आ मंत्रथी ७ वार आसन-स्थान अभिमंत्रवुं अने मुहूर्तना समयमां त्यां प्रतिमा स्थापन करीने—

"ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा"।

आ मंत्रनो प्रतिमा उपर ७ वार न्यास करीने प्रतिष्ठा-गुरुए प्रतिमा उपर वासक्षेप करवो, स्नात्रकार श्रावके चन्दन केसरथी पूजा करवी, धूप उखेववो, सुगंध पदार्थो चढाववां, मंगलदीवो करवो.

॥ संक्षिप्त प्रतिष्ठा विधि ॥

पूर्वोक्त प्रकारे अखण्डित अगोपागवालो सदाचारी श्रावक सुगन्धि पचामृतवडे प्रतिष्ठाप्य प्रतिमाने स्नान करावी, लग्न समयमा रूपानी वाटकीमा राखेल घृतमधुमां कालवेल काला सुरमामा सोनानी शली भरीने त्रण नोकार गणी प्रतिमाने अजन करी नेत्रोन्मीलन करे.

गादमा चन्दन केसर, फल नैवेद्यादि वडे संपूर्ण पूजा करे

अग अग्रपूजा कर्या पछी भावपूजारूप चैत्यवदन करे. पछी संघने पहेरामणी, प्रभावनादि दान करे, प्रतिष्ठा पछी ३।८।१० दिनस पर्यन्त विशेष उत्तम पूजा करवी.

॥ इति सक्षिप्त प्रतिष्ठा विधि ॥

卐 卐 卐

लवण – जलाऽऽरात्रिकविधि.

आरति अने मंगलदीवो अरिहन्त भगवन्तने आगे चेताववो, पासे अग्निपात्र राखवुं के जेमां लवण अने जल नाखवानुं छे, लवणना न्हाना गांगडा पुष्प अने नालवानो जलनो कलशियो पण पासे तैयार राखवो. आरति तथा मंगलदीवाने उतारतां पहेलां पुष्प चन्दनादिके पूजवां. पछी—

उवणेउ मंगलं वो, जिणाण मुहलालिजालसंवलिआ। तित्थपवत्तणसमए, तिअसमुक्का कुसुमवुट्ठी ॥१॥

आ गाथा भणीने प्रथम जिनने आगे त्रण वार सृष्टि क्रमे फेरवीने पुष्प वृष्टि करवी, पछी लवणनी कांकरीओ रकेबीमां लेइने—

उयह ! पडिभग्गपसरं, पयाहिणं मुणिवइं करेऊणं। पडइ सलोणत्ताण–लज्जिअं व लोणं हुअवहंमि ॥२॥

आ गाथा बोलतां भगवंत उपर लवणने त्रण वार प्रदक्षिणावर्ते फेरवीने अग्निमां नाखवुं, अने नालवाला कलशवडे प्रदक्षिणा मार्गे त्रण वार जलधारा देइने जलनो छांटो अग्निपात्रमां नाखवो. ए पछी सलगावेली आरती रकेबी के थालीमां मूकी ते वर्तन हाथमां लेइने—

मरगयमणिघडियविसाल–थालमाणिक्कमंडिअपईवं। ण्हवणयरकरुक्खित्तं, भमउ जिणारत्तिअं तुम्ह ॥३॥

ए गाथा बोलतां आरति उतारवी.

शिखर उपर कलश, तथा ध्वजादण्ड पण एज वखते चढाववो. प्रतिमा स्थापन कर्या पछी चैत्यवंदन करवुं, स्तवनने बदले अजितशान्तिस्तवनो पाठ कहेवो अने दिशाओमां बलिक्षेप करवो. प्रतिमानुं पक्वान्न–नैवेद्य–उत्तम फलादि वडे विशेष पूजा

करवु, प्रतिमा स्थिर कर्या पछी त्या लघुशाति १, बृहच्छाति २, अजितशान्ति ३, भयहरस्तव ४, उपसर्गहरस्तव ५, थुणिमो केवलिवत्थ ६ अने तिजयपहुत्त ७, आ स्तोत्रो गणवा

पछी बिंब आगे पडदो करी मुखोद्घाटन करवु अर्थात् संघने तबोल–प्रभावना–पहेरामणी आदि आपवु अने ए रीति साचव्या पछी पडदो दूर करीने सघे पण प्रतिमानी आगल फलादिनी भेट धरी नमस्कार करवो प्रतिष्ठा करावनारे मोटो मोदक ढोवो स्थापना–प्रतिष्ठा पछी १० दिन सुधी विशेष पूजा करवी. प्रति मास प्रतिष्ठानी तिथिए स्नात्र पूजा भणाववी अने प्रथम वर्षगांठना प्रसगे अट्ठाहि उत्सव करवो

एज प्रकारे मगलदीवो पण—

कोसबिसठियस्स व, पयाहिण कुणइ मउलिअपयावो। जिण! सोमदंसणे दिण–यरु व्व तुह मंगलपईवो ॥४॥

भामिज्जंतो सुरसुदरीहिं तुह नाह मगलपईवो। कणयायलस्स नज्जइ, भाणुव्व पयाहिण दिन्तो ॥५॥

आ गाथाओ बोलता प्रदक्षिणावर्त्ते त्रणवार फेरववो, मगलदीवो उतारीने बलतो ज मूकवो बुझाववो नहि, आरतीने बुझावी देवामा दोष नथी मगलदीवो अने आरती मुख्यवृत्तिए घी, गोल, कर्पूरथी करवी विशेष विशेष फलदायक होय छे, लवण, आरति आदि सर्व गच्छो अने परदर्शनिओना सप्रदाय प्रमाणे सृष्टिक्रम (दक्षिणावर्त भ्रमण) थी ज उताराय छे.

॥ इति लवणजलारात्रिकविधि ॥



कंकण-मोचनविधि

प्रथमेऽह्नि तृतीये वा, पञ्चमे सप्तमे शुभे। विद्वान् कङ्कण-मुक्त्यर्थं, विधिं कुर्यादधस्तनम् ॥१६४॥
पञ्चामृतैर्जिनस्नानं, विधाय प्रथमं ततः। अष्टोत्तरशतघटैः, शुद्धनीरेण पूरितैः ॥१६५॥
चक्रे देवेन्द्रराजैरि-त्यादि घोषपुरस्सरम्। संस्नप्य पूजयेत् प्राज्य-नैवेद्यमुपढौकयेत् ॥१६६॥
दिशासु बलिमुत्क्षिप्य, कृत्वा च जिनवन्दनम्। सौभाग्यमन्त्रमारोप्य, मोचयेत् कङ्कणं करात् ॥१६७॥

भा०टी०—प्रतिष्ठाना दिवसे अथवा त्रीजे, पांचमे वा सातमे शुभ दिवसे कंकण मोचन निमित्ते विद्वान् विधिकारे नीचेनी विधि करवी.

प्रथम पंचामृत वडे जिनने स्नपन करावीने, शुद्ध जले भरेला १०८ कलशोए "चक्रे देवेन्द्रराजैः" इत्यादि काव्य भणवा पूर्वक १०८ स्वच्छ जलना अभिषेक करावीने पूजा करवी, नैवेद्य ढोकवुं अने दिशाओमां दिक्पालोने बलिक्षेप करवो. देववन्दन करवुं, अने सौभाग्य मंत्रन्यास करीने नमस्कार मंत्र भणतां हाथथी कंकण छोडवुं.

कृत्यविधि—प्रतिष्ठा पछी आवश्यक कार्ये तेज दिवसे कंकण छोडवानी विधि करवी. अन्यथा त्रीजे पांचमे वा सातमे शुभ दिवसे कंकण छोडवां. प्रथम प्रतिमाने नीचे प्रमाणे पञ्चामृत स्नान कराववुं.

पञ्चामृत स्नान—

एक कलशामा शुद्ध ताजुं घृत लेइ " नमोऽर्हत् सिद्धाऽऽचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः " कही —

घृतमायुर्वृद्धिकरं भवति परं जैनगात्रसंपर्कात् । तद् भगवतोऽभिषेके, पातु घृतं घृतसमुद्रस्य ॥१॥

आ पद्य बोलीने प्रतिमाने घृतनो अभिषेक करवो, पछी दूधनो कलश लेइने ' नमोऽर्हत्० ' कही

दुग्धं दुग्धाम्भोधे-रुपाहृतं यत्पुरा सुरवरेन्द्रैः । तद् बलपुष्टिनिमित्तं, भवतु सतां भगवदभिषेकात् ॥२॥

ए पद्य कही दूधनो अभिषेक करवो, पछी दहिंनो कलश लेइ ' नमोऽर्हत्० ' कही—

दधि मंगलाय सततं, जिनाभिषेको पयोगतोऽप्यधिकम् ।
भवतु भविनां शिवा-ध्वनि दधिजलधेराहृतं त्रिदशैः ॥३॥

आ पद्य बोली दहिंनो अभिषेक करवो, पछी सेलडीना रसनो अथवा देशी साकरना पाणीनो कलश भरी 'नमोऽर्हत्' कही-

इक्षुरसोदादुपहृत, इक्षुरसः सुरवरैस्त्वदभिषेके । भवदवसदवथु भविनां, जनयतु नित्यं सदानन्दम् ॥४॥

ए बोलीने अभिषेक करवो, पछी सर्वौषधिना जलनो कलश लेइ ' नमोऽर्हत्० ' कही—

सर्वौषधीषु निवसत्यमृतमिदं सत्यमर्हदभिषेके । तत्सर्वौषधिमिश्रित, पञ्चामृतमस्तु वः सिद्धयै ॥५॥

आ पद्य बोली सर्वौषधिनो अभिषेक करवो, उपर प्रमाणे पंचामृत स्नान करावीने कर्पूरना चूर्णथी अथवा गन्ध-चूर्णवडे प्रतिमानी स्निग्धता दूर करी शुद्ध जले भरेला १०८ कलशोवडे अभिषेक करवा, प्रत्येक अभिषेके—

चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-र्नृत्यन्तीभिः सुरीभिर्ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः।
कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै-र्बिम्बं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले॥१॥

ए काव्य बोलवुं, जिन आगे फल नैवेद्य ढोवुं, अभिषेको पूर्ण थया पछी अंग लूंछी प्रतिमानी पूजा करवी, दिशाओमां भूत बलिक्षेप करवो.

पछी ईर्यावही० पडिक्कमीने चैत्यवंदन करवुं, चैत्यवंदन मूलनायकनुं बोलवुं, अने स्तुति पण मूलनायकनी कहेवी, तेना अभावे चैत्यवंदन अने स्तुतिओ नीचे लखेलां बोलवां—

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्वचिन्तामणीयते। ह्रीं धरणेन्द्रवैरुट्या-पद्मादेवीयुताय ते ॥ १ ॥
शान्ति-तुष्टि-महापुष्टि-धृतिकीर्तिविधायिने। ॐ ह्रीं द्विड्व्यालवेताल-सर्वाधिव्याधिनाशिने ॥२॥
जयाऽजिताख्याविजया-ऽख्याऽपराजितयान्विते। दिशांपालैर्ग्रहैर्यक्षै-र्विद्यादेवीभिरन्वितः ॥३॥
ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथताम्। चतुःषष्टिसुरेन्द्रास्ते, भासन्ते छत्रचामरैः ॥४॥
श्रीशंखेश्वरमण्डन! पार्श्वजिन! प्रणतकल्पतरुकल्प। चूरय दुष्टव्रातं, पूरय मे वाञ्छितं नाथ! ॥५॥

नमुत्थुणं० अरिहंत चेईआणं, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्ध्यानतो नरैः। अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगस्स०, सव्वलोए अरिहंत०, वन्दणव०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदङ्घ्रीश्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुक्खरवरदीवड्ढे०, सुअस्स०, वन्दण०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

नवतत्त्वयुतात्रिपदीश्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धाण बुद्धाणं०, कंकणछोटनार्थ-प्रतिष्ठादेवता विसर्जनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थ०, १ लोगस्स०, सागरवरगंभीरा०, नमो०, स्तुतिः—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दति । जिनबिंब सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

श्रुतदेवतायै करेमिका०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

वद वदति न वाग्वादिनि ! भगवति ! कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः ।
रंगत्तरंगमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

शान्तिदेवतायै करेमि का०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशांतिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुति—

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥७॥

शासनदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो० नमो०, स्तुतिः—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्धयर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥८॥

अम्बादेव्यै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥९॥

अच्छुप्तायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्याऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥१०॥

समस्तवेआवच्चगराणं, संति०, करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥११॥

१ नवकार प्रकट कही 'नमुत्थुणं०, जावंति चेइआइ०, नमो०, स्तवनः—

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरिअउवज्झाय । वरसव्वसाहुमुणिसंघ-धम्मतित्थप्पवयणस्स ॥१॥
सप्पणवं नमो तह भगवईइ, सुयदेवयाए सुहयाए । सिवसंतिदेवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥
इंदागणिजमनेरइअ-वरुणवाउकुबेरईसाणा । बंभो नागुत्ति दसण्ह-मवि अ सुदिसाण पालाणं ॥३॥
सोमयमवरुणवेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं । तह लोगपालयाणं, सूराइगहाण य नवण्हं ॥४॥
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुट्ठाणं । सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणिअं ॥५॥

जयवीयराय कहेवा पछी सौभाग्य मुद्रावडे—

“ॐ अवतर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वग्गु वग्गु निवग्गु निवग्गु सुमणे सोमणसे महु महुरे ॐ कविल ॐ क क्षः स्वाहा ।'

सौभाग्यमुद्राए आ मंत्रनो बिंब उपर न्यास करी तेना हाथेथी सरसव पोटली, आरेठानी माला, मींढलनुं कंकण, विगेरे उतारी पोताना प्रिय जनना हाथमां अथवा सधवा स्त्रीना हाथमां देवु

कंकण छोटन विधि (प्रकारान्तरेण)—

बिम्बस्थापना सम्बन्धी कार्य पूरु कर्यां पछी श्रीसंघे जन्माभिषेक कलश भणनादिक विधिपूर्वक पंचामृत स्नात्र करवुं, नैवेद्यफलादि चढाववा, आगे अष्टमंगलनो आलेख करवो, स्नात्र पूर्ण थया पछी 'इरियावहीं०' पडिक्कमीने गुरु साथे देववंदन करवुं. चैत्यवंदन तथा स्तुति मूलनायकनी कहेवी, याद न होय तो चैत्यवंदन अने स्तुतिओ नन्दी क्रियानी कहेवी, चोथो काउसग्ग शान्तिनाथ आराधना निमित्ते 'सागरवरगंभीरा' सुधीनो करवो, ने पारीने शान्तिनाथनी स्तुति कहेवी. बीजा पण काउस्सग्गो नन्दीमां कराय छे तेज प्रमाणे करवा, अने स्तुतिओ पण नन्दीनी कहेवी. स्तवनने स्थाने शान्ति (अजितशान्ति) स्तव कही 'जयवीयराय०' कहेवा.

ए पछी खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्! क्षेत्रदेवता आराधनार्थं काउस्सग्ग करुं? इच्छं, क्षेत्रदेवता आराधनार्थं करेमि काउस्सग्गं अन्नत्थ०' १ लोगस्स सागरवरगंभीरा सुधीनो काउस्सग्ग करी पारी उपर १ नोकार प्रकट पूरो कहेवो

वली खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! क्षुद्रोपद्रव उवसमावणी काउस्सग्ग करुं ? इच्छं, क्षुद्रोपद्रव उवसमावणी करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०, १ नोकार, १ उवस्सग्गहर, १ लोगस्स सागरवर गंभीरा सुधी, आ त्रणनो काउस्सग्ग करी पारी उपर १ नवकार प्रकट कहेवो.

आजी चार खमासण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन् ! कंकणछोटनार्थं काउस्सग्ग करुं ? इच्छं, कंकणछोटनार्थं करेमि काउस्सग्गं, अन्नत्थ०, १ नवकारनो काउसग्ग करवो, पारी १ नवकार प्रकट कहेवो.

ए पछी सौभाग्य मंत्र भणी कंकण छोडवुं, फलादिनी साथे सधवा स्त्रीने खोले मेलवुं अने विशेष प्रकारे गुरुभक्ति अने संघभक्ति करवी.[1]

॥ इति कंकण छोटण विधि ॥

[1] आ कंकण छोटन विधि पंदरमा सैकामां लखायेल एक प्राचीन पत्रना आधारे लखी छे.

—※※※—

विसर्जनम्[1]

नन्द्यावर्तस्थितं देव-गणं संपूज्य सक्रमम्। विसर्जयेत् सुरानन्यान्, दिशापालादिकानपि ॥१६८॥

भा०टी०—नन्द्यावर्त स्थित देवसमुदायने प्रथमना ज क्रम प्रमाणे वासादि वडे पूजीने विसर्जन करवा, दिक्पालादि बीजा पण जे जे देवो आमन्त्रित करेला होय ते सर्वनु पूजा सत्कारपूर्वक विसर्जन करवुं.

विसर्जन विधि—

नन्द्यावर्तनो पाटलो पूर्वक्रमथी वास चन्दनादि वडे पूजीने "ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।" आ मंत्र बोली अंजलि मुद्राए नन्द्यावर्तनुं विसर्जन करवुं, एज रीते "ॐ विसर विसर प्रतिष्ठा देवते स्वाहा"। कही ग्रह दिक्पाल आदिना पाटलाओने वासक्षेप करी—

"देवा देवार्चनार्थं ये, पुराऽऽहूताश्चतुर्विधाः। ते विधायार्हतां पूजां, यान्तु सर्वे यथागतम् ॥१॥"

आ श्लोकथी सर्व देवोनुं विसर्जननीमुद्राए विसर्जन करवु, उपर बृहच्छांतिनो पाठ कहेवो, अने संघ भक्ति करवी[1]

१ कंकण मोचननी क्रिया जो प्रतिष्ठाना दिवसे ज करवानी होय तो विसर्जन विधि कंकण मोचन पछी करावची, पण कंकण मोचन त्रीजे पाचमे के सातमे दिवसे करवानु होय तो विसर्जन तेज दिवसे अथवा बीजे दिवसे अगाउ करी देवु

॥ प्रतिष्ठाविधिबीजकानि ॥

। श्रीचन्द्रप्रतिष्ठापद्धतिबीजककाव्यानि ।

भूतानां बलिदानमग्रिमजिनस्नानं तदग्रे स्वयं, चैत्यानामथ वंदनं स्तुतिगणः स्तोत्रं करे मुद्रिका ।
स्वस्य स्नात्रकृतां च शुद्धसकलीसम्यक् शुचिप्रक्रिया, धूपाम्भःसहितोऽभिमंत्रितबलिः पश्चाच्च पुष्पांजलिः ॥१॥
मुद्रा मध्यांगुलीभ्यामतिकुपितदृशा वामहस्ताम्भसोच्चै-र्बिम्बस्याच्छोटनं सत्सतिलककुसुमं मुद्गरश्चाक्षपात्रं ।
मुद्राभिर्वज्रताक्ष्र्यादिभिरथकवचं जैनबिंबस्य सम्यग्-दिग्बन्धः सप्तधान्यं जिनवपुरुपरि क्षिप्यते तत्क्षणं च ॥२॥
कुम्भानामभिमंत्रणं जिनपतेः सन्मुद्रया मंत्र्यते, नीरं गन्धमहौषधी मलयजं पुष्पाणि धूपस्ततः ।
अंगुल्यामथ पंचरत्नरचना स्नानं ततः कांचनं, पुष्पारोपणधूपदानमसकृत् स्नात्रेषु तेष्वंतरा ॥३॥
रत्नस्नानकषायमज्जनविधिर्मृत्पंचगव्ये ततः, सिद्धौषध्यथ मूलिका तदनु च स्पष्टाष्टवर्गद्वयम् ।
मुक्ताशुक्तिसुमुद्रया गुरुरथोत्थाय प्रतिष्ठोचितं, मंत्रैर्दैवतमाह्वयेद् दशदिशामीशाँश्च पुष्पांजलिः ॥४॥
सर्वौषध्यथ सूरिहस्तकलनाद् दृग्दोषरक्षोन्मृजा, रक्षापुट्टलिका ततश्च तिलकं विज्ञप्तिकाऽथांजलिः ।
अर्घोऽर्हत्यथ दिग्धवेषु कुसुमस्नानं ततः स्नानिका, वासश्चन्दनकुंकुमे मुकुरदृक् तीर्थाम्बु कर्पूरवत् ॥५॥
निक्षेप्यः कुसुमांजलिर्जलघटस्नानं शतं साष्टकं, मंत्रावासितचन्दनेन वपुषो जैनस्य चालेपनम् ।
वामस्पृष्टकरेण वाससुमनो धूपाः सुरभ्यम्बुजा-अल्यं स्यात् करलेपकंकणमथो पंचाङ्गसंस्पर्शनम् ॥६॥

धूपश्च परमेष्ठी च, जिनाह्वान पुनस्ततः, उपविश्य निषद्याया, नन्द्यावर्त्तस्य पूजनम् ॥७॥

इति श्री चन्द्रसूरीयप्रतिष्ठापद्धतिबीजक नन्द्यावर्तपूजान्तम् ॥

परंपरागताः प्रतिष्ठाबीजकगाथाः—

घोसाविज्ज अमारिं, रन्ना संघस्स तह य वाहरणं । चिण्णावियसंमाणं, कुज्जा खेत्तस्स सुद्धिं च ॥१॥
तह य दिसिपालठवण, तक्किरियंगाण संनिहाणं च । दुविहसुई पोसहिआ, वेईए ठविज्ज जिणबिंबं ॥२॥
नवरं सुमुहुत्तंमि, पुव्वुत्तरदिसिमुहं सउणपुव्वं । वज्जंतेसु चउव्विह—मंगलतूरेसु पउरेसु ॥३॥
तो सव्वसंघसहिओ, ठवणायरियं ठवित्तु पडिमपुरो । देवे वंदइ सूरी, परिहियनिरुवमसुइवत्थो ॥४॥
संतिसुयदेवयाणं, करेइ उस्सग्ग थुइपयाण च । सहिरण्णदाहिणकरो, सयलीकरणं तओ कुज्जा ॥५॥
तो सुद्धोभयपक्खा, दक्खा खेयन्नुया निहियरक्खा । ण्हवणगरा उ खिवन्ति, दिसासु सव्वासु सिद्धबलिं ॥६॥
तयणतरं च मुद्दिय—कलसचउक्केण ते ण्हवंति जिणो(णं) । पचरयणोदगेणं, कसायसलिलेण तत्तो य ॥७॥
मट्टियजलेणं ता अट्ठवग्गसव्वोसहिजलेहिं च । गंधजलेणं तह पवरवासमलिलेण य ण्हवन्ति ॥८॥
चंदणजलेण कुंकुमजलकुंभेहिं च तित्थसलिलेणं । सुद्धकलसेहिं पच्छा, गुरुणा अभिमंतिएहिं तहा ॥९॥
ण्हाणाण सव्वाणंति, मलधारापुप्फगंधधूवाई । दायव्वमंतराले, जावंतिमकलसपत्थावो ॥१०॥
एवं ण्हविए बिंबे, नाणकलानाससमायरिज्ज गुरू । तो सरससुयंधेण लिंपिज्जा चन्दणद्वेण ॥११॥

कुसुमाइं सुगंधाइं, आरोविना ठविज्ज बिंबपुरो। नन्दावत्तयवट्टं, पूइज्जइ चारुदव्वेहिं ॥१२॥
चन्दण च्छडुब्भडेणं, वत्थेणं छायए तओ पट्टं। अह पडिसरमारोवे, जिणबिंबे रिद्धिविद्धिजुयं ॥१३॥
तो सरससुगंधाइं, फलाइं पुरओ ठविज्ज बिंबस्स। जंबीरबीजपूराइयाइं तो दिज्ज गंधाइं ॥१४॥
मुद्दामंतन्नासं, बिम्बे हत्थंमि कंकणनिवेसं। मंतेण धारणविहिं, करिज्ज बिम्बस्स तो पुरओ ॥१५॥
बहुविह पक्कन्नाणं, ठवणा वरवत्थ[1]गंधपुडियाणं। वरवंजणाण य तहा, जाइफलाणं च सविसेसं ॥१६॥
सागिवखू वरसोलयखंडाईणं वगेसहीणं च। संपुन्नबलीइ तहा, ठवणं पुरओ जिणिंदस्स ॥१७॥
घयगुडदीवो सुकुमारियाजुओ चउ जवारया दिसिसु। बिंबपुरओ ठवेज्जा, भूयाण बलिं तओ दिज्जा ॥१८॥
आरत्तियमंगलदीवयं च उत्तारिऊण जिणनाहं। वंदिज्जऽहिवासणदेवयाए उस्सग्ग थुइदाणं ॥१९॥
अह जिणपंचंगेसु, ठावेइ गुरू थिरीकरणमंतं। वाराउ तिन्नि पंच य, सत्त व अन्नंतमपमत्तो ॥२०॥
मयणहलं आरोवइ, अहिवासणमंतनासमवि कुणइ। झायइ य तयं बिंबं, सजियं व जहा फुडं होइ ॥२१॥
एवमभिवासियं तं, बिम्बं छाइज्ज सदसवत्थेण। चंदणच्छडुब्भडेणं, तदुवरि पुप्फाइं खिम्विविज्जा ॥२२॥
ण्हावेज्ज सत्तधन्नेण, तयणु जीवंत उभयपक्खाहिं। नारीहिं चउहिं समलंकियाहिं विज्जंतनाहाहिं ॥२३॥
पडिपुण्णचत्तुसुत्तेण, वेढणं चउगुणं च काऊण। ओमिणणं कारेज्जा, मुद्दाहिं हिरण्णदाणजुयं ॥२४॥

[1] "वरवेही" इति पाठान्तरम्।

ता वन्देज्जा देवे, पइट्ठदेवीए काउं उस्सग्ग। देज्ज थुइं तीए च्चिय, उवेज्ज पुरओ य वयपत्तं ॥२५॥
सोवन्नवट्टियाए, कुज्जा महु-मकराहिं भरियाए। कणगसलागाए नित्तनयण-उम्मीलण लग्गे ॥२६॥
सम्मं पइट्ठमंतेण, अगसंवीसु अक्खरन्नासं। कुणमाणो एगमणो, सूरी वासे खिवेज्ज तहा ॥२७॥
पुप्फक्खयजलीहिं, तो गुरुणा घोसण ससंघेण: थेज्जत्थं कायव्व, मंगलसद्देहिं विम्बस्स ॥२८॥
जह सिद्धि मेरु कुलपव्वयाण पंचत्थिकाय-कालाणं। इह सासया पइट्ठा, सुपइट्ठा होउ तह एसा ॥२९॥
जह दीव-सिन्धु-ससहर-जिणवर-सुरवास-वासखेत्ताण। इह सासया पइट्ठा, सुपइट्ठा होउ तह एसा ॥३०॥
एत्थ सुहभावरूवं, अक्खयखेवे कयमि बिम्बस्स। सविसेसं पुण पूया, किच्चा चिइवंदणा य तहा ॥३१॥
मुहउग्घाडण समणंतरं च पूया य समणसंघस्स। फासुयवयगुडगोरस-वत्तगमाईहिं कायव्वा ॥३२॥
सोहणदिणे य सोहग्ग-मंतविन्नासपुव्वयमवस्स। मयणहलकंकणं-करयलाओ बिम्बस्स अवणिज्जा ॥३३॥
जिणबिम्बस्स य निमए, नियनिय ठाणेसु मन्नमुद्दाओ। गुरुणा उवउत्तेणं, पउंजियव्वाउ ताउ इमा ॥३४॥
जिणमुद्द कलसपरमेट्ठि-अंग-अंजलि-तहासणे चक्का। सुरभी पवयण गरुडा, सोहग्ग कयंजलि चेव ॥३५॥
जिणमुद्दाए चउकलसठावणं तह करेह थिरकरण। अहिवाससमंतनासणं, आसणमुद्दाए अन्ने उ ॥३६॥
कलसाए कलसन्हवणं, परमेट्ठीओ उ आहवणमंतं। अंगाए समालभणं, अंजलिणा पुप्फरुहणाइं ॥३७॥
आसणयाए पट्टस्स पूयणं अगफुसण चक्काए। सुरभीए अमयमुत्ती, पवयणमुद्दाए पडिबोहो ॥३८॥

गरुडाए दुट्ठरक्खा, सोहग्गाए य मंतसोहग्गं। तह अंजलीए देसण मुद्दाहिं कुणइ कज्जाइं ॥३९॥
इति प्रतिष्ठाविधि बीजकगाथाः।

अथ ध्वजदण्डारोपविधिबीजकम्।

घोसिज्जए अमारी, दीणाणाहाण दिज्जए दाणं। पउणीकिज्जइ वंसो, धयजोगो सरल सुसिणिद्धो ॥४०॥
वट्टंतचारुपघो, अपोच्चडो कीडएहिं अक्खद्धो। अदड्ढो वण्णड्ढो, अणुड्ढसुक्को पमाणजुओ ॥४१॥
काऊण मूलपडिमा-ण्हाणं चाउदिसं च भूसुद्धिं। दिसिदेवयआह्वणं, वंसस्स विलेवणं तह य ॥४२॥
अहिवासियकुसुमारोवणं च अहिवासणं च वंसस्स। मयणफलरिद्धिविद्धि-सिद्धत्थारोवणं चेव ॥४३॥
धूवुक्खेवं मुद्दानासं, चउसुन्दरीहिं ओमिणणं। अहिवासणं च सम्मं, महद्धयस्सिदुधवलस्स ॥४४॥
चाउद्दिसिं जयारय, फलोहलीढोयणं च वंसपुरो। आरत्तियावयारणमह विहिणा देववंदणयं ॥४५॥
बलिसत्तधन्नफलवास-कुसुमसकसायवत्थुनिव्वहेणं। अहिवासणं च तत्तो, सिहरे तिपयाहिणीकरणं ॥४६॥
कुसुमंजलिपाडणपुरस्सरं च ण्हवणं च मूलकलसस्स। खित्तदसद्धामलरयण धयहरे इट्ठसमयंमि ॥४७॥
सुपइट्ठपइठामंतखित्तवासस्स तयणु वंसस्स। ठवणं खिवणं च तओ, फलोहलीभूरिभक्खाणं ॥४८॥
तत्तो उज्जुगईए, धयस्स परिमोयणं सजयसद्दं। पडिमाए दाहिणकरे, महद्धयस्सावि बंधणयं ॥४९॥
विसमदिणे ओमुयणं, जहसत्तीए य संघदाणं च। इय सत्थुत्तविहीए कुणइ धयारोवणं धन्ना ॥५०॥

इति ध्वजारोपणविधिगाथाः कथारत्नकोषात्।

अथ जिनप्रभसूरि प्रतिष्ठाविधि बीजकम्—

पुन्न पडिमण्हवण, चिइ उस्सग्ग थुइ अण्ण्हवणयारेसु । रक्खा कुसुमांजलि तज्जणि पूय च तिलयं वा ॥५१॥
मोरगारमुवरवयधाऌ, वज्जं गरुडो वली ॐ ह्रीँ श्रीँ मसतेणं । कयं दिसिबंधो च्चिय, पविसवणं सत्तधन्नस्स ॥५२॥
कलसाहिमंतण सव्वोसहि चंदण चच्चि बिंब मंतेण । पचरयणस्स गंठी, परमेट्ठीपचगं ण्हवण ॥५३॥
पढम हिरण्णसहं १ पच-रयण २ सकसाय ३ मट्टिया ४ ण्हवण । दुब्भोदयमीस पंचगव्व ५ ण्हवणं च पचमय ॥५४॥
सहदेवाईमव्वो-सहीण ६ वग्गो य मूलिया ७ वग्गो । पढमट्ठ वग्ग ८ वीयट्ठ-वग्ग ९ ण्हवणं तहा नवमं ॥५५॥
जिणदिसिपालाहवण, कुसुमंजलि सव्वओसहीण्हवणं १० । दाहिणकरपरिसेणं, जिणमंतो सूरिसवोट्ठलिया ॥५६॥
तिलयंजलिमुद्दाए, विन्नत्ती हेमभायणत्थग्घो । पुण दिसिपालाहवणं, परमेट्ठीगरुडमुद्दाए ॥५७॥
कुसुमजल ११ गंध १२ ण्हाणिय-वासेहिं १३ चंदणेण १४ घुसिणेण १५ । पनरसण्हाणेसु कएसु, दप्पणदंसण पुरओ ॥५८॥
तित्थोदएण ण्हाणं १६ कप्पूरेण १७ च पुप्फअंजलिया । अट्ठारसम ण्हाण, सुद्धघडट्ठुत्तर १८ सएण ॥५९॥
सव्वनिलेवण सूरी, पुप्फाइधूववासमयणफल । सुरहीपउमा अंजलि-मुद्दाओ हत्थलेवो य ॥६०॥
अहिवासणमंतेण, करण तेणेव चक्कमुद्दाए । पचगकाम पुण त्रिण-आहवणं नंदपूया य ॥६१॥
सत्तसरावा चदणचच्चियकलसा मततुणो चउरो । घयगुलदीवा चउरो, चउकलसा नन्दावत्तस्स ॥६२॥
सक्कत्थय अहिवासण-समये छाएहिं माइसाडीए । सूरिमंताहिवासण-ण्हवणंजलिसत्तवारस्स ॥६३॥

पुंखणय कणयदाणं, बलि लइडुयमाइ पुडिय आरतियं । चिइ-अहिवासणदेवय-थुइ धारण सागयाईहि ॥६४॥

अधिवासनाधिकारः समासः ।

अथ प्रतिष्ठाधिकारः—

संतिबलि-चिइ-पइट्ठा-उस्सग्गो थीयमायणं निच्चे । वन्न सिरि वास कन्ने, मंतो सव्वंगफास चक्केणं ॥६५॥
दहिमंड-मंत-मुद्दा, पुंखणं पुप्फंजलीउ मंतेणं । भूयबलि-लवण-रत्तिय, चिइ अक्खय धम्मकहमहिमा ॥६६॥
तइय-पण-सत्तमदिणे, जिणबलि भूयबलि वंदिउं देवे । कंकणमोयणहेउं, पइट्ठउस्सग्ग मंत नसे ॥६७॥
काउं पूयविसग्गं, नंदावत्तस्स कंकणं छोडे । पंचपरमेट्ठिपुव्वं, मंगलगाहाउ पढमाणो ॥६८॥

इति जिनप्रभसूरिकृतप्रतिष्ठाविधिबीजकम् ॥

अथ स्थापनाचार्यप्रतिष्ठाविधिः—

चुक्खंसुयकरचरणो, आरोवियसयलिकरणसुहविज्जो । गरुडाइ दलियविग्घो, मलयजघुसिणेण लिंपित्ता ॥
अक्खं फलिहमणिं वा, सुद्धकट्ठमयं व ठावणायरियं । काऊण पंचपरमिट्ठि-टिक्कए चंदणरसेणं ॥
मंतेण गणहराणं, अहवा वि हु वद्धमाणविज्जाए । काऊण सत्तखुत्तो, वासक्खेवं पइट्ठिज्जा ॥

॥ इति स्थापनाचार्यप्रतिष्ठाविधि ॥

चैत्यप्रतिष्ठाविधि—

चैत्यं जिनगृहं तत्त्र, विधिना सुप्रतिष्ठितम् । प्रतिमास्थपनार्हं स्यात् तस्माच्चैत्यं प्रतिष्ठयेत् ॥१६९॥

भा०टी०—चैत्यनो अर्थ अहिया 'जिनगृह' समजवानो छे, ते चैत्य विधिपूर्वक प्रतिष्ठित थयेल होय तो ज प्रतिमा स्थापनने योग्य थाय छे, माटे चैत्यनी प्रतिष्ठा करवी जोइये.

चैत्य प्रतिष्ठा बिम्बप्रतिष्ठा योग्य लग्नमा करवी ते बिम्बप्रतिष्ठा पछी तरत, अथवा थोडा दिवस, पक्ष, मास, वर्ष पछी पण करी शकाय, उक्त करवी श्रेष्ठ लग्नमा अने ते प्रसंगे संघामंत्रण, वेदीरचना, नंद्यावर्त पूजन आदि बधी रीतिओ यथाशक्ति करवी

आज काल बिम्बप्रतिष्ठाप्रसंगे अथवा बिंबस्थापनाना समयमा ज प्रायः चैत्यप्रतिष्ठा करवामा आवे छे, एम करवाथी वेदीरचना आदि चैत्यप्रतिष्ठाना घणा खरा विधिकार्यो बिम्ब प्रतिष्ठा निमित्ते अथवा ध्वजदंड प्रतिष्ठा निमित्ते मंडपमा थइ जाय छे. तेथी आजकाल चैत्य प्रतिष्ठा निमित्ते नीचे प्रमाणे विशेष विधि ज वधारे करवी पडे छे

सर्व प्रथम शान्तिमंत्रथी मंत्रीने चैत्यने फरता २४ सूत्रना तातणा वींटीने चैत्यनी रक्षा करवी

ते पछी हाथमा पुष्पाञ्जलि लेई—

अभिनवसुगंधिविकसित-पुष्पौघभृता सुगंधधूपाढ्या । चैत्योपरि निपतन्ती सुखानि पुष्पांजलिः कुरुताम् ॥१॥

आ काव्य बोली चैत्य उपर पुष्पाञ्जलि नाखवी, प्रतिष्ठाचार्ये बे मध्यमा आगलीओ उंची करी क्रूरदृष्टिए तर्जनी मुद्रा देखाडवी. श्रावके डाबा हाथमा जल लेइ चैत्य उपर आछोटवु, चैत्यने तिलक करवो, पुष्प चढाववा धूप उखेववो.

प्रतिष्ठागुरुए चैत्यने मुद्गरमुद्रा देखाडवी, अने—

" ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा "

आ मंत्रनो न्यास करी चैत्यनी रक्षा करवी, ए पछी श्रावके प्रथम सात धान्यनी पसली वडे चैत्यनो अभिषेक करवो.

पछी जिनाभिषेकना जल वडे अथवा स्नात्र जल वडे चैत्यनो अभिषेक करवो, उपर शुद्ध जले चैत्यनुं शिखराग्र पखाली लुंछी चन्दननो तिलक करवो. ते ज समये पंचरत्ननी पोटली अने मींढलनुं कांकण बांधवुं, उपर वस्त्राच्छादन करवुं. ते उपर केसर चन्दनादि सुगन्ध पदार्थ छांटवा, फल पुष्प चढाववां, ज्यारे प्रतिष्ठानुं लग्न आवे त्यारे—

" ॐ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिते ॐ ह्रीँ स्वाहा ।"

आ प्रतिष्ठा मंत्र ७ वार भणीने चैत्यना मस्तके वासक्षेप करवो.

ते पछी वास्तुदेवतानो मंत्र भणी उंबरा उपर उत्तरंग उपर अने शिखर उपर ७। ७। वार वासक्षेप करवो. वास्तुदेवता मंत्र नीचे प्रमाणे छे.

" ॐ ह्रीँ श्रीँ क्ष्माँ क्ष्मूँ ह्राँ ह्रीँ भगवति वास्तुदेवते ललललल क्षिक्षिक्षिक्षिक्षि इह चैत्ये अवतर २ तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा ।"

उपरना मंत्रे ७ वार वासक्षेप प्रथम मंत्रीने पछी मंत्रोच्चारणपूर्वक प्रत्येक स्थले ७-७ वार वासक्षेप करवो. चैत्यने प्रतिष्ठित कर्या पछी ते उपर विधान करेल कलश तथा ध्वजदंड तात्कालिक विधि करीने चढाववां.

जो कलशारोपण, ध्वज दंडारोपण अने चैत्यप्रतिष्ठा ए बधुं ते प्रसगे ज थयु होय तो 'ध्वज दंड प्रतिष्ठाविधि'ना अन्तमां जणावेल स्नात्र चैत्यवंदनादि विधि करीने ए बधाना कंकणो सर्षप पोटली अने चैत्याच्छादनवस्त्र ए बधां साथे ज ते दिवसे अथवा त्रीजे पांचमे सातमे दिवसे चन्द्रबल देखीने छोडवा, कदापि एकली चैत्यप्रतिष्ठा ज करी होय तो उक्त विधिथी ज तेनुं आच्छादन कंकण आदि दूर करवा

एकला चैत्यनी प्रतिष्ठा करवानो ज प्रसंग होय तो चैत्यने फरती वेदी रचना करवी तथा नन्द्यावर्त स्थापना, कुंभ स्थापना आदि कार्यो चैत्यमां ज करवा

१० कलशप्रतिष्ठा—

कलशो जिनगेहानां शिरोभूषा निगद्यते। तमाश्मं स्वर्णजं वापि, विधिना प्रतिरोपयेत् ॥१७०॥

भा०टी०—कलश जिनचैत्यना मस्तकनु भूषण कहेवाय छे, ते पाषाणनो होय अथवा सुवर्णनो पण विधिपूर्वक ज तेने शिखर उपर चढाववो जोइये प्रथम भूमिशुद्धि करी सुगन्ध जल पुष्पादि छांटी तेनो सत्कार करवो, कलश राखवाने वेदिका बनाववी तेमां प्रथमथी ज सुवर्ण रूप्य ताम्र मौक्तिक प्रवाल रूप पंचरत्न अने कुंभकार चक्रनी माटीनो न्यास करवो. उपर कलश स्थापन करवो मधवा स्त्रीओ पासे अभिषेकनी औषधिओ वटाववी

पछी पवित्र जलाशयथी लावेल जल वडे वेदीआगे स्थापित पूर्वप्रतिष्ठित प्रतिमानु स्नात्र करवु अने बलि बाकुलना भाजनमां पुष्प, वास, मेवो, वगेरे नाखीने—

"ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा"

आ मंत्र ७ वार भणीने बलिमंत्री पूर्वादि दिशासंमुख उभा रही—

ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१

ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥२

ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥३

ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकाय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥४

ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥५

ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥६

ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥७

ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥८

ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठाविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥९

ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकाय इह कलश प्रातष्ठा विधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१०

आ मंत्रो पैकीनो १-१ मंत्र बोली एक २ दिशामां १ जल चुलुक २ चन्दन केसरनो छांटो, ३ पुष्पक्षेप ४ सप्तधान्य बलि निक्षेप करवो.

ए पछी प्रतिष्ठागुरुए प्रथम नीचेना मंत्रे पोतानुं सकलीकरण करवुं.

ॐ नमो अरिहताणं-हृदयमा

ॐ नमो सिद्धाणं-माथामा

ॐ नमो आयरिआण-शिखाउपर

ॐ नमो उवज्झायाण-कवच-सर्वाङ्ग सवरण

ॐ नमो लोए सव्वसाहूण-अस्त्र-सकली करण करीने नीचेनी—

"ॐ नमो अरिहंताण ॐ नमो सिद्धाणं. ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवज्झायाणं. ॐ नमो लोए-सव्वसाहूण. ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताण, ॐ नमो विज्जाहराणं ॐ नमो आगासगामीणं ॐ कः क्षः नमः अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा।"

आ शुचिविद्या ५ अथवा ७ वार सुरभिमुद्राए जपी आत्माभा आरोपवी.

उक्त सकलीकरण माथी स्नात्रकारोनी पण अंगरक्षा करवी, अने निम्नोक्त विधिथी देववदन करवु-इर्यावही पडिक्मी मूल नायकनुं चैत्यवदन करवुं, तेना अभानमा "ॐ नमः पार्श्वनाथाय" ए चैत्यवदन करी 'नमुत्थुणं० अरिहंत चेइआ० वदणव० अन्नत्थ० १ नो० नमोऽर्हत्० स्तुति—

अर्हंस्तनोतु स श्रेय.-श्रिय यद्ध्यानतो नरैः। अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि रहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगस्स० सव्वलोए० अरिहंत० वंदण० अन्नत्थ० १ नो० स्तुति—

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंह्रिश्च । आश्रीयते श्रिया ते भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुक्खरवरदी० सुअस्स० वंदण व० अन्नत्थ० १ नो० स्तुति—

नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्यानन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं० श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि काउसग्गं वंदणवत्ति० अन्नत्थ० १ लोगस्स, सागरवर गंभीरा पर्यन्त० नमोऽर्हत्० स्तुति—

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।
नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः संतुषन्ति जने ॥ ४ ॥

श्रुतदेवतायै करेमि काउसग्गं, अन्नत्थ० १ नो०, नमो० स्तुति—

वद वदति न वाग्वादिनि !, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रंगत्तरंगमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥६॥

शासनदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरताः । द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥७॥

समस्तवेयावृत्त्व० सन्निगराण० करेमि का० १ नो०।अपाो० स्तुति—

सचेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैयावृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरिभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

१ नोकार प्रकट गणी 'नमुत्थुणं' स्तवन० लघुशान्ति० जयवीयराय। ए पछी श्रावके बने हाथमा पुष्पाञ्जलि लेइ—

" अभिनवसुगंधिविकसित-पुष्पौघभृता सुगंधधूपाढ्या ।
कलशोपरि निपतन्ती, सुखानि पुष्पांजलि' कुरुताम् ॥१॥"

आ काव्य बोलीने पुष्पांजलि कलश उपर नांखवी आ वखते प्रतिष्ठाचार्ये वे मध्यमा आगलीओ उंची करी क्रूर दृष्टि करी तर्जनी मुद्रा देखाडवी, अने श्रावके ते पछी डाबा हाथमा जल लेइ कलश उपर आछोटवुं. अने कलशने तिलक करवो, पुष्प चढाववा, धूप उखेववो. प्रतिष्ठा गुरुए कलशने मुद्‌गरमुद्रा देखाडवी. अने—

ॐ ह्रूँ क्ष्वीं सर्वोपद्रव रक्ष रक्ष स्वाहा ।"

आ मन्त्रनो न्यास करी कलशनी दृष्टि रक्षा करवी. श्रावके कलश उपर सप्त धान्यनो प्रक्षेप करी प्रथम धान्य स्नान कराववु, अने पछी कलशना–सुवर्ण १ जल २ सर्वौषधि ३ मूलिका ४ गन्ध ५ वास ६ चन्दन ७ कुंकुम (केशर) ८ कर्पूर ९ पुष्पजल, आ नव द्रव्योना जल वडे नव अभिषेक करवा.

१–सुवर्ण स्नात्र—सुवर्णना ४ कलशो जले भरीने अथवा जलमा सुवर्णचूर्ण नांखीने–" नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्व-

साधुभ्यः" कही—

सुपवित्रतीर्थनीरेण संयुतं गन्ध-पुष्पसंमिश्रम्। पततु जलं कलशोपरि सहिरण्यं मंत्रपरिपूतम् ॥१॥

आ काव्य बोली कलश उपर अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्प चढाववां.

२-सर्वौषधिस्नात्र—सर्वौषधि चूर्णजलमां मेलवी ते चार कलशोमां भरी नमोऽर्हत्० कही—

सर्वौषधिसंयुतया, सुगंधया घर्षितं सुगतिहेतोः। स्नपयामि चैत्यकलशं, मंत्रिततन्नीरनिवहेन ॥२॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्प चढावी धूप उखेववो.

३-मूलिकास्नात्र—मूलिका चूर्ण जलमां नाखी ४ कलश भरी नमोऽर्हत्० कही—

सुपवित्रमूलिकावर्ग-मर्दितं तदुदकस्य शुभधारा। कलशेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥३॥

आ पद्य भणी कलशो ढालवा, तिलक करवुं, पुष्पारोहण, धूप करवो.

४-गंधस्नात्र—जलमां गन्धचूर्ण नाखी ४ कलश भरी नमोऽर्हत० कही—

गन्धांगस्नानिकया, सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः। स्नपयामि चैत्यकलशं, कर्मौघौच्छित्तये शिवदम् ॥४॥

आ काव्य भणी अभिषेक करवो.

५-वासस्नात्र—जलमां वासचूर्ण नांखी ते वडे कलश भरी नमो० भणी—

हृद्यैराह्लादकरैः, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैः कलशम्। स्नपयामि सुगति-हेतो-र्वासैरधिवासितं सार्वम् ॥५॥

आ पद्य भणी कलशनो अभिषेक करवो तिलक करवुं, पुष्प चढाववा, धूप उखेववो.

६-चन्दनस्नात्र—जलमा चन्दननो घोल नाखी तेना कलशा भरी नमो० कही—

शीतलसरससुगंधि-र्मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः । चन्दनकल्कः सजलो, मंत्रयुतः पततु वरकलशे ॥६॥

आ पद्य कहीने कलशनो अभिषेक करवो. तिलक धूप करवो पुष्प चढाववा

७-केसरस्नात्र--घसेल केसरनो घोल जलमा नाखी कलशा भरी नमो० कही—

" काश्मीरजसुविलिप्तं, कलश तन्नीरधारयाऽभिनवम् । सन्मन्त्रयुक्तया शुचिं, जैनं स्नपयामि सिद्ध्यर्थम् ॥७॥

आ पद्य भणी अभिषेक करवो. तिलक धूप करवो, पुष्प चढाववा.

८-कर्पूरस्नात्र-कपूरनु चूर्ण जलमा नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही—

शशिकरतुषारधवला, उज्वलगन्धा सुतीर्थजलमिश्रा । कर्पूरोदकधारा, सुमन्त्रपूता पततु कलशे ॥८॥

आ पद्य गोली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्प चढाववा, धूप उखेववो

९-कुसुमजलस्नात्र—जलकुंडीमा पुष्पो नांखी ते जलना कलशा भरी नमो० कही-

अधिवासितं सुमन्त्रैः, सुमनः किञ्जल्कराजित तोयम् । तीर्थजलादिसुपृक्तं, कलशोन्मुक्त पततु कलशे ॥९॥

आ काव्य गोली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, फूल चढाववा, अने धूप उखेववो.

ए पछी पचरत्ननी पोटली तथा श्वेत अथवा पीला सरसवोनी पोटली कलशने बाधवी, पोताना डावा हाथ वडे जमणा

हाथने कांडामांथी पकडी ते वडे चन्दननुं कलशना सर्व भागोमां विलेपन करीने पुष्पो चढाववां, ऋद्धि वृद्धि युक्त मींढलफल बांधवुं अने चक्रमुद्राए कलशनो सर्वाङ्ग स्पर्श करवो, पछी धूप उखेवीने ४ स्त्रियो द्वारा पुंखणां कराववां.

प्रतिष्ठागुरुए सुरभि १ परमेष्ठी २ गरुड ३ अंजलि ४ प्रवचन ५ आ पांच मुद्राओ देखाडवी, अने सूरि मंत्रथी अथवा तो—

“ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।”

आ मंत्र वडे ३ वार अधिवासना करवी, मंत्र भणीने ३ वार वासक्षेप करी कलश उपर रक्तवस्त्र आच्छादन करवुं, ते उपर जम्बीरादि फलावली नांखवी, सात धान्य नाखवुं, अने आरति उतारवी. आरति उतारतां नीचेनुं पद्य बोलवुं.—

दुष्टसुरासुररचितं, नरैः कृतं दृष्टिदोषजं विघ्नम्। तद् गच्छत्वतिदूरं, भविकक्रूनारात्रिकविधानैः ॥१॥

आरति उतार्या बाद प्रतिष्ठागुरुए स्नात्रकारोनी साथे ईर्यावही पडिकमी मूलनायकनुं अथवा **“ॐ नमः पार्श्वनाथाय”** आ चैत्यवंदन करवुं. नमुत्थुणं० कही, अरिहंतचेइआणं करेमि का०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो० स्तुतिः—

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्ध्यानतो नरैः। अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगस्स०, सव्वलोए० अरि०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदङ्घ्रींश्च। आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुक्खरवर०, सुअस्स०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नोकार, स्तुतिः—

नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिताऽरुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता। वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धार्थं बुद्धाण०, श्रीअधिवासनादेव्यै करेमि का०, अन्नत्थ०, लोगस्स०, सागरवरगंभीरा०, नमोर्हत्०, स्तुतिः—

पातालमन्तरिक्ष, भवन वा या समाश्रिता नित्यम्। साऽत्राऽवतरतु जैने, कलशे ह्यधिवासनादेवी ॥४॥

श्रुतदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति! कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः।
रंगत्तरंगमतिवर-तरणिस्तुभ्य नम इतीह ॥ ५ ॥

शान्तिदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसघस्य, शासनोन्नतिकारिणी। शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुति —

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभि. साध्यते क्रिया.। सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान्न· सुखदायिनी ॥७॥

शासनदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरताः। द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥८॥

अम्बिकादेव्यै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ सौख्यख्याति ददातु नः। माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥९॥

अच्छुप्तायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना। भद्रं करोतु संघस्या-ऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥१०॥

समस्तवेआवच्च०, संति०, सम्मद्दिट्ठि०, करेमि का०, १ नो०, नमो० स्तुतिः—

संऽवेत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥११॥

१ नोकार प्रकट कही नमुत्थुणं०, जावंति चेइआइं०, नमो०, स्तवन—

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरियउवज्झाय। वरसव्वसाहुमुणिसंघ-धम्मतित्थपवयणस्स ॥१॥
सप्पणव नमो तह, भगवईइ सुअदेवयाइ सुहयाए। सिवसंतिदेवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥
इंदागणिजमनेरइअ-वरुणवाउकुबेरईसाणा। बंभो नागुत्ति दसण्हमवि अ सुदिसाण पालाणं ॥३॥
सोम-यम-वरुण-वेसमण-वासवाणं तहेय पंचण्हं। तह लोगपालयाणं, सूराइगहाण य नवण्हं ॥४॥
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुट्ठाणं। सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणिअं ॥५॥

जयवियराय कहेवा। इति अधिवासना विधिः।

अथ कलशप्रतिष्ठा—

लग्ननो समय निकट आवता पहेला सात धानना नाकलानु भाजन तैयार करी—" ॐ ह्रीं क्ष्वीं सर्वोपद्रव रक्ष रक्ष स्वाहा ।" आ मंत्र ७ वार भणी नलिने मन्त्री पूर्वादि दिशा समुख उभा रही—

" ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" १
" ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" २
" ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" ३
" ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" ४
" ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" ५
" ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" ६
" ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" ७
" ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" ८
" ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" ९
" ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह कलशप्रतिष्ठायाम् आगच्छ आगच्छ स्वाहा ।" १०

उपरनो एक एक मंत्र बोली पूर्वादि एक एक दिशामां जलचुलुक सुगन्धनो छाटो पुष्प अने बलि निक्षेप करवो.

ते पछी कलश उपरनुं वस्त्राच्छादन दूर करीने सूरि मंत्र वडे मंत्रीने कलश उपर वासक्षेप करवो, अथवा "ॐ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिते ॐ ह्रीं स्वाहा"

आ प्रतिष्ठा मंत्र ७ वार गणीने वासक्षेप करी कलशनी प्रतिष्ठा करवी.

जो बिम्ब प्रतिष्ठानी साथे कलश प्रतिष्ठा होय तो बिम्बनी अधिवासना साथे कलशनी अधिवासना अने बिम्बना अंजन विधानना समयमां ज कलशप्रतिष्ठा विधि पण करी लेवी.

कलश प्रतिष्ठा करीने नीचे प्रमाणे चैत्यवंदना करवी, इर्यावही पडिक्कमीने मूलनायकनुं चैत्यवंदन अथवा ॐ नमः पार्श्वनाथाय" ए चैत्यवन्दन कही नमुत्थुणं, अरिहंतचेइआणं०, करेमि का०, वंदणवत्तिआए०, अन्नत्थ० १ नो०, नमो०, स्तुति—

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः, श्रियं यद्ध्यानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगस्स०, सव्वलोए०, अरिहंत चेइआणं०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंह्रींश्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुक्खर०, सुअस्स भ०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

नवतत्त्वयुतात्रिपदी-श्रितारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्यानन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं०, प्रतिष्ठादेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ लो०, सागरवरगं०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । जिनकलशं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

श्रुतदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छु । रंगत्तरगमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

शान्तिदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो नमो०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्य, भूयान् नः सुखदायिनी ॥७॥

शासनदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरता । द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥८॥

अम्बादेव्यै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

अम्बा बालांकितांकाऽसौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥९॥

अच्छुप्तायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु सघस्याऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥१०॥

समस्तवेयावच्चग० संति० सम्मद्दि० करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

सर्वेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥११॥

१ नोकार गणी बेसी नमुत्थुणं०, जावंति चेइ०, नमो०, स्तवनः—

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरियउवज्झाय। वरसव्वसाहुमुणिसंघ-धम्मतित्थप्पवयणस्स ॥१॥
सप्पणव नमो तह, भगवईइ सुअदेवयाइ सुहयाए। सिवसंतिदेवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥
इंदागणिजमनेरइअ-वरुणवाउकुबेरईसाणा। बंभो नागुत्ति दसण्ह-मवि अ सुदिसाण पालाणं ॥३॥
सोमयमवरुणवेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं। तह लोगपालयाणं, सूराइगहाण य नवण्हं ॥४॥
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुट्ठाणं। सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणिअं ॥५॥

अंते जयवीयराय कहेवा. पछी सकल संघ सहित प्रतिष्ठाचार्य अक्षतोथी अंजलि भरी कलश सामे उभा रही निम्नोक्त मंगल गाथाओनो पाठ करे— नमोऽर्हत् सिद्धाचार्यो.

जह सिद्धाण पइट्ठा, तिलोकचूडामणिम्मि सिद्धिपए। आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥१॥
जह सग्गस्स पइट्ठा, समत्थलोयस्स मज्झयारंमि। आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥२॥
जह मेरुस्स पइट्ठा, दीवसमुद्दाण मज्झयारंमि। आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुप्पइट्ठत्ति ॥३॥
जह जम्बुस्स पइट्ठा, जम्बुद्दीवस्स मज्झयारंमि। आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुपइट्ठत्ति ॥४॥
जह लवणस्स पइट्ठा, समत्थउदहीण मज्झयारंमि। आचंदसूरिअं तह, होउ इमा सुपइट्ठत्ति ॥५॥

गाथाओ भणीने प्रतिष्ठाचार्य तथा सकल संघ अक्षतांजलि कलश उपर नाखी कलशने वधावे, श्रावक पण पुष्पांजलि कलश

उपर चढावीने वधावे, पछी प्रतिष्ठागुरुए कलश प्रतिष्ठा विषयक धर्मदेशना करवी.

सूचना—कलश प्रतिष्ठा जो बिम्ब प्रतिष्ठानी साथे ज होय तो बिम्बना अंजन विधानना समयमां कलश प्रतिष्ठा पण करवी, अने बिम्ब स्थापनाना समयमां कलश पण शिखर उपर पंचरत्न न्यास पूर्वक स्थापन करवो. अने केवल कलशनी ज प्रतिष्ठा होय तो अधिवासना अने प्रतिष्ठाना प्रारंभिक कार्यो थया पछी शुभ लग्नमां शिखर उपर पंचरत्न स्थापन पूर्वक कलश स्थापीने प्रतिष्ठा मंत्र भणी वासक्षेप करी प्रतिष्ठित करवो. अथवा नीचे प्रतिष्ठा कर्या पछी बीजा शुभ समये शिखर उपर स्थापन करवामां आवे तो पण विहित छे

॥११ ध्वजदण्डप्रतिष्ठा—

वंशादिकाष्ठजं ध्वज-दण्डं पूर्वं पवित्रयेत्। स्नानादिविधिना पश्चात्, सुलग्ने संभरोपयेत् ॥१७१॥

भा०टी०—वंशमय होय अथवा अन्य काष्ठमय ध्वजदंड होय, तेने पहेला विधिपूर्वक अभिषेक करावी शुद्ध करवो अने पछी शुभ लग्नमां शिखर उपर आरोपवो जोइये

ध्वज दण्डनी प्रतिष्ठाने माटे पण भूमिशुद्धि करी तेनो सुगन्ध जल पुष्पादि वडे सत्कार करवो, मंडपनी रचना करवी, दण्ड स्थापन योग्य पंचरत्न गर्भित वेदी बनाववी, नवांग वेदी बांधवी जवारा वाववा, पवित्र जलाशयथी जल लाववुं, अमारी घोषणा कराववी, संघने आमंत्रण करवु, १० दिग्पालोनी स्थापना करवी अने नन्द्यावर्तनुं आलेखन-पूजन करवुं.

प्रथम पवित्र जलाशयथी मंगावेल जलथी वेदी आगे स्थापित प्रतिमाने स्नात्र करवुं, पछी बलिबाकुलना भाजनमां पुष्प वास मेवो आदि नाखीने-

"ॐ हूँ क्ष्वीं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा।"

आ मंत्र वडे ७ वार बलि मंत्री पूर्वादि दिशा संमुख उभा रहीने-

"ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा।" १

"ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा।" २

"ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा।" ३

"ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा।" ४

"ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा।" ५

"ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा।" ६

"ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा।" ७

"ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा।" ८

"ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा।" ९

"ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणे विधौ आगच्छ २ स्वाहा।" १०

आ मंत्रो पैकीनो १-१ मत्र बोली पूर्वादि एक एक दिशामा जलंचुलुक १, केसर चंदननो छाटो २, पुष्पक्षेप ३, अने सप्तधान बलि ४, निक्षेप करवो

ए पछी अखंड वस्त्रधारी प्रतिष्ठागुरुए नीचेना मत्रे पोताना आत्मानुं सकलीकरण करवु-

ॐ नमो अरिहंताण-हृदय उपर, ॐ नमो सिद्धाण-मस्तक उपर, ॐ नमो आयरियाण-शिखा उपर, ॐ नमो उवज्झायाण-सर्वाङ्गावरण, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं-हस्ते आयुध.

सकलीकरण करी नीचे लखेल-

" ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाण, ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवज्झायाण, ॐ नमो लोए सव्वसाहूण, ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताण, ॐ नमो विज्जाहराणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ कः क्षः नमः अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा "।

आ शुचिविद्या ५ अथवा ७ वार जपी आत्मामां आरोपवी पछी प्रतिष्ठाचार्ये उपर्युक्त सकलीकरण विद्या वडे स्नात्रकारोने पण अभिमन्त्रित करी तेमनी अग-रक्षा करवी

ए पछी प्रतिष्ठाचार्ये मंगलार्थे संघ सहित नीचेनी विधिथी देववंदन करवु

इर्यावही प्रतिक्रमण पूर्वक मूलनायकनु चैत्यवंदन बोलवु, तेना अभावमा " ॐ नमः पार्श्वनाथाय " ए चैत्यवंदन कही नमुत्थुणं०, अरिहंत चेइआणं०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, १ नोकार०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

अर्हस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्ध्यानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगस्स०, सव्वलोए अरिहंत०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

ओमिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंहूँघ्रीश्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुक्खरवर०, सुअस्स०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्या-नंदाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं०, श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि का०, वंदण०, अन्नत्थ०, लोगस्स० सागरवरगं०, नमो०, स्तुतिः—

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः, प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।
नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः संतुषन्ति जने ॥४॥

श्रुतदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः । रङ्गत्तरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान् नः सुखदायिनी ॥६॥

शासनदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनेकरताः । द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥७॥

समस्तवेआवच्चगराण सति० सम्मद्दिट्ठि० करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो, नमो०, स्तुतिः०—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया–वृत्यादिकृत्यकरणेकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

१ नोकार प्रकट कही नमुत्थुण०, स्तवनने बदले लघुशान्ति कही, जयवीयराय कहेवा.

अधिवासना—

पछी श्रावके बन्ने हाथमा पुष्पाञ्जलि लेइ—

अभिनवसुगन्धिविकसित–पुष्पौघभृता सुगन्धधूपाढ्या ।
दण्डोपरि निपतन्ती, सुखानि पुष्पांजलिः कुरुताम् ॥१॥

आ काव्य बोली ध्वजदण्ड उपर नाखवी अने चन्दन छाटवुं, आ वखते प्रतिष्ठाचार्ये बे मध्यमा आंगलिओ उंची करी क्रूर दृष्टि करी तर्जनी मुद्रा देखाडवी, श्रावके डाबा हाथमा जल लेई दंड उपर आछोटवुं अने दण्डने तिलक करवुं, पुष्पो चढाववां, धूप उखेवबो

प्रतिष्ठागुरुए दण्डने मुद्गर मुद्रा देखाडवी अने—

" ॐ ह्रूँ क्ष्वीं सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा ।"

आ मंत्रनो न्यास करी दण्डनी दृष्टिरक्षा करवी. श्रावके दण्ड उपर सप्त धान्यनो प्रक्षेप करी धान्य स्नान कराववु. ए पछी

दण्डना—१ सुवर्णजल, २ रत्नजल ३ कषायजल ४ मृत्तिका ५ मूलिका ६ अष्टवर्ग ७ सर्वौषधि ८ गन्ध ९ वास १० चन्दने ११ कुंकुम (केसर) १२ तीर्थजल १३ कर्पूरजल, आ १३ अभिषेक करवा. तेमां

१—सुवर्णस्नात्र—सोनाना ४ कलशो जले भरीने अथवा जलमां सुवर्ण चूर्ण नाखीने—"नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्याय-सर्वसाधुभ्यः" कही—

सुपवित्रतीर्थनीरेण, संयुतं गंधपुष्पसंमिश्रम् । पततु जलं दण्डोपरि, सहिरण्यं मंत्रपरिपूतम् ॥१॥

आ काव्य बोली दण्ड उपर अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्प चढाववां, धूप उखेववो.

२—पंचरत्नस्नात्र—पंचरत्ननुं चूर्ण अथवा पंचरत्ननी पोटली जलमध्ये नांखी, तेना ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही—

नानारत्नौघयुतं, सुगंधिपुष्पाधिवासितं नीरम् । पतताद्विचित्रवर्णं, मन्त्राढ्यं स्थापनादण्डे ॥२॥

३—कषाय छाल जलस्नात्र—कषाय छालनुं चूर्ण जलमां नांखी, तेना ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही—

प्लक्षाऽश्वत्थोदुम्बर—शिरीषछल्ल्यादिकल्कसंमिश्रम् । दण्डे कषायनीरं, पततादधिवासितं जैने ॥३॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्पो चढाववां, धूप उखेववो.

४—मृत्तिकास्नात्र—मंगलमाटीनुं चूर्ण जलमां नाखी तेना ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही—

पर्वतसरोनदीसंगमादिमृद्भिश्च मंत्रपूताभिः । उद्वर्त्य ध्वजदण्डं, स्नपयाम्यधिवासनासमये ॥४॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्प चढावी धूप उखेववो.

५-मृत्तिकास्नात्र-मृत्तिका चूर्ण जलमां नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही-

सुपवित्रमृत्तिकावर्ग-मर्दिते तदुदकस्य शुभधारा। दण्डेऽधिवाससमये, यच्छतु सौख्यानि निपतन्ती ॥५॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवु, पुष्प चढाववां, धूप उखेववो.

६-अष्टवर्गस्नात्र-अष्टवर्गनु चूर्ण जलमा नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही-

नानाकुष्ठाद्यौषधि-सन्मृष्टे तद्युतं पतन्नीरम्। दण्डे कृतसन्मन्त्रं, कर्मौघं हन्तु भव्यानाम् ॥६॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्पो चढाववा, धूप उखेववो.

७-सर्वौषधिस्नात्र-सर्वौषधिचूर्ण जलमा नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही-

सकलौषधिसंयुतया, सुगन्धया घर्षित सुगतिहेतोः। स्नपयामि ध्वजदण्डं, मन्त्रिततन्नीरनिवहेन ॥७॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्पो चढाववा, धूप उखेववो.

८-गन्धस्नात्र-गन्धचूर्ण जलमा नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही-

गन्धाङ्गस्नानिकया, सन्मृष्टं तदुदकस्य धाराभिः। स्नपयामि ध्वजदण्ड, कर्मौघोच्छित्तये शिवदम् ॥८॥

आ काव्य भणी अभिषेक करवो, तिलक करवु, पुष्पो चढाववा, धूप उखेववो

९-वासस्नात्र-वासचूर्ण जलमा नाखी ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही-

हृद्यैराह्लादकरैः, स्पृहणीयैर्मन्त्रसंस्कृतैर्दण्डम्। स्नपयामि सुगतिहेतो-र्वासैरधिवासितं सार्चम् ॥९॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्पो चढाववां, धूप उखेववो.

१०–चन्दनस्नात्र—घसेल चन्दननो घोल जलमां नाखी, ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही—

शीतलसरससुगन्धि–र्मनोमतश्चन्दनद्रुमसमुत्थः । चन्दनकल्कः सजलो, मंत्रयुतः पततु वरदण्डे ॥१०॥

आ काव्य बोली अभिषेक करे, तिलक करे, पुष्पो चढावे. धूप उखेवे.

११–केसरस्नात्र—घसेल केसरनो घोल जलमां नाखी, ४ कलशा भरी नमो० कही—

काश्मीरजसुविलिप्तं. दण्डं तन्नीरधारयाऽभिनवम् । सन्मंत्रयुक्तया शुचिं, जैनं स्नपयामि सिद्धयर्थम् ॥११॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्पो चढाववां. धूप उखेववो.

१२–तीर्थजलस्नात्र–अभिषेक योग्य जलमां तीर्थजल मेलवी, ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही—

जलधि–नदी–ह्रद–कुण्डेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि । तैर्मन्त्रसंस्कृतैरिह, दण्डं स्नपयामि शुद्धयर्थम् ॥१२॥

आ काव्य बोली अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्पो चढाववां, धूप करवो.

१३–कर्पूरस्नात्र—कपूरनुं चूर्ण अभिषेक योग्य जलमां नाखी, ४ कलशा भरी नमोऽर्हत्० कही—

शशिकरतुषारधवला, उज्ज्वलगंधा सुतीर्थजलमिश्रा । कर्पूरोदकधारा सुमन्त्रपूता पततु दण्डे ॥१३॥

आ काव्य भणी दण्डनो अभिषेक करवो, तिलक करवुं, पुष्पो चढाववां, धूप उखेववो.

ए पछी श्वेत अथवा पीला २७ सर्षवोनी पोटली दंडने बांधवी. डाबा हाथे जमणो हाथ पकडी ते वडे दण्डना सर्वाङ्गे

चन्दन-केसरनु विलेपन करवु. फूलो चढाववा, ऋद्धिवृद्धि सहित मींढल फलनुं कंकण बांधवुं. अने चक्रमुद्राए दण्डनो सर्वाङ्ग स्पर्श करवो. पछी धूप उखेवी ४ स्त्रीओ द्वारा दडने पुंखाववो.

प्रतिष्ठागुरुए १ सुरभि २ परमेष्ठी ३ गरुड ४ अंजलि ५ प्रवचन, ए पाच मुद्राओ देखाडवी अने लग्न समय आवता सूरि-मंत्र वडे अथवा " ॐ श्री ठः " आ मन्त्रथी ७ वार ध्वजदण्डने अभिमंत्रित करी वासक्षेप करवो, अने लाल वस्त्रे आच्छादित करवो, ध्वजा उपर पण पूर्वोक्त मंत्रे वासक्षेप करी धूप उखेवी तेने अधिवासित करवी, उपर ह्रीं लखवुं आगल फलबलि ढौकवी अने जवाराना पात्रो चारे तरफ मूकवा, उपर सात धान्य नाखवा अने आरति उतारवी. आरति उतारता नीचेनुं पद्य बोलवुं-

दुष्टसुरासुररचितं, नरैः कृतं दृष्टिदोषजं विघ्नम् । तद् गच्छत्वतिदूरं, भविककृतारात्रिकविधानैः ॥१॥

आरति उतार्या बाद प्रतिष्ठागुरुए स्नात्रकारोनी साथे इर्यावही करी मूलनायकनुं अथवा " ॐ नमः पार्श्वनाथाय " इत्यादि चैत्यवंदन कही नमुत्थुणं० अरिहंत चेइआ० करेमि० वंदण० अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, कही स्तुतिः—

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः श्रियं यद्ध्यानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगस्स०, सव्वलोए० अरिहंत०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

ओमिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदङ्घ्रींश्च । आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुक्खरवरदी०, सुअस्स०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धाणं बुद्धाणं, अधिवासना देव्यै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमोऽर्हत्० स्तुतिः-
पातालमन्तरिक्षं, भवनं वा या समाश्रिता नित्यम् । साऽत्राऽवतरतु जैने, दण्डे ह्यधिवासनादेवी ॥४॥
श्रुतदेवतायै करेमि का०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-
वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रङ्गत्तरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥
शान्तिदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-
श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥
क्षेत्रदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो० स्तुतिः—
यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान् नः सुखदायिनी ॥७॥
शासनदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-
उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरताः । द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता नित्यम् ॥८॥
अम्बादेव्यै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-
अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥९॥
अच्छुप्तायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो० स्तुतिः—
चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्याऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥१०॥

समस्तचैत्यवन्द० सति० सम्म० करेमि-का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो० स्तुतिः-

सर्वेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥१२॥

१ नोकार प्रकट कही बेसी नमुत्थुण० जावंति चेइआइ० नमोऽर्हत्० स्तवन-

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरियउवज्झाय। वरसव्वसाहुमुणिसंघ-धम्मतित्थपवयणस्स ॥१॥
सप्पणव नमो तह भगवईइ सुअदेवयाइ सुहयाए। सिवसंतिदेवयाण, सिवपवयणदेवयाण च ॥२॥
इंदागणिजमनेरइअ-वरुणवाउकुबेरईसाणा। बंभो नागुत्ति दसण्ह-मवि अ सुदिसाण पालाण ॥३॥
सोमयमवरुणवेसमण-वासवाण तहेव पंचण्हं। तह लोगपालयाण, सूराइगहाण य नवण्हं ॥४॥
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुट्ठाणं। सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणियं ॥५॥

जयवीयराय कहेवा । इति अधिवासना ।

प्रतिष्ठा—लग्ननो समय निकट आवता प्रथम सात धानना बाकुलानुं भाजन तैयार करी—

"ॐ ह्रीँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवं रक्ष रक्ष स्वाहा"

आ मंत्र ७ वार भणी बलिने मंत्री पूर्वादि दिशासमुख उभा रही—

ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१॥

ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥२॥
ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥३॥
ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकाय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥४॥
ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥५॥
ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥६॥
ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥७॥
ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥८॥
ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥९॥
ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकाय इह ध्वजारोपणविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१०॥

उपर प्रमाणे एक एक ग्रहनुं आह्वान करी पूर्व आदि एक एक दिशामां जलनो चुलुक, सुगन्धनो छांटो, पुष्प अने बलि निक्षेप करवो.

पछी लग्नसमय आवतां दण्ड उपरनुं वस्त्र दूर करी सूरिमंत्र वडे मंत्रीने अथवा " ॐ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिते ॐ ह्रीँ स्वाहा ।"

आ प्रतिष्ठा मंत्र ७ वार भणीने वासक्षेप करी दण्ड अने ध्वजानी प्रतिष्ठा करवी.

जो बिंबप्रतिष्ठानी साथे ज ध्वजदण्डनी प्रतिष्ठा होय तो बिम्ब अधिवासना साथे दण्डनी अधिवासना तथा बिंबना अंजन विधाननी साथे दण्डनुं प्रतिष्ठाविधान करी लेवु. ध्वजदण्ड उपर प्रतिष्ठानो वासक्षेप कर्या पछी नीचे प्रमाणे चैत्यवंदना करवी—

इर्यावही पडिक्कमीने मूलनायकनुं चैत्यवंदन अथवा "ॐ नमः पार्श्वनाथाय" आ चैत्यवंदन कही नमुत्थुण० अरिहंत० करेमि का० वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो० स्तुतिः—

अर्हंस्तनोतु स श्रेयः, श्रियं यद्ध्यानतो नरैः। अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहसौच्यत ॥१॥

लोगस्स०, सव्वलोए० अरिहंत चेइआण०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

ओमितिमन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदङ्घ्रींश्च। आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥

पुक्खर०, सुअस्स भ०, वंदणवत्ति०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—

नवतत्त्वयुतात्रिपदी–श्रितारुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता। वरधर्मकीर्तिविद्यानन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥

सिद्धाण बुद्धाण०, प्रतिष्ठादेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ लो०, सागरवरगं०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति। श्री ध्वजदण्डं स्मा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥

श्रुतदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः। रंगत्तरगमतिवर–तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

शान्तिदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो नमो०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी। शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान् नः सुखदायिनी ॥७॥

शासनदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरता। द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥८॥

अंबादेव्यै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः। माणिक्यरत्नालंकार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥९॥

अच्छुप्तायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना। भद्रं करोतु संघस्या-ऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥१०॥

समस्तवेआवच्चग० संति० सम्मद्दि० करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमोऽर्हत्०, स्तुतिः—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥११॥

१ नोकार गणी बेसी नमुत्थुणं० जावंति० नमोऽर्हत्० स्तवनने ठेकाणे लघुशान्ति कही, जयवीयराय कहेवा, ए पछी सकल संघनी साथे प्रतिष्ठाचार्य अक्षतांजलि भरी ध्वजदण्ड सामे उभा रही, मंगलगाथाओनो पाठ करी अक्षताञ्जलि दंड उपर नाखे;

हवे ध्वजने दण्ड उपर चढाववी, देशाचारे जो दण्ड अने ध्वजना चढावा जुदा बोलाया होय तो ध्वजा थालीमा जुदी राखवी, चढाववानो समय निकट आवता ध्वजादण्ड उठावीने चैत्यने ३ प्रदक्षिणा करी शिखर उपर चढाववो

शिखर उपर चढी प्रथम शिखरना कलश उपर—

कुलधर्मजातिलक्ष्मी-जिनगुरुभक्तिप्रमोदितोन्नतिदे । प्रासादे पुष्पाञ्जलि-रयमस्मत्करकृतो भूयात् ॥१॥

आ काव्य बोली पुष्पांजलि नाखवी, अने—

चैत्याग्रता प्रपन्नस्य, कलशस्य विशेषतः । ध्वजारोपविधौ स्नान, भूयाद् भक्तजनैः कृतम् ॥१॥

आ श्लोक बोली शिखरना कलशने न्हवण करावबुं, पछी ध्वजदंड जेमा स्थापवानो छे ते ध्वजाधारमा पचरत्ननो न्यास करवो, अने शुभग्रहदृष्ट शुभलग्नना शुभनवमांशमा ध्वजदंड स्थापित करवो, सूरिमंत्र वडे ते उपर वासक्षेप करवो, आगल फलो ढौंकवा, गोहुं तल आदिना ५-५ लाडवा 'कांकरिआ' आदि बलि ढोवो.

ध्वजदण्ड मूलनायकना जमणा हाथ तरफना पाछलना पडरा उपर सीधो उभो करवो

ध्वजदण्ड रोप्या पछी प्रतिष्ठाचार्ये प्रवचनमुद्राए नीचे प्रमाणे देशना करवी.—

देवस्याऽयतने भक्त्या, ध्वजमारोपयन्ति ये । त्रैलोक्यश्रीस्तनोत्संगे, स्व समारोपयन्ति ते ॥१॥

धत्ते ध्वजोऽत्र धन्यानां, सुरसद्मशिरःस्थितः । तरङ्गिततनुः साक्षात् , स्वर्गनिःश्रेणिरूपताम् ॥२॥

यावन्तः प्राणिनस्तत्र, लग्नाः स्युः प्रदक्षिणाः । तावन्तः प्राप्नुवन्त्यत्र, शिवस्थानमनुत्तमम् ॥३॥

भा०टी०—जे मनुष्यो देवमंदिर उपर भक्तिपूर्वक ध्वजा चढावे छे. तेओ पोताने त्रण लोकनी लक्ष्मीना उरःस्थल उपर आरूढ करे छे. देवमंदिरना मस्तक उपर रहीने फरकती आ ध्वजा भाग्यशाली मनुष्योने माटे साक्षात् स्वर्गनी नीसरणी रूप छे. जेटला जीवो भावपूर्वक आ ध्वजादण्डनी प्रदक्षिणा करे छे, ते सर्व उत्तमोत्तम एवा मोक्षस्थानने पामे छे, इत्यादि ध्वजारोपणनुं फल सांभलीने चढावनार पोताना आत्माने कृतकृत्य मानतो देव, गुरु, संघनी पूजा करी यथाशक्ति दीन दुःखीने अन्न-दानादिकथी संतुष्ट करे.

ध्वजागतिनुं शुभाशुभफल—

ध्वजदंड आरोपी ध्वजा छोडीने तेनी गति उपरथी निमित्त जोवां. ध्वजा पवनना प्रयोगथी फरकथी १ हाथ उंची चढे, तो चढावनार रोगादिकना भयथी मुक्त रहे, ध्वजा जो २ हाथ उंची जाय तो चढावनारने सन्तानवृद्धि थाय छे, ध्वजा जो ३ हाथ उंची चढे तो चढावनारना घेर धनधान्यनी वृद्धि थाय छे, ध्वजा जो ४ हाथ उंची जाय तो राजाने घरे वृद्धि थाय, ध्वजा जो ५ हाथ उंची उडे तो सुभिक्ष थाय अने राष्ट्रनी वृद्धि थाय छे.

ध्वजा प्रथम उडीने पूर्व दिशा तरफ जाय तो चढावनारनी सर्व इच्छाओ पूर्ण थाय छे, ध्वजा प्रथम आग्नेय कोणमां जाय तो ताप संताप करावे, ध्वजा जो दक्षिणमां जाय तो रोगभय उत्पन्न करे, ध्वजा जो नैर्ऋत कोणमां जाय तो आकरा रोगने उपजावे, ध्वजा जो पश्चिम तरफ जाय तो कर्ताने विषे मैत्रीभाव वधारे, ध्वजा वायव्यकोणमां जाय तो धान्यनी संपत्ति वधारे. ध्वजा उत्तर तरफ उडे तो धननो लाभ करावे, ध्वजा ईशानमां जाय तो आयुष्यनी वृद्धि करे, ध्वजा जो अशुभ दिशामां गई होय तो १०००,

एक हजार नमस्कार मन्त्रनो जाप करी विशेष पूजा करीने शान्ति करवी.
ध्वजादण्डने बांधेली सर्पनी पोटली अने मींढलनुं कंकण आवश्यक कारणे ते ज दिवसे अन्यथा ३-५-७ दिवसो पैकी
जे शुभ होय ते दिवसे जिनप्रतिमाने स्नात्र करी, जिनने नैवेद्य चढावी, भूतबलि क्षेप करीने नीचे प्रमाणे विधि करवी.
इर्यावही पडिक्कमवा पूर्वक मूलनायकनुं चैत्यवंदन करवुं. अथवा " ॐ नमः पार्श्वनाथाय " आ चैत्यवंदन कही, नमु-
त्थुण०, अरिहंत चेइआणं करेमि का०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—
अर्हंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्ध्यानतो नरैः। अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहसौच्यत ॥१॥
लोगस्स०, सव्वलोए० अरि० वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो० स्तुति—
ओमिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंघ्रींश्च। आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥
पुक्खरवर०, सुअस्स०, वंदण०, अन्नत्थ०, १ नो०, स्तुतिः—
नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता। वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥
सिद्धाणं बुद्धाणं० कंकण छोटनार्थं प्रतिष्ठा स्थिरीकरणार्थं करेमि का० अन्नत्थ०, १ लोगस्स०, नमो० स्तुतिः-
यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति। श्रीध्वजदण्डं सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥४॥
श्रुतदेवतायै करेमि का०, अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—
वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः। रंगत्तरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

शान्तिदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ०, १ नो०, नमो०, स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी। शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ०, १ नो०, नमो० स्तुतिः—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान् नः सुखदायिनी ॥७॥

समस्त वेआवच्चगराणं संति० सम्मदि० करे० का०, अन्न०, १ नो० नमो०, स्तुतिः—

संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः !

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

१ नो० प्रकट कही, वेसी नमुत्थुणं०, जावंति चेइआई०. स्तवन लघुशांति कही, जयवीयराय, पछी सौभाग्य मुद्राए—

ॐ अवतर २ सोमे २ कुरु २ वग्गु २ निवग्गु २ सुमणे सोमणसे महुमहुरे ॐ कविल ॐ कः क्षः स्वाहा।

आ मंत्रनो न्यास करी दण्ड उपरथी सरसवोनी पोटली, मींढल, कंकण वगेरे उतारवां. जो ध्वजादंडने बांधेली होय तो ते पण छोडवी, ए पछी नंद्यावर्तना पाटलानी पूजा करी " ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा। "

आ मंत्रथी नंद्यावर्तनुं विसर्जन करवुं, संघभक्ति करवी, ८ दिवस सुधी विशेष पूजा करवी. ॥ इति ध्वजदंड प्रतिष्ठा ॥

———०———

।। १२ जिनविम्ब प्रवेशविधि (१)

जिनविम्बप्रवेशो हि, जिनगेहेषु सोत्सव । सविधानः प्रकर्तव्य, कल्याणकारको भवेत् ॥१७२॥

भा०टी०—जिनघरोमा जिनबिंबोनो प्रवेश उत्सवपूर्वक विधि साथे कराववाथी ज कल्याणकारी थाय छे.

पूर्वोक्त शुभ दिवसे शुभग्रहबलयुक्त स्थिर लग्नबल ठरावीने लग्न वधावी लग्नदायक ज्योतिषीनो श्रीफल द्रव्यादिकथी यथाशक्ति सत्कार करवो.

लग्नना दिवस थकी १०।७।५ अथवा ३ दिन पहेला प्रतिष्ठा स्थानके—घरे अथवा जिनचैत्ये १०० हाथ सुधी चारे तरफ भूमि शुद्ध कराववी, मडपभूमि के ज्या स्थापनीय बिम्ब राखवाना होय ते पण एज रीते शुद्ध कराववी, कलेवर, हाडकं, आदि दूर करावनु, अने सुन्दर चद्रवा—चादणी प्रमुख वधावी ववे स्थानके मण्डपनी रचना करावनी, ववे ठेकाणे माझे प्रभाते साझी देवरावनी, अने प्रभातिया गवरावना.

सघमा तथा घरमा दक्ष अने निर्मीत शरीरधारी १ जण १० दिन सुधी एकाशणा करे. ब्रह्मचर्य पाले, सचित्तनो त्याग करे, भूमिसथारो कर अने आरभमय प्रवृत्तिनो त्याग करी प्रसन्न चित्त रहे

जे देवालयमा प्रभु स्थापना होय तेमा क्रियाकारक ३ टक शुद्ध वस्त्रो पहेरी ७ स्मरणोनो शुद्धतापूर्वक पाठ करे, पोतपोतानी गच्छपरम्परा प्रमाणे स्मरणगुणे, धूप दीप पासे राखे

पाठने अन्ते १ कटोरी (कचोलुं अथवा कलशियो) रूपानी अथवा त्रांबानी होय तेमां अबोट जल भरी सोनावाणी करीने ७ नोकार गणी—

" ॐ श्री जीराउला पार्श्वनाथ ! रक्षां कुरु कुरु स्वाहा "

आ मंत्रे ७ वार मंत्रीने ते देहरामां तथा मंडपमां छांटवुं, घरमां पण छांटवुं, अने धूप उखेववो.

बिम्ब प्रवेशोत्सवना प्रथम दिवसे अथवा मुहूर्तना दिवसथी ७।५ दिवस पहेलां शुभ दिवस अने कुंभ चक्र जोई कुंभ-स्थापना करवी.

दहेरामां ज्यां बिम्बस्थापना थवानी छे त्यां बिम्बनी जमणी दिशामां प्रथम ब्रह्मचारी अथवा ब्राह्मणना हाथे ४ कोरां सरावलाओमां जवारा ववरावचा अने सधवा स्त्री पासे त्यां १। सेर व्रीहि (भात)नो स्वस्तिक करावी जवारानां ४ सरावलां स्वस्तिकना ४ खुणाओ तरफ मूकाववां.

माटीनो १ कुंभ न्हानो डाघ विनानो अने सारा घाटवालो लेई धोइ धूपी तेने कांठे गेवासूत्र मींढल तथा मरोडाफलीवाळुं बांधवुं. वडानी अंदर चन्दननो साथियो करी तेमां रूपानाणुं तथा माणिक १ मोती २ प्रवालां ३ सोनुं ४ त्रांबु ५, आ पांच रत्नोनी पोटली मूकवी, पछी उत्तम सधवा स्त्री पासे अबोट जलनी अखंड धारा वडे भराववो, पीला अथवा नीलां वस्त्रे कुंभ ढांकवो, कंठमां फूलमाला पहेराववी, मुख उपर श्रीफल स्थापवुं, अने

" ॐ ह्रूँ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा "

ए मंत्र सात ७ वार बोलीने स्थिर श्वासे कुंभने स्वस्तिक उपर स्थापवो

कुंभ १ स्थापनीय बिम्ब ज्या होय त्या मण्डपमा पण एज विधिथी स्थापवो.

कुंभस्थापनाना स्थले अखण्ड दीवो राखवो, त्रिकाल धूप करवो

जवाराना स्थानके बिलाडी आदि हिंसक जीव जवा देवा नहिं, रजस्वला प्रमुख मलिन स्त्रीनी दृष्टि पडवा देवी नहिं, कुंभनी आगल सधवा स्त्री पासे गहुली कराववी, उभय टंक धवल मंगल गीत गवराववा, गीत गानारिओने प्रभावना आपवी.

उत्सव दर्मियान मण्डपमा के मंदिरमा नरकादि दुःख गर्भित आलोचनाना स्तवनो, सज्झायो, राजीमती आदिना विला-पमय गीतो, जिन तथा मुनिओना उपसर्ग गर्भित स्तवन-सज्झायो, अशरण अनित्य भावनाना गीतो तथा पदो गाववा नहि.

स्थापनीय बिम्ब ज्या होय ते स्थले १० दिवस पर्यन्त स्नात्रपूजा भणाववी, स्नात्रिया ४ पुरुष सर्वक्रिया मंत्रशुद्ध करीने स्नात्र भणावे, ते मंत्रो नीचे प्रमाणे छे.

१-स्नानजलाभिमन्त्रण मंत्र—" ॐ ह्रीं अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृत स्रावय स्रावय स्वाहा " ७।

२-दातण-अभिमंत्रण मंत्र—ॐ ह्रीं यक्षसेनाधिपतये नमः ७।

३-मुखप्रक्षालन मंत्र—ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं कामदेवाधिपते मम ऽभीप्सितं पूरय पूरय स्वाहा। ७।

४-स्नान मंत्र—"ॐ ह्रीं अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पा पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा" ७।

५–वस्त्राभिमंत्रण-मंत्र—"ॐ ह्रूँ आँ क्रौ अर्हते नमः" ७।

६–तिलक मंत्र—"ॐ आँ ह्रूँ क्लौ अर्हते नमः" ७।

७–रक्षासूत्राभिमंत्रण मंत्र—"ॐ ह्रूँ अवनर अवतर सोमे सोमे कुरु कुरु वग्गु वग्गु निवग्गु निवग्गु सुमणे सोमणसे महुमहुरे ॐ कविल ॐ कः क्षः स्वाहा" ७।

८–भूमिशोधन मंत्र—"ॐ ह्रूँ अर्हं भूर्भुवः स्वाधाय स्वाहा" ७।

९–स्नपनीय जलाभिमंत्रण-मंत्र—

क्षीरोदधे स्वयंभूश्च, सरः पद्ममहाह्रदः । शीते ! शीतोदके ! कुण्ड !, जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥१॥

गंगे च यमुने चैव, गोदावरि सरस्वति । कावेरि नर्मदे सिन्धो, जलेऽस्मिन् संनिधिं कुरु ॥२॥

"ॐ ह्रूँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा" ७।

१ मंत्रे न्हावानुं जल मंत्रवुं, २ मंत्रे दातण मंत्रवुं, ३ मंत्रे मुख धोवुं, ४ मंत्रे स्नान करवुं, ५ मंत्रे वस्त्र मंत्रीने पहेरवुं, ६ मंत्रे स्नात्रकारोए ललाटे तिलक करवुं, ७ मंत्रे गेवासूत्र मींढल मरोडाफली मंत्रीने बांधवी, ८ मंत्रे पुष्पवास भूमि उपर आछोटी भूमिशोधन करवुं, अने ९ मा मंत्रे स्नात्रजल मंत्रीने वापरवुं, दरेक मंत्र ७–७ वार बोलीने ते ते कार्य करवुं.

स्नात्र पछी अष्टप्रकारी पूजा करवी, तेमां पण नीचेनो मंत्र बोलीने प्रत्येक द्रव्य चढाववुं:—

"ॐ ह्रूँ श्रीपरमपरमात्मने अनन्ताऽनन्तज्ञानशक्तये जन्मजरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं यजामहे स्वाहा"

आ मंत्र बोलीने जलकलशेए अभिषेक करवो, ए ज मंत्रे चन्दनं, पुष्पाणि, अक्षतान्, दीपं, धूप, नैवेद्य, फल,
ए शब्दो 'जलं'ना स्थाने जोडीने 'यजामहे स्वाहा' आ प्रमाणे सपूर्ण मंत्र गोली बोलीने ते द्रव्यो चढावना, १० दिवस सुधी उप-
रनी विधिए स्नात्र करवा पूर्वक पूजा करवी दश दिवस क्रोध न करवो, कोई साथे लढवु नहिं, अपशब्द बोलवो नहिं, बारणे,
आवेल याचक, भिक्षुक आदिने यथाशक्ति संतोषवा, पण निराश करवा नहि

मुहूर्तने ३ दिन रहे त्यारे विशेष धूप करवो, रात्रि जागरण करवु रात्रि १ पहोर जाता देहराना रंगमडपमा नैवेद्य मूकवा,
प्रभु बेठा पछी पण ३ दिवस सुधी ते ज प्रमाणे नैवेद्य मूकवा, तेनी विधि नीचे प्रमाणे छेः- प्रथम धान सोनरावी झटकावीने
राख्या होय तेमाथी चार मावितरवाली स्त्री स्नान करी शुद्ध वस्त्र पहेरीने राधे, कोरा सरावलाओमा भरीने मूके, प्रतिदिन
सरावला नवा लेवा. प्रतिष्ठा पहेला ७, पछी ३, दिवस एवं ५ दिवस नैवेद्य मूकवु

लापसी १ पुडला २ भात ३ करबो ४ दहि ५ खीर ६ खाड ७ वडा ८ ककु ९ हलदर १० पानना बीडां ११ सोपारी
१२ चवलाना वाकला १३ मुगना वाकला १४ चणाना वाकला १५ आ १५ चीजो तैयार करावीने एक एक चीज एक एक
कोरा माटीना पात्रमा राखवी, १ कोरा पात्रमा अखोट जल भरवु, आटाना कोडियां करी १-१ पात्रमां १-१ कोडीयु मूकवु
प्रत्येक कोडीयामा ४-४ दीवेट मूकीने घी पूरी दीवा करवा, पछी एक एक पात्र हाथमा लेईने—

"ॐ ग्रहाश्चन्द्र सूर्यांगारक बुध बृहस्पति शुक्र शनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोम यम वरुण
कुबेरवासवादित्यस्कन्दविनायकोपेताः, ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवतादयस्ते सर्वे प्रीयतां प्रीयतां स्वाहा"

ए मंत्र बोलीने पात्र मूकवुं, जमीन उपर जल छांटीने जलपात्र मूकवुं, अने धूप उखेववो, कंकु तथा हलदरनुं पाणी करी सोहागण स्त्री पासे अन्दर तथा बहार छंटाववुं, चारे तरफ फूल विखेरवां.

पंचवर्णा गेवासूत्रना २१ तार देवालये वींटवा, उपरथी श्वेत तार वींटवो, द्वारने टोडे अथवा मध्य थांभले वींटीवो.

जो ३ दिन पहेलांथी नैवेद्य मूकवानुं न बने तो १ दिन पहेलां अने एक दिन पछी मूकवुं, मुहूर्तने पहेले दिवसे लापसी १ बाकला २ करंबो ३ पाणी ४ ए चार वस्तु पवित्रपणे करी कोरां ४ सरावलांमां भरी वासक्षेप करी धूपी संध्यासमये घरमां अथवा देहराने आगले पडाले मूकवां, क्रियाकारक पुरुष दरेक पात्र हाथमां लेईने—

"ॐ भवणवइ वाणमंतर-जाइसवासो विमाणवासी य। जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा।"

ए गाथा ३ वार कहीने पात्र उपर अगासीमां मूके, अने धूप उखेवीने नीचे उतरे.

जेने घरे अथवा जे स्थाने स्थापनीय बिम्ब होय त्यां रात्रिजागरण करवुं.

ते ज रात्रिए पहोर १ रात गया पछी देवगृहमध्ये उभो रही अगर उखेववा पूर्वक उपसर्गहरनी अक्षर शुद्ध १ माला गणे.

मध्यरात्रे निर्धूम अंगारे १ पात्र भरी उपर अगासीमां मूकवुं, तेमां दशांग धूप करी घडी १ सुधी—

"सर्वक्षेत्रदेवता मुजने सानुकूल होजो"

आ प्रमाणे कहीने नीचे उतरे.

॥ नवग्रह स्थापनविधि ॥

बिम्ब प्रवेशने दिवसे प्रभाते एक सेवनना पाटला उपर यक्षकर्दमे करी नवग्रह मंडल आलेखी रक्त वस्त्रे ढांकवु, प्रतिखंडे मंडल उपर पान चढाववां, उपर चोखानी ढगली करीने ते उपर नव खण्डे नाणानाणु मूकवु, धूप उखेववो. उपर १ श्रीफल ढोवु, नैवेद्य चढाववुं, मोदक १ खाजु २, इत्यादि नैवेद्य मूकवु, रक्त वस्त्र ओढाडवुं.

ए पछी फूल वास चोखा पाणीनी अंजलि भरीने—

"ॐ आदित्य-सोम-मंगल-बुधगुरुशुक्रा' शनैश्चरो राहुः। केतुप्रमुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु स्वाहा ॥"

ए मंत्र ३ वार भणी फूल प्रमुखे करी ग्रहमंडलने वधाववु, अने पाटलो जिनपीठथी जमणी बाजुमां स्थापन करवो.

॥ दशदिक्पाल स्थापनविधि ॥

बीजे सिंहनने पाटले यक्षकर्दमना रसे अघाडानी लेखण वडे दशदिक्पालोना नाम मंत्र आलेखवा. उपर पीत वस्त्र ढांकवु, १० मण्डले पान मूकी चोखानी ढगली करी उजली सोपारी अने नाणानाणु चढावी धूप करवो, ए पछी फूल, वास, चोखा पाणीनी पसली भरीने—

"ॐ इन्द्राग्नियम-नैर्ऋतवरुणाः समीरणकुवेराः। ईशानब्रह्मनागा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु स्वाहा ॥"

आ पाठ ३ वार बोली दिशापालोने फूलवासादिकथी वधाववा अने ए पाटलो पीठथी डाबी तरफ स्थापन करवो, पछी ग्रह दिक्पालोनी मध्यमां उभा रही हाथ जोडीने—

"ॐ इन्द्रादयो दिक्पाला आदित्यादयो ग्रहाश्च स्वस्व दिशि स्थिता विघ्नप्रशान्तिकरा भवन्तु स्वाहा।"

आ प्रमाणे प्रार्थना करवी.—

प्रवेशने दिवसे उपर प्रमाणे प्रथम ग्रह दिक्पालोनी स्थापना करी पछी स्थापनीय जिनबिम्बने लेवा जवुं.

॥ स्थापनीय बिम्ब लेवा जवानी विधि ॥

मुहूर्तना दिवसे प्रभात समये चतुर्विध संघ साथे नीचे मुजब तैयारी करी मंडपमां बिम्ब लेवा जवुं.

उत्तम ब्रह्मचारी पुरुष मंत्र पूर्वक स्नान करी, नवां वस्त्राभूषण पहेरी, श्रीजिनचैत्यथी अंग अवयवे अखंडित पंचतीर्थी प्रतिमा आणीने १ थालमां केसर चन्दनथी साथियो करी पाली १ सेर २. अखंडित अक्षतनो साथियो करी उपर ७ सोपारी मूकी उपर रूपानाणुं मूकी ते थालमां पंचतीर्थी पधरावी, बीजा १ थालमां अखियाणु (प्राभृत-भेटणुं) ५ सेर अक्षत अने रूपानाणुं मूकी, ते थाली लई एक जण जिनबिम्ब आगल उभो रहे, त्रीजा थालमां ४ हांसनो अने ४ वाटनो माणेकदीवो घीए भरी अंदर रूपानाणुं मूकीने प्रकटावी राखवो, ते थाल जिनबिम्ब आगल जमणी तरफ एक जण लइ उभो रहे, चोथा थालमां अक्षत-चोखा वडे अष्टमंगलिक आलेखी वास पुष्पे पूजी ते थाल लइ एक जण जिनबिम्ब संमुख उभो रहे, पांचमा थालमां २ वस्तो केसरनो नन्द्यावर्त करीने मूकवां. अने ते थाल लेइ एक जण जिनबिम्बनी आगल उभो रहे.

न्हाना २ घडा पवित्र लेई तेमां अखंड चोखा सेर १। तथा सोपारी ७ मूकी उपर नीलो तथा पीलो तास्तो अथवा कसुंबीवस्त्र ढांकवुं, कांठे मेवासूत्र बांधवुं. फूलमाला पहेरावबी, उपर श्रीफल मूकवुं. पछी ते गाडवा सोहागण पुत्रवती बे स्त्रियो सोल

शणगारे शोभती माथे उपाडीने श्रीजिनविम्बनी डाबी–जमणी तरफ उभी रहे, ते वखते श्रीसंघने तबोल आपे, अर्थात् श्रीफल मिठाईना पडा प्रमुखनी प्रभावना यथाशक्ति आपे

पछी पचशब्द वाजित्र नगारानोबत वाजते गाजते आगल चतुर्विध संघ खेला प्रमुख नाचते अनेक हाथी, घोडा मानेला चालते, याचक बिरुदावली बोलते, पाछल सुहासण स्त्रियोनो समुदाय अनेक धवलगीत गावते ऋद्धि विस्तार सहित याचक जनने दान देता घेरथी निकली मार्गमा अपशब्द क्रूर शब्द के दुर्वचन न बोलता मगल शब्दो बोलता श्री जिनशासननी उन्नति वधारता ज्या स्थापनीय बिम्ब होय ते घरना अथवा मंडपना द्वारे आवे

त्या घरधणी सोहासण स्त्री पासे श्रीफल तथा अखिआणा ढोनरावे, सोना रुपाना पुष्पोए मोतीए अने अक्षते वधावरावे, जिन बिम्बने लूंछणा करी याचकने दान आपे, जिनबिम्बने नमस्कार करे पछी सगमहित घरमा या माडवामां आवे, स्थापनीय बिम्ब-वाला स्थानना द्वारे कुकुना हाथा दीये, स्थापनीय बिम्बने आगे सेर पान नोखानो साथियो करी उपर सोपारी तथा रूपीयो मूके.

पछी सकलसघ त्रण खमासमणा देइ प्रभुने वादे अने त्या स्नात्र भणावे,[१]

बिम्ब लेना आवनार गृहस्थ स्थापनीयबिम्बना धणीने सपरिवार पहेरामणी करे. बिंब धणी पण बिम्ब लेवा आवनार गृहस्थने पाछी विशेष अथवा यथाशक्ति पहेरामणी आपे परस्पर रगरेली कर, सकल सघने तबोल आपे.

ए पछी पूर्वे स्थापेल मंगल कुंभने रेशमी वस्त्र ढाके, उपर सुवर्ण पत्रे जडित श्रीफल मूकी सोहासण स्त्री माथे उपाडी आगल चाले.

---

१ कोई विधिमा स्नात्रने स्थाने ८ स्तुतिओ वडे देववदन करवानु विधान छे

प्रतिमाजी उपाडीने थालमां पधरावे, जे प्रतिमानो धणी त्यारे रहे, उभो धरी थाल हाथे बे करी कुंभक श्वास घरधणी प्रतिमा लेईने अव्या हता तेने जोडे राखे, प्रतिमा आपनार—
"मनोरथ सिद्धफल थजो" आ प्रमाणे आशिष आपे, प्रतिमा ग्राहक—
"ॐ ह्रीँ श्रीँ जोराउलि पार्श्वनाथाय नमः"
एम वार ७ कही सात नोकार गणे, अने चन्द्रस्वरमां डाबा पगनां ४ अने सूर्यस्वरमां जमणा पगनां ३ पगलां भरीने चालवा मांडे.
प्रतिमा घरनी आगल अष्टमंगलिक प्रमुख ४ थालवाला, तेमनी आगे मंगल कलश उपाडनार, तेनी आगल माणिक्य दीप अने धूपधाणुं, तेमनी आगे आरिसो, घंट, झालर, जलपात्र, पुष्पचंगेरी अने कोरा बलिनुं पात्र धरनारा, ए बधानी आगल संघ, तेनी आगल महेन्द्रध्वज अने तेनी आगल पंचशब्द वाजित्र निशानडंको प्रमुख, सर्व ऋद्धिविस्तार चाले, पाछल सोहासण स्त्रियो अनेक धवल मंगल गीत गावतां सर्व हर्ष उल्लाससहित घरधणी चाले, मार्गमां—"ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्ताम्"
ए शब्द उच्चरतां अने कोरा बलि बाकुला उछालतां जइये, बलि उछालतां दश दिक्पालोने बोलावतां जइये, ते आ प्रमाणे—
"ॐ इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा।"
एज प्रमाणे— ॐ अग्नये, ॐ यमाय, ॐ निर्ऋतये, ॐ वरुणाय, ॐ वायवे, ॐ कुबेराय, ॐ ईशानाय, ॐ नागाय, ॐ ब्रह्मणे, आ बधाने बोलाववा, अने बाकला नांखवा, छेल्ले,
" ॐ समस्तक्षेत्रदेवीदेवेभ्यः सायुधेभ्यः सवाहनेभ्यः सपरिकरेभ्यः श्रीजिनबिंबप्रवेशमहोत्सवविघ्नौ

आगच्छन्तु २ स्वाहा ।" आम बोलीने कोरो बलि उछालवो,

कोरा बलिमा घउं १ चणा २ जुवार ३ मग ४ चवला ५ जव ६ अने अडद अथवा मसूर ७ लेवा, तेमां द्राक्ष, अखरोट. टोपराना न्हाना खंड नाखी उछालवा, पाणीना छांटा देता जवुं, वच्चे वच्चे जिनबिम्ब उपर लूछणुं करी याचकने आपवा, एम महामहोत्सव पूर्वक घर नजीक आवे, त्यारे बे अथवा चार सधवा स्त्रियो अथवा कुमारिकाओ पूर्ण कलश भरी सामे आवे, त्यारे प्रधान पुरुष आगलथी आवीने कंकुना छांटा नाखे अने द्वारे तोरण बांधे, पछी घरनो स्वामी श्रीफल तथा आखियाणां थालमा लेइ प्रतिमा सन्मुख आवी आखियाणा ढोइ प्रतिमाने नमस्कार करे, अने मार्गमा आशातना थइ होय ते निमित्ते " मिच्छामि दुक्कडं " देइ शेष रहेला बलि बाकुल सर्व उछाले

पछी घरधणी " स्वामी पधारो " एम कहीने जलनो आभूखो दे, अर्थात् मार्गनी जमीन उपर जलनी धार दे, त्यारे प्रतिमाधर तोरण नजीक आवे, ते वखते सधवा स्त्री घाटडी (चुंदडी) ओढीने हर्षभेर रुपाना पुंखणा वडे पोंखे, बाजोठी १ सरीओ २ ईढीपीढी ३ करवडो ४ घुसरी ५ त्राक ६ कंकुनी वाटकी ७ मुसल ८ रवाइओ ९ ए सर्व नवा कराववा जोइये. न होय तो नकरो मूकाववो, पान फूल प्रमुख पुंखणानो सामान लेइने पोंखे, पोंखवानो चढावो करी देवद्रव्यनी वृद्धि करवी, पण पोंखनार स्त्री निर्दोष होवी जोइये, पोंखवानी रीति थया पछी प्रतिमाधर पग नीचे सपुट चांपीने घरमा आवे.

जो मुहूर्तने वार होय तो भगवानने बाजोठ उपर बेसारे, अने मुहूर्तनो समय नजीक आवता प्रतिमा लेई मंडपमा उभो रहे त्यां चीलव चन्दनना छांटा देवा.

जे पीठ स्थानके प्रभु स्थापवा होय ते स्थानके फरता चक्रनी माटी, वृषभशृंगथी उखडेल माटी, गजदन्तथी उखडेलमाटी, समूलो डाभ, श्वेत सर्षप, दूर्वा, जव, अखंड चोखा, तथा व्रीहि ए ८ आठ वानां मूकवा, ते वच्चे चोखंडो रुपियो मूकी उपर त्रांबानो पतरो मूकवो, पतरा उपर चन्दन, केसर, कस्तुरी, बरास, अंबर, अगर, मिरच, कंकोल, सुवर्णरज, आ पदार्थोथी बनेल यक्षकर्दम सोनाना अथवा तो रुपाना कचोलामां घाली ते वडे दक्षिणावर्त्त स्वस्तिक करवो, अने तेनी ४ पांखडीये कूर्ममंत्र लखवो. मंत्र कुंभक श्वास करीने लखवो.

ते पछी गुरु उभा उभा— " ॐ ह्रूँ क्ष्वीं सर्वोपद्रवाद्बिम्बं रक्ष रक्ष स्वाहा ।"

आ मंत्र बोली कपूरादि मिश्रित सुगंधी केसर चंदनना छांटा प्रत्येक दिशामां नाखीने दिग्बन्ध करे, मुहूर्तनो समय निकट आवतां स्वरोदय साधी— " ॐ ह्रूँ जीराउलि पार्श्वनाथाय नमः "

आ मंत्र वार ७ अने नमस्कार मंत्र वार ७ गणवो, पछी— " ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां "

ए शब्दो मुखे उच्चरीने नीचेनो मंत्र भणवो, — " ॐ कूर्म निजपृष्ठे जिनबिम्बं धारय धारय स्वाहा "

उक्त कूर्ममंत्र बोली श्वास कुंभक करीने श्रीजिनबिंबने मूल स्थाने स्थापे, साथे लावेल मंगलकुंभ प्रभुने जमणे पासे थापवो. १०८ तांतणांनी दीवट करी दीपपात्र संपूर्ण गोघृते भरीने तेमां चोखंडो रुपियो मूकी ते दीपक माणेक दीवावडे प्रगटाववो, अने मंगलकुंभनी पासे जिनबिम्बने आगे थको मूकवो. ए दीवो २४ पहोर सुधी अखण्ड राखवो जोइये, सचित्र चार गाडुआ बिम्बनी आगे मूकवा, प्रतिमा आगल अखंड एक लाख चोखानो स्वस्तिक करवो.

पछी खमासमण देइ प्रणाम करी देहरासरना बनावनार कडिया, शिलावट, सुथार प्रमुखने रीझदान देइ सतुष्ट करवा.

उत्तम स्त्रिये पवित्रपणे तैयार करेल खीर १, लापसी २, मालपुडा ३, मोलापुडला ४, वडा ५, भात ६, करबो ७, अने नाकला –चणा मग चोला उडद घउ जुवार जवना सर्व थइने २१ सेर तैयार करावी, एक मोटी कथरोटमां लेइ तेने आखलिया (माचो) उपर थापे, सर्व एकत्र करी तेमा सवासेर गोघृत रेडवु, सवासेर बुरो खांडनो नाखवो, श्वेत तथा लाल कणेरना तथा बीजा पच-वर्णी पुष्पो तेमा नाखी वामनी मुट्ठि भरी ३ वार भूत बलि मंत्रे मंत्रीने वासनिक्षेप करवो

॥ भूतबलि मंत्र नीचे प्रमाणे छे ॥

"ॐ नमो अरिहन्ताण, ॐ नमो सिद्धाण, ॐ नमो आयरियाण, ॐ नमो उवज्झायाण, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीण, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं, जे इमे किंनरकिंपुरिसमहोरगगरुल-सिद्धगंधव्वजक्खरक्खसपिसायभूयपेयसाइणीडाइणीपभिइओ जिणघरनिवासिणो नियनियनिलयट्ठिया पवियारिणो, सनिहिआ असनिहिआ य ते सव्वे इम विलेवणधूपपुप्फफलपईवसणाह बलिं पडिच्छन्ता तुट्ठिकरा भवन्तु, पुट्ठिकरा भवतु, सिवकरा भवतु, सतिकरा भवतु, सुत्थं जण कुणंतु, सव्वजिणाण सन्निहाणप्पभावओ पसन्नभावत्तणेण सव्वत्थ रक्ख कुणतु, सव्वत्थ दुरियाणि नासेंतु, सव्वासिवमुवसमेंतु, सति तुट्ठि पुट्ठि सिवसुत्थयण कारिणो भवतु स्वाहा"

ते बलि बाकुलमाथी अर्धा बीजा भाजनमा लेइ मांची उपर मूकी ढाकी राखवा

अर्घ बलि लेइने ते घर अथवा चैत्यने आगले भागे जिन पीठथी उच्च स्थानके स्नात्रिया १२ दाग रहित लांछन रहित होय ते पैकी वेणिवन्त श्रावक मुक्तकेश करीने बलिबाकुलनी पसली भरी पूर्वदिशा संमुख उभो रहे. बीजो केसर, त्रीजो फूल, चोथो थाली वेलण, पांचमो धूप, छट्ठो दीपक, सातमो आठमो बे चामर, नवमो घंट, दशमो जल कलशियो अने अग्यारमो आरीसो लेइने उभो रहे, बलि भाजनथी आरीसा पर्यन्त सर्व चीजो लेइने प्रत्येक उभा रहे त्यां बलिबाकुलवालो प्रत्येक दिशा-संमुख उभो रही ते ते दिशापालनुं आह्वान करे, बीजा तेनी पाछल बोले. प्रथम पूर्वदिशामां इन्द्रनुं आह्वान करे.

"ॐ नम इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा"

आह्वान मंत्र बोली बलिबाकुलानी पसली ते दिशामां उछाले, आह्वाननो पाठ बोलती वेला वाजित्रो बंध कराव्यां होय ते बलि नाखती वखते वगाडवां, पछी अग्नि खूणा संमुख—

"ॐ नमोऽग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा"

दक्षिण दिशा सामे—**"ॐ नमो यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिंबप्रवेश-महोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा"**

नैर्ऋतकोण सन्मुख—**"ॐ नमो निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिंबप्रवेश-**

महोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा "

पश्चिम संमुख—" ॐ नमो वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेश-महोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा "

वायुकोण सामे—" ॐ नमो वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेश महोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा "

उत्तर दिशामा—" ॐ नमो धनदाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेश-महोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा "

ईशानकोण संमुख—" ॐ नम ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेश-महोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा "

ऊर्ध्व दिशामा मुख करी—" ॐ नमो ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्ब-प्रवेशमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा "

पातालदिशा तरफ दृष्टि करी—" ॐ नमो नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिन-बिम्बप्रवेशमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ स्वाहा "

आ प्रमाणे प्रत्येक दिशामां बलि बाकुला नाखवां, जल छांटवु, पुष्प नाखवा, चन्दनना छांटा नाखवा, धूप उखेववो, घट

वगाडवो, थाली वगाडवी.

कोइ विधिमां दिक्पालोने बलि दीधा पछी प्रभु पधराववानुं विधान करेल छे.

पछी मुहपत्ती लेइ ८ थोये देव वांदे, विघ्यन्तरमां संघसहित गुरु देववंदन करे आवुं विधान छे.

पछी आचार्य उपाध्याय अथवा सुविहित गीतार्थ गुरुप्रदत्त वर्धमान विद्यावडे सकलीकरण करी वासनिक्षेप करे. जो तेवो जोग न मले तो नोकार ३ गणी ब्रह्मचारी श्रावक वासक्षेप करे, पछी सुखडी सेर ५ प्रभुनी आगल ढोवी, ए पछी गुरु उभा थइ "सन्तिकरं" तथा "बृहच्छान्ति" स्तोत्र बोले, पछी—

"ॐ बिम्बस्थापकाय गृहाधिपतये सौख्यं कुरु कुरु स्वाहा" आ मन्त्रे कुंकु मंत्रीने तेना वधे छांटा नाखे.

बिम्बस्थापक गृहस्थ "संतिकरं"नी माला गणे, जो तेटलो समय न होय तो सांजे गणे, अथवा सवारे वहेली गणी होय तो पण चाले.

पछी मुहूर्त पहेलां शुभ दिवसे जलयात्रा विधिपूर्वक लावेल १०८ कुवानां पाणीयुक्त करी पंचामृत मेलवी गंगाजलादि तीर्थजल मेलवीने ते वडे स्नात्र करे, विधियुक्त आरति मंगलदीप करीने नैवेद्य मूकवुं, तेमां ५ जातनी सुखडी तथा लापसी, सोपारी १०८, श्रीफल नव ९, उत्तम जातिनां फल संख्याए २४ ढोवां, सिद्धचक्रनी पूजा करवी, श्रीगुरुनी नवे अंगे पूजा करवी, यथाशक्ति संघने पहेरामणी आपवी, ते न बनी शके तो जघन्यपणे ४ जणने वस्त्रथी पंचांग पसाय अने आभरणमुद्रिका (वींटी) प्रमुख आपीने भक्ति साचवे.

पछी गुरु उच्चस्वरे 'अजित शान्तिस्तव' भणे, ते पछी घणा श्रावक श्राविका न्हाही धोई शुद्ध वस्त्र पहेरी जिन पूजे, प्रभु
मुख जोई द्रव्य भेट करे, अहींयां विधि साचवता वणी वेला थई जवाने कारणे मुहूर्त वेलाएज स्थापना पछी मुख जोवणा करे छे

पछी गुरु संघसहित खमासमण देइ इरियावही पडिक्कमीने ८ थोये देववंदन करे, थोय जे भगवान मूलनायक नवा
स्थाप्या होय तेमनी कहेवी, बेसीने नमुत्थुणथी जयवीयराय पर्यन्त कहे, स्तवनने स्थाने म्होटी शान्ति कहेवी.

ते पछी गुरु उभा थइ श्रीक्षेत्रदेवता आराधनार्थं करेमि काउसग्गं अन्नत्थ ऊससिएणं०, लोगस्स १ नो० सागरवर-
गंभीरा सुधीनो काउसग्ग करवो, पारीने नमोऽर्हं० कही,—

" यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

आ स्तुति कही उपर आखो नोकार कहेवो.

पछी भवनदेवयाए करेमि काउसग्गं अन्नत्थ०, लोगस्स १ नो काउसग्ग सागरवरगंभीरा सुधीनो पारीने नमोऽर्हं०
कही, स्तुतिः—

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम्। विदधातु भवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥२॥

उपर प्रकट नोकार आखो कहेवो

खमासमण देइ इच्छाकारेणं संदिसह क्षुद्रोपद्रव शमावणी काउसग्गं करु इच्छं क्षुद्रोपद्रव शमावणी करेमि काउसग्गं अन्नत्थ०
काउसग्ग १ नोकारनो-विघ्नान्तरमां काउसग्गमां उवसग्गहरं चिंतववो-पारी नमोऽर्हत्० कही स्तुतिः—

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्त्यकरा जिने। क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥३॥

कहेवी, उपर प्रकट नोकार कहेवो, ए पछी—

"उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्वकल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

इम कही नोकार १, उवसग्गहर १, लोगस्स १, फूल गुंथणीए वार ७ कहीने बेसी जवुं, गुरुए बिम्ब स्थापनानो महिमा तेमज चैत्य करावनार श्रावक बारमा देवलोके जाय, इत्यादि उपदेश करवो, अने छेवटे राखेल अर्ध बलिबाकुल वडे देवताओनुं विसर्जन करवुं, ते नीचे प्रमाणे—

(१) ॐ नम इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण, स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

(२) ॐ नमोऽग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

(३) ॐ नमो यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

(४) ॐ नमो निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं

गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा।

(५) ॐ नमो वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा।

(६) ॐ नमो वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा।

(७) ॐ नमो धनदाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा।

(८) ॐ नमो ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा।

(९) ॐ नमो ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थानं गच्छ गच्छ स्वाहा।

(१०) ॐ नमो नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अमुकनगरे श्रीजिनबिम्बप्रवेशमहोत्सवे बलिं गृहाण गृहाण स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा।

उपर प्रमाणे प्रत्येक दिग्पालने नाम पूर्वक बलि आपी विसर्जनी मुद्राए विसर्जन करवु, अने अन्तमा हाथ जोडीने—

इम कहीने नमस्कार करवो ।

देवा देवार्चनार्थं ये, पुराऽऽहूताश्चतुर्विधाः । ते विधायार्हतां पूजां, यान्तुसर्वे यथागतम् ॥१॥

पछी प्रभावना करे, संघसहित गुरुने पोताने घरे तेडीने अन्न वस्त्र पडिलाभे. साधर्मिक वात्सल्य करे, केसरनां छांटणां करे, अने संघने श्रीफल तंबोल देइने विदाय करे.

बिम्ब प्रवेशकारक गृहस्थ संध्या समये अथवा रात्रि समयमां मूलनायकना नामनी नोकारवाली गुणे, दिवस १० पर्यन्त नित्य सांजे सवारे गीत गान करावबुं, गानारिओने तंबोल देवुं, १० दिवस रात्रि जागरण करवुं, तेम न बने तो ३-५-९ में दिवसे तो अवश्य करवुं. १० दिवस सुधी १ आंबेल एकाशन प्रमुख तप करे, पोतानाथी न बने तो घरमां कोई बीजा पासे करावे, नवमे दिवसे कुटुम्ब साथे सर्वने आंबेल करावे, दशमे दिवसे शक्ति होय अने अष्टोत्तरी स्नात्र करावे तो घणुं ज सारुं, दश दिवस सुधी नोकार १०८ तथा उवसग्गहर १०८ वार फूल गुंथणीए गणीये.

दशमे दिवसे संध्या समये अखंड चोखा पाली १ एटले सेर २।, बुरु खांड सेर १, गोघृत शेर १, बधां उत्तम पात्रमां भेलां करीने गुरुनो जोग मले तो गुरु आवे त्यारे, गुरुनो योग न होय तो ब्रह्मचर्यधारक दक्ष श्रावक मंडपमां उभा रहीने पात्र-मांथी घी खांडनी पूरी पसली भरी-" थुणिमो केवलिवत्थं " इत्यादि समवसरणस्तव, " संतिकरं संति जिणं " इत्यादि संतिकर स्तव तथा " भो भो भव्याः " इत्यादि बृहच्छान्ति, आ ३ नो पाठ कहीने मंडपमां वरसावे, आम त्रण वार थइने सर्व वृष्टि करवी. पछी हाथ जोडीने

या पाति शासनं जैनं सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतार्थसिद्धयर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥१॥
आह्वानं नैव जानामि, न जानामि विसर्जनम् । पूजार्चां नैव जानामि, त्वं गतिः परमेश्वरः ॥२॥
आज्ञाहीनं क्रियाहीनं, मन्त्रहीनं च यत्कृतम् । तत्सर्वं क्षम्यतां देव !, प्रसीद परमेश्वर ! ॥३॥

इम कहीने दीवामा घी पूरीने पाछे पगे नमस्कार करतो मुख मंडपथी बहार आवीने जिनगृहनुं द्वार बंध करीने तालुं साचवे, ते द्वार प्रभात लगे कोइए उघाडवुं नहिं, आखी रात जागरण करवु, प्रभाते घरधणी रुपियो अने श्रीफल लेइ देवगृहे जाय अने द्वार उघाडे, श्रीफल तथा रुपियो प्रभुने आगे भेट धरे. वृष्टि करेल चोखा जयणा पूर्वक लेइ उलघाय नहिं तेवे स्थानके परठे, घरे आवी अष्ट प्रकारी पूजा करे अने पोताना कुटुम्बने हर्षे जमण आपी तोलावे.

बीजे वर्षे पाछो ए दिवस आवे त्यारे विशेष पूजा, रात्रि जागरण आदि करे, साधर्मिक भक्ति साचवे

॥ इति श्रीगृहचैत्ये तथा देवगृहे जिन प्रवेशविधिः सपूर्णः[१] ॥

---

१ आ 'गृहचैत्ये तथा देवगृहे बिंबप्रवेश विधि' यति सुज्ञानसागरजीना 'शिष्य' यति कान्तिसागरजीए वि सं १८१५नी सालमा डभोइमा व्यवस्थित करेल 'जिन बिंबप्रवेश विधि' नी सं १९५०मां लखेल प्रत उपरथी मात्र भाषामा परिवर्तन करीने, अमोए लखी छे वर्तमानमा आ विधिनो विशेष प्रचार छे मास्तर पोपटलाले छपावेल 'बिंबप्रवेशविधि' यति कान्तिसागरनो ज सदर्भ छे

॥ जिन विम्बप्रवेश विधि ॥ (२)

(१६ मी शताब्दीमां प्रचलित)

शुक्र, वत्स, योगिनी, काल, पाश प्रमुख संमुख टाली चन्द्रादिवल जोई शुभ मुहूर्ते विम्ब स्थापना करवी.

मुहूर्त पहेलां दिन ३ पवासण उपर कंकुनो साथिओ करवो, चन्दन केसरना छांटा नाखवा, अने उपर चोखानो साथिओ करी ५ सोपारी १ नालियेर मुकवुं, अने सात स्मरण गणवां, बीजे त्रीजे दिवसे साथियो सोपारी बदलवां, पण नालियेर ते ज राखवुं.

मुहूर्त पहेलां ३ दिवस चन्दन-केसर-कपूर प्रमुख कचोले पाणीमां नांखी सोनवाणी करी नोकार तथा उवसग्गहर वडे ७-७ वार मंत्रीने--

श्री जीराउला पार्श्वनाथ ! रक्षां कुरु कुरु स्वाहा । ए मंत्र बोलतां गभारामां तथा वहार सर्वत्र छांटा नांखवा, अने त्रिकाल धूप उखेववो.

आ बधी क्रिया स्नान पूर्वक शुद्ध वस्त्र पहेरीने करवी, शुद्ध धोतिआं पहेरी जे स्थानके स्थाप्य बिंब होय ते स्थानके संघ साथे जवुं, साथे १ थालीमां अख्याणुं नालियेर लेवुं. अने २ बीजी केसर-चन्दननो साथिओ करेली थाली बिंब पधराववा सारुं लेवी, बे पूर्ण कलशो साथे लेवा, ते पैकीना एक कलशमां चोखा, सोपारी, अने बोकडतो रुपियो मूकवो, अने बीजामां लोहनी रक्षा-खीलो प्रमुख मूकवां. कलशोना गलामां नेवासूत्र बांधवुं, अने पुष्पमाला पहेराववी, कलशो उपर एक एक नालियेर मूकवुं, आ प्रमाणे तैयारी करी मंगलगीत अने वाजिंत्रोना शब्दपूर्वक बिंब लेवा जवुं, बिम्ब आगल केसर चन्दननो साथियो करवो,

उपर चोखानो साथियो करी नालियेर सोपारी मूकवी, अने ते पछी त्या सघ सहित देववन्दन करवु. जेना घरे विम्ब होय तेने श्रीफल आपी भगवानने लइ जवानी आज्ञा मागवी, बिम्बना हकदारनी अथवा बिम्ब जेना तावामा होय तेनी आज्ञा मलता बिम्बने थालीमा पधरावी शुभ स्वरोदय जोइ जिनालय तरफ प्रस्थान करवुं. बिम्ब उपर वस्त्रनो पडदो राखवो, आगे वाजिंत्र वागते धवल मगलगीत गवाते श्री सघ सहित बिम्ब लइ जिनभवन तरफ चालवु, मार्गमा बलि बाकुल उछाली दश दिक्पालोने बोलाववा.–

ॐ नम इन्द्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१॥
ॐ नमोऽग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥२॥
ॐ नमो यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥३॥
ॐ नमो निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥४॥
ॐ नमो वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥५॥
ॐ नमो वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥६॥
ॐ नमः कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥७॥
ॐ नम ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥८॥
ॐ नमो नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥९॥

ॐ नमो ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छ आगच्छ स्वाहा ॥१०॥

ॐ नमः सर्वदेवदेवीभ्यः सायुधेभ्यः सवाहनेभ्यः सपरिकरेभ्यः श्रीजिनबिम्बप्रवेशविधौ आगच्छन्तु आगच्छन्तु स्वाहा ॥

आ प्रमाणे आह्वान करी ते ते दिशामां बाकला उछालतां ज्यां बिंबनो प्रवेश करावचो छे, ते जिनभवननी तरफ चालवुं.

बिंब लेइने संघ लगभग अर्ध मार्गे आवे त्यारे ४ सधवा स्त्रियोए जवारा पात्रयुक्त ४ कलशो उपाडीने सामे आववुं, एक स्त्रिए वधाववानो सामान थालीमां लइने साथे आववुं, मार्गमां भगवानने वधाववा, ते पछी बिम्ब लई जिनभवनना द्वारे आववुं, त्यां पुंखवानी विधि करवी, फलादिक आगल धरवां, वलि बाकुला उछालवां, अने ते पछी प्रतिमा सहित द्वारमां प्रवेश करवो.

जे स्थानमां बिम्ब स्थापन करवाना होय त्यां जइ मुहूर्तनी वेला आवे त्यां सुधी उभा उभा "ॐ पुण्याहं पुण्याहं" बोलतां प्रवाल, १ मोती, २ सोनुं, ३ रुपुं, ४ त्रांबुं, ५ समूलदर्भ, ६ सोपारी, ७ चोरवा, ८ चक्रनी माटी, ९ ए सर्वनी पोटली बांधी पवासण उपर खाडामां मूकोने "क्ष्रौं" ए मंत्राक्षरे अभिमंत्रित करवां, उपर रूपानो कूर्म स्थापीने चन्दन, केसर, अगर, कर्पूर-सुवर्णरज आ पदार्थोंना रसे करीने—

ॐ कूर्म निजपृष्ठे जिनबिम्बं धारय धारय स्वाहा ।

ए मंत्र लखवो, अने ते उपर प्रतिष्ठागुरुए वासक्षेप करवो. गुरुना अभावमां तेमणे आपेल वासक्षेप विधिकारे नाखवो.

मुहूर्तना समयमां ७ नोकार गणीने प्रतिमा गादी उपर स्थापित करवी, अने

" ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा "

ए मंत्रनो ७ वार प्रतिमा उपर न्यास करवो—

प्रतिमा स्थापन कर्या पछी पूर्ण कलश आगल मूकवो, लाख चोखानो ढगलो करीने उपर श्रीफल मूकवु, अने ते पछी श्री संघे त्या देववंदन करवुं,

ए पछी प्रतिष्ठा करावनार संघे अथवा गृहस्थे यथाशक्ति तम्बोल आपीने श्रीसंघनी भक्ति करवी [1] इति

॥ श्रीजिनबिम्बगृहप्रवेश–विधि ॥३॥

प्रथम श्रेष्ठ मुहूर्त जोवरावबु, लग्न–शुक्र–योगिनी घरना द्वारने सन्मुख टालीने मुहूर्त लेवु.

जे आलामा, ओरडामा के तैयार करावेल घरमदिरमा प्रतिमा पधरावबी, होय त्यां अखंड कचोलामा सोनवाणी करी—

" ॐ श्रीजीराउलापार्श्वनाथ रक्षां कुरु कुरु स्वाहा "

आ मंत्रे ७ वार मंत्री मुहूर्तथी ३ दिवस पहेलाथी छांटवुं, धूप ठवेवो, अने धवलमंगलगीत गवराववा

मुहूर्तना दिवसे अनेक वाजित्रोना शब्दो साथे मोटा आडम्बर अने उत्सवपूर्वक जिनबिम्ब घरे लावी ४ पुंखणिआओथी पुखावी घरना द्वारमा प्रवेश करावबो, धूप दीवो साथे राखवो, बिम्ब ज्या बिराजमान करवानुं होय ते स्थाने प्रथम चाकनी माटी तथा समूल डाभ भेला करी लीपवा, उपर केसर चन्दननो स्वस्तिक करी, गुरुए आपेल वासक्षेप करवो, अने मुहूर्तना समयमा

1 आ जिनबिंबप्रवेश विधि १६मा सैकामा लखेल प्राचीन पानाओ उपरथी भाषा बदलीने लखी छे

७ नोकार गणीने जिनबिंब पधरावबुं.

बिंब पधराव्या पछी दूध, १ दहि, २ घी ३ साकर, ४ अने सर्वौषधि, ५ आ पांच द्रव्योनुं 'पंचामृत' करी स्नात्र करवुं, आगे विशेष नैवेद्यादि ढोवुं, अने आरति मंगलदीवो करवो.

शक्तिने अनुसारे संघपूजा साधर्मिक-वात्सल्यादि करवां, प्रतिष्ठा पछी १० दिन सुधी सवारे सांजे कपूर कस्तूरी अगर आदिनो सुगन्धी धूप विशेष प्रकारे करवो, केसर-चन्दन पुष्पादि वडे विशेष पूजा करवी, अने १० दिवस पर्यन्त नित्य स्नात्र पूजा भणाववी.

मुहूर्त पहेलाना १० दिवसथी पछीना १० दिवस पर्यन्त घरधणीए ब्रह्मचर्य पालवुं, भूमिशयन करवुं, एकाशन करवुं, अने १० दिवस पर्यन्त घरमां एक एक जणे आयंबिल करवुं, १० दिवस सुधी सवारे सांजे १०८ नवकार अने १०८ उवसग्गहर घरधणीए गणवा. अथवा तो नोकार अने भयहर 'नमिऊण' स्तोत्रनी फूल गुंथणीए माला गणवी, अने जे भगवान पधराव्या होय तेमना नामनो पण १०८ वार जाप करवो. इति बिंब गृहप्रवेशविधि[१]

श्री जिनबिम्ब गृहप्रवेशविधि (४)

पूर्वोक्त बिम्ब प्रवेशविधि बिंबना देवालय प्रवेशनी छे. पण बिम्बनो गृहप्रवेशविधि एथी बहु भिन्न नथी. गृहप्रवेशने अंगे

---

१ सं. १५४२ वर्षे लिखित गुणरत्नसूरिकृत प्रतिष्ठाकल्प अने श्री विशालराजशिष्यकृत प्रतिष्ठाकल्पना आधारे आ (श्री बिंबगृहप्रवेशविधि) उद्धृत करी छे।

ए विधिमा जे नाम मात्रनो फरक छे, ते नीचे आपीये छीये. विधिकारोए ए भेदने लक्ष्यमा राखीने विधि करावबी.

१ जे घरमा जे वर्षे गृहप्रवेश थयो होय ते घरमा ते वर्षे बिम्बप्रवेश थई शकतो नथी, ए ध्यानमा राखीने प्रवेश मुहूर्त लेवु.

२–देवालयना बिम्बप्रवेशमा प्रतिमाने साहमु करवा. वधाववा, पुखवा, स्थापना आदिना कार्यो चढावो बोलीने संघनो आदेश लेनाराओना हाथे कराय छे ज्यारे गृहबिम्बप्रवेशमा ए बधी क्रियाओ घरधणी अथवा तेना परिवारना हाथे करवानी होय छे.

३–देवालयना बिम्ब प्रवेशमा जे आसन उपर प्रतिमा प्रतिष्ठित करवानी होय छे, त्या पचरत्न आदि स्थापन करी उपर कूर्मस्थापवानु विधान कराय छे ज्यारे घरमा प्रतिमा स्थापवानी विधिमा पीठनुं (पबासणनु) पूजन नीचे प्रमाणे करवानुं छे –

मुहूर्तनी वेला आवे त्या सुधी उभा उभा 'ॐ पुण्याहं पुण्याह' इत्यादि बोलता पबासण उपर कङ्कुनो साथियो करी—

ॐ कूर्म निजपृष्ठे जिनबिम्ब धारय धारय स्वाहा।

आ मत्र ७ वार बोलीने आसनना स्थानने अभिमत्रित करवुं ए पछी समूल डाभ साथे मेलवेली कुंभकार चक्रनी माटी आसन उपर लिपवी, ते उपर गुरुदत्त वासक्षेप करवो, अने मुहूर्तनी वेलाए ७ नोकार गणीने ते स्थाने प्रतिमा पधरावबी, अने–

" ॐ जये श्री ह्रीँ सुभद्रे नम. "

ए मंत्रनो प्रतिमा उपर ७ वार न्यास करवो

४–जिनालय होय के घर देहरासर होय पण प्रतिष्ठा करावनार कोई एक व्यक्ति होय तो तेणे १० दिवस सुधी शीलव्रत

पालवुं, आयंबिल अथवा तो एकाशन करवुं, नवकार–उवसग्गहरनी फूल गूंथणीए १ नोकारवाली नित्य गुणवी, अने भूमि शयन करवुं.[१]

आसनयंत्र—

आसनयंत्रनुं विधान पंडित आशाधरना प्रतिष्ठासारोद्धारमां अने आचार्य जिनप्रभसूरिना 'विधिमार्गप्रपा' ग्रन्थना प्रतिष्ठाऽधिकारमां दृष्टिगोचर थाय छे.

पं० आशाधरनुं अने आचार्यजिनप्रभनुं आ यंत्र–विधान थोडाक शाब्दिक फेरफार सिवाय एक ज छे, छतां विधिप्रपामां ए विषयना—

तिर्यगूर्ध्वाग्ररेखाभिर्वज्राग्राभिः समालिखेत् । मण्डलं व्येकपञ्चाशत्कोष्ठकं श्लक्ष्णरेखकम् ॥३॥
अकारादिहकारान्तं, कोष्ठेष्वेकैकमक्षरम् । वायुकोणस्थितात्कोष्ठात्, प्रादक्षिण्येन संलिखेत् ॥४॥
मध्यमे कोष्ठके तत्र, हंकारं सोर्ध्वरेफकम् । जयादिदेवताधिष्ठ–पत्रपञ्चस्य मध्यगम् ॥५॥
वज्राग्रे प्रणवं दद्यात्, कामबीजं तदन्तरे । त्रिर्मायामात्रयावेष्ट्य, निरुन्ध्यादंकुशेन तु ॥६॥

आ ४ श्लोको या तो रही गया छे अथवा तो जाणीने छोडी देवामां आव्या छे, गमे तेम होय पण एटलुं तो निश्चित छे के विधिप्रपागतविधान खंडित अवश्य छे.

१ आ गृहबिम्बप्रवेशविधि लगभग १६ मा सैकाना उत्तरार्द्धमां लखेल एक प्राचीन पत्रना आधारे लखी छे.

रेखाओना वज्रो आगे 'ॐ' अने बे ॐ वच्चे कामबीज (क्लीं) लखवुं, मंडलना मध्यभागे उपर 'ह्रीं' कार लखी तेनी मात्रा (ई) वडे यत्रने ३ वार वींटवुं, अने मात्रा पूरी थाय त्यां 'क्रौं' लखीने यत्रने संपूर्ण करवु.

उक्त रीतिए यंत्र पत्रा उपर लखीने दूध तथा जल वडे पखालवुं, सुगन्धि द्रव्योए मिश्रित चंदन वडे विलेपन करवु, उत्तम-पुष्प, अक्षत, नैवेद्य, दीप, धूप, फलोथी तेने पूजवु, अने मातृका वर्णात्मक निम्नोक्त मालामन्त्रनो १०८ पुष्पो उपर जाप करीने पुष्पो यत्र उपर चढाववा. मातृकावर्णमंत्र आ प्रमाणे छे—

"ॐ नमोऽर्हं अआ इई उऊ ऋॠ ऌॡ एऐ ओऔ अंअः कखगघङ चछजझञ टठडढण तथदधन पफबभम यरलव शषसह ह्रीं क्लीं क्रौं स्वाहा।"

पत्राना मध्यकोष्ठकमां कमल छे, तेवो ज कमल पीठ उपर पण सुगंधि द्रव्योना रसथी लखवो, उपर कपूर केसर वगेरे छांटवा, पारो तथा पंचरत्न ते उपर स्थापीने पूर्वोक्त पत्रुं त्यां स्थापवुं, ते पछी शुभ लग्न नवमांशकमां ते आसन उपर प्रतिमा प्रतिष्ठित करवी, अने तेमां पृथ्वी तत्त्वनु चिन्तन करवुं, एवो आम्नाय छे.

आसनयंत्र २

वीजुं आसनयंत्र जिनप्रभीय प्रतिष्ठाविधिमां छे. आ यंत्रनी निर्माणरीतिना संबन्धमां आचार्ये कंइ वर्णन के व्यवस्थानो उल्लेख कर्यो नथी, पण एनी स्थापनाना संबन्धमां नीचेना शब्दोमां व्यवस्था आपी छे—

" इदं यंत्रं ताम्रपत्रे उत्कीर्य देवगृहे मूलनायकबिम्बस्याधो निधापयेत्। बिम्बस्य सकलीकरणं शान्तिं पुष्टिं च करोति। यस्याधरतनविभागे मूलनायकस्य क्षिप्यते तस्य नाम मध्ये दीयते, मूलनायकस्य यक्ष–यक्षिण्यौ च लिख्येते। अत्र तु श्रीपार्श्वनाथ-तद्यक्षयक्षिणीनां नामन्यासो निदर्शनमात्रमिति।" अर्थात्–' आ यंत्र त्रांबाना पत्रामां खोदावीने देवालयमां मूलनायक प्रतिमाना आसन नीचे राखवुं, आ यंत्र बिम्बमां कला (अतिशय, प्रभाव) उत्पन्न करे छे, अने शान्ति तथा पुष्टि करे छे.

जे मूलनायक नीचे यंत्र राखवुं तेनुं तेना मध्यभागमां नाम लखवुं, अने मूलनायकना यक्ष-यक्षिणीनो पण तेमां आलेख करवो अथवा तेमनां नाम लखवां.

आ यंत्रमां पार्श्वनाथ धरणेन्द्र पद्मावतीनां नामो दृष्टान्तरूप समजवानां छे.

आचार्य जिनप्रभसूरि कहे छे.

" ॐ ह्रीँ अां श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा।"

आ मंत्रे प्रथम उपवास पूर्वक १०००० जाइनां पुष्पो जपीने यंत्र उपर चढाववां, पछी यंत्र पीठ उपर स्थापन करवुं.

यंत्रमां जेम मूलनायकनुं नाम लखवानुं छे, ते ज प्रमाणे जापमां पण मूलनायकनुं ज नाम बोलवानुं छे. ए वस्तु अर्थतः सिद्ध छे, अहीयां जप्यमंत्रमां लखेल ' पार्श्वनाथ ' ए नाम दृष्टान्त मात्र समजवुं.

विधिप्रपानी अमारी हस्तलिखित प्रतिमा आपेल २ यंत्रको पैकीनु १ लु यत्र आशाधरनी निर्माण विधिथी बनावेल छे, ज्यारे २ जु यत्र स्वतंत्र छे, आनी रचना साथे आशाधरना तेम ज जिनप्रभसूरिना श्लोकोनो कशो मेल मलतो नथी बीजा यंत्रना संबन्धमा जिनप्रभसूरिए थोडाक शब्दोमां विवेचन कर्युं छे, जेनो उल्लेख योग्य स्थाने करवामां आवशे

प्रथम अमो उक्त बने ग्रन्थकारोए आपेल श्लोको उपरथी १ ला यंत्रना निर्माणनुं विवेचन करीशु

आसनयन्त्र १—

निश्चल स्थाने स्थापेल सपूर्ण लाक्षणिक पीठ उपर प्रतिष्ठित करवा माटे प्रतिमाने तेनी पासे लावीने राखी मूको.

पीठे स्थापवा माटे सोनानुं, रूपानु, त्रांबानु, अथवा पाषाणनु एक चोरस पत्रु बनावो, पत्रु सुन्दर जाडुं अने चीकणुं बनावी तेमा आडी उभी ८–८ रेखाओ (लीटीओ) खेंचाववी, रेखाओ अग्रभागे वज्राकारे करवी, आम ८–८ रेखाओना सयोगथी पत्रामा ४९ कोष्टकनुं मडल बनशे (४ थी ५ मी रेखाओ वच्चेनु अतर अपेक्षाकृत वधारे राखवुं के जेथी मध्यकोष्ठक म्होटु बने अने तेमा अष्टदल कमल बनावी शकाय)

आ मडलना वायुकोण (ईशानकोण)ना कोष्ठकथी आरभ करी सृष्टिक्रमे १–१ कोष्टकमा १–१ अक्षर लखी छेल्ले मध्यकोष्ठकमा अष्टपत्रकमल बनाववुं, अने तेनी कर्णिकामा रेफ सहित 'ह' कार अर्थात् 'र्ह' लखवो, आने फरता पूर्वादि दिशागत कमलपत्रोमा जया १ जंभा २ विजया ३ जभिनी ४ अजिता ५ मोहा ६ अपराजिता ७ मोहिनी ८ ए आठ देवीओनो आलेख करवो वा नामो लखवा

रेखाओना वज्रो आगे 'ॐ' अने बे ॐ वच्चे कामबीज (क्लीँ) लखवुं, मंडलना मध्यभागे उपर 'ह्रीँ' कार लखी तेनी मात्रा (ई) वडे यंत्रने ३ वार वींटवुं, अने मात्रा पूरी थाय त्यां 'क्रौँ' लखीने यंत्रने संपूर्ण करवुं.

उक्त रीतिए यंत्र पत्रा उपर लखीने दूध तथा जल वडे पखालवुं, सुगन्धि द्रव्योए मिश्रित चंदन वडे विलेपन करवुं, उत्तम-पुष्प, अक्षत, नैवेद्य, दीप, धूप, फलोथी तेने पूजवुं, अने मातृका वर्णात्मक निम्नोक्त मालामंत्रनो १०८ पुष्पो उपर जाप करीने पुष्पो यंत्र उपर चढाववां. मातृकावर्णमंत्र आ प्रमाणे छे—

"ॐ नमोऽर्हं अआ इई उऊ ऋॠ लृॡ एऐ ओऔ अंअः कखगघङ चछजझञ टठडढण तथदधन पफबभम यरलव शषसह ह्रीँ क्लीँक्रौँ स्वाहा।"

पत्राना मध्यकोष्ठकमां कमल छे, तेवो ज कमल पीठ उपर पण सुगंधि द्रव्योना रसथी लखवो, उपर कपूर केसर वगेरे छांटवां, पारो तथा पंचरत्न ते उपर स्थापीने पूर्वोक्त पत्रुं त्यां स्थापवुं, ते पछी शुभ लग्न नवमांशकमां ते आसन उपर प्रतिमा प्रतिष्ठित करवी, अने तेमां पृथ्वी तत्त्वनुं चिन्तन करवुं, एवो आम्नाय छे.

२. दिक्पाल पूजा कोष्टक—

१० दिक्पाल	इन्द्र	अग्नि	यम	निर्ऋति	वरुण	वायु	कुबेर	ईशान	नाग	ब्रह्मा
आलेखन द्रव्य	गोरोचन	रक्त चन्दन	अगर-कस्तूरी	अगर कस्तूरी	अगर-कस्तूरी	चन्दन केसर कस्तूरी	चन्दन बरास	चदन	चदन	चदन कर्पूर
पूजन द्रव्य	केसर वास	केसर	केसर	अगर चन्दन	अगर चन्दन	वास-चूर्ण	चन्दन-बरास	चदन	चदन	चन्दन
फूल	सोवन चपो	जासुल	दमणो मरुओ	मालती मरुओ	दमणो-मरुओ	चपक दमणो	जाइ	कुमुद या जाइ	मोगरो चपो	सेवन्ती-जाइ
फल	जवीरी	राती सोपारी	काली सोपारी	दाडिम	दाडिम	नारंगी	बिजोरु	शेलडी	बादाम-उजली	बिजोरु
वस्त्र	पीलु	[1] रातु	कालु	श्याम-उदोरग	[2]आस्मानी	[3] नीलु	श्वेत	श्वेत	श्वेत	श्वेत
नैवेद्य	मोतियो लाडु	चूरमानो लाडु	अडदनो लाडु	तिलनो लाडु	तिलनो लाडु	मगनो लाडु	घीसीदल मगदनो	घीसी-वृक्ष	पैंडा	घेवर
द्रव्यादि	अक्षत-पानादि	अक्षत-पानादि	अक्षत-पानादि	अक्षत-पानादि	अक्षत-पानादि	अक्षत पानादि	अक्षत-पानादि	अक्षत-पानादि	अक्षत पानादि	अक्षत-पान

टीप्पणी— १ ग्रन्थांतरे नील २ ग्रन्थान्तरे पीत ३ ग्रन्थांतरे रक्त

दिक्पालो पछी बीजा ९ खानावाला शुद्ध पाटला उपर नवग्रहोनी पूजा करवी, सूर्य १, चन्द्र २, मंगल ३, बुध ४, गुरु ५, शुक्र ६, शनि ७, राहु ८, अने केतु ९; ए नव ग्रहोने पोतपोताना दिग्विभागमां पोतपोताना मंडलो सहित वर्णानुसारे आलेखवा.

सूर्यादि ग्रहोनी स्वदिशाओ अनुक्रमे मध्या १, आग्नेयी २, दक्षिणा ३, ऐशानी ४, उत्तरा ५, पूर्वा ६, पश्चिमा ७, नैर्ऋति ८, अने वायवी ९ जाणवी.

सूर्यादि ग्रहोना मंडलो अनुक्रमे गोल १, चोरस २, त्रिकोण ३, बाणसमान ४, चोरस ५, षट्कोण ६, धनुष्याकृति ७, शूर्पसदृश ८, अने ध्वजाकार ९, होय छे. ग्रहोना पूजन पूर्वे, पाटला उपर स्वस्वदिशा विभागमां मंडलो आलेखीने पछी पूजानो प्रारंभ करवो.

सूर्यादि ग्रहोनो वर्ण अनुक्रमे रक्त १, श्वेत २, लाल ३, नीलो ४, पीलो ५, धोलो ६, कालो ७, श्याम ८, अने धूम्रवर्ण ९ जाणवो, ग्रहोना वर्ण जेवा वर्णनां वस्त्रो, तेमना प्रिय रसवालां फलो अने विचित्र नैवेद्यो वडे पूजायेला ग्रहो शुभ फलदायक थाय छे.

पूजा पूरी थया पछी "ग्रहशान्ति स्तोत्र"नो पाठ करी दिक्पालोनो पाटलो जिनप्रतिमाना डाबा अंगनी दिशामां अने ग्रहोनो पाटलो जमणा अंगनी दिशामां मूकवो.

दिक्पालपूजाविधि

वर्तुलं चतुरस्रं च, त्रिकोणं वाणसंनिभम् । चतुरस्रं च षट्कोणं, चापाभं शूर्पकाकृति ॥५७॥
ध्वजाभं मण्डलान्याहुः, सूर्यादीनामनुक्रमात् । मण्डलानि समालिख्या-ऽऽरब्धव्यं खेटपूजनम् ॥५८॥
रक्त· श्वेतो लोहिताभो, हरितः पीतवर्णभाग् । श्वेतः कृष्णौ च धूमाभः, खेटवर्णाः क्रमादिमे ॥५९॥
वर्णसदृशवस्त्रेण, प्रियरसफलेन च । नैवेद्येन विचित्रेण, पूजितः शुभदो ग्रहः ॥६०॥
पूजान्ते ग्रहशान्त्याह्व-स्तोत्रपाठं विधाय च । पदकौ द्वौ क्रमात् स्थाप्यौ, जिनाद् वामे च दक्षिणे ॥६१॥

भा०टी०—पूर्वा १, आग्नेयी २, दक्षिणा ३, नैर्ऋति ४, पश्चिमा ५, वायवी ६, उत्तरा ७, ऐशानी ८, अधोदिशा ९, अने ऊर्ध्वदिशा १०, आ १० दिशाओमा अनुक्रमे इन्द्र १, अग्नि २, यम ३, निर्ऋति ४, वरुण ५, वायु ६, कुबेर ७, ईशान ८, नाग ९, अने ब्रह्मा १०, आ दश दिशापालोने स्थापना अने पछी पोतपोताना वर्णानुसारि वर्ण–रसे करी युक्त वस्त्रो अने फलो वडे पूजवा

दश दिशापालोना वर्णो अनुक्रमे पीलो १, रातो २, कालो ३, श्याम ४, आस्मानी ५, नीलो ६, श्वेत ७, श्वेत ८, श्वेत ९, श्वेत १० आ प्रमाणे मानेला छे

दिक्पालोने शुभ पाटला उपर शुद्ध द्रव्यो वडे पूजीने अन्ते ते ते दिक्पालनी दिशामा दिक्पालना नाम मन्त्रपूर्वक बलिक्षेप करवो.

३ तृतीयाह्निकम् ।

दिक्पाल–ग्रह–अष्टमंगल–स्थापनपूजनविधि–आह्निकबीजकम् ।

पूर्वे १ दक्षिणपूर्वे २ च, दक्षिणे ३ ऽपरदक्षिणे ४ । अपरे ५ ऽथाऽपरोत्तर ६, उत्तरोत्तरपूर्वयोः ७-८ ॥४९॥

पाताले ९ ब्रह्मलोके १० च, दिशामीशानिमान्न्यसेत् । इन्द्रमग्निं यमं चैव, निर्ऋतिं वरुणं तथा ॥५०॥

वायुं कुबेरमीशानं, नागं ब्रह्माणमेव च । स्ववर्णरसभायोग्यै-र्वस्त्रैः फलैस्ततोऽर्चयेत् ॥५१॥

पीत १ रक्त २ सित ३ श्याम ४-खाभ ५ नीलद्युतः ६ क्रमात् । श्वेताः शेषाश्च ७-८-९-१० चत्वारो, दिक्पाला वर्णतो मताः ॥५२॥

दिशांपालान् समभ्यर्च्य, शुभैर्द्रव्यैः सुपट्टके । दिक्षु बलिपरिक्षेपः, कार्यो नाम्ना दिगीशितुः ॥५३॥

अन्यस्मिन् पट्टके नन्द-कोष्ठके खेचरान् यजेत् । सूर्यं चन्द्रमसं भौमं, बुधं देवगुरुं भृगुम् ॥५४॥

मन्दं राहुं च केतुं च, ग्रहान्न्यसेदिमान् क्रमात् । स्वस्वदिग्मण्डलोपेतान्, स्वस्ववर्णविभूषितान् ॥५५॥

मध्ये[1] दक्षिणपूर्वे[2] च, दक्षिणोत्तरपूर्वयाः[3][4] । [7]उत्तरे [5]पूर्वे[6]ऽपाच्यां च, [8]रक्षो वायव्यगा[9] ग्रहाः ॥५६॥

१ दशदिक्पालनी स्थापना कोष्टक—

<table>
<tr><td>८
ॐ ईशानाय नमः</td><td>१
ॐ इन्द्राय नमः</td><td>२
ॐ अग्नये नमः</td></tr>
<tr><td rowspan="2">७
ॐ कुबेराय नमः</td><td>१०
ॐ ब्रह्मणे नमः</td><td rowspan="2">३
ॐ यमाय नमः</td></tr>
<tr><td>९
ॐ नागाय नमः</td></tr>
<tr><td>६
ॐ वायवे नमः</td><td>५
ॐ वरुणाय नमः</td><td>४
ॐ नैऋतये नमः</td></tr>
</table>

उपकरणो—पाटला २, दिक्पाल, नवग्रह, योग्य सेवनना। वस्त्र १९, 'पीलां २, रातां ३, कालां २, श्याम उदारंगी १, आस्मानी २, श्यामसोसनी १, नीला २, धवला ६ ॥ पाटलाओ उपर ढांकवा सारु पीलुं अने रातुं वस्त्र २, हाथ १।–१। प्रमाण। बीजा वस्त्रखंडो हाथनी अंदर होय तो बाधो नथी. वस्त्रो मले तो रेशमी लेवां. जो न मले अथवा खर्च ओछो करवो होय तो सुत्राउ लेवां' नागरवेलना पान २९। त्रांबाना पैसा २९। सोपारी २७। चोखा ०॥ शेर आसरे। पतासा अथवा साकरना कटका २७,

नैवेद्य नंग १९, मोतिया मोतीचूरना लाडु २, गोलना चूरमाना लाडु २, वेसीदलना (मगदना) ४, मगनी दालना २, गोलधाणीनो १, अडदनी दालना ३, तलना ३, घेवर १, अने पेंडो १। "फल मेवो" (सेलडी कटका २, नारंगी २, जंबीरी, खाटां लींबूं २, बिजोरां ३, दाडिम ३, नालियेर १, द्राक्षा १, राती सोपारी २, कालो सोपारी १, बदाम १, धोली खारेक १। "पुष्पो"—(लाल कनेर १, मोगरो जाइ-जुही, अथवा कुमुद ४, जासूल, २ दमणो-मरुओ, ५ पीली चमेली या पीतपुष्प, १ पीलो चंपो, मालती-चमेली १, जाइ पंचवर्ण पुष्प, १ मुचकुंद, १ पीतकणेर।

आलेखन, पूजनना द्रव्यो घसी तैयार करेलां। श्वेत चन्दन १, सूखड ८। लाल चन्दन २। केसर ५॥ गोरोचन २। वासचूर्ण "वासक्षेप ३। कंकु ३। यक्षकर्दम १। अगर कस्तूरी ५। चन्दन बरास ३। चन्दन कपूर १। चन्दन केसर कस्तुरी २। अगर चन्दन २। अगर वास १। ग्रहपूजनमां गणवानी मालाओ—(परवालानी, श्वेत स्फटिकनी, कहेरवांनी, अकलबेरनी अने गोमेद अथवा सिन्दुरिया स्फटिकनी, ए माला, ग्रह पूजनमां गणाय छे. श्वेत स्फटिकने बदले रूपानी अने कहेरवाने बदले सोनानी माला पण चाली शके छे,।

सूचना—पूजापो तैयार कर्या पछी प्रथम पाटलाने शुद्ध जल वडे धोइ धूपीने शुभ चोघडियामां पूजन चालु करवुं. कोष्टकमां आपेल अनुक्रम प्रमाणे प्रथम आलेखन करी, सुगंधि पदार्थो वडे पूजन करवुं.

पूजनविधि—प्रथम नीचे लखेल मंत्र वडे क्षेत्रपालनुं आह्वान करवुं—

ॐ ल्कौं ब्लौं स्वाँ लाँ ह्रूीं भुवनपालाय माणिभद्राय क्षेत्रदेवताय यक्षाधिपतये गजवाहनाय

खड्गहस्ताय पाशायुधाय सपरिच्छदाय, अत्र श्रीजम्बूद्वीपे भरतक्षेत्रे अमुकनगरे अमुकगृहे जिन-बिम्बप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, पूजा गृहाण गृहाण, पूजायामवतिष्ठतु स्वाहा ।

ए पछी पुष्पाक्षतनी अञ्जलि भरीने—

भोः क्षेत्रपाल ! जिनपप्रतिमाङ्कभाल !, दुष्टान्तकाल ! जिनशासनरक्षपाल !

पुष्पाक्षतप्रवरचन्दनवास धूप—भोगं प्रतीच्छ जिनवराऽभिषेककाले ॥ १ ॥

ॐ क्षां क्षीं क्षूं क्षैं क्षौं क्षः क्षेत्रपाल पूजयामि ।

आ मंत्र बोलीने क्षेत्रपालने वधाववा अने पुष्पाञ्जलि दक्षिण दिशाणा नाखवी. पछी हाथ जोडीने—

" तीक्ष्णदंष्ट्र ! महाकाय ! कल्पान्तदहनोपम ! । भैरवाऽस्तु नमस्तुभ्य-मनुज्ञां दातुमर्हसि ॥ १ ॥ "

आ श्लोक बोली आज्ञा मागवी अने हाथमा वासक्षेप लेइ—

ॐ ह्रीं आधारशक्तये नमः । कमलासनाथाय नमः । आ मंत्र वडे नीचे आसन स्थाने वासक्षेप नाखवो।

ए पछी श्रावके प्रथम त्यां सेवननो पाटलो स्थापीने उपर दश दिक्पालोनुं स्थापन-पूजन करवुं एज रीते बीजे पाटले नव ग्रहोनुं स्थापन पूजन करीने ग्रहशान्तिनो पाठ करवो.

पूजन—पूजन शरू करता हाथमां पुष्पांजलि लेइने—

" दिक्पालाः सकला अपि प्रतिदिशं स्वं स्वं बलं वाहनं, शस्त्रं हस्तगतं विधाय भगवत्स्नात्रे जगद्दुर्लभे ॥

आनन्दोल्वणमानसा बहुगुणं पूजोपचारोच्चयम्। संधाय प्रगुणं नवन्तु पुरतो देवस्य लब्धासनाः ॥ १ ॥

आ काव्य बोली पुष्पांजलि दिशापालोना पाटला उपर नाखी दिक्पालाने वधाववा, ते पछी प्रत्येक दिक्पालने ते पाटला उपर स्थापी अष्ट द्रव्यो वडे–

इन्द्रमग्निं यमं चैव, निर्ऋतिं वरुणं तथा। वायुं कुबेरमीशानं, नागान् ब्रह्माणमेव च ॥ १ ॥

आ श्लोकोक्त क्रमानुसार १ इन्द्र, २ अग्नि, ३ यम, ४ निर्ऋति, ५ वरुण, ६ वायु, ७ कुबेर, ८ ईशान, ९ नाग अने १० ब्रह्मानी पूजा करवी.

१. इन्द्र—

" प्रागुदिग्वधूवर! शचीहृदयाधिवास!, भास्वत्किरीट! विबुधाधिप! वज्रपाणे! ॥
एकावतारसमनन्तरसिद्धिशर्मन्!, शक्र! स्मरन् स्थितिमुपेहि जिनाभिषेके ॥ १ ॥"

ॐ वषट् नमः श्री इन्द्राय वज्रहस्ताय ऐरावणवाहनाय पूर्वदिगधीशाय सपरिच्छदाय, श्री इन्द्र! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने श्रीजिनप्रतिष्ठामहोत्सवे आगच्छ आगच्छ, जलं गंधं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण, गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥ १ ॥

२. अग्नि —

शोभां वहन्तु वरतूर्यपयोदनादै-रुत्कम्पिता नलिनयोनिविमानहंसाः ॥ १० ॥"

ॐ नमो ब्रह्मणे ऊर्ध्वलोकाधीश्वराय चतुर्मुखाय श्वेतवस्त्राय पुस्तककमलहस्ताय हंसवाहनाय, श्री ब्रह्मन्! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह अमुकनगरे अमुकस्थाने आगच्छ आगच्छ, जलं गन्धं पुष्पमक्षतान् फलानि धूपं दीपं नैवेद्यं सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं कुरु कुरु, सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा ॥ १० ॥

उपर लखेल प्रत्येक काव्य अने तेनी साथे लखेल मंत्र बोलीने ते ते दिशापालने जल, गंध, पुष्प, फल, नैवेद्य आदि जे जेने योग्य होय ते तेने चढाववा, सर्वनी पूजा पछी पाटला उपर पीलुं वस्त्र ओढाडी, पाटलो गेनासूत्रे वींटवो अने जिनप्रतिमाना डाबा पडखा तरफ स्थापवो, पछी—

" इति दिगधिपकीर्तनाभिरक्षा-क्षपितसमस्तविपक्षवीतविघ्नः ।
कुरु सकलसमृद्धिसंनिधानात्, विजितजगत्यभिषेकमंगलानि ॥ १ ॥"

आ काव्य बोलीने ते उपर विधिकारे पुष्पांजलि चढाववी, अने प्रतिष्ठागुरुए वासक्षेप करवो, पछी दिशाबलिक्षेप करवो.

दिशा-बलिक्षेपः—

दिक्पालोनुं पूजन-स्थापन कर्या पछी खुल्ला स्थानमां जई पूर्वादि दिशासन्मुख उभा रही, ते ते दिशाना पतिनो मंत्र श्लोक बोली ते ते दिशामां बलिक्षेप करवो, जल छांटवुं, चन्दनादि सुगन्ध पदार्थना छांटा नाखवा, धूप उखेववो अने वाजिंत्रो

वगाडवां. मंत्र श्लोको—

१ इन्द्र–"ऐरावतसमारूढः, शक्रः पूर्वदिशि स्थितः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१॥"
२ अग्नि–" सदा वह्निदिशो नेता, पावको मेघवाहनः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥२॥"
३ यम–"दक्षिणस्या दिशः स्वामी, यमो महिषवाहनः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजा प्रतीच्छतु ॥३॥"
४ निर्ऋति–"याम्यापरान्तरालेशो, निर्ऋतिः शिववाहनः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥४॥"
५ वरुण–"यः प्रतीचीदिशो नाथो, वरुणो मकरस्थितः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥५॥"
६ वायु–"हरिणो वाहनं यस्य, वायव्याधिपतिर्मरुत्। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥६॥"
७ कुबेर–"निधाननवकारूढ, उत्तरस्या दिशः प्रभुः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥७॥"
८ ईशान–"सिते वृषे ऽधिरूढो य, ईशानो विदिशो विभुः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥८॥"
९ नाग–"पातालाधिपतिर्योऽस्ति, सर्वदा पद्मवाहनः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥९॥"
१० ब्रह्मा–"ब्रह्मलोकविभुर्योऽस्ति, राजहंससमाश्रितः। संघस्य शान्तये सोऽस्तु, बलिपूजां प्रतीच्छतु ॥१०॥"

दिक्पालोने प्रक्षेप्य बलि–क्षेप करी पाछा मंडपमां आववुं अने ते पछी बीजे पाटले ग्रह पूजन करवुं.

इति दिक्पाल पूजा विधि॥

अथ ग्रहपूजा विधि ॥

ग्रह स्थापना —

बुध ४	शुक्र ६	सोम २
गुरु ५	सूर्य १	मंगल ३
९ केतु	शनैश्चर ७	राहु ८

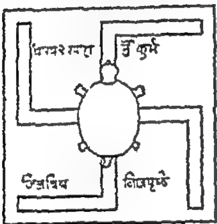
ग्रह पूजानुं कोष्टक—

९ ग्रह	सूर्य	चंद्र	मंगल	बुध	बृहस्पति	शुक्र	शनैश्चर	राहु	केतु
आलेखन	रक्त चन्दन	चंदन	केसर	चन्दन-केशर कस्तूरी	गोरोचन	चन्दन	कस्तुरी-अगर	अगर-कस्तूरी	यक्ष-कर्दम
पूजन	केसर	चन्दन-बरास	केसर	वास-चूर्ण	चन्दन-वासचूर्ण	चंदन	कंकु	कंकु	कंकु
फूल	लाल कणेर	जाइ-मोगरो	जासूल	चंपो	सेवंत्रां	जाइ-मोगरो	मालती-डमणो	मचकुंद	बहुवर्ण पुष्पो
फल	द्राक्षा	शेलडी	राती सोपारी	नारंगी	जंबीर	बिजोरु	खारेक	नालियर	दाडिम
वस्त्र	रक्त-लाल	श्वेत	लाल-कीरमजी	नीलुं	पीलुं	श्वेत	आसमानी	कालुं	श्याम मोलनी
नैवेद्य	चूरमानो लाडु	घेंमीदल-नो लाडु	गोल धाणीनो लाडु	मगनी दालनो लाडु	मोतियो लाडु	घेंमीदल-नो लाडु	अडदनी दालनो लाडु	अडदनी दालनो लाडु	तिलवटनो लाडु
द्रव्यादि	अक्षत-पान, त्रांबानाणुं	अक्षत-पान, त्रांबानाणुं	चोखा पान त्रांबा नाणुं	चोखा पान त्रांबा नाणुं	चोखा पान त्रांबानाणुं	चोखा पान त्रांबानाणुं	चोखापान त्रांबानाणुं	चोखा पान त्रांबा नाणुं	चोखापान त्रांबानाणुं
माला	प्रवालनी	स्फटिकनी	प्रवालनी	केरबानी	सोनानी	स्फटिकनी	अकलबेरनी	अकलबेरनी	गोमेद्र वा लसणीया स्फटिक

आसनयत्र ३

उपर्युक्त बे आसनयंत्रो उपरान्त एक त्रीजुं आसनयत्र पण छे के जे 'कूर्मयत्र'ना नामथी ओलखाय छे. आज काल प्रायः

आसनयंत्र ३



घणा खरा प्रतिष्ठाकारको पीठ उपर राखेल खाडामां पंचरत्नादिक मांगलिक पदार्थो स्थाप्या पछी ते उपर आ 'कूर्मयत्र'ने स्थापे छे. कूर्मयत्र एक सादामां सादु यत्र छे, लगभग ३ इंच समचोरस त्रांबानुं पतुं करावी ते उपर कूर्मनो आकार कोतरावे छे, अने ते उपर सुगन्धी द्रव्यो वडे 'स्वस्तिक' आलेखी तेना ४ पांखडियोनी नीचे "ॐ कूर्म-निजपृष्ठे-जिनबिम्ब-धारय २ स्वाहा।" आम चारे दिशाओमां मंत्रखंडो लखीने ए यत्र पीठ (पवासण गादी) उपर कूर्मनुं मुख द्वार तरफ आवे एवी रीते स्थापे छे अने ते उपर शुभ समय आवे त्यारे मूलनायक प्रतिमाने प्रतिष्ठित करे छे

१३ श्रीशान्तिवादिवेतालीय अर्हदभिषेकविधिः—

अभिषेकविधिः पूर्वं, कथितः शान्तिसूरिभिः। तमाश्रित्याऽभिषेकाणां, विधयो जज्ञिरेऽखिलाः ॥१७३॥
पूर्वमष्टोत्तरशत-घटस्नानमजायत । 'चक्रे देवेन्द्रराजेति' काव्य घोषेण निर्मितम् ॥१७४॥
तस्यानुकरणाज्जज्ञेऽष्टोत्तरस्नात्रमप्यदः। षोडशे विक्रमाब्दानां, शते केनापि निर्मितम् ॥१७५॥
शान्तिस्नात्रमिदं जज्ञे, सकलचन्द्रदर्भितम्। विक्रमाब्दसप्तदश-शते लोके प्रसिद्धिभाग् ॥१७६॥

भा०टी०—अर्हदभिषेक सर्व प्रथम वादिवेताल शान्तिसूरीजीए कहेल, तेना आधारे ते पछीना आचार्योए भिन्न भिन्न नामथी घणी अभिषेक विधिओ बनावेली जेमां "चक्रे देवेन्द्रराजैः" आ काव्य बोलीने १०८ अभिषेक करवानी विधि प्राचीन छे. आ अष्टोतर शत अभिषेकना अनुकरण रूपे लगभग सोलमा सैकामां कोइए अष्टोत्तरी स्नात्रनी योजना करी, अने ते पछी विक्रमना सत्तरमा सैकामां श्रीसकलचन्द्रगणिए "शांतिस्नात्र" नामथी प्रसिद्ध एक अभिषेक विधिनुं निर्माण कर्युं के जे विशेष प्रसिद्धिमां आव्युं छे.

उपकरण		
	भद्रासन (प्रणाल युक्त बाजोट),	चामर युगल
परिकरयुत जिनबिंब १	चंद्रवो भद्रासनोपरि	त्रांबा कुंडी २
वस्त्रमंडप वेदीसहित	छत्र त्रय बिंबोपरि	घंट १

शंख १
झालर १
थाली [illegible]
नाटकी ५
माटली मण १। नी चोखी १
कुंभ कोरा २
कलशिया ८
आरति १
मंगलदीवो १
धूपधाणा २
दीवी २
दिक्पाल योग्य पाटलो १
नैवेद्य दोना पाट १
केसर तोला २

चंदन मूठो १
अगर तोला ५
कपूर तोला ५
रक्तचंदन मूठो १
कस्तूरी वाल ३
गोरोचन वाल १
श्वेत सरसव तोलो १
सर्वौषधि पुटी १
दशांग धूप तोला २०
अष्ट गंध तोला २
वासक्षेप तोला १०
लूण काकरी तोलो १
गंगाजल शीशी १
२५ निवाणोना जल

कासानी थाली १
वेलण १
वाजिंत्र समूह
आभूषण जिनबिंबयोग्य
श्वेत वस्त्रवर स्नात्रकारो–
(जघन्य ४ उत्कृष्ट २०)
वस्त्र श्वेत १ नैवेद्यपट्टाच्छादन योग्य
धौतवस्त्र अंगलूछणा ४
मेनासूत्र छटाक १
धोती जोटा ४ श्वेत
दिक्पालयोग्य तद्वर्णवस्त्र १०
(पीलु १, रातु १, कालु १, उदासगी १, श्याम १, आसमानी १, नीलुं १, श्वेत ४, प्रत्येकवस्त्र ग्वड हाथ १–१)

अक्षत शेर २

जिननैवेद्य—

लाडु नं. ५
साकर खंड ५, शेर १
खाजा खंड ५
घेवर ,, ५
दहिंथरां ,, ५
मोहनथाल ,, ५
बदाम २५
सोपारी २५
पान २५
द्राक्षा शे. १
खारेक शे. १

दिक्पालो योग्य नैवेद्य सामान—

मोतिया लाडु २
चुरमाना लाडु २
अडदना लाडु २
तिलना लाडु ४
मगना लाडु २
घिसी दलना (मगदलना) २
दूधना पेडा २
घेवर २

फलजात—

नालियेर ५
बीजोरां अथवा जंबीरी ३
दाडिम ७
नारंगी ६
शेलडी कटका ६ अथवा मोसंबी ६
सफरजन ५
मोसंबी ५
राती सोपारी २
काली सोपारी २
श्वेत बदाम ७
पान बीडा सोपारी १५
पान नागरवेलनां १५

पुष्पजात—

सोवन चंपो वा पीतपुष्प
जासूद पुष्प
चमेली–मालती
जाइ–जूही
मोगरो

गुलाब
दमणो-मरुओ
दूध सेर ४, दहिं सेर ३, घृत सेर २,
ग्रहोपशात्यर्थ अभिषेक होय तो गह
योग्य नीचेनो सामान वधु करवो—
यक्षकर्दम तोलो १
कंकु तोला २
लाल कणेर पुष्पमाला २
चूरमानो लाडु १
नैमीदल (मगदल) ना लाडु २
गोलधाणीनो लाडु १
फोतरावाला मगनो लाडु १
मातियो लाडु १
अडदिया लाडु २
तलनो लाडु १

साधुओने आहार दान—

(१) गोलमा राधेल भातनुं दान
(२) घृतयुत दूधपाकनुं दान
(३) घेबर भोजननु दान
(४) खीरनु दान
(५) दहिना करंबानुं दान
(६) घृत दान
(७) तिलवट (कठेल ना पीलेल तलनुं)
(८) खीचडी (अडदनी दालनी)
(९) अनेक वर्णना धान्यनुं भोजन

ग्रहोपासकोने दान दक्षिणा—

(१) रक्त वर्णनो चन्द्रवो १
(२) शंख १
(३) रक्त चदननो मूठो १
(४) सुवर्णदान यथाशक्ति
(५) पीतांबर १
(६) पगरखानी जोडी १
(७) ध्वज १
(८) लोह भाजन १
(९) काली कावल १

—+—

अभिषेकनो तात्कालिक तैयारी—

तात्कालिक तैयारीने अंगे त्रिधिकारे नीचेनी बाबतो खास ध्यानमा राखवानी छे

अर्हद्भिषेक सामान्यपणे ४ स्नात्रकारो अने ४ स्त्रियोनी हाजरीथी पण सारी राते करी शकाय छे. मात्र ४ स्नात्रकारोमां १ पुरुष विधिज्ञाता होवो जोइये. पण अभिषेकने जो विशेष आकर्षक बनाववो होय तो पुरुषो २० अने स्त्रियो अथवा कुमारिकाओ २० तैयार करवी.

२० पुरुषोमां १ पुरुष जे विधिज्ञाता होय तेने देव-पुरोहित रूपे कल्पवो के जे इन्द्रोने, देव-देवीओने, तेमना कर्तव्योनुं सूचन करतो रहे, ४ पुरुषोने इन्द्रो तरीके कल्पवा, शेष १५ पुरुषोनां नामो अनुक्रमे नीचे प्रमाणे कल्पवां–घृतसमुद्राधिपति १, क्षीरसमुद्राधिपति २, दधिसमुद्राधिपति ३, क्षीरोदसमुद्राधिपति ४, मागधतीर्थाधिपति ५, वरदामतीर्थाधिपति ६, प्रभासतीर्थाधिपति ७, सर्वौषधिसमाहारक ८, सौगन्धिकसमाहारक ९, स्वच्छजलसमाहारक १०, कुंकुमरससमाहारक ११, कुंकुम–चन्दनरससमाहारक १२, चन्दनद्रवसमाहारक १३, कस्तूरीद्रवसमाहारक १४, अने गोरोचन-सर्षपसमाहारक १५.

२० स्त्रीओ पैकीनी १४ जणीओने अनुक्रमे गंगा १, सिंधु २, रोहिता ३, रोहितांशा ४, हरिता ५, हरिकान्ता ६, शीता ७, शीतोदा ८, नरकान्ता ९, नारीकान्ता १०, रूप्यकूला ११, सुवर्णकूला १२, रक्ता १३, रक्तोदा १४, ए नदीओना नामनी आगल 'देवी' शब्द जोडीने उक्त १४ नदीओनी अधिष्ठायिकाओ कल्पवी, शेष ६ स्त्रीओने पद्म १, महापद्म २, तिगिच्छि ३, केसरी ४, पुण्डरीक ५, अने महापुण्डरीक ६, आ छ ह्रदोनी निवासिनी अने अधिष्ठायिका तरीके अनुक्रमे श्रीदेवी १, ह्रीदेवी २, धृतिदेवी ३, कीर्तिदेवी ४, बुद्धिदेवी ५, अने लक्ष्मीदेवी ६, तरीके कल्पवी.

देव देवीओए पोतपोताना अधिकार नीचेना जलादि द्रव्योना अभिषेक के उपयोग प्रसंगे इन्द्रनो आदेश थतां ते ते पदार्थ लेइ

उपस्थित थवानुं छे पहेलाना ६ अभिषेकोमा एक एक स्थानीय घृतादि द्रव्य लेइ एक एक देवे अथवा देवीए उपस्थित थवानुं छे ७ थी १७ मा अभिषेकोमा बे बे नदीना जल लेइ ने बे नदी देवीओ उपस्थित थशे, ए पछीना बधा अभिषेकोमा अने अन्य कार्योमा एक एक देवी अने देवनी उपस्थिति छे, मात्र १९ मा अभिषेक प्रसंगे मागध, वरदाम, प्रभास आ त्रणेना अधिपति देवोने साथे उपस्थित थवानु छे

२४ निवाणोना जलने छाणी एक महोटी मारलीमा एकत्र करवु, तेमा बराम, कपूर, कस्तुरी बोलीने नाखी तेने सुगंधी बनावीने २४ न्हाना न्हाना धातु अथवा माटीना घडाओमा आ भरी, ४ देवो अने २० देवीओने हवाले करवु, क्षीर समुद्रना जलमा दूध नाखी जलने सफेद बनाववु, शेष २३ घडाओनुं जल जलरूपे ज राखवु, घृत, क्षीर, दधि, समुद्रोना अधिष्ठायकोने घृत, दहिंना कलशो भरीने आपवा, सर्वौषधि समाहारक देवोए पोतपोताना अधिकार नीचेना द्रव्यो अभिषेकने योग्य बनावीने तैयार राखवा अने इन्द्रनो आदेश मलता ज हाजर करवां.

जो अभिषेक भक्तिरूपे ज करवानो होय तो ग्रह निमित्ते बणावेल बलि, पुष्प, भोजन, अने दक्षिणा विषयक पदार्थोनी तैयारीनी जरूरत नथी, मात्र दिक्पालो योग्य पदार्थो ज तैयार राखवा पण कोइ संघ के व्यक्ति जिनभक्ति उपरान्त ग्रह पीडोपशान्तिनो पण इच्छुक होय तो उपकरणोमा ग्रहाधिकारोक्त उपकरणो पण मेलवी राखवा, तात्कालिक तैयारीमा आवश्यक पदार्थोनी तैयारी करावबी अने जिनाभिषेक, ग्रहाभिषेक अने ग्रहपूजनादि शान्ति इच्छुकना हाथे करावबु.

स्नान पूर्वे दिक्पालोने एक एक काव्यद्वारा आह्वान करी पाटला उपर पोतपोताना आलेखित स्थाने पुष्पाञ्जलि चडे बधानीने

वेसाडवानुं कार्य करवानुं छे, पूजन, बलि, वस्त्रादि द्वारा तेमनो सत्कार अभिषेक पूर्ण थया पछी तेमना विसर्जन पूर्वे ज करवानो छे, अने ते पण बाकुला नाखीने नहि पण तत्प्रिय पुष्प, फल, वस्त्र, नैवेद्य, अर्पण करीने.

अर्हदभिषेक—

वस्त्र मंडपमां अथवा चैत्यमां ज्यां अभिषेक करवा होय त्यां सभास्थान छोडी सामेना मध्यभागे स्नात्र-पीठ बनाववुं, पीठ उंचुं २७ इंचनुं, समचोरस २५ इंचनुं करवुं, पीठनुं विधिपूर्वक पूजन करी ते उपर भद्रासन (प्रणालिओ बाजोठ, २५ चोरस अने ९ इंच उंचुं होय ते स्थापवुं, भद्रासन उपर चंदननो स्वस्तिक करी तेनी पुष्पादिवडे पूजा करवी.

ए पछी भद्रासन उपर विराजमान करवा लावेल जिनप्रतिमा सामे उभा रही हाथमां पुष्पांजलि लेइ—

श्रीमत् पुण्यं पवित्रं कृतविपुलफलमङ्गलं लक्ष्यलक्ष्म्याः, क्षुण्णारिष्टोपसर्गग्रहगतिविकृतिस्वप्नस्तुत्पापघाति ।
सङ्केतः कौतुकानां सकलसुखमुखं पर्व सर्वोत्सवानां, स्नात्रं पात्रं गुणानां गुरुगरिमगुरोर्वश्चिता यैर्न दृष्टम् ॥१॥
रूपं वयः परिकरः प्रभुता प्रभुत्वं, पाण्डित्यमत्यतिशयश्च कलाकलापे ।
तज्जन्म ते च विभवा भवमर्दनस्य, स्नात्रे व्रजन्ति विनियोगमिहार्हतो ये ॥२॥
छत्रं चामरमुज्वलाः सुमनसो गन्धाः सतीर्थोदका, नानालङ्कृतयो बलिर्दधिपयः सर्पींषि भद्रासनम् ।
नान्दी मङ्गलगीतनृत्तविधयः सत्स्तोत्रमन्त्रध्वनिः, पक्वान्नानि फलानि पूर्णकलशाः स्नात्राङ्गमित्यादि सत् ॥३॥

सुरासुरनरोरगत्रिदशवर्त्मचारिप्रभु-प्रभूतसुखसम्पदः समनुभूय भूयो जनाः ।
जितस्मरपराक्रमाः क्रमकृताभिषेका विभो-र्विलङ्घ्य यमशासनं शिवमनन्तमध्यासते ॥४॥
अशेषभुवनान्तराश्रितसमाजखेदक्षमो, न चापि रमणीयतामतिशयीत तस्याऽपरः ।
प्रदेश इह मानतो निखिललोकसाधारण., सुमेरुरिति तायिनः स्नपनपोठभावं गतः ॥५॥

आ काव्यो बोली कुसुमाञ्जलि भद्रपीठ उपर नाखी, ते उपर प्रतिमा स्थापवी, वली पुष्पाञ्जलि हाथमां लेइ—

प्रोद्भूतभक्तिभरनिर्भरमानसत्व, प्राज्यप्रवृद्धपरितोषरसातिरेकम् ।
कुर्युः कुतूहलचलोत्कलिकाकुलत्वं, देवा मुहूर्तमपि सोढुमपारयन्तः ॥६॥
रक्षार्थमाहितविरोधानरोधहेतो-र्लोकत्रयाधिकविभुत्वविभावनाय ।
कल्याणपञ्चकनिबद्धसुरावतार,-संवित्तये च जिनजन्मदिनाभिषेकम् ॥७॥
यो जन्मकाले कनकाद्रिशृङ्गे, यश्चादिदेवस्य नृपाधिराज्ये ।
भूमण्डले भक्तिभरावनम्रै., सुरासुरेन्द्रैर्विहितोऽभिषेकः ॥८॥
ततः प्रभृत्येव कृतानुकार, प्रत्याहृतैः पुण्यफलप्रयुक्तैः ।
श्रितो मनुष्यैरपि बुद्धिमद्भि-र्महाजनो येन गतः स पन्था. ॥९॥
अद्यापि जनसमाजो, जनयति बुद्धिं विशुद्धबुद्धीनाम्। जन्माभिषेकसम्भ्रम-पिशुनसुनासीरनासीरे ॥१०॥

आ काव्यो बोली पुष्पांजलि प्रतिमा तरफ क्षेपवी, पछी प्रतिमा उपरथी पुष्पादि निर्माल्य उतारी पखाल करी पूजा करवी. जो पूर्वे स्थापित प्रतिमा उपर ज अभिषेक करवा होय ता ते ज्यां बेठेल होय त्यां ज ने उपर आ बधी विधि करवी।(इतिप्रथमं पर्व ।)

प्रतिमानी पूजा कर्या पछी पुष्पांजलि लेइने—

सद्वेद्यां भद्रपीठे कृतसकलमहाकौतुकाक्षिप्तलोकं, दत्त्वोल्लोचं समन्ताद्वरवसनगृहालम्बिपुष्पावचूलम् ।
वादित्र-स्तोत्र-मन्त्रध्वनिसुस्वरगरक्ष्वेडितोत्कृष्टिनादैः, सालङ्कारं स्वरूपं जननयनसुखं न्यस्य बिम्बं जिनस्य ॥१॥
श्राद्धः स्नातानुलिप्तः सितवसनधरो नीरुजोऽव्यङ्गदेहो, दत्त्वा कर्पूरपूरप्रातिकरसुरभिं, धूपमभ्यस्तकर्मा ।
पूर्वं स्नात्रेषु नित्यं मृतगगनघनप्रोल्लसद्घोषघण्टा, झङ्कारकारितारात्स्थितजननिवहं घोषयेत् पूर्णघोषः ॥२॥

आ काव्यो बोली पुष्पक्षेप प्रतिमा सामे करवो, अने दश दिक्पालोनो पाटलो जे प्रथमथी शुद्ध करी तैयार राखेल होय ते प्रतिमा संमुख स्थापी हाथमां पुष्पांजलि लेइ—

ओं ओंः सुरासुरनरोरगकिन्नराद्याः, सङ्घातमेत्य जगदेकविभूषणस्य ।
निःश्रेयसाभ्युदयसत्फलपूर्णपात्रे, स्नात्रे समं भवत सन्निहिता जिनस्य ॥३॥

एवमाघोषणां कृत्वा, पुष्पपाणिः पवित्रवाक् । सर्वानावाहयेत् सम्य-ग्दिक्पालाँस्तत्सुखो भवन् ॥४॥

आ बे पद्यो बोलीने पुष्पांजलि दिशापालोना पाटला उपर नाखवी, अने—

इन्द्रमग्निं यमं चैव, निर्ऋतिं वरुणं तथा । वायुं कुबेरमीशानं, नागान् ब्रह्माणमेव च ॥५॥

आ श्लोक गोली श्लोकोक्त क्रमथी पाटला उपर यथास्थान दिशापालोना मंडलो आलेखी दिक्पालो योग्य पुष्पोवडे वधावीने स्थापनीय मुद्राए नीचेना क्रमथी स्थापन करवा, इन्द्रादि प्रत्येकनु काव्य गोलीने प्रत्येकनी स्थापना करवी

इन्द्र—प्राग्दिग्वधूवर ! शचीहृदयाधिवास !, भास्वत्किरीट ! विबुधाधिप ! वज्रपाणे !!
एकावतारसमनन्तरसिद्धिशर्मन् !, शक्र ! स्मरन् स्थितिमुपैहि जिनाभिषेके ॥६॥

आ काव्य गोली पूर्वभागमा इन्द्रना पद उपर पुष्पो चढाववा.

अग्नि—त्रयीकान्ताऽत्यन्तक्षततततमोराशिविशद, जगज्जातालोक जनयसि जगन्नेत्रहुतभुक् ।
प्रसीदत्येतेन त्वयि मम मनो वाक् च सकला, भवत्येवाभ्यर्णीभवति भवनि स्नात्र समये ॥७॥

आ काव्य भणीने अग्निकोणमा अग्निपदे पुष्पो चढाववा.

यम—प्रत्यूहसमूहापोहशक्तिरर्हत्प्रभावसिद्धैव । समवर्तिन्निह रक्षा-कर्मणि विनियोग एव तव ॥८॥

आ काव्य गोली दक्षिण भागमा यमपदे पुष्पो चढाववा.

निर्ऋति—मा मस्था, सस्थाता, युष्मदधिष्ठित दिगेव विलापा ।
निर्ऋते निर्वृतिकारी, जगतोऽपि जिनाभिषेकोऽयम् ॥९॥

आ काव्य गोली नैऋत कोणे निर्ऋति पदे पुष्पो चढाववा.

वरुण—उदाररसनागुणक्वणितकिङ्किणीजालक प्रबुद्धजघनस्थलस्थिरनिविष्टचेतोभुवः ।

ससम्भ्रमसमागता धनदराजहंसैः सम्मा-नयन्तु मणिनूपुरान् वरुण ! वारनार्यस्तव ॥१०॥
आ काव्य बोली पश्चिम विभागे वरुणपदे पुष्पो चढाववां.

वायु—जाते जिनाभिषेके, विसृजन्तो विविधविटपि कुसुमानि।
विकिरन्तु वायवो वो, मिथ्यात्वरजो वितानानि ॥११॥
आ काव्य बोली वायु कोणमां वायुपदे पुष्पो क्षेपवां.

कुबेर—अहो विविधविस्मयाऽभ्युदयभूतिसद्भाजनं, भवन्ति भवभेदिनो भगवतोऽभिषेकोत्सवाः।
यतस्त्वमपि गुह्यकेश्वर ! समेत्य तत्कारिणः, करोषि परमेश्वरान् प्रकटकोकटत्वानपि ॥१२॥
आ काव्य पढीने उत्तरदिशापाल कुबेरना स्थाने पुष्पो चढाववां.

ईशान—पतत्पदपरिक्रमक्रमविघूर्णितक्ष्माधरं, कटाक्षकपिलीभवद्भुवनभागमीशान ! ते।
समस्तु करवर्त्तनाविवलित-ग्रहर्क्ष-क्षमा, निषेविह महोत्सवे सकलभावभाक् ताण्डवम् ॥१३॥
आ काव्य बोली ऐशानी विदिशामां ईशान पदे पुष्पक्षेप करवो.

नाग—नागाः फणामणिमयूखशिखावबद्धशक्रा-युधप्रकरविच्छुरितान्तरिक्षम्।
सद्यः कुरुध्वमभिषेकदिनं समन्ताद्, भूत्वा भवोद्भवभिदो भवने प्रदीपाः ॥१४॥
आ काव्य भणीने नागपदे (के जे वरुण पदना उपरि भागे होय छे), पुष्प क्षेप करवो.

ब्रह्मेन्द्र-अथाभिषेकसमये स्मरसूदनस्य, भक्त्यानता विकटपञ्चमकल्पतुल्याः ।
शोभां वहन्तु वरतूर्यपयोदनादै-रुत्कम्पिता नलिनयोनिविमानहंसाः ॥१५॥

आ काव्य बोली नागपदनी उपर अने इन्द्रनी नीचे आवेल ब्रह्मपदे ब्रह्मेन्द्र उपर पुष्प क्षेप करवो

ए पछी हाथमा पुष्पांजलि लेइ—

इति दिगधिपकीर्त्तनाभिरक्षा-क्षपितसमस्तविपक्षवीतविघ्नः ।
कुरु सकलसमृद्धिसन्निधानात्, विजितजगत्यभिषेकमङ्गलानि ॥१६॥

आ काव्य बोली दिशापालोना पाटला उपर पुष्पांजलि नाखवी, पछी चैत्यवंदन अने साधुवंदन करवुं

॥ इति द्वितीय पर्व ॥

चैत्यवंदनादि करीने—

मुक्तालङ्कारविकार-सारसौम्यत्वकान्तिकमनीयम् । सहजनिजरूपनिर्जित-जगत्त्रयं पातु जिनबिंबम् ॥१॥

आ काव्य बोली प्रतिमा उपरथी पुष्प अलंकारादि उतारवा अने—

भव्यानां भवसागरप्रतरणद्रोणीप्रसूतिः श्रियां, शश्वत्सत्कलकल्पपादपलतानिर्वाणरथ्या परा ।
सौरभ्यातिशयाद्यवाप्तमहिमास्वामिन्प्रभावेन ते, प्रासाशेषसुखा सुखास्तकलिकाध्यामापि धूमावली ॥२॥

आ काव्य बोलता धूप उखेववो, पछी पुष्पो लइने—

किं लोकनाथ! भवतोऽतिमहार्घतैषा, किं वा स्वकार्यैककुशलत्वमिदं जनानाम् ।
किं वाद्भुतः सुमनसां गुण एष कश्चिदुष्णीष देशमधिरुह्य विभाति येन ॥३॥

आ काव्य भणीने जिनप्रतिमाना मस्तके पुष्प चढाववां, अने
आस्नात्रपरिसमाप्ते-रशून्यमुष्णीषदेशमीशस्य । सान्तर्धानाऽधारा-पातं पुष्पोत्तमैः कुर्यात् ॥४॥

आ श्लोकोक्त विधान प्रमाणे प्रत्येक अभिषेकना अन्तमां "किं लोकनाथ!" आ पद्य बोलीने प्रतिमाना मस्तक उपर पुष्पो चढाववां, पछी—

पुण्यं पवित्रमपविद्धरजोविकार-मारम्भसम्भ्रमवतामुपकारिहारि ।
आद्यं भवाधिदवथूनभिषेकवारि, वाक्यं च वाक्यपरमार्थविदो चिहन्यात् ॥५॥
रटत्पटहपाटवप्रकटझल्लरीझात्कृतैः, पयोजकलकाहला कलितकाकलीकोमलैः ।
शिवाय शिवविस्तरज्जयजयस्वनप्रोल्लसत्, पतत्प्रथममस्तु वो भगवतोऽभिषेकोदकम् ॥६॥

आ भावना काव्यो बोलवां, अने एक स्नात्रकारे हाथमां धूपधाणुं लेइने दशांग धूप मूकी—

मीनकुरङ्गमदागुरुसारं, सारसुगन्धिनिशाकरतारम् ।
तारमिलन्मलयोत्थविकारं, लोकगुरोर्दह धूपमुदारम् ॥७॥

आ काव्य बोलतां प्रतिमाने धूप उखेववो, पछीना पण प्रत्येक अभिषेकने अन्ते एज काव्य बोलवुं अने धूप उखेववो, वादित्र

नाद करावचो, पछी—

सर्वौषध्यः सर्वतीर्थोदकानि, प्रायो गव्य हव्य-दुग्धं दधीति ।
सर्वे गन्धाः सर्वं सौगन्धिकानि, स्नात्राण्येषामन्तरालेषु धूपः ॥८॥

आ काव्यमा बतावेल सर्व औषधिओ, सर्व तीर्थजलो, परिगल गायनु घी, दूध, अने दहिं, सर्व प्रकारना गन्धो, सर्व प्रकारना सुगंधि द्रव्यो जे तैयार करेल होय तेओनडे स्नात्रो करवा, अने आतरे आतरे धूप उखेववो, प्रत्येक अभिषेकना प्रारंभमां "नमोऽर्हत्." कहीने काव्य बोलवु,

१ घृताभिषेक—

पायात् स्निग्धमपीक्षित-भवदवमूलाग्निशमनसामर्थ्यम् । उपहृतमिवामरेन्द्रैरभिषेकघृतं घृताम्भोधेः ॥९॥

आ काव्य बोली घृतनो अभिषेक करवो.

२ दुग्धाभिषेक—

उचितमभिषेककाले, मुनिगात्रपवित्रचित्रचारुफलम् । क्षीर क्षीरोदोदक-लक्ष्मीं लक्ष्मीं दधद् दद्यात् ॥१०॥

आ काव्य बोली दूधनो अभिषेक करवो

३ दध्यभिषेक—

मङ्गल्यमिन्दुकुन्दा-वदातममरेश्वरोपनीतानाम् । दधिदधिजलधिजलाना-स्मरणाय विविक्तचित्तानाम् ॥११॥

आ काव्य बोली दहिंनो अभिषेक करवो.

घृतादिना अभिषेको करतां प्रतिमा उपर दबतो हाथ फेरववो, प्रत्येक अभिषेकनुं काव्य बोलाई गया पछी—

अभिषेकपयोधारा, धारेव ध्यानमण्डलाग्रस्य। भवभवनभित्तिभागान्, भूयोऽपि भिनत्तु भागवती ॥१२॥

आ काव्य बोलवुं, ए पछी पण प्रत्येक अभिषेकना अंते ए काव्य बोलवुं. अने त्रणे स्नानो थया पछी प्रतिमा उपरथी स्निग्धता दूर करवा माटे चंदन-केसर आदि कपूरनो चूरो घसी लूंछणाथी लूंछीने प्रतिमाने चिकास रहित करवी, प्रतिमानुं अंगलूंछण थइ गया पछी—

नानावर्णैर्वर्णकैर्गन्धलुब्ध-भ्राम्यद्भृङ्गीमाधसङ्गीतरम्यैः।
घृष्टोन्मृष्टं चारुचीनांशुकान्तैः, कान्तं पातुः पातु बिम्बं जिनस्य ॥१३॥

आ काव्य बोलवुं, घृतादिना अभिषेक पछी क्षीरोद समुद्र १, गंगा २, सिन्धु ३, रोहिता-रोहितांशा ४, हरिता-हरिकान्ता ५, शीता-शीतोदा ६, नरकान्ता-नारीकान्ता ७, रूप्यकूला-सुवर्णकूला ८, रक्ता-रक्तोदा नदीओ ९, पद्म १०, महापद्म ११, तेगिच्छि १२, केसरी १३, पुंडरीक १४, महापुंडरिक द्रहो १५ अने मागध-वरदाम-प्रभास तीर्थो १६ ना जलोवडे अनुक्रमे १६ अभिषेको करवा, आ तीर्थजलो पैकी एक गंगाजल सिवाय बीजां जलो प्रायः लभ्य नथी, तेथी यथा संनिहित २४ पवित्र मीठा पाणीना कुवाओथी जलो मंगावी तेमने कपूर कस्तूरी आदिथी सुवासित करी एक मोटा माटीना घडामां अथवा धातुना मांजेला वर्तनमां भरवां, भरेल वर्तन उपर स्वच्छ सफेद वस्त्र ढांकवुं, अने विधिकारे तेना उपर जमणो हाथ राखी नीचेना श्लोको

बोलीने तेमा सर्व जलोनु संनिधान करवु. श्लोको आ प्रमाणे छेः—

क्षीरोद ! जाह्नवि ! सिन्धो !, रोहिते ! रोहितांशिके !। जिनचन्द्राभिषेकार्थे, जलेऽस्मिन् सनिधि कुरु ॥१॥
हरिते ! हरिकान्ते ! त्व, शीते ! शीतोदके ! तथा । जिनचन्द्राभिषेकार्थे, जलेऽस्मिन् सनिधि कुरु ॥२॥
नरकान्ते ! तथा नारी-कान्ते ! रूप्ये ! सुवर्णके !। जिनचन्द्राभिषेकार्थे, जलेऽस्मिन् सनिधिं कुरु ॥३॥
रक्ते ! रक्तोदके ! पद्म ! महापद्माह्वयह्रद !। जिनचन्द्राभिषेकार्थे, जलेऽस्मिन् सनिधि कुरु ॥४॥
तेगिच्छे ! केसरिन् ! पुण्ड-रीक ! त्व हि महायुत !। जिनचन्द्राभिषेकार्थे, जलेऽस्मिन् संनिधि कुरु ॥५॥
मागधादिप्रभासान्त-लोकतीर्थाधिपा' सुराः । जिनचन्द्राभिषेकार्थे, जलेऽस्मिन् कुरुत श्रियः ॥६॥

तीर्थजल तैयार करी अनुक्रमे एक पछी एक काव्य बोलीने अभिषेको करवा, प्रत्येक अभिषेकनी आदिमां " नमोऽर्हत्० " अने अन्तमा " अभिषेकतोयधारा," ए काव्य बोलवुं. अने "मीनकुरंगमदागुरु," आ काव्यथी धूप उखेवनो "किं लोकनाथ ! भवतो " ए काव्य बोली मस्तक उपर पुष्प चढाववा

१ क्षीरोदसमुद्रजलाभिषेक—

मन्दारपुष्पमकरन्दहृतालिवृन्द-वृन्दारकप्रचयमेचकितानि लक्ष्म्याः ।
लीलाकटाक्षधवलानि जलानि दुग्ध-सिन्धोः पतन्तु मुनिगात्रपवित्रितानि ॥१४॥

आ काव्य बोली क्षीरोदजलनो अभिषेक करवो

६ गंगा जलनो अभिषेक—

हेमाद्रिशृङ्गान्तरसद्मपद्म-महाह्रदोद्भूतजलप्रवाहा। समुद्रवत्तुङ्गतरङ्गभङ्गा, करोतु गंगा भवतोऽभिषेकम् ॥१५॥

आ काव्य भणी गंगाजलनो अभिषेक करवो.

७ सिन्धु जलनो अभिषेक—

गगनगामि गणेशविलासिनी, जनकटाक्षवलक्षमहाप्लवा।
जितजगत्त्रय ! सिन्धु धुनी ध्रुवा-ण्युपनयंत्वभिषेकजलानि ते ॥१६॥

आ काव्य बोलीने सिन्धुजलनो अभिषेक करवो.

८ रोहिता-रोहितांशानां जलोनो अभिषेक—

प्राक्पाश्चात्याम्भोधि वेलातमाला-नासिञ्चन्त्यो लोलकल्लोलपातैः।
युक्तं कर्तुं लोकनाथाभिषेकं, प्राप्ते पातां रोहिता-रोहितांशे ॥१७॥

आ काव्य बोली रोहिता रोहितांशा नदीओनां जलोनो अभिषेक करवो.

९ हरिता-हरिकान्ताना जलोनो अभिषेक—

कल्पलताकलिकासुरभीणि, क्षान्तिनिवेस्तरसोपनयेताम्।
सिक्तहरिद्धरिवर्षवनान्तो, स्नात्रजलानि हरिद्धरिकान्ते ॥१८॥

आ काव्य भणीने हरिता-हरिकान्ताना जलोनो अभिषेक करवो.

१० शीता-शीतोदाना जलोनो अभिषेक—

मन्दरकन्दोत्तरकुरुदेव-कुरुविदेहविजयविक्रान्तम् । शीताशीतोदोदक-मर्हत्स्नात्रोद्यतं पायात् ॥१९॥

आ काव्य बोलीने शीता शीतोदाना जलोनो अभिषेक करवो

११ नरकान्ता-नारीकान्ताना जलोनो अभिषेक—

कुर्वन्ता कल्पमहीरुहकुसुमरजःपटलपाटलैः सलिलैः । नरनारीकान्ते तव-मज्जनकमहोत्सवारम्भम् ॥२०॥

आ काव्य भणी नर-नारीकान्ता नदीओना जलोनो अभिषेक करवो,

१२ रूप्यकूला-सुवर्णकूलाना जलोनो अभिषेक—

प्रासे पुनीता प्रविहाटयन्त्यौ, ललामहैरण्यवतावकाशम् ।
लोकेकभर्तुर्भवतोऽभिषेक, प्रत्याहृते रूप्यसुवर्णकूले ॥२१॥

आ काव्यवडे रूप्यकूला-सुवर्णकूलाना जलोथी अभिषेक करवो

१३ रक्ता-रक्तोदाना जलोनो अभिषेक—

अर्हदभिषेकपूतं, दूरीकृतदुःखसम्भवाऽऽकूतम् । हरतु कलिकालकलिल, रक्तारक्तोदयोः सलिलम् ॥२२॥

आ काव्य भणी रक्ता रक्तोदाना जलोए करी अभिषेक करवो

१४ पद्मद्रहना जलनो अभिषेक—

अभिषेकवारिहारिप्रभूतकिञ्जल्ककल्कपटवासैः । उपनयतु हेमपद्मैः, पद्मा पद्मालया देवी ॥२३॥

आ काव्य बोली पद्मद्रहना जलवडे अभिषेक करवो.

१५ महापद्मद्रहना जलनो अभिषेक—

स्नपयन्ती जिनं जात-सम्भ्रमासम्भ्रमच्छिदम् । करोतु पूतमात्मानं, महापद्मनिवासिनी ॥२४॥

आ श्लोक बोली महापद्मद्रहना जले करी अभिषेक करवो.

१६ तेगिन्छि द्रहना जलनो अभिषेक—

देवी तवोपनयता-मभिषेक-जलं दलं विभूतीनाम् । पद्मपरागपिशंगं, तेगिन्छि निवासदुर्ल्ललिता ॥२५।

आ काव्य बोली तेगिन्छि द्रहना जल वडे अभिषेक करवो.

१७ केसरी द्रहना जलनो अभिषेक—

स्फुटकेसरेण कम्पित-कमलेन जिनाभिषेचने देव्याः । भाति भवत्रिपभङ्गः, केसरिणा केसरिलयायाः ॥२६॥

आ काव्य भणी केसरी द्रहना जलनो अभिषेक करवो.

१८ पुण्डरीकद्रहना जलनो अभिषेक—

भाति भवतोऽभिषेके, क्वणदलिकुलकिङ्किणीकलापेन । रुचिरोज्ज्वलेन जिन पौण्डरीकिणी पुण्डरीकेण ॥२७॥

आ काव्य बोली पुण्डरीकद्रहना जलनो अभिषेक करवो

१९ महापुण्डरीक द्रहना जलनो अभिषेक—

रिपुसेनाक्लेशकुरङ्ग-सहर्ति स्वापतेयशस्यानाम् । स्नपयन्ती जगदीशं, जयति महापौण्डरीकस्था ॥२८॥

आ काव्य बोली महापुण्डरीकद्रहना जलनो अभिषेक करवो

२० मागध-वरदाम-प्रभास नामक तीर्थोंना जलनो अभिषेक—

कुर्वन्तु तेऽभिषेकं, प्रभासवरदाममागधादीनाम् । तीर्थानामधिपतय', तत्सलिलैः मारसन्मतयः ॥२९॥

आ काव्य बोली मागध, वरदाम, प्रभास तीर्थोना जलनो अभिषेक करवो पछी स्नात्रकारे हाथमां पुष्पांजलि लेइ—

इति शस्तसमस्तसरित्-समुद्रतीर्थोदकादिघोषणया । स्मरयन्प्रागभिषेकं, श्लोकश्लोकं विधिं कुर्यात् ॥३०॥

आ काव्य बोली पुष्पांजलि नाखवी.

॥ इति तृतीयं पर्व ॥३॥

सर्वौषधि-अभिषेक—

सर्वजितः सर्वविदः सर्वगुरोः सर्वपूजनीयस्य । सर्वसुखसिद्धिहेतोर्न्याय्यं सर्वौषधिस्नानम् ॥१॥

आ काव्य बोलीने सर्वौषधि मिश्रित जलनो अभिषेक करवो.

सौगन्धिक-अभिषेक—

स्वामिन्नित्थं निर्व्यलीकस्य तस्यन्, श्रद्धाभाजां पूतिदेहानुषङ्गम्।
जन्मारम्भोच्छेदकृत्सोपयोगे, योगः स्नात्रे गन्धसौगन्धिकैस्ते ॥२॥

आ काव्य बोली सौगंधिक (अष्टगंध) जलनो अभिषेक करवो.

स्वच्छजलाभिषेक—

स्वच्छतया मुनिगात्रपवित्री-भावमुपेत्य जनस्य शिरस्सु ।
प्रासंपदानि जलान्यपि भूयो, भूरिफलानि जयन्ति जगन्ति ॥३॥

आ काव्य भणी स्वच्छ जलना कलशोवडे अभिषेक करवो.

कुंकुमजल-अभिषेक—

कथय कथं प्रशमनिधे-रन्तरलब्धावकाशविषशोऽपि । बहिराविरस्ति रागः, कुङ्कुमपङ्कच्छलाद्भवतः ॥४॥

आ काव्य भणी कुंकुम (केसर)नो अभिषेक करवो.

कुंकुम-चन्दनद्रव-अभिषेक—

भवति लघोरपि महिमा, महति यतः कुङ्कुमद्रवः सहसा। हरिचन्दनानुकारं, बिभर्ति भवतोऽङ्गसङ्गत्या ॥५॥

आ काव्य बोली कुंकुम-चन्दन जलनो अभिषेक करवो.

उपरोक्त पांच अभिषेको कर्या पछी घसेल चंदनद्रवनी वाटकी लेई—

कुङ्कुमद्रवया द्यामिव, सन्ध्याशारदभ्रविभ्रमभ्राजम्। चन्दनचर्चाऽभ्यर्चा-मर्चामर्चन्ति ते कृतिनः ॥६॥

आ काव्य बोली प्रतिमाना सर्वांगे चंदननुं विलेपन करवुं.

उपनयतु भवान्त शान्तमत्यन्तकान्तं, सरसमसुरभिगन्धालीढलीनद्विरेफम्।
सकलभुवनबन्धावेन्धविध्वंसहेतो-र्मृगमदमयपत्रोद्भासिवक्त्रारविन्दम् ॥७॥

आ काव्य बोली प्रतिमाने कस्तूरीना जाडा रस वडे पत्र रचना करवी

भाति भवतो ललाटे, राकाचन्द्रार्धविभ्रमे भगवन्। प्रासलयो भलयोद्भ-वसिद्धार्थकरोचनातिलकः ॥८॥

आ काव्य बोली प्रतिमाने चन्दन गोरोचनना द्रवथी तिलक करवुं, अने उपर मरसरा चोटाडवा अने—

लवेश निर्ग्रन्थगणाग्रगामिनो, न युज्यतेऽपास्तरतेरलङ्कृतिः।
तथापि तस्यां कृतिन कृतादराः, तरन्ति भव्या भवदुःखसागरम् ॥९॥

अन्यदपाकृतपङ्क-प्रस्वेदामयपवित्रगात्रस्य। स्नात्रकृयापि विरुद्धा, विशेषतो वीतरागस्य ॥१०॥

तिष्ठतु तावदलङ्कृति-रभिषेको गन्धधूपमाल्यादि। भवनमपि नाथ माभून्ननु भवतस्त्यक्तसङ्गस्य ॥११॥

तद्यदि कृतानुकारं, श्रद्धातिशयविशिष्टवसुविनियोगम्।
आगममविसंवादं निरपायमहाफलोपलम्भाभ्युदयम् ॥१२॥

भवतः पूर्वावस्था-मास्थाय गुरोर्गुरूपदेशं च । कुर्वन्त्यभिषेकादीन्, प्रद्वेषः को विभूषायाम् ॥१३॥ युग्मम् ॥
जिनभवनबिम्बपूजा-यात्रास्नात्रादिविभ्रमे भङ्गम् । मिथ्याप्ररूपणाकृत्-कुर्यादपवर्गमार्गस्य ॥१४॥
अभिषेकादिमहोत्सव-मुपलभ्य परेऽपि परमदेवस्य । परिपृच्छय कुतूहलिनो, जायन्ते गुणविशेषविदः ॥१५॥
चैत्यालयेन केचित्, केचिद्बिम्बादपास्तरागादेः । केचित्पूजातिशयाद्-बुध्यन्ते केचिदुपदेशात् ॥१६॥
भवतो भवने बिम्बे, पूजातिशये यथार्थमुपदेशो । यतमानस्तीर्थकरत्वनामगोत्रं समारभते ॥१७॥
इति धनरत्नसुवर्ण-स्रग्वस्त्रविलेपनाद्यलङ्कारैः । जनितादरो विजयते, जगद्गुरोर्जन्मसन्तानम् ॥१८॥
आ काव्यो बोलीने प्रतिमाने यथोपलब्ध आभूषणो पहेराववां.

॥॥ इति चतुर्थं पर्व ॥॥

एवं स्नातविलिप्ताऽलङ्कृतजिनबिम्बजातपरितोषः । कुर्वीत बलिविधानं, निधानमत्यन्तसौख्यानाम् ॥१॥

बलिढौकन—

सर्वैर्धान्यैः सर्वपुष्पैः समस्तैः, पाकैः शाकैः कन्दमूलैः फलैश्च ।
शुभ्रैर्दध्नः पिण्डखण्डैः समृद्धं, कुर्याद्भूयारम्भमारम्भवृत्तः ॥२॥
शक्तित्रितयाध्यासित-रूपत्रयवत्त्रिविष्टपाग्रस्य । क्षतकलिबलिपुञ्जत्रय-मुचितं भुवनत्रयाधिपतेः ॥३॥
आ काव्यो बोलीने प्रतिमाने आगे सर्व धान्यो, पक्वान्नो, फल फूलो, शाको, दधिखंडो विगेरे यथाप्राप्त बलि ढोवी,

वलिना त्रण पुंज करवा धान्यो पक्वान्नो एक पुंजमा, शाको दधिखंडो एक पुंजमा, अने फलो पुष्पो एक पुंजमा ढोवा ए पछी मंगलदीवो तैयार करी—

भुवनत्रयैकदीपस्य, चारु कुर्वीत वीतविक्षेप. । मङ्गलगीतसनाथ, निर्वर्धनकं प्रदीपेन ॥४॥

आ काव्य बोली वाजित्रो अने मगलगीतो पूर्वक मगलदीवो उतारवो

मल्लास्फोटनवल्ग-न्नन्दीजयघोपघूर्णितदिगन्तम । आरात्रिकावतरण-कमस्तु वः श्रेयसे जैनम् ॥५॥

आ काव्य बोली पूर्ववत् वाजित्रोना घोप साथे आरती उतारवी

भृङ्गारनालनिर्झर-झात्कारैरार्हती हतातापम् । आरात्रिकानुमार्ग-प्रवर्तिनी वारिधारा वः ॥६॥

आ काव्य बोली नालवाला कलशवडे आरतीनी जेम दक्षिणावर्त फरती त्रणवार जलधारा देवी, अने तैयार राखेल अग्नि-पात्रमा जराक जल रेडवुं.

इदं जिनजगत्त्रयातिशयरूपसपद्भवत्, प्रभूततरविस्मयाकुलितमानसैर्दर्शितम् ।
पुरन्दरपुरस्सरैः सुरपुराधिराजैः पुरा, जिनेन्द्रलवणावतारणकमस्तु वः श्रेयसे ॥७॥

आ काव्य बोलीने प्रतिमाने लवण उतारवुं, अने लवण अग्निमा नाखवु

दिक्पालोने बलिप्रक्षेप—

बहुवर्णपिष्टजातक-परस्परक्षेपपूरिताकाशम् । शृङ्गच्छटाभिराम, दिक्पालेभ्यो बलिं दद्यात् ॥८॥

पुनराघोषयेच्छान्तिं, सर्वदिक्षु क्षिपन् बलिम् । समाहितात्मा कुर्वीण-श्चैत्यसद्मप्रदक्षिणाम् ॥९॥

आ काव्यो बोली दिक्पालोना वर्णानुसारी पिष्ट (लोट)ना बनावेल अनेकविध नैवेद्यनो दिक्पालोने पोतपोतानी दिशा तरफ बलिक्षेप करवो, प्रथम दिक्पालने नाम निर्देश करीने बलि क्षेपवो, अनन्तर—

श्रीसंघजगज्जनपद-राज्याधिपराज्यसन्निवेशानाम् । गोष्ठीकपुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥१०॥

आ काव्य बोली प्रत्येक दिशामां नीचे प्रमाणे शांतिघोषणापूर्वक बलिक्षेप करवो.

श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु । श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु । श्रीराज्याधिपानां शान्तिर्भवतु ।
श्रीराज्यसंनिवेशानां शान्तिर्भवतु । श्रीगोष्ठीमुख्यानां शान्तिर्भवतु । श्रीपुरमुख्याणां शान्तिर्भवतु ।
श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु । ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा ॥

प्रत्येक शान्तिपदने अन्ते नवेद्य प्रक्षेप करवो, जो जिनचैत्य मोटुं होय तो तेनी भमतीमां प्रदक्षिणा करतां पूर्वादि १० दिशाओमां बलिदान करवुं, पुष्पोत्क्षेप करवो, धूप उखेववो, जलाचमन आपवुं.

पछी चैत्यवंदन माटे सर्वने सावधान करवा.

घण्टाशंखनिनादा-ननुगतमुद्घोषयेच्च गम्भीरम् । चैत्याभिवन्दनेऽति-प्रस्फूर्जत्स्पष्टरोमाञ्चः ॥११॥

आ काव्य बोली सूचना रूपे घंट तथा शंख वगडाववा, अने ते बंध करावी—

आयातकिन्नरनरामरसिद्धसाध्य-गन्धर्वपन्नग निशाटनभश्चराद्याः ।
भूत्वा प्रसन्नमनसो मुनिपादपद्मं, वन्दध्वमायतभवार्णवयानपात्रम् ॥१२॥

आ काव्य भणी सर्वने चैत्यवन्दनार्थे गोलावी अभिषिक्त प्रतिमा आगे विधिपूर्वक चैत्यवन्दन करवुं, वर्धमान स्तुतिओ कहेवी अने स्तवन कही जयवीयराय कहेवा पछी—

विहिताभिषेकमभिषे-कवृत्तवृत्तप्रवृद्धसस्तुतिभिः । सुरवृन्दवन्दिताग्रे-वन्दित्वा भगवतो बिंबम् ॥१३॥
पुनराघोषणापूर्वं, सममेव समाहितः । चितीर्वन्देत वन्याना, देवकोष्ठप्रतिष्ठिताः ॥१४॥

आ काव्यो बोलीने प्रासादमा प्रतिष्ठित मूलनायक आदि प्रतिमाओने सर्व जणे साथे वन्दन करवुं, अने दिक्पालादि आमंत्रित देवोनु विसर्जन करवु.

विसर्जन-विधि—विसर्जन विधिमा अधिक तैयारीनी आवश्यकता नथी.

चेलोत्क्षेपैः पुष्पधूपादिदानैः, सन्मानादीन् दिक्पतीनां विसर्गम् ।
कृत्वाऽशेषान् शेषदिव्यावतारा नारात्मासान् प्रेषयेत्स्वाधिवासान् ॥१५॥

आ काव्य भणी दिक्पालोनुं नैवेद्य तेमना वर्णानुसार वस्त्रो (वस्त्रखंडो), पुष्पो (समय होय तो पुष्पमालाओ) अने धूप तैयार करी-

अर्हदभिषेकदर्शित-सान्निध्यनिरस्तकल्मषोल्लाघा. । गच्छन्तु यथास्थानं, ये केचिदुपागता दिव्याः ॥१६॥

आ काव्य भणी प्रत्येक दिक्पालनी दिशामा तेनो प्रिय बली, प्रिय वर्णनो वस्त्र खंड, पुष्प अथवा पुष्पमाला फेंकवी, तथा धूप उखेववो अने नमस्कार करवो, प्रत्येक दिशामा एज काव्य बोली ते ते दिशापालनो प्रिय बलि, तेना वर्णनुं वस्त्र अने पुष्पमाला फेंकी, धूप उखेवी, नमस्कार मुद्रा देखाडी, विसर्जन करवुं

ए बधुं कर्या पछी तरत ज "नमोऽर्हत्०" कही "भो भो भव्याः" इत्यादि बृहच्छांति कहेवी.

ग्रहपीडोपशान्तिमां विशेष—

ग्रहपीडोपशान्तौ तु, प्रतिमां स्नपयेद् बुधः । नवग्रहपरिवारां, प्रभामण्डलमण्डिताम् ॥१७॥
कृतपूजाबलीयांसः, सातिरेकबलाग्रहाः । भवन्ति दुर्बलाः सौम्या, मध्यस्था बलशालिनः ॥१८॥
ततो यथा स्वचारेषु, यथाशक्ति समाहितः । ग्रहाभिषेकं कुर्वीत, वीतव्यामोहविप्लवः ॥१९॥

भा०टी०—ग्रहपीडानी शांति निमित्ते अभिषेक करवो होय तो विद्वाने नवग्रहना परिवारवाली अने भामण्डल भूषित एवी प्रतिमा अभिषेक माटे लेवी, केमके जिनाभिषेकमां पूजावाथी बलवान् ग्रहो अधिक बलिष्ठ बने छे, हीनबली सौम्य बने छे, अने मध्यबली बलवान् बने छे, तेथी जे ग्रहने बलवान बनावी शांति करवी होय तेना वारना दिवसे (राहु केतुनी पूजा शनिवारे करवी.) शक्ति अनुसार सामग्री मेलवीने मानसिक स्थिरतापूर्वक अविपर्यासपणे ग्रहोनो अभिषेक करवो.

कृत्वार्हतः स्नात्रविधिं विधाना-दनन्तकल्याणजुषो यथोक्तम् ।
ततः प्रभामण्डलमण्डितानां, कुर्याद् ग्रहाणां क्रमशोऽभिषेकम् ॥२०॥

भा०टी०—अनन्त कल्याणना भागी अर्हद्नुं प्रथम पूर्वोक्त विधिपूर्वक स्नात्र विधान करीने ते पछी तेज-द्युतिवडे दीप्त ग्रहोना अनुक्रमे अभिषेक करवा.

यथावर्णबलिस्रग्भि-र्यथावर्णविलेपनैः । यथोक्तदक्षिणादानैः, कृत्वा सानुग्रहान् ग्रहान् ॥२१॥

ततश्च संघं गच्छं वा, यथासम्भवमेव वा । वस्त्रपात्रान्नपानाद्यैः, पूजयेत् प्रयतो यतीन् ॥२२॥

भा०टी—ग्रहना वर्ण प्रमाणे नैवेद्यो, तथा मालाओ, वर्णप्रमाणे विलेपनो, अने शास्त्रोक्त दक्षिणादानो वडे ग्रहोने अनुकूल कर्या पछी यथाशक्ति संघ, गच्छ अथवा तो यथासंभव साधुओनी वस्त्र, पात्र, खाद्य, पेयादि पदार्थो वडे प्रयत्न पूर्वक पूजा-भक्ति करवी

सूर्यनो वर्ण हिंगलोक समान छे. तेनो बली रक्तशालिनो करवो, गोल घीमां रांधेल भातनु साधुओने भोजन आपवु, चंद्रवो दक्षिणादानमां आपवो. १

सोम श्वेत वर्णनो छे, बलि पण उज्जवल षष्टि धान्यनो करवो, पुष्पो कुंद मोगरादिनां चढाववा, घृत दूधपाकनु साधुओने भोजन वहोराववुं अने शंखनु दान आपवु २

मंगल जासूदना फूल जेवो रक्त होइ ते वर्णना धान्योनो बलि करवो, लाल कणेर आदिना पुष्पो चढाववा, साधुओने घृत-प्रधान घेवर आदिनुं भोजन वहोराववु अने रक्त चंदननु दान आपवुं ३

बुध पीतवर्ण (हरितवर्ण) होइ बलि अने पुष्पमाला पण तेवा ज वर्णनी चढाववी, साधुओने क्षीरनु भोजन वहोराववु अने सुवर्णनी दक्षिणा आपवी. ४

बृहस्पति पण पीतवर्णनो छे. बलि अने पुष्पमाला पीतवर्णनी बनाववी, भोजन दहिं भातनुं आपवुं अने दक्षिणामां पीतवस्त्रो आपवा. ५

शुक्र श्वेतवर्णनो छे, बलि अने पुष्पमाला सोमना जेवी करवी, भोजन साधुओने घृतनुं आपवुं, दक्षिणामां पगरखांनी जोडी आपवी. ६

शनी कइंक कृष्णवर्णनो होइ बलि अने पुष्पमाला पण एवा ज वर्णनी बनाववी, भोजन तिल पिष्टनुं (पीलेल तिलोनुं) आपवुं, दक्षिणामां भज आपवो. ७

राहु अतिशय कालो छे, बलि पण काला वर्णनो करवो, अने पुष्पमाला पण तेवा ज कृष्णवर्णनी बनाववी, भोजन खीचडी (काला तल नाखेल खीचडो)नुं आपवुं, दक्षिणामां लोहनुं पात्र आपवुं. ८

केतु धूमाडाना जेवा रंगनो छे, बलि अने पुष्पमाला पण एवा ज वर्णनी बनाववी, भोजन अनेक जातना अन्ननुं आपवुं, अने दक्षिणामां कालो कांबलो आपवो. ९

ग्रहोनी शान्ति इच्छनार माणसे उपरोक्त प्रकारे नवग्रहमंडित जिन प्रतिमा उपर अभिषेक विधि करी ग्रहोना अभिषेक पूर्वक बलि विधान, पुष्पारोपण, भोजन, दान दक्षिणा करी ग्रहोनी शांति करवी, अने पछी संघने जमाडवो, तेवी शक्ति अथवा सगवडना अभावे अपवादे पोतानो गच्छ जमाडवो, ए पण न बने तो त्यां जे कोइ साधुओ हाजर होय तेमनी ज वस्त्र, पात्र, अन्न, पानादिवडे आदरपूर्वक पूजा भक्ति करवी.

अभिषेक गुणगर्भित धर्मकथा—

प्रशस्यमायुष्यमथो यशस्यं, जयास्पदं संपदमावहन्तम् ।
हेतुं सदा सौख्यपरम्पराणां, करोत्यपुण्यो न जिनाभिषेकम् ॥२३॥

भा०टी०—प्रशसनीय, आयुष्यदायक, यशोवर्धक, जयप्रद, संपत्तिदाता अने निरन्तर सुख परपरानो हेतु आ जिनाभिषेक पुण्यहीनथी करी शकातो नथी.

इति विहतविपत्पराक्रम, स्नपनविधि विधिमर्हतोऽर्हतः ।
प्रतिसमयमनुस्मरन्ति ये, सकलसुखास्पदतां व्रजन्ति ते ॥२४॥

भा०टी०—आ प्रमाणे विधि योग्य श्रीअर्हन्तनी स्नात्रविधि के जे विपत्तिना बलने हटावनारी छे, अने जेओ तेने हर समय याद करे छे, तेओ सर्व सुखोनु प्रस्थान बने छे

इति पंचम पर्व.

इति श्री शान्तिवादिवेतालीय अर्हदभिषक विधिः सपूर्णः ।



१४ अष्टोत्तरी शतस्नात्र विधिः—

[ओगणीसमा सैकाना पूर्वार्धमां चालती]

उपकरण

(१) प्रतिमा ४ पंचतीर्थी-आदिनाथ-अजितनाथ-शान्तिनाथ-पार्श्वनाथनी
(२) १०८ निवाणनां जल
(३) सेवंतरा पुष्प ४३२
(४) पंचवर्णा फूल सेर ५
(५) सेवनना पाटला २
(६) रूपादिकना कलश ४
(७) बीजा पाटला १२
(८) माटली मण १। नी चोरवी,
(९) धोयेल अंगलूहणां ४
(१०) कुंभ कोरा २
(११) त्रांबाकुंडी १
(१२) अगरबत्ती सेर १
(१३) श्रीफल पाणींचा ९
(१४) कमल वरणुं गज १।
(१५) केसर टांक २ तथा ४
(१६) बरास टांक ४
(१७) दीवनां नालियेर १०८
(१८) साकरना गांगडा १०८
(१९) सोपारी १०८
(२०) लविंग १०८
(२१) सींगोडा १०८
(२२) श्रीफल १०८
(२३) बदाम १०८
(२४) एलची डोडा १०८
(२५) द्राक्ष १०८
(२६) खारेक १०८
(२७) पान १०८
(२८) बीजां फल यथाशक्ति आणवां
(२९) दोकडा [अधेला] २७
(३०) खाजां १०८
(३१) सूखड 'चंदन'
(३२) चौखा शेर २०
(३३) अखंड पैसा ४
(३४) डाभ समूलो

(३५) गलिनाकुल-जवार चणा—गेहु सेर ५
(३६) लापसी पुडला नैवेद्य
(३७) पकान्न—धान—शाक राधेल
(३८) वास टांक २
(३९) पंचामृत दूध, दही, घृत, साकर, गोल
(४०) आरती १
(४१) मगलदीवो १
(४२) धूपधाणा २
(४३) पीतलनी वाडी २
(४४) दीवी २
(४५) सरावला २
(४६) रूनी दीवेट १०८
(४७) घृत सेर २
(४८) रूपा नाणा २
(४९) लाडवा १०८
(५०) गेनाम्रत ०॥ सेर
(५१) धोतिया जोडा १२ अथवा २०
(५२) पडधोतिया २ अथवा ४
(५३) चीणीयु कपूर टाक १
(५४) कंकावटी १
(५५) कंकु
(५६) मीठु
(५७) माटी
(५८) चमर २
(५९) घंट १
(६०) यथाशक्ति थाली ७
(६१) वाटकी ५
(६२) मुहपत्ती १२ अथवा २०
(६३) पछेडी धोयेली २
(६४) गोलपापडी सेर ५। घंटाकर्णना मंत्रे १०८ वार गाळी बालकोने वहेंची देवी.१

—❀—

पूर्वकृत्य-मंत्रसंग्रह

मण्डप प्रतिष्ठामंत्र—ॐ भूरसि भूतधात्रि विश्वाधारे नमः ॥

१ आ सामाननी सुची स १८८७मा लखावेल प्रति उपरथी उतारी छे

पीठ स्थापनमंत्र—ॐ अर्हत्पीठाय नमः ।

पीठे प्रतिमा स्थापन मंत्र—" ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्यमहिताय अत्र पीठे तिष्ठ २ स्वाहा ।"

घृतप्रदीप प्रतिष्ठा मंत्र—ॐ घृतमायुर्वृद्धिकरं, भवति परं जैनदृष्टिसंपर्कात्, तत्संयुतः प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः स्वाहा ॥

पंचामृत भरणयोग्य माटलीलेखन मंत्रः—"ॐ ह्रीं श्रीं सर्वोपद्रवांस्तान्नाशय २ स्वाहा ।"

माटली स्थापन मंत्रः—ॐ ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा ।

माटलीमध्ये पंचामृत क्षेपमंत्रः—ॐ ह्रीं भः ३ ।

पंचरत्न प्रतिष्ठामंत्र—

ॐ नाना रत्नौघयुतं, सुगंधिपुष्पाधिवासितं नीरम् । पतताद् विचित्रवर्णं, मंत्राढ्यं स्थापनाबिम्बे स्वाहा ॥

पंचामृत प्रतिष्ठामंत्रः—

जिनबिम्बोपरि निपतद् घृतदधिदुग्धादिभिः सुपरिपूताः । गंधोदकसंमिश्रा, पंचसुधा हरतु दुरितानि ॥

सर्वौषधि प्रतिष्ठामंत्रः—

ॐ ह्रीं सर्वौषधि संयुतया, सुगंधया चर्चितं सुगतिहेतोः । स्नपयामि जैनबिंबं, मंत्रिततन्नीरनिवहेन स्वाहा ॥

तीर्थजल प्रतिष्ठामंत्रः—

ॐ ह्रीं भः जलधिनदीहृदकुंडेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि। तैर्मंत्रसंस्कृतैरिह, बिम्बं स्नपयामि शुद्धव्यर्थम् स्वाहा ॥

चंदनमंत्रः—

ॐ नमो भगवते चन्द्रप्रभजिनेन्द्राय शशांकहारगोक्षीरधवलाय अनन्तगुणाय भव्यजनप्रबोधाय अमृतस्रावण कुरु २ स्वाहा।

जलमन्त्रः—

ॐ आपोऽप्कायाः एकेन्द्रियजीवा निरवद्याऽर्हत्पूजायां निर्व्यथा निरपायाः सन्तु सद्गतय सन्तु न मेऽस्तु संघट्टनहिंसापापमर्हदर्चने स्वाहा।

वासमंत्रः—'ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु पृथु गन्धान गृहाण गृहाण स्वाहा ॥'

पुष्पमंत्र'—'ॐ नमो यः सर्वलो मेदिनी पुष्पवती पुष्पं गृहाण २ स्वाहा ॥'

तात्कालिक पूर्वक्रिया—

शुभदिनमुहूर्ते स्नात्र करावनारने चन्द्रबल होय ते दिवसे स्नात्र करवाने स्थाने भूमिशुद्धि करीने सधवा स्त्री पासे गुंहली करावबी, ने उपर श्रीफल १ मूकवुं. ते उपर परनालियो बाजोट धोइ धूपावीने पूर्व अथवा उत्तर दिशा सन्मुख मांडवो, पछी स्नात्र-

कारो शुद्ध वस्त्रो पहेरी, हाथे कंकण बांधीने ४ प्रतिमाओ आदिनाथ, अजितनाथ, शान्तिनाथ, पार्श्वनाथनी पूजीने परनालिआ बाजोट उपर अनुक्रमे जोडे स्थापन करे, आगल चोखा सेर २५ श्रीफल १ नी भेट धरवी, चारे जणे एक जण केसर–चंदन घसावीने वाटकी २ मां भरावे, १ देवपूजा माटे अने २ जी ग्रह आलेखवा सारुं. पछी अग्रेसर श्रावक हाथे कंकण बांधी, तिलक करीने ४ प्रतिमाओनी पूजा करे, पछी पाटले पंचामृतनी माटली थोड़ धूपीने तैयार करे, तेमां केसर–चंदननो साथियो करी ते उपर " ॐ ह्रूँ श्रीं सर्वोपद्रवान् नाशय २ स्वाहा " आ मंत्र लखीने तेमां रूपानाणुं मूके, तेने कांठे मिंढल मरोडाफली ने जड सहित डाभ बांधे, पछी माटली इंढाणी उपर मूके, १ जण सामे माटलीने झाली ने उभो रहे, " ॐ ह्रूँ भः " आ मंत्र माटलीने कांठे हाथ देइने ३ वार बोली १०८ निवाणनुं पाणी माटलीमां भरे, गोली (माटली) थापीने तेमां चन्दन केसर कपूर पुष्प नांखवां, पंचामृत पण तेमां नाखीने ते उपर तासतो (रंगीन वस्त्र) ढांकवो, अने ते उपर १ जण हाथ राखीने सात स्मरण गणे, १ जण धूप करे.

नवग्रह पूजा विधि—

सूर्यने रतांजणी (रक्त चन्दन)नो आलेख, अने एकला केशरनी पूजा, परवालानी मालाये मंत्र गणवो, गोल धाणीनो लाडवो मूकवो.

सूर्यनो मंत्र—ॐ ह्रूँ सांशकसूर्याय सहस्रकिरणाय नमो नमः ।

प्रार्थना—

पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारेण भास्कर ! । शांति तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षा कुरु जयश्रियम् ॥१॥

इति सूर्यपूजा ।

चन्द्रमाने एकला चन्दननो आलेख तथा पूजा, स्फटिकनी मालाये मंत्र गणवो, मरमरानो लाडवो ढोवो.

चन्द्रनो मंत्र—ॐ रोहिणी पतये चन्द्राय ॐ ह्रीं ह्रीं ह्रीं चन्द्राय नमः ।

प्रार्थना—

चन्द्रप्रभजिनेन्द्रस्य, नाम्ना तारागणाधिप ! । प्रसन्नो भव शान्तिं च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ॥२॥

इति चन्द्र पूजा ।

मंगलने केसरनो आलेख, केसरनी पूजा, प्रवालानी मालाये मंत्र गणवो, गोल धाणीनो लाडवो मूकवो, लाडवो तलना पण मूकाय

मंगलनो मंत्रः—ॐ नमो भूमिपुत्राय भृभ्रूकुटिलनेत्राय वक्रवदनाय ह्रः सः मंगलाय स्वाहा ।

प्रार्थना

सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्ना शान्ति जयश्रियम् । रक्षा कुरु धरासूनो !, अशुभोऽपि शुभो भव ॥३॥

इति मंगलपूजा—

बुधने चन्दन केसरनो आलेख, अने तेनीज पूजा, केरवानी मालाए मंत्र गणवो, चणानी दालनो लाडवो मूकवो.
बुधनो मंत्र—ॐ नमो बुधाय श्राँ श्रीँ श्रौँ स्रः दः स्वाहा ।४।

प्रार्थना—

विमलानन्तधर्मारा:, शान्तिः कुंथुर्नमिस्तथा। महावीरश्च तन्नाम्ना, शुभो भव सदा बुध ! ॥४॥

इति बुध पूजा ।

बृहस्पतिने गोरोचननो आलेख, गोरोचननी ज पूजा. चणानी दालनो लाडवो मूकवो, केरवानी मालाए मंत्र गणवो।
बृहस्पतिनो मंत्रः—ॐ ग्राँ ग्रीँ ग्रूँ ह्रीँ बृहस्पतये सुरपूज्याय नमः ॥५॥

प्रार्थना—

ऋषभाजितसुपार्श्वा-श्चाभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः संभवः स्वामी श्रेयांसश्च जिनोत्तमः ॥५॥
एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूज्योऽशुभः शुभोभव। शान्ति तुष्टिं च पुष्टिं च, कुरु देवगणार्चित ! ॥६॥

इति गुरुपूजा ।

शुक्रने एकला चन्दननो आलेख अने पूजा, स्फटिकनी मालाए मंत्र गणवो, मरमरानो लाडवो मूकवो.
शुक्रनो मंत्र—ॐ यः अमृताय अमृतवर्षणाय दैत्यगुरवे नमः स्वाहा ॥

प्रार्थना—

पुष्पदन्तजिनेन्द्रस्य, नाम्ना दैत्यगणार्चित ।। प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षा कुरु जयश्रियम् ॥७॥

इति शुक्रपूजा ॥६॥

शनैश्चरने चुआकस्तूरीनो आलेख, तथा पूजा, अकलवेरनी मालाए मंत्र गणवो, अडदनी दालनो लाडवो मूकवो

शनिनो मंत्र—ॐ शनैश्चराय ॐ। क्रौं ह्रीं क्रोडाय नमः ॥७॥

प्रार्थना—

श्री सुव्रतजिनेन्द्रस्य, नाम्ना सूर्यांगसंभव ।। प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ॥८॥

इति शनि पूजा ।

राहुने चुआ कस्तूरीनो आलेख, अने पूजन, अकलवेरनी मालाए मंत्र गणवो, अडदनो लाडवो मूकवो

राहुनो मंत्र—ॐ वाँ श्री व्रः व्र. व्रः पिंगलनेत्राय कृष्णरूपाय राहवे नमः स्वाहा ।८।

प्रार्थना—

श्रीनेमिनाथतीर्थेश-नाम्ना त्वं सिंहिकासुत ।। प्रसन्नो भव शान्ति च, रक्षां कुरु जयश्रियम् ॥९॥

इति राहुपूजा ।८।

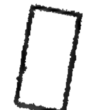
केतुने यक्षकर्दमनो आलेख अने तेनीज पूजा, सिंदुरिया स्फटिकनी मालाए मंत्र गणवो, मगनी दालनो लाडवो मूकवो.

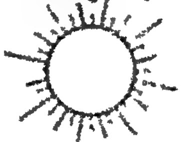
नवग्रह मंडलालेख—

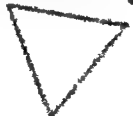
ॐ बुधाय नमः
बुध ४

ॐ शुक्राय नमः
शुक्र ६


ॐ चंद्राय नमः
सोम २


ॐ गुरवे नमः
गुरु ५


ॐ रवये नमः
सूर्य १


ॐ भौमाय नमः
मंगल ३


ॐ केतवे नमः
९ केतु


ॐ शनैश्चराय नमः
शनैश्चर ७


ॐ राहवे नमः
राहु ८

केतुनो मंत्र—ॐ क्रौं क्रीं क्रूँ ठः ठः ठः छत्ररूपाय राहुतनवे केतवे नमः स्वाहा ॥९॥

प्रार्थना—

राहोः सप्तमराशिस्थः, कारणे दृश्यतेऽम्बरे ।
श्रीमल्लिपार्श्वयोर्नाम्ना, केतो शान्तिं श्रियं कुरु ॥१०॥

इति केतुपूजा ।

ते पछ पीतवर्णाक्ष होय तेनी पूजा तेमज नवनिध्र लिखनी पूजा करवी. अने मागेनानो लोकपालीने तेमना नामनिशानी रचीने पुष्पांजलि चढाववी. ए रीते पीठ रचना करी पीतवर्णना होम अगर नवे ग्रहो एक साथे पीतवर्णना होम गो धा जोन निधिनी पदाहन करवुं.

प्रयोगकी
स्नात्रकी
विधिः

मुख्य श्रावके शेवननो १ पाटलो धूपवास पुष्पे वासित करी, ते उपर अघाडानी अथवा अंघेडानी लेखणे चन्दन केसरे ९ ग्रह आलेखवा, ग्रह उपर त्रांबानाणुं प्रत्येके मूकवुं, उपर गते वस्त्रे ढांकिने. ते उपर अणियाला पान. चोखा ढगली, राती सोपारी, नाणुं प्रत्येके एक एक मूकीये, पछी पंचवर्णा फूल नालियेर पसलीमा लेइने—

जिनेन्द्रभक्त्या जिनभक्तिभाजां, जुषन्तु पूजावलिपुष्पधूपान् ।
ग्रहा गता ये प्रतिकूलभावं, ते सानुकूला वरदा भवन्तु ॥

आ पद्य भणी उपर मूकीये,

इति नवग्रह पूजा विधि ।

दिक्पाल पूजाविधि —

त्यार पछी बीजो शेवननो पाटलो धूपवास पुष्पोथी वासित करीने, चन्दन केसरथी ते उपर दश दिक्पालो आलेखवा, अने पूजवा, उपर पीत वस्त्र ढाकी प्रतिमा आगल पाटलो मूकवो, उपर पान १० फूल, सोपारी, चोखा, नाणु मूकवा, ते उपर श्रीफल १ मुकवुं

अष्टमंगल पाटली स्थापन विधि

वली पाटली १ अष्टमंगलनी आलेखवी. नाणुं, पान, सोपारी मूकवी, अने ते पछी—

नामजिणा जिणनामा, ठवणजिणा पुण जिणिंदपडिमाओ। दव्वजिणा जिणजीवा, भावजिणा समवसरणत्था ॥१॥

ए गाथा बोली पाटली प्रतिमानी सामे मूकवी.

ते पछी अग्रेसर श्रावक शुद्ध वस्त्र पहेरी, हाथे कंकण बांधी, तिलक करी ४ प्रतिमाओने पूजे, अने ते पछी दश दिक्पालोनुं आह्वान करे, त्यां प्रथम बलिबाकुल सर्व एक थालीमां राखीने वास वडे भूतबलि मंत्रथी मंत्रे.

भूतबलिमंत्रः—

ॐ नमो अरिहंताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरिआणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं, जे इमे किंनरकिंपुरिसमहोरगगरुलसिद्धगंधव्वजक्खरक्खसपिसायभूयपेयसाइणीडाइणी पभिईओ जिणघरनिवासिणो नियनिय निलयट्ठिआ पवियारिणो संनिहिया असंनिहिया ते सव्वे इमं विलेवण धूवपुप्फफलपईवसणाहं बलिं पडिच्छन्ता तुट्ठिकरा भवन्तु, पुट्ठिकरा भवन्तु संतिकरा भवंतु, सिवंकरा भवंतु, सुत्थं जणं कुणंतु सव्वजिणाणं संनिहाणप्पभावओ पसन्नभावत्तणेणं सव्वत्थ रक्खं कुणंतु सव्वत्थ दुरियाणि नासंतु सव्वाऽसिवमुवसमंतु संतितुट्ठिपुट्ठि सिवसुत्थयण कारिणो भवंतु स्वाहा ।

आ मंत्रे करीने भूतबलि मंत्रीने तेमांथी अर्ध बलि जुदी राखीने दिक्पालोनुं आह्वान करवुं, ते आ प्रमाणे—

दिक्पाल स्थापना—

ॐ नम ईशानाय	ॐ नम इन्द्राय	ॐ नमोऽग्नये
ॐ नम' कुबेराय	ॐ नमो ब्रह्मणे ॐ नमो नागाय	ॐ नमो यमाय
ॐ नमो वायवे	ॐ नमो वरुणाय	ॐ नमो निर्ऋतये

ॐ इंद्राय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २ वलि गृहाण २ स्वाहा ॥ १ ॥

ॐ अग्नये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २ वलि गृहाण २ स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ यमाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपुजासमये आगच्छ २ वलि गृहाण २ स्वाहा ॥३॥

ॐ निर्ऋतये सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २ वलि गृहाण २ स्वाहा ॥४॥

ॐ वरुणाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २ वलि गृहाण २ स्वाहा ॥५॥

ॐ वायवे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगर अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २ वलि गृहाण २ स्वाहा ॥६॥

ॐ कुबेराय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ॥७॥

ॐ ईशानाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ॥८॥

ॐ ब्रह्मणे सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ॥९॥

ॐ नागाय सायुधाय सवाहनाय सपरिकराय अस्मिन्नगरे अस्मिन् गृहे अष्टोत्तरीपूजासमये आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ॥१०॥

ए मंत्रोमांनो एक एक मंत्र पूर्वादि एक एक दिशा संमुख उभा रही बोलवो, अने ते ते दिशामां बलिक्षेप करवो, पूर्व आग्नेय, दक्षिण, नैर्ऋत, पश्चिम, वायव्य, उत्तर, ईशान, ऊर्ध्व अने अधोदिशामां अनुक्रमे आह्वान करीने बलि नाखवी, १ जण पाणी छांटे, १ जण धूप उखेवे, १ जण चंदन छांटा नाखे, १ जण फल ढोवे, आ प्रमाणे बलिक्षेप प्रसंगे आह्वान करनार, बलि फेंकनार अने बीजा ४ उपर जणावेल मलीने ६ माणसो जघन्यपणे जोइये.

त्यार पछी मुहपत्ति लेई इरियावही पडिकमी ४ थुइए देववंदन करवुं, स्तवनने स्थाने लघु शान्तिस्तव कहीये, १०८ तारनी दीवेटना दीवा २ करवा, १ दीवो प्रतिमाने जमणे पासे मूकवो, अने बीजो डाबे पासे. पछी बे जणा घी सिंचता रहे, २ जणा

चामर वींजे, १ जणे बाजोठ उपर रक्त वस्त्र पाथरी प्रति पूजाए १-१ पान मूकी ते उपर चोखानी ढगली करी उपर सोपारी मूकवी, फल पक्वान्न ढोवा, १ जण माटली माहिंथी भरी भरीने पाणीना कलशा आपे, ४ जणा गाथा भणनारना हाथमां कंकण सहितकलश ४ आपे, परनालिया बाजोट आगे त्रांबाकुंडी मांडवी, तेमां श्रीफल १ मूकवु, स्नात्रकरनारने आभूषण पहेराववां, न होय तो चंदनना आभरण करवा, फूलनो हार पहेराववो, अने तेने जघन्यथी पण ८ दिवसनु ब्रह्मचर्य उच्चरावबु, पछी ते ४ गाथा भणावे, तेनो अनुक्रम—

ॐ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः—

ॐ वरकणयसंखविद्दुम-मरगयघणसंनिहं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वन्दे स्वाहा ॥१॥

ॐ तं संतिं संतिकरं संतिण्णं सव्व भया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे स्वाहा ॥२॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमइंदगयरणभयाइं। पासजिणनामसंकि त्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी अ। जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

ए गाथा ४ भणीने ४ कलशा ४ प्रतिमाओ उपर साथे ढालवा, १ जण प्रतिमाना अंग लूंछे, चन्दन पुष्पे पूजे, एज प्रमाणे १०८ वार करी स्नात्रपूजा पूरी करवी, जो पाणी वध्युं होय तो बीजा पासे पखाल करावी ते कामे लगाडवु, पछी खाड अने उन्हा पाणीथी प्रतिमाओ उपरथी चकाश उतारी प्रतिमाओ साफ करीने पूजे. पछी कलश ४ ऊगटी धोई धूपीने चोखा पाणीए भरे, माहि फूल, चन्दन, नाखी उपर अगलूहणा ढांकी, स्नात्र करी, चैत्यवंदन करे, स्तवनने बदले अजितशान्ति कहे. जयवीयराय

पर्यन्त कहीने कुसुमांजलि भणाववी. स्नात्र विधिए ४ कलश ढालवा, पछी पूजा करीने नैवेद्य ढोवुं, आरती मंगलदीवो करवो, पछी धूप उखेवीने चैत्यवंदन करवुं, अने स्तवनने ठेकाणे तिजयपहुत्त कहेवुं.

पछी अष्टोत्तरी स्नात्र करावनारने उभो राखी तेना बे हाथोमां कुंभ मूकवो, तेमां रूपानाणुं मूकवुं, कुंभने कांठे गेवास्त्र बांधी, फूलमाला पहेरावबी, पछी १ जण मोटी शान्ति कहे, अने २ जण न्हवणना पाणीथी अखंड धाराए ते कुंभ भरे, घरमां सर्वत्र ते जलने छांटे, जे मांगे तेने पण ते जल आपे.

बलिबाकुल जे राख्या छे ते वडे दिक्पालोने विसर्जन करे, संघ भक्ति करवी, स्नात्रकारोने यथाशक्ति श्रीफलादिक आपे. शान्तिकरूप स्नात्रमां ४ गाथाओ भणीने अभिषेक करवो पण जो स्नात्र पौष्टिक होय तो ४ गाथा पछी—

"ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिग्विभागकुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय अस्मिन् गृहे पूजाप्रस्तावे शान्तिकविधौ पूजकस्य शान्तिं ऋद्धिं वृद्धिं कल्याणं कुरु कुरु स्वाहा।"

आ मंत्र बोलीने अभिषेक करवो अने अन्तमां—

सर्वमंगलमांगल्यं, सर्व कल्याणकारणम्। प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१॥

आ मंगल श्लोक बोलीने समाप्ति करवी.

इति अष्टोत्तरी स्नात्रविधिः संपूर्णः१

---

१ संवत् १८४८ फाल्गुण वदि ५ भौमवारे। शुभ भवतु। आदर्श पुस्तक अंतिम लेख पुष्पिका॥

॥ अथ अष्टोत्तरशतस्नात्रविधिः ॥

(सत्तरमा सैकाना पूर्वार्धमा चालती[1])

उपकरणो

(१) प्रतिमा ४ "आदिनाथ १ अजितनाथ २ शान्तिनाथ ३ अने पार्श्वनाथ ४ नी पंचतीर्थी अथवा चोवीशी "
(२) ' प्रणालियो ' बाजोट १
(३) कलश ८
(४) कुंडी १ ' पखालना पाणी माटे'
(५) कोरो कुंभ १
(६) कुंडी १ " कलश भरवाने "
(७) धूपधाणुं १
(८) दियावटयुक्त वस्त्र २ " एक फलादि ढोवा, बीजुं कुंभ हेठ मूकवाने "
(९) श्रीफल ४ प्रतिमा आगल ढोवा, श्रीफल ३ बीजा कुंभ उपर ग्रह उपर अने दिक्पालो उपर मूकवा, कुल ७.
(१०) कुंभ उपर ढाकवा ' रातु वस्त्र गज १
(११) नव ग्रहोने माटे वस्त्र गज ९ धोलुं गज २ रातुं गज २ पीलु गज १ छींट गज १ कालु गज ३ (पाठान्तरे नीलुं गज ३ कालुं गज १)
(१२) दोकडा ९ (आनाना पैसाना अडधिया)
(१३) सोपारी ९
(१४) पान ९
(१५) चोखानी ढगली नव ९
(१६) दिक्पालोना पाटला उपर १। सवा गज रातुं वस्त्र, सोपारी १० पान १० दोकडा १०
(१७) १०८ कूपनुं पाणी
(१८) गधोदक
(१९) सेवतीना फूल ४३२

१ संवत् १६३९ ना वर्षमां लखेली प्रति उपरथी लीधी छे।

(२०) पांन १०८
(२१) परदेशी नालियेर १०८
(२२) कमल काकडी १०८
(२३) सोपारी १०८
(२४) सींघोडा १०८
(२५) खारेक १०८
(२६) द्राक्ष १०८
(२७) टोपराना ककडा १०८
(२८) साकरना कटका १०८
(२९) निसाणी (रायण) १०८
(३०) लविंग १०८
(३१) एलची डोडा १०८
(३२) लाडूडी (न्हाना लाडवा) १०८
(३३) खाजली (न्हानी पुडी जेवडां खाजा १०८)
(३४) चोखा शेर ८ तथा १० (चावल पक्का ३ तथा ३॥ शेर) ना ढगला १०८ करवाने
(३५) 'कोरोबलि गोहूं जवचणा, सरसव, मलीने आसरे एक सेर, ए आह्वाननी बलि,'
(३६) ' विसर्जननी बलि भात, लापसी मालपुडा, (पुडला) चोलाना बाकला, जवारना बाकला, खीचडो, अने चणाना बाकला, घी, चंदन, केसर सहित.'
(३७) अगर टांक ७ तथा ९.
(३८) बरास कपूर गांगडा ४
(३९) चीणीयुं कपूर मंगलदावामां मूकवाने वाल ४ नो काकडो १
(४०) केसर टांक ३
(४१) सुखड बाटकी २ एक पूजाने माटे, बीजी तिलकने माटे.
(४२) रूपामहोर ' चोखंडा रूपैया ' २ स्नात्रजल (पंचामृत) कलशमां नाखवाने माटे एक अने बीजो पखाल जलनी कुंडीमां मूकवा माटे '
(४३) नैवेद्य सेर ४ तथा ५ ने आसरे,
(४४) सरावला २ मोटा,
(४५) १०८ तांतणनी दीवेट २
(४६) गेवाख्त्र टांक ९ ने आसरे,
(४७) घी दीवा माट सेर ३ आसरे-(लगभग ८६ तोला)
(४८) श्रावक ८ ब्रह्मचारी मले तो तेवा

न मले तो ८ अने जघन्यथी ३ दिवसनो गुरु मुखे नियम करावी ऋकण नाधीने तैयार करवा'

(४९) फलावली जे मले ते ढोना माटे लेवी.

(५०) सर्वौषधि ' स्नात्रजलमा नाखवाने सर्वौषधि—डाभ, हलदर, वरिहाली, गलो, नागरमोथ, पीपरामूल, लविंग, कंकोल, जायफल, जावंतरी, नखला, सुखड (चंदन) अने शिलारस. आ १२ चीजोनु चूर्ण ते सर्वौषधि

अष्टोत्तरी स्नात्रना पूर्वकृत्यो—

प्रथम अचोट पाणी छटावी, भूमि शुद्ध करावी, शुद्ध मधवा स्त्री पासे कुंकुमनी गोहली देवरावबी, उपर चोखानो साथियो पूरावी, सोपारी मूकीये, पन्नालियो बाजोट माडी ते उपर चउओ बाधवो, ध्वजा २ आरोपीने ते पछी पूर्व सन्मुख अथवा उत्तराभिमुख प्रतिमा ४ स्थापन करवी अने पछी ग्रह, दिक्पालोनी स्थापना करवी

ग्रह स्थापन विधि

पछी एक पाटले सुखड केसरथी नवग्रह आलेखीये, यंत्रने अनुसार ग्रहोनो आलेख करवो

ॐ आदित्याय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलि गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रोत्सवे पूजां गृहाण २ शान्ति कुरु २ ॥

ॐ चन्द्राय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलिं गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रोत्सवे पूजा गृहाण २ शान्ति कुरु २ ॥

ॐ भौमाय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलिं गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रोत्सवे पूजां गृहाण २ शान्तिं कुरु २॥

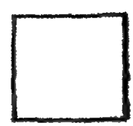
बुधँ ४



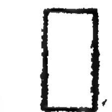
शुक्र ६



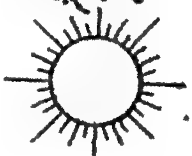
सोम २



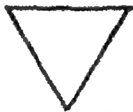
गुरु ५



सूर्य १



मंगल ३



९ केतु



शनैश्चर ७



राहु ८

ॐ बुधाय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलिं गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्र महोत्सवे पूजां गृहाण २ शान्ति कुरु २ ॥

ॐ बृहस्पतये सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलिं गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रोत्सवे पूजां गृहाण २ शान्ति कुरु २ ॥

ॐ शुक्राय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलिं गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रोत्सवे पूजां गृहाण २ शान्तिंकुरु २ ॥

ॐ शनैश्चराय सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलिं गृहाण २ अमुकगृहे अष्टो-

त्तरीस्नात्रोत्सवे पूजा गृहाण २ शान्ति कुरु २ ॥

ॐ राहवे सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलि गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रोत्सवे

पूजा गृह्णाण २ शान्ति कुरु २ ॥

ॐ केतवे सवाहनाय सपरिकराय सायुधाय आगच्छ २ बलि गृहाण २ अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रोत्सवे

पूजां गृह्णाण २ शान्ति कुरु २ ॥

आ प्रमाणे नव ग्रहनां मंत्र बोली मूलडनी पूजा तथा चाखानी ९ ढगली करवी, रविने द्राक्ष, चन्द्रने सेलडी, मंगलने

सोपारी, बुधने नारंगी, गुरुने जम्बेरी, शुक्रने बीजोरु, शनिने खारेक, राहुने नालियेर, केतुने दाडिम, ए फल ग्रहोने मूकवा,

नहीतर आठ सोपारी एक एक नालियेर मूकीये.

शुक्र अने चन्द्रने श्रीखण्ड (चन्दन), मंगल अने सूर्यने रक्तचन्दन, बुध अने गुरुने वात 'पीतद्रव्य–गोरोचन' अने शनि–

राहु–केतुने कुङ्कुम (आ द्रव्योथी अनुक्रमे ९ ग्रहोने पूजना)

रविने कणेर, चन्द्रने मुचकुन्द, मंगलने जासूल, बुधने चंपक, बृहस्पतिने शतपत्र (कमल अने ए न मले तो चंपकादि

पीत पुष्पो) शुक्रने जाइ, शनिने मालती, राहुने कुन्द अने केतुने विविध वर्णना पुष्पो चढाववां. पक्वान्न लाडू प्रमुख ढोवां,

रविने रातु कापड गज १ चन्द्रने श्वेत कापड गज १ मंगलने रातुं कापड गज १ बुधने छींटनुं कापड गज १ (नीली-

छींटनु) बृहस्पतिने पीलु कापड गज १ शुक्रने श्वेत कापड गज १ शनिने कालु कापड गज १ राहुने कालुं गज १ केतुने

कालुं गज १, एम गंज गज कापड प्रत्येक उपर मूकवुं, अने श्रीफल १ उपर मूकवुं.

पछी अक्षत वास पुष्प अने जल लेइने—

"ॐ आदित्य-सोम-मंगल, बुध-गुरु-शुक्राः-शनैश्चरो-राहुः। केतुप्रमुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥१॥

आ श्लोक बोलीने पुष्पवास जलवडे अर्घ आपवो,

॥ इति ग्रह स्थापन विधिः ॥

दिक्पाल स्थापना विधि—

बीजे सेवनने पाटले अथवा थालमां सूखडे करी आ रीते दश दिक्पालो आलेखवा,—

ॐ अग्निमूर्तये शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २।

ॐ यमाय दक्षिणदिगधिष्ठायकाय महिषवाहनाय दण्डायुधाय कृष्णमूर्तये सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २।

ॐ नैर्ऋतये खड्गहस्ताय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २।

ॐ वरुणाय पश्चिमदिगधिष्ठायकाय मकरवाहनाय परशुहस्ताय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह

अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजा गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २।

ॐ वायवे वायव्याधिपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरी स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजा गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २।

ॐ धनदाय उत्तरदिगधिष्ठायकाय गदाहस्ताय धननिधानाऽऽरूढाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजा यावत्तिष्ठ।

ॐ ईशानाय ऐशान्यधिपतये शूलहस्ताय वृषाधिरूढाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजा यावत्तिष्ठ २।

ॐ नमो ब्रह्मणे राजहंसवाहनाय ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ पूजां गृहाण २ पूजां यावत्तिष्ठ २।

ॐ पातालनिवासेभ्यो नागेभ्यः पद्मवाहनेभ्यः सायुधसवाहनसपरिजनेभ्यः इह अमुकगृहे अष्टोत्तरी स्नात्रमहोत्सवे आगच्छत आगच्छत पूजा गृह्णीत २ पूजा यावत्तिष्ठत २।

■ मंत्रो बोली प्रत्येक दिक्पाल आगे चोखानी ढगली करवी, पान १०, सोपारी १०, श्रीफल १, दोकडा १० अने रातु कापड सवा गज मूकवुं, सुखड केसर फूले पूजी अर्घ आपवो, अने—

" ॐ इन्द्राग्नियमा नैर्ऋतवरुणौ समीरणकुबेरौ। ईशानब्रह्मनागा जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥१॥

ए गाथा बोली हाथमां जल लेइ फूल सहित धारा देवी अने—
" भो भो इन्द्रादयो दिक्पालाः स्वस्वदिशि विघ्नप्रशान्तिकरा भगवदाज्ञायां सावधानास्तिष्ठन्तु ।"
ए बोलतां हाथ जोडीने दिक्पालोनुं संनिधापन करवुं,
दिक्पाल स्थापना कर्या पछी बहार जइने दिक्पालोने बलिक्षेप करवो. इति दिक्पालस्थापनाविधिः ।

बलिक्षेप विधि—

प्रथम कोरी बलि–गेहुं, जव, सरसव अने चणा ए चार धान अणरांध्यां, धूप, फुल, घसेल सुखडनी वाटकी आ सर्व पदार्थो लइने बहार जवुं, अने दश दिशाना दिक्पालोनुं आह्वान करवा पूर्वक ते ते दिशामां नाखवुं, पूर्व सामे रहीने—

ॐ इन्द्राय पूर्वदिगधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्रनेत्राय वज्रायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ अग्निमूर्तये शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ यमाय दक्षिणदिगधिष्ठायकाय महिषवाहनाय दण्डायुधाय कृष्णमूर्तये सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ नैर्ऋतये खड्गहस्ताय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ

२ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ वरुणाय पश्चिमदिगधिष्ठायकाय मकरवाहनाय परशुहस्ताय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ वायवे वायव्याधिपतये, ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ धनदाय उत्तरदिगधिष्ठायकाय गदाहस्ताय धननिधानाऽऽरूढाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ ईशानाय ऐशान्यधिपतये शूलहस्ताय वृषाधिरूढाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ ब्रह्मणे राजहंसवाहनाय ऊर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय सायुधाय सवाहनाय सपरिजनाय इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ स्वाहा ।

ॐ पातालनिवासेभ्यो नागेभ्यः पद्मवाहनेभ्यः सायुध–सवाहन–सपरिजनेभ्यः, इह अमुकगृहे अष्टोत्तरीस्नात्रमहोत्सवे आगच्छत आगच्छत बलिं गृह्णीत २ स्वाहा ।

इति दिशिविदिशिदिक्पालाह्वान विधि ।

तात्कालिक पूर्वक्रिया—पछी १०८ बागनी दीवेट करी बंने बाजु दीवा उपर कुण्डी २ आणी ते मांहे एके कुंडिए सधवा स्त्रीने घाटडी ओढाडी पंचामृत करावीये, शुद्ध जल, दहि, दूध, घी, सेलडीरस एटलां पंचामृत एकठा कीजे. बीजी कुंडी स्नात्रजल झीलवा सारु मांडवी, पछी देव पूजी गेवासूत्रनो कंकण बांधवुं, ते पछी चार स्तुतिए देववांदवा, चैत्यवंदन करवुं, स्तवनने ठेकाणे लघुशान्ति कहेवी, ते पछी जयवीयराय कहेवा,

पछी सधवा स्त्री पासे कोरो कुंभ जलथी भरावी, उपर नालेर मेली, लाल वस्त्रे ढांकी, देव आगे मूकवो; अने पूजा शरु करवी. जणा च्चार ४ पूजवा बेसे, जणा ४ उभा रही कलश ढाले, बंने तरफ जणां २ दीवामां घी सींचे, एक अगरबत्ती नो धूप करे, एक जण कलश ४ भरीने आपे. जणा ४ दशियावड वस्त्र उपर फलावलि ढोवे. बे जण चामर वींजे. तिहां गुरु गाथा ४ भणे. पाठान्तरे जण १ गाथा ४ भणे, काली नेलीथी अथवा परवालानी मालाथी १०८ पूजाओ गणवी. पूजाने अन्ते जण १ घंट वगाडे.

स्नात्रनो प्रारंभ—

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

“ ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे स्वाहा॥ ।१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमइंदगयरणभयाइं। पासजिणनामसंकि-त्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥।२॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम-मरगयघणसंनिभं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वाऽमरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासीविमाणवासी अ। जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

ए गाथा भणीने कलश ढालवा, सेवंती आदिना पुष्पोमांथी १-१ पुष्प प्रत्येक प्रतिमाने चढावे, पूजा करे, एज रीते १०८ चार गाथाओ बोली बोलीने कलश ढालवा, अने चंदन पुष्पादिवडे प्रतिमाओनी पूजा करवी, पछी देवनी वैयावच्च करवी. एटले के उष्ण जल वडे प्रतिमा उपर लागेल चीकाश उतारे, शुद्ध जलथी पखालीने विलेपन पूर्वक नैवेद्य चढावे, ४ प्रतिमाओनी आगल ४ नालियेर ढोवे, ९ ग्रह अने १० दिक्पालोनी पूजा करे.

पछी सर्व जण इरियावही पडिक्कमीने आठे थुइए देववंदन करे अने स्तवनने ठेकाणे अजितशान्ति कहे, पछी कुसुमांजलि आदि देईने विधिपूर्वक स्नात्र करवुं, अने सर्व कोइए पूजा कर्या बाद आरती मंगलदीवो प्रकटाववो

शान्ति कलश भरवानी विधि—

पखालनी कुंडीमांथी पाणीनो कलश भरवो, अने पछी ते जल बीजी कुंडीमां मोटी शान्तिना पाठ बोलवा पूर्वक अखंड धाराए लेवु, शान्ति कहे त्यां सुधी धारा चालु राखवी, कुंडी मध्ये प्रथम "ॐ ह्रीँ नमः" ए मंत्र लखवो, तेने नीचे दशियावाळ—अखंड वस्त्र मांडवु, कुंडीमां रूपामहोर अर्थात् चोखंडो रूपैयो अथवा रूपानाणु मूकवु, कुंडीने गले गेवाछ्रत बांधवु, उपरथी मध्यभाग पर्यन्त चारे बाजु लटकती एक पुष्पमाला पहेराववी. शान्ति पूरी थया पछी ए स्नात्रजल, पुष्प अने रूपैया सहित कुंडी मांहिथी कलशमां भरवु, कलशना मुख उपर चार बाजु ४ पान मुकी उपर नालियेर मूकी गेवाछ्रते वींटवो अने ते कुंभ घरधणीने माथे उपडाववो, पण कुंभ भूमि उपर न मूकवो, पछी रांधेल बलि बाकुला वडे देवताओनुं विसर्जन करवुं.

आह्वान करतां जे प्रमाणे पाठ बोल्यो हतो तेज प्रमाणे "बलिं गृहाण २" अहीं सुधी बोलवो अने ते उपरान्त "स्वस्थानं गच्छ २ स्वाहा" एटलो वधारे बोलवो.

पछी चतुर्विध संघनी पूजा करे अने स्नात्रकारोने नालेरनी प्रभावना आपे, इति अष्टोत्तरीशतस्नात्रविधि समाप्त.[1]

---

१ आदर्श पुस्तक १ नो लेखन कालादि सूचक अंतिम लेख-संवत् १६३९ वर्षे फागुण शुदि ११ दिने लिखतं अहम्मदावादात् गणिश्री पुण्यसागर शीश गणिश्री देवसागर वाचनार्थं, श्री। २ आदर्श पुस्तक नं. २ नो लेखन कालादि सूचक अंतिम लेख-सं. १६८० वर्षे कार्तिक वदि ५ रवौ वीरमग्रामे पं. विमलर्सी लिखितं ॥ कल्याणमस्तु ॥ ग्रंथाग्रं १४० ॥

❀ ❀ ❀

। अथ श्रीशान्तिस्नात्रविधिः ।

प्रतिष्ठामां अथवा यात्रामां क्षुद्रोपद्रव शान्त्यर्थं अट्ठाही उत्सवनी आदिमां शान्तिधारा करवी.

शुभ दिवसे विधिपूर्वक जलयात्रा करवी, जलयात्रानी विधि प्रतिष्ठाविधिथी जाणी लेवी.

मुहूर्तने दिवसे प्रभाते डाम प्रमुख लाछनरहित एवा जघन्यथी चार स्नात्रिया विधिपूर्वक स्नान करे, ते आ रीते—

"ॐ ह्रूँ अमृते अमृतोद्भवे अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा"। आ मंत्रथी ७ वार मंत्री जल शुद्धि करवी.

ॐ ह्रूँ यक्षाधिपतये नमः। आ मंत्रे ७ वार दातण मंत्रवुं.

मंत्रित जलनी अंजलि भरी—"ॐ ह्रूँ श्रीं क्लीं कामदेवाधिपते! ममेप्सितं पूरय २ स्वाहा" आ मंत्र ७ वार बोलीने मुख धोवुं.

पूर्व संमुख बेसी तैल मर्दन करीने—"ॐ ह्रूँ अमले विमले विमलोद्भवे सर्वतीर्थजलोपमे पां पां वां वां अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा।"

आ मंत्र ३ वार बोलीने हाथथी सर्वाङ्ग स्पर्श करे.

नवां धोयेल शुद्ध वस्त्र हाथमां लेइ—"ॐ ह्रूँ आँ क्रौं नमः" आ मंत्र ३ वार मंत्रीने पहेरवा.

तिलकनु केसर हाथमां लेइ—"ॐ आँ ह्रूँ क्लौं अर्हते नमः। आ मंत्रे ७ वार मंत्रीने ते केसरे तिलक करे.

गेवाछनो दडो लेइ—ॐ ह्रूँ अवतर २ सोमे २ कुरु २ वग्गु निवग्गु सुमणे सोमणसे महुमहुरे ॐ कवलिकः

क्षः स्वाहा" आ मंत्रे मंत्री सर्व स्नात्रियाने हाथे बांधे, एज मंत्रथी मिंढल मरडासिंगी पण मंत्रवी.

पछी मंत्रपूर्वक अष्टप्रकारी पूजा करवी, पूजामंत्र "ॐ ह्रीँ श्री परमपरमात्मने अनन्तानन्तज्ञानशक्तये जन्म-जरामृत्युनिवारणाय श्रीमते जिनेन्द्राय जलं, चंदनं, पुष्पं, धूपं, दीपं, अक्षतं, नैवेद्यं, फलं ८ताम्बूलं यजामहे स्वाहा।"

हवे वृद्ध श्रावक सोनवाणी करीने-ॐ ह्रीँ श्री जीराउलापार्श्वनाथाय रक्षां कुरु २ स्वाहा" आ मंत्रे ७ वार मंत्रे, पछी ७ नोकार गणीने ते जल सर्वत्र छांटे।

पछी वास अक्षत अने फूल लेइ-"ॐ भूर्भुवः स्वधाय स्वाहा" आ मंत्र बोली ते वडे भूमि शुद्ध करे.

भूमि शुद्ध करी त्यां पूर्व अथवा उत्तर मुख पीठ मांडी तेनी "ॐ ह्रीँ अर्हत्पीठाय नमः। आ मंत्र ७ वार बोली वासाक्षते पूजा करे.

पछी-"ॐ नमोऽर्हत्परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय त्रैलोक्य-महिताय अत्र पीठे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।" आ मंत्र वार ३ बोलीने शांतिनाथजीनी मूर्ति थापवी, एज प्रमाणे एकेकी प्रतिमा पंचतीर्थीनी स्थापवी, विहित प्रतिमा न होय तो बीजी जिनप्रतिमा नीचेना मंत्रवडे विहित कल्पवी, मंत्र आ प्रमाणे छे.

"ॐ नमोऽर्हद्भ्यस्तीर्थंकरेभ्यो जिनेभ्योऽनाद्यनन्तेभ्यः समबलेभ्यः समकृतेभ्यः समप्रभावेभ्यः समकेवले-भ्यः समतत्त्वोपदेशेभ्यः समपूजनेभ्यः समजल्पनेभ्यः सममत्वत्रतीर्थंकर नाम पंचदशकर्मभूमिभवस्तीर्थंकरो योऽत्राराध्यते, सोऽत्र प्रतिमायां सन्निहितोऽस्तु"

आ मतनडे जे तीर्थंकरनी प्रतिमा आवश्यक होय तेनी कल्पना करवी, पछी कोरा सरावलामां सधवा स्त्रीनां हाथे गाघृत पुरावुं, नीचेनो मंत्र ३ वार बोलीने दीपस्थापन करवा

"ॐ घृतमायुर्वृद्धिकरं, भवति पर जेनदृष्टिसपर्कात्। तत्संयुत. प्रदीपः, पातु सदा भावदुःखेभ्यः स्वाहा ॥"

पछी त्रांबानी माटली घोई धूपीने तेमा साथियो करवो तेना उपर

ॐ ह्रीं श्री सर्वोपद्रवान् नाशय २ स्वाहा।"

ए मंत्र चन्दन केसरथी अथवा अष्टगंधथी लखवो तेना कांठे मिंढल, मरडासिंगी, समूलाडाभ सहित गेवासूत्र बांधवुं अने अन्दररूपानाणु अथवा पचरत्ननी पोटली मूकवी. पचरत्न मूकती वखते नीचेनो मंत्र बोलवो

"ॐ नानारत्नौघयुत, सुगन्धपुष्पाधिवासित नीरम्। पततात् विचित्रवर्णं, मंत्राढ्य स्थापनाबिम्बे स्वाहा"

"ॐ ह्रीं ठ: ठ: ठः स्वाहा" आ मंत्र ७ वार बोलीने त्रांबानी गोली प्रभुने जमणे पासे थापवी वास फूले पूजवी

पछी घी, १ दूध २ दहि ३ साकर ४ पाणी ५ आ पाच पदार्थोनुं पचामृत तैयार करवुं.

"ॐजिनबिम्बोपरि निपतद्, घृतदधिदुग्धादिभिः सुपरिपूता।
गंगोदकसमिश्रा, पंचसुधा हरतु दुरितानि स्वाहा ॥"

आ मंत्रे ३ वार मंत्रीने पचामृत माटलीमां रेडवुं, गंगादि तीर्थजल कूपादिना पाणी जे लाव्या होय ते पण

"ॐ ह्रीं भः जलधिनदीह्रदकुंडेषु, यानि तीर्थोदकानि शुद्धानि।
तैर्मंत्रसंस्कृतैरिह बिम्बं स्नपयामि शुद्ध्यर्थं स्वाहा ॥"

आ मंत्रे ७ वार मंत्रीने पंचामृतनी गोलीमां रेडवा, चन्दननां छांटा नांखवां, पुष्प नाखवां.
गोली उपर रेशमी अथवा सुत्राउ, पीळुं अथवा रातुं वस्त्र ढांकीने दक्ष श्रावक धूप दीप सहित माटली उपर हाथ राखी, नवकार
१ उवसग्गहर २ संतिकर ३ तिजयपहुत्त ४ नमिऊण ५ अजितशान्तिस्तव ६ भक्तामर ७ ए सात स्मरण गणे.
विधिपूर्वक स्नात्र पीठ उपर श्रीशान्तिनाथनी तथा ऋषभदेवनी पंचतीर्थी सिद्धचक्र संयुक्त थापी ते आगल स्वर्ण रूप्य
कलश धोइ धूपी, पंचामृत भरी, श्री शान्तिनाथ-स्नात्र भणाववी.
पछी ४ कुमार तथा कुमारिका पवित्र वस्त्राभरणादिक पहेरी अष्टप्रकारी पूजा भणावे.

" स्नात्र करतां जगतगुरु शरीरे, सकल देवे विमल कलश नीरे।
आपणा कर्ममल दूर कीधा, तेणे ते विबुधा ग्रंथे प्रसिद्धा ॥१॥
हर्ष धरी अप्सरावृंद आवे, स्नात्र करी इम आसीस भणावे ।
जिहां लगे सुरगिरि जंबुदीवो, अमतणा नाथ जीवाण जीवो ॥२॥

श्रीमन्मन्दरमस्तके शुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षते, पीठे मुक्तिवरं निधाय रुचिरे तत्पादपुष्पस्रजा ।
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे, मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥
विश्वैश्वर्यैकवर्यास्त्रिदशपतिशिरःशेखरस्पृष्टपादाः, प्रक्षीणाऽशेषदोषाः सकलगुणगणग्रामधामान एव ।
जायन्ते जन्तवो यच्चरणसरसिजद्वंद्वपूजान्विताश्री-अर्हन्तः स्नात्रकाले कलशजलभरैरेभिराप्लावयेत्तान् ॥२॥

ॐ ह्रीं श्री परमपुरुषाय ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः अर्हते तीर्थोदकेन अष्टोत्तरशतौपधिभिः सहितेन षष्टिलक्षकोट्यैकप्रमाणकलशैः स्नापयामि शान्ति तुष्टि पुष्टि कुरु कुरु २ ।

आ प्रमाणे मंत्र बोलीने स्नात्र करवु. इति जल पूजा ॥१॥

जिनतनु चरचता सकल नाकी, कहे कुग्रह उष्णता आज थाकी ।
सकल अनिमेषता आज माकी, भव्यता अमतणी आज पाकी ॥३॥ इति चन्दन पूजा ॥२॥
जगधणी पूजता विविध फूले, सुरवरा ते गणे खिण अमूले ।
रत घरी मानवा जिनप पूजे, तसतणा पापसंताप धूजे ॥४॥ इति फल पूजा ॥३॥
जिनगृहे वासतो धूपपूरे, मिच्छत्त दुर्गन्धता जाय दूरे ।
धूप जिम सहज उरध गति स्वभावे, कारका उच गति भाव पावे ॥५॥ इति धूप पूजा ॥४॥
जे जना दीपमाला प्रकाशे, तेहथी तिमिर अज्ञान नाशे ।
निज घट ज्ञान ज्योति विकाशे, जेहथी जगतना भाव भासे ॥६॥ इति दीप पूजा ॥५॥
स्वस्तिक पूरता जिनप आगे, स्वचेतसि भद्र कल्याण जागे ।
जन्म जरा मरणथी अशुभ भागे, नियत शिव इम रहे तास आगे ॥७॥ इति अक्षत पूजा ॥६॥
ढोकता भोग परभाव त्यागे, भविजना निज गुण भोग मागे ।
इम भणी हमतणु सरूप भुजे, आपज्यो तातजी जगत पूजे ॥८॥ इति नैवेद्य पूजा ॥७॥

फल भरे पूजतां जगतस्वामी, मनुज गनि वेल होई सफल पामी ।
सकल मुनि ध्येय गति भेद रंगे, ध्यावतां फल समापत्ति संगे ॥९॥ इति फल पूजा ॥८॥

अष्टप्रकारी पूजा करी पछी प्रभुने जमणे पासे श्रीशान्तिदेवीनो कुंभ-कुंभथापनानी परे थापवो, पछी त्यां ग्रहस्थापना, दिक्पालस्थापना अने नन्दावर्त साथिया प्रमुख अष्टमंगलनी स्थापना करवी.

दश दिक्पाल अने नवग्रहने पवित्र बलिबाकुल देवा, खीर १ लापसी २ वडां ३ भात ४ करंबो, ५ पुडला ६ मोठो मोलो सात धाननो खीचडो ७ (चणा १ गहुं, २ जव ३ जवार ४ लोला मग ५ चोला ६ अडद ७ ए सात धान्य) गोघृत सेर १ बुरो खांड सेर सवा, ए सर्व एकठां करीने वासक्षेपनी मुट्ठी भरी—

"ॐ नमो अरिहन्ताणं, ॐ नमो सिद्धाणं, ॐ नमो आयरिआणं, ॐ नमो उवज्झायाणं, ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं, ॐ नमो आगासगामीणं, ॐ नमो चारणाइलद्धीणं, जे इमे किन्नरकिंपुरिसमहोरग, गरुलसिद्धगंधव्वजक्खरक्खसपिसायभूयपेयसाइणीडाइणीपभिईओ जिणघरनिवासिणो नियनियनिलयठिआ पविआरिणो संनिहिआ असंनिहिआ ते सव्वे इमं विलेवणधूवपुप्फफलपईवसणाहं बलिं पडिच्छन्ता तुट्ठिकरा भवंतु, पुट्ठि-सिवंकरा भवंतु, संतिकरा भवंतु, सुत्थं जणं कुणंतु, सव्वजिणाणं संनिहाणप्पहावओ पसन्नभावत्तणेणं सव्वत्थरक्खं कुणंतु सव्वत्थ दुरिआणि नासेन्तु सव्वासिवमुवसमेंतु संतितुट्ठिपुट्ठि-सिवसुत्थयणकारिणो भवंतु स्वाहा ॥"

ए भून नलि मंत्र वार ३ भणी नासमुद्धि नलि उपर वेरवी पंचवर्णी फूल वेरवा, ते पछी कलश १ चदन २ फूल ३ धूप ४ दीप ५ वास चोखा ६ आरीगो ७ चामर ८ घण्ट ९ थालीवेलण १० नलिभाजनधर ११ अने पाठ बोलनार १२ ए १२ जण शुद्ध आह्वान करे —

ॐ नम इन्द्राय पूर्वदिगधिष्ठायकाय ऐरावणवाहनाय सहस्रनेत्राय वज्रायुधाय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकगृहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ बलिं गृहाण गृहाण शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव, स्वाहा ॥१॥

ॐ नमोऽग्निमूर्तये शक्तिहस्ताय मेषवाहनाय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकगृहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ आगच्छ बलिं गृहाण गृहाण, शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवकरो भव स्वाहा ॥२॥

ॐ नमो यमाय दक्षिणदिगधिष्ठायकाय महिषवाहनाय दण्डायुधाय कृष्णमूर्तये सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकगृहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवकरो भव स्वाहा ॥३॥

ॐ नमो निर्ऋतये खड्गहस्ताय शिववाहनाय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकगृहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवकरो भव स्वाहा ॥४॥

ॐ नमो वरुणाय पश्चिमदिगधिष्ठायकाय मकरवाहनाय पाशहस्ताय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकगृहे

शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ वलिं गृहाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा ॥५॥

ॐ नमो वायवे वायवीपतये ध्वजहस्ताय हरिणवाहनाय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकगृहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ वलिं गृहाण२ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा" ॥६॥

"ॐ नमो धनदाय उत्तरदिगधिष्ठायकाय गदाहस्ताय नरवाहनाय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकगृहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ वलिं गृहाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा" ॥७॥

"ॐ नम ईशानाय ऐशान्यधिपतये त्रिशूलहस्ताय वृषभवाहनाय सपरिकराय अमुकग्रामे अमुकगृहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ वलिं गृहाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा" ॥८॥

"ॐ नमो ब्रह्मणे उर्ध्वलोकाधिष्ठायकाय राजहंसवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकग्रामे अमुकगृहे शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ वलिं गृहाण २ शान्तिकरो भव, तुष्टिकरो भव, पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा" ॥९॥

"ॐ नमो नागाय पातालाधिष्ठायकाय पद्मवाहनाय सपरिकराय सायुधाय अमुकग्रामे अमुकगृहे शान्ति-

स्नात्रमहोत्सवे आगच्छ २ बलिं गृहाण २ शांतिकरो भव, तुष्टिकरो भव पुष्टिकरो भव, शिवंकरो भव स्वाहा" ॥१०॥

" ॐ नम आदित्यसोममंगल-बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः, केतुप्रमुखा. खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठतु ॥ ये केऽपि देवदेव्यो, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठतु ॥ अमुकग्रामे अमुकगृहे, शान्तिस्नात्रमहोत्सवे आगच्छत आगच्छत बलिं गृह्णीत गृह्णीत शान्तिकरा भवंतु, तुष्टिकरा भवंतु, पुष्टिकरा भवतु, शिवंकरा भवन्तु स्वाहा ॥"

निसर्जनना पाठमां " पूजाबलि गृहाण २ स्वस्थान गच्छ गच्छ स्वाहा " आ प्रमाणे बोलवु'

पछी सोनावाणी १ फूल २ कंकु ३ चंदन ४ हाथमां राखी वाजित्र पूर्वक—

" ॐ क्षौं क्षेत्रपालाय नम " पूर्वमां, " ॐ ह्रीँ दिक्पालेभ्यो नम " दक्षिणमां, " ॐ ह्रीँ ग्रहेभ्यो नमः" ऊर्ध्व दिशामा, "ॐ ह्रीँ षोडशमहादेवीभ्यो नम." पश्चिममां, "ॐ ह्रीँ श्री जिनशासनदेवीदेवेभ्यो नमः" उत्तरमां, दिशामा, "ॐ ह्रीँ षोडशमहादवीभ्यो नम." पश्चिममां,

उपर प्रमाणे बोली आगे जणावेल दिशाओमा जल छांटवु, फूल, कुंकुम, चन्दननी अंजलि भरी नाखवी.

पछी च्यार कलश सुवर्ण पाणीए तथा क्षीरोदक पंचामृते भरीने शान्ति घोषणा पूर्वक उच्चरते स्नात्र करीये—

यथा-"रोगशोकादिभिर्दोषै-रजिताय जितारये । नमः श्रीशान्तये तस्मै, विहितानन्तशान्तये ॥१॥

श्रीशान्तिजिनभक्ताय, भव्याय सुखसंपदः । श्रीशान्तिदेवता देया-दशान्तिमपनीयताम् ॥२॥

अम्बा निहतडिम्बा मे, सिद्धबुद्धसमन्विता । सिते सिंहे स्थिता गौरी, वितनोतु समीहितम् ॥३॥

धराधिपतिपत्नी या, देवी पद्मावती सदा । क्षुद्रोपद्रवतः सा मां, पातु फुल्लत्फणावली ॥४॥
चंचच्चक्रधरा चारु-प्रवालदलदीधितिः । चिरं चक्रेश्वरी देवी, नन्दतादवताच्च माम् ॥५॥
खड्गखेटककोदण्ड-बाणपाणी तडिद्द्युतिः । तुरंगगमनाऽच्छुप्ता, कल्याणानि करोतु मे ॥६॥
मथुरापुरीसुपार्श्व-सुपार्श्वस्तू परक्षिका । श्रीकुबेरा नरारूढा, सुताङ्काऽवतु वो भयात् ॥७॥
ब्रह्मशान्तिः स मां पाया-दपायाद्वीरसेवकः । श्रीमद्वीरपुरे सत्या, येन कीर्तिः कृता निजा ॥८॥
श्रीशक्रप्रमुखा यक्षा, जिनशासनसंस्थिताः । देवीदेवास्तदन्येऽपि, संघं रक्षन्त्वपायतः ॥९॥
श्रीमद्विमानमारूढा, यक्षमातंगसंगता । सा मां सिद्धायिका पातु, चक्रचापेषुधारिणी ॥१०॥"

त्यार पछी गेवाऌनो एकवीस तारनो दोरो करी, तेने फूल गुंथणीये नवकार १ उवस्सगहर २ लोगस्स ३ ए त्रणथी सातवार मंत्रीने देहरा उपर तथा घर उपर वींटवो, तथा गाम कोटे वींटवो.

पछी वज्रपंजर करी अष्टप्रकारी पूजानो सामान मेलवी, एकसो आठ नालनो कलश क्षीरोदक-पंचामृते भरी ४ तथा ८ कलशे करी शुभश्रावक स्नात्र करे. " ॐ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः" ए पाठ प्रत्येक अभिषेक आदिमां बोलीने पछी गाथाओ बोली स्नात्र (अभिषेक) करे.

स्नात्रनो प्रारंभ—

ॐ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ शान्ति शान्तिनिशान्तं, शान्त शान्ताऽशिव नमस्कृत्य ।
स्तोस्तु. शान्तिनिमित्त मन्त्रपदे. शान्तये स्तौमि ह्रूँ ी स्वाहा ॥१॥

ॐ नमो जिणाण सरणाणं मगलाण लोगुत्तमाण ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः अमियाउमा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नम स्वाहा ।"

ॐ त संति सतिकर, सत्तिण सव्वभया । संति थुणामि जिण, सति विहेउ मे रासानन्दिय स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइन्दगयरण भयाइं । पासजिणनामसकि–त्तणेण पसमति सव्वाइ स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंख विद्दुम–मरगयघणसन्निभ विगयमोह । सत्तरिसयं जिणाण, सव्वाऽमरपूइय वंदे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमतर–जोइसवासीविमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

शांतिस्नात्र जो शान्तिस्तव होरना उपरनो पाठ बोलीने अभिषेक करवो पण ते पौष्टिक रूप होय तो उपरनो पाठ बोल्या पछी उपर—

"ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिक्कुमारोपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय अमुकग्रामे अमुकस्थाने शांतिस्नात्रोत्सवे स्नात्रं कर्तुं कारयितुश्च ऋद्धि वृद्धिं कल्याण कुरु कुरु स्वाहा ।" आ पाठ बोल्या पछी पहेलो अभिषेक करवो ।[१]

१—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्य ।

ॐ मिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् । शान्तिजिनाय जयवते यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ह्रूँ ी स्वाहा ॥२॥

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे, रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोग जलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकि-त्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं सव्वाऽमरपूइयं वंदे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

एम भणीने (बीजो) अभिषेक करवो । २ ।

३ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ सकलातिशेषकमहा–संपत्तिसमन्विताय शस्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च, नमो नमः शांतिदेवाय ह्रीं स्वाहा ॥३॥

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकि-त्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वाऽमरपूइयं वंदे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवनवइवाणमतर जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

एम भणी (त्रीजो) अभिषेक करवो, । ३ ।

४ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ सर्वामरसुसमूह–स्वामिकसपूजिताय निजिताय । भुवनजनपालनोद्यत–तमाय सतत नमस्तस्मै ह्रूँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाण सरणाणं मगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं मंति सतिकर संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, सतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसकि–त्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोह । सत्तरिसय जिणाण, सव्वाऽमरपूइयं वंदे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमतर—जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमतु मम स्वाहा ॥४॥

ए श्लोकीने चोथो अभिषेक करवो. । ४ ।

५–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ सर्वदुरितौघनाशन–कराय सर्वाऽशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिसाच–शाकिनीना प्रमथनाय ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मगलाण लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रव

शमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकि-त्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम-मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वाऽमरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

ए बोलीने पांचमो अभिषेक करवो. । ५ ।

६–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ यस्येति नाममंत्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुते जनहित-मिति च नुता नमत तं शान्तिं ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संतिं संतिकरं संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलण-विसहर-चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकि-त्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम-मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वाऽमरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

ए बोलीने छट्ठो अभिषेक करवो । ६ ।

७-नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ भवतु नमस्ते भगवति, विजये सुजये परापरैरजिते । अपराजिते जगत्या, जयतीति जयावहे भवती ॥७॥ ह्रीं स्वाहा ।

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ त संति मंतिकर, संतिण्ण सव्वभया । संति थुणामि जिणं, संति विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमिइंदगयरणभयाइ । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइ स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविदुम-मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसय जिणाणं, सव्वामरपूइयं वंदे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

आ प्रमाणे रोलीने सातमो अभिषेक करवो ॥ ७ ॥

८ नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ सर्वस्याऽपि च संघस्य, भद्रकल्याणमंगलप्रददे । साधूनां च सदाशिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे जीया ॥८॥ ह्रीं स्वाहा ।

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ त संति संतिकर, संतिण्ण सव्वभया । संति थुणामि जिणं, संति विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वंदे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइ–वाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
आम बोलीने आठमो अभिषेक करवो ॥ ८ ॥

९—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
ॐ भव्यानां कृतसिद्धे, निर्वृतिनिर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् । अभयप्रदाननिरते !, नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे ! तुभ्यम् ॥९॥ ह्रीँ स्वाहा ।
ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।
ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥
ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकि-त्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
एम बोलीने नवमो अभिषेक करवो ॥ ९ ॥.

१०–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

ॐ भक्तानां जन्तूनां, शुभावहे! नित्यमुद्यते! देवि!। सम्यग्दृष्टीनां धृति–रतिमतिबुद्धिप्रदानाय ॥१०॥ ह्रीं स्वाहा

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा।

ॐ त मंति संतिकरं, संतिण्ण सव्वभया। संति थुणामि जिणं, संति विहेउ मे। रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारि मिइंदगयरणभयाइं। पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणय संखविद्दुम–मरगयघणसंनिभ विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइ वाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य। जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

आ बोलीने दसमो अभिषेक करवो ॥१०॥

११–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

ॐ जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम्। श्रीसंपत्कीर्तियशो-वर्द्धिनि! जयदेवि! विजयस्व! ॥११॥ ह्रीं स्वाहा।

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा।

ॐ तं संतिं संतिकरं संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥
ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
ॐ वरकणय संखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
आ बोलीने अग्यारमो अभिषेक करवो ॥११॥

१२—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
ॐ सलिलाऽनलविषविषधर–दुष्टग्रहराजरोगरणभयतः । राक्षसरिपुगणमारी–चौरेतिश्वापदादिभ्यः ॥१२॥ ह्रीं स्वाहा
ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशम-नाय अर्हते नमः स्वाहा ।
ॐ तं संति संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥
ॐ रोगजलजलणविसहर–चोराशिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरगयवणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
आ बोलीने बारमो अभिषेक करवो ॥१२॥

॥२१२॥

१३—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ अथ रक्ष रक्ष सुशिव, कुरु कुरु शांतिं च कुरु कुरु सदेति । तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वं, ॥१३॥

ह्रीं स्वाहा ।

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ त संतिं संतिकरं, मतिण मन्नभया । संतिं थुणामि जिणं संतिं विहेउ मे, रासानंदिय स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइ । पासजिणनामगकित्तणेण पसमंति सव्वाइ स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं सव्वामयरपूइय वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणवंतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

आ गोलीने तेरमो अभिषेक करवो ॥१३॥

१४—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ भगवति गुणवति शिवशांति–तुष्टि पुष्टि स्वस्तीह कुरु २ जनाना । ओमिति नमोनमो ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः यः क्षः ह्रीं फुट २ स्वाहा ॥१४॥ ह्रीं स्वाहा ।

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशम-

नाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे, रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं। पासजिणनामसंतित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरगय वणसंनिभं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य। जे केवि दुट्ठदेवा ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

ए बोलीने चौदमो अभिषेक करवो ॥१४॥

१५—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

एवं यन्नामक्षर–पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी। कुरुते शान्ति नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥१५॥ ह्रूँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशम-
नाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया। संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे, रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोग जलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं। पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य। जे केवि दुट्ठदेवा ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

आम गोली पदरमो अभिषेक करवो ॥१५॥

१६—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ इति पूर्वसूरिदर्शित–मन्त्रपदविदर्भित· स्तवः शान्तेः । सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥१६॥ ह्रीं स्वाहा

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाण लोगुत्तमाण ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः. असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संतिं संतिकर, संतिण्ण सव्वभया । संतिं थुणामि जिण, संति विहेउमे, रासानदिय स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमइन्दगयरणभयाइ । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइ स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुममरगयघणसंनिभ विगयमोह । सत्तरिसय जिणाणं, सव्वामरपूइय वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

ए गोलीने सोलमो अभिषेक करवो ॥१६॥

१७—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ यश्चैनं पठति सदा शृणोति भावयति वा यथायोगम् स हि शान्तिपदं यायात्, सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७ ॥ ह्रीं स्वाहा,

ॐ नमो जिणाण सरणाण मंगलाण लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे, रासानंदियं स्वाहा ॥१॥
ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइवाणमंतरजोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
ए बोलीने सत्तरमो अभिषेक करवो, ॥ १७ ॥

१८–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
ॐ सनमो विप्पोसहि–पत्ताणं संति सामि पायाणम् । झ्रौं स्वाहा मंतेणं सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥१८॥ ह्रौं स्वाहा
ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।
ॐ तं संतिं संतिकरं संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं संतिं विहेउ मे, रासानंदियं स्वाहा ॥१॥
ॐ रोग जलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
ॐ वरकणय संखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
आम बोलीने अढारमो अभिषेक करवो ॥१८॥

१९–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ संति नमुक्कारो खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं । सौ ह्रूँ ी नमो सव्वोसहि–पत्ताणं च देइ सिरिं ॥१९॥ ह्रूँ ी स्वाहा

ॐ नमो जिणाण मरणाणं मंगलाण लोगुत्तमाणं ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय

अर्हते नम. स्वाहा ।

ॐ त मंति सतिकर, सतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिण, संतिं विहेउ मे, रासानदिय स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइ । पासजिणनामसकित्तणेण पसमंति सव्वाइ स्वाहा ॥२॥

ॐ नरकणयसंखविद्दुम–मरगयघणसनिभं विगयमोह । सत्तरिसय जिणाण सव्वामरपूइय वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणवतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमतु मम स्वाहा ॥४॥

आ बोलीने ओगणीसमो अभिषेक करवो ॥१९॥

२०—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ पणवीसा य असीआ, पनरसपन्नासजिनवरसमूहो । नासेउ सयलदुरिअ, भविआणं भत्तिजुत्ताणं ॥२०॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाणं सरणागमंगलाण लोगुत्तमाणं ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय

अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ त संतिं संतिकर सतिण्ण सव्वभया । संतिं थुणामि जिण, मंतिं विहेउ मे रासानदिय स्वाहा ।१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चोरारिमिइंद गयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुम-सरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
आ बोलीने वीसमो अभिषेक करवो ॥२०॥

२१-नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
ॐ वीसा पणयालाविय, वीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा । गहभूअरक्खसाइणी-घोरुवसग्गं पणासंतु ॥२१॥ ह्रूँ स्वाहा ॥
ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रैँ ह्रौँ ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।
ॐ तं संति संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥
ॐ रोग जलजलणविसहर-चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण, पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुम-मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
ए एकवीसमो अभिषेक ॥२१॥

२२—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ सित्तरि पणतीसा विअ, मट्ठी पचेव जिणगणो एसो। वाहिजलजलणहरिकरि–चोरारिमहाभयं हरउ ॥२२॥ ह्रूँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाण सरणाण मगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रॉ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा।

ॐ तं सांत संतिकरं, सतिण्ण सव्वभया। सतिं थुणामि जिणं, सतिं विहेउ मे, रासानदिअ स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं। पासजिणनामसकित्तणेण पसमंति सव्वाइ स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसखविद्दुम–मरगयघणसनिभ विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइय वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य। जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमतु मम स्वाहा ॥४॥

इति बावीसमो अभिषेक ॥२२॥

२३–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।

ॐ पणपन्ना य दसेन य, पन्नट्ठि तह य चेव चालीसा। रक्खन्तु मे सरीरं, देवासुरपणमिया सिद्धा ॥२३॥ ह्रूँ स्वाहाः

ॐ नमो जिणाणं सरणाण मगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रॉ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा।

ॐ तं सतिं सतिकर, संतिण्ण सव्वभया। सतिं थुणामि जिणं, सतिं विहेउ मे, रामानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं। पासजिणनामसकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

॥२१६॥

ॐ वरकणयसंख…म–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
आ तेवीसमो अभिषेक ॥२३॥
२४—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
ॐ श्रीमते शांतिनाथाय नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्याऽमराधीश–मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये २४ ह्रीँ स्वाहा ॥
ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्राँ ह्रीँ ह्रुँ ह्रूँ ह्रौँ ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।
ॐ तं संति संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे, रासानंदियं स्वाहा ॥१॥
ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥
ॐ भवणवइवाणमंतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
ए चोवीसमो अभिषेक ॥२४॥
२५—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
ॐ शांतिः शान्तिकरः श्रीमान् शांतिर्दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शांतिर्गृहे गृहे ॥२५॥ ह्रीँ स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाण सरणाणं मंगलाण लोगुत्तमाण ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ त संति मतिकर, मतिण्ण सव्वभया । संति थुणामि जिण, संति विहेउ मे रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिंइंदगयरणभयाइ । पासजिणनामसकित्तणेण पसमति सव्वाइ स्वाहा ॥२॥

ॐ गरकणयसरवविद्दुम–मरगयघणसनिभ विगयमोह । सत्तरिसय जिणाण, सव्वामरपूइय वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमतर–जोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा ते सव्वे उवसमतु मम स्वाहा ॥४॥

ए पच्चीसमो अभिषेक ॥२५॥

२६–नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।

ॐ उत्सृष्टरिष्टदुष्ट–ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । सपादितहितसंपन्नामग्रहण जयति शान्तेः ॥२६॥ ह्रीं स्वाहा ॥

ॐ नमो जिणाण सरणाण मगलाण लोगुत्तमाण ह्राँ ह्रीं ह्रूँ ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ तं संति सतिकरं, संतिण्ण सव्वभया । सतिं थुणामि जिण, सतिं विहेउ मे, रासानंदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर–चोरारिमिंइंदगयरणभयाइ । पासजिणनामसकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ गरकणयसरवविद्दुम–मरगयघणसनिभं विगयमोहं । सत्तरिसय जिणाण, सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी य। जे केवि दुट्ठदेवा ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥
ए छव्वीसमो अभिषेक ॥२६॥
२७—नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः।
ॐ श्रीसंघजगज्जनपद-राज्याधिपराज्यसंनिवेशानां। गोष्ठीपुरमुख्यानां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥२७॥ ह्रूँ स्वाहा॥
ॐ श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु। ॐ श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु। ॐ श्रीराज्याधिपानां शान्तिर्भवतु। ॐ श्रीराज्यसंनि-
वेशानां शान्तिर्भवतु। ॐ श्रीगौष्ठिकानां शान्तिर्भवतु। ॐ श्रीपुरमुख्यानां शान्तिर्भवतु। ॐ श्री पौरजनस्य शान्तिर्भवतु।
ॐ श्री ब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु।
ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्री पार्श्वनाथाय स्वाहा।
ॐ नमो तुह दंसणेण सामिअ, पणासए रोगसोगदोहग्गं। कप्पदुमेव जायइ, तुह दंसणं, सम्मफलहेउ स्वाहा॥
ॐ नम एव पणवसहियं, मायाबीएण धरणनागिंदं। सिरिकामराज कलियं, पासजिणिंदं नमंसामि स्वाहा॥
ॐ अट्ठेव य अट्ठसया, अट्ठसहस्सा य अट्ठकोडीओ। रक्खन्तु मे सरीरं, देवासुरपणमिया सिद्धा ह्रूँ स्वाहा॥
ॐ थंभेइ जलं जलणं, चिंतियमित्तो पंचनमुक्कारो। अरिमारिचोरराउल-घोरुवसग्गं मम निवारेउ स्वाहा॥
ॐ क्षेमं भवतु सुभिक्षं, सस्यं निष्पद्यतां जयतु धर्मः। शाम्यन्तु सर्वरोगा, ये केचिदुपद्रवा लोके ह्रूँ स्वाहा॥
ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभूताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय

अर्हते नमः स्वाहा ।

ॐ त संतिं संतिकर, संतिण्ण सव्वभया । संति थुणामि जिण, विहेउ मे रासानदियं स्वाहा ॥१॥

ॐ रोगजलजलणविसहर-चोराररिमिइदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं स्वाहा ॥२॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम-मरगयघणसंनिभं विगयमोहं । सत्तरिसयं जिणाणं सव्वामरपूइयं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमंतरजोइसवासी विमाणवासी य । जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय चतुर्मुखाय परमेष्ठिने दिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय अस्मिन् जम्बूद्वीपे, दक्षिण भरते, मध्यखण्डे, अमुकदेशे, अमुकनगरे, अमुकगृहे बृहत्स्नात्रे स्नात्रस्य कर्तुः कारयितुश्च ऋद्धि वृद्धि कल्याण कुरु कुरु स्वाहा ॥

ए मंत्र भणीने सत्तावीसमो अभिषेक करवो ।

पछी स्नात्र करी अष्ट प्रकारी विशेष पूजा करवी, अने आरती मंगलदीवो करीने नैवेद्य ढोकवु, पछी मुहपत्ति लेइने देव वादवा, ।

इरियावही पडिक्कमी काउस्सग्ग करी उपर लोगस्स कहे खमासमण देइ इच्छाकारेण संदिसह भगवन्-चैत्यवदन करुं इच्छं कही " ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते " इत्यादि चैत्यवदन कही, नमुत्थुण अरिहन्ताणचेइयाण० १ नोकारनो काउसग्ग करवो,

नमोऽर्हत्सिद्धाचार्योपाध्यायसर्वसाधुभ्यः ।
अर्हँस्तनोतु सः श्रेयः श्रियं यद्ध्यानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि रंहसा सहसोच्यत ॥१॥
लोगस्स० सव्वलोए० १नोकारनो काउसग्ग ।
ॐ मिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंह्रींश्च । आश्रीयते श्रिया ते भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥२॥
पुक्खरवरदी० वंदण० १ नोकारनो काउसग्ग. ।
नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दास्याजैनगीर्जीयात् ॥३॥
सिद्धाणं बु० श्री शांतिनाथ आराधना० वंदणवत्तिया० १ लोगस्सनो काउसग्ग० नमोऽर्हत्सिद्धा०—
सिद्धाणं बु० श्री शांतिनाथ आराधना० वंदणवत्तिया० १ लोगस्सनो काउसग्ग० नमोऽर्हत्सिद्धा०—

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः, प्रशान्तिकोऽसावशांतिमुपशान्तिम् ।
नयतु सदा यस्य पदाः, सुशान्तिदाः संतुषन्ति जने ॥४॥

श्रीद्वादशांगी आराध० वंदण० १ नोकारनो का० नमोऽर्हत्सिद्धा०—
सकलार्थसिद्धिसाधन-बीजोपांगा सदा स्फुरदुपांगा । भवनादनुपहतमहा-तमोपहा द्वादशाङ्गी वः ॥५॥
श्रुतदेवता आराधना० अन्नत्थ० १ नोकारनो० का० नमोऽर्हत्सि०.
वद वदति न वाग्वादिनि, भगवति कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रंगत्तरङ्गमतिवर-तरणि-स्तुभ्यं नम इतीह ॥६॥
शासनदेवता आ० अन्नत्थ० नमोऽर्हत्०—

उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरताः। द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥७॥

समस्तवैयावच्च० संतिग० समदिट्ठिसमा० अन्नत्थ० १ नोकारनो का० नमोऽर्हत्०—

सङ्घेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया-वृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः।

ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सदृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

नमुत्थुणं० जावंति चेइया० जावंतकेवि० स्तवनना स्थाने अजितशान्तिस्तव कहेवु, अन्ते जयवीयराय कहेवा, अने छेल्ला जे बलि बाकुला राख्या छे ते उछालवा

पछी पूर्वला कुंभ आगल बीजा ४ कुंभ दाग रहित अने सारा घाटवाला लेइने तेमां चोखा सेर ५, रूपानाणा ४, सोपारी ४, श्रीफल ४ उपर मूकी नीला पीला वस्त्रो ढाकी, गेनाछडे बाधीये, फूलमालाओ पहेरावी, शुद्ध श्रावक कुमारिकाओ पासे उपडावी वाजते गाजते श्रीशान्तिपीठे आवी शान्ति कलश पासे थापे, शान्तिदेवीने योग्य नैवेद्य धरीये, क्षीर १, करंबो २, वाट—लापसी ३, सुहाली ४, २१ वडा, ५ पचधारी लापसी ६, लाडवा मगदलना ९, ७ दधिपात्र ? ए सर्वबलि नैवेद्यना पात्रो आगे ढोइये

पछी आरती मंगलदीवो करी शान्ति उद्घोषणा पूर्वक देवी देवता क्षेत्रदेवता पूजीने देववंदन करवु; इरियावही पडिक्कमी १ लोगस्सनो का० चैत्यवंदन, नमुत्थुण० स्तवनने स्थाने संतिकरं कहेवु, जयवीयराय० १ नोकारनो का० नमोर्हत् स्तुति, कल्लाणकन्द, इच्छाकारेण संदिसह भगवन् क्षेत्रदेवता आराधनार्थं करेमि का० १ लोगस्सनो का० नमोऽर्हत्०

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया। सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

भवनदेवयाए करेमि काउसग्गं अन्नत्थ, १ लोगस्सनो काउसग्ग० नमोऽर्हत्० स्तुति—

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् । विदधातु भवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥२॥

संतिदेवयाए करेमि का० १ नोकारनो का० नमो० स्तुतिः—

श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयात्, श्रीमती शान्तिदेवता ॥३॥

क्षुद्रोपद्रव उपशमावणि करेमि का० अन्नत्थ० १ नोकार, १ उपसर्गहर, १ लोगस्स पूरो ए त्रणनो काउ० नमोऽर्हत्० स्तुतिः—

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकरा जिने । क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥१॥

उपर प्रकट पूरो नोकार कहेवो.

पछी म्होटी शान्तिनो पाठ बोलतां न्हवण जले करी अखंड धाराथी शांतिकलश भरी, ते उपर नालियेर मूकी, तास्तो (नीलुं या पीळुं वस्त्र) वींटी सोहासण स्त्री उपाडे, वाजते गाजते गृहस्थने घेर पधरावीये, ते पछी विसर्जन करे. पछी नवण पाणी मंत्री ते कलश लेइ घरमां घरनी बाहिर वाजा वाजते धारा देवी.

इति श्रीसकलचंद्रगणिकृतः श्रीशान्तिस्नात्रविधिः संपूर्णः ॥

१६–तीर्थयात्रा शान्तिकम्

तीर्थयात्रा प्रयागाद्य–दिवसे यो विधीयते । जिनस्नात्रविधिस्तीर्थे–यात्रा शान्तिकमुच्यते ॥१७७॥

भा०टी०—तीर्थयात्राए निकलवाना दिवसे जे प्रयाण पूर्वे जिनस्नात्र विधि करवामा आवे छे ते 'तीर्थयात्राशान्तिक कहेवाय छे

संघ तीर्थयात्रा निमित्ते प्रयाण करे ते दिवसे प्रथम शुद्ध जल मगावी, देहरासरमा भूमि शुद्ध करी, सिंहासन उपर श्रीशान्ति-जिननी पचतीर्थी अथवा चोवीसी स्थापी आगे श्रीसिद्धचक्रनी स्थापना करवी, अने पछी कुमारिका अने ४ स्नात्रकारोए मली कुसुमाजलि चढाववा पूर्वक शान्तिकलश भणवा पूर्वक स्नात्र पूजा भणाववी.

ते पछी स्नात्रकारोए हाथमा कुंकुम, चदन, पुष्प, लेइने पूर्व सन्मुख उभा रहीने—

"ॐ क्षाँ क्षेत्रपालाय नमः। ॐ ह्रूीं दिक्पालेभ्यो नमः। ॐ ह्रूीं ग्रहेभ्यो नमः। ॐ ह्रूीं षोडशमहादेवीभ्यो नमः। ॐ ह्रूीं जिनशासनदेवीदेवेभ्यो नम.।"

आ पाठ बोली पुष्पाञलि नाखवी, एज प्रमाणे दक्षिण, पश्चिम, उत्तर दिशा संमुख उभा रहीने उपरनो पाठ बोली बोलीने पुष्पाञ्जलिओ नाखवी, केसर चदनना च्यारे दिशाओमा छाटा नाखवा, धूप उखेवनो.

ते पछी च्यार कलशिया सोनाना रुपाना अने दूध युक्त पचामृते भरीने निर्दंग अने अखंड शरीरवाला स्नात्रकारो हाथमां लेइ उभा रहे, निधिकार नीचे प्रमाणे शान्ति घोषणा करे —

" रोगशोकादिभिर्दोषै-रजिनाय जितारये । नमः श्रीशान्तये तस्मै विहितानन्तशान्तये ॥१॥
श्रीशान्तिजिनभक्ताय भव्याय सुखदर्शनम् । श्रीशान्तिदेवता देया दशान्तिमपनीयते ॥२॥
अम्बा निहतडिम्बा मे सिद्धबु(शु)द्धसमन्विता । सिते सिंहे स्थिता गौरी वितनोतु समीहितम् ॥३॥
धराधिपतिपत्नी या देवी पद्मावती सदा । क्षुद्रोपद्रवतः सा मां पातु फुल्लत्फणावली ॥४॥
चञ्चचक्रधरा चारु-प्रवालदलदीधितिः । चिरं चक्रेश्वरी देवी नन्दतादवताच्च माम् ॥५॥
खड्गखेटककोदण्ड-बाणपाणिस्तडिद्द्युतिः । तुरंगगमनाऽच्छुप्ता-कल्याणानि करोतु मे ॥६॥
मथुरापुरी सुपार्श्वं श्रीसुपार्श्वस्तूपरक्षिका । श्रीकुबेरा नरारूढा सुताङ्काऽवतु वो भयात् ॥७॥
ब्रह्मशान्तिः स मां पायादपायाद् वीरसेवकः । श्रीमत्सत्यपुरे सत्या येनकीर्तिः कृता निजा ॥८॥
श्रीशक्रप्रमुखा यक्षा जिनशासनसंस्थिता । देवदेव्यस्तदन्येऽपि संघं रक्षन्त्वपायतः ॥९॥
श्रीमद्विमानमारूढा यक्षमातङ्गसंगता । सा मां सिद्धायिका पातु चक्रचापेषुधारिणी ॥१०॥

ॐ नमो जिणाणं सरणाणं मंगलाणं लोगुत्तमाणं ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः असिआउसा त्रैलोक्यललामभू-
ताय क्षुद्रोपद्रवशमनाय अर्हते नमः स्वाहा ।"

आ पाठ बोली अभिषेक करवो. अष्टप्रकारी पूजा करवी, पछी ४ अथवा ८ कलशा दूध जले भरीने स्नात्रकारो उभा रहीने
नीचेनो स्नात्र पाठ भणावे.—

ॐ त सतिं मनिकर मतिण्ण मव्वभया। सतिं थुणामि जिणं संति विहेउ मे स्वाहा ॥१॥

ॐ रोग जलजलणविसहर–चोरारिमइंदगयरणभयाइं।

पासजिणनामसकित्तणेण पसमति सव्वाइं स्वाहा ॥ २ ॥

ॐ वरकणयसंखविद्दुम–मरकयघणसंनिभं विगयमोहं। सत्तरिसय जिणाणं सव्वामरपूइअं वन्दे स्वाहा ॥३॥

ॐ भवणवइवाणमन्तर–जोइसवासी विमाणवासो अ। जे केवि दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥४॥

श्रीमन्मन्दरमस्तके शुचिजलैर्धौते सदर्भाक्षते। पीठे मुक्तिवर विधाय रुचितत्पादपुष्पस्रजा ॥
इन्द्रोऽहं निजभूषणार्थममलं यज्ञोपवीतं दधे। मुद्राकंकणशेखराण्यपि तथा जैनाभिषेकोत्सवे ॥१॥

विश्वैश्वर्यैकवर्यास्त्रिदशपतिशिर.शेखरस्पृष्टपादा', प्रक्षीणाऽशेषदोषा' सकलगुणगणग्राम धामान एव।
जायन्ते जन्तवो यच्चरणसरसिजद्वन्द्वपूजान्विता श्री–अर्हन्त स्नात्रकाले कलशजलभृतैरेभिराप्लावयेत्तम् ॥२॥

ॐ ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः अर्हते तीर्थोदकेन अष्टोत्तरशतौषधिसहितेन षष्टिलक्षाधिकैककोटिप्रमाण-कलशै' स्नपयामि शान्ति तुष्टि पुष्टि कुरु २ स्वाहा।"

आ पाठ बोली स्नात्राभिषेक करवो, वांजित्रनादपूर्वक अभिषेक करी अष्टविध पूजा करी आरती मंगलदीवो करवो, आगे नैवेद्य ढोवु,

ए पछी इर्यावही प्रतिक्रमण पूर्वक नीचे प्रमाणे ८ थुइए देववंदन करे

ॐ नमः पार्श्वनाथाय विश्वचिन्तामणीयते । ॐ धरणेन्द्रवैरोट्या पद्मादेवीयुताय ते ॥१॥
शान्तितुष्टिमहापुष्टि-धृति कीर्तिविधायिने । ॐ ह्रीँ द्विड् व्यालवेताल-सर्वाधिव्याधिनाशिने ॥२॥
जयाऽजिताऽऽख्या विजयाख्यापराजितयाऽन्वितः । दिशांपालैर्ग्रहैर्यक्षैर्विद्यादेवीभिरन्वितः ॥३॥
ॐ असिआउसाय नमस्तत्र त्रैलोक्यनाथताम् । चतुःषष्टिः सुरेन्द्रास्ते भासन्ते छत्रचामरैः ॥४॥
श्रीशंखेश्वरमण्डन-पार्श्वजिन ! प्रणतकल्पतरुकल्प चूरय दुष्टव्रातं, पूरय मे वाञ्छितं नाथ ॥५॥
जंकिंचि० नमुत्थुणं० अरिहंत चेइआणं० करेमि का० वंदणवत्ति० १ नोकार० नमोऽ० स्तुति—
अर्हंस्तनोतु स श्रेयः-श्रियं यद्ध्यानतो नरैः । अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि रंहसा सहसौच्यत ॥१॥
लोगस्स सव्वलोए० अरिहन्त० वंदण० अन्नत्थ० १ नो० स्तुति—
ॐमिति मन्ता यच्छासनस्य नन्ता सदा यदंह्रींश्च । आश्रीयते श्रिया ते भवतो भवता जिनाः पान्तु ॥२॥
पुक्खरवरदी० वंदण० अन्नत्थ० १ नो० स्तुति—
नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता । वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥३॥
सिद्धाणं० बुद्धाणं० श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि का० वंदण० १ लोगस्स० नयोऽर्हद्० स्तुति०—

श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः अशान्तिकोसाचशान्तिमुपशान्तिं ।
नयतु सदा यस्य पदाः सुशान्तिदाः संतुषन्ति जने ॥ ४ ॥

श्रीद्वादशाङ्गी आराधनार्थं करेमि का० वदण० १ नो० नमो० स्तुति—

सकलार्थसिद्धिसाधनबीजोपाङ्गा सदा स्फुरदुपाङ्गा । भवतादनुपहतमहातमोपहा द्वादशाङ्गी वः ॥५॥

श्रुतदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

वद वदति न वाग्वादिनि भगवति कः श्रुतसरस्वतिगमेच्छुः । रङ्गत्तरङ्गमतिवर तरणिस्तुभ्य नम इतीह ॥६॥

शासनदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

उपसर्गवलयविलयन-निरताजिनशासनावनैकरताः । द्रुतमिहसमीहितकृते स्युः शासनदेवता भवताम् ॥७॥

समस्तवैआवचगराणं० सन्ति० सम्म० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

सघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैयावृत्त्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥८॥

नोकार पूर्ण कही वेसीने नमुत्थुणं, जावति, अजितशान्ति स्तवन कही जयवीयराय कहेवा.

ते पछी इर्यावही पडिकमी काउसग्ग १ लोगस्सनो करी उपर लोगस्स प्रकट कही खमासमण देइ क्षेत्रदेवतायै करेमि का० १ लोग० नमो० स्तुति—

यस्याः क्षेत्र समाश्रित्य साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं भूयान्नः सुखदायिनी ॥१॥

भवनदेवतायै करेमि० का० अन्नत्थ, १ नो० नमो० स्तुति—

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् । विदधातु भुवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥२॥
शान्तिदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ लो० नमो० स्तुति—
उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥
क्षुद्रोपद्रवशमावणी करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० १ लो० १ उवसग्ग० ए त्रणनो काउसग्ग करी नमोऽर्हत् कही स्तुति—
सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये वैयावृत्यकरा जिने । क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥४॥
उपर १ नोकार पूर्ण कहेवो.

ए पछी स्नात्रजल कलशोमां भरी, म्होटी त्रांबाकुंडीमां स्वस्तिक करी, बृहच्छान्तिनो अस्खलित पाठ बोलतां बे कलशोवडे अखण्ड धाराथी त्रांबाकुंडीमां लेवुं. शान्ति पूर्ण बोलाइ रहे त्यां सुधी धारा चालु राखवी. शान्तिपाठमां 'श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु' ए पछी श्री संघनायक अमुक (संघपतिनुं नाम होय तो बोलवुं) स्य शान्तिर्भवतु, श्रीसंघजनस्य शान्तिर्भवतु आटलो पाठ वधारे बोलवो.

शान्ति पाठ बोलीने कुंडीमां लीधेल जल मस्तके लगाडवुं. ए पछी क्षीर. करंबो, घाट, पंचधारी लापसी, वडा, सुंहाली २१ मगदना लाडु २०, देहि पाव ए सर्व एक थालमां मूकी प्रभु आगल ढोवा, पछी संघ मलीने संघवीने तिलक करे. संघपति पण संघनुं सन्मान-साधर्मिक वात्सल्यादिक करे.

शुभ लग्नसमयमां चन्द्रनाडीमां स्वर वहेतो होय ते वखते शुभ शकुने पोताना घरथी प्रयाण मुहूर्त करवुं. नगरनी बहार

डेरादिए त्यां नित्य शुद्ध वेष पहेरी, साधु अथवा श्रावके बन्ने टक जिनमंदिरमा सात स्मरणनो पाठ करवो. वली जे दिवसे प्रस्थान करे ते दिवसे सयवी पोते अथवा पोताना परिवारमां जे माणस पठित अने चतुर होय तेणे १ नोकार २ लोगस्स, ३ उवसग्गहर ए त्रणनी फूल गुथणीए १ नोकारवाली गणवी

॥ इति तीर्थयात्रा शान्तिक विधिः ॥

१७–ग्रहशान्तिकम्

ग्रहशान्तिमाद्यं स्याद्, ग्रहशान्तिकरं परम्। द्वितीयं गोचरग्रह–पीडायाः परिहारकम् ॥१७८॥

भा०टी०—बे प्रकारना ग्रहशांतिकोमां पहेलु सामान्य रीते ग्रहशांति करनारु छे, ज्यारे बीजुं गोचरथी पीडता ग्रहोनी पीडा शांति करनारु ग्रहशांतिक छे

प्रथम पूर्व प्रतिष्ठित जिन प्रतिमा सिंहासन उपर स्थापन करी तेनी पूजा करवी. ते पछी तेनी आगल शुद्ध भूमिमां चन्दननो अथवा सेवननो पाटलो स्थापीने तेने चन्दनना रसनुं विलेपन करवुं, अने सुकया पछी ते उपर ग्रहो आलेखवा, अने पूजवा.

ग्रहो–केसर चन्दन १ चंदन २ केसर ३ गोरोचन ४ केसर ५ चंदन ६ कस्तूरी ७ कस्तूरी ८ कुंकुम ९ आ द्रव्यो वडे अनुक्रमे आलेखवा अने पूजवा

ग्रहोने रक्त कणेर, १ कुमुद २ जासूल ३ चंपक ४ सेवंती ५ जाइ ६ वकुल ७ या दमनक ७ कुन्द ८ पाच वर्णोना पुष्पो अनुक्रमे चढाववां.

ग्रहोने—गुड भात १ क्षीर २ कंसार अथवा लापसी ३ घेवर ४ दहिनो करम्बो ५ घी भात ६ खीचडी ७ उडदनो लाडु ८ उडद या तलनो लाडु ९ आ नैवेद्य अनुक्रमे चढाववां.

ग्रहोने द्राक्षा १ सेलडी २ सोपारी ३ नारंगी ४ जंबेरी ५ बीजोरुं ६ खजूर ७ नालियेर ८ दाडिम ९ आ फलो अनुक्रमे चढाववां.

ग्रहोने—कमलवर्ण-गुलाबी १ श्वेत २ रक्त ३ नीला ४ पीत ५ श्वेत ६ कृष्ण ७ कृष्ण ८ कृष्ण ९ आ वर्णना १-१ हाथना वस्त्रखण्डो ओढाडवां.

प्रत्येक ग्रहनो मंत्र बोली उपर्युक्त द्रव्यो चढाववां, अने पछी स्तोत्रवडे ते ते ग्रहनी प्रार्थना करवी.

ग्रह मंडलनां स्थान—

मध्ये तु भास्करं विद्याच्छशिनं पूर्वदक्षिणे। दक्षिणे लोहितं विद्याद्, बुधं पूर्वोत्तरेण तु ॥१॥
उत्तरेण गुरुं विद्यात्, पूर्वेणैव तु भार्गवम्। पश्चिमेन शनिं विद्यात्, राहुं दक्षिणपश्चिमे ॥२॥
पश्चिमोत्तरतः केतुः, स्थाप्यश्च किल तंदुलैः। मार्तण्डे मण्डलं वृत्तं, चतुरस्रं निशाकरे ॥३॥

ग्रह मण्डलोना आकार—

महीपुत्रे त्रिकोणं स्याद्, बुधे वै बाणसन्निभम्। गुरौ तु पट्टिकाकारं, पंचकोणं तु भार्गवे ॥४॥
धनुराकृति मन्दे तु, शूर्पाकारं तु राहवे। केतवे तु ध्वजाकारं, मण्डलानि नवैव तु ॥५॥

ग्रहोना मुख—

शुक्रार्कौ प्राङ्मुखौ ज्ञेयौ, गुरुसौम्यावुदङ्मुखौ। प्रत्यङ्मुखः शनिः सोमः, शेषाश्च दक्षिणामुखाः ॥६॥

भा०टी०—मध्यमा सूर्य, अग्निकोणमां चन्द्र, दक्षिणमा मंगल, ईशानमा बुध, उत्तरमा गुरु, पूर्वमा शुक्र, पश्चिममा शनि, नैऋत्यमां राहु अने वायव्यमा केतुनी स्थापना तादुलो 'चावलो' वडे करवी

सूर्यनुं मंडल गोलाकार, चन्द्रनुं चोरस, मंगलनु त्रिकोण, बुधनु बाणाकार, गुरुनु पट्टिना आकारनुं, शुक्रनुं पंचकोण, शनिनुं धनुषाकार, राहुनु सूर्पाकार, अने केतुनुं मंडल ध्वजाकार होय छे.

सूर्य शुक्र पूर्वमुख, बुध गुरु उत्तरमुख, चन्द्र शनि पश्चिममुख अने शेष मंगल, राहु, केतु, आ ग्रहो दक्षिणामुखवाला होय छे. प्रतिष्ठा अष्टाहि महोत्सव आदिमा उपरोक्त दिशाओमा ग्रहोनी पाटला उपर मण्डलो आलेखवी, पछी हाथमा पुष्पाञ्जलि लेइ—

जगद्गुरुं नमस्कृत्य, श्रुत्वा सद्गुरुभाषितम्। ग्रहशान्ति प्रवक्ष्यामि, लोकाना सुखहेतवे ॥१॥
जिनेन्द्रैः खेचरा ज्ञेया, पूजनोया विधिक्रमात। पुष्पैर्विलेपनैर्धूपै नैवेद्यैस्तुष्टिहेतवे ॥२॥
पद्मप्रभस्य मार्तण्ड-श्चन्द्रश्चन्द्रप्रभस्य च। वासुपूज्यो महीपुत्रो, बुधस्याऽष्टौ जिनेश्वरा ॥३॥
विमलानन्तधर्माराः, शान्ति कुन्थुर्नमिस्तथा। वर्द्धमानो जिनेन्द्राणां, पादपद्मे बुधं न्यसेत् ॥४॥
ऋषभाजितसुपार्श्वौ, अभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः संभवः स्वामी, श्रेयांसश्च बृहस्पतिः ॥५॥
सुविधः कथितः शुक्रः, सुव्रतस्य शनैश्चरः। नेमिनाथो भवेद्राहुः, केतुः श्रीमल्लिपार्श्वयोः ॥६॥

जन्मलग्ने च राशौ च पीडयन्ति यदा ग्रहाः। तदा संपूजयेद् धीमान्, खेचरैः सहितान् जिनान् ॥७॥
गंधपुष्पादिभिर्धूपै नैवेद्यैः फलसंयुतैः। वर्णसदृशदानैश्च, वासोभिर्दक्षिणान्वितैः ॥८॥
आदित्यसोममंगल–बुधगुरुशुक्राः शनैश्चरो राहुः। केतुप्रमुखाः खेटा, जिनपतिपुरतोऽवतिष्ठन्तु ॥९॥
जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां तुष्टिहेतवे। नमस्कारस्तवं भक्त्या, जपेदष्टोत्तरं शतम् ॥१०॥
भद्रबाहुरुवाचेमं, पंचमः श्रुतकेवली। विद्याप्रवादतः पूर्वाद्, ग्रहशान्तिविधिस्तवम् ॥११॥

आ ग्रहशान्तिस्तवनो पाठ बोलीने, पुष्पांजलि ग्रहोना पाटला उपर नाखवी, ते पछी सूर्यादिक एक एक ग्रहनी नीचेनी विधिथी पूजा करवी.

१ सूर्यपूजा—ॐ घृणि घृणि नमः श्रीसूर्याय सहस्रकिरणाय रत्नादेवीकान्ताय वेदगर्भाय यमयमुनाजनकाय जगत्कर्मसाक्षिणे पुण्यकर्मप्रभावकाय पूर्वदिगधीशाय स्फटिकोज्वलाय रक्तवस्त्राय कमलहस्ताय ससाश्वरथवाहनाय श्रीसूर्य सायुधः सवाहनः सपरिच्छदः इह ग्रहशान्तिके आगच्छ आगच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं आचमनीयं गृहाण गृहाण संनिहितो भव भव स्वाहा। जलं गृहाण गृहाण, गंधं, पुष्पं, अक्षतान्, फलानि, मुद्रां, धूपं दीपं, नैवेद्यं गृहाण गृहाण, सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्तिं कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि २ स्वाहा।"

आ मंत्र बोलीने सूर्यना मंडल उपर जल, गंध, पुष्प, अक्षत, फल, मुद्रा, धूप दीप, नैवेद्य, आदि द्रव्यो चढाववां. अने

अन्तमां नीचेना स्तोत्रवडे प्रार्थना करवी

सूर्यस्तोत्र—

अदिते: कुक्षिसम्भूतो, भरण्या विश्वपावनः। काश्यपस्य कुलोत्तंसः, कलिङ्गविषयोद्भवः ॥१॥
रक्तवर्णः पद्मपाणि र्मन्त्रमूर्तिस्त्रयीमयः। रत्नादेवीजीवितेशः, ससाश्वोऽरुणसारथिः ॥२॥
एकचक्ररथारूढः, सहस्रांशुस्तमोपहः। ग्रहनाथ उदङ्मुखः, सिंहराशौ कृतस्थितिः ॥३॥
लोकपालोऽनन्तमूर्तिः, कर्मसाक्षी सनातनः। सस्तुतो बालखिल्यैश्च, विघ्नहर्ता दरिद्रहा ॥४॥
तत्सुता यमुनावापी-भद्रा-यमशनैश्चराः। अश्विनीकुमारौ पुत्रौ, निग्राह्य दैत्यसूदनः ॥५॥
पुन्नागकुङ्कुमैर्लेपैः, रक्तपुष्पैश्च धूपनैः। द्राक्षाफलैर्गुडान्नेन, प्रीणितो दुरितापहः ॥६॥
पद्मप्रभजिनेन्द्रस्य, नामोच्चारेण भास्कर। शान्तिं तुष्टिं च पुष्टिं च, रक्षा कुरु कुरु द्रुतम् ॥७॥
सूर्यो द्वादशरूपेण, माठरादिभिरावृतः। अशुभोऽपि शुभस्तेषां, सर्वदा भास्करोग्रहः ॥८॥

२चन्द्रपूजा—ॐ चच नमश्चन्द्राय शंभुशेखराय षोडशकलापरिपूर्णाय तारागणाधीशाय आग्नेयदिगधीशाय अमृतमयाय सर्वजगत्पोषणाय श्वेतशरीराय श्वेतवस्त्राय श्वेतदशवाजिवाहनाय सुधाकुम्भहस्ताय श्रीचन्द्र सायुधः सवाहनः सपरिच्छदः इह ग्रहशान्तिके आगच्छ आगच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं आचमनीयं गृहाण गृहाण सन्निहितो भव २ स्वाहा। जलं गृहाण २ गंधं पुष्पं, अक्षतान्, फलानि, मुद्रा, धूपं दीपं, नैवेद्यं गृहाण २

सर्वोपचारान् गृहाण २ शान्तिं कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि २ स्वाहा"

आ मंत्र भणी चन्द्र मंडल उपर चन्द्रयोग्य द्रव्यो चढाववां. पछो नीचेनो स्तोत्रपाठ करी चन्द्रनी प्रार्थना करवी.

चन्द्रस्तोत्र—

अत्रिनेत्रसमुद्‌भूतः, क्षीरसागरसंभवः। जातो यवनदेशे च, चित्रायां समदृष्टिकः ॥१॥
श्वेतवर्णः सदाशीतो, रोहिणीप्राणवल्लभः। नक्षत्र औषधिनाथ, तिथिवृद्धिक्षयंकरः ॥२॥
मृगाङ्कोऽमृतकिरणः, शान्तो वासुकिरूपभृत्। शंभुशीर्षकृतावासो, जनको बुधरेवयोः ॥३॥
अर्चितश्चन्दनैः श्वेतैः, पुष्पैर्धूपवरेक्षुभिः। नैवेद्यपरमान्नेन, प्रीतोऽमृतकलामयः ॥४॥
चन्द्रप्रभजिनाधीश-नाम्ना त्वं भगणाधिप। प्रसन्नो भव शान्तिं च, कुरु रक्षां जयश्रियम् ॥५॥

३ मंगलपूजा—ॐ ह्रूँ ह्रीँ ह्रूँ हंसः नमः श्रीमंगलाय दक्षिणदिगधीशाय विद्रुमवर्णाय रक्ताम्बराय भूमिस्थिताय कुद्दालहस्ताय श्रीमंगल! सायुधः सवाहनः सपरिच्छदः इह ग्रहशान्तिके आगच्छ आगच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं आचमनीयं गृहाण गृहाण संनिहितो भव भव स्वाहा। जलं गृहाण गृहाण गंधं पुष्पं अक्षतान् फलानि मुद्रां, धूपं दीपं, नैवेद्यं गृहाण गृहाण सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण शान्तिं कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा।

आ मंत्र बोली मंगलना मंडल उपर मंगलोपयोगी पूजानां द्रव्यो चढाववां, अने नीचेना स्तोत्र वडे मंगलनी प्रार्थना करवी.

मगलस्तोत्र—

भौमो हि मालवे जात., आपाढायां घरासुतः। रक्तवर्णं उर्ध्वदृष्टि-र्नवार्चिस्साक्षको वली ॥१॥
प्रीतः कुकुमलेपेन विद्रुमैश्च विभूषणैः। पूगैर्नैवेद्यकासारै, रक्तपुष्पैः सुपूजितः ॥२॥
सर्वदा वासुपूज्यस्य, नाम्नासौ शान्तिकारकः। रक्षां कुरु घरापुत्र!, अशुभोऽपिशुभो भव ॥३॥

४ बुधपूजा—ॐ ऐं नमः श्रीबुधाय उत्तरदिगधीशाय हरितवर्णाय कलहंसवाहनाय पुस्तकहस्ताय श्रीबुध! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह ग्रहशान्तिके आगच्छ २ इदमर्घ्यं पाद्यं वलि आचमनीय गृहाण २ सन्निहितो भव भव स्वाहा। जल गृहाण गृहाण गंध, पुष्पं, अक्षतान्, फलानि, मुद्रा, धूप दीपं, नैवेद्य गृहाण गृहाण सर्वोपचारान् गृहाण २ शान्ति कुरु २ तुष्टि कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धि वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा।

आ मंत्र बोली बुधना मडल उपर चपक पुष्प नारगी, घेवर आदि बुधोपभोग्य द्रव्यो चढावीने नीचेना स्तोत्रथी बुधनी प्रार्थना करवी

बुधस्तोत्र—

मगधेषु धनिष्ठाया, पंचार्चि. पीतवर्णभृत्। कटाक्षदृष्टिकः श्यामः, सोमजो रोहिणीभवः ॥१॥
कर्कोटरूपो रूपाढ्यो, धूपपुष्पानुलेपनैः। दुग्धान्नैर्वरनारिङ्गै-स्तर्पितः सोमनन्दनः ॥२॥
विमलानन्तधर्मांराः, शान्तिः कुथुर्नेमिस्तथा। महावीरादिनामस्थः, शुभो भूयात् सदा बुधः ॥६॥

बृहस्पतिपूजा—ॐ जीव जीव नमः श्रीगुरवे बृहतीपतये ईशानदिगधीशाय सर्वदेवाचार्याय सर्वग्रहबलवत्तराय कांचनवर्णाय पीतवस्त्राय पुस्तकहस्ताय हंसवाहनाय श्रीगुरो ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छदः इह ग्रहशान्तिके आगच्छ आगच्छ इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं आचमनीयं गृहाण २ संनिहितो भव २ स्वाहा। जलं गृहाण गृहाण गंधं पुष्पं अक्षतान्, फलानि, मुद्रां, धूपं दीपं, नैवेद्यं गृहाण २ सर्वोपचारान् गृहाण २ शान्ति कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा।

आ मंत्र भणी गुरुपभोग्य द्रव्यो गुरुना मंडल उपर चढावी अने ते पछी नीचे लखेल बृहस्पतिस्तोत्र भणीने प्रार्थना करवी,

बृहस्पतिस्तोत्र—

बृहस्पतिः पीतवर्णः, इन्द्रमंत्री महामतिः। द्वादशार्चिर्देवगुरुः, पद्मश्च समदृष्टिकः ॥१॥
उत्तराफाल्गुनीजातः, सिन्धुदेशसमुद्भवः। दधिभाजनजम्बीरैः पीतपुष्पैर्विलेपनैः ॥२॥
ऋषभाजितसुपार्श्वौ, अभिनन्दनशीतलौ। सुमतिः संभवस्वामी, श्रेयांसो जिननायकः ॥३॥
एतत्तीर्थकृतां नाम्ना, पूजया च शुभो भव। शान्तिं तुष्टिं च पुष्टिं च, कुरु देवगणार्चित ! ॥४॥

शुक्रपूजा—ॐ सुं नमः श्रीशुक्राय दैत्याचार्याय आग्नेयदिगधीशाय स्फटिकोज्वलाय श्वेतवस्त्राय कुंभहस्ताय तुरगवाहनाय श्रीशुक्र ! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह ग्रहशान्तिके आगच्छ २ इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं आचमनीयं गृहाण २ संनिहितो भव २ स्वाहा। जलं गृहाण २ गंधं, पुष्पं, अक्षतान्, फलानि, मुद्रां, धूपं दीपं,

नैवेद्य गृहाण २ सर्वोपचारान् गृहाण २ शान्ति कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा।

आ मंत्र बोलवा पूर्वक शुक्रना मण्डलने उपयुक्त द्रव्योवडे आलेखवु, पूजवुं अने पुष्प फलादि द्रव्यो चढाववा, अन्तमा शुक्रस्तोत्रवडे प्रार्थना करवी.

शुक्रस्तोत्र—

शुक्रः श्वेतो महापद्मः, षोडशार्चिः कटाक्षदृक् । महाराष्ट्रेषु ज्येष्ठाया-मथाऽभूत भृगुनन्दनः ॥१॥

दानवार्च्यो दैत्यगुरु-र्विश्वासजीवनीनिधिः। सुगन्धचन्दनालेपैः, सितपुष्पैः सुपूजितः ॥२॥

घृतनैवेद्यजम्बीरै-स्तर्पितो भार्गवो ग्रहः। नाम्ना सुविधिनाथस्य, हृष्टोऽरिष्टनिवारकः ॥३॥

शनिपूजा—ॐ शः नमः शनैश्चराय पश्चिमदिगधीशाय नीलदेहाय नीलाम्बराय परशुहस्ताय कमठवाहनाय श्रीशनैश्चर! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद. इह ग्रह शान्तिके आगच्छ आगच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं आचमनीयं गृहाण गृहाण सन्निहितो भव भव स्वाहा। जल गृहाण गृहाण गंध, पुष्पं, अक्षतान्, फलानि, मुद्रां, धूप दीप, नैवेद्य गृहाण गृहाण सर्वोपचारान् गृहाण २ शांतिं कुरु २ तुष्टि कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि २ स्वाहा।

आ मंत्र भणी शनिना मंडल उपर शनियोग्य द्रव्यो चढाववा अने शनिस्तोत्र भणता शनिनी प्रार्थना करवी.

शनिस्तोत्र—

शनैश्चरः कृष्णवर्ण-श्छायाजो रेवतीभवः। नीलवर्णः सुराष्ट्रायां, शंखः पिङ्गलकेशकः ॥१॥
रविपुत्रो मन्दगतिः, पिप्पलादनमस्कृतः। रौद्रमूर्तिरधोदृष्टिः, स्तुतो दशरथेन च ॥२॥
नीलपत्रिकया प्रीत-स्तैलेनकृतलेपनः। उत्पत्तिः काचकासारे, तिलदानेन तर्पितः ॥३॥
मुनिसुव्रतनाथस्य, आख्यया पूजितः सदा। अशुभोऽपि शुभाय स्यात्, ससार्चिः सर्वकामदः ॥४॥

राहुपूजा—ॐ क्षः नमः श्रीराहवे नैर्ऋतदिगधीशाय कज्जलश्यामलाय श्यामलवस्त्राय परशुहस्ताय सिंह वाहनाय श्रीराहो! सायुधः सवाहनः सपरिच्छद इह ग्रहशान्तिके आगच्छ २ इदमर्घ्यं पाद्यं बलिं आचमनीयं गृहाण गृहाण संनिहितो भव भव स्वाहा। जलं गृहाण २ गंधं, पुष्पं, अक्षतान्, फलानि, मुद्रां, धूपं, दीपं, नैवेद्यं गृहाण २ सर्वोपचारान् गृहाण २ शान्तिं कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहितं देहि देहि स्वाहा।"

आ मंत्र भणी राहुना मण्डल उपर राहुयोग्य द्रव्यो चढावीने राहुनी पूजा करवी, अने स्तोत्र वडे प्रार्थना करवी.

राहुस्तोत्र—

शिरोमात्रः कृष्णकान्ति—र्ग्रहमल्लस्तपोमयः। पुलकश्च अधोदृष्टि-र्भरण्यां सिंहिकासुतः ॥१॥
संजातो बर्बरकूले, सधूपैः कृष्णलेपनैः। नीलपुष्पैर्नालिकेरै-स्तिलमाषैश्च तर्पितः ॥२॥

राहुः श्रीनेमिनाथस्य, पादपद्मेऽतिभक्तिमान्। पूजितो ग्रहकल्लोलः, सर्वकाले सुखावहः ॥३॥

केतुपूजा—ॐ नम श्रीकेतवे राहुप्रतिच्छन्दाय श्यामाङ्गाय श्यामवस्त्राय पन्नगवाहनाय पन्नगहस्ताय श्रीकेतो! सायुधः सवाहन, सपरिच्छद इह ग्रहशान्तिके आगच्छ २ इदमर्घ्यं पाद्य बलिं आचमनीयं गृहाण २ सन्निहितो भव भव स्वाहा। जल गृहाण, गंध, पुष्प, अक्षतान्, फलानि, मुद्रां, धूपं, दीप, नैवेद्य गृहाण गृहाण सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण शान्ति कुरु २ तुष्टिं कुरु २ पुष्टिं कुरु २ ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमीहित देहि २ स्वाहा।

आ मंत्र बोलीने केतुना मंडल उपर केतुभोग्य द्रव्यो चढावना अने नीचे लखेल स्तोत्र द्वारा प्रार्थना करवी.

केतुस्तोत्र—

पुलिन्दविषये जातो, ऽनेकवर्णोऽहिरूपभृत्। आश्लेषाया सदा क्रूर', शिखी भौमतनुः फणी ॥१॥

पुण्डरीकगन्धश्च, कपालतोरणः खलः। कीलकस्तामसो धूमो, नाना नामोपलक्षित. ॥२॥

मल्लेः श्रीपार्श्वनाथस्य, नामधेयेन राक्षसो। दाडिमैश्च विचित्रान्नैस्तर्प्यते चित्रपूजया ॥३॥

राहोः सप्तमराशिस्थः, कारणे दृश्यतेऽम्बरे। अशुभोऽपि शुभो नित्य, केतुर्लोके महाग्रह' ॥४॥

उपर प्रमाणे नवग्रहोनी पृथक् पृथक् पूजा प्रार्थना करी उपर रक्त वस्त्र ओढाडवु अने गेवास्त्रे पाटलो वींटवो. प्रत्येक ग्रहने जुदा जुदा वस्त्र खंडो ने बदले एक ज दशियावाळ अखंड ९ हाथ परिमित वस्त्र नवे य ग्रहोनुं पूजन थया पछी पाटला उपर ओढाडिये तो पण चाले, प्रत्येकनी पूजा प्रार्थना थया पछी नीचेना स्तोत्र द्वारा सामुदायिक प्रार्थना करवा

ग्रहस्तोत्र—

जिननामकृतोच्चारा, देशनक्षत्रवर्णकैः। स्तुताश्च पूजिता भक्त्या, ग्रहाः सन्तु सुखावहाः ॥१॥

जिनानामग्रतः स्थित्वा, ग्रहाणां सुख हेतवे। नमस्कारशतं भक्त्या जपेदष्टोत्तरं नरः ॥२॥

एवं यथा नामकृताऽभिषेकाः, आलेपनैर्धूपनपूजनैश्च।
फलैश्च नैवेद्यवरैर्जिनानां, नाम्ना ग्रहेन्द्राः शुभदा भवंतु ॥३॥

साधुभ्यो दीयते दानं, महोत्साहो जिनालये। चतुर्विधस्य संघस्य, बहुमानेन पूजनम् ॥४॥

भद्रबाहुरुवाचेदं, पंचमः श्रुतकेवली। विद्याप्रवादतः पूर्वात्, ग्रहशान्तिविधिं शुभम् ॥५॥

उक्त ग्रहशान्तिक प्रतिष्ठाना प्रारंभमां के एवा ज कोइ महत्वपूर्ण कार्य प्रसंगे करवामां आवे तो पूजीने ग्रहोनी स्थापना जिनबिम्बना जमणा हाथनी दिशामां राखी मूकवी. प्रतिष्ठादि कार्य थइ गया पछी ज्यारे बीजा देवोनुं विसर्जन कराय त्यारे एनुं पण विसर्जन करवुं, पण संघ प्रयाणावसरे के बीजा एवा शुभ प्रसंगे शान्तिक कर्युं होय तो सर्वेनी पूजा प्रार्थना थया पछी ग्रहोनुं विसर्जन करी देवुं.

उक्त ग्रहशान्तिक प्रायः शुभ कार्य प्रसंगे करवानुं छे. आमां कार्य प्रसंगनी निर्विघ्न समाप्ति माटे सर्व ग्रहोनी पूजा प्रार्थना करवामां आवे छे.

ग्रह विशेषनी पीडाशान्ति निमित्ते शांतिक करवुं होय तो तेनी विधि कंइक भिन्न छे. जे विधि जुदी आपेली छे.

॥ इति ग्रहशान्तिक ॥

१७ गोचरग्रहपीडा शान्तिकविधिः (२)

आ ग्रहशान्तिकमा पण ग्रहनी पूजा प्रार्थना तो उपरना शान्तिकमां कह्या प्रमाणे ज करवानी होय छे. मात्र मंत्र पाठमा " इदमर्घ्यं पाद्य बलिं चरु " आम ' बलिं ' पछी ' चरु ' आ शब्द वधारीने मंत्र पाठ बोलवानो होय छे. आ शान्तिकमां विशेषता ' होम ' नी छे कोइ पण ग्रहनु शान्तिक होय तेनी पूजा प्रार्थना कर्यां पछी १०८ वार होम करवो पडे छे, अने स्थापना शान्तिनाथजीनी प्रतिमा आगल ज नहिं पण ते ते ग्रह प्रतिबद्ध जिन प्रतिमा आगे तेना ज वारना दिवसे तेनुं शान्तिक करवु पडे छे. राहु केतुनुं शान्तिक शनिवारे कराय छे

जे ग्रहनु शान्तिक होय तेना होमना द्रव्यो अने दानना पदार्थो प्रथमथी मगावीने पासे राखवा, दरेक ग्रहना होममां कुंड त्रिकोण अने होमना समिध (काष्ट) वडपीपल अने पीपलीना लेवा

सूर्यना शान्तिकमा होम द्रव्य-घृत, मधु, कमलकाकडी, दान-उज्वलवस्त्र, तादला अने घोडानु,

चन्द्र शान्तिकमा होमद्रव्य-घृत, सर्वौषधि, दान--तादला, श्वेतवस्त्र, मोतीनु ।

मगल शान्तिकमा घृतमधुनो होम, दान-रक्तवस्त्र, रक्त घोडानु ।

बुध शान्तिकमा होम-घृतमधु, प्रियङ्गुनो, दान-मरकतमणि, धेनुनु ।

गुरु शान्तिकमा होम-घृत, मधु, जव, तिलनो, दान-सुवर्ण, पीत वस्त्रनुं ।

शुक्र शान्तिकमां होम-पंचगव्यनो, दान-श्वेतरत्न, धेनुनु, कृष्ण गाय-वृषभ, नीलमणिनुं ।

शनि शान्तिकमां होम–तिलघृतनो, दान–ऊन अने लोहनुं देवुं जोइये ।
राहु शान्तिकमां होम–तिलघृतनुं, दान–बकरानुं अने शस्त्रनुं ।
केतु शान्तिकमां होम–तिलघृत, दान–कृष्ण गाय–वृषभ, नीलमणिनुं
सूर्यनुं शान्तिक पद्मप्रभजिननी प्रतिमाने पूजीने तेनी आगे सूर्यने स्थापीने करवुं.
चन्द्रनुं शान्तिक–चन्द्रप्रभजिनना बिंबने पूजीने ते आगल चन्द्रनी स्थापना करीने करवुं.
मंगलनुं शान्तिक–वासुपूज्यजिनने पूजी तेनी आगल मंगलने स्थापन करीने करवुं.
बुधनुं शान्तिक–विमल, अनन्त, धर्म, शान्ति, कुंथु, अर, नमि, महावीर, आ पैकीना कोइ पण जिननी मूर्तिने पूजीने तेनी आगल बुधने स्थापीने करवुं.
गुरुनुं शान्तिक–ऋषभ, अजित, संभव, अभिनंदन, सुमति, सुपार्श्व, शीतल, श्रेयांस, आ पैकीना कोइ पण एक तीर्थंकरनी प्रतिमाने पूजी, तेनी आगल करवुं.
शुक्रनुं शान्तिक–सुविधिनाथने पूजी तेमनी आगल शुक्रने स्थापीने करवुं.
शनिनुं शान्तिक–मुनिसुव्रतने पूजी तेमनी प्रतिमा आगल शनिने स्थापीने करवुं.
राहुनुं शान्तिक–नेमिनाथनी पूजा करी तेमनी आगल राहुने स्थापीने करवुं.
केतुनुं शान्तिक–मल्लिनाथ अथवा पार्श्वनाथने पूजीने तेमनी आगल केतुनी स्थापना करीने करवुं.

॥ इति गोचर ग्रहपीडा शान्तिक ॥

१८ जीर्णोद्धारविधिः—

जीर्णोद्धारविधौ भग्न–खण्डितार्चा विसर्जने । यद् विधेयं विधानं तत्, पादलिप्तोक्तमुच्यते ॥१७९॥

भा०टी०—जीर्णोद्धार विधिमा भागेली अने खण्डित थयेली प्रतिमाना विसर्जनमा जे विधान कराय छे, ते पादलिप्ताचार्यें निर्वाण कलिकामा कह्या प्रमाणे अहिया कहेवाय छे

खण्डित थयेल, फाटेल, भागेल, वाकीवलेल, जीर्णशीर्ण थयेल, बलेल, सगर्भ, घा लागेल, प्रमाणहीन, प्रमाणाधिक, वाकी, विकराल आकारवाली, भयकर आकारवाली, मंत्रना अभावथी पिशाच आदिथी अधिष्ठित थयेली, प्रतिमाने उठाडीने तेना स्थाने नवी प्रतिमा प्रतिष्ठित करवी.

प्रतिष्ठाचार्य प्रभातना उठीने नित्य नियम करीने सकलीकरण करे, पछी खंडित स्फुटित भग्नादि कारणे निरान्तर स्थापन करवानी इच्छावाला प्रतिष्ठाचार्य शान्ति निमित्ते दिक्पालोने बलिदान आपे ते आ प्रमाणे—

ॐ इन्द्राय प्रतिगृह्ण स्वाहा । ॐ अग्नये प्रतिगृह्ण स्वाहा । ॐ यमाय प्रतिगृह्ण स्वाहा । ॐ निर्ऋतये प्रतिगृह्ण स्वाहा । ॐ वरुणाय प्रतिगृह्ण स्वाहा । ॐ वायवे प्रतिगृह्ण स्वाहा । ॐ कुबेराय प्रतिगृह्ण स्वाहा । ॐ ईशानाय प्रतिगृह्ण स्वाहा । ॐ ब्रह्मणे प्रतिगृह्ण स्वाहा । ॐ नागाय प्रतिगृह्ण स्वाहा ।

आ प्रमाणे बोलीने पोतपोतानी दिशामा अनुक्रमे बहार बलि फेंकीने वायव्य कोणमा–“ **ॐ क्षाँ क्षेत्रपालाय स्वाहा ।**”

आम बोलीने क्षेत्रपालने बलिदान आपी—" ॐसर्वभूतेभ्यो वषट् स्वाहा "

ए मंत्र बोलीने भूत आदिनुं संतर्पण करवुं, ए पछी चैत्यवंदन करवुं.

चैत्यवंदन करीने मण्डल पासे आवी ॐकार वडे आसन पूजीने बेसीने भूतशुद्धि अने सकलीकरण करी विशेष अर्घपात्रनी द्रव्यशुद्धि करवी. पछी आसनपूजादि कृत्य करी अर्घपाद्य आचमनीयादि देइने नित्यविधिथी सांग भगवन्तनी पूजा करवी, पछी आयुध सहित लोकपालोनी पूजा करवी.

पूर्व दिशामां ॐ इन्द्राय स्वाहा, ॐ वज्राय स्वाहा । आग्नेय दिशामां ॐ अग्नये स्वाहा, ॐ शक्तये स्वाहा । दक्षिण दिशामां ॐ यमाय स्वाहा, ॐ दण्डाय स्वाहा । नैर्ऋत दिशामां ॐ निर्ऋतये स्वाहा, ॐ खड्गाय स्वाहा । पश्चिम दिशामां ॐ वरुणाय स्वाहा, ॐ पाशाय स्वाहा । वायव्य दिशामां ॐ वायवे स्वाहा, ॐ ध्वजाय स्वाहा । उत्तर दिशामां ॐ कुबेराय स्वाहा, ॐ गदायै स्वाहा । ईशान दिशामां ॐ ईशानाय स्वाहा, ॐ शूलाय स्वाहा । ईशानमां ज–ॐ ब्रह्मणे स्वाहा, ॐ पद्माय स्वाहा । नैर्ऋत दिशामां–ॐ नागाय स्वाहा, ॐ उत्तराय स्वाहा ।

उपर प्रमाणे आयुध सहित लोकपालोनुं पूजन करी तेमने पोतानां कर्तव्य विषे सावधान करवा ते आ प्रमाणे—

१ भो भो शक्र ! त्वया स्वस्यां दिशि विघ्नप्रशान्तये, सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।

२ भो भो अग्ने ! त्वया स्वस्यां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।

३ भो भो यम ! त्वया स्वस्यां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।

४ भो भो निर्ऋते ! त्वया स्वस्यां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।
५ भो भो वरुण ! त्वया स्वस्यां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।
६ भो भो वायो ! त्वया स्वस्यां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।
७ भो भो कुबेर ! त्वया स्वस्यां दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।
८ भो भो ईशान ! त्वया स्वस्या दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।
९ भो भो ब्रह्मन् ! त्वया स्वस्या दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।
१० भो भो नाग ! त्वया स्वस्या दिशि विघ्नप्रशान्तये सावधानेन शान्तिकर्मान्तं यावद् भगवदाज्ञया स्थातव्यम् ।

सर्वलोकपालोने भगवानती आज्ञा सभलावी. अस्त्रमंत्र अने मुद्रा वडे पोताना शरीर फरती किल्लेनन्दी कर्या पछी मंडपमां सर्वत्र अर्घजल छांटवा द्वारा विघ्न निवारण करी, देवनी पासे जइ देवनी विपरीत क्रमथी पूजा करवी. ते पछी विसर्जन निमित्ते देवने अर्घ आपीने भगवानने विज्ञप्ति करे—

भगवन् ! विघमिदमशेषदोषावहमस्य चोद्धारे सति शान्तिः स्यादिति भगवतोक्तमतोऽस्य समुद्धाराय समुद्यतं मामातिष्ठ ।" " एवं कुरु. "

आ प्रमाणे विज्ञप्ति करी आज्ञा मेळवीने सुवर्णादिनो एक कलश गळेल जळथी भरीने, तेने चन्दन, पुष्प, अक्षतो वडे पूजी मूल मन्त्र वडे, अभिमन्त्रित करी, मुद्रा देखाडीने ते जलकलशे देवनो अभिषेक करवो.

ते पछी बिम्बने स्थानथी दूर करवा निमित्ते मूल मंत्रनो एक हजार जाप करवो अने १०८ सुवर्णना पुष्पो वडे बिम्बनी पूजा करवी, ए बधुं कर्यां पछी प्रतिमानी पासे आवीने प्रतिमाना शरीरमां रहेल सत्त्वने नीचे प्रमाणे संभलावे—

" प्रतिमारूपमास्थाय, येनादौ समधिष्ठिता। स शीघ्रं प्रतिमां त्यक्त्वा, यातु स्थानं समीहितम् ॥ १ ॥

आ प्रमाणे कहीने—" ॐ विसर विसर स्वस्थानं गच्छ गच्छ "

आ मंत्र बोली अर्घ देइने, प्रतिमाधिष्ठायक देवविशेषनुं विसर्जन करवुं.

ते पछी सुवर्णनां ओजारने अभिमंत्रित करी, ते वडे उत्थापन करी, सुवर्णना पाशवाली दोरी वडे शिखामां बांधीने हाथी आदिनी सवारी करावीने सर्व लोकोनी साथे—" शान्तिर्भवतु "

आ प्रमाणे बोलतां देवने बहार लइ जइ, जो बिंब पाषाणनुं होय तो अगाध जलमां अथवा तो म्होटा पर्वतमां भण्डारवुं, जो प्रतिमा माटीनी होय अथवा रत्नमयी होवा छतां अग्नि विगेरेमां दाझवाथी तेजहीन अने स्थानच्युत थइ गइ होय तो तेने पण पूर्वनी जेम परठवी देवी.

सुवर्णादि धातुमय बिम्बने सुधारीने पाछुं त्यां स्थापन करी देवुं.

एज विधिथी चूलक, ध्वज, प्रासादादिक जे दोषयुक्त होय तेनुं विसर्जन करवुं.

प्रासादना विसर्जनमां नीचे प्रमाणे विशेषता छे–प्रासादना जीर्णोद्धारमां मंत्रो अंगमां जोडी बिंबने राखी प्रासाद नवो तैयार थाय त्यां सुधी षडङ्गनुं पूजन करवुं.

प्रासाद ज्यारे तैयार थइ जाय त्यारे षडंगयोजित मंत्रो त्याथी सहरी पाछा प्रासादना अंगोमा यथास्थान ते मंत्रोनो न्यास करवो, ए प्रमाणे जीर्णने दूर करी प्रायश्चित्त निमित्ते जाप करवो.

ते पछी आचार्यने दक्षिणा आपी, खमावी, विदाय करवा, उक्त रीते जीर्ण बिम्बादिकने हटावी ते ज प्रकार अने परिमाण-वाला बीजा बिम्ब आदिकने विधिपूर्वक प्रतिष्ठित करवा.

॥ इति जीर्णोद्धार विधिः ॥

१९ देवी प्रतिष्ठा—

विधिर्देवीप्रतिष्ठाया, आचारार्कगतः खलु । इहाऽखिलोऽपि संदब्धो, विधिकारहितेच्छया ॥१८०॥

भा०टी०—देवीप्रतिष्ठानी जे विधि आचारदिनकरमा बतावेल छे, ते संपूर्णनो विधिकारोना हितार्थे अहिया संग्रह कर्यो छे.

देवीओ त्रण प्रकारनी होय छे. १ प्रासाददेवीओ २ संप्रदायदेवीओ ३ कुलदेवीओ.

त्या प्रासाददेवीओ पीठ, उपपीठ, क्षेत्र अने उपक्षेत्रने, विषे बनावेली गुफामां रहेली, लिंगरूप. स्वयंभूतरूप अथवा मनुष्ये बनावेला रूपवाली होय छे

संप्रदायदेवीओ—अंबा, सरस्वती, त्रिपुरा अने तारा प्रमुख गुरुए उपदेशेल मंत्रोपासनावाली होय छे.

कुलदेवीओ—चंडी, चामुण्डा, कंठेश्वरी, सत्यका, सुशयना, अने व्याघ्रराजी वगेरे जाणवी.

ए बधी देवीओनी प्रतिष्ठा सरखीज होय छे. देवी प्रतिष्ठा प्रसंगे प्रतिष्ठा करावनारना घरे प्रथम ग्रह शान्तिक अने पौष्टिक कर्म करवुं, त्यार बाद प्रासाद अथवा घरमां बृहत् स्नात्रविधि वडे स्नात्र करवुं.

देवीना प्रासादे ग्रहपतिमाने लइ जइने त्यां ग्रहशान्तिक स्नात्र करवुं.

त्यार पछी पूर्वे कहेल रीति वडे भूमि शुद्ध करीने, तेमां पंचरत्न मूकीने, तेना उपर कदम्बना काष्ठनो पाटलो मूकी तेना उपर देवीनी प्रतिमा स्थापन करवी, स्थिर प्रासाददेवीप्रतिमाने कुलपीठ उपर पंचरत्न न्यासपूर्वक स्थापन करे.

त्यार बाद दरेक कुडव प्रमाण मेलवेला सर्वप्रकारना धान्य वडे देवीनी प्रतिमाने नीचेनो मन्त्र बोली वधाववी.

मंत्र—" ॐ श्री सर्वान्नपूर्णे सर्वान्ने स्वाहा "

त्यार बाद पूर्वे कहेला लक्षणवाला चार स्नात्र करनारा तैयार करवा, आचार्य पोते तथा स्नात्र करनारा वींटी, कंकण, अने दशा सहित वस्त्र धारण करी पोताना अने ते स्नात्र करनाराना अंगनी रक्षानो न्यास त्रण वार आ प्रमाणे करे—

ॐ ह्रूँ नमो ब्रह्माणि–हृदये। ॐ ह्रूँ नमो वैष्णवि–भुजयोः। ॐ ह्रूँ नमः सरस्वति–कण्ठे। ॐ ह्रूँ नमः परमभूषणे–मुखे। ॐ ह्रूँ नमः सुगन्धे–नासिकयोः। ॐ ह्रूँ नमः श्रवणे–कर्णयोः। ॐ ह्रूँ नमः सुदर्शने –नेत्रयोः। ॐ ह्रूँ नमो भ्रामरि–भ्रुवोः। ॐ ह्रूँ नमो महालक्ष्मि–भाले। ॐ ह्रूँ नमः प्रियकारिणि–शिरसि। ॐ ह्रूँ नमो भुवनस्वामिनि–शिखायाम्। ॐ ह्रूँ नमो विश्वरूपे–उदरे। ॐ ह्रूँ नमः पद्मवासे–नाभौ। ॐ ह्रूँ नमः कामेश्वरि–गुह्ये। ॐ ह्रूँ नमो विश्वोत्तमे–उर्वोः। ॐ ह्रूँ नमः स्तंभिनि–जान्वोः। ॐ ह्रूँ नमः सग-

ॐ ह्रीं नमः सर्वगामिनि–कवचम् । ॐ ह्रीं नमः परम-
मने–जघयोः। ॐ ह्रीं नमः परमपूज्ये–पादयोः। ॐ ह्रीं नमः सर्वगामिनि–कवचम्। ॐ ह्रीं नमः परम-
रौद्रि–आयुधम् ।

ए प्रमाणे गुरु पोतानो अने स्नात्र करनाराओनी अगरक्षा करे ।

त्यार बाद पचगव्यवडे नीचेनो श्लोक बोली देवीनु स्नात्र करे

विश्वस्यापि पवित्रतां भगवती प्रौढानुभावैर्निजैः, सधत्ते कुशलानुबन्धकलिता मर्त्यामरोपासिता ।
तस्या. स्नात्रमिहाधिवासनविधौ सत्पंचगव्यैः कृत, नो दोषाय महाजनागमकृतः पन्थाः प्रमाण परम् ॥१॥

त्यार बाद पुष्पांजलि ग्रहण करीने.

सर्वाशापरिपूरिणि, निजप्रभावैर्यशोभिरपि देवि ।। आराधनकर्तॄणां, कर्तय सर्वाणि दुःखानि ॥

आ श्लोक बोली पुष्पाञ्जलि नाखवी ॥१॥ फरीथी पुष्पाञ्जलि ग्रहण करीने—

यस्याः प्रौढदृढप्रभावविभवैर्वाचंयमाः संयमं, निर्दोषं परिपालयन्ति कलयन्त्यन्यत्कलाकौशलं ।
तस्यै नम्रसुरासुरेश्वरशिर.कोटीरतेजश्छटा–कोटिस्पृष्टशुभाङ्घ्रये त्रिजगतां मात्रे नमः सर्वदा ॥२॥

आ श्लोक बोली पुष्पाञ्जलिनो प्रक्षेप करवो. ॥२॥ फरी पुष्पाञ्जलि ग्रहण करीने—

न व्याधयो न विपदो न महान्तराया, नैवायशांसि न वियोगविचेष्टितानि ।
यस्याः प्रसादवशतो बहुभक्तिभाजा–माविर्भवन्ति हि कदाचन साऽस्तु लक्ष्म्यै ॥३॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि नांखे ॥३॥ फरीथी पुष्पांजलि लेइने—

दैत्यच्छेदोद्यतायां परमपरमतक्रोधबोधप्रबोध-क्रीडानिर्वीडपीडाकरणमशरणं वेगतो धारयन्त्या।
लीलाकर्पूरकीलाजनितनिजनिजक्षुत्पिपासाविनाशः, क्रव्यादामास यस्यां विजयमविरतं सेश्वरा वस्तुनोतु ॥४॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि नांखवी. ॥४॥ फरी पुष्पांजलि ग्रहण करीने—

लुलायदनुजक्षयं क्षितितले विधातुं सुखं, चकार रभसेन या सुरगणैरतिप्रार्थिता।
चकार रभसेन या सुरगणैरति प्रार्थिता, तनोतु शुभमुत्तमं भगवती प्रसादेन सा ॥५॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि चढाववी. ॥५॥ फरीथी पुष्पांजलि लेइने—

सा करोतु सुखं माता, बलिजित्तापवारिणी। प्राप्यते यत्प्रसादेन, बलिजित्तापवारिणी ॥ ६ ॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि नांखवी. ॥६॥ फरीथी पुष्पांजलि लइने—

जयन्ति देव्याः प्रभुतामतानि, निरस्तनिःसंचरतामतानि।
निराकृताः शत्रुगणाः सदैव, संप्राप्य यां मंक्षु यजे सदैव ॥ ७ ॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि चढाववी, ॥७॥ फरीथी पुष्पांजलि ग्रहण करी—

सा जयति यमनिरोधन-कर्त्री संपत्करी सुभक्तानाम्। सिद्धिर्यत्सेवायामत्यागेऽपि हि सुभक्तानाम् ॥८॥

आ श्लोक बोली पुष्पांजलि चढाववी ॥८॥

एम आठ पुष्पाञ्जलि चढाव्या पछी देवीनी आगे 'भगवतीनुं मण्डल स्थापन करवुं. तेनी विधि आ प्रमाणे छे—

प्रथम छ खुणावाळुं चक्र लखवुं, तेनी मध्यमा हजार हाथवाली अनेक प्रकारना शस्त्रने धारण करनारी, श्वेत वस्त्रधारी अने सिंह वाहनवाली भगवती देवीने चीतरी स्थापन करवी अथवा कल्पवी.

त्यार बाद छ खुणामां प्रारंभथी प्रदक्षिणाना क्रमथी आ प्रमाणे लखवुं—

ॐ ह्रूँ जम्भे नमः १। ॐ ह्रूँ जम्भिन्यै नमः २। ॐ ह्रूँ स्तम्भे नमः ३। ॐ ह्रूँ स्तंभिन्यै नमः ४। ॐ ह्रूँ मोहे नमः ५। ॐ ह्रूँ मोहिन्यै नमः ६।

त्यार बाद तेनी बहारना वलयमां आठ दलवाळुं चक्र करवुं, अने तेमां प्रदक्षिणाना क्रमे आ प्रमाणे लखवुं—

ह्रूँ श्रीं ब्रह्माण्यै नमः १। ह्रूँ श्रीं माहेश्वर्यै नमः २। ह्रूँ श्रीं कौमार्यै नमः ३। ह्रूँ श्रीं वैष्णव्यै नमः ४। ह्रूँ श्रीं वाराह्यै नमः ५। ह्रूँ श्रीं इन्द्राण्यै नमः ६। ह्रूँ श्रीं चामुण्डायै नमः ७। ह्रूँ श्रीं कालिकायै नमः ॥ ८ ॥

त्यार बाद तेनी बहारना भागमां त्रीजुं वलय करी, सोळ दळवाळुं चक्र करीने प्रदक्षिणाना क्रमथी आ प्रमाणे लखवुं—

ह्रूँ श्रीं रोहिण्यै नमः १। ह्रूँ श्रीं प्रज्ञप्त्यै नमः २। ह्रूँ श्रीं वज्रशृङ्खलायै नमः ३। ह्रूँ श्रीं वज्रांकुश्यै नमः ४। ह्रूँ श्रीं अप्रतिचक्रायै नमः ५। ह्रूँ श्रीं पुरुषदत्तायै नमः ६। ह्रूँ श्रीं काल्यै नमः ७। ह्रूँ श्रीं महाकाल्यै नमः ८। ह्रूँ श्रीं गौर्यै नमः ९। ह्रूँ श्रीं गान्धार्यै नमः १०। ह्रूँ श्रीं महाज्वालायै नमः ११।

ह्रीं श्रीं मानव्यै नमः १२। ह्रीं श्रीं वैरोट्यायै नमः १३। ह्रीं श्रीं अच्छुप्तायै नमः १४। ह्रीं श्रीं मानस्यै नमः १५। ह्रीं श्रीं महामानस्यै नमः १६।

फरीथी वलय करीने तेनी बहार चौसठ दल करीने, तेमां जमणी बाजुमा अनुक्रमे आ प्रमाणे देवीओ लखवी.

ॐ ब्रह्माण्यै नमः १। ॐ कौमार्यै नमः २। ॐ वाराह्यै नमः। ॐ शाङ्कर्यै नमः ४। ॐ इन्द्राण्यै नमः ५। ॐ कंकाल्यै नमः ६। ॐ कराल्यै नमः ७। ॐ काल्यै नमः ८। ॐ महाकाल्यै नमः ९। ॐ चामुण्डायै नमः १०। ॐ ज्वालामुख्यै नमः ११। ॐ कामाख्यायै नमः १२। ॐ कापालिन्यै नमः १३। ॐ भद्रकाल्यै नमः १४। ॐ दुर्गायै नमः १५। ॐ अंबिकायै नमः १६। ॐ ललितायै नमः १७। ॐ गौर्यै नमः १८। ॐ सुमंगलायै नमः १९। ॐ रोहिण्यै नमः २०। ॐ कपिलायै नमः २१। ॐ शूलकटायै नमः २२। ॐ कुण्डलिन्यै नमः २३। ॐ त्रिपुरायै नमः २४। ॐ कुरुकुल्लायै नमः २५। ॐ भैरव्यै नमः २६। ॐ भद्रायै नमः २७। ॐ चन्द्रावत्यै नमः २८। ॐ नारसिंह्यै नमः २९। ॐ निरञ्जनायै नमः ३०। ॐ हेमकान्त्यै नमः ३१। ॐ प्रेतासन्यै नमः ३२। ॐ ईश्वर्यै नमः ३३। ॐ माहेश्वर्यै नमः ३४। ॐ वैष्णव्यै नमः ३५। ॐ वैनायक्यै नमः ३६। ॐ यमघण्टायै नमः ३७। ॐ हरसिद्ध्यै नमः ३८। ॐ सरस्वत्यै नमः ३९। ॐ तोतलायै नमः ४०। ॐ चण्डयै नमः ४१। ॐ शङ्खिन्यै नमः ४२। ॐ पद्मिन्यै नमः ४३। ॐ चित्रिण्यै नमः ४४। ॐ शाकिन्यै नमः ४५। ॐ नारायण्यै नमः ४६। ॐ पलादिन्यै नमः ४७। ॐ यमभगिन्यै नमः ४८। ॐ

सूर्यपुत्र्यै नमः ४९ । ॐ शितलायै नमः ५० । ॐ कृष्णपाशायै नमः ५१ । ॐ रक्ताक्ष्यै नमः ५२ । ॐ काल-
रात्र्यै नमः ५३ । ॐ आकाश्यै नमः ५४ । ॐ सृष्टिन्यै नमः ५५ । ॐ जयायै नमः ५६ । ॐ विजयायै नमः
५७ । ॐ धूम्रवर्णै नमः ५८ । ॐ वेगेश्वर्यै नमः ५९ । ॐ कात्यायन्यै नमः ६० । ॐ अग्निहोत्र्यै नमः ६१ ।
ॐ चक्रेश्वर्यै नमः ६२ । ॐ महाम्बिकायै नमः ६३ । ॐ ईश्वरायै नमः ६४ ।

फरीथी तेनी फरतु वलय करीने बावन दल करीने तेमा अनुक्रमे जमणी बाजुथी आरभीने आ प्रमाणे देवो स्थापवा—

ॐ क्रौं क्षेत्रपालाय नमः १। ॐ क्रो कपिलाय नमः २। ॐ क्रौं बटुकाय नमः ३। ॐ क्रो नारसिंहाय नमः
४। ॐ क्रौं गोपालाय नमः ५। ॐ क्रौं भैरवाय नमः ६। ॐ क्रौं गरुडाय नमः ७। ॐ क्रौं रक्तसुवर्णाय नमः
८। ॐ क्रो देवसेनाय नमः ९। ॐ क्रौं रुद्राय नमः १०। ॐ क्रो वरुणाय नमः ११। ॐ क्रौं भद्राय नमः १२।
ॐ क्रो वज्राय नमः १३। ॐ क्रो वज्रजंघाय नमः १४। ॐ क्रो स्कन्दाय नमः १५। ॐ क्रौं कुरवे नमः १६।
ॐ क्रौं प्रियकराय नमः १७। ॐ क्रौं प्रियमित्राय नमः १८। ॐ क्रौं वह्नये नमः १९। ॐ क्रौं कंदर्पाय नमः २०।
ॐ क्रौं हंसाय नमः २१। ॐ क्रो एकजंघाय नमः २२। ॐ क्रौं घंटापथाय नमः २३। ॐ क्रौं दजकाय नमः २४।
ॐ क्रो कालाय नमः २५। ॐ क्रो महाकालाय नमः २६। ॐ क्रौं मेघनादाय नमः २७। ॐ क्रौं भीमाय नमः
२८। ॐ क्रो महाभीमाय नमः २९। ॐ क्रौं तुगभद्राय नमः ३०। ॐ क्रौं विद्याधराय नमः ३१। ॐ क्रौं वसुमि-
त्राय नमः ३२। ॐ क्रो विश्वसेनाय नमः ३३। ॐ क्रो नागाय नमः ३४। ॐ क्रौं नागहस्ताय नमः ३५।

ॐ क्रौं प्रद्युम्नाय नमः ३६। ॐ क्रौं कंपिल्लाय नमः ३७। ॐ क्रौं नकुलाय नमः ३८। ॐ क्रौं आह्लादाय नमः ३९। ॐ क्रौं त्रिमुखाय नमः ४०। ॐ क्रौं पिशाचाय नमः ४१। ॐ क्रौं भूतभैरवाय नमः ४२। ॐ क्रौं महापिशाचाय नमः ४३। ॐ क्रौं कालमुखाय नमः ४४। ॐ क्रौं शुनकाय नमः ४५। ॐ क्रौं अस्थिमुखाय नमः ४६। ॐ क्रौं रेतोवेधाय नमः ४७। ॐ क्रौं स्मशानचाराय नमः ४८। ॐ क्रौं केलिकलाय नमः ४९। ॐ क्रौं भृंगाय नमः ५०। ॐ क्रौं कंटकाय नमः ५१। ॐ क्रौं विभीषणाय नमः ५२।

फरीथी वलय करी तेमां अष्टदलो करवां, अने जमणी बाजुना क्रमे करीने त्यां आ प्रमाणे देवो स्थापवाः—

ह्रूँ श्रीँ भैरवाय नमः १। ह्रूँ श्रीँ महाभैरवाय नमः २। ह्रूँ श्रीँ चण्डभैरवाय नमः ३। ह्रूँ श्रीँ रुद्रभैरवाय नमः ४। ह्रूँ श्रीँ कपालभैरवाय नमः ५। ह्रूँ श्रीँ आनन्दभैरवाय नमः ६। ह्रूँ श्रीँ कंकालभैरवाय नमः ७। ह्रूँ श्रीँ भैरवभैरवाय नमः ८।

फरीथी तेना उपर वलय करीने—

"ॐ ह्रूँ श्रीँ सर्वाभ्यो देवीभ्यः सर्वस्थाननिवासिनीभ्यः सर्वविघ्नविनाशिनीभ्यः सर्वदिव्यधारिणीभ्यः सर्वशास्त्रकरीभ्यः सर्ववर्णाभ्यः सर्वमंत्रमयीभ्यः सर्वतेजोमयीभ्यः सर्वविद्यामयीभ्यः सर्वमंत्राक्षरमयीभ्यः सर्वर्द्धिदाभ्यः सर्वसिद्धिदाभ्यो भगवत्यः पूजां प्रतिच्छन्तु स्वाहा।"

आ प्रमाणे उपरना मंत्राक्षरो वलय आकारे लखवा, तेनी उपर फरीथी वलय करी दश दल करी जमणी बाजुना क्रमे आ

प्रमाणे दश दिक्पाल स्थापन करना,—

ॐ इन्द्राय नमः १। ॐ अग्नये नमः २। ॐ यमाय नमः ३। ॐ निर्ऋतये नमः ४। ॐ वरुणाय नमः ५। ॐ वायवे नमः ६। ॐ कुवेराय नमः ७। ॐ ईशानाय नमः ८। ॐ ब्रह्मणे नमः ९। ॐ नागेभ्यो नमः १०।

फरीथी वलय करीने दश दल करीने तेमा जमणी बाजुना क्रमे आ प्रमाणे ग्रहादिक स्थापवा—

ॐ आदित्याय नमः १। ॐ चन्द्राय नमः २। ॐ मंगलाय नमः ३। ॐ बुधाय नमः ४। ॐ गुरवे नमः ५। ॐ शुक्राय नमः ६। ॐ शनैश्चराय नमः ७। ॐ राहवे नमः ८। ॐ केतवे नमः ९। ॐ क्षेत्रपालाय नमः १०।

त्यार पछी तेनी बहारना भागमा चार खुणावालु भूमिपर करवु, तेना ईशान खुणामा गणपति, पूर्व दिशामा अम्बा, अग्नि खुणामा कार्तिकेय, दक्षिण दिशामा यमुना, नैर्ऋत्य खुणामा क्षेत्रपाल, पश्चिम दिशामा महाभैरव, वायव्य खुणामा गुरु, अने उत्तर दिशामा गंगानुं स्थापन करवुं, ए प्रमाणे भगवती मंडलनुं स्थापन करी पूजन करवुं,

ॐ ह्रीं नमः अमुकदेव्यै, अमुकभैरवाय, अमुकवीराय, अमुकयोगिन्यै, अमुकदिक्पालाय, अमुकग्रहाय, एव भगवन्! अमुक! अमुके! आगच्छ आगच्छ, इदमर्घ्यं पाद्यं, बलिं, चरुं, आचमनीयं, गृहाण गृहाण सन्निहिता भव भव स्वाहा, जलं गृहाण गृहाण, गंध पुष्प, अक्षतान्, फलं, मुद्रां, धूपं, दीपं, नैवेद्यं, गृहाण गृहाण सर्वोपचारान् गृहाण गृहाण, शान्ति कुरु कुरु तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं सर्वसमिहितं कुरु कुरु स्वाहा।

आ मंत्र वडे प्रत्येक देवदेवीनी अनुक्रमे सर्व वस्तुओ तथा सर्व उपचारो वडे पूजा करवी, अने त्रण खुणावाला कुंडने

विषे घी, मध, अने गूगल वडे तेटली संख्यामां होम करवो, होमनो मंत्र आ प्रमाणे छे—

ॐ राँ अमुको देवः देवी वा संतर्पिताऽस्तु स्वाहा।

ए प्रमाणे विधि करीने देवी प्रतिमाने दशियावड वस्त्र वडे आच्छादन करे, अने उपर चंदन, अक्षत, अने फूल वडे पूजन करे, जिनमतमां देवी प्रतिष्ठामां वेदी कराती नथी. ते पछी लग्नवेला प्राप्त थाय त्यारे गुरु एकान्ते प्रतिष्ठा करे.

देवी प्रतिष्ठामां १ चंदन, २ केशर, ३ कंकाल, ४ कपूर, ५ विष्णुक्रान्ता, ६ शतावरी, ७ वालो, ८ दूर्वा (ध्रो), ९ प्रियंगु (घउंला), १० उशीर (सुगंधीवालो), ११ तगर, १२ सहदेवी, १३ कुष्ठ (कूठ), १४ कचूरो, १५ जटामांसी, १६ शैलेय (शिलारस), १७ कसुंबो, १८ लोध्र, १९ बला, २० तज, २१ कदंब, २२ उदुंबर, २३ पींपलो, २४ वड, अने २५ आम्र ए पचीस वस्तुमय वासक्षेप तैयार करवो.

सौभाग्य मुद्रावडे प्रस्तुत देवीना मंत्रथी वासक्षेप मंत्रित करवो, त्यार बाद वासक्षेप करवो, प्रथम देवीना मंत्रपाठ पूर्वक तेना सर्व अंगोमां माया बीजनुं स्थापन करवुं, पछी वस्त्र दूर करी सर्वजन समक्ष गन्ध अने अक्षतादि वडे पूजा करवी, त्यार बाद भगवतीने स्नात्र करवुं.

प्रथम दूधनो कलश ग्रहण करीने—

"क्षीराम्बुधेः सुराधीशै-रानीतं क्षीरमुत्तमम्। अस्मिन् भगवतीस्नात्रे, दुरितानि निकृन्ततु ॥१॥

दहीनो कलश ग्रहण करीने—

घन घनबलाचार, स्नेहपीवरमुज्वलम् । सदधातु दधिश्रेष्ठ, देवीस्नात्रे सतां सुखम् ॥२॥
फरी घीनो कलश ग्रहण करीने—
स्नेहेषु मुख्यमायुष्य, पवित्र पापतापहृत् । घृत भगवतीस्नात्रे, भूयादमृतमञ्जसा ॥३॥
फरी मधनो कलश ग्रहण करीने—
सर्वौषधिरस सर्व-रोगहृत्सर्वरञ्जनम् । क्षौद्रं क्षुद्रोपद्रवाणां, हन्तु देव्याभिषेचनात् ॥४॥
त्यार पछी सर्वौषधि मिश्रित जलनो कलश ग्रहण करीने—
सर्वौषधिमय नीर, नीर सद्गुणसंयुतम् । भगवत्यभिषेकेऽस्मिन्नुपयुक्तं श्रियेऽस्तु नः ॥५॥
आ श्लोक बोलीने अभिषेक करे, त्यार बाद जटामासीनु चूर्ण लेइने—
सुगन्ध रोगशमन, सौभाग्यगुणकारणम् । इह प्रशस्त मांस्यास्तु, मार्जन हन्तु दुष्कृतम् ॥६॥
आ श्लोक बोलीने मार्जन करे, पछी चन्दननु चूर्ण लेइने—
शीतल शुभ्रममल, वृततापरजोहरम् । निहन्तु सर्वप्रत्यूहं, चन्दनेनाङ्गमार्जनम् ॥७॥
आ श्लोक बोली अंगे मार्जन करे, पछी केसरनुं चूर्ण लेइने—
काश्मीरजन्मजैश्चूर्णै,: स्वभावेन सुगन्धिभिः । प्रमार्जयाम्यह देव्याः, प्रतिमां विघ्नहानये ॥८॥
आ प्रमाणे पाच स्नात्र अने त्रण मार्जन करीने देवीनी पासे स्त्रीओने उचित सर्व वस्त्र, भूषण, गंध, माला अने मंडल

करनार वस्तुओ तथा नैवेद्य पण बहु प्रकारनां मूके. त्यार बाद प्रतिष्ठा पूर्ण थाय त्यारे मंडलनुं विसर्जन नंद्यावर्तना विसर्जननी जेम करे. त्यार पछी कन्यानुं पूजन, गुरुओने दान, महोत्सव अने संघ-पूजा महाप्रतिष्ठानी पेठे करे.

आ प्रतिष्ठा प्रासाद देवी, संप्रदाय देवी अने कुलदेवी त्रणेनी जाणवी. तेनुं पूजन. गुरु, आगम के कुलाचारथी जाणवुं, ग्रन्थ विस्तारना भयथी अने आगम प्रकट करवा योग्य नहि होवाथी अहीं बताव्युं नथी.

ए संबन्धे कहेवामां आव्युं छे के-आ आगमनुं रहस्य छे, अने ते प्रयत्नथी गुप्त राखवुं. कारण के गुप्त राखवाथी सिद्धि थाय छे, अने प्रकट करवाथी सिद्धिनो संशय छे.

तथा सर्व देवोनी प्रतिष्ठा ते ते कल्पमां कहेला अथवा गुरुए उपदेशेला ते ते देवीना मंत्र वडे करवी. बाकीनुं बधुं कार्य सर्व देवीनी प्रतिष्ठामां सरखुं जाणवुं. जे देवीओ अप्रसिद्ध होवाथी तेनो कल्प जणातो न होय अथवा गुरुना उपदेशना अभावथी तेना नामनो मंत्र न कहेलो होय त्यां ते देवीओनी प्रतिष्ठा अम्बा देवी के चण्डी देवी के त्रिपुरा देवीना मंत्र वडे करवी.

अहीं देवी प्रतिष्ठामां शासनदेवी, गच्छदेवी. कुलदेवी, नगरदेवी, भुवनदेवी, क्षेत्रदेवी, अने दुर्गा देवी, ए बधी देवीओनो प्रतिष्ठाविधि एक ज छे,

॥ इति देवीप्रतिष्ठाविधिः ॥



२० विविधवस्त्वधिवासना—

नानावस्तुगणस्याधि-वासनाविधिरल्पकः। उद्धृत्याचारसूर्याख्य-ग्रन्थादत्र निवेशितः ॥१८१॥

भा०टी०—अनेक पदार्थोनी थोडीक अधिवासना विधि आचारदिनकरथी उद्धरीनें परिच्छेदमा दाखल करेल छे

कोइ पण सजीव अजीव वस्तुनो स्वीकार करता, अमुक मंत्र पूर्वक वासक्षेप द्वारा, अभिषेक द्वारा अथवा हस्तन्यास द्वारा तेने पवित्र करवी तेनुं नाम अधिवासना छे

जे जे पदार्थनी प्रतिष्ठा विहित छे, ते सर्वनी अधिवासना अवश्य विहित छे ज, पण जे पदार्थोनी प्रतिष्ठा थती नथी तेमनी पण अधिवासना थाय छे विधिकारोनी ज्ञानवृद्धि निमित्ते अमो नीचे केटलाक एवा पदार्थोनी अधिवासना विधि आपीये छीये के जेमनी प्रतिष्ठा विहित नथी छता अधिवासना विधेय छे

१ पूजाभूमिनी अधिवासना—

ॐ लल, पवित्रतायां मंत्रैक-भूमौ सर्वसुरासुरा. । आयान्तु पूजा गृह्णन्तु, यच्छन्तु च समीहितम् ॥१॥

२ शयन भूमिनी अधिवासना—

ॐ लल, समाधि सद्गतिकरी, सर्वविघ्नापहारिणी। सर्वेशदेवताऽत्रैव, भूमौ तिष्ठतु निश्चला ॥२॥

३ वेसवानी भूमिनी अधिवासना—

ॐ लल, शेषमस्तकसदिष्टा, स्थिरा सुस्थिरमंगला। निवेशभूमावत्राऽस्तु, देवतास्थिरसंस्थितिः ॥३॥

४ विहारभूमिनी अधिवासना—

ॐ लल, पदे पदे निधानानां, खनीनामपि दर्शनम्। करोतु प्रीतहृदया, देवी विश्वंभरा मम ॥४॥

५ क्षेत्रभूमिनी अधिवासना—

ॐ लल, समस्तरम्यवृक्षाणां, धान्यानां सर्वसम्पदाम्। निदानमस्तु मे क्षेत्र-भूमिः संप्रीतमानसा ॥५॥

६ सर्व कार्योपयोगि सर्व भूमिनी अधिवासना—

ॐ लल, यत्कार्यमत्र मत्रैक-भूमौ संपादयामि च। तच्छीघ्रं सिद्धिमायातु, सुप्रसन्नाऽस्तु मे क्षितिः ॥६॥

७ जलनी अधिवासना—

ॐ वव, जलं निजोपकाराय, परोपकृतयेऽथवा। पूजार्थायाऽथ गृह्णामि, भद्रमस्तु न पातकम् ॥७॥

८ अग्निनी अधिवासना—

ॐ रं। धर्मार्थकार्यहोमाय, स्वदेहार्थाय वाऽनलम्। संधुक्षयामि न पापं, फलमस्तु ममेप्सितम् ॥८॥

९ चूलानी अधिवासना —

ॐ रं। अग्न्यगारमिदं शान्तं, भूयाद्विघ्नविनाशनम्। तद्युक्तिपाकेनाऽन्नेन, पूजिताः सन्तु साधवः ॥९॥

१० सिघडीनी अधिवासना—

ॐ रं। सर्वदेवेष्टदानस्य, सर्वतेजोमयस्य च। आधारभूता शकटी, चाऽरस्तु ममाहिता ॥१०॥

११ वस्त्राधिवासना—
ॐ श्री । चतुर्विधमिदं वस्त्रं, श्रीनिवाससुखाकरम् । वस्त्रं देवधृत भूयात्, सर्वसंपत्तिदायकम् ॥११॥
१२ भूषणोनी अधिवासना—
ॐ श्री । मुकुटाङ्गदहाराधं-हाराः कटकनूपुरे । सर्वभूषणसंघातः, श्रियेऽस्तु वपुषा धृतः ॥१२॥
१३ पुष्पमालानी अधिवासना—
ॐ श्री । सर्वदेवस्य सतृप्ति-हेतुर्माल्य सुगंधि च । पूजाशेषं धारयामि, स्वदेहेन त्वदर्चना ॥१३॥
१४ सुगंधाधिवासना—
ॐ ल्रं । कर्पूरागुरुकस्तुरी-श्रीगंडशशिसंयुत । गंधपूजाविशेषो मे, मंडनाय सुखाय च ॥१४॥
१५ तम्बोलनी अधिवासना—
ॐ श्री । नागवल्लीदलैः पूग-कस्तुरी वर्णमिश्रितैः । ताम्बूलं मे समस्तानि, दुरितानि निकृन्ततु ॥१५॥
१६ चन्द्रवानी अने छत्रनी अधिवासना—
ॐ श्री ह्रीं । मुक्ताजालसमाकीर्णं, छत्र राज्यश्रियः समम् । श्वेत विविधवर्णं वा, दद्याद् राज्यश्रियं स्थिराम् ॥१६॥
१७ शयनासन-सिंहासन आदिनी अधिवासना—
ॐ ह्रीं लल । इदं शय्यासन सर्वं, रचित कनकादिभिः । वस्त्रादिभिर्वा काष्ठाद्यैः, सर्वसौख्य करोतु मे ॥१७॥

१८ हाथी घोडाना पलाणनी अधिवासना—

ॐ स्थौं स्थौं । सर्वावष्टम्भजननं, सर्वासनसुखप्रदम् । पर्याणं वर्यमत्राऽस्तु, शरीरस्य सुखावहम् ॥१८॥

१९ पगरखानी अधिवासना—

ॐ सः । काष्ठचर्ममयं पाद–त्राणं सर्वाङ्गिरक्षणम् । नयताद् मां पूर्णकाम–कारिणीं भूमिमुत्तमाम् ॥१९॥

२० सर्व वासण वर्तनोनी अधिवासना—

ॐ क्रां । स्वर्णरूप्यताम्रकांस्य–काष्ठमृच्चर्मभाजनम् । पानान्नहेतुः सर्वाणि, वांछितानि प्रयच्छतु ॥२०॥

२१ सर्व औषधोनी अधिवासना—

ॐ सुधा सुधा । धन्वन्तरिश्च नासत्यौ मुनयोऽत्रिपुरःसराः । अत्रौषधस्य ग्रहणे निघ्नन्तु सकला रुजः ॥२१॥

२२ मणिरत्नोनी अधिवासना—

ॐ वं हंसः । मणयो वारिधिभवा, भूमिभागसमुद्भवाः । देहि देहभवाः संतु, प्रभावाद्वाञ्छितप्रदाः ॥२२॥

२३ दीपकनी अधिवासना—

ॐ जय जय । सूर्यचन्द्रश्रेणिगतः सर्वपापतमोपहः । दीपो मे विघ्नसंघातं, निहन्यान्नित्यपार्वणः ॥२३॥

२४ भोजननी अधिवासना—

ॐ हन्तु हन्तु । पूजादेवबलेः शेषं, शेषं च गुरुदानतः । भोजनं मम तृप्त्यर्थं तुष्टिं पुष्टिं करोतु च ॥२४॥

२५ भाण्डागाराधिवासना—ॐ श्री महालक्ष्म्यै नमः। कोष्ठागाराधिवासना—ॐ अन्नपूर्णायै नमः ॥२५॥

२६ पुस्तकनी अधिवासना—

ॐ ऐं। सारस्वतमहाकोष-निलयं चक्षुरुत्तमम्। श्रुताधारं पुस्तकं मे, मोहध्वान्तं निकृन्ततु ॥२६॥

२७ जपमालानी अधिवासना—

ॐ ह्रीं। रत्नैः सुवर्णैर्बीजैर्वा, रचिता जपमालिका। सर्वजापेषु सर्वाणि, वाञ्छितानि प्रयच्छतु ॥२७॥

२८ वाहननी अधिवासना—

ॐ यां यां। तुरङ्गहस्तिशकट-रथमर्त्यौढवाहनम्। गमने सर्वदुःखानि, हत्वा सौख्यं प्रयच्छतु ॥२८॥

२९ सर्व शस्त्रोनी अधिवासना—

ॐ द्रां द्रीं द्रूं। अमुक्तं चैव मुक्तं च, सर्वं शस्त्र सुतेजितम्। हस्तस्थं शत्रुघाताय, भूयान्मे रक्षणाय च ॥२९॥

३० कवचनी अधिवासना—

ॐ रक्ष रक्ष। लोहचर्ममयो दंशो, वज्रमन्त्रेण निर्मितः। पततोऽपि हि वज्रान्मे, सदा रक्षां प्रयच्छतु ॥३०॥

३१ पाखरनी अधिवासना—

ॐ रक्ष रक्ष। तुरङ्गस्यास्यरक्षार्थं प्रक्षरं धारितं सदा। कुर्यात् पोषं स्वपक्षीये, परपक्षे च खंडनम् ॥३१॥

३२ ढालनी अधिवासना—

ॐ रक्ष रक्ष । सर्वोपनाहसहितः, सर्वशस्त्राऽपवारणः । स्फरः स्फुरतु मे युद्धे, शत्रुवर्गक्षयंकरः ॥३२॥

३३ गाय भेंरा बलदनी अधिवासना—

ॐ घन घन । गावो नानाविधैर्वर्णैः, श्यामला महिषीगणाः । वृषभाः सर्वसंपत्तिं, कुर्वन्तु मम सर्वदा ॥३३॥

३४ घरना उपकरणोनी अधिवासना—

ॐ श्री । गृहोपकरणं सर्वं, स्थाली घट उदू(लू)खलम् । स्थिरं चरं वा सर्वत्र, सौख्यानि कुरुतात् गृहे ॥३४॥

३५ खरीदवानी वस्तुनी अधिवासना—

ॐ श्री । गृह्यमाणं मया सर्वं, क्रेयवस्तु निरन्तरम् । सदैव लाभदं भूयात्, स्थिरं सुखदमेव च ॥३५॥

३६ वेचवानी वस्तुनी अधिवासना—

ॐ श्री । एतद्वस्तु च विक्रेयं, विक्रीणामि यदञ्जसा । तत्सर्वं सर्वसम्पत्तिं, भाविकाले प्रयच्छतु ॥३६॥

३७ सर्व भोग्य उपकरणनी अधिवासना—

ॐ खं ग्वं । सर्वभोग्योपकरणं, सजीवं जीववर्जितम् । तत्सर्वं सुखदं भूयाद्, माभूत्पापं तदाश्रयम् ॥३७॥

३८ चामरोनी अधिवासना—

ॐ चं चं । गोपुच्छसंभवं हृद्यं, पवित्रं चामरद्वयम् । राज्याश्रयं स्थिरीकृत्य, वाञ्छितानि प्रयच्छतु ॥३८॥

३९ सर्व वाजाओनी अधिवासना—

ॐ वद्वद् । सुषिरं च तथाऽऽनद्धं, तत घनममन्वितम् । वाद्य प्रौढेन शब्देन, रिपुचक्रं निकृन्ततु ॥३९॥

४० उपर जणावेल सिवायनी सर्व वस्तुओनी अधिवासना—

ॐ श्री आत्मा । सर्वाणि यानि वस्तूनि, मम यान्त्युपयोगिताम् ।

तानि सर्वाणि सौभाग्य, यच्छन्तु विपुलां श्रियम् ॥ ४० ॥

जे जे वस्तुओनी अधिवासना पूर्वोक्त मंत्रोथी नथी थती ते सर्वनी उपर्युक्त मन्त्रवडे करी शकाय छे.

अधिवासना माटे सामान्य प्रकारे शुभ दिवस अने चन्द्रबल जोवु. ए सिवाय विशेष विधिनी अनुकूलता अथवा अवकाश न होय तो नीचेनुं पद्य भणीने सर्व देव, देवी, कळश, ध्वजादिनी स्थापना करी देवी

भद्रं कुरुष्व परिपालय सर्वदा, विघ्नं हरस्व विपुलां कमलां प्रयच्छ ।

जैवातृकार्कसुरसिद्धजलानि यावत्, स्थैर्यं भजस्व वितनुष्व समीहितानि ॥४१॥

स्थापनीय वस्तुनी स्थापना करी उपरनु पद्य भणी वासक्षेप करवो अने स्थापितने प्रणाम करवा

इति विविधवस्त्वधिवासनाविधिः



प्रकीर्णक प्रतिष्ठा—

गृह–तडाग–देवादि–प्रतिष्ठानां समुच्चयः। आचारार्कात् समुद्धृत्य, संग्रहेऽत्र निवेशितः ॥१८२॥

भा०टी०—घर, तलाव, चतुर्निकायना देवो आदिनी प्रतिष्ठाविधिओनो संग्रह आचारदिनकरना आधारे आ परिच्छेदमां दाखल कर्यो छे.

(१) गृहप्रतिष्ठा विधिः—

सूत्रधारे शास्त्रानुसारे बनावेल घर, राजमहेल, सामान्य घर आ बधानी प्रतिष्ठा विधि सरखीज होय छे.

प्रथम ते प्रतिष्ठाप्य घरमां जिनबिम्ब लावी बृहत्स्नात्रविधिथी स्नात्र भणाववी, ते जल घरमां बधे छांटवुं, ते पछी बहारना मुख्य दरवाजाना उंबराने अने उत्तरंगने निर्मल जले धोइ उम्बरा उपर ॐ कार अने उत्तरंग उपर "ह्रीँ" कार लखवां, ते पछी "ॐ ह्रीँ देहल्यै नमः। ॐ ह्रीँ द्वारश्रियै नमः। आ मंत्रोवडे त्रण त्रण वार वासक्षेप करीने बंनेनी प्रतिष्ठा करवी.

बहारथी डाबा हाथ तरफनी शाखा उपर 'ॐ गंगायै नमः' जमणा हाथनी शाखा उपर "ॐ यमुनायै नमः" आ मंत्रो बोलीने जल, गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीपक, नैवेद्य चढाववा पूर्वक ३ ३ वार वासक्षेप करीने प्रत्येक द्वारांगनी प्रतिष्ठा करवी.

ते पछी द्वारमां प्रवेश करी बधी भींतोनी "ॐ अं अपचारिण्यै नमः" आ मंत्रवडे ३ ३ वार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठा करवी.

ते पछी शालाओना द्वारोनी उपर्युक्त द्वार प्रतिष्ठा विधिथी प्रतिष्ठा करवी.

प्रत्येक थाभलाने पचामृत छाटी " ॐ श्रीँ शेषाय नमः।" आ मंत्रे वासक्षेप करी प्रतिष्ठा करवी.

पछी मध्यनी शालाओना द्वारो, महास्ना स्तंभो अने भींतोनी पूर्वोक्त विधिथी प्रतिष्ठा करीने तेमना मध्यमा नीचेनी भूमिनी ' ॐ लँ ' मध्यदेवताये नमः। आ मंत्रवडे ३ वार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठा करवी.

ते पछी ओरडाओमा " ॐ ऑ श्री गर्भश्रियै नमः। आ मन्त्रद्वारा ३ ३ वार वासक्षेप करी ते प्रतिष्ठित करवा. ओरडाओना द्वारो, भींतो, स्तभोनी प्रतिष्ठा पूर्वे कह्या प्रमाणे करवी.

ते पछी रसोडानी " ॐ श्रीँ अन्नपूर्णाये नमः।

भण्डारघरमा—" ॐ श्रीँ महालक्ष्म्यै नमः।

शयन घरमा— ॐ शो संवेशिन्यै नमः।

उपरनी मर्व भूमिओमा—ॐ ओ क्रोँ किरीटिन्यै नमः।"

कोठारमा—ॐ श्री अन्नपूर्णाये नमः।

जलघरमा—ॐ व वरुणाय नमः।

देव पूजा घरमा—ॐ ह्रीँ नमः।

हस्तिशालामा— ॐ श्रोँ श्रियै नमः।

अश्वशालामा—ॐ रे रेवताय नमः।

गाय भेंस बकरी वृषभ वाधनाना स्थानमा— ॐ ह्रीँ अडनडि किलिकिलि स्वाहा।"

सभास्थानमा—ॐ सुखमण्डन्यै नमः।"

आ बधा स्थानोमा जणावेल मन्त्रोवडे पच्चीस वस्तुओनो बनेलो वासक्षेप नाखीने बधानी प्रतिष्ठा करवी आ बधाना द्वारोनी द्वारविधिथी, स्तभोनी स्तभविधिथी अने भींतोनी भित्तिविधिथी प्रतिष्ठा करवी. अने पछी आगणामा आवी कलश

प्रतिष्ठा प्रसंगे जणावेल विधिथी दिक्पालोनुं आह्वान करी शान्ति बलि देवी, अने त्यां शान्तिक पौष्टिक करवुं. पोताना गुरुनो अन्न वस्त्र वडे अने पोतानी ज्ञातिनो भोजन ताम्बूल वडे सत्कार करवो.

हाटनी प्रतिष्ठामां—ॐ श्रीँ वाञ्छितदायिन्यै नमः। मठनी प्रतिष्ठामां—ॐ ऐँ वाग्वादिन्यै नमः।

तापसोना झूंपडाओनी प्रतिष्ठामां—ॐ ह्रीं क्ष्लूं सर्वायै नमः। धातु घडवानी शालामां,—ॐ भूतधात्र्यै नमः।

घासचाराना मकानमां ॐ शों शान्तायै नमः। भोजनशालाना मकानमां "ॐ श्रीँ अन्नपूर्णायै नमः।

जलप्रपाना मकानमां "ॐ वं वरुणाय नमः। होम शालामां—"ॐ रं अग्नये नमः।

आ सामे लखेल मंत्र वडे ३ ३ वार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठा करवी अने आ बधा स्थानोना द्वारो, छातो, स्तंभो, भींतोनी प्रतिष्ठा द्वार आदिनी उक्त प्रतिष्ठा विधि प्रमाणे करवी.

नीच जातिना घरोनी प्रतिष्ठा विधि अहीं जणावी नथी, केम के तेओनुं प्रतिष्ठा विधान ब्राह्मणादि विधिकारो करावता नथी.

(२) जिनबिम्ब–परिकर प्रतिष्ठाविधिः—

परिकर जो जिनबिम्बनी साथे होयतो बिम्बप्रतिष्ठामां तेनी वासक्षेप मात्रथीज प्रतिष्ठा थइ जाय छे, पण परिकर जो जुदु होय तो तेनी प्रतिष्ठा पण जुदी कराय छे. परिकरनो आकार नीचे लखेल प्रकारनो होय छे.

बिम्बने नीचे हाथी सिंह अने कीचना रूपकोथी युक्त सिंहासन होय छे, बीजा मत प्रमाणे सिंहासनना मध्यभागे बे हरिणोना तोरणाकारने नीचे धर्मचक्र होय छे. अने तेनी बंने बाजुना भागोमां ग्रहोनी मूर्तियो होय छे. जिन बिंबना बन्ने पडखे

चमरधरो, तेमनी वहार ने अजलि हस्त मनुष्यो, बिम्बना मस्तक उपर त्रण छत्रो, तेनी बन्ने बाजुना भागोमा जेमणे शुंडोमा सुवर्णना कलशो पकडेला छे एवा बे श्वेत हाथी, हाथीओ उपर झाझ वगाडता पुरुषो, तेमनी उपर माल्याधरो तेमनी उपर शंख वगाडनारा अने तेनी उपर कलश

उपर लख्या प्रमाणे परिकर तैयार थाय त्यारे बिम्बप्रतिष्ठोचित मुहूर्त जोवरावी, भूमिशोधन, अमारी घोषणा, संघ आमंत्रण पूर्वक प्रतिष्ठा विधि प्रमाणे परिकरनी प्रतिष्ठा विधि करवी

परिकर प्रतिष्ठा लगभग कलश प्रतिष्ठाने मलती छे. परिकरना अभिषेको जिनबिंबना स्नात्रजल वडे करवा अभिषेक करी परिकरने कलशनी जेम सुगन्धी पदार्थो वडे पूजवो, सात धान्योवडे वधाववो, बे आंगलिओ उंची करी तर्जनी मुद्राए अने क्रूर दृष्टिए डावा हाथमा जल चुल्लुक भरी परिकर उपर जल आछोटवुं, अने अक्षतभृत पात्र भेट करवु, ते पछी—

" ॐ ह्रीं श्रीं जयन्तु जिनोपासका सकला भवन्तु स्वाहा ।"

आ मंत्र त्रण वार भणी गंध, अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, नैवेद्य वडे परिकरने अधिवासित करी दशियावड वस्त्र ओढाडवुं.

ए पछी जे जिननु परिकर होय ते जिननु चैत्यवन्दन करी ४ स्तुतिथी देववंदन करवु चोथी स्तुति कह्या पछी सिद्धाणं बुद्धाणं कही श्रीशान्तिनाथ आराधनार्थं करेमि काउस० वंदण० अन्नत्थ० १ लो० नमो० स्तुति—

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश–मुकुटाभ्यर्चितांघ्रये ॥४॥

श्रुत देवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

वद वदति न वाग्वादिनि !, भगवति! कः श्रुतसरस्वति गमेच्छुः । रङ्गत्तरङ्गमतिवर-तरणिस्तुभ्यं नम इतीह ॥५॥

शान्तिदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि । संपादितहितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥६॥

क्षेत्रदेवतायै करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥७॥

भवनदेवतायै करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्यं स्वाध्यायसंयमरतानाम् । विदधातु भवनदेवी, शिवं सदा सर्वसाधूनाम् ॥८॥

शासनदेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

या पाति शासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साऽभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥९॥

श्रीअम्बादेव्यै करेमि काउ० अन्नत्थ० १ नो० नमो० स्तुति—

अम्बा बालांकितांकासौ, सौख्यख्यातिं ददातु नः । माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥१०॥

समस्तवेआवच्चगराणं संति० सम्मदिट्ठि० अन्नत्थ० १ नो० नमोऽर्हत् स्तुति-

सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्यकराः सुराः । क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥११॥

प्रतिष्ठादेवतायै करेमि का० अन्नत्थ० १ लो० नमो० स्तुति—

यदधिष्ठिता' प्रतिष्ठाः, सर्वा' सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । जिनपरिवार सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥१२॥

१ नोकार गणी नेसी नमुत्थुणं० जावंति चेइआइ० नमो० स्तवन–

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंतसिद्धायरिय उवज्झाय। वरसव्वसाहुमुणिसघ–धम्मतित्थप्पवयणस्स ॥१॥
सप्पणवं नमो तह, भगवईइ सुअदेवयाए सुहयाए । सिवसतिदेवयाण सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥
इदागणिजमनेरइअ–वरुणवाउकुवेर ईसाणा । बभो नागुत्ति दसण्ह-मविअ सुदिसाण पालाणम् ॥३॥
सोमयमवरुणवेसमण–वासवाण तहेव पंचण्ह । तह लोगपालयाणं, सूराइगहाणय णवण्हं ॥४॥
साहतस्ससमक्ख मज्झमिण चेव धम्मणुट्ठाण । सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइ नवकारओ घणिअ ॥५॥

ए पछी परिकरने आडो पडदो नाखी जदरथी सर्वजणने दूर करी लग्ननो शुभ समय आवता नीचेना मंत्रो बोली परिकरना ते ते अगो उपर त्रण त्रण वार सूरिमंत्राभिमंत्रित वासक्षेप करवो–

ॐ ह्रीँ श्री अप्रतिचक्रे धर्मचक्राय नमः । आ मंत्रथी धर्मचक्र उपर

ॐ घृणि चन्द्रा ऐं क्ष्रौ ठ ठः क्षाँ क्ष्रीं सर्वग्रहेभ्यो नमः । आ मत्रथी ग्रहो उपर

ॐ ह्रीँ श्री आधारशक्तिकमलासनाय नमः । आ मंत्रथी सिंहासन उपर.

ॐ ह्रीँ श्री अर्हद्रक्तेभ्यो नमः । आ मत्रथी हाथ जोडेल उभेला मनुष्यो उपर

ॐ ह्रीँ च चामरकरेभ्यो नमः । आ मंत्रद्वारा चमरधो उपर

ॐ ह्रीँ विमलवाहनाय नमः । आ मंत्रवडे बे हाथीओ उपर.

ॐ ह्रीँ पुष्पकरेभ्यो नमः । आ मंत्रथी बे मालाधरो उपर.

ॐ श्रीँ शंखधराय नमः । आ मंत्रथी शंखधरो उपर. अने—

ॐ पूर्ण कलशाय नमः । आ मंत्रथी कलश उपर

प्रत्येकने ३–३ वार वासक्षेप करवो, परिकरनी प्रतिष्ठा करी आगे अनेक फल नैवेद्य ढोवां धूप करवो.

ते पछी शुभ समयमां परिकर यथास्थान जोडी ते दिवसे अथवा त्रीजे पांचमे अथवा सातमे दिवसे पंचामृत स्नात्र भणावी चैत्यवंदना करि कंकण छोटनार्थं प्रतिष्ठादेवता स्थिरीकरणार्थं १ लोगस्सनो का० करवो, उपर प्रगट लोगस्स कहेवो, पछी सौभाग्य मुद्राए सौभाग्य मंत्रनो न्यास करी मर्पपग्रंथी अने कांकण छोडवां.

(३) चतुर्निकाय देवमूर्ति प्रतिष्ठा विधि ॥

दश प्रकारना भवनपति देवो, वीस भवनपतिओना इन्द्रो, सोल प्रकारना व्यन्तर देवो, बत्रीस व्यन्तरोना इन्द्रो, बार देवलोक, नव ग्रैवेयक, पांच अनुत्तर विमानना देवो अने बार देवलोकना दश इन्द्रो आ बधानी ते ते वर्णनी काष्ठमयी, धातुमयी अने रत्नघटित मूर्तिओनी प्रतिष्ठानो विधि आ प्रमाणे छे.–

देहरामां अथवा घरमां प्रथम बृहत्स्नात्र विधिथी जिनस्नात्र भणावी, एकत्र थयेल पंचामृतवडे प्रतिष्ठाप्य देव प्रतिमाने स्नान करावबुं, शुद्ध जले पखाली, लुंछीने यक्षकर्दमनुं विलेपन करवुं, धूप उखेववो, अने प्रतिष्ठामंत्र भणी पचीस वस्तुनो बनावेल

वासक्षेप करी, तेनी प्रतिष्ठा करवी. प्रतिष्ठा मंत्र नीचे प्रमाणे छे.—

"ॐ ह्रीं श्रीं प्लूँ कुरु कुरु तुरु तुरु कुलु कुलु चुरु चुरु चिरि चिरि चिलि चिलि किरि किरि किलि किलि हर हर सर सर हूँ सर्वदेवेभ्यो नमः, *१ अमुकनिकायमध्यगत, २ अमुकजातीय, ३ अमुकपद, ४ अमुक व्यापार, ५ अमुक देव, इह मूर्तिस्थापनायां अवतर अवतर तिष्ठ तिष्ठ चिरं पूजकदत्तां पूजां गृहाण गृहाण स्वाहा।"

आ मन्त्रवडे ३ वार वासक्षेप करी कोइ पण देवमूर्तिनी प्रतिष्ठा करवी एज प्रमाणे च्यारे निकायनी देवीओनो पण प्रतिष्ठा करवी

गणिपिटक, शासनयक्ष, शासनयक्षिणी, ब्रह्मशान्ति निर्ऋति आदि व्यन्तरमां, सोम यम आदि लोकपालो भवनपति निकायमां इन्द्र आदि वैमानिक निकायमां गणवा

(४) ग्रहप्रतिष्ठाविधि—

प्रथम प्रतिष्ठित प्रासादमां अथवा घरमां बृहत्स्नात्रविधिथी जिन मूर्तिनु स्नपन करवु

पछी एक बे त्रण च्यार पांच छ जेटली मूर्तिओनी आवश्यकता होय तेटली मूर्तिओ अथवा नवग्रह खोदेल के चित्रेल

---

*१ प्रतिष्ठाप्य देव भवनपति व्यन्तर वैमानिक के ज्योतिषी जे निकायनो होय तेनु नाम अमुक स्थाने लखवु २ भवनपतिओमां असुरकुमारादि, व्यन्तरोमां भूतपिशाच आदि, वैमानिकोमां सौधर्मभव आदि शब्द लखवो ३ पदनी पूर्वमां इन्द्रसामानिक बाह्याभ्यन्तरादि पार्षद्य आत्मरक्ष, अंगरक्षक लोकपालादि शब्द लखवो ४ तत्तद् कर्तव्य-गुणकीर्तनादि यथा संभव विशेषण लखवुं, ५ देवनुं नाम लखवु।

पाटलो जे होय ते सर्व जिन मूर्तिने आगे स्थापन करवा अने जिन स्नात्रजलथी मिश्रित पंचामृतथी ते पखालवा, शुद्धजले पखाली, लूछीने कोरा करवा. पछी धूप उखेवी नीचेना मंत्रो वडे एक एक ग्रहनो मंत्र त्रण त्रण वार भणीने उपर त्रण त्रण वार वासक्षेप करी ते ते ग्रहनी प्रतिष्ठा करवी.

जे जे ग्रहनी मूर्तिनी प्रतिष्ठा करवी होय ते ते ग्रहनो प्रतिष्ठा मंत्र भणीने तेनी मूर्ति उपर वासक्षेप करवो.

१ सूर्य प्रतिष्ठा मंत्र—

" ॐ ह्रूँ ह्रीँ श्रीँ घृणि २ नमः सूर्याय भुवनप्रदीपाय जगच्चक्षुषे जगत्साक्षिणे भगवन् श्रीसूर्य इह मूर्तौ स्थापनायां अवतर अवतर तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा ।" १

२ चन्द्र प्रतिष्ठा मंत्र—

ॐ चं चं चुरु २ नमश्चन्द्राय औषधीशाय सुधाकराय जगज्जीवनाय सर्वजीवितविश्वंभराय भगवन् श्रीचन्द्र इह मूर्तौ स्थापनायां अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा ।" २

३ मंगल प्रतिष्ठा मंत्र—

" ॐ ह्रूँ ह्रीँ श्रीँ नमो मंगलाय भूमिपुत्राय वक्राय लोहितवर्णाय भगवन् मंगल इह मूर्तौ स्थापनायां अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा ।" ३

४ बुध प्रतिष्ठामंत्र—

ॐ क्रौ प्रौ नमः श्रीसोम्याय सोमपुत्राय ग्रहर्युलाय हरितवर्णाय भगवन् बुध इह मूर्तौ स्थापनायां अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजा गृहाण २ स्वाहा।" ४

५ बृहस्पति प्रतिष्ठा मत्र—

" ॐ जीव जीव नमः गुरवे सुरेन्द्रमन्त्रिणे सोमाकाराय सर्नवस्तुदाय सर्वशिवकराय भगवन् श्रीबृहस्पते इह मूर्तौ स्थापनायां अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यह पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा।" ५

६ शुक्र प्रतिष्ठा मत्र—

" ॐ श्री श्री नम. श्रीशुक्राय काव्याय दैत्यगुरवे सजीवनीविद्यागर्भाय भगवन् श्रीशुक्र इह मूर्तौ स्थापनाया अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यह पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा।" ६

७ शनि प्रतिष्ठा मंत्र—

" ॐ शम शम नमः शनैश्चराय पङ्गवे महाग्रहाय श्यामवर्णाय नीलवासाय भगवन् श्रीशनैश्चर इह मूर्तौ स्थापनायां अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजा गृहाण २ स्वाहा।" ७

८ राहु प्रतिष्ठा मंत्र—

" ॐ र र नमः श्री राहवे सिंहिकापुत्राय अतुलबलपराक्रमाय कृष्णवर्णाय भगवन् श्रीराहो इह मूर्तौ स्थापनायां अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्ता पूजा गृहाण २ स्वाहा।" ८

९ केतु प्रतिष्ठा मंत्र—" ॐ धूम्र धूम्र नमः श्रीकेतवे शिखाधराय उत्पातदाय राहुप्रतिच्छन्दाय भगवन् श्रीकेतो इह मूर्तौ स्थापनायां अवतर २ तिष्ठ २ प्रत्यहं पूजकदत्तां पूजां गृहाण २ स्वाहा ।" ९

जो नव ग्रहना पाटलानी प्रतिष्ठा करवी होय तो पण एज विधिथी प्रक्षालन करी एक एक ग्रहनो प्रतिष्ठा मंत्र बोली एक एक ग्रहमंडलमां तेनी मूर्ति उपर वासक्षेप करीने पाटलो प्रतिष्ठित करवो.

एकली ग्रहमूर्तिनी ज प्रतिष्ठा होय तो " इह मूर्तौ " आटलुं ज बोलवुं. मूर्ति अने स्थापनीय ग्रह नंग बन्नेनी प्रतिष्ठा होय तो मंत्रमां " इह मूर्तौ स्थापनायां " आम बोलवुं, अने एकला स्थापनीय ग्रह नंगनीज प्रतिष्ठा होय तो–" इह स्थापनायां " एटला शब्दो बोलवा.

ग्रह प्रतिष्ठा करीने जिन प्रतिमा आगल वर्द्धमान स्तुतिओथी चैत्यवंदन करवुं, स्तवनने बदले शान्तिपाठ कहेवो.

(५) सिद्धमूर्ति प्रतिष्ठा विधि

जिनशासनमां पंदर भेदे सिद्ध मानेला छे. त्यां जे लिंग वेषमां जे सिद्ध थया होय ते वेषमां तेमनी मूर्ति भरावबी, ते सिद्धमूर्ति कहेवाय छे, बधा प्रकारनी सिद्धमूर्तिओनी प्रतिष्ठाविधि समान छे.

प्रतिष्ठा करावनार गृहस्थ होय तो प्रथम तेना घरे शान्तिक तथा पौष्टिक करवुं. ते पछी बृहत्स्नात्र विधिथी स्नात्र करीने प्रतिष्ठा करवी, मूलमंत्र द्वारा सिद्धमूर्तिनुं पंचामृत स्नात्र करी मूल मंत्र द्वारा ज मूर्तिना सर्व अंगोमां ३–३ वार वासक्षेप करीने तेनी प्रतिष्ठा करवी.

सिद्धमूर्तिनी प्रतिष्ठानो मूल मंत्र नीचे प्रमाणे छे —

ॐ अ आ ह्रीं नमो सिद्धाण बुद्धाण सव्वसिद्धाणं श्रीआदिनाथाय नमः ।

जे जे लिंगमा सिद्ध थयेल सिद्धनी मूर्तिनी प्रतिष्ठा होय ते ते लिंगधारीओनी भक्ति करवी, उपयुक्त वस्तु, पान, भोजनादिनु दान देवुं

प्रतिष्ठा करावनार साधु होय तो मूलमंत्रे मंत्रित करीने सिद्धमूर्ति उपर त्रण वार वासक्षेप नाखे. आथी सिद्धमूर्तिनी प्रतिष्ठा थइ जाय छे, वहु विधि करवानी जरूरत नथी.

(६) मंत्र–पट्टप्रतिष्ठा विधि ॥

मंत्रपट्टो सुवर्णमय, रूप्यमय, ताम्रमय, स्फटिकमय, काष्ठमय, वस्त्रमय, आदि अनेक प्रकारना होय छे. वस्त्रमय पट्ट सिवायना बधा पट्टोनो प्रथम जिनस्नात्र संमिलित–जल पंचामृत वडे पखाल करवो, पछी सुगंध जल वडे तेनो पखाल करवो, छेवटे शुद्ध जले पखाली तेना उपर यक्षकर्दमनु विलेपन करवु पछी २५ वस्तुना बनेला वासक्षेपथी तेनी प्रतिष्ठा करवी. मंत्रपट्टनो प्रतिमा मंत्र पट्टमा खोदेल के लखेल मंत्र ज जाणवो, ते मंत्र ७ वार वाचवो अने ७ वार वासक्षेप नाखवो, एटले प्रतिष्ठा थइ

पट्ट वस्त्रमय होय अर्थात् वस्त्र उपर मंत्र यंत्र के मूर्ति लखेल होय तो तेनु आदर्शमा प्रतिबिम्ब पाडी ते उपर पूर्वोक्त रीते प्रथम अभिषेक–प्रक्षालन करवु. पछी तेमा लखेल मंत्र वडे वासक्षेप करी प्रतिष्ठा करवी मखमल आदि उपर जरी आदिथी भरेल मूर्तिओनी प्रतिष्ठा पण एज विधिथी करवी

पट्टमां कोइ देवनी मूर्ति खोदेली होय अथवा चित्रित होय तो पूर्वोक्त प्रकारे प्रथम तेनो अभिषेक करी—ॐ ह्रूँ ी अमुकदेवाय नमः । ॐ ह्रूँ ी अमुकदेव्यै नमः । आ प्रकारे जे देव या देवीनी मूर्ति होय तेना नाममंत्रवडे वासक्षेप करी तेनी प्रतिष्ठा करवी.

सूरिमंत्र, वर्द्धमान विद्या, चिन्तामणि पार्श्वनाथ आदिना पट्टोनी पण उपरनी विधिथी ज प्रतिष्ठा कराय छे.

(७) साधुमूर्ति-स्तूप प्रतिष्ठा विधि—

आचार्य, उपाध्याय के साधुनी मूर्ति चैत्यमां के पौषध शालामां स्थापवी होय अथवा तेमना पादुकास्तूपनी प्रतिष्ठा करवी होय तो तेनी विधि नीचे प्रमाणे छे.—

मूर्ति अने चरण पादुकाने प्रथम पंचामृत वडे पखाली शुद्ध जले धोई लुछीने तेने धूप उखेववो अने लग्नो समय आवतां आचार्यनी मूर्ति अथवा स्तूप उपर—

ॐ नमो आयरियाणं भगवंताणं पाणीणं पंचविहायारसुट्ठिआणं इह आयरिया भगवंतो अवयरंतु साहुसाहुणीसावयसाविपकयं पूअं पडिच्छन्तु सव्वसिद्धिं दिसन्तु स्वाहा ।

आ मंत्रवडे ३ वार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठा करवी.

उपाध्यायनी मूर्ति अथवा स्तूप उपर—

ॐ नमो उवज्झायाणं भगवंताणं बारसंगपढगपाढगाणं सुअहराणं सज्झायज्झाणसत्ताणं इह उव-

ज्झाया भगवंतो अवयरंतु साहुसाहुणीसावयसावियाकय पूअ पडिच्छन्तु सव्वसिद्धिं दिसन्तु स्वाहा।"

आ मंत्र वडे ३ वार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठा करवी

साधुनी मूर्ति अथवा स्तूप उपर—

ॐ नमो सव्वसाहूण भगवंताणं पचमहव्वयधराणं, पचसमियाणं तिगुत्ताण तवनियमनाणदंसण-जुत्ताण मुक्खसाहगाण इह साहुणो भगवंतो अवयरंतु साहुसाहुणीसावयसावियाकय पूअ पडिच्छन्तु सव्वसिद्धिं दिसन्तु स्वाहा।" आ मंत्र वडे ३ वार वासक्षेप करी प्रतिष्ठा करवी.

(८) पितृमूर्ति प्रतिष्ठा विधिः

गृहस्थोना पूर्वजोनी पाषाणमयी मूर्तिओ घणे भागे प्रासादोमां स्थापित कराय छे, ज्यारे धातुमय मूर्ति-पाटलिओ उपर खोदेली के लखेली पूर्वजोनी मूर्तिओ घरोमां पूजाय छे. गलामां पहेरवानी फूल आदिना रूपमां नामांकित पितृमूर्तिओ पण होय छे. आ बधी पितृमूर्तिओनी प्रतिष्ठाविधि एक सरखीज होय छे

प्रथम बृहत्स्नात्रनी विधिथी पूर्व प्रतिष्ठित जिनबिम्बनु स्नात्र करी ते स्नात्रजल मिश्रित पंचामृत वडे त्रणे प्रकारनी पितृ मूर्तिओनो पखाल करवो, छेवटे शुद्ध जले पखाली लूंछीने पछी ते नीचे लखेल प्रतिष्ठा मंत्रवडे वासक्षेप करीने प्रतिष्ठित करवी.—

"ॐ नमो भगवओ अरहओ जिणस्स महाबलस्स महाणुभावस्स सिवगइगयस्स सिद्धस्स बुद्धस्स अक्ख-लिअपभावस्स तद्भक्तोऽमुकवर्णः, अमुकजातीयः, अमुकगोत्रः, अमुकपौत्रः, अमुकपुत्रः, अमुकजनकः इह मूर्तौ

अवतरतु अवतरतु संनिहितः तिष्ठतु तिष्ठतु निजकुल्यानां पुत्रभातृव्यपौत्रादीनां जिनभक्ति पूर्वकं दत्तमाहारं वस्त्रं पुण्यकर्म प्रतीच्छतु शान्तिं तुष्टिं पुष्टिं ऋद्धिं वृद्धिं समीहितं करोतु स्वाहा ।"

आ मंत्र भणीने पितृमूर्तिओने ३-३ वार वासक्षेप करीने प्रतिष्ठित करवी आम पितृमूर्ति प्रतिष्ठित करीने गृहस्थे यथाशक्ति साधर्मिक वात्सल्य करवुं अने संघपूजा पण करवी.

(९) तोरण प्रतिष्ठाविधिः—

तोरण प्रतिष्ठामां बृहत्स्नात्रविधिथी जिनस्नात्र करी मुकुटमंत्रे करी तोरण उपर वासक्षेप करवो, मुकुटमंत्र नीचे प्रमाणे छे—

ॐ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः कखगघङ चछजझञ टठडढण तथदधन पफबभम यरलव शषसह नमो जिनाय सुरपतिमुकुटकोटिसंघट्टितपदाय इति तोरणे समालोकय समालोकय स्वाहा ।

(१०) जलाशय प्रतिष्ठाविधिः—

जलाशयो अनेक प्रकारनां होय छे. तलाव, सरोवर, टांकां, वाव, आदि. आ पैकीना कोइ पण जातना जलाशयनी प्रतिष्ठा करवी होय त्यारे जलाशय बनावनारने चन्द्रबल पहोचतुं होय अने दिवस पण शुभ होय तेवुं मुहूर्त लेवुं. जलाशय प्रतिष्ठामां पूर्वाषाढा, शतभिषा, रोहिणी, धनिष्ठा, आ पैकीनुं कोइ नक्षत्र आवतुं होय तो वधारे सारुं.

प्रतिष्ठाना दिवसे जलाशय करावनारना घरे प्रथम शान्तिक अने पौष्टिक करवुं, ते पछी सर्व उपकरणो लेइ जलाशय उपर जवुं.

जलाशयने फरतां २४ सूत्रतंतुओ वींटीने प्रथम तेनी रक्षा करवी, ते पछी त्या जिन प्रतिमा स्थापन करी बृहत् स्नात्र- विधिथी स्नात्र करवु. तदनन्तर जलाशयमां पंचगव्य नाखी जिनस्नात्र जल नाखवुं, ते पछी जलाशयना आगला भागमा लघु नंद्यावर्तनी स्थापना करवी नन्द्यावर्तना स्थाने मध्यभागमा वरुणनी स्थापना करीने ते सर्वनी पूर्वनी जेम पूजा करवी, वरुणनी विशेष प्रकारे त्रण वार पूजा करवी

ते पछी त्रिकोणाकार अग्निकुंडमा अमृत मधु पायस अने विविध फलोवडे नन्द्यावर्तमा स्थापित देवताओना नाम मंत्रो 'प्र- णवादि स्वाहान्त नामो वडे होम करवो, वरुणना नाम मंत्र वडे ॥ सिवाय १०८ आहुतिओ वधारे देवी आहुति आपता वधेल सर्व जलाशयमां नाखवु,

ते पछी प्रतिष्ठाचार्य पंचामृतनो कलश हाथमां लेइ जलाशयमा तेनी धारा देता—

" ॐ वं व व वं व वलप् वलिप् नमो वरुणाय समुद्रनिलयाय मत्स्यवाहनाय नीलाम्बरधराय अत्र जले जलाशये वा अवतर २ सर्व दोषान् हर हर स्थिरी भव स्थिरी भव ॐ अमृतनाथाय नमः ।"

आ मंत्र ७ वार भणे, एज मंत्र भणीने तेमा पंचरत्न स्थापन करे अने ए मंत्रपाठ पूर्वक वासक्षेप करी, जलाशयनी प्रतिष्ठा करे

ते पछी जलाशयना द्वारना उत्तरा, स्तंभ, भित्ति, द्वारनी छत, आंगणादिकनी प्रतिष्ठा ग्रह प्रतिष्ठामा कहेल ते ते मंत्रो वडे करवी

प्रतिष्ठा करतां पहेलां जलाशयनी पासे प्रतिष्ठा सूचक यूप 'यज्ञस्तंभ' ना "ॐ स्थिरायै नमः" आ मंत्र वडे स्थापना करवी.

वावडी, कुवा, तलाव, वहेळा-नहेर-झरणा-तलावडी, स्रोत धर्मादा जलाशय-कारणिक जलाशय, आदि कोइ पण जलाशयनी प्रतिष्ठा उक्तविधिथी करावची.

॥ इति जलाशय प्रतिष्ठा विधि ॥

इतिकल्याणकलिका-प्रतिष्ठा पद्धतावयम्। विधानाख्योऽगमत् खण्डो, द्वितयः परिपूर्णताम् ॥

भा०टी०—आ प्रमाणे कल्याणकलिका प्रतिष्ठा पद्धतिमां आ विधि खंड नामक बीजो खंड समाप्त थयो.

इति तपागच्छाचार्य-श्रीविजयसिद्धिसूरिनिगदानुसारि-संविग्नश्रमणावतंसश्री-
केसरविजयशिष्यपं०कल्याणविजयगणि-विरचितायां कल्याण-
कलिकाप्रतिष्ठापद्धतौ विधिनामा द्वितीयखण्डः समाप्तः।



॥ कल्याण–कलिकायां, साधनखण्डः ३ ॥

परिच्छेद सूची—

चैत्यवन्दनसंदोहः १, स्तुतयो निखिलेशि नाम् २, पाठयोग्यस्तवा ३, स्तद्वत् स्मरण–मंत्रसंचयः ४ ॥१॥
प्रतिष्ठोपस्करा नाना–विधाः ५ खण्डे तृतीयके ॥

भा०टी०—चैत्यवन्दन समुदाय १, चोवीश तीर्थंकरोनी स्तुतिओ २, पाठ करवा लायक स्तोत्रो ३, सात स्मरणो तथा उपयोगी मंत्र संग्रह ४, अने अनेक प्रकारनी प्रतिष्ठानी सामग्रीनी सूचिओ ५ एम आ त्रीजा खंडमां ५ परिच्छेदोनो समावेश कर्यो छे.

परिच्छेद १ चैत्यवन्दन संदोह—

प्रतिष्ठाप्य जिनस्याग्रे, देववन्दनहेतवे । चैत्यवन्दनसंदोहो, न्यस्तोऽयं निजनिर्मितः ॥२॥

भा०टी०—जे जिननी प्रतिष्ठा थइ होय तेमनी आगे देववन्दन करता ते जिननु चैत्यवंदन करवानी विधि होइ प्रत्येक जिन प्रतिष्ठा प्रसंगे देववन्दनमां काम लागे एटला माटे आ परिच्छेदमां अमोए स्वरचित चैत्यवन्दन चोवीसी लखी दीधी छे.

चैत्य वन्दन सदोहः–अपर नाम चैत्यवन्दन चतुर्विंशतिका ।

। १ श्रीऋषभ जिन चैत्यवन्दनम् (वसन्ततिलकापरनामकम् उद्धर्षिणी वृत्तम्)।

श्रीनाभिराजकुलनन्दनकल्पवृक्षः, संप्राप्तसर्वसुरपूज्यतमत्वपक्षः ।
उल्लासयन् रविरिवाङ्गिसरोजखण्डं, दिश्यात्स शर्म वृषभो भवतामखंडम् ॥१॥
त्रैलोक्यलोकचलनेत्रचकोर चन्द्रं, वैराग्यरङ्गरसभङ्गभयास्ततन्द्रम् ।
संसारसिन्धुतरणायसुयानपात्रं, देवं नमामि ऋषभं सुपवित्रगात्रम् ॥२॥
येन प्रदर्शितमशेषकलाकलापं, दुर्बोधजातदुरितौघकृतापलापम् ।
स्मृत्वाऽधुनापि जनता निजकार्यजन्मा–दुद्धर्पणीतिहरणोऽस्तु स नाभिजन्मा ॥३॥

। २ श्रीअजितनाथ चैत्यवंदनम् ॥ (त्रोटक वृत्तम्) ।

अजितं विदिताखिलवस्तुगणं, सगुणं वरमुक्तिवधूरमणम् । रमणीरजनीचरिकावियुतं, प्रणुतं प्रणताखिलसिद्धिकृतम् ॥१॥
प्रपतन्तमविस्मिरे मनुज–मनुजन्मकरन्तमदभ्ररुजम् । जनमानसमानसहंससमं, समदृष्टितमं प्रणमाम्यसमम् ॥२॥
विहितामरदानवसेवनकं, कनकोज्वलनिर्मलविग्रहकम् । भवतोटक ! तोटय मे दुरितं, समयोदितकर्मरजो मिलितम् ॥३॥

। ३ श्रीसंभवजिन चैत्यवन्दनम् । (उपजाति वृत्तम्)

श्रीसंभवो निर्दलितारिसंभवो, विसंभवः प्रास्तविकारसंभवः ॥
सशंभवश्रीद्धजितारि संभवः, क्षिणोतु तं योऽस्ति गदोऽरिसंभवः ॥१॥
वृथैव मन्ये विदुषां नु भारती, यया न ते प्रक्रियते बुधैः स्तुतिः ।
किं कल्पवृक्षोऽपि फलादिवर्जितः, फलैर्पिभिर्नो विबुधैर्वितर्जितः ॥२॥

न स्रग्धरा धृत्तमुखैरपि स्यय, सदैव सावत्र्यविवर्णकः कविः ।
लमेत सत्कीर्तिभरं यथा स्तुवन्, भवन्तमल्पैरुपजातिवृत्तकैः ॥३॥

। ४ श्रीअभिनन्दनजिन चैत्यवन्दनम् । (रथोद्धतावृत्तम्)

संवराख्य नरराजनंदन, देवराजविहिताभिनन्दनम् । धर्मदानजनताभिनन्दन, भक्तितोऽस्मि विनतोऽभिनन्दनम् ॥१॥
भो जना ! विपयलुप्तचेतनै-र्भोजनादिसुखमिष्यते जनैः । तद्वदेव भवतापपीडितै-र्ज्ञानसाधनमसौ निषेव्यते ॥२॥
सेवनेन सतत जिनेशितु र्मोहराजमदनौ प्रणेशतु । सन्नृणा भवतु वोऽपि तद्गता, तद्घटालिरनुगैरयोद्धता ॥३॥

। ५ श्रीसुमतिजिन चैत्यवन्दनम् । (द्रुतविलम्बितवृत्तम् ।)

सुकृतवल्लरिवर्धनवारिद-प्रभमनल्पगुणस्य तवारिद ! । वचनमर्तिहरं भवितारक, भवतु मेऽघहरं विगतारकम् ॥१॥
सुमतिमेघनरेन्द्रसमुद्भव ! विहितमर्त्यसुरासुरमुद्भव ! । अथ भवेद्धि भवान् मम तारणः, सजति चेद्भगवन् मम वारणः ॥२॥
द्रुतविलम्बितसंसरणक्रम-मविरतं विदधे सगुणक्रम ! । यदि रतिर्हि भवेद्भवदाश्रये, ध्रुवगतिं भगवन् ! नु तदाश्रये ॥३॥

। ६ श्रीपद्मप्रभजिन-चैत्यवन्दनम् (इन्द्रवज्रा वृत्तम् ।)

पद्मप्रभेऽम्भोजविशालनेत्रे, पद्मप्रभे भो दधता सुभक्तिम् । ये न प्रकृष्टत्वमुवः कदापि, येन प्रणष्टा ननु तेऽपि दोषाः ॥१॥
नाथ ! त्वया चेत्क्रियते जनोऽन्यो, धर्मोपदेशैर्ननु मुक्तरागः । त्वं रागयुक्तोऽसि कथं नु यद्वा, महात्म्यमेतत्खलु सर्वविच्वे ॥२॥
एकाकिनापि प्रहतास्त्वयोद्धा, मोहादय. कर्मबलिष्ठयोद्धाः । स्यादिन्द्रवज्रा हतिरेकिकापि, नाशाय मौलेः कुलपर्वतादेः ॥३॥

। ७ श्रीसुपार्श्वजिन-चैत्यवन्दनम् । (प्रहर्षिणी वृत्तम्)

पृथ्वीजं शिवपुरसार्थवाहनाथं, चक्राणं भवलमनोभवप्रमाथम् ।
कुर्वाणः स्तुतिलवगोचरे सुनाथं, कुर्वे स्वं निजगुणलालसासनाथम् ॥१॥
देवेन्द्रैः प्रकटितभक्तिरागसारैः, संसारे पुरुषवरं हि मन्यमानैः ।
यो नेमे विरतगणैश्च बद्धरागै-र्योनेमेऽविरतगतं स संरुणद्धु ॥२॥
संप्राप्ते पुरमपुनर्भवाख्यमीशे, निर्नाथा विरह विपादिता प्रकामम् ।
नो चेत्तेऽमृतसमदर्शनं प्रबिम्बं, नो नूनं भुवि जनता प्रहर्षिणीयम् ॥३॥

। ८ श्रीचन्द्रप्रभजिन-चैत्यवन्दनम् । (ललिता वृत्तम् ।)

चन्द्रप्रभं जनिविपूतसज्जनं, चन्द्रप्रभं जनितहृष्टिमज्जनम् । देवाधिदेवविनतं स्वशक्तितो, देवाधिदेवमभिनौमि भक्तितः ॥१॥
तेजःप्रपञ्चरविरूपरोचन-श्वेतःसरोजदलने विरोचनः । देयान्मतिं जिनपतिः सतामरं, यस्या जनुर्विभवनिर्जितामरम् ॥२॥
लोको जहर्ष तव दर्शनागमाज्ज्ञानप्रकर्षललिताज्जिनागमात् । किं वा द्युजातमहसेननन्दन-धीश ! क्षमेशमहसेननन्दनं ! ॥३॥

। ९ श्रीसुविधिजिनचैत्यवन्दनम् । (सुमुखीवृत्तम्) ।

कुतुकमिदं ननु पश्यत भो ! भुवि जनचित्तसरोजमिदम् । सुविधिजिनस्य मुखेन्दुरयं, कुवलयवद् विशदीकुरुते ॥१॥
भवति न यस्य मनो रमते, भवति नरस्य न तस्य रतिः । किमु सुरपादपपादभिदि, प्रमुदयमेति कदाऽप्यविदि ॥२॥

तव चरणांबुजवद्धरति-र्गणधरवन्मनुजः सुमतिः । भुवि जनतासु-सुखीभवति, भवभयतश्च जनानवति ॥३॥

। १० श्रीशीतलजिन चैत्यवन्दनम् । (चन्द्रवर्त्मवृत्तम्) ।

शीतलं जिनपतिं नम जनते ! सगृहाण वरपुण्यमजनतेः । एतदर्थममरा अपि सततं, पूजनं विदधते दिवि सततम् ॥१॥
पूजयन्ति जिनदैवतचरणा-नार्यलोकपथनिर्मितचरणाः । प्राणिना विधिवदादरसहितं, मन्यते च भुवि तत्खलु सहितम् ॥२॥
चन्द्रकान्तसमशीततनुजिन-चन्द्र ! वर्त्म सुगतेर्देदममलम् । मामनल्पमतिरहितमशरण, नाथ ! रक्ष दुरितादनिशरणम् ॥३॥

। ११ श्रीश्रेयांसजिन चैत्यवंदनम् । (शालिनी वृत्तम्)

स्फूर्जत्कान्तिध्वस्तससारतान्ति-श्शश्वच्छीलः प्रोज्झिताऽशस्तलीलः ।
श्रीश्रेयासः संचितान्तश्शमायः, कुर्यात्सौख्यं देववन्द्योऽस्तमायः ॥ १ ॥
विद्यावल्लीवर्धने वारिवाहः, कैवल्याध्वप्रापणे शस्तवाहः । स श्रेयांसः श्रेयसा यः सुखानि, सश्रेयान्वः संविधत्तां सुखानि ॥२॥
प्रत्यादर्शं श्रेयसो दैवतस्य, बद्धं चित्तं येन पापं न तस्य । प्रत्याघातं संविधत्ते नरस्य, यस्मात् श्रेयः शालिनी भक्तिरस्य ॥३॥

। १२ श्रीवासुपूज्यजिन चैत्यवन्दनम् । (स्वागता वृत्तम् ।)

वासुपूज्य कृतपुण्यकृतान्त !, हेलया विजितरागकृतान्त ! । योगिनोऽपि विनमन्ति भवन्तं, के त्यजेयुरथवाशुभमन्तम् ॥१॥
या चचाल निजनिश्चलभावात्, योगिनाथततिरप्यविभावात् । यद्दशाविजयिन हरिसुनु, त जघान वसुपूज्यसुसुनुः ॥२॥
स्वागताप्रभृतिवद्धनिबन्धै-स्त्वां स्तुवन्ति कवयः शुचिबन्धैः । नो तथापि गुणवर्णनकृत्ये, पारयन्ति तव वर्णनकृत्ये ॥३॥

। १३ श्रीविमलजिन चैत्यवन्दनम् । (मन्दाक्रान्ता वृत्तम् ।)

श्यामासूनो ! तववरवचः श्रेणिपीयूषधारा, तृप्तात्मानः प्रकृतिसुभगा मानवा मानधाराः ।
उत्पद्यन्ते विबुधभवनेपूत्तमेपूत्तमास्ते, यत्रानन्दप्रबललहरीप्रोल्लसत्सौख्यमास्ते ॥ १ ॥
हेयाहेयप्रकटनविधौ बद्धलक्ष्यो नितान्तं, ज्ञानोद्योतैर्भुवि भविजनं बोधयन् यो नितान्तम् ।
निर्मुक्तात्मा शिवसुखरतिः कर्मयोगैरपीडयः, सर्वज्ञोऽसौ जयतु विमलः सर्वदेवैरपीडयः ॥२॥
संसाराम्भोनिधिनवतरी दुष्टमीनैरभक्ष्या, मन्दाक्रान्ता शमरसभरैर्दुमतागैरलक्ष्या ।
दत्तानन्दा भुवि जययशो विस्फुरद्वैजयन्ती, सौख्यं मूर्तिः शुभग ! भवतो यच्छताद्वै जयन्ती ॥३॥

। १४ श्रीअनन्तजिन चैत्यवन्दनम् । (भुजङ्गप्रयात छन्दः)

अनन्तं जिनं पुण्यवन्तं ससन्तं, क्षिपन्तं कुकर्मौघमर्तिं हरन्तम् । जनान् रञ्जयन्तं रिपून् संजयन्तं, नमामीश्वरं तं वरं मुक्तिकन्तम् ॥१॥
सदा सिद्धिसौख्यप्रियध्येयरूपं, जितानङ्गरूपं श्रिया जातरूपम् । मुनिव्रातभूपं शमापारकूपं, नमस्याम्यनन्तं जिनं योगिरूपम् ॥२॥
भुजङ्गप्रयाताऽध्वमुक्तं सुसक्तं, जराजन्महीनं महानन्दलीनम् । हतप्रीतिनाथं कृताघप्रमाथं, श्रयेऽनन्तदेवं सुपुण्याप्यसेवम् ॥३॥

। १५ श्रीधर्मनाथजिन चैत्यवंदनम् । (स्रग्विणी वृत्तम् ।)

धर्मनाथं स्तुतप्रौढबुद्धयान्वित–देवराजार्चितं यस्य पादद्वयम् । भव्यहंसैः श्रितं पुण्यगन्धाश्रितं, राजते पद्मशोभां परिहासयत् ॥१॥
धर्मनाथ ! त्वयोद्दिष्टधर्मे कृत–वर्तनाः कर्तनायोक्तटद्वेषिणाम् ।
स्युर्जनाः सेव्यसे त्वं ततः स्वार्थिभि–र्देवराजासुरैःकेवलस्वार्थिभिः ॥२॥

स्रग्विणी भक्तचेतस्तमश्छुरिका, पूरिका स्वर्गनि श्रेयसा संपदाम्। मूर्तिरेवंविधा ते यशःसाधिका, दीयतां भद्रमानन्द वासाधिका ॥३॥

। १६ श्रीशान्तिजिन चैत्यवन्दनम्। (मालिनी वृत्तम्)

शिवपदसुखकारी कर्मविद्वेषिवारी, मदनमदविभेदी विश्वतत्त्वैकवेदी ।
भवजलधिविशोषी पापवारप्रमोषी, दिशतु कुशलमीशः शान्तिनाथो मुनीशः ॥१॥

स्वहृदि धृतभवन्तः प्रास्तरागा भवतः । तव नतिशुभवन्तस्ते नराः पुण्यवन्तः ।
अतिशयसुखसार केवलालोकसारं, परमपदमुदार यान्ति भव्या मुदाऽरम् ॥२॥

प्रशमरसविशुद्धा नाशिताशेषदुष्टाः, जगति जनितचित्रा पुण्यपोषैः पवित्रा ।
महिमजितसमुद्रा मालिनी यस्य मुद्रा, स जयति जिनशान्तिर्निर्जित स्वर्णकान्तिः ॥३॥

। १७ श्रीकुन्थुनाथजिन चैत्यवन्दनम्। (कामक्रीडा वृत्तम्)

ससृत्तार विघ्नस्तारं श्रीदातार धातार, चंचच्छोभारम्य गम्यं योगीशानामीशानाम् ।
संसाराम्भोराशि तीर्णं सौख्याकीर्णं विस्तीर्णं, वन्दे देव कृत्यासेवं कुन्थुं सार्वं सर्वज्ञम् ॥१॥

त्यक्तासार नानोदारं विश्वोद्धार विधार, स्फूर्जद्योगं मुक्तोद्योग भासा चन्द्रं निस्तन्द्रम् ।
संख्यातं तं पुण्योदन्त कीर्त्या कान्तं सशान्तं, वन्दे देवं कृत्यासेवं सौधर्मेशं धर्मेशम् ॥२॥

आयुर्विद्युद्द्योताभं स्त्र—लीलांकीलाभामन्ते, विज्ञा विज्ञायाशु त्रीडा कामक्रीडा संप्रोज्झ्य ।
दुःखोद्रेकच्छेदच्छेकं भक्त्युद्रेकं बिभ्राणा, देवाः सेवा यस्याऽकुर्वन् कुन्थुः कुर्यात्कल्याणं ॥३॥

। १८ श्रीअरनाथजिन चैत्यवन्दनम् (हरिणी वृत्तम्)

जनितजनतानन्दं कन्दं महोदयवीरुधा—मविरतिगतिश्रीनिर्धौतिप्रयुक्तमगुर्बुधाः ।
यममशरणा लब्धोत्कर्णाः शरण्यमनिन्दितं, स दिशतु शिवं वेनीमनुर्भवान्तमनिन्दितम् ॥१॥
अतुलजवना वद्धस्पर्द्धाः सुरासुरनायका, यदभिगमने लब्धोत्कण्ठा भजन्त्यनिनायकाः ।
अरजिनपतेः पादद्वन्द्वं सरोजनिकस्वरं, दलयतुतरां पापद्वन्द्वं प्रभाजितभास्वरम् ॥२॥
शुभमनिजनस्वान्तध्वान्तप्रणाशनभास्वरं, विदलितदरद्वेषाज्ञानं विरागगमादरम् ।
हृदयहरणैर्हावैः क्षुब्धेतरं हरिणीदृशां, उदगममलं देवीतनोस्तनोतु सुखं विनाम् ॥३॥

१९. श्रीमल्लिनाथजिन चैत्यवन्दनम् । (वगतानुवृत्तम् ।)

अयि हितकारक ! मल्लिनाथ ! ते, चरणयुगं सुरपोऽपि नाथते । भवजलनाशनशक्तिमत्परं, द्रुतमभिनाश्य मामतः परम् ॥१॥
अयि नतवत्सल ! नापदां पदं, भवतिजनो भवतां श्रितः परम् । किमु कृतकल्मषदीनदानैनः, समजनि दुर्गतकः कदाचन ॥२॥
भवदभिधाजपबद्धमानसे, ननु भुवि भव्यजने मगानसे । नर ! तनुताद्धर्मतिनाशनं, पदगिनाशन निर्मितनाशनम् ॥३॥

२० श्रीमुनिसुव्रतजिन चैत्यवन्दनम् । (कनकप्रभा वृत्तम् ।)

मुनिसुव्रतस्य भववारिधेः परं, तटमागतस्य नम्रा विधेः परम् ।
स्तवनां करोतु जनता शुभाशया, शिवमार्गनाशिरसिका शुभाशया ॥ १ ॥

प्रवरप्रतापपरभावभावित, भविनं करोति परभावभावितम् । विमलं यदीयचरणद्वयं सता निर्मला ददातु परमा रमा सताम् ॥२॥
कनकप्रभाव ! भयदागमागम, सुकृतोदयेन भवदागमागम' । ममपथ्यतात्महितकारण मम भवनाशन भवतु तेन निर्मम ! ॥३॥

२१ श्रीनमिजिन चैत्यवन्दनम् । (प्रमाणिका वृत्तम्)

सकर्णकर्णलोपिणी, हिताऽऽहिताऽधिमस्कृतिः । सदा सदानवैः सुरै–र्नुता तु तायिनी नृणाम् ॥१॥
नयानयाद्रिराजिता–ऽजमैर्गमैर्गरीयसी । प्रमाप्रमाणपूरिता, महर्षिदर्पिणी सदा ॥२॥
दयोदयोज्ज्वला मदाऽक्षयाऽक्षयामिनी विशाम् । धियोऽधियोगकारिणी, भियोऽभियोगनाशिनी ॥३॥
यदीदृशीसरस्वती न रोचते सरस्वती । जनाय ते सुवर्णिका, जगद्दशा सुवर्णिका ॥४॥
नमे न मे प्रमाणिका, नरस्य धीस्तदीदृशः । मत मत विपर्यय–प्रसाधन तु धीदृशः ॥५॥ पचभिः कुलकम् ।

। २२ श्रीनेमिजिन चैत्यवन्दनम् । (पचचामर वृत्तम्)

क्षणं निरीक्ष्य वीक्षणैः प्रतिक्षण क्षयान्वितं, क्षण यदप्रतीक्षितं क्षमेशमण्डले. क्षितौ ।
असारसंसृदुद्भवातिभीतिभाग्जनो यमा–श्रयेद्धिताय भक्तितस्तमानतोऽस्मि नेमिनम् ॥१॥
कुरङ्गरङ्गभङ्गभीरुताभराबभारित ! निदर्शनी भवन् दयालुताजुषा त्विशा धुरि ।
विवाहवाहवाहनावरुद्धराज्यदायक ! । भवन्तमीदृश दयालुमाश्रितोऽस्मि रक्ष माम् ॥२॥
जयाभिलापि वाजिराजिराजिराजराजिता, ऽयपंच ! चामरालिशोभिपार्श्व ! पार्श्वगावन ।
यदुज्वलान्वयाम्बुराशिपामनाऽब्जभासुर !, विधेहि मा भवाम्बुधेस्तटानुयायिन विभो ! ॥३॥

। २३ श्रीपार्श्वजिन चैत्यवन्दनम् । (शिखरिणी वृत्तम्)

सदा शुद्धामूर्तिर्मदनमदमोहादिविकला, कलाऽपूर्वा वाक्ये सततुमदविद्यान्तकरणे ।
रणे रंगो नित्यं विततभवभावारिनिधने, धने मूर्छात्यागः वरतरसुवर्णादिनिकरे ॥१॥
करे शस्त्राभावो जनितजनसंतापशमनो, मनोऽपूर्वध्यानस्थगितनिखिलाऽवद्यविवरम् ।
वरं धर्मस्थैर्यं भुवनविदिता काऽपि समता, मता मह्यां मैत्री तनुमदधिवात्सल्यसहिता ॥२॥
हिताधाना एतेऽतुलसुकृतसंभारजनिता, नितान्तं राजन्ते भवति सुगुणा पार्श्व ! सुतपः ।
तपस्तस्यच्छैत्यं किरणविसराऽस्ताऽन्धतमसं, मसं मोघीकुर्वन् नवरविरिव प्राकृशिखरिणि ॥३॥

। २४ श्रीवीरजिन चैत्यवन्दनम् । (शार्दूलविक्रीडित वृत्तम् ।)

वीरः सर्वहितः सदोदितसुखं, वीरं जनालिः श्रिता, वीरेण प्रविताडितारिपुततिर्वीराय धत्ते नतिम् ।
वीराद्विश्वमहोदयो धृतजयो वीरस्य वीर्यं महत् , वीरे विस्तृततां गता गुणलता वीर ! मदेगाः शिवम् ॥१॥
योमुवित श्रियमातनोति गुहशां यं स्वर्गनाथा नताः, येनाभेद्यविभेद्यकर्मनिकरो यस्मै जनः श्लाघते ।
यस्माद्दुर्गुणसंततिर्गतनती यस्य प्रपूतं वचो, यस्मिन्पङ्कजकोमलेजनमनो भृङ्गोपमं लीयते ॥२॥
स श्रीवीरविभुर्भवत्वसुलहत्तं दैवतं संश्रये, तेनास्मि प्रभुणा सनाथगणनस्तस्मै नतिं संदधे।
तस्मान्नास्ति परः प्रभादिनकरस्तस्यांघ्रियुग्मं स्तुवे, तस्मिन्नेव च कर्मदन्तिदलने शार्दूलविक्रीडितम् ॥३॥ युग्मम् ॥

अङ्कर्पिनवभूवर्षे, पादलिप्तपुरे वरे । कल्याणविजयेनेयं, चतुर्विंशतिका कृता ॥

॥ २ परिच्छेदः—चतुर्विंशतिजिनस्तुतयः ॥

वेदयुग्मजिनस्तुति—चतुर्विंशतिकाद्वयम् । पूर्वाचार्यप्रणीतं यद्, वन्दनार्थं निवेशितम् ॥३॥

भा०टी०—चोवीस जिननी स्तुतिओनी पूर्वाचार्यप्रणीत बे स्तुतिचोवीशीओ देववन्दनमां उपयोगी थाय ए अभिप्रायथी आ परिच्छेदमां लीधी छे

॥ अज्ञातकर्तृक–प्राकृतचतुर्विंशतिजिनस्तुतयः ॥

(१) जो चामीयरकंतिकायकलिओ जो सोमसोमाणणो, जो नीलुप्पलपत्तवत्तनयणो जो लोयणाणंदणो ।
जो संसारसमुद्दतारणतरी जो ताारहारुज्जलो, सो नाभेयजिणो जगुत्तमजसो दिज्जा सुहं सासयं ॥१॥

(२) उक्खित्तामलकुम्भभासुरकरा दिप्पंतदेहप्पहा, सेले हेममयम्मि भत्तिभरिया बत्तीसदेवेसरा ।
नाणातूररवोहपूरियनहा न्हाविंसु जं सो जिणो, अम्हाणं जियसत्तुरायतणओ दिज्जाऽजिओ मंगलं ॥२॥

(३) जे चक्कंकुसपंकयंकियतला जे सोणपीणंगुली, जे आयम्बनहप्पहापरिगया जे कुम्मउन्नुन्नया ।
जे भावेण य पाणिकप्पतरुणो जे पूयपावोदया, ते पाया जिणसंभवस्स सरणं मे हुन्तऽसंताभया ॥३॥

(४) जो संक्रंदणविंदवंदियपओ मत्तंगचंगप्पहो, सिद्धत्थामणमोयणो मुणिजणासेविज्जमाणक्कमो ।
लोयालोयविलोयणोवममहानाणो चउत्थो जिणो, हुज्जा मे अभिनंदणो पइदिणं कल्लाणमालाकरो ॥४॥

(५) गब्भे जम्मि गयंमि निम्मलगुणे नाणं धरंते तहा, लोयालोयपहाकरे दसदिसोज्जोयं कुणंते खणा ।
जाया पुव्वदिसव्व झत्ति जणणी अंतोग्गहिं चुज्जला, सो देवो सुमई विहेउ सुमई भव्वाण भव्वाणणो ॥५॥
(६) जो त्थंबेरमहत्थसुत्थियभुओ भासंतभामंडलो, रत्तासोयपवालकोमलकरो विच्छिन्नवच्छत्थलो ।
लच्छीकित्तिकरो नरोरगथुओ देवीसुसीमासुओ, हुज्जा मे परिपक्कविदुमवणच्छाओ सु छट्ठो जिणो ॥६॥
(७) उम्मीलंतमहंतकंतिकविसा सिज्झंतवोमंगणा, सीसे जस्स सहंति फारमणिणो पंचप्पमाणा फणा ।
सोऽभिकंदियभीसणाऽसमसरो रोसग्गिनिग्गाहगो, अम्हाणं सुमणोरहो फलकरो होज्जा सुपासो जिणो ॥७॥
(८) निच्चं चंदपहापहासुरतणू, कप्पूरपूरोवमं, पत्तो कित्तिमपारभीसणभवाकूपारपारं गओ ।
चंदंको नवचंदनिम्मलगुणो चंदप्पहो सो जिणो, भद्दं देउ भवारिसाण भयवं निहंतधंतोदओ ॥८॥
(९) जो पुप्फुज्जलदंतपंतिकलिओ जो चंदकुंदुज्जलो, जो लोहन्नववाडवग्गिसरिसो जो वारिवाहारवो ।
जो सोवंनियपंकयंकियकमो जो मोहमेहानिलो, अम्हाणं सुविही विहेउ नवमो तित्थंकरो सो सुहं ॥९॥
(१०) नीहारोदगचंदचंदणसुहा सीयंति गब्भट्ठिए, दाहो देहगओ खणेण पिउणो जत्थोवरत्थंति गओ ।
मंदाणंदकरो जिणो स दसमो संसुद्धसीलालओ, दालिद्ददुमकंदकीलणकरो हुज्जा स मे सीयलो ॥१०॥
(११) भव्वंभोरुहवोहणे दिणमणी तेलुक्कचूडामणी, जो जाओ नियवंसमत्थयमणी सोहग्गसोयामणी ।
कंदप्पुब्भडसप्पनागदमणी थोयारचिंतामणी, सिज्जंसो स जिणो महोदयगुणो सेयं समप्पेउ मे ॥११॥

(१२) पामुक्कामरलोयसंभवमुहा संभूय मर्दो (द्दो) जिणो, मंदारामलमालियाहिं तइया पूएइ जं वासवो ।
जों निव्वाणनिरासवासवसमो मोहंधयारे रवी, मह देउ दुवालसो गयमलो सो वासुपुंजो जिणो ॥१२॥
(१३) जो संसारमरुत्थलमि विसमे कप्पदुमो पाणिणं, जो दुक्खोदहिमज्झमज्जिरजणुत्तारंमि पोओ दिढो ।
जो मोहवजणंजणोयममहासिद्धतससाहगो, मालिन्नं विमलोऽवणेउ स जिणो मे तेरसो निम्मलो ॥१३॥
(१४) जोऽणताण दुहद्दुमाण दहणो दिप्पंतदावानलो, गाढाणगपयंगभगकरणे जो तीव्वदीवोवमो ।
जो ऽणतेण सुहेणणंतयजिणो जुत्तो ऽणंतुज्जोयणो, णाणेण च जणेउ तुम्ह विउलं सुक्खाण सो संचयं ॥१४॥
(१५) सम्मं कम्ममहामहोहरसिहासहारदभोलिणा, धम्मो जेण महीयले पयडिओ निव्वाणसुक्खक्खणी ।
मज्जंताण भवज्जकूवकुहरे जंतूण रज्जूवमो, सो धम्मो जिणपुगवो भयहरो मे होउ पन्हारसो ॥१५॥
(१६) देवीए अइराइ कुच्छिकमले हसंमि जमि ट्ठिए, सव्वट्ठाउ चुए गयासिवभयं सव्वपि जायं जयं ।
चत्तालीसधणूमिओ मियजसो तित्थकरो सोलसो, सो मे मोहमलं दलेउ सयलं सती पसंतासुहो ॥१६॥
(१७) कुंथू हत्थिपसत्थमंथरगई कुंथू पसत्थोत्तमो, कुंथू दुत्थियसत्थसुत्थियकरो कुंथू थिरत्थागमो ।
कुंथू यथ (धत्थ) समत्थमोहपडलो कुंथू महत्यत्थुई, कुंथू घोरभडो जए य विजए सत्तारसो सो जिणो ॥१७॥
(१८) मोहच्छेयकरो जरामरहरो संसुत्थकित्तीभरो, मग्गाणंगसरो विमुक्कसमरो विन्नाणनाणागरो ।
तेलुक्किकदियाकरो गुणकरो जो पक्कविवाहरो, नाणावुज्झ(चुज्ज)करो अरो जिणवरो मे होउ अट्ठारसो ॥१८॥

(१९) जो उद्दंडसिहंडमंडलगणच्छायाणुरूवच्छवी, निफुल्ला धवलेइ जस्स सयलं कित्तीधरित्तीतलं ।
हेलं मूलिय (वज्ज) वल्लिवलओ निम्मुल्लसोहाभरो, निन्नासेउ सकम्मजल्लससमं मज्झी मल्लोदओ ॥१९॥
(२०) जो मोहंजणपुंजरेहिरतणू लावन्ननीलागरो, कुम्मंको नवपंकओवमममहासोहग्गसीमामही ।
अम्हाणं मुणिसुव्वओ थिरवओ निस्सीमहेमचओ, सो सामी हरिवंसमत्थयमणी हुज्जा पसन्नो सया ॥२०॥
(२१) दिट्ठे जंमि सिसुत्तणंमि पिउणो सामंतमंताइणो, पच्चंता पणमंतसीसकमला पत्ता विणीयत्तणं ।
सा अच्चब्भुअभावरंजिअजओ नीलुप्पलंको नमी, निग्घाएउ घणं मणो समलिणं मे इक्कवीसो जिणो ॥२१॥
(२२) जेणेरावणकुंभविब्भमथणी संसारसुक्खक्खणी, नीलिंदीवरलोयणी पइदिणं वदृंति संयोइणी ।
मुक्का राइमई मणोभवमई सा उग्गसेणंगया, सो नेमि मम माणसामलसरे होज्जा मरालोवमो ॥२२॥
(२३) देहो वत्तविवन्नपन्नगफणाछत्तेण छन्नंबरो, सामासागसरीरओ रयतमोमुक्को रामुक्कोसओ ।
वम्माए विसुओ सुयामरनईनीहारसेलोवमो, सो पासो भवपा(वा)मपासयसमं सज्जो पसाहिज्ज मे ॥२३॥
(२४) वामंगुट्ठतलेण जेण चलिए मेरुंमि जाया मही, हल्लंताचलसंचया ससिहरा झल्लंज्झलंतोदही ।
तेलुक्किक्कपरिक्कमं महिहरासीरं गहीरं जणा ! तं वीरं पणमेह मोहपममं दुक्खग्गिउल्हावणे ॥२४॥

॥ सत्तरीसय जिनस्तुतिः ॥

जे सिंदूजणसंनिगासतणुणो जे कीरकायप्पहा, जे बालारुणसोणचारुरुइणो जे कंचणुक्केरभा ।
जे कंबुज्जलकंतिणो समहिआ ते सत्तरीए सयं, सव्वबिखत्तविवत्तिणो जिणवरा मे हुंतु खेमंकरा ॥२५॥

॥ सर्वजिनस्तुतिः ॥

किंकिल्लीसुमवल्लपल्लवचओ पुप्फाण वुट्ठीकरा, मद्दो भद्दकरो निसाकरकराकारप्पहा चामरा ।
सीहालंकियमासण तणुपहापूरो तहा दुंदुही, रम्मं छत्ततियं च जेसि सुहया ते संतु तित्थेसरा ॥२६॥

॥ तीर्थस्तुतिः ॥

नीसेसुत्तमपुन्नपुजकलिया पावंति ज जंतुणो, मत्तो जमसमुब्भवे य कमसो सव्वा सुहासंपया ।
कल्लाणानलिवल्लिकंदसरिस समोहसेलासणी, तित्य तित्थकराण दुत्थदलणं सिग्घं भवेज्जा मम ॥२७॥

॥ वैयावृत्यकरस्तुतिः ॥

जे तित्थंकरमंदिरेसु महया तोसेण किच्चे रया, सये मन्नगुणायरंमि सहिय दावंति भत्त च जे ।
जक्खंबामुयखित्तदेविपमहा सव्वे हि सव्वायरा, वेयावच्चकरा सुरा भयहरा ते हुतु मे निच्छय ॥२८॥

॥ श्रीधर्मघोषसूरिविरचिताः श्रीचतुर्विंशतिजिन स्तुतयः ॥

(१) जय वृषभ जिनाभिष्टुयसे निम्ननाभि-र्जडिमरहितनाभिर्ये सुपर्वाङ्गनाभिः ।
तम इह किल नाभिसोणिभृत्सूनुनाऽभि-तभुवनमनाभि क्षान्तिसपत्कनाभि ॥१॥
(२) प्रकटितटपरूप ! त्यक्तनिःशेषरूप-प्रभृतिनिपयरूप ! नात निश्वस्वरूप ! ।
जय चिरमरूप ! पापपङ्काम्बुरूप ! त्वमजित ! निजरूपास्तसजातरूप ! ॥२॥

(३) जय मदगजवारिः संभ्रान्तभैवारि, व्रजभिदिह तवारिश्रीर्न केनाप्यवारि ।
यदधिकृतभवारिस्रंसनः श्रीभवारिः, प्रशमशिखरिवारि प्राणमद्दानवारिः ॥३॥
(४) अकृतशुभनिवारं योऽत्र रागादिवारं, सुविनतमघवारं संवरोद्भुः सुवारम् ।
मदनदहनवारं दोलितान्तर्भवारं, नमत सपरिवारं तं जिनं सर्ववारम् ॥४॥
(५) तव जिन सुमते न प्रत्यहं तन्यते न, स्तुतिरिति सुमतेन कृत्तमोनिष्कृतेन ।
यदिह जगति तेन द्राग् मया संमतेन, ध्रुवमितदुरितेन श्रीश भाव्यं हितेन ॥५॥
(६) परिहृततनूपपद्म ! श्रीजिनाधीश ! पद्मप्रभ ! सदरुणपद्म द्युत्तपोहंसपद्म ! ।
त्वदखिलभविपद्मव्रातसंबोधपद्म ! स्वजन ! गतविपद्मय्येतु शर्माङ्कपद्म ! ॥६॥
(७) दुरितमिभगमोऽहं–पूर्विकार्च्यक्रमोऽहंत्यसमतमशमोऽहंकारजिद्यः समोहम् ।
कृतकरणदमो हन्तास्तलोभं तुमोऽहं–मतिहृतमसमोहं तं सुपार्श्वं तमोहम् ॥७॥
(८) समतृणमणिभाव ! ज्ञातनिःशेषभाव ! प्रहतसकलभावप्रत्यनीकप्रभाव ! ।
कृतमदपरिभाव ! श्रीश ! चन्द्रप्रभाव ! द्विजपतितनुभाव ! त्यक्तकामस्वभाव ! ॥८॥
(९) जिनपति सुविधे ! यः स्यात्त्वदाज्ञाविधेय–प्रवण इह विधेयः मस्फुरद्भागधेय ! ।
त्रिजगदनपिधेय श्लाघ ! सन्नामधेयः, श्रयति शुभविधेयस्तं लसद्रूपधेय ! ॥९॥

(१०) य इह निहतकाम मुक्तराज्यादिकामं, प्रणतसुर ! निकाम त्यक्तसद्भोग ! कामम् ।
नमति स निजकाम शीतल ! त्वा प्रकामं, श्रयतकि तमकामं सार्विका श्रीः स्वकामम् ॥१०॥

(११) विषमविशिखदोषा चारि चारुप्रदोषा, प्रतिविधति सदोषाप्यस्य किं कालदोषा ।
य इह वदनदोषापर्चिषाऽक्षालिदोषा—ऽनुक्रमलमदोषा श्रेयसा शस्तदोषा ॥११॥

(१२) कृतकुमतपिधान सत्त्वरक्षावधान, विहितदमविधान सर्वलोकप्रधानम् ।
असमशमनिधान श जिनं संदधान, नमत सदुपधान वासुपूज्याभिधानम् ॥१२॥

(१३) भवदवजलवाह कर्मकुम्भाद्यवाहः, शिवपुरपथवाहस्त्यक्तलोक प्रवाहः ।
विमल ! जय सुवाहः सिद्धिकान्ताविवाहः, शमितकरणवाह' शान्ततृड्हव्यवाहः ॥१३॥

(१४) जिनवर ! विनयेन श्रीश ! शुद्धाशयेन ! भवतरनयेन त्वं नतोऽनन्त ! येन ।
भविकमलचयेन स्फूर्जदुर्जस्व्ययेन, द्विरदगतिनयेन त्वेन भाव्यं सयेन ॥१४॥

(१५) जडिमरविसधर्मेन्नुकदानादिधर्मे !, त्रुटितमदनधर्मे ! न्यक्कृताऽऽज्ञधर्मे ! ।
जय जिनवर धर्म ! त्यक्तसंसारिधर्मे ! प्रतिनिगदितधर्मद्रव्य मुख्यार्थधर्मे ! ॥१५॥

(१६) यदि नियतमशान्ति नेतुमिच्छोपशान्ति, समभिलषत शान्ति तद्विधाप्याप्तशान्तिम् ।
प्रहतजगदशान्ति जन्मतोऽप्याप्तशान्ति, नमत विततशान्ति हे जना ! देवशान्तिम् ॥१६॥

(१७) ननु सुरवरनाथस्त्वं न नाथे नृनाथ–त्वमपि विगतनाथः किं त्वहं कुन्थुनाथ ! ।
प्रकुरु जिनसनाथः स्यां यथाऽघोपनाथ, प्रणतत्रिबुधनाथ ! प्राज्यसच्छ्रीसनाथ ! ॥१७॥
(१८) अवगमसवितारं विश्वविश्वेशितारं, तनुरुचि जिततारं सद्दयासान्द्रतारम् ।
जिनमभिनमतारं भव्यलोका ! अतारं, यदि पुनरवतारं संसृतौ नेच्छताऽरम् ॥१८॥
(१९) अनिशमिह निशान्तं प्राप्य यः सन्निशान्तं, नमति शिवनिशान्तं मल्लिनाथं प्रशान्तम् ।
अधिपमिह विशां तं श्रीर्गता चावशाऽन्तं, श्रयति दुरितशान्तं प्रोज्झ्य नित्यं वशान्तम् ॥१९॥
(२०) न्यदधत मघवा सत्प्रोल्लसच्छुद्धवासः, परिहृतगृहवासस्यांसके यस्य वासः ।
विहितशिवनिवासः प्रत्तमोहप्रवासः, स मन इह भवासः सुव्रतो मेऽध्युवास ॥२०॥
(२१) समनमयत बालः शात्रवान् योऽप्यबाल–प्रकृतिरसितबालः स्रस्तरुक्चक्रवालः ।
जयतु नमिरबालः सोऽधरास्तप्रवालः, श्वसितविजितबालः पुण्यवल्ल्यालवालः ॥२१॥
(२२) जितमदन सुनेमे नाऽनिशं नाथ नेमे, निरुपमशमिनेमे येन तुभ्यं विनेमे ।
निकृतिजलधि नेमेः सीरमोहद्रु नेमे, प्रणिदधति न नेमे तं परा अप्यनेमे ॥२२॥
(२३) अहिपतिवृतपार्श्वं छिन्नसंमोहपार्श्वं, दुरितहरणपार्श्वं संनमद्यक्षपार्श्वम् ।
अशुभतम उपार्श्वं न्यक्कृताभं सुपार्श्वं, वृजिनविपिनपार्श्वं श्रीजिनं नौमि पार्श्वम् ॥२३॥

(२४) त्रिदशविदितमान मप्तहस्तांङ्गमान, डलितमदनमान संद्गुणैर्वर्धमानम् ।
अनवरतममान क्रोधमस्यस्य मान, जिनवरममान सस्तुवे वर्धमानम् ॥२४॥

जिन ! तव गुणकीर्ते निश्वनिघ्नस्तकीर्ते, निगलदपरकीर्तेयद्गिरा धर्मकीर्ते' ।
सितकरसितकीर्तेः शुद्धधर्मैककीर्ते , स्तुतिमहमचिकीर्ते ता कृतानङ्गकीर्तेः ॥२५॥

॥ सर्वजिनस्तुतिः ॥

निगलितवृजिनाना नौमि राजीं जिनाना, सरसिजनयनाना पूर्णचन्द्राननानाम् ।
गजवरगमनाना गारिनाहस्वनाना, हतमदमदनानां मुक्तजीनासनानाम् ॥२६॥

॥ श्रुतस्तुतिः ॥

अविकलकलतारा प्राणनाथांशुतारा, भवजलनिधितारा सर्वदाऽविप्रतारा ।
सुरनरनिनता रत्नाहंतो गीर्नतारा–दनवरतमितारा ज्ञानलक्ष्मीं सुतारा ॥२७॥

॥ देवीस्तुतिः ॥

नयनजितकुरङ्गीका सुधारोचिरङ्गी, मिह किल मुदुग्ङ्गी कृत्य चित्तान्तरङ्गी ।
स्मरति हि सुचिर गीर्दैवतां यस्तरङ्गी, कुरुत इममरं गीत्यादिकद्रुन्मुरगीः ॥२८॥

३–परिच्छेदः (स्तुति–स्तव–मंत्राः)

प्रतिष्ठाविधिसंवेन्धाः, स्तुति-स्तवाः तसमन्त्रकाः । अम्मासार्थं विधिकृतां, परिच्छेदऽत्रवर्णिताः ॥४॥

भा०टी०—जे प्रतिष्ठा विधिमां उपयोगी छे अथवा तो जेमनो प्रतिष्ठा विधि साथे संबंध छे, एवी स्तुतिओ स्तवो अने मंत्रो विधिकारोना अभ्यासार्थे आ परिच्छेदमां दाखल करेल छे.

(१) विधिमां कराता देववन्दननी स्तुतिओ—

१–श्रीशान्तिः श्रुतशान्तिः प्रशान्तिकोऽसावशान्तिमुपशान्तिम् ।
नयतु सदायस्य पदाः सुशान्तिदाः सन्तुषन्ति जनै ॥

२–सकलार्थसिद्धिसाधन–बीजोपाङ्गा सदास्फुरदुपाङ्गा । भवतादनुपहतमहा–तमोपहा द्वादशाङ्गी वः ॥

३–श्रीचतुर्विधसंघस्य, शासनोन्नतिकारिणी । शिवशान्तिकरी भूयाच्छ्रीमती शान्तिदेवता ॥

४–या पातिशासनं जैनं, सद्यः प्रत्यूहनाशिनी । साभिप्रेतसमृद्ध्यर्थं, भूयाच्छासनदेवता ॥

५–यस्याः क्षेत्रं समाश्रित्य, साधुभिः साध्यते क्रिया । सा क्षेत्रदेवता नित्यं, भूयान्नः सुखदायिनी ॥

६–चतुर्भुजा तडिद्वर्णा, कमलाक्षी वरानना । भद्रं करोतु संघस्याऽच्छुप्ता तुरगवाहना ॥

७–संघेऽत्र ये गुरुगुणौघनिधे सुवैया–वृत्यादिकृत्यकरणैकनिबद्धकक्षाः ।
ते शान्तये सह भवन्तु सुराः सुरीभिः, सद्दृष्टयो निखिलविघ्नविघातदक्षाः ॥

८ मकरासनमासीनः, कुलिशांकुशपाणि-चक्रपाशाशयः। आशामाशापालो, विकिरतु दुरितानि वरुणो वः ॥

९-करोतु शान्ति जलदेवताऽसौ, मम प्रतिष्ठाविधिमाचरिष्यतः।
आदास्यतो वा मम वारि तत्कृते, प्रसन्नचिन्ता प्रदिशन्त्वनुज्ञाम् ॥

१०-यद्दर्शितजलविमलाः, सकलाः सकला जिनेश्वरप्रतिमा। सा जलदेवी पुरसख-भूभुजां मंगल देयात् ॥

११-उपसर्गवलयविलयन-निरता जिनशासनावनैकरताः।
द्रुतमिह समीहितकृते, स्युः शासनदेवता भवताम् ॥

१२-ज्ञानादिगुणयुतानां, नित्य स्वाध्यायसंयमरताना। विदधातु भवनदेवी, शिव सदा सर्वसाधूनाम् ॥
१३-अम्बा बालाङ्किताङ्काऽसौ, सौख्यख्यातिं दधातु नः। माणिक्यरत्नालङ्कार-चित्रसिंहासनस्थिता ॥
१४-उन्मृष्टरिष्टदुष्ट-ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि। संपादितहितसपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥
१५-अर्हंस्तनोतु सश्रेयः, श्रियं, यद्ध्यानतो नरैः। अप्यैन्द्री सकलाऽत्रैहि, रंहसा सहसौच्यत ॥
१६-ओमिति मन्ता यच्छासनस्यनन्ता सदा यदङ्घ्रिश्च। आश्रीयते श्रिया ते, भवतो भवतो जिनाः पान्तु ॥
१७-नवतत्त्वयुता त्रिपदी-श्रिता रुचिज्ञानपुण्यशक्तिमता। वरधर्मकीर्तिविद्या-नन्दाऽऽस्या जैनगीर्जीयात् ॥
१८-पातालमन्तरिक्षं, भवन वा या समाश्रिता नित्यम्। साऽत्रावतरतु जैनीं, प्रतिमामधिवासना देवी ॥
१९-विश्वाशेषसुवस्तुषु, मन्त्रैर्याजस्रमधिवसति वसतौ। सेमामवतरतु श्री-जिनतनुमधिवासना देवी ॥

२०–प्रोत्फुल्लकमलहस्ता, जिनेन्द्रवरभवनसंस्थिता देवी । कुन्देन्दुशुक्लवर्णा, देवी अधिवासना जयति ॥
२१–यदधिष्ठिताः प्रतिष्ठाः, सर्वाः सर्वास्पदेषु नन्दन्ति । श्रीजिनबिम्बं[1] सा विशतु, देवता सुप्रतिष्ठमिदम् ॥
२२–जइ सग्गे पायाले, अहवा खीरोदहिम्मि कमलवणे । भयवइ करेहि सत्तिं, सन्निज्झं सयलसंघस्स ॥
२३–अट्ठविहकम्मरहियं, जा वंदइ जिणवरं पयत्तेण । संघस्स हरउ दुरियं, सिद्धा सिद्धाइया देवी ॥
२४–सर्वे यक्षाम्बिकाद्या ये, वैयावृत्त्यकराः सुराः । क्षुद्रोपद्रवसंघातं, ते द्रुतं द्रावयन्तु नः ॥

सूचना—प्रत्येक विधान प्रसंगे कराता देववन्दनमां प्रतिष्ठाप्य जिनस्तुति अने ते पछीनी वे एम ३ स्तुतिओ कहेवाइ गया पछी सिद्धाणं बुद्धाणं पछीना कायोत्सर्गान्ते शान्तिनाथ आदिनी स्तुतिओ कहेवाय छे. कदापि अधिकृतजिनस्तुति याद न होय तो " अर्हंस्तनोतु स० " इत्यादि स्तुतिओ कहेवी.

(२) स्तवोः—

१–पंचपरमेष्ठि–महास्तवः । (वज्रपंजरस्तोत्रम्)

परमेष्ठिनमस्कारं, सारं नवपदात्मकम् । आत्मरक्षाकरं वज्र–पञ्जराभं स्मराम्यहम् ॥१॥
ॐ नमो अरिहंताणं, शिरस्कं शिरसि स्थितम् । ॐ नमो सव्व सिद्धाणं, मुखे मुखपटं वरम् ॥२॥
ॐ नमो आयरियाणं, अंगरक्षातिशायिनी । ॐ नमो उवज्झायाणं, आयुधं हस्तयोर्दृढम् ॥३॥

---

१ " जैनं बिम्बं " इत्यपि पाठान्तरम् ।

ॐ नमो लोए सव्वसाहूण, मोचकं पादयोः शुभे। एसो पंचनमुक्कारो, शिला वज्रमयी तले ॥४॥
सव्वपावप्पणासणो, वप्रो वज्रमयो बहिः। मंगलाण च सव्वेसिं, खादिरांगारखातिका ॥५॥
स्वाहान्तं च पदं ज्ञेयं, पढमं हवइ मंगलं। वप्रोपरि वज्रमयं, पिधानं देहरक्षणे ॥६॥
महाप्रभावा रक्षेयं, क्षुद्रोपद्रवनाशिनी। परमेष्ठिपदोद्भूता कथिता पूर्वसूरिभिः ॥७॥
यश्चैवं कुरुते रक्षां, परमेष्ठिपदैः सदा। तस्य न स्याद् भयं व्याधि-राधिश्चापि कदाचन ॥८॥

२–श्रीपार्श्वनाथस्तवः—

ॐ नमः पार्श्वनाथाय, विश्वचिन्तामणीयते। ह्रीँ धरणेन्द्रवैरोट्या-पद्मादेवीयुताय ते ॥१॥
शान्ति-तुष्टि-महापुष्टि-धृतिकीर्तिविधायिने। ॐ ह्रीँ द्विड्व्यालवेताल,-सर्वाधिव्याधिनाशिने ॥२॥
जयाऽजिताख्या विजया-ख्यापराजितयान्वितः। दिशापालैर्ग्रहैर्यक्षै-र्विद्यादेवीभिरन्वितः ॥३॥
ॐ असिआउसाय नम-स्तत्र त्रैलोक्यनाथताम्। चतुःषष्टिसुरेन्द्रास्ते, भासन्ते छत्रचामरैः ॥४॥
श्रीशंखेश्वरमण्डन-पार्श्वजिन। प्रणतकल्पतरुकल्प!। चूरय दुष्टव्रातं, पूरय मे वाञ्छितं नाथ! ॥५॥

३–श्रीपार्श्वनाथस्तोत्रम्—

तं नमह पासनाहं, धरणिंदनमंसिअं दुहविणासं। जस्स पभावेण सया, नासंति उवद्दवा बहवे ॥१॥
पइं समरंताण मणे, न होइ वाही न तं महादुक्खं। नामं चिअ मंतसमं, पयडं नत्थित्थ संदेहो ॥२॥

जलजलणवाहिसप्प-सीहचोरारिसंभवे खिप्पं । जो सरइ पासनाहं, पहवइ न कया भयं तस्स ॥३॥
इहलोगट्ठी परलोगट्ठी जो सरइ पासनाहं तु । तं तह सिज्झइ खिप्पं, इय नाहं सरह भगवंतं ॥४॥

४ परमेष्ठिस्तवः

ओमिति नमो भगवओ, अरिहंत-सिद्धायरिय-उवज्झाय । वरसव्वसाहु मुणिसंघ-धम्मतित्थप्पवयणस्स ॥१॥
सप्पणवनमो तह भगवइ-सुयदेवयाइ सुहयाए । सिवसंतिदेवयाणं, सिवपवयणदेवयाणं च ॥२॥
इंदागणिजमनेरइय-वरुणवाउकुबेरईसाणा । बंभो नागुत्ति दसण्ह-मवि य सुदिसाण पालाणं ॥३॥
सोम-यम-वरुण-वेसमण-वासवाणं तहेव पंचण्हं । तह लोगपालयाणं, सूराइगहाण य नवण्हं ॥४॥
साहंतस्स समक्खं, मज्झमिणं चेव धम्मणुट्ठाणं । सिद्धिमविग्घं गच्छउ, जिणाइनवकारओ धणीयं ॥५॥

५—श्रीनन्नसूरिरचितं-सप्ततिशतयंत्रस्तवः

" पणमिय सिरिसंतिजिणं, थुणामि अंकेहिं अरिहसत्तरिसयं । परमिट्ठीकुट्ठेसुं आगमविहिसव्वओभद्दं ॥१॥
तेयाला चउवीसा, तीसच्छत्तीस सत्तवीसा य । कम्मवणदहणनिउणा, जिणवरदा दिंतु मह सिद्धिं ॥२॥
पणतीसा इगुयाला, बायाल तिवीस इगुणतीसा य । कल्लाणपंचकलिया, संघस्स कुणंतु कल्लाणं ॥३॥
बावीसा अडवीसा, चउतीसा दुगुणवीस छायाला । सिहिअहियाहियहिअ अहिय, दुट्ठट्ठियमोहजोहहरा ॥४॥
इगुणयाला पणयाला, छव्वीसा सत्तवीस तित्तीसा । जरमरणरोगरहिया, रणरहिया मंगलं दिंतु ॥५॥

इगतीसा बत्तीसा-छत्तीस चउचत्त पन्नतीसा य । वंतरभूयविमाया, रक्खसगहरक्खग्गा हुतु ॥६॥
इय विहिणा सत्तरिसयं, पडलिहियं जो थुणेइ अच्चेइ । तस्स न पहवइ विग्घं, सिग्घ सिद्धि समज्जिणइ ॥७॥
सिरिजिनप्पहसूरिपणयं, सत्तरिसय जिणवराण भत्ताण । भवियाण कुणउ संतिं, पुट्ठि तुट्ठि धिइं कित्तिं ॥८॥

६-शाश्वताऽशाश्वतजिनस्तवः

पञ्चानुत्तरशरणा, ग्रैवेयककल्पतल्पगतसदना । ज्योतिष्कव्यन्तरभवन-वासिनी जयति जिनराजी ॥१॥
वैताढ्यकुलाचलनाग-दन्तवक्षारकूटशिखरेषु । ह्रदवर्षकुण्डसागर-नदीषु जयताज्जिनवराली ॥२॥
इषुकारमानुषोत्तर-नन्दीश्वररुचककुण्डलनगेषु । सिद्धालयेषु जियाज्जिनपद्धतिरिद्धतरवासि ॥३॥
यत्र बहुकोटिसंख्याः, सिद्धिमगु पुण्डरीकमुख्यजिनाः । तीर्थानामादिपदं, स जयति शत्रुंजयगिरीशः ॥४॥
अष्टापदाद्रिशिखरे निजनिजसंस्थानमानवर्णधराः । भरतेश्वरनृपरचिताः, सद्रत्नमया जयन्तु जिनाः ॥५॥
ऋषभजिनपदस्थाने, बाहुबलिविनिर्मित महस्रारम् । रत्नमयधर्मचक्रं, तक्षशिलापुरवरे जयति ॥६॥
विंशत्या तीर्थंकरै-रजिताद्यैर्यत्र शिवपद प्राप्तम् । देवकृतस्तूपगणः स, जयति संमेतगिरिराज ॥७॥
मथुरापुरीप्रतिष्ठः, सुपार्श्वजिनकालसंभवो जयति । अद्यापि सुराभ्यर्च्यः, श्रीदेवनिर्मितः स्तूपः ॥८॥
श्रीब्रह्मेन्द्रदशानन रामचन्द्रमुख्यैः प्रपूजिते जयतः । अगादियानगरस्थे, जिनबिम्बे दिव्यरत्नमये ॥९॥
यस्तिष्ठति वरवेश्मनि, सार्द्धाभिर्द्रविणकोटितिभिः । निर्मापितोऽम्मराजा, गोपगिरौ जयति जिनवीरः ॥१०॥

नेमेः कल्याणत्रिक-मभवन् निष्क्रमणमुख्यममरकृतम् । यस्मिन्नसौ महात्मा, रैवतकमहागिरिर्जयति ॥११॥
मोढेरपुरनिवासी, ब्रह्मोपपदेन शान्तिना रचितः । स्वयमेव सप्तहस्तः, श्रीवीरजिनेश्वरो जयति ॥१२॥
जयति सदतिशययुक्तः, स्तंभनकनिकेतनो जिनः पार्श्वः । पायात् प्रतिकृतिपूज्यो, मुण्डस्थलसंस्थितो वीरः ॥१३॥
नमिविनमिकुलान्वयिभिर्विद्याधरनाथकालकाचार्यैः । कासहृदाख्ये नगरे, प्रतिष्ठितो जयति जिनवृषभः ॥१४॥
नागेन्द्रचन्द्रनिर्वृति-विद्याधरमुख्यसकलसंघेन । अर्बुदकृतप्रतिष्ठो, युगादिजिनपुंगवो जयति ॥१५॥
विमलनरेन्द्रकृतस्तुति-वृषभोऽर्बुदनगविशेषको जयति । जयतीह जगति शान्तिः, श्रीगोकुलवासकृतपूजः ॥१६॥
पांडवमात्रा कुन्त्या, संजाते श्रीयुधिष्ठिरे पुत्रे । श्रीचन्द्रप्रभनाथः, प्रतिष्ठितो जयति नाशिक्ये ॥१७॥
कलिकुण्डकुर्कुटेश्वर-चम्पाश्रावस्तिगजपुरायोध्या । वैभारगिरिरपापा, जयन्ति पुण्यानि तीर्थानि ॥१८॥
ॐकारनगरखायडजालंधरचित्रकूटसत्यपुरे । ब्रह्माणपल्लिकादिषु, ऋषभादिजिना जयन्त्वनघाः ॥१९॥

७—श्रीचन्द्रप्रभविद्यास्तवनम् ।

ॐ चन्द्रप्रभ ! प्रभाधीश !, चन्द्रशेखरचन्द्रभूः । चन्द्रलक्ष्माङ्क ! चन्द्राङ्ग !, चन्द्रबीज ! नमोऽस्तु ते ॥१॥
ॐ ह्रीं श्रीं ह्रूं चन्द्रप्रभ, ह्रूं श्रीं कुरु कुरु स्वाहा । प्रभो सिद्धिमहासिद्धि-तुष्टिपुष्टिकरो भव ॥२॥
द्वादशसहस्रजप्तो, वाञ्छितार्थफलप्रदः । महितस्त्रिसंध्यं जप्तः, सर्वाधिव्याधिनाशकः ॥३॥
सुरासुरेन्द्रमहितः, श्रीपाण्डवनृपार्चितः । श्रीचन्द्रप्रभतीर्थेश !, श्रियं चन्द्रोज्ज्वलां कुरु ॥४॥

श्रीचन्द्रप्रभविधेय, स्मृता सद्यः फला मता। भयाधिव्याधिविध्वंस-दायिनी मे वरप्रदा ॥५॥

८—श्रीअम्बिकास्तव.

देवि गन्धर्वविद्याधरैर्वन्दिते!, जय जयाऽमित्रवित्रासनि विश्रुते!। नूपुरारावसंरुद्धभुवनोदरे!, मुखररवकिंकिणीतारतारस्वरे! ॥१॥

ॐ ह्रूँ मन्त्ररूपे शिवशंकरे!, अम्बिके देवि जय जन्तुरक्षाकरे!

तारहारावलीराजितोरः स्थले!, कर्णताडङ्कविभ्राजिगल्लस्थले! ॥२॥

ॐ ह्रूँ स्तम्भिनी मोहनीदुष्टउच्चाटनी, क्षुद्रविद्रावणी दोषनिर्नाशिनी।

जम्भिनी भ्रान्तिभूतग्रहस्फेटिनी, शान्तिधृतिकीर्तिमतिसिद्धिससाधिनी ॥३॥

ॐ ह्रूँ मन्त्रनिधेन विधे स्वयं, ह्रूँ आगच्छ २ त्वं कुरु २ दुरितक्षयम्।

ॐ प्रचण्डे २ प्रसीद प्रसन्नेक्षणे, ह्रूँ सदानन्दरूपे सुरूपे विशालेक्षणे ॥४॥

ह्रूँ नमो देवि सत्त्रिशुभ भैरवे! (त्रि!), जये अपराजिते तप्तहेमच्छवे (वि!)।

ॐ ह्रूँ जगज्जन्मसंहारसंसर्ज्जने!, ह्रूँ कूष्माण्डि भयव्याधिविध्वसने! ॥५॥

सिंहयानस्थिते भीमरूपस्तुवे, नाममन्त्रेण विद्राणितोपद्रवे।

अवतावतरैवतगिरिवासिनी, अम्बिके देवि जय जगत्स्वामिनी ॥६॥

ह्रूँ महाविघ्नसघातनिर्नाशिनी, दुष्टपरमन्त्रविद्यावलच्छेदिनी।

हस्तविन्यस्तसहकारफललुम्बिका, हरतु दुरितानि देवी जगत्यम्बिका ॥७॥
इति जिनेश्वरसूरिभिरम्बिका, भगवती शुभमन्त्रपदैः स्तुता । प्रवरपत्रगता शुभसंपदं, वितरतु प्रणिहन्त्यशुभं मम ॥८॥

९. —कुरुकुल्लादेवीस्तुतिः—

प्रणवहृदि यदीयं नाम मायासमिद्धं, वहसि पडरलीनामातृकोपान्तरौद्रे ।
भगवति ! कुरुकुल्ले ! तं गलद्रोगराजं, (शुचि) निरुदयभूता नैव लुम्पन्ति लूताः ॥१॥
कमलति कपिकच्छूर्माल्यति व्यालपाली, तुहिनति दववह्निर्मोदति ग्रीष्मकालः ।
शिशिरकरति सूरः क्षीरति क्षारनीरं, विषममृतति मातस्त्वत्प्रभावेण पुंसाम् ॥२॥
ज्वरभरपरितापोद्रक्तपित्तातिवात–क्षतधुततनुनिर्यद्बुद्बुदच्छिरौद्राः ।
अपि घनरसपूतिक्लिन्नभिन्नास्थिमांसा–स्त्वदभिमुखमुपेता नावसीदन्ति सन्तः ॥३॥
श्रुतिपथगतमुच्चैर्नाम यस्याः पवित्रं, विषमतमविषर्त्तिं नाशयत्येव सद्यः ।
त्रिभुवनविनता सा संमुखीभूय देवी, वितरतु कुरुकुल्ला संपदं मे विशालाम् ॥४॥
ज्वलनजलमृगेन्द्रोद्दामसंग्रामशत्रु–प्रभृतिकमपयाति त्वद्गतध्यानमात्रात् ।
धृततनयशरीरारोग्यसौभाग्यभाग्या–दिकमुपचयमेत्यभ्यर्थनाचावकीनात् ॥५॥
क्रियति महति दूरे त्वन्नतानां श्रुतश्रीः, कथमिव दुरवापा तैर्जगज्जैत्रलक्ष्मीः ।

अतुलभमिह किं वा वस्तु तेषां समस्तं, त्रिभुवनजननि ! त्वं वीक्षसे यान् प्रसन्ना ॥६॥
सुभटकरतले त्वं शस्त्ररूपासि शक्ति-स्त्वमवनिपतिपूज्यैर्देविमन्त्रादिशक्तिः ।
किमपरमनिलादौ त्वं महाप्राणशक्तिः, सकलभुवनपूज्या त्वं च जैनेन्द्रशक्तिः ॥७॥
प्रतिविषयमजस्रं स्वेच्छयागच्छदेतत्, पवनविजययोगात् संनिरुध्य स्वचित्तम् ।
यदिह किमपि सन्तः सततं ध्याम पश्य-न्त्यनितयमयमुच्चैर्देवि युष्मत्प्रसादः ॥८॥
सकलकरणरोधाद् ध्यानलीनस्य पुंस, स्फुरसि मनसि यस्य त्वं महोद्योतरूपाः ।
सपदि विदलयन्ती तस्य जाड्यान्धकारं, समुदयति समन्तात् केवलज्ञानलक्ष्मीः ॥९॥
॥ इति श्रीवादिचक्रवर्ति श्रीदेवाचार्यविरचिता कुरुकुल्लादेवीस्तुतिः ।
ॐ ह्रीं कुरुकुल्ले २ सर्पघोणसमूपकान् वृश्चिकान् उच्चाटय २ ह्रीं कुरुकुल्ले स्वाहा। सप्तवारान् शयनकाले स्मर्यंते ।
१०—सप्ततिशत-यन्त्रालिखनविधिः—
कसयसुमायणम्मि, तिमुद्धिपरिमाणसंकुमकमेण, । कप्पूरागुरुचंदण-विमीसिय लिहह सततसय ॥१॥
अट्ठुत्तरं सहस्स, जावो एयस्स जाइकुसुमेहिं । कायव्वो मत्त य सत्तरामरा (४९) मुग्गलगहम्मि ॥२॥
सामन्नमुग्गला जे, उवसमं जंति मत्तयदियहेहिं । दुट्ठावि मुग्गला जे, खलु नासंति य पुन्नजोएण ॥३॥
एगुणवासदिणावि हु, मोग्गपगहियं जतमोहलिउं । पाइजइ अडदुट्ठमि, मुग्गले कुणइ होममिणं ॥४॥

राईसरिसवगुगुल–कसिणुन्नावेडिसस्स समिहीओ, । काउं तिकोणकुंडं, चच्चरे नयरमज्झे व ॥५॥
होमेह मूलमंतेणं, गुगुलं मूलजावकुसमेहिं । काउं दसंसगुलियं, अट्ठुत्तरसयपमाणं च ॥६॥
दिसिबंध अप्परक्खा, दसदिसिबलिक्खेवपुव्वयं विहिणा । होमंताणं दुट्ठावि, वंतरा पायडा हुंति ॥७॥
कयघोरुवसग्गावि हु, दूरं नासंति सुथिरचित्ताणं । सत्तरिसयप्पभावा, जह करिणो सिंहपोयस्स ॥८॥
एवं मुग्गल आगास–चारिणी खित्तवालगिहदेवी । सत्तरिसयप्पसाया, दोसा नासंति पाणीणं ॥९॥
जो कुणइ लक्खजावं, सत्तरिसयमंतकोडिजावं वा । सो कीलइ वंतरदेवयाहिं समयं सुसामिव्व ॥१०॥
एयं च रुप्पथाले, लिहियं वंझाण धारए गब्भं, । दिणसत्तसत्तजाई–कुसुमसहस्सेहिं परिजवियं ॥११॥
रक्खाकयकडिबद्धा, हणियवाहाइदोससयजालं । दुद्धेण मज्झ पीयं, धारइ गब्भं न संदेहो ॥१२॥
नासि गब्भविणासो, जायइ जुवईण नालमरणाइ । दोसकयं निन्नासई, रक्खा दससहसपरिजवियं ॥१३॥
कुंकुमगोरोयणरत्त–चंदणं काउं एगओ लिहियं । नीलंबरेसुं जंतं, सत्तरिसयं सिद्धपणयपयं ॥१४॥
कणवीररत्तेयआरत्त–कुसमदससहस्सपरिजवियं, । नारीणं कुणइ वसे, भत्तारं दीवए तवियं ॥१५॥
दूराओ च्चिय आणइ, जुवईए हूँकारगब्भिय जंतं । झाणेणारत्तेणं रत्तुप्पलसहसजावेणं ॥१६॥
कसिणचउद्दसिमंगल, रविवारे मडयकप्परे पवरे । विइकोइलराईविस, कणयरसअनाडिरत्तेणं ॥१७॥
उववासिएण लिहियं, अइकसिणसुपुप्फसहसपरिजवियं । इसरधयानिबद्धं, सत्तुं देसाउ नासेई ॥१८॥

सारइ महीमंडल-पक्खित्त कसिणचत्तकुसुमेहिं । परिजविय सत्तरिसयं, पीयं थमेउ रिउवयण ॥१९॥
विहिओ कुम्मणदोसो, नासइ दिस्ठेण परमजतेण । सुहकज्जे सियज्झाण, सियकुसुमसहस्सदसजावो ॥२०॥
॥ इति सत्तरिसयविधिः सपूर्ण ॥
॥ क्षिप ॐ स्वाहा ॥ ह्स्वा ॐ पक्षि ॥ रक्षा वार ३ स्मरणीया
आसन्नदुरतिमिरं, मालमलविंदुं च कठसरभग । सिवयनासो नासइ, मदग्गीरायमद वा ॥१॥
ॐ पद्मावति देवि मम सर्वोपद्रवान् रक्ष रक्ष स्वाहा' इति श्री सपूर्ण ॥ श्री शुभं भवतु ॥

११-सप्ततिशत-यंत्रस्तुतिः ।

आनदोल्लासनमन्त्रिदशपतिशिरः प्रवनपूज्यपदम् । जिनसप्ततिशतमानम्य वच्मि तस्यैव सस्तवनम् ॥१॥
जंबूद्वीपे भरतैरावतयोरेकमेकमभिनौमि तद्वात्रिंशद्विजयेष्वेकैकं जिनवरं वंदे ॥२॥
धातकिखंडद्वीपे द्विगुणे भरतद्विके जिनद्वितयम् । एरावते च जिनयुगलममलमभिनौमि मद्भक्त्या ॥३॥
वंदे महाविदेहे, जिनाश्चतुःषष्टिविजयसंभविनः । केवलकिरणोद्योतितजगत्त्रयानस्तसंतमसः ॥४॥
श्रीपुष्करार्द्धनाम्नि च, तावत एव प्रमाणतः प्रयतः । परमेष्टिनः समभिष्टौमि, नष्टकर्माष्टविद्विषान् ॥५॥
वरकनकशंखविद्रुम-मरकतघनसन्निभ विगतमोहम् । सप्ततिशतं जिनानां, सर्वाऽमरपूजितं वन्दे ॥६॥
दवदहनभूभृदभस्तस्करविद्युत्फणीभनिस्फोटम् । हरि-मारि-बंधनभयं, तत्कालसंस्मृत हरति ॥७॥

योयंत्रस्थं ध्यायति, सप्ततिशतमर्हतां पुलकितांगः । न भवंति रुजो नश्यंति, चारयस्तस्य सर्वेऽपि ॥८॥
द्वौ सप्त सप्ततिरशीति–रथ संयुता चतुर्भिश्च । एकाशीतिरशीतिः पट् चक्रत्रयोऽष्टौ तथैकः स्यात् ॥९॥
त्र्यधिकाशीतिः सप्तति–रष्टयुताशीतिरेककोना च, । द्वाशीतिश्चत्वारः, पंच च यंत्रे विधिर्ज्ञेयः ॥१०॥
क्षितिपतिमतिसंक्रुद्धं, जपितं बीजाक्षरैः प्रसादयति । हरहुंहः सरसुंसः ॐ क्लीं ह्रीं हुँ फुट् स्वाहा ॥११॥

घनसारचंदनद्रव–लिखितममत्रे पयः प्रपीतं च । विस्फोटनाशनं खलु कुर्यात्द्वारे तथा न्यस्तम् ॥१२॥
पापमलं दहति भृशं, हृत्पंकजकोटरे तथा ध्यातम् । त्रिभुवनवशमानयतियोत्रमेतत्प्रयुंजयति ॥१३॥
पोडशकोष्टगतं यः, सबीजमेतत्करे दधात्यनिशम् । तस्य करस्थाः पुंसः कल्याणपरंपराः सकलाः ॥१४॥

॥ इति श्रीसप्ततिशतजिन यंत्रस्तुतिः ॥

" सत्तरिसय जिण पोडश देव्या बीजाक्षरसमन्विता मूलमंत्रेण सत्तरिसय जाप (१७०) सुगंधिपुष्पैः पोडशदेव्याः पुष्प १६ हरहुंहः पुष्प १६ क्षिप ॐ स्वाहा पुष्प ५, मध्ये, पुष्प ६ विजाक्षर ह्म्ल्व्र्यूं २ क्ष्रौं १ पुष्प ३ चतुःकोणे यक्ष पुष्प ६ अंबिकाशासनदेव्याः पुष्प २ ओँ ह्रां ह्रीं ह्रुं ह्रूं ह्रः पुष्प ६ एवं पुष्प २२८, भूर्यपट्टे वा लिख्य पूजनियं गृहे सर्वसंपदं करोति, कुंकुमकर्पूरकस्तुरिकागोरोचनाभिर्लिख्य करे कट्यां वा बद्धे सर्वज्वरपिशाचशाकिन्याद्या दोषा नश्यंति. स्थाले लिखित्वा शीतलिका नाशयति ॥ इति श्रीसंपूर्णः ॥

। ध्वजदण्डमर्कटथामुत्कीर्यं
३४ यन्त्रकम्—

९	१६	२	७
६	३	१३	१२
१५	१०	८	१
४	५	११	१४

। तिजयपहुत्तेति सत्तरिसयजिन यंत्रकम्। १

२५ ह ॐ रोहिण्यै नमः	८० र ॐ प्रज्ञप्त्यै नमः	क्षि	१५ हुं ॐ वज्रशृंखलायै नमः	५० हः ॐ वज्राकुशायै नमः
२० स ॐ अप्रतिचक्रायै नमः	४५ र ॐ पुरुषदत्तायै नमः	प	३० सुं ॐ काल्यै नमः	७५ सः ॐ महाकाल्यै नमः
क्षि	प	ॐ	स्वा	हा
७० ह ॐ गौर्यै नमः	३५ र गन्धार्यै नमः	स्वा	६० हुं ॐ सर्वास्त्रा महाज्वालायै नमः	५ हः ॐ मानव्यै नमः
५५ स ॐ वैरुट्यायै नमः	१० र ॐ अच्छुप्तायै नमः	हा	६५ सु ॐ मानस्यै नमः	४० मः ॐ महामानस्यै नमः

श्रीसप्ततिशतयन्त्रं २ श्रीनन्नसूरिस्तवानुसारि

ह्रूँ	ह्रीँ	ह्रूँ	ह्रौँ	ह्रः
४३ ह ॐ रोहिण्यै नमः	२४ र ॐ प्रज्ञप्त्यै नमः	३० क्षि ॐ वज्रशृंखलायै नमः	३६ हुं ॐ वज्रांकुश्यै नमः	३७ हः ॐ अप्रतिचक्रायै नमः
३५ स ॐ महामानस्यै नमः	४१ र ॐ मोहिन्यै नमः	४२ प ॐ जयायै नमः	२३ सुं ॐ जंभायै नमः	२९ सः ॐ पुरुषदत्तायै नमः
२२ क्षि ॐ मानस्यै नमः	२८ प ॐ अपराजितायै नमः	३४ ॐ	४० स्वा ॐ विजयायै नमः	४६ हा ॐ काल्यै नमः
३९ ह ॐ अच्छुप्तायै नमः	४५ र ॐ मोहायै नमः	२६ स्वा ॐ अजितायै नमः	२७ हुं ॐ जंभिन्यै नमः	३३ हः ॐ महाकाल्यै नमः
३१ स ॐ वैरुट्यायै नमः	३२ र ॐ मानव्यै नमः	३८ क्ष ॐ सर्वास्त्रामहाज्वालायै नमः	४४ सुं ॐ गन्धार्यै नमः	२५ सः ॐ गौर्यै नमः

॥ सप्ततिशतजिनयन्त्रकम् २ संस्कृतस्तोत्रानुसारि ॥

ॐ वरकनकशंखविद्रुम-

२ ह	७ र	७७ हु	८४ हः
८१ स	८० र	६ सुं	३ सः
८ ह	१ र	८३ हु	७८ हः
७९ स	८२ र	४ सु	५ सः

मरकत घनसंनिभ विगतमोहम्।

सप्ततिशतं जिनानां-

सर्वामरपूजितं वन्दे स्वाहा।

सूचनाः—स्तवो पैकीना नं० १ ना स्तवनो उपयोग सकलीकरण (आत्मरक्षा) माटे कराय छे. न० २-३ ना स्तवो विधिना देववंदनमां चैत्यवन्दन तरीके बोलाय छे, न० ४ थी ६ नं० ना स्तवो विधिविधानना देववदनमां स्तवनने ठेकाणे बोलाय छे. ज्यारे ७ थी ११ नं० सुधीना स्तवो तथा सप्ततिशत यंत्रकल्प तेमज तेना ३ यंत्रो विशेष कार्यमां उपयोगी थवा माटे आपेल छे

प्रतिष्ठोपयोगी-अभ्यसनीय-मन्त्रा.—

१—सकलीकरणमन्त्र, ॐ नमो अरिहंताणं हृदयं रक्ष २। ॐ नमो सिद्धाणं ललाटं रक्ष २। ॐ नमो आयरियाणं शिखां रक्ष २। ॐ नमो उवज्झायाणंकवचम्। ॐ नमो लोए सव्व साहूणं अस्त्रम्। (७ वारान्)

२—क्षुचिविद्या-ॐ नमो अरिहंताणं। ॐ नमो सिद्धाणं। ॐ नमो आयरिआणं। ॐ नमो उवज्झायाणं।

ॐ नमो लोए सव्वसाहूणं । ॐ नमो आगासगामीणं । ॐ नमो चारणलद्धीणं । ॐ ह्रः क्षः नमः । अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा । (५–७ वारान्)

पादलिप्तीया शुचिविद्या—ॐ नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरिआणं नमोउवज्झायाणं नमो लोए संव्वसाहूणं ॐ नमो सव्वोसहिपत्ताणं ॐ नमो विज्जाहराणं ॐ नमो आगासगामीणं ॐ कं क्षं नमः अशुचिः शुचिर्भवामि स्वाहा । (सुरभिमुद्रया ५–७ वारान्न्यसेत्)

३—बलिमंत्र-ॐ ह्रूँ क्ष्वीँ सर्वोपद्रवं बिम्बस्य रक्ष रक्ष स्वाहा । (७ वारान् बलिमंत्रणं कवचो दिग्बन्धश्च)

पादलिप्तीय बलिमन्त्रः—

ॐ नमो अरिहंताणं नमो सिद्धाणं नमो आयरिआणं नमो आगासगामीणं नमो चारणाइलद्धीणं जे इमे किंनरकिंपुरिसमहोरगगरुलसिद्धगंधव्वजक्खरक्खसभूयपिसायडाइणिपभिई जिणघरणिवासिणो निय-नियनिलयठिया पवियारिणो संनिहिया य असंनिहिया य ते सव्वे विलेवणपुप्फधूवपईवसणाहं बलिं पडिच्छन्तु तुट्ठिकरा भवन्तु सिवंकरा भवन्तु संतिकरा भवन्तु सत्थयणं कुणंतु सव्वजिणाणं संनिहाणभा-वओ पसन्नभावेण सवत्थ रक्खं कुणंतु सव्वदुरियाणि नासंतु सव्वासिवं उवसमेंतु संतिपुट्ठितुट्ठिसिव-सत्थयणकारिणो भवंतु स्वाहा ।

पादलिप्तीयदिग्बन्धमंत्रः—ॐ हूँ क्षूँ फुट् किरिटि किरिटि घातय घातय परविघ्ना नास्फोटयाऽऽस्फोटय

सहस्रखण्डान् कुरु कुरु परमुद्रां छिन्द छिन्द परमन्त्रान् भिन्द भिन्द क्षः फट् स्वाहा। (अनेन श्वेतसर्षपानभिमन्त्र्य दिग्बन्धाय पूर्वादिदिक्षु क्षेप्या)

४—जलादिमंत्र-१ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आगच्छ २ जलं गृह्ण २ स्वाहा। जलकलशाभिमंत्रण ॥ २ ॐ नमो यः शरीरावस्थिते पृथु २ विपृथु २ गन्धान् गृह्ण २ स्वाहा। अथ गन्धाधिवासनम् ॥ ३ ॐ नमो यः सर्वतो मे मेदिनी पुष्पवती पुष्प गृह्ण २ स्वाहा। पुष्पाभिमन्त्रणं ॥ ४ ॐ नमो यः सर्वतो बलिं दह २ महाभूते तेजोधिपते धू धू धूपं गृह्ण २ स्वाहा। धूपाभिमंत्रण ॥

पादलिप्तीयजलादिमंत्रो—ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते महाभूते आपो जलं गृह्ण २ स्वाहा, (प्रथमस्नानपट्कमंत्रः) ॥ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते पृथु विपृथु पृथु विपृथु गन्धं गृह्ण २ स्वाहा, (अष्टवर्गादि स्नान समूलमंत्रः) ॥ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते मेदिनि पुरु पुरु पुष्पवति पुष्प गृह्ण २ स्वाहा (सर्वस्नान पुष्प मंत्र) ॥ ॐ नमो यः सर्वशरीरावस्थिते दह दह महाभूते तेजोधिपते धू धू धूपं गृह्ण २ स्वाहा। (समस्तस्नान धूप मंत्र.) ॥

५ जिनाह्वानमंत्र-ॐ नमोऽर्हते परमेश्वराय चतुर्मुखपरमेष्ठिने त्रैलोक्यनताय अष्टदिक्कुमारीपरिपूजिताय देवाधिदेवाय दिव्यशरीराय त्रैलोक्यमहिताय आगच्छ आगच्छ स्वाहा।

६ जिनविज्ञप्तिमंत्र—ॐ इह आगच्छन्तु जिना. सिद्धा भगवन्तः स्वसमयेनेहानुग्रहाय भव्यानां भः

स्वाहा । ॐ क्षाँ क्ष्वीं हूँ क्षीं भः स्वाहा (इत्ययं वा) ।

७-जिनस्वागतमंत्र—स्वागता जिनाः सिद्धाः प्रसाददाः सन्तु प्रसादं धिया कुर्वन्तु अनुग्रहपरा भवन्तु भव्यानां स्वागतमनुस्वागतम् ।

८—अर्घनिवेदनमंत्र-ॐ भः अर्घं प्रतीच्छन्तु पूजां गृह्णन्तु गृह्णन्तु जिनेन्द्राः स्वाहा ।

९—शुद्धजलस्नात्रकाव्य-चक्रे देवेन्द्रराजैः सुरगिरिशिखरे योऽभिषेकः पयोभि-र्नृत्यन्तीभिः सुरीभिः ललितपदगमं तूर्यनादैः सुदीप्तैः । कर्तुं तस्यानुकारं शिवसुखजनकं मन्त्रपूतैः सुकुम्भै-र्बिंबं जैनं प्रतिष्ठाविधिवचनपरः स्नापयाम्यत्र काले ॥१॥

१०—अधिवासनामंत्रद्वय—ॐ नमो खीरासवलद्धीणं ॐ नमो महुआसवलद्धीणं। ॐ नमो संभिन्नसोआतां ॐ नमो पयाणुसारीणं ॐ नमो कुट्ठद्धीणं जमिअं विज्जं पउंजामि सा मे विज्जा पसिज्झ, ॐ अवतर २ सोमे २ कुरु २ वग्गु २ निवग्गु २ सुमिणे सोमणसे महुमहुरे ॐ कविल ॐ कः क्षः स्वाहा (अथवा) ॐ नमः शान्तये हूँ क्षूँ हूँ सः ।

पादलिप्तीये अधिवासना विधे-ॐ नमो भगवओ उसभसामिस्स पढमतित्थयरस्स सिज्झउ मे भगवई महाविज्जा जेण सच्चेण इंदेण सव्वदेवसमुदयेण मेरुम्मि सव्वोसहीहिं सव्वे जिणा अभिसित्ता तेण सव्वेण अहिवासयामि सुव्वयं दढव्वयं सिद्धं बुद्धं सम्मदंसणमणुपत्तं हिरि हिरि सिरि

सिरि मिरि मिरि गुरु गुरु अमले अमले विमले विमले सुविमले सुविमले मोक्खमग्गमणुपत्ते स्वाहा
(अथवा) ॐ नमो खीरासवलद्धीण ॐ नमो महुआसवलद्धीण ॐ नमो सभिन्नसोईण ॐ नमो पया-
णुसारीण ॐ नमो कुट्ठबुद्धीण जमिय विज्ज पउजामि सा मे विज्जा पसिज्झउ ॐ क क्षः स्वाहा।
११—जिने सहजगुणस्थापनमंत्र–ॐ नमो विश्वरूपाय अर्हते केवलज्ञानदर्शनधराय ह्रूं ह्रूं सः सहजगु-
णान् जिनेशो स्थापयामि स्वाहा।
१२—प्रतिष्ठामन्त्र–ॐ वीरे वीरे जयवीरे सेणवीरे महावीरे जये विजये जयन्ते अपराजिए ॐ ह्रीं स्वाहा।
१३—घातिकर्मक्षयोत्पन्नगुणस्थापनमन्त्रः–ॐ नमो भगवते अर्हते घातिक्षयकारिणे घातिक्षयोत्पन्नगु-
णान् जिने स्थापयामि स्वाहा।
१४—पादलिप्तीयप्रतिष्ठामन्त्रः–ॐ नमो अरिहताण ॐ नमो सिद्धाणं ॐ नमो आयरियाणं ॐ नमो
उवज्झायाण ॐ नमो लोए सव्वसाहूण ॐ नमो ओहिजिणाणं ॐ नमो परमोहिजिणाण ॐ नमो सव्वोहि-
जिणाण ॐ नमो अणंतोहिजिणाण ॐ नमो केवलिजिणाण ॐ नमो भवत्थकेवलिजिणाण ॐ नमो भग-
वओ अरहओ महई महावीरवद्धमाणसामिस्स सिज्झउ मे भगवई महई महाविज्जा वीरे २ महावीरे
जयवीरे सेणवीरे वद्धमाणवीरे जये विजये जयंते अपराजिए अणिहए मा चल २ घृद्धिदे २ ह्रूं २ ह्रीं २
सः ओह्निणि मोहिणी स्वाहा।

१५—सौभाग्यमंत्र-ॐ अवतर अवतर सोमे २ कुरु २ निवग्गु २ सुमिणे सोमणसे महुमहुरे ॐ कविल ॐ कः क्षः स्वाहा।

पादलिप्तीयसौभाग्यमंत्रः-ॐ नमो वग्गु २ निवग्गु २ सुमिणे सोमणसे महुमहुरे जयंते अपराजिए स्वाहा

१६—जिनमूर्तिप्रतिबोधमंत्रः-ॐ ह्रीँ अर्हन्मूर्तये नमः (प्रवचनमुद्रा पूर्वक प्रतिबोधः)॥

१७—अचलमूर्तिस्थिरीकरणमंत्रः-ॐ स्थावरे तिष्ठ तिष्ठ स्वाहा।

१८—सिंहासनस्थापनमंत्रः-इदं रत्नमयमासनमलंकुर्वन्तु इहोपविष्टा भव्यानवलोकयन्तु हृष्टदृष्टा जिनाः स्वाहा।

१९—चलप्रतिमायां न्यसनीयमंत्रः-ॐ जये श्रीँ ह्रीँ सुभद्रे नमः।

२०—सुरकृतातिशयस्थापनमंत्र-ॐ नमो भगवते अर्हते सुरकृतानतिशयान् जिनस्य शरीरे स्थापयामि स्वाहा।

२१—जिने प्रातिहार्यस्थापनमंत्रः-ॐ नमो भगवते अर्हते असिआउसा जिनस्य प्रातिहार्याष्टकं स्थापयामि स्वाहा। ॐ यक्षेश्वराय स्वाहा। ॐ ह्रीँ ह्रूँ ह्रीँ शासनदेव्यै स्वाहा। ॐ धर्मचक्राय स्वाहा। ॐ मृगलन्छाय स्वाहा। ॐ रत्नध्वजाय स्वाहा। ॐ नमो भगवते अर्हते जिने प्राकारादित्रयं स्थापयामि स्वाहा।

२२—प्रतिष्ठादेवताविसर्जनमंत्रः-ॐ विसर विसर प्रतिष्ठादेवते स्वाहा।

२३—नन्द्यावर्तविसर्जनमंत्रः–ॐ विसर विसर स्वस्थान गच्छ गच्छ नन्द्यावर्त । पुनरागमनाय स्वाहा। (मंत्रभणनपूर्वक वासक्षेपेण विसर्जनम् ।)

२४—सामान्यदेवविसर्जनमंत्र—

यान्तु देवगणाः सर्वे, पूजामादाय मामकीम् । सिद्धिं दत्त्वा च महतीं, पुनरागमनाय च ॥१॥

४ परिच्छेदः–स्मरण–स्तोत्राणि ।

विधिकार्यसमारम्भ–दिनादारभ्य सर्वदा । त्रिकालपाठयोग्यानि, स्तोत्राणीह निबोधत ॥५॥

भा०टी०—विधिकार्यना आरमथी समाप्ति पर्यन्त नित्य त्रिकाल पाठ करवा योग्य स्मरण–स्तोत्रोनो संग्रह आ चोथा परिच्छेदमा जाणवो.

नमो अरिहंताणं । नमो सिद्धाणं । नमो आयरियाणं । नमो उवज्झायाणं । नमो लोए सव्वसाहूणं । एसो पंच नमुक्कारो, सव्वपावप्पणासणो । मंगलाणं च सव्वेसिं, पढमं हवइ मंगलं ॥

१—उपसर्गहरस्तोत्रम्

उवसग्गहरं पासं, पासं वंदामि कम्मघणमुक्कं । विसहरविसनिन्नासं, मंगलकल्लाणआवासं ॥१॥

विसहरफुलिंगमंतं, कंठे धारेइ जो सया मणुओ । तस्स गहरोगमारी,-दुट्ठजरा जंति उवसामं ॥२॥
चिट्ठउ दूरे मंतो, तुज्झ पणामो वि बहुफलो होइ । नरतिरिएसु वि जीवा, पावंति न दुक्खदोगच्चं ॥३॥
तुह सम्मत्ते लद्धे, चिंतामणि-कप्पपायवब्भहिए । पावंति अविग्घेणं, जीवा अयरामरं ठाणं ॥४॥
इअ संथुओ महायस! भत्तिभरनिब्भरेण हिअएण । ता देव! दिज्ज बोहिं भवे भवे पास! जिणचंद ॥५॥

२ श्रीशान्तिनाथ स्तवनम् (संतिकरं)

संतिकरं संतिजिणं, जगसरणं जयसिरीइ दायारं । समरामि भत्तपालग-निव्वाणीगरुडकयसेवं ॥१॥
ॐ सनमो विप्पोसहि-पत्ताणं संतिसामिपायाणं । झ्रौं स्वाहा मंतेणं, सव्वासिवदुरिअहरणाणं ॥२॥
ॐ संतिनमुक्कारो, खेलोसहिमाइलद्धिपत्ताणं । सौँ ह्रीँ नमो सव्वोसहि-पत्ताणं च देइ सिरिं ॥३॥
वाणी तिहुअणसामिणी सिरिदेवी जक्खराय गणिपिडगा । गहदिसिपालसुरिंदा, सयावि रक्खंतु जिणभत्ते ॥४॥
रक्खंतु मम रोहिणि-पन्नत्ती वज्जसिंखला य सया । वज्जंकुसि चक्केसरि-नरदत्ता कालि महकाली ॥५॥
गोरी तह गंधारी, महजाला माणवीय वइरुट्टा । अच्छुत्ता माणसिआ, महामाणसिआउ देवीओ ॥६॥
जक्खा गोमुहमहजक्खा, तिमुह जक्खेस तुंबरू कुसुमा । मायंगविजयअजिआ, बंभो मणुएसर कुमारा ॥७॥
छम्मुह पयाल किन्नर,-गरुडो गंधव्व तहय जक्खिदो । कूबर वरुणो भिउडी, गोमेहो पासमायंगा ॥८॥
देवीओ चक्केसरि, अजिआ दुरिआरि कालिमहाकाली । अच्छुअ संता जाला, सुतारय असोयसिरिवच्छा ॥९॥

चंडा विजयंकुसि,–पन्नइत्ति निव्वाणि अच्चुआ धरणी। वइरुट्ट दत्त गंधारि, अंब पउमावई सिद्धा ॥१०॥
इय तित्थरक्खणरया, अन्ने वि सुरा सुरीउ चउहावि। वंतर जोइणिपमुहा, कुणंतु रक्ख सया अम्ह ॥११॥
एय सुदिट्ठिसुरगण–सहिओ संघस्स संतिजिणचंदो। मज्झ वि करेउ रक्ख, मुणिसुंदरसूरिथुअमहिमा ॥१२॥
इय संतिनाह सम्म-द्दिठिअरक्ख सरइ तिकाल जो। सव्वोवद्दवरहिओ, स लहइ सुहसंपयं परम ॥१३॥
॥ इति श्रीशांतिनाथस्तवनं महामंत्रमय भट्टारकप्रभु–श्री मुनिसुंदरसूरिकृत मरकोपशमकरम् ॥

सत्तरिसयजिनस्तवनम्। (तिजयपहुत्त)

तिजयपहुत्तपयासिअ–अट्ठमहापाडिहेरजुत्ताणं। समयखित्तठियाणं, सरेमि चक्कं जिणिंदाणं ॥१॥
पणवीसा य असीआ, पनरस पन्नास जिणवरसमूहो। नासेउ सयलदुरिअं, भविआण भत्तिजुत्ताणं ॥२॥
वीसा पणयाला वि, तीसा पन्नत्तरी जिणवरिंदा। गहभूअरक्खसाइणि–घोरुवसग्गं पणासंतु ॥३॥
सत्तरि पणतीसा विअ, सट्ठी पंचेव जिणगणो एसो। वाहि-जल-जलण-हरि करि चोरारि-महाभय हरउ ॥४॥
पणपन्ना य दसेवय पन्नठी तहय चेव चालीसा। रक्खतु मे सरीरं, देवासुरपणमिआ सिद्धा ॥५॥
हरहुंहः सरसुं मः, हरहुंहः तहय चेव सरसुं सः। आ लिहिअन्नामगब्भं, चक्कं किर सव्वओभद्दं ॥६॥
रोहिणिपन्नत्ती वज्ज सिंखला तहय वज्जअंकुसिआ। चक्केसरिनदत्ता, कालिमहाकालि तह गोरी ॥७॥
गंधारिमहाजाला, माणविवइरुट्टतहय अच्छुत्ता। माणसि महामाणसिआ, विज्जादेवीउ रक्खतु ॥८॥

पंचदस कम्मभूमीसु, उप्पन्नं सत्तरिंजिणाण सयं। विविहरयणाइवन्नो वसोहिअं हरउ दुरिआइं ॥९॥
चउतीसअइसयजुआ। अट्ठमहापाडिहेरकयसोहा । तित्थयरा गयमोहा, झाएयव्वा पयत्तेणं ॥१०॥
ॐ वरकणयसंखविद्दुम-मरगयघणसंनिभं विगयमोहं। सत्तरिसयं जिणाणं, सव्वामरपूइअं वंदे स्वाहा ॥११॥
ॐ भवणवइवाणमंतर-जोइसवासी विमाणवासी अ। जे केइ दुट्ठदेवा, ते सव्वे उवसमंतु मम स्वाहा ॥१२॥
चंदणकप्पूरेणं, फलहे लिहिऊण खालिअं पीअं । एगंतराइगहभूअ-साइणीमुग्गलपणासं ॥१३॥
इय सत्तरिसयं जंतं, सम्मं मंतं दुवारिपडिलिहिअं । दुरिआरिविजयवंतं, निब्भंतं निच्चमच्चेह ॥१४॥

४-भयहरस्तवः (नमिऊण)

नमिऊण पणयसुरगण-चूडामणिकिरणरंजिअं मुणिणो । चलणजुअलं महाभय-पणासणं संथवं वुच्छं ॥१॥
सडियकरचरणनहमुह-निबुड्डनासा विवन्नलायन्ना । कुट्ठमहारोगानल-फुलिंगनिद्दड्ढसव्वंगा ॥२॥
ते तुह चलणाराहण-सलिलंजलिसेयवुड्ढियच्छाया । वणदवदड्ढागिरिपायव व्व पत्ता पुणो लच्छिं ॥३॥
दुव्वायखुभियजलनिहि-उब्भडकल्लोलभीसणारावे । संभंतभयविसंठुल-निज्जामयमुक्कवावारे ॥४॥
अविदलिअजाणवत्ता, खणेण पावंति इच्छिअं कूलं । पासजिणचलणजुअलं, निच्चं चिअ जे नमंति नरा ॥५॥
खरपवणुद्धुअ वणदव जालावलिमिलियसयलदुमगहणे। डज्झंत मुद्धमयवहु-भीसणरवभीसणम्मि वणे ॥६॥
जगगुरुणो कमजुअलं, निव्वाविअसयलतिहुअणाभोअं। जे संभरंति मणुआ, न कुणइ जलणो भयं तेसिं ॥७॥
विलसंतभोगभीसण-फुरिआरुणनयणतरलजीहालं । उग्गभुअंगं नवजलय-सत्थहं भीसणायारं ॥८॥

मन्नंति कीडसरिस दूरपरिच्छूढविसमविसवेगा । तुह नामक्खरफुडसिद्ध-मंतगुरुआ नरा लोए ॥९॥
अडवीसु भिल्लतक्कर-पुलिंदसद्दूलसद्दभीमासु । भयविहुरवुन्नकायर-उल्लूरिअपहिअसत्थासु ॥१०॥
अविलुत्तविहवसारा, तुह नाह ! पणाममत्तवावारा । ववगयविग्घा सिग्घं, पत्ता हियइच्छिअं ठाणं ॥११॥
पज्जलिआनलनयण, दूरवियारियमुहं महाकाय । नहकुलिसघायविअलिअ-गइंदकुंभत्थलाभोअं ॥१२॥
पणयससंभमपत्थिवनहमणिमाणिक्कपडिअ पडिमस्स । तुह वयण पहरणधरा, सीहं कुद्धं पि न गणंति ॥१३॥
ससिधवलदंतमुसलं, दीहकरुल्लालवुड्ढिउच्छाहं । महुपिंगनयणजुअलं, ससलिलनवजलहरारावं ॥१४॥
भीमं महागइंदं अच्चासन्नंपि ते न वि गणंति । जे तुम्ह चलणजुअलं मुणिवइ तुंगसमल्लीणा ॥१५॥
समरम्मि तिक्खखग्गा भिघाय पविद्ध उद्धुयकबंधे । कुंत विणिभिन्न करिकलहमुक्कसिक्कारपउरंमि ॥१६॥
निज्जियदप्पुद्धुररिउनरिंदनिवहा भडा जसं धवलं । पावंति पावपसमिण पासजिण तुहप्पभावेण ॥१७॥
रोगजलजलणविसहरचोरारिमइंदगयरणभयाइं । पासजिणनामसंकित्तणेण पसमंति सव्वाइं ॥१८॥
एवं महाभयहरं पासजिणिंदस्स संथवमुआरं । भवियजणाणंदयरं कल्लाणपरंपरनिहाणं ॥१९॥
रायभयजक्खरक्खसकुसुमिणदुस्सउणरिक्खपीडासु । संझासु दोसु पंथे उवसग्गे तह य रयणीसु ॥२०॥
जो पढइ जो अ निसुणइ ताण कइणो य माणतुंगस्स । पासो पावं पसमेउ सयलभुवणच्चिअचलणो ॥२१॥
उवसग्गंते कमठासुरम्मि झाणाउ जो न संचलिओ । सुरनरकिन्नर जुवईहिं संथुओ जयउ पासजिणो ॥२२॥
एअस्स मज्झयारे अट्ठारसअक्खरेहिं जो मंतो । जो जाणइ सो झायइ परमपयत्थं फुडं पासं ॥२३॥

५–अजितशान्तिस्तवः

अजिअं जिअसव्वभयं, संतिं च पसंतसव्वगयपावं ।
जयगुरु संतिगुणकरे, दो वि जिणवरे पणिवयामि ॥१॥ गाहा ।
ववगयमंगुलभावे, तेऽहं विउलतवनिम्मलसहावे । निरुवममहप्पभावे, थोसामि सुदिट्ठसब्भावे ॥२॥ गाहा ।
सव्वदुक्खप्पसंतीणं, सव्वपावप्पसंतिणं । सया अजियसंतीणं, नमो अजिअसंतिणं ॥३॥ सिलोगो ।
अजियजिण ! सुहप्पवत्तणं, तव पुरिसुत्तम ! नामकित्तणं ।
तह य धिइमइप्पवत्तणं, तव य जिणुत्तम संति ! कित्तणं ॥४॥ मागहिआ ।
किरिआविहिसंचिअकम्मकिलेसविमुक्खयरं, अजिअं निचिअं च गुणेहिं महामुणिसिद्धिगयं ।
अजिअस्स य संतिमहामुणिणो वि अ संतिकरं, सययं मम निव्वुइकारणयं च नमंसणयं ॥५॥ आलिंगणयं।
पुरिसा ! जइ दुक्खवारणं, जइ अ विमग्गह सुक्खकारणं ।
अजिअं संतिं च भावओ, अभयकरे सरणं पवज्जहा ॥६॥ मागहिआ ।
अरइरइतिमिरविरहिअमुवरयजरमरणं, सुरअसुरगरुलभुयगवइपययपणिवइअं ।
अजिअमहमवि अ सुनयनयनिउणमभयकरं, सरणमुवसरिअ भुवि दिविजमहिअं सययमु-
वणमे ॥७॥ संगययं ।

त जिणुत्तममुत्तमनित्तमसत्तधरं, अज्जवमद्दवखंतिविमुत्तिसमाहिनिहिं ।
संतिकरं पणमामि दमुत्तमतित्थयरं, संतिमुणी मम संति-समाहिवरं दिसउ ॥८॥ सोवाणयं ।
सावत्थिपुव्वपत्थिवं च वरहत्थिमत्थयपसत्थवित्थिन्नसंथिअं थिरसरिच्छवच्छं,
मयगललीलायमाणवरगंधहत्थिपत्थाणपत्थियं संथवारिहं ।
हत्थिहत्थबाहुं धंतकणगरुअगनिरुवहयपिंजरं पवरलक्खणोवचिअ सोमचारुरूवं,
सुइसुहमणाभिरामपरमरमणिज्जवरदेवदुंदुहिनिनायमहुरयरसुहगिरं ॥९॥ वेड्ढओ ।
अजिअं जिआरिगणं, जिअसव्वभयं भवोहरिउं ।
पणमामि अहं पयओ, पावं पसमेउ मे भयवं ॥१०॥ रासालुद्धओ ।
कुरुजणवयहत्थिणाउरनरीसरो पढमं तओ महाचक्कवट्टिभोए महप्पभावो,
जो बावत्तरि पुरवरसहस्सवरनगरनिगमजणवयवई, बत्तीसारायवरसहस्साणुयायमग्गो ।
चउदसवररयणनवमहानिहिचउसट्ठिसहस्सपवरजुवईण सुंदरवई,
चुलसीहयगयरहसयसहस्ससामी छन्नवइगामकोडिसामी आसि ज्जो भारहम्मि भयवं ॥११॥ वेड्ढओ ।
तं संतिं संतिकरं, संतिण्णं सव्वभया । संतिं थुणामि जिणं, संतिं विहेउ मे ॥१२॥ रासानंदिअयं ।
इक्खागविदेहनरीसर ! नर-वसहा ! मुणिवसहा ! नवसारयससिसकलाणण ! विगयतमा ! विहुअरया ! ।

अजिउत्तमतेअगुणेहिं महामुणि अमिअबला! विउलकुला। पणमामि ते भवभयमूरण जगसरणा मम सरणं ॥१३॥ चित्तलेहा ॥

देवदाणविंदचंद सूरवंद! हट्ठ तुट्ठ जिट्ठ परम, लट्ठरुव! धंतरुप्पपट्टसेअसुद्धनिद्धधवल,।
दंतपंति! संति! सत्तिकित्तिमुत्तिजुत्तिगुत्तिपवर!,
दित्ततेअ वंद! धेअ! सव्वलोअभाविअप्पभावणे अ पइस मे समाहिं ॥१४ नारायओ ॥

विमलससिकलाइरेअसोमं, वितिमिरसूरकराइरेअतेअं।
तिअसवइगणाइरेअरूवं, धरणिधरप्पवराइरेअसारं ॥१५॥ कुसुमलया।
सत्ते अ सया अजिअं, सारीरे अ बले अजियं।
तव संजमे अ अजिअं, एस थुणामि जिणं अजिअं ॥१६॥ भुअगपरिरिंगिअं ॥

सोमगुणेहिं पावइ न तं नवसरयससी, तेअगुणेहिं पावइ न तं नवसरयरवी।
रूवगुणेहिं पावइ न तं तिअसगणवई, सारगुणेहिं पावइ न तं धरणिधरवई ॥१७॥ खिज्जिअयं।
तित्थवरपवत्तयं तमरयरहिअं, धीरजणथुअच्चिअं चुअकलिकलुसं।
संतिसुहप्पवत्तयं तिगरणपयओ, संतिमहं महामुणिं सरणमुवणमे ॥१८॥ ललिअयं।
विणओणयसिररइअंजलिरिसिगणसंथुअं थिमिअं, विबुहाहिवधणवइनरवइथुअमहिअच्चिअं बहुसो।

सिरसा ॥ १९ ॥

अट्ठरुग्गयसरयदिवायरसमहिअसप्पभं तवसा । गयणंगणवियरणसमुइअचारणवंदिअ

किसलयमाला ।

असुरगरुलपरिवंदिअ, किन्नरोरग नमसिअ । देवकोडिसयसथुअ; समणसंघपरिवंदिअ ॥२०॥ सुमुह ।

अभय अणह अरय अरुय । अजिअं अजिअं पयओ पणमे ॥२१॥ विज्जुविलसिअ ।

आगया वरविमाण दिव्व कणगरहतुरयपहकरसएहिं हुलिअं ।

ससंभमोअरणखुभिअलुलिअचलकुंडलगयतिरीडसोहंतमउलिमाला ॥२२॥ वेड्डओ ।

जं सुरसंघा सासुरसंघा वेरविउत्ता भत्तिसुजुत्ता, आयरभूसिअ संभमपिंडिअ सुट्ठुसुविम्हिअसव्वबलोघा ।

उत्तमकंचणरयणपरूविअभासुरभूसणभासुरिअंगा । गायसमोणयभत्तिवसागयपंजलिपेसियसीसपणामा

॥२३॥ रयणमाला ।

वंदिऊण थोऊण तो जिणं, तिगुणमेव य पुणो पयाहिणं ।

पणमिऊण य जिणं सुरासुरा, पमुइआ सभवणाइं तो गया ॥२४॥ खित्तय ।

तं महामुणिमहंपि पंजली, रागदोसभयमोहवज्जिअं ।

देवदाणवनरिंदवंदिअं, संतिमुत्तमं महातवं नमे ॥२५॥ खित्तयं ।

अवरतरविआरणिआहिं, ललिअहंसवहुगामिणिआहिं ।

पीणसोणिथणसालिणिआहिं, सकलकमलदललोअणिआहिं ॥२६॥ दीवयं ।

पीणनिरंतरथणभरविणमियगायलयाहिं, मणिकंचणपसिढिलमेहलसोहिअसोणितडाहिं ।
वरखिंखिणिनेउरसतिलयवलयविभूसणिआहिं, रइकरचउरमणोहरसुंदरदंसणिआहिं ॥२७॥ चित्तक्खरा ।

देवसुंदरीहिं पायवंदिआहिं–वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा,
अप्पणो निडालएहिं मंडणोड्डुण प्पगारएहिं केहिं केहिं वि ।
अवंगतिलयपत्तलेहनामएहिं चिल्लएहिं संगयं गयाहिं,
भत्तिसन्निविट्ठवंदणागयाहिं हुंति ते वंदिआ पुणो पुणो ॥२८॥ नारायओ ।

तमहं जिणचंदं, अजिअं जिअमोहं । धुयसव्वकिलेसं, पयओ पणमामि ॥२९॥ नंदिअयं ।

थुअवंदिअयस्सा रिसिगणदेवगणेहिं, तो देववहूहिं पयओ पणमिअस्सा, जस्स जगुत्तमसासणअस्सा ।
भत्तिवसागयपिंडिअयाहिं, देववरच्छरसा बहुआहिं, सुरवररइगुणपंडिअयाहिं ॥३०॥ भासुरयं ।

वंस–सद्द–तंति–ताल–मेलिए–तिउक्खराभिरामसद्दमीसए कए अ, सुइसमाणणे अ सुद्धसज्जगीयपाय-जालघंटिआहिं, वलयमेहलाकलावनेउराभिरामसद्दमीसए कए अ । देवनट्टिआहिं हावभावविब्भमप्पगार-एहिं नच्चिऊण अंगहारएहिं, वंदिआ य जस्स ते सुविक्कमा कमा तयं तिलोयसव्वसत्तसंतिकारयं, पसंतसव्वपावदोसमेसऽहं नमामि संतिमुत्तमं जिणं ॥३१॥ नारायओ ।

छत्तचामरपडागजूअजवमंडिआ, झयवरमगरतुरयसिरिवच्छसुलंछणा ।
दीवसमुद्दमंदरदिसागयसोहिआ, सत्थिअवसहसीहरहचक्कवरंकिआ ॥३२॥ ललिअयं ।

सहावलट्ठा समप्पइट्ठा, अदोसदुट्ठा गुणेहिं जिट्ठा ।
पसायसिट्ठा तवेणपुट्ठा, सिरीहिं इट्ठा रिसीहिं जुट्ठा ॥३३॥ वाणवासिआ ।

ते तवेण धुअसव्वपावया, सव्वलोअहिअमूलपावया ।
संथुआ अजिअसंतिपायया, हुंतु मे सिवसुहाण दायया ॥३४॥ अपरांतिका ।

एव तवबलविउलं, थुअ मए अजिअसंतिजिणजुअल ।
ववगयकम्मरयमल, गइ गय सासयं विउलं ॥३५॥ गाहा ।

त बहुगुणप्पसायं, मुक्खसुहेण परमेण अविसाय ।
नासेउ मे विसायं, कुणउ अ परिसाविअप्पसाय ॥३६॥ गाहा ।

त मोएउ अ नंदिं, पावेउ अ नंदिसेणमभिनंदिं । परिसाविअ सुहनंदिं, मम य दिसउ संजमे नंदिं ॥३७॥ गाहा ।
पक्खिअ-चाउम्मासिअ,-सवच्छरिए अवस्स भणिअव्वो । सोअव्वो सव्वेहिं, उवसग्गनिवारणो एसो ॥३८॥
जो पढइ जो अ निसुणइ, उभओ कालंपि अजिअसंतिथयं । न हु हुंति तस्स रोगा, पुव्वुप्पन्ना विणासंति ॥३९॥
जइ इच्छह परमपयं, अहवा कित्ति सुवित्थडं भुवणे । ता तेलुक्कुद्धरणे, जिणवयणे आयरं कुणह ॥४०॥

६—बृहच्छान्तिः

भो भो भव्याः! शृणुत वचनं प्रस्तुतं सर्वमेतद्, ये यात्रायां त्रिभुवनगुरोरार्हता भक्तिभाजः।
तेषां शान्तिर्भवतु भवता मर्हदादिप्रभावादारोग्यश्रीधृति-मति-करी क्लेशविध्वंसहेतुः ॥१॥

भो भो भव्यलोका इह हि भरतैरावतविदेह-संभवानां समस्ततीर्थकृतां जन्मन्यासनप्रकम्पानन्तरमवधिना विज्ञाय सौधर्माधिपतिः सुघोषाघण्टाचालनानन्तरं सकलसुराऽसुरेन्द्रैः सह समागत्य सविनयमर्हद्भट्टारकं गृहीत्वा गत्वा कनकाद्रिशृङ्गे विहितजन्माभिषेकः शान्तिमुद्घोषयति यथा ततोऽहं कृतानुकारमिति कृत्वा "महाजनो येन गतः, स पन्थाः" इति भव्यजनैः सह समेत्य स्नात्रपीठे स्नात्रं विधाय, शान्तिमुद्घोषयामि तत्पूजायात्रास्नात्रादिमहोत्सवानन्तरमिति कृत्वा कर्णं दत्वा निशम्यतां निशम्यतां स्वाहा।

ॐ पुण्याहं पुण्याहं प्रीयन्तां प्रीयन्तां भगवन्तोऽर्हन्तः सर्वज्ञाः सर्वदर्शिनस्त्रिलोकनाथास्त्रिलोकमहितास्त्रिलोकपूज्यास्त्रिलोकेश्वरास्त्रिलोकोद्योतकराः।

ॐ ऋषभ-अजित-संभव-अभिनन्दन-सुमति-पद्मप्रभ-सुपार्श्व-चन्द्रप्रभ-सुविधि-शीतल-श्रेयांस-वासुपूज्य-विमल-अनन्त-धर्म-शान्ति-कुन्थु-अर-मल्लि-मुनिसुव्रत-नमि-नेमि-पार्श्व-वर्धमानान्ता जिनाः शान्ताः शान्तिकरा भवन्तु स्वाहा।

ॐ मुनयो मुनिप्रवरा रिपुविजयदुर्भिक्षकान्तारेषु दुर्गमार्गेषु वो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा।

ॐ ह्रीं-श्रीं-धृति-मति-कीर्ति-कान्ति-बुद्धि-लक्ष्मी-मेधा-विद्यासाधनप्रवेशनिवेशनेषु सुगृहीतनामानो जयन्तु ते जिनेन्द्राः ।

ॐ रोहिणी-प्रज्ञप्ति-वज्रशृङ्खला-वज्राङ्कुशी अप्रतिचक्रा पुरुषदत्ता काली महाकाली गौरी गान्धारी सर्वास्त्रा महाज्वाला मानवी वैरोट्या अच्छुप्ता मानसी महामानसी षोडश विद्यादेव्यो रक्षन्तु वो नित्यं स्वाहा ।

ॐ आचार्योपाध्यायप्रभृतिचातुर्वर्ण्यस्य श्रीश्रमणसंघस्य शान्तिर्भवतु तुष्टिर्भवतु पुष्टिर्भवतु ।

ॐ ग्रहाश्चन्द्रसूर्याङ्गारकबुधबृहस्पतिशुक्रशनैश्चरराहुकेतुसहिताः सलोकपालाः सोम-यम-वरुण-कुबेर-वासवादित्य-स्कन्द-विनायकोपेताः, ये चान्येऽपि ग्रामनगरक्षेत्रदेवताऽऽदयस्ते सर्वे प्रीयन्तां प्रीयन्तां अक्षीणकोशकोष्ठागारा नरपतयश्च भवन्तु स्वाहा ।

ॐ पुत्रमित्रभ्रातृकलत्रसुहृत्स्वजनसम्बन्धिबन्धुवर्गसहिता नित्यं चामोदप्रमोदकारिणः । अस्मिंश्च भूमण्डलायतने निवासिसाधुसाध्वीश्रावकश्राविकाणां रोगोपसर्गव्याधिदुःखदुर्भिक्षदौर्मनस्योपशमनाय शान्तिर्भवतु ।

ॐ तुष्टिपुष्टिऋद्धिवृद्धिमाङ्गल्योत्सवाः सदा प्रादुर्भूतानि पापानि शाम्यन्तु दुरितानि, शत्रवः पराङ्मुखा भवन्तु स्वाहा ।

श्रीमते शान्तिनाथाय, नमः शान्तिविधायिने । त्रैलोक्यस्यामराधीश-मुकुटाभ्यर्चिताङ्घ्रये ॥१॥
शान्तिः शान्तिकरः श्रीमान्, शान्तिं दिशतु मे गुरुः । शान्तिरेव सदा तेषां, येषां शान्तिर्गृहे गृहे ॥२॥

उन्मृष्टरिष्टदुष्ट, ग्रहगतिदुःस्वप्नदुर्निमित्तादि। संपादित-हितसंपन्नामग्रहणं जयति शान्तेः ॥३॥
श्रीसङ्घ-जगज्जनपद-राज्याधिपराज्यसन्निवेशानाम्। गोष्ठिकपुरमुख्याणां, व्याहरणैर्व्याहरेच्छान्तिम् ॥४॥

श्रीश्रमणसङ्घस्य शान्तिर्भवतु, श्रीजनपदानां शान्तिर्भवतु, श्रीराज्याधिपानां शान्तिर्भवतु, श्रीराज्यसन्निवेशानां शान्तिर्भवतु, श्रीगोष्ठिकानां शान्तिर्भवतु, श्रीपुरमुख्याणां शान्तिर्भवतु, श्रीपौरजनस्य शान्तिर्भवतु, श्रीब्रह्मलोकस्य शान्तिर्भवतु ॐ स्वाहा ॐ स्वाहा ॐ श्रीपार्श्वनाथाय स्वाहा।

एषा शान्तिः प्रतिष्ठायात्रास्नात्राद्यवसानेषु, शान्तिकलशं गृहीत्वा कुङ्कुमचन्दनकर्पूरागुरुधूपवासंकुसुमाञ्जलिसमेतः स्नात्रचतुष्किकायां श्रीसंघसमेतः शुचि शुचि वपुः पुष्पवस्त्रचन्दनाभरणालङ्कृतः पुष्पमालां कण्ठे कृत्वा, शान्तिमुद्घोषयित्वा शान्तिपानीयं मस्तके दातव्यमिति।

नृत्यन्ति नित्यं मणिपुष्पवर्षं, सृजन्ति गायन्ति च मङ्गलानि।
स्तोत्राणि गोत्राणि पठन्ति मन्त्रान्, कल्याणभाजो हि जिनाभिषेके ॥१॥
शिवमस्तु सर्वजगतः, परहितनिरता भवन्तु भूतगणाः। दोषाः प्रयान्तु नाशं, सर्वत्र सुखीभवतु लोकः ॥२॥
अहं गोवालयमाया, सिवादेवी तुम्ह नयरनिवासिनी।
अम्ह सिवं तुम्ह सिवं, असिवोवसमं सिवं भवतु स्वाहा ॥३॥
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥४॥

सर्वमङ्गलमाङ्गल्य, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधान सर्वधर्माणा, जैनं जयति शासनम् ॥५॥

७—लघुशान्ति स्तवः

शान्तिं शान्तिनिशान्त, शान्त शान्ताऽशिव नमस्कृत्य । स्तोतु. शान्तिनिमित्त, मन्त्रपदैः शान्तये स्तौमि ॥१॥
ओमिति निश्चितवचसे, नमो नमो भगवतेऽर्हते पूजाम् । शान्तिजिनाय जयवते, यशस्विने स्वामिने दमिनाम् ॥२॥
सकलातिशेषकमहा-सम्पत्ति समन्विताय शस्याय । त्रैलोक्यपूजिताय च नमो नमः शान्तिदेवाय ॥३॥
सर्वामरसुसमूह-स्वामिकसपूजिताय न जिताय । भुवनजन पालनोद्यत-तमाय सततं नमस्तस्मै ॥४॥
सर्वदुरितौघनाशन-कराय सर्वाशिवप्रशमनाय । दुष्टग्रहभूतपिशाच-शाकिनीना प्रमथनाय ॥५॥
यस्येति नाममन्त्र-प्रधानवाक्योपयोगकृततोषा । विजया कुरुते जनहित-मिति च नुता नमत त शान्तिम् ॥६॥
भवतु नमस्ते भगवति ! विजये ! सुजये ! परापरैरजिते ! । अपराजिते ! जगत्यां जयतीति जयावहे भवति ॥७॥
सर्वस्यापि च सङ्घस्य, भद्रकल्याणमङ्गलप्रददे ! । साधूनां च सदा शिव-सुतुष्टिपुष्टिप्रदे ! जीयाः ॥८॥

भव्यानां कृतसिद्धे ! निर्वृतिनिर्वाणजननि ! सत्त्वानाम् ।
अभयप्रदाननिरते ! नमोऽस्तु स्वस्तिप्रदे तुभ्यम् ॥ ९ ॥

भक्ताना जन्तूना, शुभावहे ! नित्यमुद्यते देवि ! । सम्यग्दृष्टीना धृति-रति-मति-बुद्धि-प्रदानाय ॥१०॥

जिनशासननिरतानां, शान्तिनतानां च जगति जनतानाम् ।

श्री-संपत्कीर्ति-यशो-वर्द्धनि ! जयदेवि ! विजयस्व ॥११॥
सलिलानल-विष-विषधर-दुष्टग्रह-राज-रोग-रणभयतः। राक्षस-रिपुगण-मारि-चौरेति-श्वापदादिभ्यः ॥१२॥
अथ रक्ष रक्ष सुशिवं, कुरु कुरु शान्तिं च कुरु कुरु सदेति ।
तुष्टिं कुरु कुरु पुष्टिं, कुरु कुरु स्वस्तिं च कुरु कुरु त्वम् ॥१३॥
भगवति ! गुणवति ! शिवशान्ति-तुष्टि-पुष्टि-स्वस्तीह कुरु कुरु जनानाम् ।
ओमिति नमो नमो ह्राँ ह्रीँ ह्रूँ ह्रः यः क्षः ह्रीँ फुट् फुट् स्वाहा ॥१४॥
एवं यन्नामाक्षर-पुरस्सरं संस्तुता जयादेवी । कुरुते शान्तिं नमतां, नमो नमः शान्तये तस्मै ॥१५॥
इति पूर्वसूरिदर्शित-मन्त्रपदविदर्भितः स्तवः शान्तेः ।
सलिलादिभयविनाशी, शान्त्यादिकरश्च भक्तिमताम् ॥१६॥
यश्चैनं पठति सदा, शृणोति भावयति वा यथायोगं ।
स हि शान्तिपदं यायात् , सूरिः श्रीमानदेवश्च ॥१७॥
उपसर्गाः क्षयं यान्ति, छिद्यन्ते विघ्नवल्लयः।। मनः प्रसन्नतामेति, पूज्यमाने जिनेश्वरे ॥१८॥
सर्वमङ्गलमाङ्गल्यं, सर्वकल्याणकारणम् । प्रधानं सर्वधर्माणां, जैनं जयति शासनम् ॥१९॥

श्री समवसरणस्तवः ।

थुणिमो केवलिवत्थं, वरविज्जाणद्धम्मकित्तिऽत्थं । देविन्दनयपयत्थ, तित्थयर समवसरणत्थं ॥१॥
पयडिअसमत्थभावो, केवलिभावो जिणाण जत्थ भवे । सोहति सव्वओ तहिं, महिमाजोयणमनिलकुमरा ॥२॥
वरिसलिमेहकुमारा, सुरहिजल उउसुरा कुसुमपमर । विरयंति वणा मणिकणग रयणचित्तं महिअल तो ॥३॥
अभिन्तर मज्झबहि, तिवप्पमणिरयणकणयकविसीसा । रयणज्जुणरूप्पमया, वेमाणिअजोइभवणकया ॥४॥
वट्टम्मि दुतीसगुल-तित्तीस धणुपिहुल पणसय धणुच्चा । छधणुसय इगकोस-तरा य रयणमयचउदारा ॥५॥
चउरसे इगधणुसय-पिहुवप्पा सड्ढकोसअतरिआ । पढमबिआ बिअ तइआ, कोसतर पुव्वमिव सेसं ॥६॥
सोवाणसहसदसकर-पिहुच्च गंतु भुवो पढमवप्पो । तो पन्ना धणुपयरो, तओ अ सोवाण पण सहसा ॥७॥
तो बियवप्पोपन्ना-धणुपयर सोवाण सहसपण तत्तो । तइओ वप्पा छसय-धणु इगकोसेहिंतो पीढं ॥८॥
चउदार तिसोवाण, मज्झेमाणिपीढय जिणतणुच्चं । दो धणुसय पिहुदिह, सड्ढदुकोसेहिं धरणिअला ॥९॥
जिणतणुबारगुणुचो, समहिअजोअणपिहू असोगतरू । तयहो य देवच्छन्दो, चउसीहासण सपयपीढा ॥१०॥
तदुवरि चउ छत्ततिआ, पडिरूवतिग तहट्ठ चमरधरा । पुरओ कणयकुसेसय-ट्ठिअफालिअधम्मचक्कचउ ॥११॥
झयछत्तमयरमंगल-पंचालीदामवेइवरकलसे । पइदार मणितोरण तिय धूवघडी कुणत्ति वणा ॥१२॥
जोयणसहस्सदंडा, चउज्झया धम्ममाणगयमीहा । ककुभाइजुया सव्व, माणमिण जिअनिअकरेण ॥१३॥

पविसिअ पुव्वाइ पहू, पयाहिणं पुव्वआसणनिविट्ठो। पयपीढठवियपाओ पणमिअतित्थो कहइ धम्मं ॥१४॥
मुणिवेमाणिणिसमणी, सभवणजोइवणदेवीदेवतियं। कप्पसुरनरित्थितिअं, ठंतिऽग्गेयाइविदिसासु ॥१५॥
चउदेवीसमणी उद्धट्ठिआ निविट्ठा नरनरित्थिसुरसमणा। इय पणसगपरिस सुणंति, देसणं पढमवप्पंता ॥१६॥
इय आवस्सयवित्ति-वुत्तं चुन्नीइ पुण मुणि निविट्ठा। वेमाणिणि समणी दो, उद्धा सेसा ठिआ उ नव ॥१७॥
बीअन्तो तिरि ईसाणि, देवच्छन्दो अ जाण तइअन्तो। तह चउरंसे दुदु वावी, कोणओ वट्टि इक्किका ॥१८॥
पीअसिअरत्तसामा, सुरवणजोइभवणा रयणवप्पे। धणुदंडपासगयहत्थ, सोमयमवरुणधणयक्खा ॥१९॥
जयविजयाजिअ अपराजिअत्ति सिअअरुणपीअनीलाभा। बीए देवीजुअला, अभयंकुसपासमगरकरा ॥२०॥
तइअ बहि सुरा तुंबरु-खट्टंगिकवालजडमउडधारी। पुव्वाइदारवाला, तुंबरुदेवो अ पडिहारो ॥२१॥
सामन्नसमोसरणे, एस विहीएइ जइ महिड्ढिसुरो। सव्वमिणं एगोऽवि हु, स कुणइ भयणेयरसुरेसु ॥२२॥
पुव्वमजायं जत्थ उ, जत्थेइ सुरोमहिड्ढिमघवाई। तत्थोसरणं नियमा, सययं पुण पाडिहेराइं ॥२३॥
दुत्थिअसमत्थअत्थिअ-जणपत्थिअअत्थसत्थसुसमत्थो। इत्थं थुओ लहु जणं, तित्थयरो कुणउ सुपयत्थं ॥२४॥

॥ शान्तिनाथजीनो कलश ॥

श्रीशान्तिजिनवर सयल सुखकर, कलश भणीई तास, जिम भविक जीवने सयल संपति, बहोत्त लील विलास।
कुरुनामि जनपद तिलकसमवड हत्थिणाउर सार, जिणनयरीकंचण रयण धन धण सुगुण जन आधार ॥१॥

तिहां राय राजे बहुदिवाजे विश्वसेन नरिन्द, निज प्रकृति सोमह तेज तपनह भानु चन्द दिणद ।
तस पणन्न खाणि पट्टराणी नामे अचिरा नारी, सुह सेज सूती चउद पेखे सुपन सार दु-चार ॥२॥
सव्वट्ठसिद्ध विमाणथी तब चविओ उर उपन्न, बहु भद्द भद्दव कसिण सत्तमि दिवस गुण सपुन्न ।
तव रोग सोग वियोग विड्वर मारि ईति समत, वर सयल मगल केलि कमला घर घर विलसत ॥३॥
वरचद योगे जेष्ठ तेरसो वदि दिने थयो जन्म, तव मज्झ रयणीइं दिसा कुमारी करे सुईकम्म ।
तव चलिअ आसण मुणिअ सवि हरि घटानादे मेलि, सुरवृद साथइ मेरुमथइ रचे मगलकेलि ॥४॥
ढाल भापानी। नाभिराया घर नन्दन जनमीयाए–ए देशी
विश्वसेन नृप घरे नदन जनमीयाए तिहुंअण-भवियण प्रेमस्यु प्रणमीयाए,
त्रुटक–हार प्रणमीया चउसट्ठि इद लेइ ठवे मेरुगिरीद, सुरनदि नीर समीर तिहा खीर जलनिधि नीर ॥५॥
सिंहासणे सुरराज जिहा मिल्या देवसमाज, ओषधिनी जाति सर्वे सरस कमल विख्यात ॥६॥
ढाल–विख्यात विविध परे कर्मनाए तिहां हर्ष भरि सुरभि वरदामनाए,
त्रुटक–हरि वरदामने मागधनामे जेह तीरथ उत्तम ठाम, तेह्तणी माटि सर्व करे ग्रहण सर्व सुपर्व ॥७॥
बावना चदन सार अभिओगिक सुर अधिकार, मनो धरी अधिक आणद अवलोकना जिनचद ॥८॥
ढाल–श्रीजिनचदने सुरपति नवरावताए निज निज जन्म सुकृतारथ भावताए

त्रूटक-हांरे भावता जनम प्रमाण। अभिषेक कलश मंडाण। साठि लाख ने एक कोडि, सय दोय पंचास जोडि।
आठ वाना जेह होइं, चोसट्ठ सहसा जोइ। इणि परे भक्ति उदार, करे पूजा विविध प्रकार ॥१०॥
ढाल-विविध प्रकारना करिय सिणगार श्युंए भरीय जल विमलना विपुल भृंगार रूड्डाए।
त्रूटक-हांरे भृंगार थाल चंगेरी, सुप्रतिष्ठ प्रमुखसुं भेरी। सवीकलश परिमंडाण, ते विवि धवस्तु परीमाण ॥११॥
आरति मंगलदीप, जिनराजने समीप। भगवती चूरणिमांहे, अधिकार एह उछाहे ॥१२॥
ढाल-अधिकार उछाहसुं हरष भरजल भीजताए, नवनव भांतिसुं भक्तिभर कीजताए।
त्रूटक-कीजता नाटिक रंग गाजतां गुहिर मृदंग, किट किटति तिहां कडताल चउताल ताल कंसाल ॥१३॥
संख पणव भुंगल भेरी झलरी वीणा नफेरी एक करे हयपार, एक करे गजगुलकार ॥१४॥
ढाल-गुलकार गरज नीरव करेए पाय हुर २ धूर सुर भरेए।
त्रूटक-सुर धरे अतिवहुमान। तिहां करे नव नव तान, वर विविध जाते छंद जन भक्त सुरतरूकंद ॥१५॥
बलि करे मंगल आठ, ए जम्बूपन्नति पाठ। धय थूइय मंगल एह, मन धरी अति बहु प्रेम ॥१६॥
ढाल-प्रेमसुं घोषणा पुन्यनी नीखुणे सुर सहूए समकित पोषणा सिष्ठ संतोषणा इंम बहूए।
त्रूटक-बहू प्रेमस्युं सुख खेम धरि आणिया निधी जिम, बत्रीस कोडि सुवन्न करे वृष्टि रयणनिधान ॥१७॥
जिन जननी पासे मेहेलो, करे अट्ठाइनी केलि। नंदिसरें जिनगेहे, करे महोच्छव समनेहे ॥१८॥

ढाल–हवे राय महोच्छव करे रंग भरि थयो जव परभाति, सुर पूजीओ सुतनयननिरखी हरषियो तय तात।
वर धवल मगल गीत गाता गधर्व गावइ रास, वहु मान दान सुखिया कीधा, सकल पूगी आस ॥१९॥
तिहां पचवरणी कुसुमवासित भूमिका सलित्त, तव अगर कुंदरु धूप धूपणा ढाल्या कुकुंमलित्त।
सिर मुकट मडण काने कुडल हिइ नवसर हारि, इम सयल भूषण भूषितांबर जगत जन परिवार ॥२०॥
जिन जन्म कल्याण महोच्छवे चउद भुवन उद्योत, नारकि थावर प्रमुख सुखिया सकल मगल होत।
दुख दुरित ईति शमित सघलां जिनराजने परताप, तिणहेते शातिकुमार ठवीउं नाम अति आल्हाद ॥२१॥

कलश–श्रीशान्तिजिननो कलश भणता हुइ मंगलमाल, कल्याणकमला केलि करतां लहे लील विलास।
जिन स्नात्र करीइ सहेज तरीइ भवसमुद्र अपार, श्रीज्ञानविमलसूरिंद जंपे श्रीशातिजिन जयकार।

॥ श्रीशान्तिनाथजीनो कलश सपूर्ण ॥

५ परिच्छेदः–प्रतिष्ठोपस्करः ।

प्रतिष्ठा विविधाङ्गेषू–पयोगी यो नियोगत । उपस्करगणः सोऽत्र, समासेनोपवर्णितः ॥६॥

भा०टी०—प्रतिष्ठाना अगभूत एवा भिन्न भिन्न अनुष्ठान कार्योमा जे ने सामाननी अनिवार्य उपयोगिता होय छे तेवा सामाननी आ परिच्छेदमां सूचिओ आपेली छे.

१—अंजनशलाकाना सामाननी सूची—

श्रीफल (नालियेर) नं० ३०१
नालियेर गोला ३१
सोपारी राती २१
सोपारी काली ५१
सोपारी धोली से. २
बदाम गोटा से. २
बदाम कागदी से. १
बदाम गोला से. १
पिस्ता से. ०॥
कमलकाकडी से. ०॥
सिंघोडां सूकां से. २
खारेक से. २
काजू से. २

किसमिस द्राख से. २
एलची तोला १०
लविंग तो० १०
जावंत्री तो० ५
जायफल तोला १०
कंकु तोला १०
केसर तो० १०
कस्तूरी वाल ५
गोरोचन वाल ८
कपूर तो० १०
हिंगलोक डलीबद्ध तो० ५
बरास तो० १०
चंदन मूठा ४

लालचंदन मूठो १
अगर तो० १०
तगर तो० ५
कंकोल तो० ५
वालाकुंची ४
अगरवत्ती से० २
दशांगधूप से. २
वासक्षेप से. २
किंद्रूप धूप से० १०
प्रियंगु तोला १०
गहुंला तो० १०
मंगलमाटी ८ जातनी
अष्टवर्ग १ लो

अष्टवर्ग २ जो
सर्वौषधि पडिकु १
सदौषधी पडिकु १
सुगंधौषधी पडिकुं १
मूलिकाचूर्ण पडिकुं १
कषाय छाल पडिकुं १
३६० क्रियाणोनो पुडो १
कालो सुरमो काचोडली तो० २
पाकां मोती तो. ०।
प्रवालनी शाखा तो ३
गुलाल तो० १०
अबीर तो० ५
पंचरत्ननी पोटली १२५
आरेंग सें० ११

गेवा (गोली) सूत्र से० १
भात (डांगर) से० ५
चोखानी फुली से० १
शणबीज से० १
वाल से० १
कुलत्थ से० १
तिल से० २
सरसव से० १
गहुं से० ५
जव से० ७
चणा से० ६
चोला से० ५
मग से० ६
जुवार से० १

अडद से० ६
सोनाना वर्क थोकडी ५
रूपाना वर्क थोकडी १०
सोनाना पुष्प १०८
रूपाना पुष्प १०८
चांदीनी रकाबी १
चांदीनो कच्चोलो १
चांदीना कलशिया ८
सोनानी या चांदीनी थाली १
सोनानी शलाई १
सोनानी कलम १
जर्मन शिल्वरनी वाटकी १५
आरीसो १ (इंच ७–८ लंबो)
आरीसा ८ (४–५ इंच लंबा)

अंग्राडीनी पूंजणी ८
चामर ८
पंखा (वींजणां) ८
मींढल १७०
मराडाफली १५०
काचनां न्हानां फाणस २
समाई २ छोटी
समाई मोटी २ फूट २॥।
अत्तर गुलाब तो० १
अत्तर केवडा तो० १
अत्तर मोगरा तो० १
अत्तर खश तो० १
अत्तर चमेली तो० १
तेल चमेली तो० १०

तेल चंदननुं तो० १०
गुलाबजल शीशा २
आंबलां तो० १०
कंकोडी तो० ५
वस्त्रो–रेशमी रातुं हा० ७
रेशमी पीळुं हा० ५
रेशमी नीलुं हा० ७
रेशमी धोळुं हा० ११
रेशमी काळुं वस्त्र हा० २॥
पंचपटो (मशरु) हा० १।
रेशमी आशमानि हा० १।
रेशमी जांबुई हा० १।
कटासनां ऊनी ८
चरवला ४

धावली ६
अबोटियां जोटा ८
उत्तरासणियां जोटा ८
मोटा पनानी मलमल ताको १
छोटा पनानी मलमल ताको १
जगनातो वारनो पनो ताको १
लांगक्लोथ ताको ०॥
चोल ताको १ पनो हाथ २ नो
चोल ताको १ पनो वारनो
नीलुं सूत्राउ ताको १ पनो १ हाथ
पीळुं सूत्राउ ताको १ पनो १ हाथनो
घंट १
घंटडी १
धूपधाणुं १ लाकडीना हाथानुं

धूपधाणु १ सॅरवालु
आरती १
मंगलदीवो १
छत्र १
कमलकाग २
त्रांबा–पीतलनी कुंडी २ मोटी
गंगाजलनी शीशी १
रंगीन पेचो–पाघडी दंड माटे
गोल सेर ५
खडी साकर सेर ५
आखा चाखल सेर ३०
गायनु घी सेर ८
भेंसनुं घी सेर १०
जवारिया वास ४,

७–७ छाबडी वांशनी छाब,
वांस नवा उजला १० लांबा हाथ ५–५
बाजोठ १ गज समचोरस वास्तुनो
पाटलो १ नंद्यावर्तनो
पाटलो १ दिक्पालोनो
पाटलो १ नवग्रहोना
पाटलो १ अष्टमंगलनो
प्रणालिभो बाजोठ १
फटामणां जेवी चटाइयो १२
नवा पाटला ४
अखंड दीपक योग्य मोटा फाणस २
मोटा कोडिया फणावालां २
कासानी थाली ४
कासाना वाटका २

कन्याकात्या सूतनी कोकडी ५
त्रांबानो लोटो १
त्रांबानो कलशियो १
हलदरना गांठीया ८
समूल्गे डाभ मूलिया ४
अघेडानी कलम २
कोरा डाभनी पूली २
१०८ नालनो कलश १
चोकडता रूपैया ४
त्रांबाना पैसा ३००
त्रे आनी पावली आठ आनी रु. ५०नी
रोकडा रूपैया
मागक दीवो १
माला १ स्फटिकनी

माला १ गोमेद वा सिंदुरिया स्फटिकनी
माला १ नीलमणिनी
माला १ केरबानी
माला १ अकलबेरनी
माला १ प्रवालनी
चोरस चंद्रवो न्हानो १
जवनी माला प्रतिमा दीठ
आरेठानी माला प्रतिमा दीठ
माणेकस्तंभ (मोभण) १
तोरण १ सागनी लकडीनुं
तोरण १ चांदीनुं
चांदीनां पुंखणां (जुंसरो १ मूसल २
रवइओ ३ त्राक ४)

चांदीनो मूलनायक नीचे राखवानो कूर्म १
ध्वजा १ दंड मापनी
ध्वजा २ न्हानी.
माटीना म्होटा कलश २
घडा (मटकी) ८
मोटा गाडवा (मोरिया) १२
न्हाना गाडवा (पुंखणिया)१२
माटीना कलशिया (कुलका) १०८
कोडियां ८ न्हाना
कुंडां ४ म्होटां
कुंडां ८ कंइक न्हानां
कुंडिओ न्हानी १२
सरावलां ६१

च्हॉरी माटे वेहिनां वर्तन ३६
प्रासाद पुरुष सोनानो १
प्रतिमाओने आभरण माटे सोनानो तार
चांदीनो तार
सोना चांदीना वास्तुपत्रा
शिल्पिसन्मानार्थं चांदीनो गज, हथोडो,
टांकणो, भरणको, चूनालोडो वगेरे.
तोरण बांधवाने सोनानी छडी १
मंडपनो सामान
वेदीनो सामान
आंगीनो सामान

सूचना—

उपरनी सूचीमां जणावेल सामान अजनप्रतिष्ठास्थापना अने शांतिस्नात्र अथवा अष्टोत्तरी स्नात्रनो सयुक्त छे, लखेल प्रमाणमां स्थितिवशात् साधारण वधारो घटाडो पण थइ शके छे.

मारवाडमां अजनशलाकामां ज नहिं स्थापनाप्रतिष्ठामां पण तोरण बांधवानो रिवाज छे अने एना चढावाना हजारो रुपैया थाय छे, वली त्यां देरासर बनावनार शिल्पीना सन्मानार्थे गज आदि उपकरणो चांदीना करावीने अपाय छे, वास्तुपूजा प्रसंगे सोनानु अथवा चांदीनु वास्तु (चोरस पतुं) करावीने तेने अपाय छे, तेथी आ बाबतनो सूचीमां निर्देश कर्यो छे, तोल लख्यु नथी, परिस्थितिने अनुसारे प्रतिष्ठाप्रसगे तोलो बे तोला सोनु तथा ४०–५० तोला चांदी तो सूत्रधार शिल्पीना हाथमां जाय एवी उदारता प्रतिष्ठा करावनारे अवश्य करवी जोइये.

पूर्वे अजनशलाका महापूजादिमां नाणानो व्यवहार न हतो, पण वर्तमान समयमां विधिकारो पगले पगले नाणा मूकावे छे, अमुक विधिकारो तो उत्सव दर्मियान ४००–५०० रु०नी पोताना हाथे गति करे छे, ए विधिकारोनी प्रतिष्ठानी-क्षति करनारु छे, प्रतिष्ठा करावनारे यथोचित याचकादिदान पोताने हाथे आपवु जोइये.

२—पादलिप्त—प्रतिष्ठापद्धति प्रतिष्ठा कारक जात सूची।

अधिवासना मंडप करण	सुवर्णादि कलश ८	नारक (माटीना कलशिया) १०८
स्नान मंडप करण	आद्य कलश ४	चतुरंग वेदी १

शरावलां ५०
जवारिया वांस ४
शरावलामां जवारा
स्थपति (शिल्पि) कलश १
धान्यवर्ग-(जव-शालि-गहुं-तल-अडद-मग-चाल-चणा-मसूर-तुअर-(वा)शणबीज-कांग-शामकादि)
रत्नवर्ग-(हीरक-सूर्यकान्त-चन्द्रकान्त-नील-महानील-मोती-पुखराज-पद्मराग-(माणेक, वैडूर्य (अकीक) आदि)
लोहवर्ग (सोनुं-रूपुं-त्रांबु-कांतलोह-जसद-पीतल-कांसुं-सीसुं आदि)
कषायवर्ग-(वड-उंबर-पीपल-चंपक-अशोक-कदंब-आम्र-जांबु-बकुल-अर्जुन-पाडल-वेतस-पलाशादि)
मृत्तिकावर्ग-(राफडानी, पर्वतशिखरनी, नदीना बंने तटनी महानदीसंगमनी, डाभमूलनी, बिल्ववृक्षमूलनी, चैत्यनी, हाथीदांतनी, वृषभ शृंगनी, राजद्वारनी, पद्मसरोवरनी, एक वृक्ष-आदिनी)
पानीयवर्ग-(गंगा-यमुना-मही-नर्मदा-सरस्वती-तापी-गोदावरी-समुद्र-पद्मसर-ताम्रपर्णी नदीसंगम आदिनां पाणी)
औषधीवर्ग-(सहदेवी-जया-विजया-जयन्ती-अपराजिता-विष्णुक्रान्ता-शंखपुष्पी-बला-अतिबला-हेमपुष्पी-विशाला-नाकुली-गंधनाकुली-सहा-वाराही-शतावरी-मेदा-महामेदा-काकोली-क्षीरकाकोली-कुमारी-रींगणी न्हाना-रींगणी म्होटी-चक्रांका-मयूरशिखा-लक्ष्मणा-दूर्वा-दर्भ-पतंजारी-गोरंभा-रुद्रजटा-लज्जालु-मेषशृंगी-ऋद्धि-वृद्धि आदि)
अष्टकवर्ग-(प्रियंगु-वचा-लोध्र-यष्टिमधु-कुष्ट-देवदारु-उशीर-ऋद्धि-वृद्धि-शतावरी.)
सर्वौषधिवर्ग-(प्रियंगु-बीलक-आमलक-जातिपत्रिका-हरिद्रा-ग्रंथिपर्णक-मुस्ता-कुष्टादि)

गन्धवर्ग-(सिल्हक-कुष्ठक-मांसी-मुरमांसी-श्रीखण्ड-अगुरु-कर्पूर-नख-पूतिकेशादि)
वास-(श्रीखंड-कुकुम कर्पूरमय)
मुद्रिका
कंकण-मदनफल
रक्तसूत्र
ऊर्णासूत्र
लोहमुद्रिका
ऋद्धि-वृद्धियुत कंकण १
यवमालिका
तर्कुका (त्राकी)
शिला (मेनशिल)
गोरोचन

श्वेत सरसवा
श्वेत वस्त्रद्वय
पट्टाच्छादन
प्रतिमाच्छादन
पटलको
घटो
धूपधाणाओ
रूपानी वाटकी
सोनानी शलाई
कासीनी वाटकिओ
आरीसो १
नालिएरो
बीजोरां
केलां

नारंगीओ
आंबा
जांबू
कोला
वृन्ताक
आमला
मोर आदि शुभ मूलवर्ग।
सोपारी
नागरवेलना पान
मातृपुटिका १०८
अखंड चोखा सेई ?
सेलडीओ
विविध पुष्पो

३—गुणरत्नसूरिप्रतिष्ठाकल्पोक्त सामग्री सूची—

नवांगवेदि (वेदी) ४
वांसे जवारा ४ (गोहू व्रीहि जव)
शरावले जवारा ८
न्हवणयोग्य कलश ४ (सोना रूपा त्रांबा वा माटीना)
पाणी घालवा कोरा घडा
घडी योग्य कुंडी २
नंदावर्तयोग्य वरगडुआ ८
शराव ६४
कुंडां माटीनां ८
आचार्ययोग्य वस्त्रो
सूत्रधारयोग्य वस्त्र
अक्षतपात्र १

नंदावर्तयोग्य सेवननो पाटलो १
सदश कोरां वस्त्र २ (नंदावर्तयोग्य १ प्रतिमायोग्य १)
सोनानां कांकण ४
सुवर्णमुद्रिका ४ (कंकण--मुद्रिकाओ ४ स्नात्रकारोने माटे)
रूपानी वाटकी १, सोनानी शलाई १
अंजन (कालो सुरमो, घृत, मधु, साकर भेली तैयार करेल)
हस्तलेप (प्रियंगु-कर्पूर-गोरोचन)
पंचरत्न (प्रवाल-सुवर्ण-रूप्य ताम्र-मोतीनी पोटली)
आरीसो १

माई साडी (कुसुंभी वस्त्र)
मींढल (ऋद्धि वृद्धि सहित)
आरीठा मालाओ, जवमालाओ
श्वेतसर्षप (लोहाऽच्छेदितनीरक्षापोटली)
अर्घभाजन (सरसव-दहि-अक्षतघृत-डाभ-मय)
गेयाछत्र वेष्टित पूर्ण त्राक)
पुंखणोपकरण (धूंसर-मुसल-रवाइओ)
पुंखणारी स्त्री ४ (स कांकणी)
भांमणां शराव, गंगाजल
समूल दर्भ, गंगावेलु
कूवा नदीनां १०८ पाणी, ३६० क्रियाणानो पडो घसी सूखडनो वास धवलो

वास (केसर–कपूर–कस्तुरी)
भोगपुडी
धूपपुडी
घणा फूल
अखंड तंदुल सेर २
घट
धूपधाणा
छत्र
चामर
पंचशब्द वाजिंत्र
नैवेद्य–(धारी, सुंहाली लाडु मांडी)

काकरिआ २५ (मगना ५, तिलना ५, चणाना ५, गहूंना ५, धाणीना ५, फूलीना ५, एवं २५,)
बलिशराव ७ (बाट, खीर, करंबो, सातधाननी खीचडी, कूर, सिद्धवडी, पुडा एवं ७)
सातधान (शणबीज १, मग्नूर २, जव ३, काग ४, अडद ५, सरसव ६, वाल ७,)
सात धान (प्रकारान्तरे–शालि १, जव २, गहु ३, मग ४, वाल ५, चणा ६, चोला ७,) नालिएर
सोपारी (पूगफल)
खजूर
द्राख
चरमोला
साकर
फलहुलि (दाडिम, जबीर, नारंगी, बीजोरा, सेलडी, आंबा)
घृत वाटको
दहि वाटको
बाकुला वानी ३

४ गुणरत्नोयाभिषेकोपकरण सूची

१–सुवर्णचूर्ण वा ४ सुवर्ण कलश अथवा सुवर्णयुक्त जलस्नात्र.

२–पंचरत्नस्नात्र (प्रवाल १, मौक्तिक २, स्वर्ण ३, रूप्य ४, ताम्र ५.)

३–कषायजलस्नात्र (पीपली, पीपल, शिरीष, उंबर, वड, चंपो, अशोक,

आंबो, जांबू, बकुल, अर्जुन, पाडल, पलाश आ बधांनी अंतरछालनुं)

४–मृत्तिकास्नात्र (गजदंत–वृषभशृंग उखेडी, पर्वतशिखर, उदेहीघर, महाराजद्वार, नदीसंगम, नदी उभयतट–पद्मसरोवरनी)

५–पंचगव्यस्नात्र (छाण १, गोमूत्र २, घी ३, दही ४, दूध ५ पंचांगडाभ अने पाणी)

६–सदौषधिस्नात्र (सहदेवी, बला, शतावरि, कुंआरि, पीठवन, मालवण, उभी, रींगणी, भूईरींगणी.)

७–मूलिकास्नात्र (मयूरशिखा, विरहक, अंकोल्ल, लक्ष्मणा, शंखपुष्पी, शरपुंखा, गंधतोली, महानोली)

मूलिका स्नात्रमां उक्त ८ मूलिकाना चूर्णथी स्नात्र थइ शके छे, पण जो १०० औषधिओ ज मेलवीने तेना मूलना चूर्ण वडे स्नात्र करवुं होय तो नीचे जणावेल १०० वृक्षोनां मूल मंगावीने तेना चूर्णवडे आ सातमो अभिषेक करवो, वर्तमानमां अमुक पेढी अथवा सामाननी दुकानमांथी अभिषेकनी औषधियोनी न्हानी पडीकीओ लेइने काम चलावाय छे, पण खरी रीते औषधिओ ताजी मंगावीने सारा प्रमाणमां ते वापरवी जोइये, स्नाप्य पदार्थनुं ते स्नात्रनी औषधिओना चूर्णना कल्क वडे प्रथम उद्वर्तन करीने पछी तेना जलनो अभिषेक करवो जोइये.

शतमूलनी नामावली–नंदिवृक्ष १, सहदेवी २, बला ३, अतिबला ४, विष्णुक्रान्ता ५, चक्रांका ६, अशोक ७, पुंनाग ८, बकुल ९, राजचंपक १०, विचकिल ११, राजशमी १२, शमी १३, जाति १४, दूर्वा १५, दर्भ १६, काश १७, बीजोरी १८, बदरी १९, इंगुदी २०, कंथेरि २१, थोर २२, कुंआरि २३, शतावरी २४, गिरणी २५, अघाडो २६, कालो अघाडो २७, अर्क २८, अलाण २९, शंखपुष्पी ३०, अंधाहुली (अधःपुष्पी) ३१, वट ३२, पीपल ३३, उंबर ३४,

तगर ३५, मयूरशिखा ३६, लांगली ३७, पाठ (कालीपहाड) ३८, पतजारी ३९, ग(धन्व)तरी ४०, मुसलि ४१, गलो ४२, दंती ४३, पुनर्नवा ४४, तुलसी ४५, यानची ४६, आसंद्रो ४७, काइणी ४८, रींगणि ४९, गालो ५०, ताड ५१, तमाल ५२, करंज ५३, आंब-ली ५४, कपित्थी ५५, मुद्गपर्णी ५६, मापपर्णी ५७, श्रीपर्णी ५८, खदिर ५९, पलाश ६०, छिन्नप्ररोही ६१, लज्जालु ६२, नागवेल ६३, वेऊ ६४, कुडो ६५, दाडिम ६६, क्षीर दाडिम ६७, कर्मदी ६८, फरंजी ६९, फंटासेलिआ ७०, वज ७१, आमघ ७२, निर्गुंडी ७३, भांगरो ७४, नोडिथेरी ७५, ह्रस्वपत्रा-स्नुही ७६, धमासो ७७, जनामो ७८, अरडूसो ७९, दूधेली ८०, इंद्रवारुणी ८१, कासंदो ८२, गोरंभा ८३, कौंच ८४, अगथिओ ८५, केतकी ८६, पारवि ८७, नवमल्लिका (नी-माली) ८८, कणवीर ८९, आवो ९०, कुंद ९१, मुचकुंद ९२, किरमालो ९३, पिप्पली ९४, करणी ९५, नारंगी ९६, अतिमुक्तक ९७, पाटला ९८, काचनार ९९, त्रांगवेल १००, वेतस १०१, शतपत्रिका १०२, (सेवंत्री) आ पण मूलशत कहेवाय छे. मातमुं मूलिका स्नात्र आ शतमूल्नु पण कराय-छे.

८—प्रथमाष्टवर्गस्नात्र-(उपलोट १, वज २, लोध्र ३, वीरणिमूल ४, देवदारु ५, दूर्वा ६, जेठीमधु ७, ऋद्धिवृद्धि ८,)

९—द्वितीयाष्टकवर्ग (मेदा १, महामेदा २, काकोली ३, क्षीरकाकोली ४, जीवक ५, ऋषभक ६, नखी ७, महानखी ८, ए दिल्ही बाजुथी आवे छे.

१०—सर्वौषधिस्नात्र (हलद्र वज सुआ वालो माथ गोठिरणो प्रियंगु सुरमासी कचूरो उपलोट तज तमालपत्र एलची नागकेसर लवंग कंकोल जायफल जावंत्री नखी चंदन सिल्हारस आदि सर्वौषधि चूर्ण)

११—सेवत्र्यादि कुसुमस्नात्र

१२—गंधस्नात्र (सिल्हारस, उपलोट,

सुरमांसी, चंदन, अगर, केसर, कर्पूरमय, गन्ध)

१३–वासस्नात्र (घरास मिश्रित चंदन घसीने करेल धवलवास)

१४ चंदनस्नात्र (जाडा चंदनना घोल वडे)

१५–कुंकुमस्नात्र-(चंदनमूठा वडे जाडुं केसर घसीने जलमां नाखीने)

१६–तीर्थजलस्नात्र (गंगा आदिनां तीर्थजलो जलमां नाखीने)

१७–कर्पूरस्नात्र (कर्पूर घसीने अभिषेक जलमां नाखीने)

१८–पुष्पांजलिस्नात्र

५—बिम्बस्थापना—प्रतिष्ठोपकरणसूची

वर्तमानकालीन अञ्जनप्रतिष्ठोत्सव जेम दश अग्यार दिवस लंबाय छे तेम बिम्बस्थापना–प्रतिष्ठोत्सव पण ८–९ दिवस तो लंबाय ज छे, आ समय दर्मियान नित्य भिन्न भिन्न पूजाओ भणावाय छे अने प्रतिष्ठा संबन्धी विधानो तो थाय ज छे, अन्ते अष्टोत्तरी अथवा शांतिस्नात्र भणावाय छे. आ वधां कार्योने पहोंची शके ए हिसाबे नीचेनी सामान सूची छे, अष्टोत्तरीमां मात्र ८० नालीएर अने नैवेद्य तथा फलोमां कंइक वृद्धि थाय छे, बीजो फेर पडतो नथी. आ सूचीमां जणावेल सामानमां परिस्थितिने अनुसारे कमती ज्यादा पण करी शकाय छे, विधिकारोए देश कालने अनुसरीने काम लेवुं.

केशर तोला ५	वरास तो० ५	गोरोचन तो० ०।
कस्तूरी वाल ३	चंदनना मूठा २	अगर तो० ५
कर्पूर तोला ७	रक्तचंदन तो० ५	तगर तो० ५

हिंगलोकडली तो० ५
कंकोल तो० ५
सोनाना वर्क थोकडी ४
चांदीना वर्क थोकडी ८
फळु पैसा १० भर
गुलाल तोला ५
अबीर तोला ५
वासक्षेप रतल २
दशांगधूप रतल २
अगरबत्ती रतल ४
किंदरूप धूप रतल १४
नालाछडी नग ४
सोपारी राती रतल १
सोपारी काली रतल ०॥

सोपारी धोली रतल ३
बदाम गोटा रतल ४
बदाम कागदी रतल १
खारेक रतल ४
द्राख किसमिस रतल ४
पिस्ता–छीलचा रतल १
बदामना गोला (मगज) रतल २
सींघोडा सूका रतल ३
काजू रतल ३
कमलकाकडी रतल १
नालीएर नग १५१
अखरोट रतल २
चारोली–नेपाली रतल १
एलची तो० ५

लविंग तोला ५
जावंत्री तोला ५
जायफल तोला ५
तज तो० ५
ककोडी तो० १०
आंबला तोला १०
मींढल नग ३५
मरडासींगी तो० ५
पंचरतननी पोटली २१
मंगलमाटी ८ जातनी
प्रथम अष्टवर्ग पडिकु १
द्वितीय अष्टवर्ग पडिकुं १
सर्वौषधी पडिकुं १
सदौषधि पडिकु १

मूलिकाचूर्ण पडिकुं १
कपायछाल पडिकुं १
गेवा (मोली) सूत्र रतल १
भात (डांगर) रतल ६
चोचानी फूली (करमरा) रतल १
तल से० १
सरसव रतल १
घहुं से० २
जव से० ४
चणा से० ३
चोला से० २
मग से० ३
अडद् से० ३
जुआर से० २

गोल से० ५
साकर से० ५
सुवर्ण पुष्प १०८
रूप्य पुष्प १०८
चांदी अथवा जर्मनसिल्वरना कलशिया ८
जर्मनसिल्वरनी नानी वाटकी १५
काचना नानां फानस २
समाई मोटी २
अत्तर गुलाव तो० ०॥
अत्तर केवडा तो० ०॥
अत्तर मोगरा तो० ०॥
अत्तर खश तो० ०॥
अत्तर चमेली तो० ०॥
तेल चमेली तो० १०

चंदनतुं तेल तो० ५
गुलाबजल शीशो १ मोटो.
रेशमी वस्त्र रातुं गज ४
पीलुं गज ४
नीलुं गज ५
धोलुं गज ६
कालुं गज २
किरमजी गज १
पंचपटो गज १
आस्मानी गज १
आसन (कटामणां) ४
अवोटियां (धोतियां) ८
उत्तरासणियां (खेश) ८
धावली ४

अगोन्छा ४
मलमल पनो ५६ इंचनो ताको १
मलमल पनो ३६ इ० ताको ०॥
जगन्नाथी पनो ३६ इ० ताको ०॥
जगन्नाथी पनो हाथनो ताको ०॥
चोल पनो ३६ इन्च हा० ७
चोल पनो २८ इ० हाथ २०
सूताउ नीलु हाथ १०
सूताउ पीलुं हाथ १०
घट १
घटडी १
धूपधाणा २
आरती १
मंगलदीवो १

छत्र (मेघाडंबर) १
कलम काठ २
गंगाजल
दंड योग्य रंगीत पेनो १
त्रांबा पीत्तलनी कुंडी २ मोटी
आखा चावल सेर २१
गायनुं घी से० ७
भेंसनुं घी से० ८
जवारिया वास ४
बाजोठ १ गज समचोरस नवो
पाटलो दश दिक्पालोनो १
पाटलो नवग्रहनो १
पाटलो अष्ट मंगलनो १
प्रणालिओ बाजोठ १

अखंडदीपक योग्य मोटां फानस २
अखंडदीपक योग्य कणनाला कोडिया २
कन्याकात्या सूतनी कोकडी ५
त्रांबानो लोटो १
त्रांबानो कलशियो १
हलदरना गांठिया ५
समूलो दाभ मूलिया २
अघेडानी कलम १
कोरा डाभनी पूली २
१०८ नालनो कलश १
चोखवा रुपैया ४
त्रांबाना पैसा २००
५० रु०नी रेजानी पावली आठआनी
माणेकदीवो १

स्फटिकनी माला १
गोमेद वा सिंदुरिया स्फटिकनी माला १
केरबानी माला १
अकलबेरनी माला १
नीलमणिनी माला १
प्रवालनी माला १
चारस न्हानो चंद्रवो १
माणेकस्तंभ (भोभण) १
तोरण एक लाकडानुं
तोरण १ चांदीनुं
चांदीनां पुंखणां (झुंसर मुसल-रवइओ-त्राक)

चांदीनो कूर्म १ मूलनायक नीचे
ध्वजा १ दंडना मापनी
ध्वजाओ २ न्हानी
माटीना मोटां माटां २
माटीना घडा ८
माटीना मोरिया (वेडिया) १२
माटीना गाडुआ १२
माटीनां कोडियां बहु न्हानां ८
माटीनां कोडियां मोटां ८
माटीनां मोटां कुडां २
माटीनां कुंडां ८ मध्यम
माटीनी न्हानी कुंडिओ १२

माटीनां शरावलां ६१
सोनानो प्रासाद पुरुष १
सोनानो तार सुवर्ण कलश योग्य
चांदीनो तार प्रासादादि योग्य
चांदीनो वास्तु १
शिल्पिसन्मानार्थ चांदीनां उपकरणो.

ए उपरांत मंडपयोग्य सामान, वेदीयोग्य सामान, भगवाननी आंगी विगेरेनो सामान पण साथे मंगाववो योग्य गणाय छे अने ए सामान उक्त प्रतिष्ठाना सामानथी जुदो लेखवो जोइये.

—०—

६—शान्तिस्नात्रना सामाननी सूची

प्रतिमा ४ पंचतीर्थी, श्रीआदिनाथ १ अजितनाथ २ शान्तिनाथ ३ पार्श्वनाथ ४ अथवा चोवीस वटो १.

परनालिभी बाजोठ न० १
सिंहासन १
छत्र ३
मोटी माटली १
कुंभ कोरा राता निरंग ४
त्रांबाकुंडी न० २
राता कुंडा नं० २
रूपाना कलश न० ८
न्हाना लोटा न० ४
१०८ नालुवानो कलश १
त्रांबानी गोली १
हलद्रना गाठिया २
पंचपल्लव १ (आम्र, १, वड २, पीपल ३, जांबू ४, अशोक ५.)

त्रांबानु दीपक पात्र १
मोटुं फानस १
सेवननां पोटला न० ३
(दिक्पाल-ग्रह-अष्टमंगलना)
न्हाना पोटला १२
स्नात्रिया १३
गेंगाधूत्र सें० ०॥
दीवट न० २
दीवा माटे मोटा सरावला २
आरती १
मंगलदीवो १
सीगडी १
चीपिओ १
धूपधाणां २

कोयली खेरना, बावलना या रायणना.
चांदी पीतलनी २
दीवी नं० २ (समाई मोटी)
जवारिया वांश न० ४
शरावला न० ११
डाभ समूलो मूलिया २
मींढल मरडासींगी नं० २५
रूपानाणां न० ५१
त्रांबानाणां न० १०१
नागरवेलनां पान १००
चोखंडा रूपिया ४
भात (डांगर) सें० ४
पंचरतननी पोटली १५
अघाडा तथा शरीयानी लेखण १

वाटका नं० ८
छावडी १
कंकावटी १
वाटका मोटा २
न्हानी वाटकी पूजानी १६
थाल नं० ४
गायनुं घी से० ७
भेंसनुं घी से० ८
चंद्रवा नं० २
ध्वजा न्हानी नं० २
अंगलूंछणां १२
धोतियां नं० ५
उत्तरासणियां नं० ५
धाबली नं० ४

सुगंधी तेल तो० १०
उवटणुं कंकोडी आंवलां आदिनुं
पछेडी दसियावड २
दरियाइ तास्तो गज २
कमलवर्णुं कापड गज २॥
पीलुं कापड गज २॥
नीलुं कापड गज २।
रातुं कापड गज २॥
पंचपटो गज १।
१०८ निवाणनां पाणी
गंगाजल
श्रीफल नं० १२५
कस्तुरी वाल २
केशर तो० ५

गोरोचन तो० ०।
बरास तो० ५
कर्पूर तो० ५
हिंगलोक तो० २
सोनाना वर्क थोकडी १
चांदीना वर्क थोकडी ५
रक्तचंदन (रतांजणी) तो० २
कंकु तो० १०
वासखेप रतल १
अगर तो० १
अगरवत्ती रतल १
दशांगधूप से० १
वालाकुंची ४
वींजणां २

चोखा से० ११
चंदनना मूठा २
सर्वौषधि चूर्ण तो० १
मंगलमाटी तो० १
सोपारी राती शे० ०॥
सोपारी घोली से० १
सोपारी काली से० ०॥
बदाम सेर २॥
ख्यारेक से० २
द्राख से० १
मींगोडा से० १
पीस्तां से० ०॥
कमलकाकडी से० ०॥
साकर से० ३

गोल से० २
टोपरुं से० १।
दाडिम ३०
सेलडी ३०
केला ३०
नारंगी ३०
जमीरा ६
बीजोरां ३
मोसंबी ३०
कमरख ३०
सेवीया लाडू ३०
ख्याजां नं० ३०
सुहाली ३०
मोतीया लाडू ३०

घेवर नं० ३०
दोठा नं० ३०
पतासा नं० ३०
सर्व जातना पुष्प
तिल से० १।
गहु से० २
जव से० ३
चणा से० ३
चोला से० २
अडद से० २
जुवार से० १।
मग से० ३
मलमलनुं थान ०॥
जगन्नाथी घोएल थान ०॥

रातुं चोल थान ०॥	सुतरनी दोरी लोटी १	घंटडी १
काची ईंट नं० २००	थाली वेलण १-१	बाजोठ ३

७–पूर्वतन प्रतिष्ठाकल्पोक्त–सामग्री कोश.

अमोए जे ग्रन्थोनुं अवगाहन करीने 'नव्यप्रतिष्ठापद्धति'नुं निर्माण कर्युं छे ते आधार ग्रन्थोमां कालक्रमे सामग्रीनो केवी रीते वधारो थयो छे ए वस्तु आ कोश उपरथी स्पष्ट समजी शकाशे.

अमारा अनुशीलनमां आवेल १ श्रीपादलिप्तप्रतिष्ठापद्धति, २ श्रीचन्द्रप्रतिष्ठापद्धति, ३ जिनप्रभप्रतिष्ठापद्धति, ४ वर्धमानप्रतिष्ठापद्धति, ५ गुणरत्नप्रतिष्ठाकल्प, ६ विशालराजशिष्यप्रतिष्ठाकल्प, ७ जिनप्रभानुयायिप्रतिष्ठाविधि अने ८ सकलचन्द्रप्रतिष्ठाकल्प, ए आठ प्रतिष्ठाकल्पो छे. आ बधानो रचना समय क्रमिक होवाथी अमोए बधाने १ थी ८ सुधीनां नंबरो लगाडेल छे. प्रत्येक पदार्थना नामना अंतमां (१) (३।५।७) इत्यादि आंकडा मूकेला छे तेनो अर्थ ए छे के 'अक्षततन्दुल सेर १ (१)' आ विधान पादलिप्तप्रतिष्ठापद्धतिनुं छे, एज रीते (३।५।७)नो अर्थ समजवो. 'अक्षतपात्र' ए शब्द जिनप्रभ, गुणरत्न तथा भापाना प्रतिष्ठाकल्पोमां छे, एज प्रमाणे सर्वत्र कोष्ठकमां जेटलामो आंकडो होय तेटलामा ते नंबरना प्रतिष्ठाकल्पोमां ते पदार्थ लख्यो छे एम समजी लेवुं.

अक्षत तंदुल सेर १ (१)	अक्षतपात्र कृताऽभग्नतंदुल प्रस्थ (४)	अक्षत मृतस्थाल (२।३)
अक्षत पात्र (३।५।७)	अक्षोटक (३।४)	अक्षतांजलि (५)

अखंड चोखा थाल २ (३।८)
अखंड चोखा सेर (६)
अखंड तन्दुल सेर २ (५)
अखंड तन्दुल सेरी १ (१)
अखंडाक्षतांजलि (२।३)
अखोड १०० (७)
अखोड (८)
अगर (४)
अगरबत्ती (८)
अगर सेर २ (७)
अगुरु (कृष्ण) (१।४)
अभ्रक (१)
अनुतकूल (४)
अंगलूहणां (६।८)

अञ्जन (मधु) (१)
अंजन (कालो) सुरमो घी मधु साकर (२।३।४।५।६)
अञ्जन (गोघृत टां० १८,साकर टां० ९, कालो सुरमो टाक १२ (७)
अञ्जन (रातो सुरमो, साकर, बरास, कस्तुरी, मोती, मुगीओ, चुनी, सोनो, रुपो, गाओ घी, प्रत्यन्तरे मधु, प्रत्यन्तरे कालो सुरमो) (८)
अर्घ (सिद्धार्थ, दधि, अक्षत, घृत, दर्भ) (२।३।५।६।७।८)
अर्घ (सिद्धार्थ,-दधि, घृत, अक्षत, तंदुल, दूर्वा, चंदन, जव) (४)
अलङ्कार पूजा (२।३।५)

अश्रमिणनोपकरण (३)
अश्रमिनन (३)
अष्टमंगलक (धनसारक वेदिकादि) (१)
अष्टगंध (८)
अष्टक वर्ग १ (प्रियंगु वचा रोध्र यष्टिमधु कुष्ट देवदारु उशीर ऋद्धि वृद्धि शतावरी आदि) (१)
अष्टवर्ग १ (कुष्ट प्रियगु वचा लोध्र उशीर देवदारु दूर्वा मधुयष्टि ऋद्धि वृद्धि (२।३)
कुष्टादिप्रथमाष्टवर्ग (४)
अष्टवर्ग १ (उपलोट वज्र लोध्र वीरणिमूल देवदारू श्रो जेठीमधु ऋद्धि वृद्धि) (५।६)
अष्टवर्ग १ (उपलोट वज्र लोध्र हीरवणी

मूल देवदारु जेठीमधु दूर्वा ऋद्धि वृद्धि) (८)
अष्टवर्ग १ (कुष्ट प्रियंगु वचा लोद्र उशीर सतावरी घोडावज देवदारु द्रोई जेठीमधु ऋद्धि वृद्धि प्रमुखा(७)
अष्टवर्ग २ (मेदा महामेदा कंकोल खीर-कंकोल जीवक ऋषभक नखी महानखी (२।३)
अष्टवर्ग २ (मेदादि) (४)
अष्टवर्ग २ (मेदा महामेदा काकोली खीर काकोली जीवक ऋषभक नखी महानखी) (५।६।७)
अष्टवर्ग २ (पतंजारी वा कुष्ट विदारी कंद-कचूरो काचरी नखला कंकोडी खीरकंद मुसली बेई) (८)
आचार्य (१)
आचार्य योग्य वस्त्र मडि २ (७)
आचार्य योग्य सदश वस्त्र (५)
आच्छादन पट्टस्व (१)
आच्छादन वस्त्र ६ (वेदि योग्य ४ प्रतिमा योग्य १ नंदावर्त योग्य १ (२।३।)
आच्छादन पट ६ (द्वादशहस्तमित) (४)
आच्छादन वस्त्र २ (नंदावर्त योग्य १, प्रतिमा योग्य १) (५।६)
आच्छादन वस्त्र १ (नंदावर्त योग्य रादश हाथ) २ (७)
आच्छादन वस्त्र १ (हाथ २४ कुसंभरंगित प्रतिमा योग्य) (७)
आच्छादन वस्त्र ४ (अर्ध फालां वेदि योग्य) (७)
आच्छादन वस्त्र ४ (नंदावर्त योग्य, प्रतिमा योग्य, गुरुयोग्य, नंदावर्त लेखक योग्य) (८)
आदर्श (१)
आदर्शक दर्शन (६।२।३।४।५)
आदर्श १ (६)
आरीसो १ (बिम्बयोग्य) (८)
आरीसा ८ (८)
आरीसो देवयोग्य (७)
आम्र कुंभ ४ (१)
आग कर्पूर (३)
आमलक (१)

आम्र (१।२।३।४)
आज्य (५।६।७।८)
आरती (१।२।३।६।८)
आरीठा माल (५।८)
आरीठानी माला (प्रत्येक विम्बे) (६)
आरीठा सहस्र ७ (७)
इक्षु (१।४)
इन्द्र (१।८)
उत्तर वेदिका (१)
उत्पलसारिक (१)
उदक (२।३)
उदार (४)
उत्तती (२)
ऊतती (२)

ऊर्णासूत्र (१)
ऋद्धि वृद्धि समेत कंकण १ (१)
ऋद्धि वृद्धि (१।२।३।४)
ऋद्धि वृद्धि समेत मदन फल (३)
ऋद्धि वृद्धि समेत मदन फल कंकण ८ (४)
ऋद्धि वृद्धि समेत मदन फलारोपण कठे (३)
ऋद्धि वृद्धि सहस्र २ (७)
औषधिवर्ग (सहदेवी जया विजया जयती अपराजिता विष्णुकान्ता शंखपुष्पी वला अतिवला हेमपुष्पी विशाला नाकुली गंधनाकुली सहा वाराही
शतावरी मेदा महामेदा

काकोली क्षीरकाकोली
कुमारी बृहती द्वय चक्राका मयूर शिखा लक्ष्मणा दूर्वा दर्भ पतंजारी गोरंभा रुद्रजटा लज्जालिका मेषशृंगी ऋद्धि वृद्धि आदि (१)
कणयर प्रमुख पुष्प (७)
कदलक (१)
कदली फल (४।७।८)
कदली फल शुष्क (७)
कपर्दक (१।२)
करणी (७)
करंज (४)
करुणा (४)
कर्पूर (१।२।३।४।५।६।७।८)

कषायवर्ग (१।२।३।४।५।६।७।८) स्नात्र
कस्तुरी (१।२।३।४।५।६।७।८)
कंकण (२।५)
कंकण हस्तसूरि (२)
कंकण ३ (३)
कंकण कौसुंभ २० (३।४)
कंकण (मदनफलाख्य) (२)
कंकण मोचन (२।३)
कंकण (मींढल ऋद्धि वृद्धि सहित) (५।६)
कंकण (सुवर्ण) (५) (८।६)
कंकण ४ (सुवर्ण) (५)
कंकण १ (सुवर्ण) (७)
कंकण ऋद्धि वृद्धि समेत मिंढल सर्व चिम्बेषु (६)

कंकण गेवासूत्रमय वृद्ध प्रतिमा योग्य १ (७)
कंकण मींढल मरोडाफली स० ८ (८)
कंकण कौसुंभमय ८ (उभय योग्य) (७)
कंकणिका ५ (रक्तसूत्र वेष्ठित) (२।४)
कंकणिकारोप (३)
कंकणिका ५ (३)
कांकणी (६)
कांस्य (१)
कांस्य वर्त्तिका (१)
कंचुलि ४ (२।३।४।६।७।८)
कांकणी सेर. १ (७)
कंचुलिका १ (कौशेयमयी) (४)
कंदमूल (२)
कंदमूल नाना (१)

काकडी (६)
कुमारी १ (नेत्राअववर्तिनी) (३)
कूप–नदी जल १०८ (५।६)
कष्ट (४)
कुप–नदी–सरोवरादिनां १०८ जल (८)
कूप १०८ जल (७)
कुष्माण्ड (१)
कुन्द (७)
कुंडी २ (घटी योग्य) (५।६।७।८)
कुंडी २ (स्नात्रयोग्य) (७)
कुंडां ८ (धान बलियोग्य) (८।५)
कुंडां ८ (सातधान बलियोग्य) (६)
कुंकुम (१।२।३।४।५।६।७।८)
कूर (४)

\ ॐ \

कृष्ण लोह (१)
कुमरा (४)
केसर (३।५।८)
केसर सेर १ (७)
कौसुम वस्त्र रंजन (४)
कौसुम सूत्र रंजन (४)
कौसुंभ रक्त वस्त्र सूत्र (३)
सैरेयी (४)
कलश ८ (सुवर्णादि) (१)
कलश ४ (प्रतिमा निकट) (३)
कलश ४ (सुवर्ण) (प्रतिमा पार्श्वे) (२।६)
कलश ४ (श्वेत) प्रतिमा ४ दिशायां पचारा सहित (१)
कलश ४ (कुंभ) प्रतिमाना कोणोमां (१)
कलश ४ (स्वस्तिक पट्टनी ४ दिशाओमां) (३)
कलश ४ (जलयात्रानीतगर्भगृहादिमां) (६)
कलश ४ (स्नात्र योग्य) (६।८)
कलशला ४ (रुप्यमय स्नपनयोग्य) (७)
कलश ४ (सुवर्ण) (प्रतिमा निकटे) (८)
कलश १ (सुवर्ण) (८)
कलश ४ (वास मंडप ४ खुणे) (७)
कलश ५ (रुप्य) (४)
कलश ८ (सु० रू० ता० मृ०) (५।६।८)
कलश ८ (जल कार्ये) (७)
कलशुला १२० (२)
कलश १३२ (मृन्मय) (३)
कलशला १३६ (मृ०) (४)
कलशला १०८ (न्हवणयो०) (७)
कलश (रुप्य) (८)
कुंभ स्थपति १ (१)
३६० क्रयाणक पुटिका दान (२)
३६० क्रयाणक पुटिका १ शरावमां रासीने (३)
३६० क्रयाणक पुटिका पृथक पृथक (४)
३६० क्रयांणा संपुट १ (५।६।७।८)
क्रमुक (४)
खजूर (२।३।४।५।६)
खाजा (३।६)
खारेक (६।७।८)
खीर (८)
गडुआ ४ श्वेतवर (५)

गहुआ १२ (श्वेतवर) (६)
गहुआ ४ वा ८ (७)
गहुआ ४ (६)
गहुआ ८ (नं. व) (५)
गंगाजल (८)
गंगानी वेलू (३।५।८)
गंगोदक (४।५।६।७।८)
गन्ध (१।२।३)
गंध (४)
गंधचक्र (१)
गंधवर्ग (१)
गंधोदक (२।३।८)
गंधवर्ग (१) (विशेष स्नात्रमां)
गाडुआ ४ श्वेत (कपर्द सुवर्ण-जलधान्य
सहित संद्यावर्त पार्श्वे) (६)
गाडुआ ४ श्वेत १२ (४ दिशामें)
गाडुआ ४ नंद्यावर्त्त (८)
गाडुआ ४ वा ८ (पुंखण याग्य) (८)
गाडुआ ८ (पुंखणा योग्य) (६)
गुड (१)
गुडपिंड (१)
गेवाग्रा सेर ५
गेवाग्र (६)
गोरोचन (१।७)
ग्रहपूजन (६)
ग्रहस्थापना (मिनती पट्टे) (६)
घडा कोरा जलार्थे (५।६।८)
घंट (१।५।६)
घंट २ (८)
घाटडी (६)
घाटडी (५)
घी (८)
घीनो गाडवो (६।८)
घृत पाटलुं (५)
घृत गाडवी १ (सुरभि) (७)
घृतवर्तिका (२।३)
घृत (१)
घृतभाजन (१।३।४।५।६।७।८)
पीला ग्रह (८)
चातुरिका (१)
चवरीना चामर ३२ (८)
चणा (१)

तंबोल (७)
ताम्र (१)
तिल (१)
१०८ तीर्थजल (८)
तीर्थजल (समुद्र नदी द्रह कुंड जल) (२)
तीर्थादक (१)
तीर्थोदक (स० न० द्र० कुंड जल) (३)
तीर्थोदक (गंगा प्रभृति) (५)
तीर्थोदक (गंगा सिन्धु प्रमुख १०८ तीर्थजल) (६)
तुवरी (१)
तूलिका (कांचन) (१)
तोरिका (१)
त्रपु (१)

त्राक (गेवासूत्र वेष्टित पूर्ण) (५)
थाल सुवर्ण (८)
दधि (१)
दधि वाटलुं (५।६)
दधि योग्य वाटली ४ (७)
दधि-भाजन-दर्शन (६)
दहि भरा माटली १ (७)
दहिनो वाटको १ (८)
दधि भांड दर्शन (२)
दर्पण (१।४)
दर्भ (१)
दर्भ सशिरस्क (२।३)
दर्भ समूल (५।६।७।८)
दाडिम (२।३।४।५।६।७।८)

द्राक्ष (२।३।४।५।६।७।८)
द्वात्रिंशदंग (धूप) (४)
द्वादशांग (धूप) (४)
दीप मंगल (घृ.गु० समेत०) (३।४।२।६।५)
दीप (८) (१)
दीपमंगल (१।३।८)
दीवी ४ (८)
दीपमंगल ४ (गो. चू. कौ. रुत. व.) (४)
दूधनो वाटको १ (८)
दूर्वा (१)
दिक्पाल स्थापन (३।४।६)
दिक्पालार्थं (अर्घपात्र) (६)
दिशाबलि (३ ७)
ध्वज (इन्द्रध्वज) (८)

ध्वज (महाध्वज) २ (८)
ध्वज २४ (लघुध्वज) (८)
धान्य वर्ग (यव व्रीहि गोधूम तिल माष-
मुद्ग वल्ल चणक मसूर तुवरी व (श)ण-
बीज नीवार श्यामाकादि (१)
धान्य ७ प्रक्षेप (सात) (१।२)
धान्य (शण लाजा कुलत्थ यव कगु उडद
सर्षप ७ (क्षेपः) (२।३)
धान्य (शणबीज कुलत्थ मसूर वल्ल चणक
व्रीहि चवलादि (२।३)
धान्य बलि (शणबीज कुलत्थ मसूर जव
काग उडद सरसव) (८)
धान्य ७ स्नपन शालि यव गोधूम मुद्ग
वल्ल चनक चपलक (२।८)

धान्य स्नपन ७ (गध पुष्प युक्त) (३)
धान्य ७ (अभिषेक रक्तफल मिश्रित) (१)
धान्य ७ (शालि यव गोधूम मुद्ग वल्ल
चणक चवला (३)
धान्य ७ (सण कुलत्थ मसूर वल्ल चणक
व्रीहि चवलक) (४)
धान्य ७ (क्षेप) शण लाजा कुलत्थ यव
काग उडद सर्षप] (६)
धान्य ७ (शालि जव गोहु मुग वाल
चिणा चवला) (६।५)
धान्य ७ (सणबीन कुलत्थ मसूर जव
काग उडद सरसिव) (६)
धान्य ७ (शणबीज कुलत्थ मसूर वल्ल
जव व्रीहि चउला) (७)

धान्य ७ (सणबीज लाज कुलत्थ यव
कगु माष सर्षप) (४)
धान्य ७ (धान्य मुद्ग माष चणक यव
गोधूम तिल) (४)
धान्य ७ (परितः क्षेपः नद्यावर्ते) ५
धूप (१। २। ३। ४। ५। ६। ७। ८)
धूप कुदुरक प्रभृति (४)
धूप दशांग (४)
धूप दशाग सेर-॥ (८)
धूप पंचांग (४)
धूप द्वादशाग (४)
धूप द्वात्रिंशदग (४)
धूपधाणा (१। ५। ६। ८)
धूप पुडी (५। ६)

धोतियां जोडां ४ (६)
धोती जोडां ४ स्थाप
नंदावर्त मंडल (श्रीपर्णी पट्टे) (१)
नंदावर्त पाटलो १ (२।३।४।५।६।७।८)
नंदावर्त पाटलो १ चतुरस्र हा, १ (८)
नंदावर्त स्थापन (६)
नंदावर्त उपर (नालियेर २७ अथवा ८ (६)
नंदावर्त लेखन (लग्नथी १४।७।५।३
दिनपूर्वे) (७)
नागवल्लिदल (१)
नारंग (१।२।३)
नारिंग (७)
नारंगी (८)
नारी ४ (२।४) सकंकणा
नारी ४ (जीवत्, पितृ मातृ श्वश्रूश्वशुरा) (३)
नारी ४ कांकणी पुंखणावे) (५)
नारी ४ (जीवत् मा० पि० श्व० श्व० प-
तिका) (५।६)
नारी मूल शतवर्तिनी ४ (३)
नालिकेर (१।२।३।४।५।६।७।८)
नालिकेर २५ (७)
नालिकेर ४ वा ८ (जलेक्षेपः) (६)
नांदहफल (५।६)
नालिकेर ९ (जलया.) (८)
नालिअर (१)
निमज्जक (४)
निमजां १०० (७)
नीवार (१)
नील (१)
नैजा (८)
नैवेद्य २५ कांकरिया (मुंग यव गोधूम
चिणा तिल प्रत्येक ५-५) (३।५।६)
नैवेद्य कांकरिआ (मुंग चिणा जव गोहूं-
तिल जुआर तुअर, चपल शालि
प्रत्येक ना. ५-५ कांकरिआ) (७)
नैवेद्य (दशाहि) कूर खांड घृत घेवर
दधि करंब लापसी-गुल गोहुआ-
गुल बाट-पक्वान्न सीधवडिनो दह
फलानि) (६)
नैवेद्य लाडू २५ (मु० ५ तिल. ५ चि०-
५. फूली ५. गोधूमधाणी ५ (८)
नैवेद्य-नवग्रह योग्य (गुलवाट खीर कंसार

घेवर दधि करंब, कूर घृत कीसरि उदटरी ए ९ वानां ९ सरावे ग्रह आगे ढौकना (७)

नैवेद्य ९, (चवलानो खीच, चणाना नाकुला, गोधूमपुडली, खीर, कसार, गुलराट, करवो, कीसरि, कूर, ९ नैनेद्ये ७ सराव भरी देव आगे ढाइये) (७)

नैवेद्य ९ (लापसी कूर दही करंब पुरी पुडला खीर पडां लाडू) (८)

नैवेद्य (पक्वान्न) ९ खाजा, सुहाली, मांडी, मुरकी, साटे, साकुची, सेविआलाडू मोतिआलाडू मीठालाडू (७)

नैवेद्य २५ काकरिआ (मुग ५ तिल ५ चिणा ५ फुला ५ गोहूंधाणी ५) (४)

पद्मराग (१)

पनस (२)

पटलको (१)

पट्टाच्छादन (१)

पस्ता १०० (७)

पचगव्य (कुंआरी गौ मूत्र घृत दुग्ध दधि-दर्भोदक (२।३।५।६)

पच गव्य (दूध दहि माखण घृत तक्र मिश्री चदन (८)

पत्र २४ (३)

पंचधातुक (२।३)

पंचवर्ण पुष्प (४)

पंचरत्न (प्रवाल, मौक्तिक सुवर्ण रजत ताम्र (२।३।५।६।७।८)

पचरत्न कषायग्रंथी (प्र० मौ० सु० र० ता० (३)

पंचरत्नाष्टक ८ (सु. रू. ता. मौ राजावर्त) (४)

पंचरत्न गाठडी (ग्रेवासूत्रे पीत वस्त्रे बांधी जिम्मनी आंगलिये बांधवी)(६।८)

पचरत्न ग्रंथी (प्रत्येक बिंब दक्षिण करांगुलीए बांधवी) (६)

पंचरत्न पोटली १००० (श्वेत वस्त्रे ग्रेवासूत्रे बांधीये) (६।७)

पंचशब्द वाजित्र (५।६।८)

पंचामृत (१)

पाटलो पवित्र (५।६।८)

पुखणोपकरण (त्राक धूसर मुसल खाइओ-
तीर (८)
पुजणी ८ (८)
पूपिका (४)
पोलिका (घृत खाड मिश्र) (४)
पूजा ३ या ८ दिन (३)
फल (८।६)
फलहलि (६।५।८)
फलोहलि (२।२)
फाला ४ (७)
फूल (५।६।८)
फूल रूपानां (८)
फूल सोनानां (८)
फोफल (२।३।५।७)

बदर (१।४)
बकुल (७)
बलबाकुल (८।६)
बलि (लड्डुकादि) (३।२)
बलि विचित्र (जबीर बीजपूरक पनस
आम्र दाडिम इक्षु) (३।२)
बलि (मोदक बाट खीरि करबो कीसर
कूर मिद्धवडि पूपली ७) (२)
बलि नव्य (क्राकरिआ सुकुमारिका प्रभृ-
ति) (५)
बलि (भूत) (२।३।४।१)
बहेडा ४ मयवारक (८)
बाकुलावानी ३ (५)
बाकुलावानी ३ (गोहू चणा जारी) (६।८)

बाट (४)
बाजवट १ (६)
बेउल (७)
ब्राह्मणयोग्य ७
बीजपूरक (१।२।३।४।५।६।८)
भक्त (४)
भद्रपीठ (१)
भामंडा सराव (६)
भूतबलि (२।३।४।१)
भूतबलिदान (निशाग्रे) (४)
भोग पुडी (५।६)
मदनफल करण (पार्श्वतः ऋद्धि वृद्धि
समेत विद्ध मदनफलाख्य कंकण) (२)
मदनफल (१।२)

मदनफलोतारण (३)
मधु (१)
मनःशिला (१)
मरुओ (७)
मल्लूर (१)
महानील (१)
मंडपद्वय (१)
मंडपनिर्माण (७)
मंगलगाथा ७ पाठ (५।६)
मंगलगाथा (३)
माई साडी १ (प्रतिष्ठानंतर योग्य) (२)
माई साडी २ (अधिवासना प्रतिष्ठा-योग्य) (३)
माई साडी (कुसुंभी) (५।६।८)
माई साडी (३)
माइ साडी (विंब माथे देवी) (६)
मातृशाटिका १ (पार्श्ववेष्टने) (४)
मातृशाटिका १ (दशहस्तमित) (४)
मातृपुटी १०८ (१)
माटी (६)
माटी गंगानी (८)
माप (१)
मांडी (२।३।५।८)
मांसी (४)
मिश्री (८)
मींढलसहस्र १ (७)
मुद्रिका (१)
मुद्रिका ४ (सुवर्ण) (५।६।७)
सरलमुद्रिका (५)
मुद्रिका ५ (सुवर्ण) (८)
मुद्रिकाहस्तसूरि (२)
मुर्भ (१)
मुखाच्छादन (कंकण बंधनान्तरसदश वस्त्रेण सर्वबिंब मुखाच्छादन (६)
मुखोद्घाटन (बिंबना) (१।२।३।४।६)
मुरकी (३)
मूलवेदिका (१)
मूलिका (मयूरशिखा विरहक कंकोल-लक्ष्मणा शंखपुष्पी शरपुंखा विष्णुक्रांता चक्रांका सर्पाक्षी महानीली) (२।३।४।७)
मूलिका स्नात्र (मयुरशिखा विरहक-अंकोल्ल लक्ष्मणा शंखाहूलि खुरसाणि-

लोहवर्ग (हेमरजत ताम्र कृष्ण लोह त्रपु रीति कांस्य सीसकादि) (१)
लाडू (३।५।६।८)
लापसी (८)
वदना छादन (२।३)
वरसोलां (२।३।५।६)
वरसोलां १०० (७)
वर्षेपिलक (२।४)
वसु (१)
वज्र (१)
वस्त्रपरिधान (२)
वस्त्र (सदश) (२।३)
वस्त्र पाट १ हाथ २४ (७)
वस्त्र(सदश श्वेत बिंबाच्छादन हाथ) २४ (४)

वस्त्र सूत्र धार योग्य (५)
वस्त्र १ सूत्र धार योग्य (७)
वस्त्र कौसुंभ खंड सहस्र (७)
वस्त्र श्वेत (प्रतिमाच्छादन) (१)
वस्त्र २ अखंड सदश कोरा (नंदावर्त-योग्य १ प्रतिमा योग्य १) (६)
वस्त्र २ सदशकोरक (१ गुरु १ नंद्यावर्त योग्य) (६।५)
वस्त्र पूजा (२।३।५)
वस्त्र कोरां सदश ४ (नंदावर्त प्रतिमा-गुरू नंदावर्त लेखक योग्य) (८)
वाटकी १ (रुथ) (३।५।६।७)
वाटकी (रुथ) (२)
वाटकी २ (रुथ) (८)

वाढी १ (२)
वादित्रानयन (४)
वादित्रवादन (६)
वाताम्र (४)
वायम्ब (३)
वाइम १० (७)
१०८ वारक स्नान (२)
वारक १०८ (१)
वारा १० (२)
वारा (माटी) १० (३)
वारक श्वेत ४ (२।५)
वारक ४ स्थापन (स्वस्तिक पट्ट पार्श्वे ४ दिशि सकपर्द १ सहिरण्य २ सजल ३ सधान्य ४) (२)

वालिका (३)
वालुका (२)
वाल (१)
वेल्ल (७) पवित्र स्थानीय
वास धोला पीला (८)
वास (१।२।३।६।८)
वास-धवल (५।६)
वास—पीला झाझा केसर (६)
वास (गंध ही अति धवल वास) (६)
वास (कपूर कस्तुरिका पुष्प वासित) (४)
वास (चदन केसर कपूर) (८)
वास सेर १० (सुकडिया) (७)
वास सेर १ (केसर कपूर सहित) (७)
विद्रुम शय्या (१)

विलेपन (१)
विज्ञणा ८ (८)
विरटक (४)
व्रीहि (१)
वृताक (१)
वैज्ञानिक (२।३)
वेदिका (१।२।८)
वेदिका रचना (२।३)
वेदिका रचना (मंडप मध्ये) (४)
वेदिका रचना (कलशे) (४)
वेदिका ४ (५।७।४)
वेदि ४ मडप कोण चतुष्टये (३)
वेहि ४ (२)
वेहि ४ नगाग (५।६।७)

वैज्ञानिक (२।३)
वैडूर्य (१)
शण बीज (१)
शतमूलिका (१०० वनस्पति नामानि) (६)
शर्करा (४)
शंख दर्शन (३)
शाखाशत (७)
शांतिक (७)
शांतिक (स्नात्र पूर्वक) (७)
शांतिबलि (१।२।४।५।६)
श्यामक (१)
श्रीखड (१।२।३।४)
श्रीपर्णी फलक (१)
समुद्र फीण (६।८)

सराव ५० (१।६)
सराव (२)
सराव ६४ (५।७)
सराव (३२'५० वा ६४) (८)
सराव १० दीप गर्भे (४)
सराव ७ वलि (वाट खीर करंबो कीसर कूर सिद्धवडि पूपली) (२।३)
सराव (वाट खीर कूर कीसरि करंबो लापसी पुडा पुडी) (६)
सराव ७ (वाट खीर करंबो सात धाननी खीचडी) (८)
सराव ७ (नंदावर्त आगल ढो०) (६)
सराव ७ दक्षिभरियां (नंदावर्त पट्ट पार्श्वे द्वये मूकवां) (६)

सराव ७ (मात्र सराव वडां) (७)
सराव १ (मंडा) (३)
सराव १ (चूरिमा पूपडी) (३)
सराव (भामंडां) (६)
सराव (भांमणां) (५)
सराव (भामडा) (८)
सराव ५ (वल्लमय पूपक) (४)
सर्जरस (४) सहकार (७)
संघदान (२)
संघतंबोल (अंतर पडदेइ) (६)
संघ मडिदान (वेपदान)
स्तवन (प्रतिष्ठान्ते अजित शांति वृद्ध शांति वा) (८)
सर्पप (श्वेत) (१।४)

सर्पप (लोहाऽस्पृष्ट श्वेतसिद्धार्थ-पोट्टलिका) (२)
सर्पप (श्वेत रक्षापोटली) ८ (३)
सर्पप (लोहाऽस्पृष्ट श्वेतसिद्धार्थ-पोट्टलिका) (३)
सर्पप (श्वेत पोट्टली ८) (४)
सर्पप (लोहाच्छेदित श्वेत) रक्षा पोटली) (५)
सर्पप (तंदुल निर्माल्यादि द्रव्य सहित कृष्णपट्टकूले गेवासुत्र बद्ध) रक्षा पोटली सहस्र १ (७)
सर्पप (लोहाच्छेदित श्वेत) २७ तणी रक्षापोटली (६)
सर्पप (श्वेत लोहाच्छेदित पोटली) (८)
साकर (५।६) साकरिआं १०० (७)

साकरलिंगा (७)
स्नात्रकार ४ (२।३।४।५।६।७)

१ स्नात्र सुवर्णजल (२।३।४।५।६।७।८)
२ स्नात्र पचरत्नजल (२।३।४।५।६।७।८)
३ स्नात्र कपाय छाल (न्यग्रोध उदुम्बर अश्वत्थ चम्पक अशोक कदंब आम्र जवू वकुल अर्जुन पाटला वेतस किंशुकादि) (१)
(प्लक्ष अश्वत्थ शिरीष उदुवर वट)(२।३)
(पीपली पीपल सिरीष उवर वड चंपो अशोक आंबो जांबु वउलअर्जुन पाडल वील किंसुक) (५)
(पीपरि पीपल सरीस उवर वड चंपक अशोक आम्र जावू बउल अर्जुन वील किंसुक दाडिम नारिंग) (६।८)
(प्लक्ष अश्वत्थ सिरीष उदुवर वट) (७।४)
४. मृतिका स्नात्र (मृतिका शब्दमां भेदवर्णन)
५ स्नात्र पचगव्य दर्भोदक (छगण-मूत्र-दूध-दहि-घृत) (२।३।४।५।६।७)
६. सर्वौषधि स्नात्र (सहदेवी बला शत मूली शतावरी कुमारी गुहा सिंही व्याघ्री (२।३।४।७)
(सहदेवी नला कुआरी शतावरी पीठवनी मालवर्णी वडी रींगणी लहुडी रींगणी (५।६)
(सहदेवी सतावरी कुआरी वालो म्होटो-रींगणी न्हानीरींगणी मयूरशिखा अकोल शंखाहोली लक्ष्मणा आजो कांजो थोहर तुलसी मरुओ कुंभा गुली सर पत्रो राजहंसी मीठवणी शालवणी गंधनोली महानीली) (८)
७. स्नात्र मूलिका-(मूलिका शब्द देखवो)
८. स्नात्र प्रथमाष्टवर्ग (कुष्ट प्रियंगु वज

स्नात्रकार उपवासी (७)
स्नान-(घृतदधिदुग्धादिना) (३)

स्नात्र-भेदाः—

स्नात्र (सूत्रधार कृत) (१)
स्नात्र (४ स्नात्रकार कृत) (३)

लोद्र उशीर देवदारु दूर्वा मधुयष्ठिका ऋद्धि वृद्धि) (२।३।४।७)
(उपलोट वज लोध्र वीरणिमूल देवदारु ध्रो जेठिमधु ऋद्धि वृद्धि) (५।६।८)
(वीरणी मूलस्थाने हीरवणी मूल प्रामादिका)
९. स्नात्र द्वितीयाष्टवर्ग (मेदा महामेदा कंकोल खीर कंकोल जीवक ऋपभक नखी महानखी (२।३।४।७)
(मेदा महामेदा काकोली खीरकाकोली जीवक ऋपभक नखी महानखी (५।६)
(पतंजारिकाकुष्ट विदारीकंद कचूरो कपूर काचरी नखला कंकोडी खीरकंद मुसली वेई (८)

१०. स्नात्र सर्वौषधि (हरिद्रा वचा शोफ वालक मोथ ग्रन्थिपर्णक प्रियंगु मुरवास कर्चूर कुष्ट एलातज तमालपत्र नाग केसर लवंग कक्काल जाईफल जातिपत्रिका नख चंदन सिल्हक प्रभृति) (२।३।४।५।६।७)
(प्रियंगु हलद्र वज सुआ वालो मोथ अतिविसकली पुरमांसी जटामांसी उपलोट एलची लविंग तज तमालपत्र नागकेसर जायफल जावंत्री कंकोल सिलास (रस) चंदन अगर पत्रज छड नखला गंडुला कचूरो विरिहाली छडीलो कंकोल मिरची कंद वरधारो आसंधि वडीऔषधि सहस्रमूली (८)

११. स्नात्र कुसुमजल (२।३।४।५।६।७।८) (सेवंत्रा दिपु० जलेक्षि.)
१२. स्नात्र गंध स्नानिका (सिल्हक कुष्ट मांसी चंदनाऽगुरु कर्पूरादियुक्त गंधस्नानिका)(२।३।४।५।६।७) (केसर कर्पूर कस्तुरी अगर चंदन) (८)
१३. स्नात्रवास (गंधा एव शुक्लवर्णा वासाः) (२।३।४।५।६)
घनसार मिश्र श्रीखंड वास) (७)
(चंदन केसर कपूर एतद्द्रव्यवास) (८)
१४. स्नात्र चंदन (सजल चंदन कल्क) (२।३।४।५।६।७)
(चंदन दुग्ध स्नात्र) (८)
१५. स्नात्र कुंकुम (केसरापरनामक

कुंकुम) (२।३।४।५।६।७)
(केसर माकर स्नात्र) (८)
१६. स्नात्र तार्थोदक (जलधि–नदी–
द्रह कुण्डतीर्थजल (२।३।४।७)
(गगा प्रभृति तीर्थोदक) (५)
(गंगा सिन्धु प्रमुख १०८ तीर्थोदक)(६)
(गगादिक १०८ तीर्थ) (८)
१७. स्नात्र-कर्पूर (कर्पूरजल) (२।३।४।-
५।६।७।८)
१८. स्नात्र-पुष्पाञ्जलि (३।५।६)
(कस्तूरी जल) (२)
(शुद्ध जल १०८ स्ना) (७)
(केसर चंदन पुष्प स्नात्र ततः पुष्पांजलि)
(८)

सिद्ध विडि पुडी (५)
सिल्हक (४)
सिंहासन (८)
सीसकादि (१)
सुवर्ण वर्तिका (५)
सुखडी सर्व जातनी (८)
सुकडी घसी (६)
सुकडी वास (५)
सुकडी घसिवा सेर १० (७)
सुकडी जाडी घसी वाटलुं १ (६)
सुकडी घसिवालोडा २ (६)
सुकडी घसी जाडी लोढा २ (८)
सूत्र (कुमारी कर्तित) (४)
सूत्र (कुसुम) (३)

सूत्रधार (१)
सूर्यकान्त (१)
सेलडी (५।६)
सेलडी खड (७)
सोनानो कचोलो (८)
सोपारी (६।८)
सुकुमालिका कंकण (३)
सुवर्ण शलाका (१।२।३।४।५।६।७।८)
सुवर्णचूर्ण (५)
सुवर्णमाक्षिक (१)
सुवर्णभाजन (२।३।५)
सुहाली–सोहाली (२।३)
सुहाली दर्भे (३)
सुहाली गुडयुत ४ दान (३)

सुहाली (५)
सुंहाली (८)
हरिताली (१)
हरिद्रोदक (४)
हस्तलेप (प्रियंगु कर्पूर गोरोचन (२।३।-
४।५।६।८)
हिरण्य (१।२)
हिरण्य दान (२।३)
हेम (१)
हेम गैरिक (१)

८—क्रयाणकसूची

मदनफल=मींढल,
मधुयष्टि=जेठीमधनी लाकडी
तुम्बी=तुंवडीनो वेलो
निम्ब=लींबडानुं झाड
बिम्बी=गिलोडानो वेलो
इन्द्रवारुणी=इंदरवरणांनो वेलो—तरसुडा-
नी वेल
स्थूलेन्द्रवारुणी=मोटां इंदरवरणांनो वेलो
मोटी तरुणी.
उत्तरवारुणी=दूधेलीनो वेलो—वाड दूधेली
लघूत्तरवारुणी=भोयदूधेली
कर्कटी=काकडीनो वेलो
कुटज=कडायानुं झाड
इंद्रजव=कुटज वृक्षनां बीज, कडवा इंद्रजव,
मूर्वा=मोरवेल
देवदाली=कुकडवेल
विडंगफल=वावडिंग
वेतस=नेतरनुं झाड
दन्ती=जमेपालानुं झाड—नेपालानुं झाड
चित्रक=चित्रकनुं झाड—कालो चितरो.
चित्रकरक्त=राती छालनो चित्रक
उन्दरकर्णी=उंदरकनी—गरणी
कोपातकी=तोरी—तोरीना शाकनो वेलो.
राजकोपातकी=गलकानो वेलो
करंज=करंजनुं वृक्ष
पूतिकरंज=लताकरंज, करकचियानो वेलो
पिप्पली=पीपर—लींडी पीपर

पिप्पलीमूल=पीपलामूल, गंठोडा
सैंधव=पंजाबथी आवतु सींधालूण
सौवर्च=सचल लूण, लाल मीठुं
कृष्णसौवर्चल=कालु सचर लूण
बिडलवण=ए नाम ख्यात
पाक्यलवण=एव लवणमानो एक क्षार
समुद्रलवण=समुद्र खार
रोमकलवण=विलायती मीठुं
यवक्षार=जवखार
सर्जिका=साजीखारो
वचा=वज-घोडा वज उग्रगंधा
वचा खुरासानी=खुरासानी वज.
क्षुद्रैला=न्हानी एलची.
एला=एलची-मध्यम एलची

बृहदेला=मोटी एलची.
सर्षप=सरसव पीला
कृष्ण सर्षप=काला सरसव-रायलो
आसुरी=राई
त्रिबीज=त्रवणना बीज.
मालविनी=नसोतरनु झाड
हरीतकी=हरडे-मोटी हरडे
बिभीतक=बहेडा-बिभीतक वृक्षनुं फल
आमलक=आमलानुं फल
त्रिफला=हरडे बहेडा आमलां संयुक्त
स्नुही=थोर-हाथाली थोर.
शखपुष्पी=शखावली लता
नीलिनी=नील-गलीनुं झाड
रोध्र=लोधर

बृहद्लोध्र=पठानी लोधर
कृतमाल=गरमालो-गरमालानी फली.
कम्पिल्लक=कपिलो-कपीलो
स्वर्णक्षीरी=सत्यानाशी.
कुष्ट=सुगंधीद्रव्य कूठ
बिल्व=बिल्लीनुं झाड वा बिल्वफल
अपामार्ग=अघाडो-आगी झाडो.
अरणी=मोटा अरणानु झाड
अरणिका=न्हानी अरणी
पाटला=पाडलनु झाड
कंटकारिका=उभी रींगणी, मोटी रींगणी
क्षुद्रकंटकारिका=न्हानी रींगणी-भोंय-रींगणी
गोक्षुरू=गोखरू काटी.

देवदारु=देवदारुनुं वृक्ष
रास्ना=स्वनाम ख्यात वात व्याधिनाशक औषधि
यव=जव
शतपुष्पा=वरिहाली
कुलत्थ=कलथिया-ए नामनुं धान्य
माक्षिक=मक्षिकाकृत मधु-मध
पौक्षिक=पूतिका-लघु मक्षिका कृत मधु-श्वेत मधु
क्षौद्र=भमरा माखीओनुं मधु-पीतमधु
सित्थुक=मीण
शर्करा=साकर
विश्वभैषज=सुंठ
कृष्णमरिच=कालां मरी

त्रिकटु=सुंठ-कृष्ण मरिच-पापर संमिलित
नागकेशर=स्वनाम ख्यात
हरिद्रा=हलदर
दारुहरिद्रा=दारुहलदर
अंबष्ठा=आंबा हलदर.
राल=स्वनामख्यात
श्रीखण्ड=सूखड-पाकुं चंदन
शोभाञ्जन=सरगवानुं झाड
रक्तशोभाञ्जन=लाल सरगवो
मधुशोभाञ्जन=मीठो सरगवो.
मधूक=महुडो, महुडांनु झाड अथवा फल
रसाञ्जन=रसौंत
तगर=स्वनाम ख्यात
बला=बलबीजनो क्षुप

अतिबला=न्हानी कांकसी (न्हानी पीठाडी)
नागबला=गंगेरुकी-गांगडीनुं झाड
दूर्वा=धो दूब
श्वेतदूर्वा=धोली धो, श्वेत दूब
गण्डदूर्वा=गांठाली धो-तांतिया दूब
जवासक=जवासो
दुरालभा=धमासो
वासा=अरडुसी-माली अरडुसो
कपिकच्छू=कौंचनी फली वा बीज.
शतावरी=सतावरी नाम ख्यात
गुञ्जा=चणोठी-लालचणोठी चरमी
श्वेतगुञ्जा=धोली चणोठी-धोली चरमी
प्रियंगु=रायणनुं झाड

बीजप्रियगु=गहला-वहुला
पद्म=लाल कमल, पोयणां
पुष्कर=श्वेतकमल
नीलोत्पल=नीलकमल-नीलोफर
कुमुद=रात्रिविकासी कमल
शालूक=कमलनी जड-कमलतन्तु
वितुन्नक=नागरमोथ
जीवन्ती=हरडेनुं झाड-हरीतकी वृक्ष
कारोली=स्वनाम प्रसिद्ध कद
क्षीरकाकोली=स्वनाम ख्यात कंद
मेद=स्वनाम ख्यात कद
महामेद=स्वनाम ख्यात कद
मुद्गपर्णी=रानीमग-कोटडिओ
माषपर्णी=रानी अडद

ऋषभक=स्वनाम ख्यात कद
जीवक=स्वनाम ख्यात कंद
विदारी=स्वनाम ख्यात कंद
क्षीरविदारी=दूधियाविदारी कंद
एरण्ड=एरण्डो रक्तैरण्ड=रातो एरंडो
वृश्चिकाली=विच्छुडो घास
पुनर्नवा=राती साटोडी
श्वेतपुनर्नवा=श्वेत साटोडी
सहदेवी=स्वनाम प्रसिद्ध औषधी
कृष्णसारिवा=स्वनाम प्रसिद्ध रक्तशोधक औषधी
उशीर=सुगधी वालो
चंदन=मलयागिरि चन्दन

रक्तचंदन-रतवानु लाकडुं-लाल चंदन
कालेयक=अगरनो निर्यास-अगरमांथी-निकलतो रस
परुषक=फालसा नामनी औषधी
पद्मक=पद्माख-कमलबीज-कमल काकडी
पुण्डरीक=श्वेतकमल
तुकाक्षीरी=वंश लोचन
कर्कटशृंगी=काकडा शींगी.
गुडूची=गलो
द्राक्षा=द्राख-किसमिस द्राख
कट्फल=कायफल
कतक=कतक वृक्षनुं फल-निर्मली
राजादन=रायणनु फल-रायण
शाक=सागनु झाड

दाडिम=दाडिमीनुं फल-अनार.
अंजन=ए नामनुं वृक्ष-काला लाकडानुं झाड.
सौवीर=कालो सुरमो
मांसी=जटामांसी
गंधमांसी=मुरमांसी
कडका=लवण-कांकरीवालुं मीठुं
पाण=पाड -काली पहाड.
धान्यक=धाणा-कोथमीर
काकमाची=साजी कांणीनो क्षुप
किराततिक्त=करियातुं-चिरायतो.
शैलेय=शिलापुष्प-छडीलो-छडछडीलो.
चक्रांका=कांकसी-मोटो पीठाडी.
कंथेरी=कांथेरनुं झाड

अलाण=झाउडीनुं झाड
मयूर शिखा=मोरशिखा नामनी बूटी
काली मुसली=स्वनाम ख्यात
श्वेतमुसली=स्वनामख्यात.
ताम्रवल्ली=त्रांबावेल.
ह्रस्वपत्रा स्नुही=न्हाना पत्रो वाली दूधाली थोर
कारवेल्ली=कारेली-कारेलाना वेला
बदरी=बोरडीनुं झाड-बोरडी.
बीयक=बीओ-बीयानुं झाड.
तिनस=तिनसनुं झाड-धामण
भूर्ज=भोजपत्रनुं झाड अथवा भोजपत्र.
अर्जुन=अर्जुन वृक्ष-सादडो
खदिर=खेरनुं झाड.

कदर=कगहनुं झाड.
मेषशृंगी=मींढीआवल-सोनामुखी.
धव=धवनुं झाड
शिशपा=शीशमनुं झाड-सीसम.
ताल=ताडनुं वृक्ष.
अगुरु=अगरनुं झाड.
पलाश=खाखरानु झाड-केशुडानुं वृक्ष.
क्रमुक=सोपारीनुं वृक्ष
अजशृंगी=मरडासींगी-मरोडाफली
अरुष्कर=भीलामुं-भीलामानुं फल.
रूपक=अरडूसो-जंगली अरडूसो
कदंब=कदंबनु वृक्ष
कंशैलक=कंशशेलीओ
नागदमनी=नागदोन-नागदमनी औषधी

ब्रह्मदण्ड=उटकटालो
कर्पास=वणी-हीरवणी-कपासनु झाड
कल्हार=कलालिओ,
रुद्रजटा=स्वनाम ख्यात
वज्रदन्ती=एक पहाडी औपधी-दन्तौषधी.
रुदन्ती=रुद्रवती नामे ओलखाती औषधी
श्रीपर्णी=सेवननु वृक्ष.
तुत्थ=पूथु-मोरथूंथु
हरिताल=हरताल
हिंगु=हींग
कासीस=हीराकसी
शिलाजतु=शिलाजीत-शिलानिर्यास.
पुष्पकासीस=हीराकसीनां फूल.
पापाणभेद=स्वनामख्या औपधी,

काश=दर्भजातीय तृण-कासडा-काह
इक्षु=शेलडी
नल=काशजातीय तृण
दर्भ=डाभ-कुश
अर्क=आकडो
पिप्पली=पीपली
सुवर्चला=ब्राह्मी-निघाब्राह्मी
सरला=धीपु देवदारु
कदली=केल-केलानुं झाड
अशोक=आसोपालव
एलवालुक=एलिओ
अलर्क=धोलो आकडो
मन्दार=मदार-आकडाने मलतुं झाड
भारंगी=भाडंगी नामनी औषधी

सल्लकी=सालरनुं झाड
ज्योतिष्मती=रतनज्योत
कटभी=मालकांगणी
श्वेतकटभी=धोली मालकांगणी
इंगुदी=हिंगोटी-हिंगोटानुं झाड
सुरसा=तुलसी
सोमराजी=वनतुलसी-बाकुची
श्वेतसुरसा=धोली तुलसी
कुबेर=अजमो-मोडी अजमो
कृष्ण कुबेर=कालो अजमो
फणिज्जक=बीजोरी-बीजोरानुं झाड
निर्गुंडी=नगोडनुं झाड
मृष्कक=लताकस्तूरी
अतिविषा=अतीस-अतिविषनी कली.

जीरक=धोलुं जीरुं
कृष्णजीरक=कालुं जीरुं–स्याहजीरुं
अजमोद=एज नामे प्रसिद्ध
चव्यक=स्वनाम ख्यात
पुष्करपत्री=विछीनुं झाड
मंजिष्ठा=मजीठ
शाल्मलि=सेमलनुं झाड
मोचरस=सेमलनो गुंदर
धातकी=धातकीवृक्ष
नन्दी=ए नामनुं वृक्ष
भल्लातक=भीलामानुं झाड
वट=वडनुं झाड–वड
पिप्पल=पीपलो–पारस पीपलो
उदुम्बर=उंबरो–गूलर

जंबू=जांबुनुं झाड
राजजंबू=मोटा जांबुनुं झाड
काकजंबू=न्हानां जांबुफलनुं झाड–जंगली जांबु
करमर्दक=करमदो–करमदानुं झाड
कपीतन=आम्रदीनुं झाड
आम्र=आंबो
पियाल=चारोली–नेपाली चारोली
तिन्दुक=तिंदुआनुं झाड
तुरुष्क=शिलारस
वालक=सुगंधी वालो
अधःपुष्पी=उंधा फूलीनो क्षुप
त्वचा=तज–दालचीनी
तमालपत्र=स्वनाम ख्यात

नख=नखला
श्रीवेष्ट=सर्जवृक्षनो निर्यास–चंदरस
कुन्दरुक=कंदरुप धूप
कुंकुम=केसर
गुग्गुल=गूगलनुं झाड–गूगल धूप
पीलु=पीलुडीनुं फल–पीलुं
खटी=खडी–धोली माटीनो भेद
हरमजी=राती माटी–रतमी
तुवरी=पीली माटी–मेद–मुलतानी माटी
सुवर्णमाक्षिक=ए नामथी प्रसिद्ध खनिज द्रव्य
रूप्यमाक्षिक=स्वनाम ख्यात खनिज द्रव्य
शमी=खिजडी–न्हानी खिजडी
राजशमी=खीजडो–मोटो खीजडो

स्नुपा=चोपचीनीनु झाड
काकनासा=कौआठोडी
काकजंघा=स्वनाम ख्यात बूटी
पर्पटक=शापडो- पित्तपापडो
राजहंस=स्वनाम ख्यात
पुष्करमूल=पोकरमूल
काञ्चनार=कचनार वृक्ष
रोहितक=रोहिडानु झाड
यव=रास--वांसडानु झाड
अकोल्ल=अकोलनुं झाड
कौडिन्य=लोबाननुं झाड-कोडिओ लोबान
श्लेष्मान्तक=गुंदीनु झाड-गुंदी
तिंतिडीक=आंबली-आंबलीनु फल
अम्लवेतस=स्वनाम ख्यात

कपित्थ=कोठ-कोठनु फल
नालिकेर=नालीएर
खर्जूर=खजूर-छुहारा
बीजपूरक=बीजोरूं
नारंग=नारंगी
जंभीर=जंबेरी
निंबूक=लींबु
अक्षोट=अखरोट
चांगेरी=खाटी लूणी
अम्लिका=गामलीनु झाड
करीर=केरडानु झाड
वास्तुक=वथुओ-एक जातनी भाजी.
कुसुंभ=कसुंभो-कुसंभीनां फूल-
लाक्षा=लाख

जतुका=गोरडीनी लाख-कणवज
लागली=एक जातनो झेरी वेलो-कलिनी
मिश्रेया=सुवा
मूलक=मूंलो
तन्दुलीयक=तांदलिओ-पंदलेवो
द्रोणपुष्पी=स्वयंमुखी-चपोरियानु झाड,
आमली=आमल-भूम्यामलकी आवलकी
ब्राह्मी=स्वनामख्यात.
अरिष्ट=आरेठानुं झाड
पुत्रजीवा=धोला फूलनी भोंयरींगणी.
कूष्माण्डक=कोलु
महातुंबी=मोटीतुंबीनो वेलो,
चिर्भटी=चिभडीनो वेलो-चिभडियानी वेल

कटुचिर्भटी=कडवी चीमडीनो वेलो
विष्णुक्रान्ता=अपराजिता
क्षीरिणी=रायणनुं झाड
सर्पाक्षी=खरसणिओ-शरफोका
कर्दमपुष्पी=भगनो क्षुप
करवीर=कणेर धोलो
रक्तकरवीर=कणेररातो-लालकणेर.
धतूर=धतूरो
यवानी=अजवायन-अजमो.
वाराही=वाराही कंद-खीलोडा
मांसरोहिणी=कडु-कुटकी
वृद्धदारु=वरधारो.
वन्ध्याकर्कोटिका=वांझकंकोडी.
त्रिपत्रिका=तरवणनुं झाड

पिंडीतरु=लोबान धूप
सिंदुवार=संदेसरानुं झाड-सिंदोडी
अश्वगन्धा=आसगन्ध.
मदयन्ती=मोगरानो वेलो
भृंगराज=भांगरो-जलभांगरो.
शिरीष=सरसडो-सरडो.
अगस्ति=अगथिओ
विटिका=विटी-पीतचंदन
स्वर्णपुष्पी=पीलाफूलनी केतकी
लक्ष्मणा=ए नामनो कंद
पलंकषा=रक्तपलाश.
दधिपुष्पी=श्वेता अपराजिता
गोजिह्वा=गांजवा
कस्तूरी=स्वनामख्यात.

कर्पूर=कपूर
जातिपत्री=जावंत्री
जातिफल=जायफल
कक्कोलक=सुगंधी कोकला
लवंग=लविंग
दमनक==दमरो-मरुओ
कर्चूर=कचूरो
मालती=चमेलीनो वेलो
जाति=जाईनो वेलो
यूथिका=जुहीनो वेलो.
शतपत्रिका=सेवंत्री-गुलाब
चंपक=चम्पो सोवनचंपो
बकुल=बोलसिरि नामनुं झाड
तिलक=तिलकवृक्ष-तलकडो.

अतिमुक्तक=मोतीओ-चटमोगरो.	पारद=पारो	प्रपुन्नाट=पमाडिओ-चक्रमर्द.
कुन्द=कुदपुश्पनु झाड	गैरिक=सोनागेरु	बोल=हीराबोल
कुमारी=कुआरी-घीग्वार	सौराष्ट्री=एक जातनी माटी-गोपीचंदन	सिंदूर=स्वनामख्यात.
अतसी=अळसी-अलसीनो क्षुप	गोरोचना=गोरोचन	शंखप्रस्तरी=संगेजर-शखजीरुं,
हिंगुल=हिंगलोक-शिंगरफ,	अभ्रक=अबरख,	शृंगाटक=सींघोडां-सुकां सींघोडां,
हरिताल=हरताल	वाताम=वदाम-बादाम,	घूनीरा=घूनरो एक जातनुं घास.
मनःशिला=मनशील,	मुंडी=मुंडापाती बूटी	
गंधक=गंधकनामथी प्रसिद्ध छे.	महामुंडी=गोरखमुंडो. बूटी	

सूचना—

अमोए जे क्रयाणकोनी सूची आपेली छे ते बधां आपणा गुजरात तथा मारवाड देशमां उपलब्ध थई शके एवां छे अने तेम छतां अमुक चीज न मली शके तो आमां त्रणसोएकोतेर उपसंगृहित छे ते पैकीनुं कोइपण लेवुं अने ३६० नी संख्या पूरी करवी. कदापि ११ थी वधु चीजो न मले अगर न ओलखाय तो तेना बदलामां बीजा क्रयाणको पण लेइ शकाय छे, मात्र तेमां क्रयाणकनु लक्षण घटवुं जोइये, क्रयाणकनु लक्षण आ प्रमाणे छे.

" अप्रसिद्धं रोगहरं, भेषजं यन्महीतले। तत्क्रयाणकमुद्दिष्टं, शेषं वस्तु प्रकीर्तितम् ॥ "

अर्थात्—उक्तातिरिक्त पण जे वस्तु रोगनाशक होइ दवा रुपे वपराती होय तेने क्रयाणकमां परिगणित करवी अने जेमां क्रयाणकनु उक्त लक्षण न होय तेने सामान्य वस्तु रुपे गणवी.—

सुवर्णादि धातुओ, खाद्य धान्यो अने वस्त्रोने क्रयाणक न गणतां रत्न तरीके गणवां, शेष गांधी—पंसारीनी दूकाने मलती बधी वनस्पतिओ तथा मृद्दारसींग आदि खनिज द्रव्योने क्रयाणको गणी उपयोगमां लेवां.

इति कल्याणकलिका-प्रतिष्ठापद्धतावयम् । साधनाख्योऽगमत् खण्ड-स्तृतीयः परिपूर्णताम् ॥

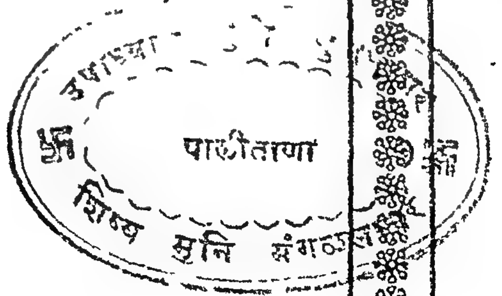
भा०टी०—आ प्रमाणे कल्याणकलिका प्रतिष्ठापद्धतिमां आ साधन नामक त्रीजो खंड समाप्त थयो.

इति तपगच्छाचार्यश्रीविजयसिद्धिसूरिनिगदानुसारि—संविग्नश्रमणावतंस-
श्रीकेसरविजयशिष्यपं०कल्याणविजयगणिविरचितायां
कल्याणकलिकाप्रतिष्ठापद्धतौ साधननामा

तृतीयः खण्डः समाप्तः ।

एतत्समाप्तौ च

समाप्तेयं कल्याणकलिकाप्रतिष्ठापद्धतिः ॥



शुद्धिपत्रक

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
१	१	७	दष्ठोत्तर–दष्टोत्तर
३	,,	५	तदूध्व–तदूर्ध्वं
११	२	५	पद्य–पद्म
११	,,	१३	आयुदा–आयुर्दा
१२	१	७	निधेय–निधये
१२	२	८	भद्र–भद्रा
,,	,,	१०	शंखे !–शंख !
१८	१	१३	अश्विनी–अश्वि
,,	२	६	स्याय–रूपाय
,,	,,	१०	पुण्णाये–पुण्णायै
,,	,,	,,	शंखिन्य–शंखिन्यै
,,	,,	११	जिह्वाय–जिह्वायै

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२४	२	११	तत्व–तत्त्व
२५	१	२	°स्वत्ति–°स्वति
,,	,,	४	न्नौत्ति–नोन्नति
,,	,,	१२	दधातु–ददातु
२७	२	१	मंत्रे०–मंत्रे
२८	१	१४	मुंलखवुं–लखवुं
२९	१	३	करवी–करवो
३०	१	४	स्वाह–स्वाहा
,,	२	९	इशानमां–ईशानमां
,,	,,	१३	देच–देव
३२	१	७	नमा–नमो
,,	,,	१२	दाम्रे–दाम्ने

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
३२	२	१४	नमोः–नमः
३३	१	६	वज्रकुश्ये–वज्रांकुश्यै
,,	,,	८	मानच्यै–मानव्यै
,,	२	२	चरणाग्रे–चरणाधो
,,	,,	३	व्रहस्य–बृहस्प
,,	,,	७	त्रिकाम–त्रिकाय
,,	,,	८	द्वारा–द्वारो
३४	१	५	नमा–नमो
,,	२	१०	दृढ–दृढ
,,	,,	१२	पत्ते–पत्ते
,,	,,	१३	चयाणु.–पयाणु.
,,	,,	१४	कुठ–कुट्ठ

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
३५	२	५	विकल्प	विकल्प
३५	२	६	:कुरु २	कुरु २
३८	२	१२	माहिणि	मोहिणि
३९	२	२	यदुधिष्ठि	युद्धिष्ठि
४०	१	२	यइमा	इमा
४१	१	७	संपक्री	सम्यक्त्री०
,,	,,	,,	राग	रोग
,,	२	१३	अगुठ	अगुट्ठ
४२	१	७	नमाक्का०	नमोक्का०
,,	,,	१०	नमाक्का०	नमोक्का०
४४	२	८	उस्मगा	उस्सग्ग
,,	२	१०	संति	संति
४५	१	१०	गोट्ठिए	गोट्ठीए
,,	,,	१२	सिद्धचि	सिद्धिचि
४५	२	१०	सन्नति	जन्नाचि
४६	१	५	पुण्ह	पुण्ह
५५	१	३	मण्टप	मण्डप
,,	,,	,,	मुंमि	मूंमि
५७	१	७	।१। जल०	जल०
५८	२	१	ह्रींश्र	ह्रिंश्र
,,	,,	११	कारिणीम्	कारिणी
५९	१	११	चित्त	चित्त
,,	,,	,,	नुत्ता	नुत्ताम्
५९	२	१	नमा	नमो
,,	,,	४	पुठाण	पुट्ठाण
,,	,,	७	शीताद०	शीतोद०
५९	२	१३	अथकु	(१) अथकुं
६२	१	४	लेसा	लेस्या
६२	१	११	ऽखण्ड	ऽखण्ड
,,	,,	,,	पद	पट्ट
६६	२	७	दीव्य०	दिव्य०
,,	,,	९	इशाने	ईशाने
,,	,,	११	सुष्टिक्रमे	सृष्टिक्रमे
,,	,,	१३	नम	नमो
,,	,,	,,	नम	नमो
६७	१	५	वइए	वईए
,,	,,	६	वइए	वईए
,,	,,	१२	गोरीए	ॐ गोरीए
,,	२	९	न्द्रादिभ्य	न्द्रादिभ्यो
६९	१	६	रक्त २	रक्ता २ऽ
,,	,,	१०	ग्यण्डलो	ग्मण्डलो
,,	,,	११	पूर्वया	पूर्वयो

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
६९	२	५	पदकौ	पट्टकौ
७१	२	१४	स्कौँ	क्रौँ
७३	२	१	निर्वृत्ति	निर्वृति
,,	,,	२	शव	शिव
७५	१	३	आगच्छ	श्रीजिनप्रतिमामहोत्सवे आगच्छ
७५	२	१०	यीऽस्ति	यौऽस्ति
७८	२	१०	सवर्दा	सर्वदा
७९	१	३	लक्ष्मी	लक्ष्मीं
८०	१	१०	धमार्थ	धर्मार्थ
,,	२	६	निर्मयः	निर्मायः
८१	१	५	मातम्	°मानः
,,	,,	६	ह्राय	हृय
,,	२	७	मंत्रा	मनू

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
८२	१	१३	पइव	पईव
८३	२	१३	पूजयाम	पूजयामि
८४	२	३	हिताच्चर्चे	हितानच्चर्चे
८५	२	५	पन्नता	पन्नत्तो
८८	१	५	मूला	मूलो
,,	,,	१२	पायं	पोयं
,,	२	,,	यामि	गामि
९१	१	१०	हसः	हंसः
९३	१	७	मुग्दरा	मुद्गराः
९५	१	३	तायधा	तोयधा
९५	१	५	वुर्ध्वे	वूर्ध्वे
,,	२	७	उद्योतं	उद्द्योतं
९६	२	५	अहज्जन्मा	अर्हज्जन्मा
९७	१	२	कायाश्च	कायश्च

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
९७	१	१२	धौते	धौंते
,,	,,	,,	सदमो	सदर्भा
,,	२	१०	क्षीर	क्षीरे
९८	२	९	रुक्ष	रूक्ष
१०२	२	१३	करवा	करवो
१०३	३	३	तायम्	तोयम् ।
१०५	१	५	वस्तु	बन्धु
,,	२	५	यामिति	यामीति
,,	,,	८	स्निधोघो	स्निग्धांघो
,,	,,	,,	दग्यान्	दध्यान्
१०६	१	७	कुड्कु	कुड्·कु
,,	,,	८	काया	कायो
,,	,,	,,	कदम्बके	कदम्बकैः
१०७	२	८	नमा	नमो

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
११३	१	५	जिन	श्रीजिन
,,	२	११	प्रनि	प्राति
११५	१	१	महुत	मड़ित
,,	२	४	मुंम्वन्य	मुंसत्व
११५	२	६	ताध्रि	तांत्रि
,,	,,	१०	मफार	म्यकार
१२०	२	५	म्यनमो	म्यो नम.
१२१	१	७	परिनि०	परवि०
१२५	,,	९	जिननि	जैनत्रि
,,	२	१	मर्दिते	मर्दिते
१२६	२	३	प्रज्ञाद	प्रमद
,,	,,	,,	प्रज्ञाद	प्रमाद
,,	,,	११	करवा	करवो
१२७	१	११	नदीह्रद	नदोहूद

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१२७	२	११	वर्यनादे	तूर्यनादे
१२८	२	१५	जमिघ	जमिव
,,	,,	११	°मेष्ठीने	°मेष्ठिने
१२९	१	१०	°मची	मती
,,	२	६	जिनवि	श्रीजिनवि
१३०	२	५	जिनवि	श्रीजिनवि
१३५	२	९	यान्विते	यान्वित
१३६	१	१	यदृक्ष्मी	यदङ्घ्रि
,,	,,	६	नन्दनि	नन्दन्ति
,,	,,	,,	जिनबि	श्रीनिनत्रि
,,	२	११	प्पणव	प्पणव
१३७	२	४	ऋाजी	त्रोनी
१३८	२	१४	जा अल्प	जा अल्प
१३९	१	४	यियर्स	णियर्स

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
१३९	१	५	हिआ	हिओ
,,	२	२	च्छड़	च्छडु
१३९	,,	११	च्छड़	च्छडु
१४०	१	३	मतेण	मतेण
१४२	१	१	चैत्य	९ चैत्य
,,	,,	२	स्थपन	स्थापना
१४३	२	१	क्ष्मी	क्ष्वौं
,,	२	१२	प्रातष्ठा	प्रतिष्ठा
१४५	१	३	सुरिभि	सुरीभि
,,	१	१०	द्रव	द्रव
,,	२	८	मर्दिन	मर्दिते
१४६	१	१२	तार्थ	तीर्थ
,,	२	१२	ध्रीँश्च	ध्रिश्च
१४७	१	९	क्रिया	क्रिया

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
१४७	२	३	संऽघेत्र–संघेऽत्र
,,	,,	११	वियराय–वीयराय
१४८	२	१०	ग्रैँीश्व–ग्रिश्व
,,	,,	१४	जिनक–श्रीजिनक
१४९	१	८	रता–रताः
१५०	२	५	पणे वि–पणवि
१५१	२	३	ग्री ँश्व–ग्रिश्व
१५२	१	३	सद्दष्टयो–सदूदृष्टयो
१५३	१	११	कर्मौधौ–कर्मौघो
,,	२	९	हृद–हूद
१५४	१	१२	ग्रैँीश्व–ग्रिश्व
,,	,,	,,	भवता–भवतो
,,	२	१०	नित्यम्–भवताम्
१५६	१	७	ग्रैँीश्व–ग्रिश्व

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
१५६	२	५	रता–रताः
१५७	१	१४	स्युः–कुर्युः
१५८	१	८	ग्रैँीश्व–ग्रिश्व
१६०	१	१२	क्रैँी–क्रैँी
,,	२	७	हूदः–हूद !
१६१	,,	७	जाइस–जोइस
१६९	१	२	परमेश्वरः–परमेश्वर !
१७२	२	८	गृर्ध्व–मूर्ध्व
१७८	,,	,,	फल–फलं
१७८	,,	,,	लक्ष्य–लक्ष्म
,,	,,	१३	स्नात्रङ्–स्नात्राङ्ग
१७९	१	८	घान्रोध–घ निरोध
,,	,,	१४	समाजोः–समाजो
१८०	१	१	श्लाक–श्लोक

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
१८०	१	१	याम्य–योम्य
,,	,,	११	स्थाता–स्थातो
,,	,,	,,	वितापा–वीतापा
१८१	१	१०	कमनायम्–कमनीयम्
,,	,,	१३	कलिका–कलिला
,,	२	२	भाति–मान्ति
१८३	२	९	सिश्चन्त्यो–सिश्चन्त्यौ
,,	,,	१३	वनान्ता–वनान्ते
१८४	१	१०	भवताङ–भवतोऽ
१८६	१	५	बन्धा–बन्धो
,,	,,	९	निर्ग्रम्य–निर्ग्रन्थ
,,	२	१२	हृम्या–चह्वा
१८७	१	७	तापम्–चापम्
,,	२	४	गोष्ठीक–गोष्ठी

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
१८७	२	७	टीपुरुषार्थ-त्रिकर्ता
,,	,,	९	नवेध-नैवेध
१९१	१	१४	सुची-सूची
१९२	१	१०	गन्धान्-गन्धात्
१९३	२	९	गाव्म -नोतम
१९५	२	१०	पतेग-पतेग
१९७	२	१५	पुष्टिका-पुष्पिका
१९८	,,	१४	फाकडो-ककडो
२००	१	८	पकुप्त-पक
,,	२	९	पष्ठी-ॐ इन्द्राय
			वज्रायुधाय प-
			रवणगाहप्य
			सायुधाय सवा
			हनाय सपरिज-
			नाय इह अनुकपु-
			हेअष्टोत्तरीशतात्रम
			होसमे आगच्छ २
			पूजां गृहाण २ पूजां
			यावत् तिष्ठ २
२००	२	११	महासवे-महोत्सवे
२०१	१	५	तिष्ठ-तिष्ठ २
,,	,,	७	अष्टा-अष्टो
२०२	२	१२	सतिग-संतिण्णं
,,	,,	१३	स्वाह-स्वाहा
२०५	२	११	भैति-भैति
२०६	१	५	सकल-सफल
,, ८	२	४	सुपार्श्व-सपार्श्व
,, ९	१	५	सति-मति
२०९	१	५	संति-सति
,,	,,	८	वासो-वासी
,,	,,	,,	महे-मतु
,,	,,	१५	ॐमिति-ओमिति
,,	२	१	हूँ ी-ह्रौं
,,	,,	१०	ह्रूँी-ह्रौं
२१०	१	१	ने-ते
,,	२	७	सति-सति
,,	,,	११	सतिसंति-सति-सति
,,	,,	,,	सति-सति
,,	,,	१४	विमान-विमा
२११	१	१४	सति-सति
,,	२	११	सतिसति-सति सति
२१२	१	२	सुघते-सुद्धते

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२१२	१	५	संति–संतिं
,,	२	१०	संति–संतिं
२१३	१	८	सव्वामपर–सव्वामर
,,	१	१२	हूँ ह्रीं–०
,,	२	११	संति–संतिं
२१४	२	१०	संति–संतिं
२१५	२	६	वीसा–तीसा
२१६	१	४	संति–संतिं
,,	,,	१०	स्वाहाः–स्वाहा
२१६	२	२	काणं–गाण
,,	,,	१४	शांतिदि–शांति दि
८	१	२	संति–संतिं
,,	,,	,,	विहेउ–संतिं विहेउ
,,	२	२	सोच्यत–सोच्यत
२१८	२	४	ॐमिति–ओमिति
,,	,,	,,	ह्रिंश्र–ह्रीश्र
,,	,,	१०	द्वाद्द–द्वाद
२१९		४	सुरभिः–सुरीभिः
,,	,,	,,	सदृष्ट–सदृष्ट
,,	,,	१२	स्तवननेस्थाने–संतिकरकहेवुं
२१९	२	७	कहेवो–नमुत्थुणं स्तवने स्थाने संतिकर, जयवीयराय
२२०	१	२	प्रयागा–प्रयाणा
,,	,,	१३	निर्दगा–निर्दाग
,,	२	२	दर्शनम्–संपदम्
,,	,,	७	सुपार्श्व–सपार्श्व
,,	,,	,,	श्रीसुपा–सुपा
,,	,,	९	स्थिता–स्थिताः
२२१	१	६	रचि–रचिते
,,	,,	१०	तीर्थां–तीर्थो
,,	२	९	ॐमिति–ओमिति
,,	,,	,,	भवता–भवतो
,,	,,	,,	हूँश्रि–ह्रीश्र
२२२	२	१	मुवन–भुवन
२२३	१	६	शान्तिमा–शान्तिकमा
,,	२	११	मार्तण्डे–ग्रहमंडलोना आकार-मार्तण्डे
२२४	१	११	पूज्यो–पूज्ञो
,,	,,	१४	सुविधः–सुविधेः
,,	,,	,,	नाथो–नाथे
२२४	२	४	स्तवं–शतं
,,	,,	,,	शतं–नरः

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२२४	२	११	निहिता-निहितो
५	१	१	करवों-करवो
"	"	७	पापी-तापी
६	२	१	नृहस्प- ५ बृहस्प
"	"	४	सत्रा-सर्वो
२२६	"	४	शान्ति-शान्ति
"	"	१२	वसाय-वशाय
"	"	"	वाऊ-बलि
"	१	"	शुक-इशुक
"	"	१३	नाम-नाय
२२७	१	६	राष्ट्रु-राष्ट्रेषु
"	"	९	शनि-७ शनि
२२८	"	८	शिखो-शिखी
२२९	२	२	घृतनु-घृतनो

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२३०	२	७	खङ्गा-खड्गा
२३१	१	१२	मुघर्त मुदृघत
२३३	२	३	स्तुनोतु-स्तनोतु
२३४	"	१०	सिहने-सिद्धे
"	"	१२	वक्ये-दक्ये
"	"	"	तातरा-तोतरा
२३५	१	१	शितला-शीतला
"	२	४	समान-स्मशान
२३६	१	७	पर-पुर
"	२	५	ककाल-ककोल
"	२	९	देवोना-देवीना
२३७	१	१	धार-धार
"	"	४	सवस-सर्वसं
२३८	२	८	फराय-फराय

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२३९	१	१०	वल्ला-वल्ली
"	"	"	कस्तुरी-कस्तूरी
"	"	१२	कार्णी-कीर्णी
"	"	१४	करातु-करोतु
२४०	२	३	वैणी-वेर्णी
२४१	"	१	प्रकीर्ण- २१ प्रकी
२४४	१	४	णव-णव
२४५	१	२	श्री क्लूं-श्री क्लीं
"	"	१०	नृहत-बृहत
२४६	"	१	सोम्या-सौम्या
"	२४७	२	१० पाणी-णाणी
"	"	११	त्रिय-प्रिया
२४८	"	५	तारण-तोरण
२४९	"	६	तय-तीय

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२५०	२	८	प्रणुतं-प्रणुत
२५१	१	८	प्रम-प्रभ
„	„	१३	महात्य-माहात्म्य
„	„	१४	योद्धा-येद्धा
„	२	११	नन्दनं-नन्दन !
२५२	१	९	सुखानि-सुखानिः
„	२	६	दुंम-दुंर्म
„	„	१०	रुप-रूपं
„	„	११	मुजु-मुंज
२५३	१	१	श्रुवू-श्रू
„	„	५	भवतः-भवन्तः
„	„	७	न्वित्रा-चित्रा
२५४	२	३	त्यागः-त्यागो
२५५	१	६	जा-जो

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२५५	२	६	विछिन्न-विस्थिन्न
„	„	११	वत्यंति-वसंति
२५६	„	८	नेमि-नेमी
२५७	१	५	मत्तो-वचो
„	„	११	भियैं:-भियैः
२५९	२	२	संबन्धाः-संबद्धाः
„	„	„	त्स-स
„	„	„	अम्भा-अभ्या
२६०	१	३	चिन्ता-चित्ता
„	„	८	दधातु-ददातु
„	„	११	श्रीया-श्रिया
„	२	१	धस्म-धस्स
२६०	२	१३	दंढं-द्वंढं
२६१	„	८	घणी-घणि

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२६१	२	९	चितं-चितः
„	„	११	सिद्धि-सिद्धिं
„	„	१३	यहिय-वाहिय
„	„	„	अहियदु-दु
२६२	१	७	जिया-जीया
„	„	११	विशल्या-विंशल्या
„	„	„	तीर्थं-तीर्थ
„	„	१३	श्रीब्रह्मे-ब्रह्मे
„	„	१४	टितिस्सृ-टिमिस्तिस्स
„	१	४	चार्यैः-चार्यैः
„	२	८	योघ्यां-योघ्याः
„	„	९	रुषभा-ऋषभा
„	„	१२	प्रभा-प्रभो
२६३	१	६	मोहनी-मोहिनी

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२६३	१	१०	सलुत्रि–सत्पुत्रि
,,	,,	१३	अवताव–अवतीपाव
,,	२	२	हन्त्य–हन्त्व
२६४	१	६	रुपा –रूपा
,,	२	१	गुगुल–गुग्गुल
,,	,,	१३	कण्वरे–कप्परे
,,	,,	१४	इसर-ईसर
२६५	१	८	नमात्रि–नमात्रि
,,	,,	११	णोयो–णोदूयो
,,	,,	१४	तत्काल–तत्काल
,,	२	२	सत्त–सत्तसत्तति
,,	,,	,,	चत्रत्र–च त्र
,,	,,	५	कुर्यात्–कुर्याद्
,,	,,	६	योत्र–यो यन्त्र

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२६५	२	१०	बिजा–बीजा
,,	,,	११	पट्टे–पत्रे
,,	,,	,,	निय–नीय
,,	,,	१२	कस्तुरि–कस्तूरि
,,	,,	,,	र्लिख्य–विलिख्य
२६६	१	५	२–र
,,	,,	१०	गन्धार्यै–ॐगन्धार्यै
२६७	२	९	भिई–पभिई
२६८	१	२	क्षेप्या–क्षेप्या
,,	,,	४	अथगन्या–गन्धा
,,	,,	५	मि ललि–मिलेलि
,,	,,	९	सोआनं–सोआण
,,	,,	,,	सिज्झ–मिज्झउ
,,	,,	१३	सच्चे–सव्वे

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
२७०	२	१२	कुसुमा–कुसुमो
२७१	१	९	वि–विध
,,	,,	१३	नदता–नरदत्ता
,,	,,	,,	सखला–सिखला
,,	२	१	सत्तर–सचरि
२७३	१	५	पिजर–पिंजर
,,	,,	,,	रुव–रूव
,,	,,	१२	आसिज्जो–आसि जो
२७४	,,	१०	ता–तो
२७५	,,	१४	जइ–जइ
,,	२	१०	लोकोयो–लोकोदूयो
,,	,,	१४	वोरक्ष०–रक्ष०
२७६	१	१	ह्रूँ श्रैं–ह्रू श्री
,,	,,	,,	नामाना–नामानो

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२७६	१	९	सबन्धि	संबन्धि
„	„	१०	दुःदुख	दुःख
„	२	२	गोष्ठिक	गोष्ठी
„	„	६	वासं	वास
२७७	१	„	सकतं	सततं
२७८	„	५	अभिन्तर	अभिमचर
„	„	७	सट्ट	सट्ठ
„	„	९	वप्पा	वप्पो
„	„	१०	दिहं	दीहं
„	„	„	माणि	मणि
२७९	१	१	भांनु	मानुं
२८०	१	१	योगन	योगतः
„	„	१२	जेने	जेज्ञे
२८१	१	१४	आरेगं	आरोगं
„	२	५	मराडा	मरोडा
„	„	८	हाथ २	हाथ १
२८२	१	५	कमलफांगर	०
„	„	१	७७ छचडीवांसनी	०
„	„	६	महोना	महोनो
„	„	१४	वांस ४	वांस ४ छाबडी-७-७
„	२	८	बांग्वा	चांग्वा
२८४	१	१	सवा	सवो
„	„	७	फल	फल
२८५	१	१२	रत्नी	रत्नो
„	२	१	गंधतोली	गंधनोले
„	„	१२	उभी,री	उभीरी
२८६	१	१	थेरी	थोरी
„	„	८	माथ	मोथ
„	„	१३	सेलिया	सेलिओ
२८७	२	५	चोना	चोसा
२८८	„	७	चारस	चोरस
२९०	„	९	सेर १	सेई १

प्रस्तावना—उपोद्घातमां—शुद्धिपत्रक

पत्र	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध शुद्ध
१	२	१३	एकलो-एकट्ठो
२	,,	१३	कार्यो-कर्यो
३	२	८	आलेखे-ओल्खे
५	,,	७	पुडिओ-पुडिओ
७	,,	२	सूची-शुचि
,,	,,	७	स्थापन-स्थान्
८	१	२	करता-कराता
,,	२	७	प्रक्षिप्त-सक्षिप्त
१२	१	१	श्रा सकल-श्री सकल
,,	,,	१३	ना-नो
१३	,,	२	दिरसनो-त्रिवसना
,,	,,	३	ए-ये
,,	,,	१२	श्वेताम्ब्रर-श्वेताम्बर
,,	२	२	श्यामाचर्याद्दि-श्यामाचार्यादि
१३	२	२	प्रतिष्ठा कल्पोना-प्रतिष्ठाकल्पना
,,	,,	८	पकृत-प्रकृत
१४	,,	१३	तत्रवाहकानु-तत्रवाहकोनु
१५	,,	२	पञ्चणु-पञ्चाणु
,,	,,	१२	प्रविणो-प्रवीणो
१७	,,	१	निशुद्दा-विशुद्धा
१८	१	१०	कात्या-कात्य
१९	२	१३	वधा-वधो
२०	१	३	स्वयमूश्रा-स्वयमूश्र
२०	२	,,	अन्यना-अन्य
२०	,,	१०	मूत्रविधि विधिनां-मूळविधिनां
२२	१	०	समान-सामान
२८	२	४	वोजो-त्रोजो
२९	१	१	स्वतत्रपणे-स्वतंत्रपण
३०	१	३	जगच द्र-जगच्च द्र
३०	१	१४	सोंचाने-सींचीने
३ '	२	१३	स्थापन-स्थापना
३१	,,	११	थुई-थुइ
३२	२	७	ते-ने
३३	१	२	।चतारना-चितारना
३४	,,	१४	घणु छे-घणु छे पण
३५	,,	९	श्रा शान्ति-श्री शान्ति
,,	,,	,,	दर्हभिषेक-दर्हदभिषेक
३५	१	१२	नेतालिये-वेतालीये
३५	२	१४	ओगणासमा-ओगणीसमा
३६	२	१२	कराने-करीने

